तपागच्छीय

श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरविरचिता

श्री संवेगरङ्गशाला

(प्राकृत)

सम्पादक

मुनि जयानंदविजय

संवेग शब्द का अर्थ संवेग रंगशाला नामक इस ग्रंथ में स्पष्ट रूप से दर्शाया है = संवेग यानि भव-संसार का भय और मोक्ष की अभिलाषा संसार का भय रोग को मिटाता है, मोक्ष की अभिलाषा आत्म शक्ति को प्रकट करती है।

हमारे दैनिक क्रियाओं के सूत्रों में भी संवेग की बातें अनेक प्रकार से आयी हुई है उसमें सर्वश्रेष्ठ सूत्र प्रार्थना सूत्र और उसमें प्रथम प्रार्थना 'भवनिव्वेओ' भव निर्वेद्र संसार पर अरुचि अर्थात् संसार का भय, भय जनक पदार्थ पर ही अरुचि होती है। दुक्खक्खओ-कम्मक्खओ = दुःखों का क्षय-कर्मों का क्षय अर्थात् मोक्षाभिलाषा। ऐसे अनेक प्रकार के शब्दों के प्रयोग द्वारा संवेग रसायण की बातें गुंथी हुई है।

जयानंद

श्री शत्रुंजयतीर्थाधिपति श्री आदिनाथाय नमः
प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः

वैक्रमीय ११२५ वर्षे

श्री तपागच्छीय-वज्रशाखीय-नवाङ्गी वृत्तिकारगुरुभ्रातृ
श्री अभयदेवसूरिसमभ्यर्थित-श्री जिनचन्द्रसूरिशेखर विरचिता

श्री संवेगरङ्गशाला

प्राकृत

आशीर्वाद

श्रीविद्याचन्द्रसूरीश्वराः
मुनिराजश्रीरामचन्द्रविजयः

सम्पादक

मुनिश्रीजयानन्दविजयः

प्रकाशक

श्री गुरु रामचंद्र प्रकाशन समिति भीनमाल

मुख्य संरक्षक

मु. श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में
२०६५ में पालीताणा में चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस प्रसंगे

लेहर कुंदन ग्रुप

श्रीमती गेरोदेवी जेठमलजी कुंदनमलजी बालगोता परिवार

मेंगलवा, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, हरियाणा

श्री वीतराग देव का ध्यान करने वाला स्वयं वीतराग होकर कर्मों या वासनाओं से मुक्त हो जाता है। इसके विपरीत रागी देवों का आलंबन लेने वाला या ध्यान करने वाला काम, क्रोध, हर्ष, विषाद, राग, द्वेषादि दोष प्राप्त कर स्वयं सरागी ही रहता है।

भस्मग्रह पूर्ण होने के बाद देव पृथ्वी पर आयेंगे। ऐसा कहा जाता है, तो क्या आज किसी आचार्यदेव के पास देव आते है ? और उन देवों के पास कोई सहायता ली जा सकती है ?

मेरे अनुभवानुसार कोई भी देव आज के इस क्षेत्र के आचार्य के पास आवे यह बनने जैसा नहीं दिखता। देव वर्तमान में तात्त्विक दृष्टि से नहीं आते फिर मदद की बात कहां रहती है। भस्मग्रह पूर्ण होने के बाद देव पृथ्वी पर आयेंगे ऐसा जाना नहीं है।

- प्रश्नोत्तर कर्णिका कल्याण मासिक वर्ष ३६ अं. ४-५,
जुलाई-अगस्त १९८०.

चतुर्विध संघ इस पर चिंतन मनन करे।

द्रव्य सहायक

आ. श्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी के
शिष्य एवं
मुनिराज श्री रामचंद्रविजयजी के
कृपापात्र

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

मुनि श्री दिव्यानंदविजयजी
मुनि श्री वैराग्यानंदविजयजी
मुनि श्री तत्त्वानंदविजयजी
मुनि श्री रैवतचंद्रविजयजी

चातुर्मास प्रारंभ
आषाढ सुदि १३ बुधवार,
१६/७/०८
चातुर्मास समापन
कार्तिक सुदि १५ गुरुवार,
१३/११/०८

मुनि श्री अमृतविजयजी आदि ठाणा एवं
राष्ट्रसंत शिरोमणी आ. श्री हेमेन्द्रसूरीश्वरजी के
आज्ञा. शा. दी. प्र. वि. साध्वीश्री मुक्तिश्रीजी की सुशिष्याएँ
सा. श्री कुशलप्रभाश्रीजी
सा. श्री वसंतबालाश्रीजी
सा. श्री मुक्तिप्रज्ञाश्रीजी - सा. श्री मुक्तिरत्नाश्रीजी
सा. श्री मुक्तिदर्शिताश्रीजी - सा. श्री मुक्तिरिद्धिश्रीजी
सा. श्री मुक्तिसिद्धिश्रीजी - सा. श्री मुक्तिप्रियाश्रीजी

आदि ठाणा का शाश्वत तीर्थ शत्रुंजय क्षेत्रे पालीताना नगरे २०६५ में चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस समय की ज्ञान खाते की आय में से...

लेहर-कुंदन ग्रुप

मेंगलवा, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, हरियाणा

श्रीमती गेरोदेवी जेठमलजी कुंदनमलजी बालगोता परिवार मेंगलवा...

२०० प्रतियाँ : एक सद्गृहस्थ, थराद

संरक्षक

(१) सुमेरमल केवलजी नाहर, भीनमाल, राज.

के. एस. नाहर, २०१ सुमेर टॉवर, लव लेन, मझगांव, मुंबई-१०.

(२) मीलियन ग्रुप, सूराणा, मुंबई, दिल्ली, विजयवाडा.

(३) एम. आर. इम्पेक्स, १६-ए, हनुमान टेरेस, दूसरा माला, ताराटेम्पल लेन, लेमीग्टन रोड, मुंबई-७. फोन : २३८०१०८६.

(४) श्री शांतिदेवी बाबुलालजी बाफना चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई. महाविदेह भीनमालधाम, पालीताना-३६४२७०.

(५) संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम, अक्षत बेटा पोता कुंदनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाळ, वर्धमान गौत्रीय आहोर (राज.) कल्पतरू ज्वेलर्स, ३०५, स्टेशन रोड संघवी भवन, थाना (प.) महाराष्ट्र.

(६) दोशी अमृतलाल चीमनलाल प्रांचशो वोरा थराद पालीताना में उपधान करवाया उस निमित्ते।

(७) शत्रुंजय तीर्थे नव्वाणुं यात्रा के आयोजन निमित्ते शा. जेठमल, लक्ष्मणराज, पृथ्वीराज, प्रेमचंद, गौतमचंद, गणपतराज, ललीतकुमार, विक्रमकुमार, पुष्पक, विमल, प्रदीप, चिराग, नितेष बेटा-पोता कीनाजी संकलेचा परिवार मेंगलवा, फर्म - अरिहन्त नोवेल्हटी, GF3 आरती शोपींग सेन्टर, कालुपुरटंकशाला रोड, अहमदाबाद. पृथ्वीचंद अेन्ड कं., तिरुचिरापली.

(८) थराद निवासी भणशाळी मधुबेन कांतिलाल अमुलखभाई परिवार.

(९) शा कांतीलाल केवलचंदजी गांधी सियाना निवासी द्वारा २०६३ में पालीताना में उपधान करवाया उस निमित्ते.

(१०) 'लहेर कुंदन ग्रुप' शा जेठमलजी कुंदनमलजी मेंगलवा (जालोर)

(११) २०६३ में गुडामें चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस समय पद्मावती सुनाने के उपलक्ष में शा चंपालाल, जयंतिलाल, सुरेशकुमार, भरतकुमार, प्रिन्केश, केनित, दर्शित चुन्नीलालजी मकाजी काशम गौत्र त्वर परिवार गुडाबालोतान् जयचिंतामणि १०-५४३ संतापेट नेल्लूर-५२४००१ (आ.प्र.)

(१२) पू. पिताश्री पूनमचंदजी मातुश्री भुरीबाई के स्मरणार्थे पुत्र पुखराज, पुत्रवधु लीलाबाई पौत्र फुटरमल, महेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार, अशोककुमार मिथुन, संकेश, सोमील, बेटा पोता परपोता शा. पूनमचंदजी भीमाजी रामाणी गुडाबालोतान्

'नाकोडा गोल्ड' ७०, कंसारा चाल, बीजामाले, रूम नं. ६७, कालबादेवी, मुंबई-२

(१३) शा सुमेरमल, मुकेशकुमार, नितीन, अमीत, मनीषा, खुशबु बेटा पोता पेराजमलजी प्रतापजी रतनपुरा बोहरा परिवार, मोदरा (राज.) राजरतन गोल्ड प्रोड. के. वी. एस. कोम्प्लेक्ष, ३/१ अरुंडलपेट, गुन्टूर A.P.

(१४) एक सद्गृहस्थ, धाणसा.

(१५) गुलाबचंद डॉ. राजकुमार छगनलालजी कोठारी अमेरीका, आहोर (राज.)

(१६) शांतिरूपचंद रविन्द्रचंद, मुकेश, संजेश, ऋषभ, लक्षित, यश, ध्रुव, अक्षय बेटा पोता मिलापचंदजी महेता जालोर, बेंगलोर.

(१७) वि.सं. २०६३ में आहोर में उपधान तप आराधना करवायी एवं पद्मावती श्रवण के उपलक्ष में पिताश्री थानमलजी मातुश्री सुखीदेवी, भंवरलाल, घेवरचंद, शांतिलाल, प्रवीणकुमार, मनीष, निखिल, मितुल, आशीष, हर्ष, विनय, विवेक बेटा पोता कनाजी हकमाजीमुथा, शा. शांतिलाल प्रवीणकुमार एन्ड को. राम गोपाल स्टीट, विजयवाडा. भीवंडी, इचलकरंजी

(१८) बाफना वाडी में जिन मन्दिर निर्माण के उपलक्ष में मातुश्री प्रकाशदेवी चंपालालजी की भावनानुसार पृथ्वीराज, जितेन्द्रकुमार, राजेशकुमार, रमेशकुमार, वंश, जैनम, राजवीर, बेटा पोता चंपालाल सांवलचन्दजी बाफना, भीनमाल.

नवकार टाइम, ५१, नाकोडा स्टेट न्यु बोहरा बिल्डींग, मुंबई-३.

(१९) शा शांतिलाल, दीलीपकुमार, संजयकुमार, अमनकुमार, अखीलकुमार, बेटा पोता मूलचंदजी उमाजी तलावत आहोर (राज.) राजेन्द्र मार्केटींग, पो.बो. नं.-१०८, विजयवाडा.

(२०) श्रीमती सकुदेवी सांकलचंदजी नेथीजी हुकमाणी परिवार, पांथेडी, राज. राजेन्द्र ज्वेलर्स, ४-रहेमान भाई बि. एस. जी. मार्ग, ताडदेव, मुंबई-३४.

(२१) पूज्य पिताजी श्री सुमेरमलजी की स्मृति में मातुश्री जेठीबाई की प्रेरणा से जयन्तिलाल, महावीरचंद, दर्शन, बेटा पोता सुमेरमलजी वरदीचंदजी आहोर, जे. जी. इम्पेक्स प्रा. लि.-५५ नारायण मुदली स्ट्रीट, चेन्नई-७९.

(२२) स्व. हस्तीमलजी भलाजी नागोत्रा सोलंकी की स्मृति में हस्ते परिवार बाकरा (राज.)

(२३) मुनिश्री जयानंद विजयजी की निश्रा में लेहर कुंदन ग्रुप द्वारा शत्रुंजय तीर्थे २०६५ में चातुर्मास उपधान करवाया उस समय के आरधक एवं अतिथि के सर्व साधारण की आय में से सवंत २०६५.

(२४) कुंदन ग्रुप, मेंगलवा, चेन्नई, दिल्ली, मुंबई.

(२५) शा सुमेरमलजी नरसाजी - मेंगलवा, चेन्नई.

(२६) शा दूधमलजी, नरेन्द्रकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता लालचंदजी मांडोत परिवार बाकरा (राज.) मंगल आर्ट, दोशी बिल्डींग, ३-भोईवाडा, भूलेश्वर, मुंबई-२

(२७) कटारीया संघवी लालचंद, रमेशकुमार, गौतमचंद, दिनेशकुमार, महेन्द्रकुमार, रविन्द्रकुमार बेटा पोता सोनाजी भेराजी धाणसा (राज.) श्री सुपर स्पेअर्स, ११-३१-३A पार्क रोड, विजयवाडा, सिकन्द्राबाद.

(२८) शा नरपतराज, ललीतकुमार, महेन्द्र, शैलेष, निलेष, कल्पेश, राजेश, महीपाल, दिक्षीत, आशीष, केतन, अश्वीन, रींकेश, यश, मीत, बेटा पोता खीमराजजी थानाजी कटारीया संघवी आहोर (राज.) कलांजली ज्वेलर्स, ४/२ ब्राडी पेठ, गुन्टूर–२.

(२९) शा लक्ष्मीचंद, शेषमल, राजकुमार, महावीरकुमार, प्रविणकुमार, दिलीपकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता प्रतापचंदजी कालुजी कांकरीया मोदरा (राज.) गुन्टूर.

(३०) एक सद्गृहस्थ (खाचरौद)

(३१) श्रीमती सुआदेवी घेवरचंदजी के उपधान निमित्ते चंपालाल, दिनेशकुमार, धर्मेन्द्रकुमार, हितेशकुमार, दिलीप, रोशन, नीखील, हर्ष, जैनम, दिवेश बेटा पोता घेवरचंदजी सरेमलजी दुर्गाणी बाकरा. हितेन्द्र मार्केटींग, 11-X-2-Kashi, चेटी लेन, सत्तर शाला कोम्प्लेक्स, पहला माला, चेन्नई–७९.

(३२) मंजुलाबेन प्रवीणकुमार पटीयात के मासक्षमण एवं स्व. श्री भंवरलालजी की स्मृति में प्रवीणकुमार, जीतेशकुमार, चेतन, चिराग, कुणाल, बेटा पोता तिलोकचंदजी धर्माजी पटियात धाणसा. पी. टी. जैन, रोयल सम्राट, ४०६–सी वींग, गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई–६२.

(३३) गोल्ड मेडल इन्डस्ट्रीस प्रा. ली., रेवतडा, मुंबई, विजयवाडा, दिल्ली.

(३४) राज राजेन्द्र टेक्सटाईल्स, एक्सपोर्टस लिमीटेड, १०१, राजभवन, दौलतनगर, बोरीवली (ईस्ट), मुंबई, मोधरा निवासी.

(३५) प्र. शा. दी. वि. सा. श्री मुक्तिश्रीजी की सुशिष्या मुक्ति दर्शिताश्रीजी की प्रेरणा से स्व. पिताजी दानमलजी, मातुश्री तीजोबाई की पुण्य स्मृति में चंपालाल, मोहनलाल, महेन्द्रकुमार, मनोजकुमार, जितेन्द्रकुमार, विकासकुमार, रविकुमार, रिषभ, मिलन, हिृतिक, आहोर। कोठारी मार्केटींग, १०/११ चितुरी कॉम्पलेक्ष, विजयवाडा.

(३६) पिताजी श्री सोनराजजी, मातुश्री मदनबाई परिवार द्वारा समेतशिखर यात्रा प्रवास एवं जीवित महोत्सव निमित्ते दीपचंद उत्तमचंद, अशोककुमार, प्रकाशकुमार, राजेशकुमार, संजयकुमार, विजयकुमार, बेटापोता सोनराजजी मेघाजी कटारीया संघवी धाणसा. अलका स्टील ८५७ भवानी पेठ, पूना नं.२.

सह संरक्षक

(३७) शा समरथमल, सुकराज, मोहनलाल, महावीरकुमार, विकासकुमार, कमलेश, अनिल, विमल, श्रीपाल, भरत फोला मुथा परिवार सायला (राज.) अरुण एन्टरप्राइजेस, ४ लेन ब्राडी पेठ, गुन्टूर–२.

(३८) शा तीलोकचंद मयाचन्द एन्ड कं. ११६, गुलालवाडी, मुंबई–४

(३९) शा भंवरलाल जयंतिलाल, सुरेशकुमार, प्रकाशकुमार, महावीरकुमार, श्रेणिककुमार, प्रितम, प्रतीक, साहील, पक्षाल बेटा पोता–परपोता शा समरथमलजी सोगाजी दुरगाणी बाकरा (राज.) जैन स्टोर्स, स्टेशन रोड, अंकापली–५३१००१.

(४०) शा गजराज, बाबुलाल, मीठालाल, भरत, महेन्द्र, मुकेश, शैलेस, गौतम, नीखील, मनीष, हनी बेटा-पोता रतनचंदजी नागोत्रा सोलंकी साँथू (राज.)-फूलचंद भंवरलाल, १८० गोवींदाप्पा नायक स्ट्रीट, चेन्नई-१

(४१) संघवी भंवरलाल मांगीलाल, महावीर, नीलेश, बन्टी, बेटा पोता हरकचंदजी श्री श्रीमाल परिवार आलासन राजेश इलेक्ट्रीकल्स ४८, राजा बिल्डींग, तिरुनेलवेली-६२७००१.

(४२) भंसाली भंवरलाल, अशोककुमार, कांतिलाल, गौतमचंद, राजेशकुमार, राहुल, आशीष, नमन, आकाश, योगेश, बेटा पोता लीलाजी कसनाजी मु. सुरत. फर्म : मंगल मोती सेन्डीकेट, १४/१५ एस. एस. जैन मार्केट, एम. पी. लेन, चीकपेट क्रोस, बेंगलोर-५३.

(४३) स्व. मातृश्री मोहनदेवी पिताजी श्री गुमानमलजी का स्मृति में पुत्र कांतिलाल जयन्तिलाल, सुरेश, राजेश सोलंकी जालोर.

प्रविण एण्ड कं. १५-८-११०/२, बेगम बाजार, हैदराबाद-१२.

(४४) शा. कान्तीलालजी, मंगलचन्दजी हरण, दाँसपा, मुंबई.

(४५) शा. ताराचन्दजी भोनाजी, आहोर, मुंबई. महेता नरेशकुमार एन्ड कुं. 1st, भोइवाडा लेन, गुलालवाडी, मुंबई-२.

(४६) श्रीमती फेन्सीबेन सुखराजजी चमनाजी कबदी मुंबई धाणसा, गोल्डन कलेक्शन, नं-५ चांदी गली, ३रा भोईवाडा, भूलेश्वर, मुंबई-२.

(४७) शा भंवरलाल, सुरेशकुमार, शैलेषकुमार, राहुल बेटा पोता तेजराजजी संघवी कोमतावाला भीनमाल, एस. के. मार्केटींग, राजरतन इलेक्ट्रीकल्स, के. सी. आई. वार्यर्स प्रा. लि. १६३, गोविंदाप्पा, नायकन स्ट्रीट, चेन्नई-६००००१.

(४८) बल्लु गगनदास विरचंदभाई परिवार - थराद.

(४९) शा जेठमलजी सागरमलजी की स्मृति में मुलचंद, महावीरकुमार, आयुषी, मेहुल, रियान्सु, डोली, प्रागाणी ग्रुप-संखलेचा, मेंगलवा. राज रतन एसेंबली वर्क्स, १४६/११६९, मोतीलाल नगर नं.-१. सांई मंदिर के सामने, रोड नं.-३, गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई-१०४. संखलेचा मार्केटींग, ११-१३-१६, समाचारवारी स्ट्रीट, विजयवाडा-१.

प्राप्तिस्थान

शा देवीचंद छगनलालजी 'सुमतिदर्शन' नेहरु पार्क के सामने, भीनमाल-३४३०२१. फोन : (०२९६९) २२०३८७

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढ़ी साँथू. ३४३०२६. फोन : २५४२२१

श्री विमलनाथ जैन पेढ़ी बाकरा, राजस्थान-३४३०२५.

महाविदेह भीनमाल धाम तलेटी हस्तगिरि लिंक रोड, पालीताणा (सौराष्ट्र)-३६४२७० फोन : (०२८४८) २४३०१८

मुनि को राजादि का संसर्ग अच्छा नहीं।

उसिणोदगतत्तभोइणो धम्मट्ठियस्स मुणिस्स हि मतो।
संसग्गि असाहु राइहिं असमाहि उ तहागयस्स वि।।
टी. चिदण्डोद्धृतोष्णोदकभोजिनः यथोक्तानुष्ठायिनोऽपि
राजादिसंसर्गवशाद् असमाधिरेव अपध्यानमेव
स्यात्, न कदाचित् स्वाध्यायादिकं भवेदिति।

- सूयगडांग वृत्ति

उष्ण तप्त जल का ही उपयोग करने वाला धर्म में स्थिर लज्जायुक्त ऐसे मुनि के लिए राजादि का संसर्ग अच्छा नहीं है। ऐसे साधुको भी असमाधि हो जाती है।

टीकार्थ :- तीन उकाले वाले पानी का ही उपयोग करने वाले शास्त्रोक्त अनुष्ठान का आचरण करनेवाले साधु राजादि के संसर्ग से असमाधि-दुर्ध्यान ही होता है स्वाध्यायादि कभी नहीं कर सकता।

- प्रभु तुजशासन अतिभलु पेज ३१

स्वेच्छा से राजनेता आते हो तो कोई अशास्त्रोक्त नहीं है। परंतु उनको बुलवाना उनकी राजनीति को ही प्रोत्साहन देना है।

चतुर्विध संघ सोचें।

पूर्णता

जीव अपूर्ण है, शिव पूर्ण है। अतः अपूर्णता के घोर अंधकार में से पूर्णता के उज्ज्वल प्रकाश की ओर जाने का उपक्रम करें। क्योंकि समग्र धर्मपुरुषार्थ का ध्येय पूर्णता की प्राप्ति है। यही अंतिम ध्येय है, आखिरी मंज़िल है।

फलस्वरुप, आत्मा की ऐसी परिपूर्णता प्राप्त कर लें कि कभी अपूर्ण होने का अवसर ही न आये। अपूर्णता का प्रादुर्भाव होने की संभावना ही न रहे !

युग–युगांतर से मोह और अज्ञान की गहरी खाई में दबी चेतना को, पूर्णता की प्रकाश–किरण आकर्षित करती रहती है।

अपूर्णः पूर्णतामेति=अपूर्ण पूर्णता पाये ! ग्रंथकार महात्मा ने कैसी गहन–गंभीर फिर भी मृदु बात का सूत्रपात किया है ! एक ही पंक्ति में, गागर में सागर भर दिया है। आत्मा की पूर्णता प्राप्त करने हेतु कर्मजन्य पदार्थों से रिक्त हो जाएँ !

• **ज्ञानसार**

दो शब्द

आत्मा से परमात्मा बनने के लिए संवेग का मार्ग ही संपूर्ण निर्विघ्न मार्ग है। आत्मा शब्द संसारवर्ती जीवों के लिए विशेष प्रयुक्त होता है और परमात्मा शब्द मुक्ति के जीवों के लिए विशेष प्रयुक्त होता है। संसार से मुक्त होने वाला ही मुक्ति में पहुँच सकता है। संसारी आत्मा बंधन में है। बंधन अनेक प्रकार के हैं। सभी बन्धनों का मूल बंधन कर्म है। कर्म है तो दूसरे बंधन है। कर्म नहीं तो एक भी बंधन नहीं। हर समझदार आत्मा मूल की ओर लक्ष्य देता है। रोग हो तो रोग का मूल कारण नष्ट होते ही रोग नष्ट हो जाता है अतः रोग के मूल कारण को दूर करने के लिए प्रयत्न किया जाता है। वैसे ही संसार का मूल कारण जो कर्म उसको दूर करने के लिए प्रत्येक समझदार व्यक्ति को प्रत्यन करना चाहिए यह सिद्धांत निश्चित है।

जगत में उपचार अनेक प्रकार के है। जो उपचार जहाँ कार्य कर सके वहाँ उसी उपचार को करना हितकर है। कर्म को भी रोग की संज्ञा दी हुई है। कर्मरोग को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के उपचार अनंतानंत तीर्थंकर भगवंतों ने दर्शाये हैं। उन सभी उपचारों में सर्व श्रेष्ठ उपचार प्रत्येक भव्यात्मा के लिए एक ही है। और वह है *'संवेग रसायण का पान करना।'* यह *'संवेग रसायन'* दो कार्य करता है। रोग को मिटाता है और शक्ति को प्रकट करता है।

संवेग शब्द का अर्थ संवेग रंगशाला नामक इस ग्रंथ में स्पष्ट रूप से दर्शाया है=संवेग यानि भव-संसार का भय और मोक्ष की अभिलाषा संसार का भय रोग को मिटाता है, मोक्ष की अभिलाषा आत्म शक्ति को प्रकट करती है।

हमारे दैनिक क्रियाओं के सूत्रों में भी संवेग की बातें अनेक प्रकार से आयी हुई है उसमें सर्वश्रेष्ठसूत्र प्रार्थना सूत्र और उसमें प्रथम प्रार्थना "भवनिव्वेओ" भव निर्वेद संसार पर अरुचि अर्थात् संसार का भय, भय जनक पदार्थ पर ही अरुचि होती है। दुक्खक्खओ-कम्मक्खओ=दुःखों का क्षय-कर्मों का क्षय अर्थात् मोक्षाभिलाषा। ऐसे अनेक प्रकार के शब्दों के प्रयोग द्वारा संवेग रसायण की बातें गुंथी हुई है।

जिन पदार्थों से, व्यक्तियों से स्थान से जिसे भय लगता है वह उन-उन से दूर रहने के लिए सतत प्रयत्नशील होता है। यह अटल नियम है। जिन आत्माओं को संसार भय जनक है ऐसा खयाल आया वे आत्माएँ संसार से भयभीत बनी थीं, बन रही हैं और बनेगी। संसार से भयभीत आत्मा को संसार बंधन स्वरूप लगता है, बंधन का कारण कर्म है तो अब कर्म से मुक्त बनने के लिए प्रयत्न करना और कर्म रोग है रोग को मिटाने के लिए रोग का निर्णय किया जाता है। जगत में एक न्याय प्रचलित है लोहा लोहे से कटता है। वैसे कर्म को मिटाने के लिए कर्म ही करना। कर्म के दो भेद है शुभ-अशुभ। अशुभ को दूर करने के लिए शुभ कर्म करना। शुभ कर्म काया से, वचन से, एवं मन से होते हैं। इन तीनों योगों से शुभ कर्म करने के लिए अतीव विस्तृत मार्गदर्शन इस 'संवेगरंगशाला' नामक ग्रंथ के अन्दर प्राप्त होता है।

संवेग के रंग रूप शुभ कर्म से अशुभ कर्म रूप कचरा निकल जायगा फिर शुभ कर्म भी अल्प मानसिक प्रयास से दूर हो जायेंगे। कर्म दूर होते ही आत्मा अपने मूल स्वभाव में आकर अपने स्वयं के घर में स्वगृह में जाकर निवास करेगा।

यह ग्रंथ वि.सं. ११२५ में रचा गया है। रचनाकार श्री जिनचंद्रसूरिजी नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरीश्वरजी के बड़े गुरुभ्राता है। अतः इन्होंने आगम ग्रन्थों का अमृत खोज-खोजकर इस संवेगरंगशाला में भर दिया है। आ.श्रीमुक्तिप्रभ सूरीश्वरजी की प्रस्तावना में इस ग्रंथ के विषय में विचार व्यक्त किये है। जो इस संपादन में वे प्रस्तावनाएँ दी है।

जहां-जहां पूर्व प्रकाशित में अशुद्धियाँ दृष्टिगोचर हुई उसे सुधारने का उपयोग किया है। फिर भी भूले रह गयी हो और पाठकवर्ग के ध्यान में आवे तो संपादक को सूचित करने की कृपा करें।

इस ग्रंथ में निम्न बातें हैं जिसमें इसके बाद रचे गये ग्रंथों में परावर्तन हुआ है।

जैसे वंकचूल की कथा में उसे युद्ध में रोग की बात लिखी है अन्य कथाओं में कौए से बोटा हुआ पानी पीने से रोग होने की बात आयी है। रानी द्वारा मुझ पर बलात्कार किया ऐसा राजा को कहने का वर्णन है। पृ. २५

आर्य महागिरि की कथा में स्थूलभद्रजी के वर्णन में उपकोशा के घर चातुर्मास का वर्णन है जब कि अन्य कथाओं में कोशा के घर का वर्णन आता है। पृ. ११०

आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ति सूरि में सांभोगिकपना पृथक होने का वर्णन अन्य कथानकों में आता है इसमें नहीं है। पृ. ११०

अर्णिका पुत्र आचार्य के वर्णन में अन्य ग्रंथों में नदी में गिराने पर शूलि पर लेने का एवं खून के बिन्दु जल में गिरने पर चिंतन का वर्णन आता है जो इसमें नहीं है। पृ. १५०

वसुराजा की कथा में पाठक द्वारा परिक्षा का वर्णन इसमें नहीं है। नारद का शिष्यों को पढ़ाने का वर्णन अन्य कथानकों में नहीं है। पृ. १६१

बाहुबली की कथा में इन्द्र द्वारा दोनों भाईयों को समझाने का वर्णन इसमें नहीं है। इसमें दंडरत्न हाथ में आने का वर्णन है जब कि अन्य कथानकों में चक्ररत्न को याद करने का एवं फेंकने का वर्णन है। पृ. १६८

स्थूलभद्र सूरि की कथा में यहां तीन पुत्रियों के स्मरण शक्ति की बात है। अन्य कथाओं में सातों बहनों के स्मरण शक्ति की बात है। पृ. १९०

दृढ़प्रहारी की कथा में अन्य कथाओं में चार हत्या की बात है। इसमें तीन की बात है। पृ. १९२

इस प्रकार कथाओं में परिवर्तन हुआ है।

यह ग्रंथ नामानुसार आत्मा में संवेगरंग को उत्पन्न करने वाला, वृद्धि करने वाला और इसके उपदेश द्वारा स्व पर कल्याण करने वाला उत्कृष्टतम ग्रंथ है।

आराधक आत्मा को इस ग्रंथ का वांचन, मनन, चिंतन एवं इस पर आचरण कर ग्रंथकार के परिश्रम को सफल बनाकर स्व कल्याण करना चाहिए।

ताडपत्र पर इस ग्रंथ को लिखवाने वाले की जो प्रशस्ति दी है। इससे ऐसा लगता है कि उस समय ज्ञान लिखवाने वाले अति अल्प होंगे। जिससे लिखवाने वाले की ऐसी प्रशस्ति लिखी गयी है। उसने लिखवाने की उदारता की तभी यह ग्रंथ हमको उपलब्ध हुआ है।

पाठक गण इसे पढ़कर आत्म कल्याण साधे।

यही।

जालोर,
वि.सं. २०६४ अषाड सुद १४
दि. २९/७/२००७

– जयानंद

इस ग्रंथ का भाषांतर हिन्दी में छपवाने के बाद मूल प्रत भी छपवाने का विचार हुआ। अतः इसे छपवाया है। इसमें अशुद्धियों को सुधारने का प्रयत्न किया है। पत्रकार में ३०८९ का श्लोक छपा ही नहीं था। पाटण भंडार में से मुनि श्री जंबुविजयजी द्वारा श्लोक प्राप्त हुआ सो दीया है। फिर भी अशुद्धि रही हो तो विबुध वर्ग संपादक को सूचित करने का प्रयत्न करें।

इस ग्रंथ में मंगलाचरण में श्रुत देवी को नमस्कार करने की बात है। श्रुत देवता के काउस्सग्ग का प्रचलन हो जाने से नमस्कार किया गया है। श्रुत देवता को नमस्कार कर फिर गुरु भगवंत को नमस्कार यह कितना योग्य है? इस पर चिंतन मनन आवश्यक है।

प्रतिमा शतक में इसका जो स्पष्टीकरण किया है। वहाँ स्पष्ट किया है कि श्रुत देवता को नमस्कार कर गुरु महाराज को नमस्कार तो अयोग्य होगा, यह नमस्कार जिनवाणी को है। ऐसा श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी के मंगलाचरण में स्पष्टीकरण किया है।

वही स्पष्टीकरण यहाँ भी समझा जा सकता है।

वि.सं. २०६५ फागण सुद १३
शंखेश्वर

– जयानंद

प्रस्तावना

जेमां पदे-पदे वाक्ये-वाक्ये ने श्लोके-श्लोके संवेगनी छोळो उछळी रही छे, एवा आ ग्रन्थनुं नाम *संवेगरंगशाळा* छे. आ ग्रन्थरत्ननी रचना करनार समर्थतार्किक महावादी *श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिजी कृत संमतितर्क ग्रन्थ* पर असाधारण टीका लखनार पू. आचार्यदेव *श्री अभयदेवसूरि* महाराजना वडील गुरुबन्धु पूज्यपाद आचार्यदेव *श्री जिनचन्द्रसूरिजी* महाराज छे.

आ ग्रन्थ खास करीने एज पुण्यात्माओने लाभ करनार निवडशे के जे हृदयथी एम माने छे के हुं आत्मा छुं, अनादिकाळथी संसार समुद्रमां रखडी रह्यो छुं, हुं शाश्वत छुं, पण मारी वर्तमान अवस्था अशाश्वत छे. मारी आ अनंत रखडपट्टीनो अंत लाववो होय तो 'संवेग' गुणनो वेग मारे वधारवो जोईए. विना संवेग मारा संसारनो अंत आववानो नथी; केम के वगर संवेगे लांबाकाळ सुधी पण तपेलुं तप, सेवेलुं शील कायकष्ट रूप छे, आचरेलुं अनुपम चारित्र एने मेळवेलुं घणुं बधुं ज्ञान पण खरेखर फोतरा खांडवा जेवुं छे. आ वात ग्रन्थकारना शब्दोमां जोईए तो—

सुचिरं पि तवो तवियं, चिन्नं चरणं सुयं पि बहु पढियं । जइ नो संवेगरसो, ता तं तुसखण्डणं सव्वं ।।

पण वांचनार एम पूछशे के, संवेग एटले शुं? तेनो उत्तर पण ग्रन्थकार नीचेना शब्दोमां आपे छे—

एसो पुण संवेगो, संवेगपरायणेहिं परिकहिओ । परमं भवभीरुत्तं, अहवा मोक्खाभिकंखित्तं ।।

तीर्थंकर भगवंतोए संवेगनो अर्थ आ प्रमाणे कहेलो छे. अत्यंत संसारनो भय अथवा मोक्षनी अभिलाषा. अत्यंत संसारनो भय एटले चारे गतिनो भय. चारे गतिमां नरकगति अने तिर्यंच गतिनो भय तो लगभग बधा ज मनुष्योने छे. कोईने पूछीए के, सुखी युरोपियनना कुतरा तरीके जन्म लेवो छे? तो ते तरत ज ना पाडशे. आपणे कहीए के, मोटरमां बेसवा मळशे, दररोज माणस नवडावशे, सारुं सारुं खावानुं मळशे. वगेरे वगेरे भौतिक सुखो बतावीए तो पण ते ना ज पाडशे. केम के तिर्यंच-पशु के ढोर थवुं कोईने गमतुं नथी. ज्यारे नरकमां तो दुःख ने दुःख ज होय छे. त्यां जवानुं मन कोने थाय? त्यारे रही बाकीनी बे गति. एक मनुष्य अने बीजी देवगति. आ मनुष्यगतिमां पण दीन-दुःखी अने कंगाळकुलमां जन्म लेवानुं कोई इच्छतुं नथी. तेमज देवलोकमां पण बीजा स्वामी देवोनी गुलामी करवी पडे. तेना हुकमथी पशु थई तेने पीठ उपर बेसाडवा पडे. तेवुं कोईने पसंद नथी. त्यारे संसारी जीवने शुं पसंद छे? संसारनुं भौतिक सुख.

तेनी सामे संवेग गुण आपणने कहे छे के, आ संसारना सुखोने मोक्षरूप सुख मेळववा खातर लात मारता शीखो. अने आ शिक्षण तमारा हैयामां परिणाम पामे ए माटे आ ग्रन्थनुं पुनः पुन वांचन, मनन अने निदिध्यास करो.

आ संवेग गुण मेळववानी जेने इच्छा थती नथी. तेने आ ग्रन्थकार दुर्भव्य के अभव्य तरीके ओळखावे छे. आ उपरथी समजी शकाशे के, आ संवेग गुणनी जीवनमां केटली आवश्यकता छे?

कहेवुं होय तो एम पण कही शकाय के, मंत्रोमां जेम नमस्कार महामंत्र सर्वश्रेष्ठ छे, पर्वतोमां जेम श्री शत्रुंजय सर्वश्रेष्ठ छे, देवोमां जेम वीतराग परमात्मा सर्वश्रेष्ठ छे तेम सर्व गुणोमां शिरोमणि भावने भजनार आ संवेग गुण गुणोमां सर्वश्रेष्ठ छे.

आ ग्रन्थमां चार मुख्यद्वारनुं कथन करवामां आव्युं छे. संवेगगुणनी प्राप्ति थया पछी आराधना कया क्रमे करवी अथवा ए गुणने प्राप्त करवा पण आ आराधना केवी रीते करवी तेनुं आमां स्पष्ट वर्णन छे.

आ चार द्वारो (१) परिकर्मविधि द्वार (२) परगणसंक्रमण द्वार (३) ममत्वउच्छेद द्वार अने (४) समाधिलाभ द्वार छे.

आ चारे मुख्य द्वारोमां पेटाद्वारो पहेलाना १५, बीजाना १०, त्रीजाना ९ अने चोथाना ९ छे. ते पेटाद्वारोनुं वर्णन विस्तारथी छे, जे जिज्ञासुओने वांची जवा भलामण छे.

पहेला परिकर्मविधिद्वारमां आत्माने ते ते द्वारोमां बतावेली आराधना द्वारा संस्कारी बनाववानो छे. मोहराजानुं साम्राज्य गजबनुं छे. जीवने क्यां अने क्यारे फसावी दे, तेनो पत्तो नथी. माटे एना संकजामां जीव फसाई न जाय तेनी सावधानी माटे आ बधा पेटा द्वारोनी विधिपूर्वक आराधना करवानी कही छे.

आ द्वारमां साधु अने श्रावकना उपकरणोनुं जेम वर्णन छे, तेम गुरु पासेथी ग्रहणशिक्षा अने आसेवनशिक्षा लई

आत्माना सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्रनो विकास करनारा गुणोनुं पण वर्णन छे. अहिं ग्रहणशिक्षानो अर्थ ए समजवानो छे के, गुरु महाराज पासेथी साधुपणुं अने श्रावकपणुं शी रीते आराधवुं एनी समजण लेवी अने आसेवन शिक्षानो अर्थ ए छे के, ए समजणने जीवनमां जीवीने आत्मसात् करवी.

आ शिक्षाओ विनय विना आवती नथी माटे पेटाद्वारमां विनयद्वार पण पाडवामां आव्युं छे. *विनयनो भंग करी जे साधु के श्रावक धर्ममां आगळ वधवा मागे छे, ते कदी पण आगळ वधी शकतो नथी. केम के परमात्मानुं शासन विनयने धर्मना मूळ तरीके ओळखावे छे.*

उत्तराध्ययन सूत्र जे प्रभुभाषित छे, तेना ३६ अध्ययनोमां पहेलुं अध्ययन विनय अध्ययन छे. केम के विनय न होय तो बाकीना अध्ययनमां बतावेला गुणो जीवनमां यथार्थरूपे आवी शकता नथी. माटे ज प्रथम अध्ययन विनयनुं राखवामां आव्युं छे. आ सिवायना बीजा प्रथम मुख्यद्वारना पेटाद्वारो जे समाधिद्वार, मनोनुसिद्धीद्वार, अनियतविहारद्वार, राजद्वार वगेरे द्वारो जे बतावववामां आव्या छे ते जिज्ञासुओने ग्रन्थमां जोई लेवानी अमारी भलामण छे. प्रत्येक पेटाद्वारनुं वर्णन जो करवामां आवे तो प्रस्तावना ज स्वयं एक ग्रन्थ बनी जाय.

हवे *बीजुं द्वार* परगणसंक्रमण नामनुं छे. एना पेटाद्वारो १० छे. दरेके दरेक द्वारमां गुरुआज्ञानी मुख्यता, कषायने वोसिराववानी भावना, साधुने सर्वथा स्त्री परिचयनो त्याग, दश प्रकारनी सामाचारीनुं विधिपूर्वक पालन वगेरे बताववामां आव्युं छे.

आ आचारोमां ज्यां ज्यां स्खलना थाय छे, त्यां त्यां गुरु-शिष्यभावमां खामी आवे छे. एक गच्छना आचार्य बीजा गच्छना आचार्य उपर जेवो वात्सल्यभाव राखवो जोईए तेवो राखी शकता नथी अने साधक सामाचारीनुं पालन करवामां शिथिल बनवाथी स्वच्छंदी बने छे.

त्रीजुं मूलद्वार ममत्व उच्छेद नामनुं छे. आना नव पेटाद्वारो छे. तेमां शरूमां आलोचनाविधानद्वार मूकवामां आव्युं छे आत्माने हळवो करवा माटे प्रत्येक साधु अने श्रावके करेला पापनुं प्रायश्चित्त लेवानुं होय छे. तेमां प्रायश्चित्त केवी रीते लेवुं, एना आपनारनी लायकात, लेती वखतनी विधि वगेरेनुं वर्णन विस्तारथी करवामां आव्युं छे. आलोचना नही लेनार साधु के श्रावक सशल्य कहेवाय छे, अने शल्यवाळो साधना करे तो पण ज्यां सुधी शल्यनी आलोचना न ले त्यां सुधी शुद्ध थतो नथी. वगेरे वगेरे घणो सुंदर विचार आमां करवामां आव्यो छे.

आ द्वारमां शय्या-संथारो वगरे क्यां करवो, प्रत्याख्यान आदि द्वारा शरीर, ईन्द्रियोने अने मनने केवी रीते काबुमां लेवा, खमवा खमाववा द्वारा ए कषायोने केवी रीते अंकुशमां राखवा तेनुं आबेहूब वर्णन करवामां आव्युं छे. अहिं शय्या शब्दनो अर्थ वसति समजवानो छे. साधुनी वसति केवी होय? आजु बाजु पाडोश होय ते पण केवो होय? स्त्रीना शब्दो ज्यां न संभळाय. रूप न देखाय वगेरे वगेरे वातोनुं वर्णन करी साधकने खूब खूब सावचेत रहेवा सूचन करवामां आव्युं छे.

छेल्लुं *चोथुं* समाधिलाभ द्वार छे. आना पेटाद्वारो नव छे. आ दरेक पेटाद्वारोना अवान्तर द्वारो पण आपवामां आव्या छे. अमांना एक एक द्वार आराधना माटे ध्यान खेंचे तेवा छे. तेमां पण चतुःशरणगमन, सुकृतअनुमोदन ने दुष्कृत-निंदा द्वारो, जे पेटाद्वारोमां पण अवांतर द्वारो छे-ते सविशेष ध्यान खेंचे तेवा छे.

अरिहंत आदिनुं शरण शा माटे स्वीकारवानुं छे? ए तारको राजकुलमां जनम्या हता. सुखसामग्रीमां उछरी मोटा थया हता. ऋद्धिना ढगला वच्चे एमनुं जीवन पसार थई रह्युं हतुं. माताना गर्भमां आवतां जेमने ईन्द्रादि देवताओ नमता हता, तेमणे पण माथाना वाळ उखेडी लोच करी स्वपर हितार्थे प्रव्रज्यानो स्वीकार कर्यो अने ज्यां सुधी घाती कर्मोनो क्षय न थयो त्यां सुधी पलांठी वाळीने तेओ बेठा पण नहीं. आवा परमात्माने शरणे एटला माटे ज जवानुं छे के ''संसारना गमे तेटला सुंदर मनमोहक के सानुकूल सुखो मळे तो पण ते त्याज्य छे'' आवी बुद्धि आवे त्यारे ज आ परमात्माने शरणे साची रीते जई शकाय छे. बाकी परमात्मानुं शरणुं मळतुं नथी. ए वात निश्चित छे. आ रीते परमात्मानुं शरणुं प्राप्त करनार जे पुण्यशाली आत्मा भूतकाळना दुष्कृतोनी गर्हा करे, सुकृतोनी अनुमोदना करे अने आत्माने अरिहंतमय बनाववा तेनुं ध्यानादि करे छे अने अवश्य संघयणादि सामग्री संपन्न होय तो ते, ते ज भवमां अथवा बहु ज थोडा भवमां सकलकर्मनो क्षय करी मुक्तिपदने पामे छे.

संसार ए कर्म राजाए ऊभो करेलो निर्दयता अने निष्ठुरतापूर्वकनो तमाशो छे. संसारी जीवो ए तमाशो के नाटक भजवनारा नाटकीआ छे. चार गति ए नाटकशाळानी रंगभूमि छे. कर्मराजा ए नाटकनो सूत्रधार (मेनेजर) छे. ग्रंथकार कहे छे

के आ निर्दय एवा कर्मराजाने पनारे जो तमारे न पडवुं होय तो संवेगगुणना स्वरूपने आ ग्रन्थमांथी गुरुमुखे सांभळो, सांभळ्या पछी समजो, समज्या पछी श्रद्धा करो अने पछी जीवनमां उतारवा सतत प्रयत्नशील बनो. आ रीतनो प्रत्यन सतत चालु हशे तो कर्मराजा तमारा पगमां नमतो आवशे. अहिं तमे मुक्तिना सुखनो नमुनो चाखशो अने ज्यां सुधी मुक्तिमां नहिं जाओ त्यां सुधी संसारना सुखो तमारी पगचंपी करशे, अने त्यारे तमारे तो एनी साथे अणबनाव रहेशे तेमज बहु नजीकमां तमे सकल कर्मनो क्षय करी मुक्तिपदना भोक्ता बनशो.

आ ग्रन्थनी खूबी ए छे के द्वारो अने पेटाद्वारोना वर्णनमां सिद्धान्तसिद्ध दृष्टांतो आपीने ते द्वारो अने पेटाद्वारोनी समजण खूब ज सुंदरी रीते आपी छे.

आ ग्रन्थनी वात कोई प्राचीन ग्रन्थमांथी ग्रन्थकारे लीधेली होय तेम जणाय छे. केम के रचयिता पू.*जिनचंद्रसूरिजी* महाराज छे. अने जे वात करवामां आवी छे ते भगवान महावीरना स्वहस्तदीक्षित शिष्य *महसेन* राजर्षिनी छे. भगवान महावीर निर्वाण पाम्या पछी भगवान गौतमस्वामीजीने केवळज्ञान थाय छे. तेमने आ लघु-बंधु पोतानी वृद्धावस्थामां कंपते शरीरे पूछे छे के ज्यारे शरीर विशिष्ट तपनी आराधनामां उपयोगी न रहे त्यारे अंतिम आराधना केवी रीते करवी? एना खुलासा सविस्तर रीते भगवान गौतमस्वामीजी महाराज कहे छे ए ज आ ग्रन्थनो विषय छे.

टूंकमां *संवेगरंगशाळा* एटले मोहनी सामे विंझाती शमशेर. एनी एक एक गाथामां मोहनी वेदना अने चीत्कारना डुसकां संभळाय छे. एमां संभळाय छे शिवसुंदरीना पायलनो झंकार. एनी गौरवगाथा एटले क्रूर अने विकराल एवा कालने क्रूर थप्पडो. एमां आपेली कथाओमां शेताननी शेतानियत जेम संभळाय छे तेम वीरनी वीरता पण वर्णवाय छे अने कायरोनी कायरतानी कमनसीब कहाणी पण छे. संवेगरंगशाळाना श्लोको एटले मोहनी छाती उपर उपराउपरि गोठवायेली तोपो कहो के तीर कामठां कहो, आजनी भाषामां बोंब कहो के जुना जमानानी बंदूको कहो. जे कहेवुं होय ते कहो पण ए वात चोक्कस छे के आ ग्रन्थ वांचनार भव्य जीव थोडा कालमां निजना मोहनो नाश अने स्व-स्वरूपनी अनुभूति करे छे. मोहमां पागल बनेला कायरोनी कमनसीब कथा सांभळी कर्मनी क्रूरता भरी कतल करनारा पण कंपी उठे छे. बीजी बाजु वीरपुरुषोए मोहनी सामे बतावेल शौर्यनां सन्मान पण स्थळे-स्थळे देखाय छे. टुंकमां *संवेगरंगशाळा* आपणनें कहे छे, ''*ओ मोहनिद्रमां मस्त बनेला मानवी! तुं तारी आत्मानी आंखने उघाड, उठ, बेठो था. मात्र बेठा थये नहि चाले पण ऊभो था अने आ ग्रन्थमां बतावेला बळवान शस्त्रो स्वीकारी मोहनी सामे लडाई लडवा मांड. ओ अज्ञानना अंधकारमां अथडाता मानवी! जरा विचार कर, विचार कर. क्यां तारी आराधनानी उत्तम सामग्री अने क्यां तारी मोहमस्तता? आ मोहस्तीने मारीने मूळ स्वरूपने प्रगट करवुं होय तो आ ग्रन्थनुं पुनः पुन रटण कर.*''

आ ग्रन्थ एटले रत्नत्रयीनी पांगरेली वसंतऋतु, मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान अने मिथ्याचारित्रनी पानखरऋतु.

आ कथा कोई कल्पनाना गुंथेला तार नथी पण आत्माने हितकार तथ्योनुं पथ्य छे. संसार शेतरंजनी पाशवलीला आ ग्रन्थ आबेहूब दर्शावे छे.

बारमी सदीनी प्रथम पच्चीसीमां लखायेल आ ग्रन्थ ए मात्र कोई पुस्तक के पानाओना ढग नथी. सिद्धांत के नियमोनी यादी नथी. मात्र अहेवालोनो हिमालय नथी पण संसार सागर पार करवा कर्ममत्स्योनी कतल करनार होडी छे. मात्र होडी ज नहि पण मुक्ति महालयमां सादि अनंतकाल पर्यंत महालवा माटेनुं महान् यानपात्र छे. एनो एक एक श्लोक मोहनी सामे मशीनगन छे. एनुं एक-एक पद कर्म सामे रीवोल्वर छे. एनो एक एक अक्षर ए मिथ्यात्वमातंगने महात करवा मृगादिराज छे. एनो एक एक अधिकार अविरतिने उखेडवा एने कषायवृक्षोने कापवा कुहाडो छे.

वधुं शुं कहीए! आ ग्रन्थ एटले साक्षात् मिथ्यात्वनुं मोत, अविरतिनी विरति (विराम) अने कषायोनी कुटिलानी क्रूर कहाणीना कथन साथे तेनी करपीण कतल तेमज मन, वचन अने कायाना योगनो अयोग छे.

– आचार्य देव श्री रामचंद्र सूरीश्वरजी के शिष्यरत्न मुनिराज श्री मुक्तिविजयजी.

-: પ્રવેશ :-

લેખક :- પૂ. મુનિરાજ શ્રી મિત્રાનંદવિજયજી મહારાજ

સંવેગરંગશાળા :- શાસ્ત્ર ગ્રંથનું આ પાવન નામ મારા કાનમાં ૨૬ વર્ષથી ગુંજતું થયું હતું, તે સમયે ગાંભીર્યાદિ ગુણરત્નોના સાગર પરમ પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંત શ્રીમદ્ વિજયમેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજે આ ગ્રંથને લોહીના કણેકણમાં પચાવી દીધો હતો. એમ કહીએ તો અતિશયોક્તિ નથી. તેઓશ્રી સં. ૧૯૯૯ના આસો સુદી એકમની બપારે બે વાગે પાંચ પાંચ પૂ. આચાર્યદેવો, સેંકડો સાધુ-સાધ્વીઓ તથા વિશાળ શ્રાવક-શ્રાવિકા વર્ગની હાજરીમાં કાળધર્મ પામ્યા ત્યારે તેઓશ્રીને જે અદ્ભુત સમાધિ હતી. તેમાં આ ગ્રંથરત્નના મનન-ચિંતનનો મોટો ફાળો હતો. તે પૂજ્ય પુરુષ ૧૧-૧૧ વર્ષથી અનેક રોગોની સામે ઝઝુમી રહ્યા હતા. છેલ્લી અવસ્થામાં એક બાજુ રોગોએ માઝા મૂકી હતી ત્યારે બીજી બાજુ તેઓએ આ ગ્રંથરત્નનું પરિશીલન કરી ચિત્તની સમાધિને સહેજ પણ ખંડિત થવા દિધી ન હતી. છેલ્લી ૨-૫ મિનિટ પહેલાં તેઓશ્રીના ગુરુવર્ય સંઘસ્થવિર પૂ. બાપજી મહારાજ *સિદ્ધિસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબે પૂછ્યું,* 'મેઘસૂરીજી! સમાધિનું લક્ષ છે ને? શું વિચાર કરો છો?' ત્યારે *મેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજ* તરફથી જવાબ મળ્યો – 'સાહેબ! આપે સૂચવેલી સંવેગરંગશાળાનું ચિંતન ચાલે છે.' ગુરુ મહારાજે પરમતોષ માન્યો અને ૨ કે ૫ મિનીટમાં જ સંવેગના રંગે રંગાયેલો એ પાનવ આત્મા દેહપિંજર છોડી ગયો.

ત્યારે હું ત્યા જ ઊભો હતો. બાળ સાધુ હતો. નૂતન મુનિ હતો. 'સંવેગરંગશાળા'ની ત્યારે ગવાતી ગૌરવગાથા સાંભળી આ ગ્રંથ પ્રત્યે મારા મનમાં અહોભાવ જાગ્યો હતો. અને તેથી જ્યારે સં. ૨૦૨૨ની સાલમાં *પંડિત શ્રી બાબુભાઈ સવચંદ* આ ગ્રન્થરત્નની પ્રેસકોપી લઈને પરમપૂજ્ય ભવોદધિતારક *આ.ભ. શ્રીમદ્ વિજય પ્રેમસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ* પાસે આવ્યા અને એના સંશોધનાદિ માટે મને સોંપવાની વાત કરી. ત્યારે હું સહજ રીતે એ માટે લલચાયો હતો. પણ ત્યારે હું કર્મસાહિત્યના 'રસબંધ' ગ્રંથના સંશોધન સંપાદનાદિ કાર્યમાં તથા કર્મસાહિત્યના 'ખવગસેઢી', 'ઠિઈબંધો' વિગેરે ગ્રંથોના પ્રકાશન તેમજ તે પ્રસંગે યોજાયેલ જૈન સાહિત્યના પ્રદર્શનના કાર્યમાં ખૂબ ગુંથાયેલો હતો. તેથી પૂ. આચાર્ય ભગવંતે તે કાર્યનો ભાર મને ન સોંપ્યો.

ખૂબ જ આનંદની વાત છે કે ટુંક સમયમાં જ પૂજ્ય પરમ તપસ્વી મુનિરાજ શ્રી હેમેન્દ્રવિજયજી મહારાજે તથા *પંડિત શ્રી બાબુભાઈ સવચંદભાઈએ* સુંદર રીતે સંશોધન, સંપાદન કરી આ ગ્રંથ તૈયાર કર્યો અને તે આજે આપ સહુના હાથમાં આવી રહ્યો છે.

પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજયમેઘસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ, પૂ. મુનિરાજ શ્રી હેમેન્દ્રવિજયજી મહારાજના દાદાગુરુ થાય, પોતાના દાદાગુરુજીને પરમ સમાધિ આપનાર આ ગ્રંથરત્ન પ્રત્યે ગુરુભક્ત મુનિરાજશ્રીને ખૂબ આત્મીયતા હતી અને છે. આ ગ્રંથનું શ્લોક પ્રમાણ ૧૦,૦૫૩ છે તેમાં ૩૦૦૦ શ્લોક પ્રમાણ ગ્રન્થ પૂર્વે છપાઈ ગયો હતો. પણ તે પ્રાયઃ અશુદ્ધ છપાયો હતો. બાકીનો ૭૦૫૩ શ્લોક પ્રમાણ ગ્રન્થ અપ્રગટ હતો. તેની કાળજીપૂર્વક પ્રેસ કોપી હસ્તપ્રતોના આધારે પૂ. તપસ્વી મુનિવરશ્રીએ પંડિત બાબુભાઈ પાસે કરાવી હતી. તેઓશ્રીને આ ગ્રન્થ પ્રત્યે ખૂબ જ મમતા જાગી. પ્રેસ કોપી થતી ગઈ તેમ તેઓ વાંચતા ગયા અને સંવેગના રંગથી રંગાતા ગયા. સાથે તેઓને આયંબીલનો તપ પણ ચાલુ જ હતો. મોક્ષમાર્ગની આરાધનાની ગંભીર વાતો મોક્ષાર્થી જીવોને હૃદયંગમાં બની જાય એમાં શું નવાઈ?

પંડિત શ્રી બાબુભાઈનો સહયોગ સાધી તેઓશ્રીએ અથાગ પરિશ્રમથી આ ગ્રન્થનું સંશોધન સંપાદન કર્યું છે.

ગ્રન્થરત્નનું ગુણનિષ્પન્ન નામ :-

સંવેગરનો રંગ લગાડવા માટે આ ગ્રન્થ શાળા જેવો છે. સંવેગરંગ એટલે મુક્તિનો અભિલાષ, મોક્ષની લગની, મોક્ષ માર્ગની આરાધનાનો ભાવ, સુરનરના સુખોમાં દુઃખનું દર્શન, અને માત્ર એક મુક્તિના સુખનો અભિલાષ. સંસારના રંગને કારણે જીવો સંસારની ચાર ગતિમાં બે સીતમ ત્રાસ વેઠી રહ્યા છે. એ રંગને હઠાવી સંવેગનો રંગ લગાડવા તાલિમ-શિક્ષા જોઈએ. આ ગ્રન્થ, એ શિક્ષા આપતી શાળાની ગરજ સારે છે. એથી આ ગ્રન્થનું નામ યથાર્થ છે. ગ્રન્થના રચયિતા *જિનચંદ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજે* સુંદર વિષયોની પસંદગી કરી એની રજુઆત એવા માર્મિક શબ્દોમાં કરી છે કે વાંચતા હરકોઈ મોક્ષાર્થીને સંવેગનો રંગ લાગ્યા વિના અને સંસાર પ્રત્યે નફરત છુટયા વિના રહે નહીં.

ગ્રન્થ રચના માટે વિજ્ઞપ્તિ :-

આ *'સંવેગરંગશાળા'* ગ્રન્થની રચના માટે નવાંગી ટીકાકાર મહર્ષિ *શ્રીમદ્ અભયદેવસૂરીશ્વરજી મહારાજે* પોતાના વડિલ ગુરુબંધુ સૂરિશેખર *શ્રી જિનચંદ્રસૂરિશ્વરજી મહારાજ*ને વિનંતી કરી હતી. વિનંતી કરનાર મહાપુરુષનું જૈન શાસનમાં વિશિષ્ટકોટિનું સ્થાન અને માન હતું એટલે તેઓશ્રીની વિનંતી પણ વડિલ ગુરુબંધુ આગળ તેવો જ આદર પામે એમાં નવાઈ શી?

ગ્રન્થકાર મહર્ષિ :-

'સંવેગરંગશાળા' ના રચયિતા ગ્રન્થકાર મહર્ષિ *શ્રી જિનચંદ્રસૂરીશ્વરજી*નું જન્મસ્થાન માતાપિતા, જન્મ સંવત્, દીક્ષા સંવત્ અંગે ખાસ કશી માહિતી મળતી નથી પરંતુ *આચાર્ય મહારાજશ્રી દેવભદ્રસૂરીશ્વરજી*એ રચેલા મહાવીરચરિત્ર, કથારત્નકોષ તથા પાર્શ્વનાથ ચરિત્રની પ્રશસ્તિઓ માંથી સંવેગરંગશાળા તથા તેના રચયિતા અંગે કાંઈક માહિતી મળી શકે છે. તેથી એ પ્રશસ્તિઓના ઉપયોગી અંશોનું અહિં ગુજરાતી અવતરણ આપવામાં આવે છે. જે જિજ્ઞાસુઓને કાંઈક સંતોષપ્રદ થશે.

"વિશિષ્ટ ગુણરત્નોના ભંડાર, મિથ્યાત્વરૂપ અંધકારથી અંધ બનેલા લોકો માટે સૂર્યસમા અને દૂર ફગાવી દીધો છે વૈરભાવ જેમણે એવા *શ્રી વજ્રસ્વામી મહારાજા* થયા. તેઓશ્રીની પરંપરામાં ચાંદ્રકુલમાં મુનિઓના નાયક *શ્રી વર્ધમાનસૂરિ* નામના આચાર્ય થયા. તેઓ અનુપમ ઉપશમભાવના ઉત્પત્તિસ્થાન સમા અને સંયમગુણના ભંડાર હતા. મહાદેવના અટ્ટહાસ્ય જેવા ઉજ્વળ યશથી સાધી (ભરી) દીધી છે. દિશાઓ જેમણે એવા તે મુનિપતિને જગતમાં પ્રસિદ્ધ, સૂર્યચંદ્ર જેવા બે વિશિષ્ઠ શિષ્યો હતા. તેમાંના પહેલા શિષ્ય *શ્રીજિનેશ્વરસૂરિ* સંસારસાગરના મોજાઓથી ખળભળી ગયેલા ભવ્યજીવોને તારવા સમર્થ મોટા જહાજ સમાન હતા. અને બીજા શિષ્ય પૂર્ણિમાના ચંદ્ર જેવા સુંદર પ્રશંસાપાત્ર બુદ્ધિવાળા અને વ્યાકરણ તેમજ છંદશાસ્ત્રના રચયિતા *બુદ્ધિસાગરસૂરિ* નામના હતા. એકાંતવાદનો વિલાસ કરી રહેલા વાદીરૂપ હરણીયાઓના નાશ માટે સિંહસમાન એ *બુદ્ધિસાગરસૂરિ*ના પહેલા શિષ્ય *જિનચંદ્રસૂરિ* થયા. તેમણે સંવેગરંગશાળાની રચના કરી. એ કેવળ કાવ્યરચના નથી કરી પણ ભવ્યજીવોને આશ્ચર્ય પમાડનારી સંયમપ્રવૃત્તિ કરી છે. *બુદ્ધિસાગરસૂરિ*ના બીજા શિષ્ય સ્વપર શાસ્ત્રના જ્ઞાતા, વિશુદ્ધ સિદ્ધાન્તની પ્રરૂપણા કરવામાં કુશળ, અને સમગ્ર પૃથ્વીમંડળમાં પ્રસિદ્ધ અભયદેવસૂરિ થયા. જેઓએ નવાંગવૃત્તિ રચવા વડે કરીને અલંકારને ધારણ કરનારી, લક્ષણવંતી, સુંદરપદોવાળી એવી *'સરસ્વતી'*ને સ્ત્રીની જેમ પ્રસન્ન બનાવી. તેમના શિષ્ય પ્રસન્નચંદ્રસૂરિ થયા. જેઓ ચંદ્રની જેમ લોકોના મનને આનંદ આપનારા અને સઘળાય શાસ્ત્રોના અર્થને સમજાવવામાં નિપુણબુદ્ધિવાળા હતા. તેમના કહેવાથી સુમતિવાચકના શિષ્યલેશ નામના શિષ્ય *ગુણચંદ્રગણિ*એ આ વીરચરિત્ર રચ્યું. તેમજ સુંદર અને આશ્ચર્યકારક લક્ષણોથી યુક્ત *સિદ્ધ* અને *વીર* નામના ભાઈઓ કે જેઓ આ (વીર) તીર્થપતિ પ્રત્યે પૂર્ણભક્તિ ધારણ કરનારા હતા તેઓએ બાળ જીવો સમજી શકે એવું આ ચરિત્ર રચાવ્યું. વિ. સં. ૧૧૩૯ના જેઠ સુદ-૩ ને સોમવારે આ ચરિત્ર રચના સમાપ્ત થઈ."

— ગુણચંદ્રગણિરચિત મહાવીર ચરિત્રની પ્રશસ્તિનું અવતરણ.

"ચાંદ્રકુલમાં ગુણગણથી વૃદ્ધિ પામતા *શ્રી વર્ધમાનસૂરિ*ના શિષ્યો *જિનેશ્વરસૂરિ* અને *બુદ્ધિસાગરસૂરિ* થયા. તેમના *જિનચંદ્રસૂરિ* અને *અભયદેવસૂરિ* નામના શિષ્યો શીત-ઉષ્ણ કિરણોથી ચંદ્ર-સૂર્યની જેમ જગતમાં પ્રસિદ્ધ હતા. તેમના શિષ્ય સઘળાય શાસ્ત્રોના અર્થમાં પાર પામેલી છે મતિ જેમની એવા નામથી અને અર્થથી પ્રસન્નચંદ્રસૂરિ થયા. તેમના સેવક અને સુમતિવાચકના શિષ્યલેશ-નામના શિષ્ય દેવભદ્રસૂરિએ આ કથારત્નકોષ રચ્યો. સંઘમાં ધુરંધર ગણાતા સિદ્ધ અને વીર નામના ભાઈઓની વિનંતીથી ચરમતીર્થંકર શ્રી વીરભગવાનનું ચરિત્ર રચ્યું અને વળી જેમણે સંવેગરંગશાળા નામનું આરાધનારત્ન (શાસ્ત્ર) પરિકર્મિત-સંસ્કારિત કરીને ભવ્યજીવોને યોગ્ય બનાવ્યું. અને અમલચંદ્ર ગણિએ એની પહેલી પ્રતિ (પ્રથમાદર્શ) વિ.સં. ૧૧૫૮ માં લખી"

— દેવભદ્રાચાર્યરચિત કથારત્નકોષની પ્રશસ્તિનું અવતરણ.

"તે ભગવાનનું ઈન્દ્રોને પણ વંદનીય શાસન ચાલતું હતું ત્યારે ચાંદ્રકુલમાં મોટી ગણાતી વજ્રશાખામાં પ્રસિદ્ધ અને જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર ગુણનિધિ *શ્રી વર્ધમાનસૂરિ* થયા. જેમનું નામ સાંભળતાંની સાથે લોકો રોમાંચ અનુભવતા હતા. તેમને જગતમાં પ્રસિદ્ધ, સૂર્ય-ચંદ્ર જેવા આચાર્ય *જિનેશ્વરસૂરિ* અને *બુદ્ધિસાગરસૂરિ* નામના શિષ્યો હતા. તેમને વળી પૃથ્વીતલમાં પ્રસિદ્ધ *જિનચંદ્રસૂરિ* અને *અભયદેવસૂરિ* નામના શિષ્યો હતા. સિદ્ધાંતની સંસ્કૃત ટીકાઓ-વિવેચનાઓ રચીને જેમણે ભવ્યજીવો ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. તે *અભયદેવસૂરિ*ના ગુણલવને પણ વિસ્તૃત કરવા કોણ સમર્થ છે? તેમના શિષ્ય સર્વગુણના વિધાન *પ્રસન્નચન્દ્રસૂરિ* હતા. તેમના ચરણ કમલને સેવતા અને વાચક સુમતગણિના શિષ્યે સંવેગરંગશાળા નામનું આરાધનાશાસ્ત્ર જગતમાં પ્રસિદ્ધ કર્યું. તેમજ વીરચરિત્ર અને કથારત્નકોષની રચના કરી. સોનાના દંડા (કળશ)થી શોભતા *મુનિસુવ્રતસ્વામી*ના મંદિરથી તેમજ વીર પરમાત્માના મંદિરથી શોભતા ભરૂચમાં આમદત્ત ના મંદિર (ઘર)માં રહેલા *દેવભદ્રસૂરિ*એ આ પાર્શ્વનાથ

ચરિત્ર રચ્યું. એનું પ્રથમ પુસ્તક *અમલચંદ્ર ગણિ*એ વિ.સં. ૧૧૬૮માં લખ્યું. આમાં જે કાંઈ અનુચિત હોય તેની આચાર્યોએ ક્ષમા આપવી અને એને સુધારી લેવું."

—દેવભદ્રીય પાર્શ્વનાથ ચરિત્રની પ્રશસ્તિનું અવતરણ.

આ ઉપરાંત સંવેગરંગશાળા ગ્રન્થની પુષ્પિકા પણ જોવા જેવી છે તે આ પ્રમાણે છે :–

"*શ્રીમદ્ જિનચંદ્રસૂરિ*એ રચેલી અને તેમના શિષ્ય *પ્રસન્નચન્દ્રસૂરિ*ની અભ્યર્થનાથી ગુણચંદ્રગણિથી પરિષ્કાર પામેલી તેમજ જિનવલ્લભગણિથી સંશોધિત થયેલી સંવેગરંગશાળા આરાધના સમાપ્ત થઈ."

આ ત્રણે પ્રશસ્તિઓ તથા સંવેગરંગશાળા ગ્રન્થની પુષ્પિકા ઉપરથી ફલિત થાય છે કે આ ગ્રન્થના રચયિતા *જિનચંદ્રસૂરિ* છે. તેઓ *વજસ્વામી*ની પરંપરામાં થયેલ *બુદ્ધિસાગરસૂરિ*ના શિષ્ય હતા. આ ગ્રન્થની રચના કર્યા પછી તેમના શિષ્ય *પ્રસન્નચન્દ્રસૂરિ*ના કહેવાથી સુમતિવાચકના શિષ્ય *શ્રી ગુણચંદ્રગણિ*એ (આચાર્ય થયા પછી દેવભદ્રસૂરિ નામ) એને સંસ્કારયુક્ત બનાવી અર્થાત્ સુધારો વધારો કરી સંકલિત કરી અને જિનવલ્લભગણિએ તેનું સંશોધન કર્યું.

જૈન સાહિત્યના ઈતિહાસમાં મોહનલાલ દલિચંદ દેસાઈએ આ ગ્રંથના રચયિતા તરીકે *દેવભદ્રસૂરિ*નો નિર્દેશ કર્યો છે. તે ઉપરની પ્રશસ્તિઓથી બિનપાયાદાર ઠરે છે.

ગ્રન્થવસ્તુ :–

મહસેન રાજા ભગવાન મહાવીરદેવના સ્વહસ્તે દીક્ષિત થયેલા રાજર્ષિ હતા. તેમણે ભગવાન મહાવીર પરમાત્માનું નિર્વાણ સાંભળ્યું. આથી તેમને અંતિમ સમયે વિશેષ આરાધના કરવાનો મનોરથ ઉત્પન્ન થયો. તેમણે ગણધર મહારાજા શ્રી ગૌતમસ્વામીજીને વિશેષ આરાધના કઈ રીતે કરવી તે માટે પૂછ્યું. તેના જવાબમાં મહસેન રાજર્ષિને ઉદ્દેશીને, ચતુર્વિધ સંઘ સામાન્ય તેમજ વિશેષ આરાધના કઈ રીતે કરી શકે તે વિષયનું નિરૂપણ શ્રી ગૌતમસ્વામીજી કરે છે. તે આરાધનાનો અધિકાર ગ્રન્થકાર મહર્ષિ જિનચન્દ્રસૂરિ મહારાજા સંવેગરંગશાળામાં પોતાના લઘુ ગુરુબંધુ નવાંગીટીકાકાર શ્રી અભયદેવસૂરિ મહારાજાની વિનંતીથી વર્ણવે છે.

આમાં સામાન્ય-વિશેષરૂપે જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને તપની આરાધના ચાર સ્કંધ રૂપે સાધુ ભગવંતો તથા ગૃહસ્થો-શ્રાવકોના દૃષ્ટાન્તોપૂર્વક વર્ણવી છે. ત્યાર બાદ મોક્ષનગરમાં પ્રવેશ કરવામાં કારણરૂપ વિશેષ આરાધનાનાં ચાર મૂળદ્વારો આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યાં છે.

(૧) પરિકર્મવિધિ (૨) પરગણસંક્રમણ (૩) મમત્વવિચ્છેદ (૪) સમાધિલાભ

૧. પહેલા પરિકર્મવિધિદ્વારના ૧૫ પેટાદ્વારો નીચે મુજબ છે.

૧. અરિહ દ્વાર :– અરિહ એટલે યોગ્ય આરાધનાને લાયક કોણ થઈ શકે તેનું વર્ણન કરી ગૃહસ્થમાં વંકચૂલનું અને સાધુમાં ચિલાતીપુત્રનું દૃષ્ટાન્ત આપ્યું છે.

૨. લિંગ દ્વાર :– ગૃહસ્થ માટે તેમજ સાધુ માટે આરાધનામાં ઉપયોગી વેષ-પહેરવેશનું વર્ણન કર્યું છે. સાધુને મુહપત્તિ, રજોહરણ, શરીરને કાર્યોત્સર્ગદ્વારા વોસિરાવવું, અચેલપણું તથા કેશલોચનું સ્વરૂપ જણાવી લિંગયુક્ત તથા ગુણયુક્ત હોવા છતાં ગુરુ ઉપર દ્વેષ કરનાર આરાધક બનતો નથી. આ વિષય પર ફૂલવાલક મુનિનું દૃષ્ટાત વર્ણવ્યું છે..

૩. શિક્ષાદ્વાર :– સાધુ અને શ્રાવકને ઉદ્દેશીને ગ્રહણશિક્ષા અને આસેવનશિક્ષા દૃષ્ટાન્તો સાથે આપી છે. બન્ને શિક્ષાઓનું પરસ્પર સાપેક્ષપણું, મોક્ષ માટે તેની સાધના, શ્રાવકની સવારમાં ઉઠતા ભાવવાની ભાવના, દિનકૃત્ય તથા શ્રાવકના ગુણોનું વિવેચન છે.

૪. વિનયદ્વાર :– વિનયનું મહત્ત્વ દૃષ્ટાન્તો સાથે વર્ણવ્યું છે.

૫. સમાધિદ્વાર :– સમાધિના પ્રકારો, તેનું સ્વરૂપ, સમાધિનું માહાત્મ્ય નમિરાજર્ષિના દૃષ્ટાન્તપૂર્વક વર્ણવવામાં આવ્યું છે.

૬. મનોઽનુશાસ્તિ દ્વાર :– મનને વસુદત્તના દૃષ્ટાન્તપૂર્વક શિખામણ આપવામાં આવી છે.

૭. અનિયતવિહાર દ્વાર :– અનિયતવિહારનું સ્વરૂપ તથા તેનો વિધિ વર્ણવવામાં આવ્યો છે.

૮. રાજ દ્વાર :– આ રાજાને આશ્રયીને અનિયતવિહાર દ્વાર છે. સ્વરાજ્યમાં તીર્થ-દર્શનથી લોકો ધર્મની પ્રશંસા કરે. તેઓને ધર્મની પ્રાપ્તિ, ભવના સ્વરૂપનું ચિંતન, દેવગુરુ આદિ ધર્મ-સામગ્રીની દુર્લભતાનો ખ્યાલ, ઉત્તમ મનોરથો, યતિને વસતિદાન, આ લોક પરલોકમાં વસતિદાનના

	લાભો, સાધુ અને શ્રાવક માટેનો લાભ વિધિ, તેના ગુણોનું વર્ણન, દુર્ગતાનારી તથા ક્ષુલ્લકમુનિનું દૃષ્ટાન્ત અને દર્શનવિશુદ્ધિ આદિ છ ગુણોનું વર્ણન કર્યું છે.
૯. પરિણામ દ્વાર :–	આ દ્વાર તેના આઠ પેટાદ્વારોના વર્ણનપૂર્વક સાધુ-શ્રાવકને આશ્રયીને વર્ણવ્યું છે. તેમાં (૧) આ ભવ પરભવના ગુણની વિચારણા (૨) પુત્રને શિખામણ (૩) કાલવિગમન-શ્રાવકની પ્રતિમાઓ (૪) પુત્રને સમજાવવું-પુત્રપ્રતિબોધ (૫) સુસ્થિત ઘટના (૬) આલોચનાદાન (૭) આયુષ્યનું પરિજ્ઞાન (૮) અનશન-સંથારા દીક્ષાનો સ્વીકાર વગેરે બાબતોનો તથા તેને લગતા વિષયો-ધર્મજાગરિકા, ધર્મારાધનાના શુભ મનોરથો, પુત્રને શિખામણ નહિ આપવામાં વજ અને કેસરીનું દૃષ્ટાંત, કાલવિગમનની શરૂઆત અને તેમાં પૌષધશાળાકરણ, મુનિસેવન દર્શન આદિ શ્રાવકની ૧૧ પ્રતિમાનું વર્ણન, સમ્યક્ત્વ વગર ધર્માનુષ્ઠાનની નિષ્ફળતા-અંધપુત્રનું દૃષ્ટાંત, સામાયિકના પાંચ ગુણોનું વર્ણન, સાધારણ દ્રવ્યના ઉપયોગ માટેના દસ સ્થાનોનું સુંદર વર્ણન, આલોચનાના વિષયોનું સ્વરૂપ-આયુષ્યપરિજ્ઞાનના દ્વારો. ૧. દેવતા ૨. શુકન ૩. ઉપશ્રુતિ ૪. છાયા ૫. નાડી ૬. નિમિત્ત ૭. જ્યોતિષ ૮. સ્વપ્ન ૯. અરિષ્ટ ૧૦. યંત્રપ્રયોગ ૧૧. વિદ્યાદ્વાર વિવેચવામાં આવ્યા છે.
૧૦. ત્યાગદ્વાર :–	સહસમલ્લના દૃષ્ટાંતપૂર્વક આ દ્વાર વિવેચ્યું છે.
૧૧. મરણ વિભક્તિદ્વાર :–	આ દ્વારમાં સત્તર પ્રકારના મરણનું સ્વરૂપ વર્ણવી તેમાંના વૈહાનસ અને ગૃધ્રપૃષ્ઠ મરણ ઉપર જયસુંદર-સોમદત્તનું દૃષ્ટાંત આપ્યું છે.
૧૨. અધિગત મરણદ્વારા :–	આમાં પંડિત મરણનું માહાત્મય ગાઈને તેના પર નંદ અને સુંદરીની રસમય કથા આપી છે. પંડિત મરણનો પ્રભાવ-ફળ વગેરે દર્શાવી આ દ્વાર પૂર્ણ કરવામાં આવ્યું છે.
૧૩. શીતિદ્વાર :–	શીતિદ્વાર અર્થાત્ શ્રેણિદ્વાર. આમાં શ્રેણિના વર્ણનમાં ભાવશ્રેણિ ઉપર સ્વયંભૂદત્તનું દૃષ્ટાંત આપવામાં આવ્યું છે.
૧૪. ભાવનાદ્વાર :–	કંદર્પી વિગેરે ભાવનાઓનું સ્વરૂપ વર્ણવ્યું છે. પ્રશસ્ત અપ્રશસ્ત ભાવનાઓના પ્રકારો પુષ્પચૂલ વગેરેના દૃષ્ટાંતો સાથે નિર્દેશ્યા છે.
૧૫. સંલેખનાદ્વાર :–	આમાં અનશનનો વિધિ તથા ગંગદત્તનો પ્રસંગ આપ્યો છે.

૨. બીજા પરગણસંક્રમણદ્વારના ૧૦ પેટા દ્વારો આ પ્રમાણે છે.

૧. દિશાદ્વાર :–	આ દ્વારનું સ્વરૂપ વર્ણવી દિશાનો અવગ્રહ (આચાર્ય પદ) નહિ આપવા ઉપર શિવભદ્રસૂરિનું દૃષ્ટાંત.
૨. ક્ષામણાદ્વાર:–	દ્વારના સ્વરૂપનું વર્ણન તથા ક્ષમાપના નહિ આપવા ઉપર નયશીલસૂરિનું દૃષ્ટાંત.
૩. અનુશાસ્તિદ્વાર :–	દ્વારના સ્વરૂપનું વિવેચન, સ્ત્રીસંગના દોષો-સંસર્ગજન્ય દોષોનું વર્ણન અને એના પર સુકુમાલિકાનું દૃષ્ટાંત આપ્યા બાદ (૪) પરગણસંક્રમણવિધિદ્વારનું સ્વરૂપ, (૫) સુસ્થિતગવેષણાદ્વાર, (૬) ઉપસંપદાદ્વાર, (૭) પરીક્ષાદ્વાર, (૮) પ્રતિલેખનાદ્વાર, (૯) પૃચ્છાદ્વાર તથા (૧૦) પ્રતિપૃચ્છાદ્વારનું સ્વરૂપ વર્ણવી બીજા પરગણસંક્રમણદ્વારની પૂર્ણાહુતિ કરવામાં આવી છે.

૩. ત્રીજા મમત્વવિચ્છેદ દ્વારના નવ પેટા દ્વારો નીચે મુજબ છે.

(૧) આલોચનાવિધાન (૨) શય્યા (૩) સંસ્તારક (૪) નિર્યામક (૫) દર્શન (૬) હાનિ (૭) પ્રત્યાખ્યાન (૮) ખમાવવું (૯) ખમવું. આ દ્વારોના સ્વરૂપનું વર્ણન છે.

આલોચના વિધાનદ્વારના ૧૦ પેટાદ્વાર

૧. કેટલા કાળે આલોચના આપવી, ૨. કોને આપવી, ૩. કોણે આપવી, ૪. નહિ આપવામાં ક્યા દોષો, ૫. આપવામાં ક્યા ગુણો, ૬. કેવી રીતે આપવી, ૭. આલોચનાનો વિષય, ૮. ગુરુએ કેવી રીતે અપાવવી, ૯. પ્રાયશ્ચિત્ત, ૧૦. ફળ-આ દ્વારોના સ્વરૂપવર્ણન પ્રસંગે આચાર્ય મહારાજના ૩૬ ગુણોનું વર્ણન અને ક્ષામણાદ્વાર ઉપર ચંડરુદ્રાચાર્યનું દૃષ્ટાંત આપી બાકીના શય્યાદિ દ્વારોનું સ્વરૂપ સમજાવી આ ત્રીજું દ્વાર પૂર્ણ કરવામાં આવ્યું છે.

૪. ચોથા સમાધિલાભદ્વારના નવ પેટા દ્વારો નીચે મુજબ છે.

(૧) અનુશાસ્તિદ્વાર, (૨) પ્રતિપત્તિદ્વાર, (૩) સારણાદ્વાર, (૪) કવચદ્વાર, (૫) સમતાદ્વાર (૬) ધ્યાનદ્વાર, (૭) લેશ્યાદ્વાર, (૮) ફળદ્વાર, (૯) વિજહનાદ્વાર.

અનુશાસ્તિદ્વારમાં એના ૧૮ પેટાદ્વારોનું વર્ણન છે. તે દ્વારો આ પ્રમાણે છે.

૧. અઢાર પાપસ્થાનક, ૨. આઠમદસ્થાન, ૩. ક્રોધાદિ કષાયો, ૪. પ્રમાદદ્વાર, ૫. પ્રતિબંધ, ૬. સમ્યક્ત્વસ્થિરત્વ, ૭. અરિહંતાદિષટ્કભક્તિમાનપણું, ૮. પંચનમસ્કારમાં તત્પરપણું, ૯. સમ્યગ્જ્ઞાનોપયોગ, ૧૦. પંચમહાવ્રત, ૧૧. ક્ષપકને ચતુઃશરણગમન, ૧૨. દુષ્કૃતગર્હાકરણ, ૧૩. સુકૃત અનુમોદના, ૧૪. બાર ભાવના, ૧૫. શીલપાલન, ૧૬. ઈન્દ્રિયદમન, ૧૭. તપમાં ઉદ્યમ, ૧૮. નિઃશલ્યતા.

આ બધાં દ્વારો દૃષ્ટાંતો સાથે વર્ણવ્યાં છે. તે પછી પ્રતિપ્રત્તિ વગેરે દ્વારોનું વિવેચન કર્યું છે અને અંતે મહસેન રાજર્ષિના મનોરથો અને તેમણે કરેલો અનશનનો પ્રારંભ, તેમની ઈન્દ્રે કરેલી પ્રશંસા અને દેવાદિએ કરેલા ઉપસર્ગો અને તેમાં રાજર્ષિનું નિશ્ચલપણું રાજર્ષિના ભાવિભવનું વર્ણન કરી, ગ્રન્થકર્ત્તાએ પોતાના ગુર્વાદિની પરંપરા દર્શાવીને ગ્રન્થની સમાપ્તિ કરી છે.

બારમા સૈકાના બહુશ્રુતગીતાર્થ સંવિગ્નશિરોમણિ આચાર્ય ભગવંત શ્રી જિનચંદ્રસૂરિ મહારાજે રચેલ, શ્રી સંઘના પરમપુણ્યોદયે સ્વ. આ. વિજયમનોહરસૂરિ મહારાજ સાહેબના પરમ વિનેય શિષ્યરત્ન પં. વિબુધવિજયજી ગણિવરની શુભ પ્રેરણાથી તેમના ગુરુભાઈ પરમતપસ્વી મુનિભગવંત શ્રી હેમેન્દ્રવિજયજી તથા પંડિત બાબુભાઈ સવચંદના સંશોધન-સંપાદનથી આ મહાન ગ્રન્થ શ્રીસંઘના કરકમલમાં આવી રહ્યો છે. એક પણ મોક્ષાર્થી આત્મા આ ગ્રન્થના વાંચન-શ્રવણથી બાકાત ન રહે. વ્યાખ્યાનમાં પણ આ ગ્રન્થ સર્વત્ર વંચાય અને વર્તમાનકાલીન શ્રીસંઘને ભગવાન જિનેશ્વરદેવના માર્ગની આરાધનાનું જ્ઞાન અને શ્રદ્ધાબળ પ્રાપ્ત થાય એજ એક અભિલાષા.

સિદ્ધાંતમહોદધિ પ. પૂ. સ્વર્ગત
આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય પ્રેમસૂરીશ્વરજી
મહારાજાનો પ્ર. પ્ર. શિષ્યાણુ મિત્રાનંદવિજય

ખંભાત
દહેવાણનગર, ઢોકળ કુઈ,
પોષ સુદ ૬.

સંપાદકીય

'સંવેગરંશાળા'નું સંશોધન-સંપાદન કરતાં પરમાત્માના શાસન પ્રત્યે અમારા અંતરમાં જે અહોભાવ પ્રગટ્યો છે તેનો અનુભવ અમે જ કરી રહ્યા છીએ. જગતને એ કેવી રીતે બતાવીએ? કારણ, શબ્દ દ્વારા એનું વર્ણન કરવું અતીવ મુશ્કેલ છે. પણ અમને ખાત્રી છે કે આ ગ્રન્થનું જે કોઈ નિકટ મુક્તિગામી આત્મા વાંચન કરશે તેને જરૂર જૈનશાસન પ્રત્યે અને શાસનના સ્થાપક અરિહંતદેવો પ્રત્યે અહોભાવ પ્રગટશે.

આ ગ્રન્થની સુંદર વિષય-સંકલના અને મોક્ષમાર્ગનું મૌલિક વિવેચન જોતાં એમ લાગ્યું કે હવે પૂ. આચાર્ય ભગવંતો તથા વિદ્વાન મુનિપ્રવરો આદિ આ ગ્રન્થ વ્યાખ્યાનમાં વાંચે તો આજે જે ધર્મશ્રદ્ધાના પાયા હચમચી ગયા જેવું દેખાય છે તે પાછા સુસ્થિર બની જાય. જૈન શાસનની માર્મિકતાને દર્શાવતો આ ગ્રન્થ એક આરિસા સમો છે. પથ્થરદિલમાં પણ સંવેગરસની સેર પ્રગટાવવાની શક્તિ આ ગ્રન્થમાં છે.

સૂરિશેખર શ્રીજિનચંદ્રસૂરિવિરચિત સંવેગરંગશાળા ગ્રન્થનું સંપાદન અમે કરી શક્યા તે અમે અમારું અહોભાવ્ય સમજીએ છીએ. ગ્રન્થ અંગેનું વર્ણન આમુખ, પ્રસ્તાવના અને પ્રવેશમાં થયું છે. હજુ એનું વર્ણન કરવું હોય તો ઘણું થઈ શકે એમ છે. ગ્રન્થનું નામ જ એની મહત્તા પુરવાર કરે છે. પણ એ વિષયમાં અમે ઊંડા નહિં ઉતરતાં સંપાદન અંગે સંક્ષેપમાં નિવેદન કરીશું.

આ ગ્રન્થ પ્રથમ શ્રીજિનદત્તસૂરિ પ્રાચીન પુસ્તકોદ્ધાર ફંડ તરફથી ગ્રન્થાંક ૧૩ તરીકે સંસ્કૃત છાયા સાથે ૩૦૦૦ શ્લોક પ્રમાણ છપાયો હતો. પણ તેમાં મુદ્રણની તેમજ છાયા વિગેરેની અશુદ્ધિઓ હતી. આથી પૂ. મુનિરાજ શ્રી હેમેન્દ્રવિજયજી મહારાજ ૧૦,૦૫૩ શ્લોક પ્રમાણ સમગ્ર ગ્રન્થ છપાવવાની ભાવનાવાળા હતા. તેઓએ તેની પ્રેસકોપીનું કાર્ય લગભગ પાંચેક વર્ષ પહેલા મને (પં. બાબુભાઈને) સોંપ્યું હતું. અનેક કાર્યો વચ્ચે પણ ૨૦૨૨માં તે કાર્ય પૂર્ણ કરી પૂ. મુનિરાજશ્રીને મેં પ્રેસકોપી સોંપી. ત્યાર બાદ તેઓશ્રી આખી પ્રેસકોપી વાંચી ગયા. પૂ. આચાર્યદેવો આદિને વંચાવી. કેટલાક શક્તિ સ્થળો અમે બન્નેએ તાડપત્રની પ્રતની ફોટો કોપી ઉપરથી સુધાર્યાં છે. આ પ્રત જેસલમેરના ભંડારમાં લખાયેલી. જેની ફોટો ફીલ્મ આગમપ્રભાકર પૂ. મુનિરાજશ્રી પુણ્યવિજયજીએ પૂ. મુનિરાજ શ્રી હેમેન્દ્રવિજયજીને બતાવેલી. ત્યારબાદ આગમ પ્રભાકર પૂ. મુનિરાજશ્રી પુણ્યવિજયજીએ ફોટોફિલ્મ ઉપરથી ફોટો કોપી કરાવી આપી. જે ફોટો કોપી હાલ શ્રી જૈન વિદ્યાશાળાના ભંડારમાં હયાત છે.

આ ગ્રન્થની પ્રેસકોપી જૈન વિદ્યાશાળામાં સ્વ. સંઘસ્થવિર પ. પૂ. આ. દે. વિજયસિદ્ધિસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબના હસ્તલિખિત ભંડારની હસ્તલિખિત પ્રત ઉપરથી કરવામાં આવી હતી. પ્રેસકોપી કરતી વખતે બીજી એક પ્રત પૂ. આગમપ્રભાકર મુનિરાજશ્રી પુણ્યવિજયજી તરફથી મળી હતી પણ તે બહુ મદદરૂપ બની શકી ન હતી.

સંશોધનમાં બે પ્રતિઓનો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો છે. (૧) જેસલમેરના ભંડારની પ્રતની ફોટોકોપી જેનો ઉલ્લેખ અમે ઉપર કરેલ છે. (૨) હસ્તલિખિત પ્રત પાનાં ૨૩૩, પ્રત નં. ૪૬૭૫ આગમ પ્રભાકર મુનિરાજ શ્રી પુણ્યવિજયજી તરફથી મળેલી.

આ રીતે પ્રેસકોપી કરતી વખતે બે પ્રતિઓ અને સંશોધન કરતી વખતે બીજી બે પ્રતિઓના આધારે આ ગ્રન્થનું મેટર અમે તૈયાર કરેલ છે.

આ ગ્રંથની રચના વિ.સં. ૧૧૨૫માં થયેલ છે. અને જે પ્રતિ ઉપરથી અમે સંપાદન કર્યું તે વિ.સં. ૧૨૦૩ માં લખાયેલી છે આથી ગ્રન્થકારના સમયની નજીકના જ સમયની પ્રતિ મળી જવાથી આ સંપાદન પ્રાયઃ શુદ્ધ થઈ શક્યું હશે એવી અમારી ધારણા છે. જો કે કેટલાંક શક્તિ સ્થળો જેનો નિર્ણય કરી શક્યા નથી તે એમને એમ જ રહેવાં દીધાં છે પણ તે બહુ જ અલ્પ છે.

આ સંપાદનમાં પૂ. આચાર્ય દેવો આદિ, આગમપ્રભાકર પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી પુણ્યવિજયજી તથા અન્ય મહાનુભાવોએ જે સહકાર આપ્યો છે તે સર્વના અમે ઋણી છીએ. આ મહાન ગ્રન્થના સંપાદનમાં ઘણી ઘણી કાળજી રાખવા છતાં મંદમતિપણાથી, દ્રષ્ટિદોષથી અથવા પ્રેસદોષ આદિથી જે કાંઈ ક્ષતિઓ રહી ગઈ હોય તે બદલ મિથ્યાદુષ્કૃત અપર્ણ કરીએ છીએ.

દસ હજાર શ્લોક પ્રમાણ આ સંવેગરંગશાળા ગ્રન્થ પોતાના નામ પ્રમાણે અદ્ભુત આત્મિક સુખને અપાવનારો ગ્રન્થ છે. આ શાસ્ત્રે અમારા માટે તો દીપકની ગરજ સારી છે. આનું સંપાદન કરતા અમને એમાંથી દિવ્ય પ્રકાશ મળ્યો છે. દરેક મોક્ષાર્થી જીવોને એક વાર લક્ષપૂર્વક વાંચવા અથવા સાંભળવાની અમારી ખાસ વિનંતિ છે.

લી. સંપાદકો

વૈશાખ શુક્લ તૃતીયા
અમદાવાદ.

સ્વ. આચાર્યદેવ વિજયમનોહરસૂરિ-શિષ્યાણુ
હેમેન્દ્રવિજય
પં. બાબુભાઈ સવચંદ શાહ

अनुक्रमणिका

विगत	पृष्ठ
मङ्गलाचरणम्	१
संसारवने धर्मदुर्लभता	२
आराधनाधिकारी स्वरूपम्	२
रचनाप्रयोजनम्	३
नगरीवर्णनम्	३
महसेननृपवर्णनम्	४
नृपक्रीडावर्णनम्	४
पुरुषागमनम्	५
नृपपश्चात्तापः	७
पूर्वभववर्णनम्	७
पुण्यपापस्वरूपचिन्तनम्	९
महसेनं जातिस्मरणज्ञानस्य प्राप्तिः	१०
महसेननृपचिन्तनम्	११
श्री वीरजिनागमनम्	१२
धर्मदेशना	१३
क्षमायाचना हितशिक्षावर्णनम्	१४
विषविकार वर्णनम्	१४
पुत्रानुशास्तिः	१५
देव्यनुशास्तिः	१६
दीक्षा हेतुप्रयाणः	१६
दीक्षाग्रहणम्-प्रभुद्वारानुशास्तिः	१७
श्रीगौतमगणधर. स्तुतिः	१७
श्रीगौतमधर्मोपदेशः	१७
आराधनास्वरूपम्	
सामान्यआराधना स्वरूपम्	१८
दर्शन सामान्याराधना	१८
चारित्रस्य सामान्याराधना	१८
सामान्यतपाराधना	१९
संक्षेपविशेषाराधना स्वरूपम्	१९
मधुनृपदुष्टान्तः	१९
सुकोशलनृप दृष्टान्तः	२०
विस्तृत आराधना स्वरूपम्	
चतुर्थः मूलद्वारनामानि	२१
मरुदेवा दृष्टान्तः	२२
मुनिमहसेनस्य पृच्छा	२२
क्षुल्लकमुनि दृष्टान्तः	२२
प्रथम परिकर्मविहिद्वारेपन्द्रहः प्रतिद्वारम्	२४
प्रथम अर्हद्वारवर्णनम्	२४
वङ्कचुल दृष्टान्तः	२५
वङ्कचुलनियमग्रहणम्	२७
नियमप्रतिपालनम्	२८
चिलातिपुत्र दृष्टान्तः	३४
आराधनाधिकारो वर्णनम्	३४
द्वितीय लिङ्गद्वारवर्णनम्	३५
मुहपत्त्यादिलिङ्गप्रयोजनम्	३५
कुलवालकस्य दृष्टान्तः	३६
तृतीय शिक्षाद्वार स्वरूपम्	३८
सुरेन्द्रदत्तस्य दृष्टान्तः	३९
आसेवनशिक्षा स्वरूपम्	४१
ज्ञानक्रिया सापेक्ष उपादेयता	४२
आर्यमङ्गू आचार्य दृष्टान्तः	४२
अङ्गारमर्दकस्य दृष्टान्तः	४३
ग्रहण-आसेवन शिक्षाभेदाः	४३
साधु-गृहस्थाभ्यो सामान्य आचारधर्मः	४३
गृहस्थस्य विशेषाराधना	४४
साधुविशेषाराधनाः	४५
चतुर्थ-विनयनामकद्वारम्	४६
श्री श्रेणिकनृप दृष्टान्तः	४६
स्तेनप्राप्तये अभयकथित	
जीर्णश्रेष्ठिकन्याकथा	४७
कन्याकथायाः भावोपलम्भद्वारेण	
स्तेनप्राणप्राप्तिः विद्यादानस्वीकारश्च	४८
समाधि नामक पञ्चमद्वारवर्णनम्	४९
नमिराजर्षि दृष्टान्तः	४९
षष्टम् मनः अनुशास्तिद्वारं	५२
वसुदत्त दृष्टान्तः	५७
अनियतविहारनामक सप्तमद्वारवर्णनम्	५८
दुर्गतानारी दृष्टान्तः	६०
अनियतविहारकरणे गुणाः	६१
श्रीसेलकसूरि दृष्टान्तः	६१
नृपस्यानियतविहार नामकाष्टमद्वारवर्णनम्	६२
वसतिदानस्यगुणाः	६४
वसतिदाने ताराचन्द कुरुचन्द दृष्टान्तः	६६
परिणाम नामक नवमद्वारम्	७१
धर्मजागरिकाः इहभव-परभव हितचिन्तनम्	७१
पुत्रशिक्षादापनम्	७२
पुत्रस्याशिक्षणे दोषोपरि वज्रकेसरि दृष्टान्तः	७३
कालनिर्गमनद्वारम्	७५
एकादश पडिमावर्णनम्	७६
मिथ्यात्वे अन्धपुत्रस्य दृष्टान्तः	७७
साधारणद्रव्यविषयवर्णनम्	७८
जिन भवन	७९
जिनबिम्ब	७९
साधारणद्रव्यव्ययविषये जिनपूजा	८०
आगमलेखन	८०
साधु-साध्वी स्वरूपम्	८०
साधारणद्रव्यव्ययविषये श्रावक-श्राविका स्वरूपम्	८१
साधारणद्रव्यव्ययविषये पौषधशाला स्वरूपम्	८२
दर्शनकार्यस्वरूपम्	८२
चतुर्थः पुत्रप्रतिबोधकद्वारम्	८३
पंचम सुस्थितघटनाद्वारम्	८४
षष्टम् आलोचनाद्वारम्	८६
सप्तमम् आयुपरिज्ञानद्वारम्	८६
सप्तमम् आयुः परिज्ञानद्वारे	
एकादशप्रतिद्वारवर्णनम्	८७
अनशन प्रतिपत्तिद्वारम्	९४
परिणामद्वारम्	९४
त्यागद्वारवर्णनम्	९५
सहस्रमल्ल दृष्टान्तः	९६
मरणविभक्तिद्वारम्	९७
जयसुंदर सोमदत्त दृष्टान्तः	९७
उदायिनृपः दृष्टान्तः	९९
अधिगतमरणद्वारम्	१०१
सुन्दरीनन्ददृष्टान्तः	१०२
श्रेणिद्वारम्	१०५
स्वयम्भूदत्त दृष्टान्तः	१०६
भावनाद्वारम्	१०८
पुष्पचुल दृष्टन्तः	११०
आर्यमहागिरि दृष्टान्तः	११०
एडकाक्षनगरोत्पत्तिवर्णनम्	१११
दशार्णकूटस्य गजाग्रपदनामोत्पत्तिः	११२
संलेखनाद्वारम्	११२
गङ्गदत्तस्य दृष्टान्तः	११५
परगणसंक्रमनामक द्वितियद्वारम्	११८
प्रथम दिशाद्वारम्	११८
आचार्यस्य योग्यतावर्णनम्	११८
शिवभद्राचार्य दृष्टान्तः	११९
क्षामणाद्वारम्	१२०
क्षमापनाद्वारम्	१२०
नयशीलसूरि दृष्टान्तः	१२१

विगत	पृष्ठ
तृतीय अनुशास्तिद्वारम्	१२२
महिलासङ्गे दोषाः	१२४
सुकुमारिका दृष्टान्तः	१२५
सिंहगुफावासीमुनि दृष्टान्तः	१२५
प्रवर्त्तिन्यैः अनुशास्तिः	१२६
साध्वीवर्गानुशास्तिः	१२६
वैयावृत्तस्य माहात्म्यम्	१२७
संसर्गजन्यगुणदोषणवर्णनम्	१२८
शिष्यस्य गुरुं प्रति कृतज्ञता	१२६
परगणसंक्रमणाय अनुमतियाचनम्	१२६
सुस्थितगवेषणाद्वारम्	१३१
उपसंपद्द्वार स्वरूपम्	१३३
परीक्षाद्वार स्वरूपम्	१३३
प्रतिलेखनाद्वार स्वरूपम्	१३४
हरिदत्तमुनि दृष्टान्तः	१३४
पृच्छाद्वारम्	१३६
प्रतीच्छाद्वारम्	१३७
ममत्वव्युच्छेदद्वारम्	१३८
आलोचनाविधानद्वारम्	१३८
लज्जाअत्यागे–त्यागे कपिलविप्रदृष्टान्तः	१४०
आलोचनाविधानद्वारम्	१४१
सुरतेजनरसुन्दरयोः दृष्टान्तः	१४४
द्वितीय शय्याद्वारम्	१४७
गिरिसुयजुगल दृष्टान्तः	१४७
तृतीय संस्तारकद्वारम्	१४८
गजसुकुमाल दृष्टान्तः	१५०
अर्णिकापुत्तस्य दृष्टान्तः	१५०
चतुर्थःनिर्यामकद्वारम्	१५१
पञ्चम दर्शनद्वारम्	१५२
षष्ठमहानिद्वारम्	१५३
सप्तमपानकपरिकर्मयुक्तप्रत्या–	
ख्यानद्वारस्वरूपम्	१५४
अष्टमक्षामणाद्वारम्	१५४
नवम स्वयंक्षमापनाद्वारम्	१५५
चण्डरुद्राचार्य दृष्टान्तः	१५५
चतुर्थसमाधिलाभद्वार प्रारम्भ–	
मङ्गलाचरणम्	१५७
अनुशास्तिद्वारम्	१५७
अष्ठारसपावठाणद्वारम्	१५७
प्राणिवधत्यागस्वरूपम्	१५७
प्राणितधेश्वश्रुस्नुषयाः दृष्टान्तः	१५६
अलीकवचनस्वरूपं	१६०
वसुनृपदृष्टान्दाः	१६१
अदत्तादानस्वरूपम्	१६२
श्रावकपुत्रवसुदत्त दृष्टान्तः	१६३
मैथुन स्वरूपम्	१६३
गिरिनयरनिवासिनी दृष्टांतः	१६४
परिग्रह स्वरूपम्	१६५
लोहनन्दजिनदास दृष्टांतः	१६६
क्रोध स्वरूपम्	१६६
प्रसन्नचन्द्र दृष्टान्तः	१६७
मान स्वरूपम्	१६७
बाहुबली दृष्टान्तः	१६८
माया स्वरूपम्	१६६
वणिकपुत्र दृष्टान्तः	१६६
लोभ स्वरूपम्	१७०
कपिल दृष्टान्तः	१७०
प्रेम (राग) स्वरूपम्	१७१
अर्हमित्रस्य दृष्टान्तः	१७२
द्वेष स्वरूपम्	१७२
धर्मरूचि दृष्टान्तः	१७२
कलह स्वरूपम्	१७३
हरिकेशीबल दृष्टांतः	१७४
अभ्याख्यानपापस्थान स्वरूपम्	१७६
अङ्गर्षे दृष्टान्तः	१७६
अरतिरति स्वरूपम्	१७६
क्षुल्लककुमार मुनि दृष्टान्तः	१७७
पैशुन्य स्वरूपम्	१७८
सुबन्धुसचिवचाणक्योः दृष्टान्तः	१७८
परपरिवाद स्वरूपम्	१७६
सुभद्रा दृष्टान्तः	१८०
मायामृषावाद स्वरूपम्	१८१
कुटक्षपक दृष्टान्तः	१८१
मिथ्यादर्शनशल्यस्वरूपम्	१८२
जमालिदृष्टान्तः	१८३
मदनामकद्वितीयद्वारम्	१८४
जातिमेदविप्रपुत्र दृष्टान्तः	१८४
कुलमदेमरिचि दृष्टान्तः	१८६
रूपमदविषये काकन्दीवास्तव्य–	
भ्रात्रोः दृष्टान्तः	१८७
बलमदे मल्लदेवस्य दृष्टान्तः	१८६
श्रुतमदे स्थूलभद्रदृष्टान्तः	१६०
तपमदस्वरूपम्	१६२
दृढप्रहारिदृष्टान्तः	१६२
लाभमदस्वरूपम्	१६३
ढंढणकुमारदृष्टान्तः	१६३
ऐश्वर्यमदस्वरूपम्	१६५
धनसारपुत्रस्यदृष्टान्तः	१६५
धनसारपुत्रस्यदृष्टान्तः	१६६
तपमद–ऐश्वर्यमदस्थाने बुद्धिबलमद	
प्रियतामदस्वरूपम्	१६६
क्रोधादिनिग्रहनामक तृतीयद्वारम्	१६७
प्रमादत्यागनामक चतुर्थद्वारम्	१६७
मद्यस्वरूपम्	१६७
मद्यमासादिस्वरूपम्	१६८
अभयकुमारेण मांसस्य महर्घत्वस्थापनम्	२०१
विषयस्वरूपम्	२०१
कण्डरिकस्यदृष्टान्तः	२०३
कषायस्वरूपम्	२०४
निद्रास्वरूपम्	२०४
अगडदत्तस्यदृष्टान्तः	२०५
विकथास्वरूपम्	२०६
गुणकरस्त्रियादिकथास्वरूपम्	२०८
द्यूतस्वरूपम्	२०६
अन्यप्रकारेप्रमादस्य अष्टस्थानानि	२०६
सर्वप्रतिबन्धत्यागनामक पञ्चमद्वारम्	२११
षष्टमम् सम्यक्त्वद्वारस्वरूपम्	२१२
अरिहंतादिभक्तिद्वारम्	२१३
कनकरथनृपदृष्टान्तः	२१३
अष्टमम् पञ्चनमस्कारद्वारम्	२१४
श्रावकपुत्रदृष्टान्तः	२१७
श्रीमतीदृष्टान्तः	२१८
हुण्डिकयक्षदिदृष्टान्तः	२१८
सम्यग्ज्ञानोपयोगनामक षष्टमद्वारम्	२१६
यवमुनिदृष्टान्तः	२२०
पञ्चमहाव्रतनामक दशमंद्वारम्	२२१
अहिंसामहाव्रतस्वरूपम्	२२२
मृषावाद विरमणस्वरूपम्	२२२
अदत्तादानविरमणस्वरूपम्	२२३
मैथुनविरमणस्वरूपम्	२२३
कामसुखस्य अशुभत्वं दृष्टांताः च	२२४
महिलानां दुर्गुणाः	२२४
महिलानां दोषाः च	२२५
गर्भावस्थास्वरूपम्।	२२५
चारुदत्तदृष्टान्तः	२२६
महिलासंसर्गे दोषाः त्यागे गुणाः	
तद्विषये उपदेशः च	२२८
अभ्यन्तरबाहयग्रन्थयोःस्वरूपम्	२२८
महाव्रतस्यभावनास्वरूपम्	२२६
महाव्रतानाम् अरक्षणे दोषाः	२३०

विगत	पृष्ठ
उज्झिकादिदृष्टान्तः	२३१
चतुःशरणस्वीकारवर्णनम्	२३१
चतुःशरणस्वीकारवर्णनम्	२३३
दुष्कृतगर्हाद्वारम्	२३३
क्षामणे उपदेशः	२३५
सुकृतानुमोदनाद्वारम्	२३८
भावनापटलद्वारम्	२३९
अनित्यभावनास्वरूपम्	२४०
नग्गइनृपदृष्टान्तः	२४०
अशरणभावनास्वरूपम्	२४०
अनाथीमुनिदृष्टान्तः	२४१
संसारभावनास्वरूपम्	२४१
तापसश्रेष्ठिनःदृष्टान्तः	२४२
एकत्वभावनास्वरूपम्	२४२
परसहायानिच्छोपरी वीरविभुदृष्टान्तः	२४३
अन्यत्वभावनास्वरूपम्	२४३
सुलसपरिहासेन शिवस्य वैराग्यम्	२४३
अशुचिभावनास्वरूपम्	२४४
शुचिवोद्रस्य दृष्टान्तः	२४४
अर्थकामानाम् अशुभत्वम्	२४५
आश्रवसंवर-निर्जराभावनानां स्वरूपम्	२४५
लोकस्वरूपभावनास्वरूपम्	२४६
शिवराजर्षेःदृष्टान्तः	२४६
बोधिदुर्लभभावनास्वरूपम्	२४६
वणिक्पुत्रदृष्टान्तः	२४७
सुवर्णस्याष्टगुणैः धर्मगुरुः परीक्षा	२४८
सद्गुरोःस्वरूपम्	२४८
शीलपालनद्वारे शीलस्वरूपम्	२५०
इन्द्रियदमनद्वारस्वरूपम्	२५१
इन्द्रिय-अविजये भद्रादीनां दृष्टान्ताः	२५२
चक्षुरिन्द्रिय विषयेसमरधीरदृष्टान्तः	२५३
घ्राणेन्द्रियविषेय गन्धप्रियकुमार	२५४
रसनेन्द्रिय अविजयेसोदासनृपदृष्टान्तः	२५४
स्पर्शेन्द्रियअविजयेविप्रसुतदृष्टान्तः	२५४
तपोद्वारे तपःकरण-अकरणयोः गुणदोषाः	२५५
निःशल्यताद्वारे शल्यानांस्वरूपम्	२५५
ब्रह्मदत्तचक्रीदृष्टान्तः	२५६
मायाशल्ये पीठमहापीठदृष्टान्तः	२५८
मिथ्यात्वशल्योपरीनन्दमणियारदृष्टान्तः	२५९
द्वितीय प्रतिपत्तिद्वारप्रारम्भः	२६१
श्री सङ्घस्य माहात्म्यम् क्षमापना च	२६१
द्वितीय प्रतिपत्तिद्वार क्षमापना	२६२
विराधनायाः क्षामापना	२६२
पापगर्हा	२६३
द्वितीय प्रतिपत्तिद्वारे धर्मध्यानचिंतनम्	२६४
तृतीय सारणाद्वारम्	२६५
चतुर्थः कवचद्वारम्	२६५
पञ्चमम् समताद्वारस्वरूपम्	२६६
षष्टम्ध्यानद्वारम्	२६९
सप्तम्लेश्याद्वारम्	२७०
जम्बूफलभक्षकदृष्टान्तः	२७०
अष्टम्फलद्वारम्	२७१
अष्टम्फलद्वारम्	२७२
नवमम् विजहनाद्वारम्	२७४
आराधनाकृता प्रशंसा	२७५
महसेनकृता गौतमगणधरस्तुतिः	२७५
महसेनस्य आराधनायै चिन्तनम्	२७६
महसेनस्य अनशनप्रारम्भः	२७६
इन्द्रकृता प्रशंसा	२७६
विगत	पृष्ठ
परीक्षायै देवाकृतोपसर्गवर्णनम्	२७७
महसेनस्यश्चिलत्वम्	२७८
सर्वार्थसिद्धौ उत्पत्तिः	२७८
महसेनस्यभाविभाव कथनम्	२७८
गौतमगणधरदर्शित	
महसेनस्यागामीभववर्णनम्	२७९
स्थविरकृता गौतमस्तुतिः	२७९
ग्रन्थकर्तुगुर्वादीनां नामादिवर्णनम्-	
ग्रन्थरचनावर्णनम्	२८०
लेखकप्रशस्तिः।	२८०

।। णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।।

।। अचिन्त्यमहिमानिधानश्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।।

।। अनन्तलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः ।।

।। प्रभु श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वराय नमः ।।

सिरिजिणचन्दसूरिविरइआ—

संवेगरंगसाला

"मङ्गलाचरणम्" —

रेहइ जेसिं पयनह–परंपरा उग्गमन्तरविरुइरा । नमिरसुरमउडसंघट्ट–खुडियवररयणराइ व्व ॥१॥
अहव सिवपहपलोयण–मणजणहत्थप्पईवपंति व्व । तिहुयणमहिए ते उसभ–प्पमुहतित्थाहिवे नमह ॥२॥
अज्ज वि य कुतित्थियहत्थि–सत्थमच्चत्थमोत्थरइ जस्स । [1]दुग्गनयवग्गनहनिवह–भीसणो तित्थमयनाहो ॥३॥
तं नमह महावीरं,–[2]अणंतरायं पि परिहरियरायं । [3]सुगयंपि सिवं [4]सोमं पि, चत्तदोसोदयारम्भं ॥४॥
जे निव्वाणगया वि हु, नेहदसावज्जिया वि दिप्पंति । ते अप्पुव्वपईवा, जयन्ति सिद्धा जयपसिद्धा ॥५॥
अइसयसहस्ससुंदर–मयरंदुद्दामसुयसरोयस्स । जिणमुहसरप्पसूयस्स [5]मूलनालाइयं जेहिं ॥६॥
पालित–परुवित्ते, निच्चं पंचप्प–यारमायारं । गुणगणहरे गणहरे, ते गोयमपभिइणो वंदे ॥७॥
अणवरयसुत्तदाणा–णंदियमुणिभमरनियरपरियरिए । निच्चं चरणपहाणे, करिणो व्व थुणामि उज्झाए ॥८॥
कारुण्णपुण्णहियए–धम्मुज्जयजंतुजणियसाहेज्जे । दुज्जयनिज्जियमयणे, मुणिणो पणमामि [6]नवनिहिणो ॥९॥
गुणरायरायहाणिं, नमामि सव्वन्नुणो महावाणिं । भीमभवागडनिवडंत–जंतुनिरयज्जरज्जुं व ॥१०॥
तं जयइ पवयणं [7]पव–यणं व सारं जमंगिणो दट्ठुं । वसह व्व उप्पहं पत्थि–या वि लग्गंति मग्गंमि ॥११॥
चिन्तारघट्टसंजोयणेण, सुहझाणवसहसेणीए । जे भवकूवादाय–ड्ढिऊणमुड्ढं पराणिंति ॥१२॥
आराहणाघडीमा–लियाए आराहगंगिवग्गुदयं । निज्जामगे गुरू ते, मुणिणो य नमामि सविसेसं ॥१३॥
सुगइगममूलपयवी–चउखंधाराहणा इमा जेहिं । संपत्ता ते वंदे, मुणिणो गिहिणो य अभिणंदे ॥१४॥
आराहणाभगवई, जयउ जए जं दढं समारूढा । नावं व भव्वभविणो, तरन्ति रुद्दं भवसमुद्दं ॥१५॥
सा जयइ य सुयदेवी,जीए पसाएण मंदमइणो वि । कइणो भवंति नियइच्छि–यत्थनित्थारणसमत्था ॥१६॥
सयलजणसलहणिज्जं, पयविं जेसिं पयप्पभावेण । पत्तोम्हि विबुहपणए, ते नियगुरुणो पणिवयामि ॥१७॥
इत्थं समत्थथोयव्व–सत्थविसयाए पत्थुयथुईए । करडिघडाए सुहडो व्व, दलियपच्चूहपडिवक्खो ॥१८॥
मंदमई वि सयमहं, महन्तगुणगणगुरूण सुगुरूण । चरणपसाएणं भव्व–हियकए किं पि जंपेमि [जुम्मं] ॥१९॥

राजते येषां पदनखपरम्परा, उद्गमद्रविरुचिरा । नम्रसुरमुकुटसङ्घट्ट–खण्डितवररत्नराजिवत् ॥१॥
अथवा शिवपथप्रलोकनमनोजनहस्तप्रदीपपङ्क्तिवत् । त्रिभुवनमहितान् तान् ऋषभ–प्रमुखतीर्थाधिपान् नमत ॥२॥
अद्यापि च कुतीर्थिकहस्तिसार्थ–मत्यर्थमाक्रामति यस्य । दुर्गनयवर्गनखनिवह–भीषणस्तीर्थमृगनाथः ॥३॥
तं नमत महावीर–मनन्तरायमपि परिहृतरागम् । सुगतमपि शिवं, सोममपि त्यक्तदोषोदयारम्भं ॥४॥
ये निर्वाणगता अपि खलु, स्नेहदशावर्जिता अपि दीप्यन्ते । ते अपूर्वप्रदीपा जयन्ति सिद्धाः जगत्प्रसिद्धाः ॥५॥

---

1. दूग० । 2. 'अणंतरायंपि परिहरियरायं' इति पदे अनन्तरागमपि परिहृतरागम् इति पदसंस्कारे विरोधो वर्त्तते तथाऽपि अनन्तरायमपि परिहृतरागम् इति पदसंस्कारकरणेन तत्परिहारोभवति। 3. 'सुगयं पि सिवं' इत्यत्र यः सुगतः सः कथं शिवो भवितुमर्हति इति विरोधो भवेत्, तथापि शोभनं गतं-ज्ञानं यस्य सः = सुगत इति तात्पर्यग्रहणेन सुगतोऽपि शिवः–कल्याणकारी भवतीति विरोधपरिहारो भवत्येव । 4. 'सोमंपि चत्तदोसोदयारंभं' इत्यत्र सोमः–चन्द्रः दोशायाः–रात्रेः उदयस्य आरम्भक एव इति विरोधो वर्त्तते किन्तु सोमः–सौम्यः भगवान् दोषाणां–रागादिदोषाणाम् उदयस्य यो आरम्भः सः त्यक्तः येन सः त्यक्तदोषोदयारम्भो भवत्येव । एवमन्यत्रापि यथातत्थ्यं पदघटना कार्या । 5. थूल०। 6. तव०। 7. प्राजनम्।

"संसारवने धर्मदुर्लभता" —

इह हि वियंभंतकयंतसीह-हम्मन्तजन्तुमिगनिवहे । विलसिरदुद्दंतिंदिय-सावयउप्पंकलल्लक्के ॥२०॥

विक्कंतकसायविलास-प्पसंकुले मयणवणदवरउद्दे । दुव्वासणाविसप्पिर-गिरिसरियापूरदुग्गंमि ॥२१॥

निबिडदुहविडविकिण्णे, वियडंमि भवाडवीकडिल्लंमि । दीहद्धमद्धगेहिं य, संचरंतेहिं सत्तेहिं ॥२२॥

गंभीरनीरनीरहि-निहित्तमुत्ताहलं च मणुयत्तं । जुगसमिलानाएणं, लद्धूणं कह वि दुल्लंभं ॥२३॥

तत्थ वि कहिंपि सविसेस-दुल्लहं ऊसरे व्व वरसस्सं । मरुभूमीए कप्प-दुमं य सुकुलाइ लद्धूणं ॥२४॥

तत्थ विय भाविभद्दत्तणेण, सेसत्तणेण य भवस्स । अबलत्तणेण दुज्जय-तरदंसणमोहणिज्जस्स ॥२५॥

सुगुरुवएससवणा, सयं पि वा कम्मगंठिभेएणं । तडितडपालंबं पिव, गुरुगिरिसरिहीरमाणेहिं ॥२६॥

रोरेहि व निहाणं, सुवेज्जमिव विविहवाहिविहुरेहिं । अवडंतो पडिएहिं, समत्थ-हत्थावलंबं व ॥२७॥

सविसेसपुन्नपयरिस-लब्भं सव्वन्नुधम्ममकलंकं । निज्जियचिंतामणिकप्प-पायवं पाविउं परमं ॥२८॥

हियमेव गवेसेयव्व-मप्पणो तं च जं न अहिएण । वाहिज्जइ नियमेणं, कहिंपि कत्तो वि कइया वि ॥२९॥

[तीहिं विसेसयं]

तं च तहाविहमणुवम-मऽच्चंतेगंतियं परं मोक्खे । मोक्खो य कम्मखयओ, कम्मखओ पुण विसुद्धाए ॥३०॥

आराहणाए आरा-हियाए ता तीए सइ हियत्थीहिं । जइयव्वमुवेयमुवाय-विरहओ होइ नो जेण ॥३१॥

[जुम्मं]

सा पुण काउमणेहि वि, तदत्थपयडणसमत्थसत्थाणि । मोत्तुं [1]अभिउत्तेहि वि, नाउं तीरइ न जं सम्मं ॥३२॥

तम्हाऽऽराहणसत्थं, सुपसत्थमहत्थहेउपरिकिण्णं । गिहिसाहूभयविसयं, वोच्छमहं तुच्छबुद्धी वि ॥३३॥

"आराधनाधिकारीस्वरूपम्"

आराहणमिच्छंतो य, तिगरणं पढममेवं रुंभेज्जा । अनिरुद्धं जेण इमं, किं असुहं तं न जं कुणइ ॥३४॥

तहाहि—

असमंजसं भमंतो, निरंकुसं विविहविसयरण्णंमि । अरइरइकुमइकरिणी-कसायकलभोरुजूहजुओ ॥३५॥

कयबहुगुणतरुभंगो, पमायमयमत्तमणकरी एस । अवगुंढइ अप्पाणं, पए पए बहुविहरएणं ॥३६॥

अत्थनिरवेक्खवित्ती, पइक्खणऽन्नन्नवन्नकयघडणा । असइ व्व विलसमाणी, वाणी वि अणत्थपत्थारी ॥३७॥

असमंजसवावारो, सव्वत्थ समंतओ वि अनिरुद्धो । तत्तायगोलकप्पो, काओ वि न होज्ज कुसलकरो ॥३८॥

एक्केक्कं पि इमेसिं, लोगदुगावायवीयमऽनिरुद्धं । किं पुण तस्समवाओ, जएज्ज ता तन्निरोहकए ॥३९॥

सो पुण पसत्थगंथऽत्थ-चिंतणा-विरयणाऽऽइणा चेव । सम्मं पारद्धेणं, संजायइ नन्नहा जम्हा ॥४०॥

अत्थेहाए तस्सेव माणसं, भासणेण पुण वयणं । होइ च्चिय सुनिरुद्धं, तल्लिहणाईहिं पुण काओ ॥४१॥

एवं च कम्मबंधेक्क-हेउपडिरुद्धजोगपसरस्स । होही महप्पणो च्चिय, उवयारो पत्थुयपबंधा ॥४२॥

इह (य) तन्निरोहजणिओ, एसुवयारो परोऽणुभवसिद्धो । संवेगवण्णणे पुण, पए पए पसमसुहलाभो ॥४३॥

तह संवेगसनिव्वेय-पमुहपरमत्थवित्थरो जत्थ । दुल्लम्भो सुमिणंमि वि, वण्णिज्जइ तं परं सत्थं ॥४४॥

जत्थ पुणाऽणाइभव-ब्भासवसेणं सयं पि संसिद्धा । तह सुकर च्चिय गोवाल-बालविलयाइयाणं पि ॥४५॥

कामऽत्थऽज्जणविसया, निवनीईगोयरा तह उवाया । देसिज्जंति बहुहा, सत्थं तमणत्थयं मण्णे ॥४६॥

इह संवेगाऽऽइहियऽत्थ-देसगस्सेव एत्थ सत्थस्स । सवणपरिभावणेसुं, निच्चं पि बुहेहिं जइयव्वं ॥४७॥

संवेगगब्भसुपसत्थ-सत्थसवणं हि होइ धण्णाणं । सवणेऽविधम्मतरगाणं चेव ता समरसाऽऽपत्ती ॥४८॥

अवि य—

जह जह संवेगरसो, वण्णिज्जइ तह तहेव भव्वाणं । भिज्जंति खित्तजलमिम्म-याऽऽमकुंभ व्व हिययाइं ॥४९॥

सारोऽवि य एसो च्चिय; दीहरकालंपि चिन्नचरणस्स । जम्हा तं चिय कंडं, जं विंधइ लक्खमज्झे वि ॥५०॥

---

1. अभियुक्तैः ।

सुचिरं पि तवो तवियं, चिन्नं चरणं सुयं पि बहुपढियं । जइ नो संवेगरसो, ता तं तुसखंडणं सव्वं ॥५१॥
तह संवेगरसो जइ, खणं पि न समुच्छलेज्ज [1]दिवसंतो । ता विहलेण किमिमिणा, बज्झाऽणुट्ठाणकट्ठेणं ॥५२॥
पक्खंतो मासंतो, छम्मासंतो य वच्छरंतो वा । जस्स न स होज्ज तं जाण, दूरभव्वं अभव्वं वा ॥५३॥
रूवे चक्खू मिहुणे, [2]हियालिया रसवईए जह लवणं । तह परलोगविहीए, सारो संवेगरसफासो ॥५४॥
एसो पुण संवेगो, संवेगपरायणेहिं परिकहिओ । परमं भवभीरुत्तं, अहवा मोक्खाऽभिकंखित्तं ॥५५॥

"रचनाप्रयोजनम्" —

ता तव्वुड्ढिकए च्चिय, न केवलं कम्मवाहिविहुराणं । भवियाणमप्पणो च्चिय, चिरगुरुवेज्जोवएसाओ ॥५६॥
मेलित्तु वयणदव्वे, भावाऽऽरोगेक्कहेउमारद्धं । आराहणारसायण-मेयं अजरामरत्तकरं ॥५७॥
किंच—
परिगलइ पावसोलेलं, ठियस्स आराहणाससिपहाए । जीवससिकंतमणिणो; पइक्खणं दिव्वजोइस्स ॥५८॥
संवेगसारमेसा, वायंत-सुणंत-भावमाणाणं । काही कलुसं पि मणं, विमलं कयगप्फलं व जलं ॥५९॥
एत्तो च्चिय ललियपया, अकुडिल-कोमल-सुहऽत्थकलिया य।अक्खंडलक्खणधरा, सुवण्णरयणुज्जलसरीरा ॥६०॥
सुइसुहयभद्दसद्दा, विविहालंकारकलियसव्वंगा । उल्लसियपसन्नरसा पगिट्ठपरलोयविसयकरा ॥६१॥
बहुभावविरयणाउ, उप्पायंती परं पराणंदं । परिहरियअसग्गाहा, अणत्थबहुला य न कहिं पि ॥६२॥
बहुएहिंतो उवजीवि-यऽत्थसारा महाभुजिस्सेव । करणविहीए वि हु कय-परिस्समा मूलकालाओ ॥६३॥
अप्पसमरइपराणं, निच्चं पि हु विहियमोहणासाणं । नाणाऽऽभोगरयाणं, उदग्गवयसंगयाणं च ॥६४॥
समणवियड्ढविलासीण, काण मणहरणकारणं न इमा । नयणसुहदाइणी भाव-णिज्जवयणा य नो होही ॥६५॥
[छहिं कुलयं]
एवं चिय दूरुज्झिय-नियपरिग्गहपसंगवंछाणं । सुगिहत्थाण वि निव्वुइ-निमित्तमेसा कह न होही ॥६६॥
किंच—
जह य अणंतरजायं पि, किं पि [3]कट्ठिट्ठगोवलाइदलं । साऽणसंधणविहिणा, काऊणं अवचिओवचियं ॥६७॥
आकारंतरविहिणा, ठवेइ सुविसिट्ठमंदिरत्तेण । अइनिउणसुत्तहारो, तहेव अहयं पि उवउत्तो ॥६८॥
सुयदिट्ठचिर[4]पमेयं, किं पि पारद्धगंथपाउग्गं । गाहा-सिलोग-गाहऽद्ध-कुलगपमुहं परकयं पि ॥६९॥
अवणयणदाणविहिणा, कहिंपि काऊण अवचिओवचियं । दाराणुगुणत्तेणं, एत्थं कत्थवि ठविस्सामि ॥७०॥
सपबंधेसु य नियकव्व-गव्वचागत्थमवरकइरइयं । पक्खिवमाणो तक्करण-सचित्तजुत्तो वि होइ लहू ॥७१॥
केवलमुवयारकए, परेसिमेसो महं समारंभो । सो य सपरोभयउत्तीहिं, जुत्तिजुत्ततणमुवेइ ॥७२॥
दीसइ य जेण सविसेस-गाहगे आगयम्मि वणियजणो । सपरोभयहट्टपयट्ट-भंडविच्छड्डववहारी ॥७३॥
एसा य पत्थुयारा-हणेह संवेगरंगसालत्ति । भण्णइ विणिच्छियत्था, गुणनिप्फण्णेण नामेण ॥७४॥
एसा य जहा रण्णा, महसेणेणं नवल्लदिक्खेणं । [5]जइगिहिविसया पुट्ठा, सिट्ठा जह गोयमेणं च ॥७५॥
जह तं सम्मं आराहिऊण, सो पाविही य नेव्वाणं । तह एत्थ कहिज्जंतं, अवहियचित्ता निसामेह ॥७६॥

"नगरीवर्णनम्" —

अत्थि धणधण्णपडिपुण्ण-पउरपुरगामनिवहरमणिज्जो । रमणिज्जरूवलावन्न-जुवइरेहन्तदिसिचक्को ॥७७॥
दिसिचक्कागयनेगम-कीरन्तविचित्तभूरिववहारो । ववहारज्जियबहुधण-जणकारियपवरसुरभवणो ॥७८॥
सुरभवणतुंगसिंगग्ग-धवलधयनिवहभरियनहविवरो । नहविवरट्ठियखेयर-परिभावियरम्मयगुणोहो ॥७९॥
रम्मयगुणोहरंजिय-पंथियकीरन्तवासपरिवंछो । कच्छो नाम जणवओ, जंबूदीवम्मि भरहद्धे ॥८०॥
गोयिंदसयाणुगयो, बहुहलिओ णेगअज्जुणो जो य । एगहरिहलियअज्जुण-मयमन्नइ भारहकहं पि ॥८१॥
तत्थ जुवइ व्व [6]सुविया, दिणअरमुत्ति व्व पउरपहकलिया । सुविभत्तवन्नसन्ना, पच्चक्खा सद्दविज्ज व्व ॥८२॥

1. हिययंतो पाठां० । 2. हितालिका = हितश्रेणिः । 3. काष्ठेष्टकोपलादिदलम् । 4. ०चर पाठां । 5. यतिगृहिविषया । 6. यथा युवती संवृताङ्गोपाङ्गा भवति तथा नगरी अपि प्राकारेण सुवृता-सुरक्षिता ।

जा वहइ गरुयपरिहा-सलिलाउलसालवलयपरिखित्ता ।। जलनिहिजगईवेढिय-जंबुद्दीवस्स समसीसिं ।।८३।।
जा निच्चपयट्टविसट्टनट्ट-कलगेयवड्ढियाऽऽणंदा । परचक्कभयविमुक्का, कयजुगलीलं विडंबेइ ।।८४।।
अइगुरुयरिद्धिवित्थरपरिगयजणदिज्जमाणदाणाए । वेसमणो वि हु मण्णे, जीए समणो व्व पडिहाइ ।।८५।।
सा हिमसेलसमुज्जल-महन्तपासायरुद्धदिसिपसरा । सिरिमाला नामेणं; अहेसि नयरी सुरपुरि व्व ।।८६।।
पउमाणणाहिं सुपओहराहिं, वियसंतकुवलयच्छीहिं । बहिया पुक्खरिणीहिं, अन्तो नारीहिं जा सहइ ।।८७।।
बहुसाहियाओ विस्सुय-कइकुलकलियाओ काणणालीओ । बहिया अन्तो पवराओ, जीए छज्जन्ति य सहाओ।।८८।।
परमेक्को च्चिय दोसो, तीए पुरीए गुणालिकलियाए । खिप्पंति मग्गणा जं, परम्मुहा [1]धम्मवंतेहि ।।८९।।
निम्मलजसोवलंभे, अत्थित्तं संगई य साहूसु । रागो सुयम्मि चिन्ता, निच्चं चिय धम्मकम्मम्मि ।।९०।।
साहम्मिएसुं वच्छल्ल-या य रक्खा दुहत्तसत्तेसु । सुगुणज्जणम्मि तण्हा, निवासिणो जत्थ लोअस्स ।।९१।।
पालेइ तं च पणमन्त-भूवमणिमउडमसिणपयपीढो । अच्चन्तपयंडपयाव-विजियसारइयदिवसयरो ।।९२।।
तिक्खकरयालनिद्दय-निद्दारियदसिरवेरिकरिकुंभो[2] । पुरपरिहुब्भडभुयडंड-चंडिममुसुमूरिय विपक्खो ।।९३।।

"महसेननृपवर्णनम्"—

रूवविणिज्जियमयणो, ससिवयणो कमलपत्तसमनयणो । अच्चंतपउरसेणो, राया नामेण महसेणो ।।९४।।
सोहग्गचायविउसत्तणेण, एगो वि णेगरूवो व्व । रामामग्गणविबुहाण, हियपगेहेसु जो वुत्थो ।।९५।।
डिंडीरपिंडपंडुरछत्त-च्छन्नंतरं दिसाचक्कं । छज्जइ य विजयजत्तासु, जस्स विहियऽट्टहासं च ।।९६।।
उज्झियपरिग्गहाणं, वज्जियविसयाण भिक्खुवित्तीण । सुमुणीण व सत्तूणं, जो धम्मगुरुत्तणं पत्तो ।।९७।।
पग्गहियखग्गपसरंत,-नीलकंतिच्छडुब्भडो हत्थो । जस्स रणे उग्गयधूम,-केउसोहं समुव्वहइ ।।९८।।
तं नत्थि जं न जाणइ, स महप्पा बुद्धिपगरिसवसेण । किंतु निद्दक्खिन्नत्तं, खलत्तणं पि हु न जाणेइ ।।९९।।
अच्चंतहयगयो वि हु, पउरविपत्ती वि जं स नरनाहो । बहुकरिवरपरिकिण्णो, सुहिओ वि य तं महच्छरियं।।१००।।
एक्को च्चिय से दोसो, जं सुगुणड्ढो वि तेण सिट्ठजणो । अकरो चाइयवसणो, अनासदंडो कओ सव्वो ।।१।।
तस्स य रन्नो मुहचंद-चंदिमाविजियकोमुइमयंका । निम्मेररूवरायन्त-चारुसिंगारससिरीया ।।२।।
उत्तमकुलसंभूया, सुसीलयालंकिया विणयपणया । भत्ता सुगुणाऽऽसत्ता, भज्जा नामेण कणगवई ।।३।।
नीसेसकलाकोसल-कलिओ रूवी गुणालओ सोमो । पडिबिंबो इव रण्णो य, अहेसि पुत्तो [उ] जयसेणो ।।४।।
सुविसुद्धबुद्धिपगरिस-निच्छियनीसेससंसयत्थेसु । नयगब्भमहत्थपसत्थ-सत्थपरिभावणपरेसु ।।५।।
संधिविग्गहजाणाऽऽसणाइ-गुणछक्कपणिहियमणेसु । नियसामिकज्जसाहण-बहुमण्णियजीवियव्वेसु ।।६।।
अवरोप्परगाढपरूढ-पणयपरिचत्तविप्पओगेसु । सुकईसु व अपुव्वत्थ-चिंतणच्छिन्नवंछेसु ।।७।।
मंतीसु धणंजयजय-सुबंधुपमुहेसु विस्सुयजसेसु । आरोवियरज्जभरो सो य णिवो कीलइ जहिच्छं ।।८।।

तहाहि— "नृपक्रीडावर्णनम्"

कयाइ मंजुगुंजिउब्भडप्पडंतनेउरं, विसंठुलुच्छलंततारहारलट्ठकंठियं;
[3]अवंगहारतुट्टदीहकंचिदामसुत्तयं, विचित्तयं पलोयए पणंगणाण नट्टयं ।।९।।
कयाइ गाढरुट्ठदुट्ठमत्तहत्थिकंधरं, समारुहित्तु पाणिपल्लवेण धारिअंकुसो ।
सलीलमाययप्पहेसु काणणेसु कीलिउं, जणोवरोहकायरो समन्दिरे नियत्तए ।।१०।।
कयाइ भूरिचंचरीयपिज्जमाणदाणयं, गयिंदमंडलिं सुवेगयं तुरंगवग्गयं ।
विसिट्ठमट्ठकट्ठसिट्ठयं सुसंदणुक्करं, [4]पगिट्ठलद्धसासए महाभडे य पेच्छए ।।११।।
कयाइ पुण्णपावबन्धमोक्खजुत्तिजुत्तयं, अणेगभंगसंगयं भवस्सरूवसूयगं ।
निरंतरं तदत्थदिन्नचित्तउ सविम्हयं, असेसदोसनासयं निसामए य आगमं ।।१२।।

1. धर्मवद्भिः मार्गणाः = याचकाः पराङ्मुखाः क्षिप्यन्ते इति विरोधो भासते अपि तु धर्मवद्भिः धनुर्वद्भिः मार्गणाः = बाणाः पराङ्मुखाः क्षिप्यन्ते इत्यर्थग्रहणेन विरोधपरिहारो भवति । 2. निद्दारियदरिय ताडपत्रीय प्रत में पाठान्तर है । 3. अंगयहारनुत्तदीहकंचिदामसुत्तयं पाठां० । ताडपत्रियप्रतमें 'रयंगहार' पाठांतर है । 4. प्रकृष्टलब्धस्वाशयान् ।

इय पुव्वभवज्जियभूरि-पुन्नपब्भारपुण्णवंछस्स । वोलेंति वासरा तस्स, राइणो विविहकीलाहिं ॥११३॥

"पुरुषागमनम्"—

अह अन्नया कयाई, अत्थाणीमंडवे निसन्नस्स । सव्वेयरतरुणीथुव्व-माणसियचारुचमरस्स ॥११४॥
दूरदिसागयसामंत-मंडलीपणयचलणकमलस्स । अन्नन्नसेवगजणे, सणियं पक्खित्तचक्खुस्स ॥११५॥
कंपिरतणुणा सियसिररुहेण, सक्खा जरापणिहिण व्व । कंचुइणा संलत्तं, सिग्घं उवसप्पिऊणेवं ॥११६॥
जयउ जयउ देवो, माणमीलंतरामा-मुहकुमुयमयंको, सोक्खवल्लीण कंदो ।
कुवलयदलदीह-रच्छीलच्छीए लीला-लसभुयपरिसत्तो सव्वसंपत्तिजुत्तो ॥११७॥
विन्नवणिज्जमिमं पहु! पडिहयपडियक्खलक्ख ! अम्हाणं । अंतेउरट्ठियाणं, सव्वत्तो दिन्नदिट्ठीणं ॥११८॥
परपुरिसपलोयणवाउलाण, कत्तो वि झत्ति संपत्तो । वणवारणो व्व एगो, पुरिसो अनिवारणो भीमो ॥११९॥
विसो[1] व्व खग्गधेणूए, संगतो गिरिचरो व्व गरुयंऽगो । उब्भडभुयदंडुब्बद्ध-वीरवलओ अखुद्धमणो ॥१२०॥
कणगवईए देवीए, वासभवणम्मि णिययगेहे व्व । नाहो व्व सो पविट्ठो, अवगन्नियकंचुइसमूहो ॥१२१॥
णिसियऽग्गखग्गधाया वि, तत्थ न कमंति वज्जथंभे व्व । दप्पुब्भडा वि सुहडा, तम्मुहपवणेण निवडन्ति ॥१२२॥
करुणाए व्विय मन्ने, न पहरियं तेण अम्ह पुरिसाणं । अन्नह कयन्तकप्पस्स, तस्स कत्तो भवे खलणा ॥१२३॥
अस्सुयमदिट्ठपुव्वं, इय एरिसकज्जमिन्हिमावडियं । एत्तो उवरिं देवो, आइसइ जयं तयं कुणिमो ॥१२४॥
इय सोच्चा कोवभरुब्भवन्त-भालयलभिउडिभीमेण । पुणरुत्तफुरुफुरन्ता-हरेण तंडवियभमुहेण ॥१२५॥
सामंतसुहडसेणावईसु, निव्वडियपुरिसयारेसु । नवकुवलयदलदीहा, चक्खू खित्ता महीवइणा ॥१२६॥
अह तं कयंतजणणिं च, भीसणं पेच्छिऊण सामंता । संखोहवसा जाया, चित्ताऽऽलिहिय व्व सव्वे वि ॥१२७॥
सेणावइसुहडेहि वि, तव्वइयरसवणचत्तमाणेहिं । सुस्समणेहि व संली-णयाए दिण्णं मणो झत्ति ॥१२८॥
राया वि सहं सुण्णं व, पेच्छिउं पाणिकलियकरवालो । धी सेवगाहमा! विफल-विहियपोरिसफडाडोवा ॥१२९॥
अवसरह तुरियमेत्तो, चक्खुप्पसराउ इय पयंपंतो । आबद्धपरियरो लहु, नीहरिओ रामभवणातो ॥१३०॥
अह चंडचवलमंगल-विस्संभरपमुहअंगरक्खेहिं । भालयलघडियकरसं-पुडेहिं भत्तीए विण्णत्तो ॥१३१॥
देव पसीयह वियरह, आएसं अम्ह एत्थ पत्थावे । विरमह सयं न जुत्तो, पढमं चिय पत्थणाभंगो ॥१३२॥
जइ वि सयं न नियत्तह, खणमेक्कं तह वि पेच्छगा होह । चक्खुक्खेवा हि पहूण, हुन्ति पारद्धविग्घहरा ॥१३३॥
इय सविणयप्पयंपिय-सवणमणागोवसन्तपरिकोवो । दरकंपियाए दिट्ठीए, पत्थिवो तेऽणुमन्नेइ ॥१३४॥
तो चावकुंतकरवाल-भल्लिसेल्लाइपहरणसमेया । निव्विवरवम्मभूसिय-तणुणो चंडाइणो चलिया ॥१३५॥
पत्ता य कमेणंते-उरंमि दिट्ठो य तत्थ सो पुरिसो । आसीणो सेज्जाए, देवीए समं ततो भणिओ ॥१३६॥
रे रे पुरिसाऽहम! सामि-सालमहिलं मलिच्छसमसील । कामिंतो तुममिन्हिं, पइससि कीणासवयणम्मि ॥१३७॥
नियदुच्चरिएण वि तुह, हयरस्स, जइ वि हु न पहरिउं जुत्तं । तह वि हु नियपहुचित्ताणु-वित्तिओ हम्मसि निरुत्तं ॥१३८॥
नवरं एव ठिए वि हु, खामेसु नराहिवं विणयपणओ । जइ जीवियं समीहसि, अहवा सवडंमुहो होसु ॥१३९॥
मुंचसु भवणऽब्भन्तर-मुवदंससु पोरिसं खणं एक्कं । जावऽज्जवि निवडइ नो, कयन्तदिट्ठि व्व बाणाऽऽली ॥१४०॥
इय जंपेऊण अच्चन्त-मच्छरुच्छाहभूरिसंरंभा । जाव न ते पहरंति, वज्जरियं ताव तेण इमं ॥१४१॥
हंहो बालिसरूवा! खरनहरविभिन्नकुंभिकुम्भस्स । किं कीरइ केसरिणो, कुवियएण वि हरिणनिवहेण ॥१४२॥
किंवा उब्भडतंडविय-चंडमणिफारफणकडप्पेण । विहगाहिवस्स कीरइ, रुसिएण वि भुयगवग्गेण ॥१४३॥
ता मुयह विहलसंरंभ-निब्भरं पहरणप्फडाडोवं । सामत्थाणणुरूवो हि, विक्कमो होइ मरणाय ॥१४४॥
जं च नियसामिभज्जं, कामिज्जंतं पलोइउं तुब्भे । असमंजसं पयंपह, एयं पि विमूढयाए फलं ॥१४५॥
नियसामत्थेण जओ, तग्गिहिणीए मए पवन्नाए । सामित्तमवक्कंतं, दूरे व्विय तुम्ह नरवइणो ॥१४६॥
एवं च उववइत्तण-दोसो वि हु मज्झ विज्जइ न को वि । तुम्हारिसाण वि पुरो, एवं इह आवसंतस्स ॥१४७॥
अह बाढममरिसो भे, को वारइ मम तणुम्मि पहरेह । किंतु न सो एस जणो, सत्थगणो पक्कमति जत्थ॥१४८॥

---
1. वृषः-कृष्णः ।

इय जंपियावसाणे, उग्गीरियपहरणा दढं कुवियाा । ते नावडंति जा ताव, थंभिया तेण पुरिसेण ॥४९॥
अह वज्जलेवघडिय व्व, पत्थरुक्कीरिय व्व सव्वे वि । जाया निच्चलतणुणो, सो पुण कीलितु खणमेगं ॥५०॥
कणगवइं [1]पाणीए, गहिऊणं पट्ठिओ अखुद्धमणो । मुणितो य इमो सव्वो, वुत्तंतो भूमिनाहेण ॥५१॥
तो तेण चिंतियमिमं, किं कोइ इमो सुरो व्व खयरो व्व । होज्ज व विज्जासिद्धो, एवंविहसत्तिसंजुत्तो ॥५२॥
जइ ताव सुरो किं तस्स, माणुसीए इमीए किर कज्जं । अह खयरो सो वि न भूमि-गोयरिं नूण वंछेज्जा ॥५३॥
विज्जासिद्धो वि विसिट्ठ-रूवपायालजुवइपमुहासु । संतीसु दिव्वनारीसु, कह इमं अणुसरेज्ज धुवं ॥५४॥
अहवा पासविसप्पिर-कयन्तवसजायधाउखोहस्स । कस्स न कस्स व हिययं, काउमकज्जं अभिलसेज्जा ॥५५॥
किं वा इमिणा सो को वि, होउ जुज्जइ न संपयमुवेहा । भज्जंपि अरक्खन्तो, कह रक्खिस्सामि महिवलयं ॥५६॥
देसंतरेसु वि इमो, मज्झ कलंको चिरं पवित्थरिही । एत्तो च्चिय रामो वि हु, सीयाए कए गओ लंकं ॥५७॥
ता जावज्जवि णो दूर-देसमणुसरइ सो दुरायारो । ताव सयमेव गंतूण, तं अणज्जं निगिण्हामि ॥५८॥
थंभणपमुहं चिरसिक्खियं च, विज्जाबलं परिक्खामि । इति चिंतिय कइवयसुहड-संगओ पट्ठिओ राया ॥५९॥
अह भूमिवइं मुणिउं चलियं, चलिओद्धुरसिन्धुरभीमयरं । मयराइथयाउलभूसिरहं, रहसुब्भडसेवगरुद्धदिसं ॥६०॥
दिसिचक्कपयट्टतुरंगगणं, गणनायकदण्डवईहिं जुयं । जुवईजणकायरखोभकरं, करहोहपरोवियवक्खरयं ॥६१॥
रयजाणवसुक्खयखोणिरयं, रयणुब्भडभूसणवित्थरियं । छुरियाइमहाउहदिन्नभयं, भयकंपिरबालयचत्तपहं ॥६२॥
पहसंतपढंतसुमागहयं, हयहेसियतासिअसिंखलयं । लयणग्गगयं गिहिसच्चवियं, वियसन्तमहाभडलोयणयं ॥६३॥
नगरीउ बहुं चउरंगबलं, बलवन्तविपक्खखयएक्कसहं । सहसच्चिय पावियभूरिमहं, महसेणणुमग्गिण नीहरियं ॥६४॥
अह तेण समग्गेण वि, परियरिओ पवरतुरगमारुढो । ऊसियसियायवत्तो, राया जा जाइ थेवपहं ॥६५॥
ताव पुरिसेण तेणं, दरदलियकवोलमीसि हसिऊणं । नरनाहं मोत्तूणं, थंभियमवरं बलं सयलं ॥६६॥
राया वि चित्तलिहियं व, पेच्छिउं तं समग्गमवि सेन्नं । परिचिन्तिउं पवत्तो, अच्चन्तं विम्हयाउलिओ ॥६७॥
अहह! महापावो कह, एवंविहमंतसत्तिसंजुत्तो । कह वा विबुहनिसिद्धं, अकज्जमेवं विहं कुणइ ॥६८॥
मन्ने एरिसग च्चिय, ते वि हु थंभाइकारिणो मंता । तेणन्नोन्नाणुगमो, समसीलत्तेण जाओ सिं ॥६९॥
अहवा किमणेण विचिंतिएण, सुमरामि थंभणिं विज्जं । एयस्स थंभणट्ठा, चिरपढियं सुगुरुमूलम्मि ॥७०॥
तो सव्वंगनिवेसिय-रक्खामंतक्खरोडनिलनिरोहं । काउं नासापेरंत-निमियथिरलोयणंबुरुहो ॥७१॥
पउममयरंदसंदोह-सुंदरुद्दामपसरियमऊहं । थंभणकरपरमक्खर-मारद्धो सुमरिउं राया ॥७२॥
अह खणमेत्तंमि गए, तत्तोहुत्तं पलोयए जाव । दरपहसिरेण तेणं, पजंपियं ताव पुरिसेण ॥७३॥
हे नरवर! जीव चिरं, पुव्वं मंदा गई ममं हुंता । तुह थंभणविज्जाए, संपइ पवणोवमा जाया ॥७४॥
ता जइ कज्जं भज्जाए, अत्थि एज्जाहि सिग्घवेगेण । इय सो पयंपमाणो, तुरियं गंतुं पयट्टो त्ति ॥७५॥
अहह कहं चिरसिक्खिय-विज्जा वि हु विहलिया ममेयाणिं । विहलिज्जउ अहव परं, मोत्तूण परक्कमं एक्कं ॥७६॥
इय चिंतिऊण राया, अविचलचित्तो पवड्ढिउच्छाहो । खग्गसहाओ सहसा, लग्गो तस्साणुमग्गेण ॥७७॥
एसो वच्चइ राया, एसा देवी इमो य सो पुरिसो । इय जंपिरे जणम्मि, ताणि गयाइं सुदूरपहं ॥७८॥
पइसमयकसाहयतरल-तुरयलहुभूरिलंघियद्धाणो । थेवंतरेण राया, जाव न तं पावइ मणुस्सं ॥७९॥
ताव निरब्भा विज्जु व्व, झत्ति देवी अदंसणीभूया । सो वि य पुरिसो थाणु व्व, निच्चलो संठिओ समुहो ॥८०॥
एगागिणं च तं पेच्छि-ऊण भूमीवई विचिंतेइ । किं सुमिणमिमं माया य, होज्ज दिट्ठीए बंधो वा ॥८१॥
अहवा किमणेण विगप्पिएण, इममेव ताव पुच्छामि । अमुणियसीले पुरिसे, पहरिउमवि जुज्जइ न जम्हा ॥८२॥
तो भणियमणेण सविम्हएण, भो भो अणन्तसामत्थ! भज्जा न केवलं चिय, हरिया तुमए मम मणं पि ॥८३॥
ता कहसु को तुमं? किं, तए कुलं मण्डियं मलिणियं? च । एरिसमाहप्पेणं, अकज्जकरणेण य इमेणं ॥८४॥
तेणावि ईसि हसिऊण, जंपियं भो नरिंद! सच्चमिणं । विहियं उभयं पि मए, कुलमइलणमेक्कमेव तए ॥८५॥
नियगिहिणिं पि हु नीसेस-नयरलोगस्स पेच्छमाणस्स । अवगणियावजसेणं, अरक्खमाणेण हीरन्तिं ॥८६॥

1. यद्यपि 'पाणिं मि' इति प्रयोगो भवेत्, तथापि आर्षत्वात् स्त्रीलिङ्गे सप्तमी-एकवचनम् ।

इय गुरुयकुलकलंकं, न पेच्छसि अप्पणो तुमं मुद्ध! । मह पुण पोरिसयित्तिं पि, दोसपक्खम्मि पक्खिवसि ॥८७॥
अहवा परदोसपलोयणंमि, जायइ जणो सहस्सक्खो । जच्चंधो व न पेच्छइ, गिरिवरगुरुए वि नियदोसे ॥८८॥
एवंविहेण तुमए, तह कह वि हु मइलियं कुलं सयलं । यह विमलिज्जइ नो सुकय-जलहरासारवरिसे वि ॥८९॥
निस्सामन्नपरिक्कम-रहियाणं भद्द! तुज्झ सरिसाणं । नामुक्कित्तणमेत्तं, वुच्चइ भूमीवइत्तं पि ॥९०॥
को वा इह तुह दोसो, ते अवरज्झंति इत्थ चिरपुरिसा । असमत्थं पि तुमं जे, भूमीपालं पइट्ठंति ॥९१॥
को वा तेसिं दोसो, नरिंद! तुम्हारिसाण कुमईणं । एस च्चिय होइ गई, विसयव्वामोहियमणाणं ॥९२॥
इय सोच्चा नरनाहो, लज्जामउलंतनयणसरसिरुहो । परिभाविउं पवत्तो, पओससमउ व्व विच्छाओ ॥९३॥

"नृपपश्चात्तापः" —

धी मज्झ जीवियं पोरिसं च, बलबुद्धिपगरिसत्तं च । जेण मए वयणिज्जं, उवणीया पुव्वपुरिसा वि ॥९४॥
अप्पा न केवलो च्चिय, लहुयत्तं लंभिओ अधन्नेण । लहुईकया महन्तो, सिक्खागुरुणो वि भयवन्तो ॥९५॥
किं जाएण वि तेणं? जाएण वि जीविएण किं तेण? । नियपुव्वपुरिसलाघव-लेसंमि वि जो पयट्टेज्जा ॥९६॥
सच्चं च विसयमोहिय-मईणमिच्चाइ जं भणियममुणा । कहमन्नहमेवंविह-विडंबणा मज्झ जाएज्जा? ॥९७॥
तहाहि—
सत्थस्साविसओऽयं, न मंततंतेसु कुसलया अत्थि । उज्जोगिणो वि मज्झं, किं बलमेत्तो परं होही ॥९८॥
एवं च संपयं इह, तावसदिक्खा निसेविउं जुत्ता । कह दंसिस्सामि मुहं, नियत्तिउं नयरिलोयस्स ॥९९॥
इय गरुयविसायपिसाय-वाउलिज्जन्तमाणसो राया । जा मुयइ नेव खग्गं, ता गहियो तेण हत्थम्मि ॥२००॥
भणिओ य महायस! मुयसु, सोगमित्तो कयं विचित्तेणं । परिहासेणं माइंद-जालमेयं न परमत्थो ॥१॥
तहाहि— "पुरुषवक्तव्यम्-पूर्वभववर्णनम्" —
नाहं पुरिसो न य मज्झ, तुज्झ दइयाए कज्जमवि किं पि । न य सामन्नपरिक्कम-विक्कंतो होसि तं राय! ॥२॥
किंतु इय वइयरेणं, तियसो हं पढमदेवलोगाओ । तुज्झ पडिबोहणत्थं, पुव्वप्पणएण [1]आओ म्हि ॥३॥
किं वा मित्त! न सुमरसि, जमुणानइपरिसरम्मि पुव्वभवे । जं आसि तुमं हत्थी, बहुलक्खणसंगयसरीरो ॥४॥
सत्तंगपरिट्ठाणो, महानरिन्दो व्व विसयपडिबद्धो । पवहन्तदाणपसरो, सरोसपडिदन्तिभंगकरो ॥५॥
बहुकरिकुलपरियरिओ, वियरन्तो तेसु तेसु ठाणेसु । करिपिसियलालसेहिं, सबरजुवाणेहिं, दिट्ठो सि ॥६॥
तो तेहिं वारिबंधण-पमुहोवाएहिं सरपहारेहिं । परिवारब्भूयं तुह, विणासियं गयकुलमसेसं ॥७॥
अपमत्तयाए गइकोसलेण, दुराउ परिहरन्तेण । तुमए तेसिमवाए, चिरकालं रक्खिओ अप्पा ॥८॥
अह अन्नया कयाई, [2]सलिलोयारम्मि तुज्झ गहणत्थं । तेहिं खड्डा खणिउं, उवरिं छइया तणाईहिं ॥९॥
खित्ता तदुवरि धूली, तह जह भूमीए सा समा जाया । तो तरुगहणनिलुक्का, पलोइउं ते पवत्त त्ति ॥१०॥
तुममवि असंकियमणो, पुव्वपवाहेण पाणियं पाउं । इंतो धस त्ति पडिओ, तीए खड्डाए विवसंगो ॥११॥
अइपंडिओ सि चिरजीविओ सि, रे! इण्हिं कत्थ वच्चिहिसि । इय कलकलं करेंता, सबरजुवाणा य संपत्ता ॥१२॥
तो तेहिं निद्दयं दारि-ऊण कुम्भत्थलाउ थूलाइं । [3]मोत्ताहलाइं गहियाइं, जीवमाणस्स [4]दसणा य ॥१३॥
अह तिक्खवेयणापबल-जलणजालाकलावसंतत्तो । जीवित्ता खणमेगं, झत्ति तुमं मरणमणुपत्तो ॥१४॥
उववन्नो य नईए, गंगाए परिसरम्मि सारंगो । तत्थ वि बालो वि तुमं, सजूहनाहेण हणिओ सि ॥१५॥
तत्तो मगहाविसए, सालिग्गामम्मि सोमदत्तस्स । विप्पस्स सुओ जाओ, नामेणं बंधुदत्तो त्ति ॥१६॥
बंभणजणपाओग्गो, कलाकलावो य अहिगओ तुमए । जागविहिपरमकुसल-त्तणेण लद्धा पसिद्धी य ॥१७॥
कीरंति जत्थ कत्थ वि, सग्गत्थं अहव रोगसमणत्थं । जागा तेसु य पढमं, तं निज्जसि पउरलोगेण ॥१८॥
कहसि य जागस्स विहिं, पयट्टसे विविहपावठाणाइं । अगणियपरलोयभओ, हुणसि सहत्थेण छागे य ॥१९॥
एवं वच्चंतेसुं, दिणेसु एगम्मि अवसरे रन्ना । पारम्भिओ महन्तो, तुरंगमेहो महाजागो ॥२०॥
आहूओ तत्थ तुमं, रन्ना सक्कारिओ य भत्तीए । पगुणीकया य अस्सा, सुलक्खणा जागकज्जेणं ॥२१॥

1. आगतः । 2. सलिलावतारे । 3. मुक्ताफलानि । 4. दन्तौ ।

अभिमंतिया य तुमए, वेयपसिद्धेण ते विहाणेण । एत्थन्तरंमि तारिस-जागविहिं पेच्छमाणस्स ॥२२॥
कत्थवि दिट्ठं एवंविहं ति, ईहाइणो करेंतस्स । जायं जाइस्सरणं, एक्कस्स तुरंगपोयस्स ॥२३॥
दिट्ठं च पुव्वजम्मे, जागविहिवियक्खणेण हुंतेण । जं हुणिया भयविहुरा, बहुसो वि गवाइणो तेण ॥२४॥
दट्ठूण वइयरमिमं, ताहे परिचिन्तियं भयत्तेण । धम्मच्छलेण पावं, अहो कहं उवचिणन्ति जणा ॥२५॥
साहंति य मुद्धाणं, जागे निहया वयंति सग्गंमि । तिप्पिज्जंति य तियसा, जलणम्मि हुणिज्जमाणम्मि ॥२६॥
न मुणंति इमं पावा, जइ जागहया वयन्ति सग्गम्मि । सग्गाभिलासिणो सयण-बंधुणो ता वरं हुणिया ॥२७॥
अहवा पयंडपासंड-कूडपडियस्स मुद्धलोयस्स । को दोसो अयरज्झंति, एत्थ वेइयउवज्झाया ॥२८॥
ता एयं पाविट्ठं, सुदुट्ठचेट्ठं हणामि उवझायं । जइ पुण जियन्ति एए, जागनिमित्तागया तुरया ॥२९॥
इय चिंतिऊण तेणं, वच्छयले खरखुरप्पहारेणं । तह पहओ [1]सज्ज तुमं, जह मुक्को जीवियव्वेण ॥३०॥
पवियंभियपाणिवहा-भिलासवससंचिढत्तपावेणं । घडियालए य जातो, नेरइओ पढमनरयम्मि ॥३१॥
छव्विहपज्जत्तीए, पयडसरीरो मुहुत्तमज्झम्मि । जा चिट्ठसि ताव लहुं, पकुणन्ता किलकिलारावं ॥३२॥
परमाहम्मिय-असुरा, अच्चन्तं निद्दया महाकूरा । बीभच्छा भयजणगा, समागया तत्थ ठाणम्मि ॥३३॥
दुक्खं वज्जघडीए, किं रे चिट्ठसि विणिस्सरसु बाहिं । इइ जंपिऊण वज्जं-कुसेहिं कड्ढिन्ति तुह देहं ॥३४॥
तत्तो निसियाए कप्पणीए, कप्पन्ति सुहुमखंडेहिं । अंगं करुणसरेणं, तुह विरसं आरसंतस्स ॥३५॥
अइसुहुमखंडिए वि हु, पुणो वि मिलिए तणुम्मि सूए व्व । भयविहुरो नासन्तो, घेप्पसि तेहिं तुमं सहसा ॥३६॥
तो वज्जकुंभियाए, हेट्ठा पज्जलियतिव्वजलणाए । पक्खिप्पसि पागत्थं, अणिच्छमाणो हढेण तुमं ॥३७॥
तत्थ य अच्चंतं दज्झ-माणदेहो तिसाए अभिभूओ । वाहरसि विरससद्दं, तेसिं पुरतो तुमं एवं ॥३८॥
तुब्भे जणणीजणगा, भाया सयणा य बंधवा पहुणो । सरणं ताणं तुज्झे, तुब्भे च्चिय देवया मज्झ ॥३९॥
ता मुयह खणं एक्कं, पायह सलिलं पसीयह इयाणिं । इय भणिए हिट्ठमणा, ते महुरगिराए जंपंति ॥४०॥
रे! वज्जकुंभियामज्झ-भागओ कड्ढिउं वरागमिमं । पाएह वारि सिसिरं, तहत्ति पडिवज्जिउं अवरे ॥४१॥
तत्ततउतंबसीसय-रसभरियं भायणं गहेऊणं । सिसिरं ति पयंपंता, पायन्ति तुमं महापावा ॥४२॥
अह तेण जलणतुल्लेण, दज्झमाणस्स वलियगीवस्स । तुज्झ अणिच्छन्तस्स वि, भेत्तुं संडासएण मुहं ॥४३॥
निसिरंति तमाकंठं, तो तेण कढिज्जमाणसव्वंगो । मुच्छानिमीलियच्छो, धस त्ति णिवडसि महीवीढे ॥४४॥
खणलद्धचेयणो असि-वणम्मि सिसिरं ति जायसंकप्पो । वच्चसि तत्थ वि छिज्जसि, पयंडतरुपत्तखग्गेहिं ॥४५॥
तत्तो पुणो वि तेहिं, रंगंतरंगभंगुरावत्ते । वेयरणीनइनीरे, खिप्पसि पज्जलियजलणाभे ॥४६॥
तत्थ वि विज्जुड्डामर-महल्लकल्लोलपेल्लणवसेण । उब्बुड्डणबुड्डणचलण-खलणवाउलियसव्वंगो ॥४७॥
जरतरुदलं व कहवि हु, तीए किलेसेण पत्तपरतीरो । अच्छंतो असुरेहिं, घेत्तूणं हरिसियंगेहिं ॥४८॥
जोत्तिज्जसि वसभो इव, रहम्मि अच्चन्तभुरिभारम्मि । विज्झसि पइक्खणं कुंत-तिक्खधाराए आराए ॥४९॥
अह तत्थ परिस्सन्तो, जा गंतुं नेय सक्कसि कहिं पि । ता उग्गमोग्गरेहिं, चूरिज्जसि तं महाभाग! ॥५०॥
अप्फालिज्जसि वियडे, सिलायले भिज्जसे य कुन्तेहिं । छिज्जसि करवत्तेहिं, पीलिज्जसि चित्तजंतेसु ॥५१॥
अप्फालिज्जसि वियडे-मंसखण्डाइं जलणपक्काइं । ताडिज्जसि पुणरुत्तं, विचित्तदंडप्पहारेहिं ॥५२॥
असुरविउव्वियगरुयंग-पक्खिअइतिक्खनक्खचंचूहिं । पहणिज्जसि करुणसरं, रुयमाणो उड्ढकयबाहू ॥५३॥
इय नरयउब्भवदुहं, अणुभूयं जं तए नरवरिंद! । तं सव्वं परिकहिउं, जयपहुणो च्चिय तरन्ति परं ॥५४॥
एवं सागरमेगं, निवसित्ता भीसणम्मि नरयम्मि । दुक्खाइं असंखाइं, विसहिय तत्तो मओ सन्तो ॥५५॥
तुममुववन्नो भरहे, नयरे रायग्गिहम्मि रोरकुले । पुत्तत्तणेण तत्थ वि, अणेगरोगाउलसरीरो ॥५६॥
समयाणुरुवभोयण-रोगपडीयारसयणपरिहीणो । अच्चन्तं दीणमणो, भिक्खावित्तीए जीवन्तो ॥५७॥
तरुणत्तं संपत्तो, तत्थ वि अच्चन्तदुक्खिओ सन्तो । परिचिंतिउं पवत्तो, धी धी मह जीविअव्वस्स ॥५८॥
जं सरिसे वि हु मणुअत्तणम्मि, तुल्ले अ इंदिअग्गामे । भिक्खाए जियामि अहं, इमे अ धन्ना पविलसन्ति ॥५९॥

1. सद्यः शीघ्रम्, सज्ज स्थानके भट्ट! पाठांतर।

एगे वहन्ति सोगं, अज्ज न अम्हेहिं किंपि दिन्नं ति । अज्ज न किं पि हु लद्धं, अहं तु एवं किलिस्सामि ॥६०॥
छड्डिज्जइ धम्मकए, एगेहिं समुद्धुरा वि नियरिद्धी । बहुठाणजज्जरं पि हु, न चइज्जइ कप्परं पि मए ॥६१॥
एगे खिवन्ति चक्खुं, सन्तीसु वि नेव पवरतरुणीसु । संकप्पोवगयासु वि, अहं तु तोसं परिवहामि ॥६२॥
जच्चकणगच्छविं पि हु, एगे जंपंति असुइयं देहं । रोगसयविहुरियं अप्प-णो य तमहं तु सलहेमि ॥६३॥
जय जीव नन्द एवं, एगे थुव्वन्ति मागहजणेण । अक्कोसिज्जामि अहं तु, निन्निमित्तं पि भिक्खमओ ॥६४॥
परुसं पि पयंपन्ता, जणन्ति एगे जणाण परितोसं । आसीसाउ दिन्तो वि, अद्धचंदं लहामि अहं ॥६५॥
इय पउरपावणिहिणो, निहीणचिट्ठस्स रोगविहुरस्स । पव्वज्ज च्चिय उचिया, जम्हा तीए वि किच्चमिणं ॥६६॥
मलमलिणसरीरत्तं, भिक्खावित्ती य भूमिसयणं च । परवसहीसु निवासो, सया वि सीउण्हसहणं च ॥६७॥
निक्किंचणया खन्ती, परपीडावज्जणं किसतणुत्तं । जम्मसमणन्तरं चिय, एयं तु सहावसिद्धं मे ॥६८॥
एयं च कुणइ सोहं, परमं लिंगिस्स न उ गिहत्थस्स । अणुरुवट्ठाणगया, सव्वं दोसा वि होन्ति गुणा ॥६९॥
इय चिन्तिऊण तुमए, परमं वेरग्गमुव्वहन्तेण । गहिया तावसदिक्खा, कयं च दुक्करतवच्चरणं ॥७०॥
अह पज्जन्ते मरिउं, जंबुद्दीवंमि भारहे वासे । वेयड्ढम्मि गिरिवरे, रहनेउरचक्कवालपुरे ॥७१॥
चण्डगइनामधेयस्स, पवरविज्जाहरस्स भज्जाए । विज्जुमईए गब्भे, पाउब्भुओ सुयत्तेण ॥७२॥
उचियसमए पसूओ, कयमभिहाणं च कुलिसवेगो त्ति । अच्चन्तसुरुवतणू, कुमारभावं समणुपत्तो ॥७३॥
सिक्खविओ सयलकला-कलावकोसल्लमप्पकालेण । नहगमणप्पमुहाओ, विज्जाओ वि हु अणेगाओ ॥७४॥
अह जणनयणाणन्दं, मणस्सिणीमाणकुमुयमायंडं । तरुणत्तणमणुपत्तो, रेहसि मयरद्धओ व्व तुमं ॥७५॥
समवयमित्ताणुगतो, गउ व्व तियचच्चरेसु सरसीसु । निस्संक्कं भमसि पुरे, पउरेसुं काणणेसुं पि ॥७६॥
अह अन्नया कयाई, तुमए [1]ओलोयणट्ठिया दिट्ठा । हेमप्पहविज्जाहर-धुया सुरसुंदरीणामा ॥७७॥
तीसे य जोव्वणेणं, लायण्णेणं च रुवविहवेणं । सोहग्गेण य हिययं, सुहय! तुहायड्ढियं दूरं ॥७८॥
तीए वि हु तुह दंसणवसेण, वियसन्तणयणकमलाए । कुसुमाउहो वि वज्जा-उहो व्व मयणो पवित्थरिओ ॥७९॥
नवरं समीवसंठिय-सहीण लज्जाए रुंभियवियारा । नीलुप्पलमुवदंसइ, सा तुह अग्घायणमिसेण ॥८०॥
कसिणाए रयणीए, संकेओ सूइओ इमीए त्ति । हरिसभरनिब्भरंगो, तुमं गतो णियभवणंमि ॥८१॥
तो कयदिणकायव्वो, णियणियगेहेसु पेसियवयस्सो । खग्गसचिवो निसीहे, नीहरिओ णिययगेहातो ॥८२॥
केण वि अमुणिज्जन्तो, तेणेवोलोयणेण सणियमयं । पविसित्ता सेज्जाए, तीए समीवे निसन्नो सि ॥८३॥
सो एस दिवसदिट्ठो, पवरजुवाणो त्ति जायहरिसाए । नियदइयणिव्विसेसा, तुज्झ कया तीए पडिवत्ती ॥८४॥
अह अवरोप्परसविलास-वयणगोट्ठीए गमिय खणमेगं । तुमए भणियं हे सुयणु!, विसरिसं दीसइ तुहेमं ॥८५॥
तहाहि —
कह पहसियससिजोण्हा-देहसिरी कह य भुयगभीमोऽयं । रेहइ [2]चिहुरचओ तुह, वेणीबंधेण संजमिओ ॥८६॥
कह लक्खणेहिं लक्खि-ज्जसे तुमं विज्जमाणनाह व्व । अप्पत्तपणइसंगम-सुहं च कह नज्जइ सरीरं ॥८७॥
ता कहसु सुयणु! परमत्थं, किं सो पई तए चत्तो । अहवा चत्ता सि तुमं, अन्नासत्तेण तेणेव ॥८८॥
अह तीए थेयमउलिय-लोयणनलिणाए जंपियं एयं । हे सुहय! सुणसु एत्थं, परमत्थं विसरिसत्तम्मि ॥८९॥
आरुढजोव्वणा हं, इहेव विज्जाहरिंदपुत्तेणं । कणगप्पहनामेणं, उव्वूढा गाढपणएणं ॥९०॥
परिणयणाणंतरमवि, मह दोसा वेयणीयवसओ वा । दाहज्जरेण गहिओ, स महप्पा जलणतुल्लेण ॥९१॥
तो उव्वेल्लइ कंपइ, दीहं नीससइ विरसमारसइ । सिहितावियलोह[3]कवल्लि-मज्झखित्तो व्व अणवरयं ॥९२॥
पारद्धा य अणेगे, तप्पिउणा रोगपसमणनिमित्तं । विविहोसहप्पओगा, परिचत्तासेसकज्जेणं ॥९३॥
तं णत्थि ओसहं नत्थि, सो मणी सा न विज्जए विज्जा । [4]विज्जा वि नत्थि ते जे, न तत्थ वावारिया पिउणा ॥९४॥
पम्मुक्कपाणभोयण-ण्हाणविलेवणपमोक्खकायव्वो । सोगभरगब्भिरगिरो, रुयइ य पासट्ठिओ सयणो ॥९५॥
जणणी वि से अविच्छिन्न-सोगवसनिस्सरन्तनयणजला । नज्जइ दिट्ठिजुगोइन्न-सिन्धुगंगापवाह व्व ॥९६॥

---
1. गवाक्षेस्थिता । 2. केशचयः । 3. कटाह । 4. वैद्याः ।

तप्पणइजणो वि दढं, तम्मइ निम्मायपेमसव्वस्सो । तिव्ववणहव्ववाहोव-दड्ढखाणु व्व विच्छाओ ॥९७॥
इय तस्स आवयाए, विमणुम्मणयम्मि नयरिलोयम्मि । कीरन्तेसु य विविहेसु, देवउवजाइयसएसु ॥९८॥
अवि अहिययरं वुड्ढिं, वच्चंते पइखणं पि दाहजरे । पम्मुक्कजीवियासे, नियत्तमाणम्मि वेज्जगणे ॥९९॥
तेण परिचिन्तियमिमं, अहो न केणइ कहंपि साहारो । कीरइ विहुरावडियस्स, थेवमेत्तं पि जीवस्स ॥३००॥
अइवच्छला वि निद्धा वि, बंधवा जणणिजणगसहियावि । आवयकूवावडियं तडट्ठिया, आवयकूवावडियं चेव सोयंति॥१॥
थेवं पि जत्थ जायइ, जियस्स कत्तो वि नो परित्ताणं । तत्थवि वसंति लोगा, अहो महं मोहमाहप्पं ॥२॥
जइ कह वि य दाहजरो, ममं इमो उवसमेज्ज थेवंपि । ता उज्झियसयणधणो, जिणदिक्खं अणुसरामि त्ति ॥३॥
अह विहिवसेण दिव्वो-सहाइविरहे वि सो णिरायंको । जाओ संतो सयणे, मोयाविय बहुपयारेहिं ॥४॥
पवज्जं पडिवन्नो, गुणसागरसूरिणो सयासंमि । छट्ठट्ठमाइदुक्कर-तवचरणपरो य विहरित्था ॥५॥
इय भो महायस! तए, मह विसरिसरूवयं समुद्दिस्स । पुट्ठं जं तं सिट्ठं, सव्वं पि मए जहावित्तं ॥६॥
एवं सोच्चा महसेण-राय! तुमए विचिंतियं तइया । धी धी अणज्जकज्जा-सत्तं पुरिसत्तणं मज्झ ॥७॥
धी धी बुद्धीए वि हु, निवडउ वज्जासणी गुणगिरिंमि । सत्थत्थपारगत्तं पि, जाउ पायालमूलंमि ॥८॥
पविसउ दरीए उत्तम-कुलजम्मसमुब्भवो य अभिमाणो । नीई वि वराई पुरिस-पवरमवरं अणुसरेउ ॥९॥
जो वंतमिमं तेणं, पुरिसप्पवरुत्तमंगरयणेण । सेविउमहं समीहामि, सारमेओ व्व निल्लज्जो ॥१०॥
सो धण्णो कयपुण्णो, सफलं तस्सेव माणुसं जम्मं । सरयणिसायरधवला, पत्ता तेणं चिय पसिद्धी ॥११॥
णियकुलनहयलचंदो, सो च्चिय कणगप्पभो परं एक्को । लीलाए जेण दलिओ, घोरमहामोहपडिवक्खो ॥१२॥
हे पावहियय! एवंविहाण, पुरिसाण सुणिय सच्चरियं । पररमणीपरिभोगे, सुमुणिणिसिद्धे कहं रमसि ॥१३॥
जाउ वि लडहलायन्न-पुन्नसव्वंगियाउ पयईए । सोहग्गसमुग्गाओ, मणहरसव्वंगचेट्ठाओ ॥१४॥
पयईए च्चिय सद्दाइ-विसयसुंदेरसीमभूमीओ । दीसंतकंतसव्वंग-संगिसिंगारगरुईओ ॥१५॥
वम्महनिहीसु तासु वि, मा मण! तं रमसु णिययरमणीसु । पवणपकंपिरपिप्पल-पत्तसमुत्तालचित्तासु ॥१६॥
अन्नं च —
जाणसि तुच्छमिह सुहं, जाणसि दुक्खं पि मेरुगिरिगरुयं । जाणसि य चलं जीयं, जाणसि तुच्छाओ लच्छीओ ॥१७॥
जाणसि अथिरा नेहा, जाणसि खणभंगुरं समत्थमिमं । तह वि हु गिहवासं कीस? जीव! नो चयसि एत्ताहे ॥१८॥
इय निरवग्गहवेरग्ग-मग्गपडिलग्गचित्तपसरेण । आबद्धकरयलंजली, भणिया सा ससिमुही तुमए ॥१९॥
हे सुयणु! तुमं जणणी, तुज्झ पई जो य सो ममं जणगो । जस्सुद्धरिओऽहमकिच्च-कूवया चरियरज्जूए ॥२०॥
एत्तो य मह विरागो, वट्टइ संसारिएसु किच्चेसु । तुममऽवि महाणुभावे! पइमग्गं अणुसरेज्जासु ॥२१॥
जेण खरपवणताडिय-पल्लवचलमाउयं चला लच्छी । तडितरलं तारुण्णं, विसया वि विसं व दुहजणगा ॥२२॥
पियजणजोगो वि वियोग-विहुरिओ रोगभंगुरं गत्तं । अक्कमइ पइखणं परम-दारुणा वेरिणि व्व जरा ॥२३॥
अणुसासिऊण एवं, तीए गेहाओ झत्ति नीहरिओ । तेणं चिय मग्गेणं, गतो तुमं णिययभवणम्मि ॥२४॥
तत्थ य ठियस्स तुज्झं, संसारासारयं णियंतस्स । वेयालियपुत्तेणं, पढिया एक्का इमा गाहा ॥२५॥
जह किंपि कारणं पा-विऊण जायइ खणं विरागमई । तह जइ अवट्ठिया सा, हवेज्ज ता किं न पज्जत्तं ॥२६॥
एयं च तुमं सोच्चा, सविसेससमुल्लसंतसुहभावो । जाए पभायसमए, अलहन्तो मंदिरम्मि रइं ॥२७॥
कइवयजणपरियरिओ, वणलच्छिं पेच्छिउं विणिक्खन्तो । अह एगत्थुज्जाणे, चारणसमणो तए दिट्ठो ॥२८॥
जो पसत्थगुणरयणमण्डणो, मोहमल्लदढदप्पखण्डणो । देहकंतिभुसियदिसामुहो, पावलोगसंगतिपरंमुहो ॥२९॥
जोगमग्गनिग्गहियमाणसो, कम्मवेरिजयपयडसाहसो । सोमयाए जणचित्तरंजणो, महिगतो व्व छणहरिणलंछणो॥३०॥
अइविसिट्ठसुहलेससंगओ, भव्वलोयपायडियमग्गओ । कोहमाणभयलोहवज्जिओ, नेव वाइनिवहेण निज्जिओ ॥३१॥
एक्कचलणनिमियंगभारओ, सूरसंमुहकयऽच्छितारओ । सेलरायसिहरं व निच्चलो, काउस्सग्गगतो सत्तवच्छलो॥३२॥
तं एवंविहगुणसं-गयं मुणिं पेच्छिउं वियसियच्छो । पाएसु तुमं पडिओ, एवं भणिउं पवत्तो य ॥३३॥
भयवं! सिवमग्गुवदं-सणेण मम संपयं कुण पसायं । तुह पयजुयचिन्तामणि-पलोयणं होउ मा विहलं ॥३४॥

एवं भणिए पारा-विऊण उस्सग्गमुग्गकरुणाए । जोगो त्ति कलिय तेणं, भणियं भो भव्व! निसुणेसु ॥३५॥
एत्थं अणोरपारे, संसारे दुक्खलक्खपउरम्मि । पाविज्जइ मणुयत्तं, जीवेहिं कहवि तुडिजोगा ॥३६॥
तत्थ वि आरियदेसो, देसे वि हु वरकुलाइसामग्गी । तत्थ वि सोहग्गोवरि-मंजरिसरिसो य जिणधम्मो ॥३७॥
जम्हा नरसुरलच्छी, लब्भइ मणुयत्तमवि य तुडिजोगा । न वि लब्भइ जिणधम्मो, अचिन्तचिन्तामणीकप्पो ॥३८॥
एवं च रयणनिहिलाभ-संनिभं पाविऊण तं कह वि । जो नेइ विफलमइतुच्छ-विसयवासंगवामूढो ॥३९॥
सोऽणंतवारमणवरय-जम्मजरमरणवारिपडिहत्थं । बहुरोगमयरभीमं-भवन्नवं सेवइ चरागो ॥४०॥
को नाम किर सकण्णो, सुदीहकालं किलिस्सिउं कह वि । पत्तो सुवण्णकोडिं, हारति तं कागणीए कए ॥४१॥
किंच --
धम्मत्थकाममोक्खा, चउरो किर होंति एत्थ पुरिसत्था । ताण पुण सेसपुरिसत्थ-हेउभावो वरो धम्मो ॥४२॥
तं पुण मिच्छत्ततमोह-मोहिओ णो जहट्ठियं जीवो । नाउं सक्को परिपीय-पउरमइरारसो व्व नरो ॥४३॥
ता भो महायस! तुमं, उज्झियमिच्छत्तसव्वकायव्वो । जिणमेक्कं चिय देवं, मुणिणो गुरुणो य सरिऊण ॥४४॥
पाणिवहमुसावायं, अदत्तमेहुणपरिग्गहारंभं । मुंचसु इमम्मि मुक्के, जीवो मुच्चइ भवभएण ॥४५॥
न य एत्तोच्चिय धम्मो, अन्नो भुवणत्तए वि अत्थि वरो । न य एयविउत्तेणं, मोक्खसुहं लब्भइ कहं पि ॥४६॥
न य निस्सारस्स, सरीरयस्स एयस्स धुवविणासिस्स । धम्मोवज्जणमेक्कं, मोत्तूणऽवरं फलं अत्थि ॥४७॥
खरपवणपहयपउमिणि-दलग्गलग्गंबुबिंदु व्व चलस्स । न य धम्मजणणविरहे, किं पि फलं जीवियस्सावि ॥४८॥
पडिपुन्नमिमं धम्मज्जणं च, नो सव्वविरतिविमुहेण । काउं तीरइ न य एय-विरहेणं लब्भए मोक्खो ॥४९॥
न य तदभावे च सुहं, नीसेसकीलेसलेसपरिहीणं । एगन्तियमच्चन्तिय-मणंतमन्नत्थ संभवइ ॥५०॥
इय एवंविहसोक्खं, मोक्खं जइ वंछसे तुमं लद्धुं । ता जिणदिक्खानावं, घेत्तूण भवन्नवं तरसु ॥५१॥
इय वुत्ते हरिसवसुच्छलन्त-पुलएण भत्तिपणएण । तुमए गहिया दिक्खा, तस्स समीवे मुणिवरस्स ॥५२॥
अह पढियसयलसत्थो, सुणिउण मइमुणियसव्वपरमत्थो । छज्जीवरक्खणपरो, गुरुकुलवासम्मि णिवसन्तो ॥५३॥
विविहतवच्चरणाइं, कुणमाणो गुरुगिलाणबालाणं । उवयारे वट्टन्तो-निंदन्तो पुव्वदुच्चरियं ॥५४॥
अपुव्वापुव्वगुणज्जणम्मि, अब्भुज्जमं परिवहन्तो । सविसेसपसमपीऊस-पसमियासेसकोहग्गी ॥५५॥
निग्गहिइंदियवग्गो, चिरकालं पालिऊण पव्वज्जं । कयपज्जन्ताणसणो, देवो जातोऽसि सोहम्मे ॥५६॥
सा वि सुरसुंदरी तद्दिणाउ, आरब्भ विहियपव्वज्जा । पुव्वसिणेहवसेणं, तुह देवित्तेण उववन्ना ॥५७॥
जातो च मए सद्धिं, पडिबंधो कोइ तुज्झ अइगरुओ । खणमवि वियोगदुक्खं, असहंताण य गतो कालो ॥५८॥
चवणसमए य तुमए, नीओऽहं केवलिस्स पासम्मि । आपुच्छिओ य भयवं, पुव्वभवे भाविजम्मं च ॥५९॥
तेणावि गयपमोक्खा, अस्संखसुतिक्खदुक्खपडिबद्धा । पुव्वभवा परिकहिया, इमो य भाविनरिंदभवो ॥६०॥
तो तुमएऽहं भणिओ, जोडियकरसंपुडेणससिणेहं । मा काहिसि वंझमिमं, अपच्छिमं पत्थणं सुहय! ॥६१॥
जइया हं नरनाहो, होमि महाविसयसंगवामूढो । गयपमुहभवेहिं तया, तुमए पडिबोहियव्वो त्ति ॥६२॥
पावट्ठाणपसत्तो, अपत्तजिणधम्मसारचारित्तो । मा निवडिस्सामि पुणो वि, दुक्खवसीमासु कुगईसु ॥६३॥
पडिवन्नमिमं च मए, चुओ तुमं एस पत्थिवो जातो । सा पुण देवी भज्जा, कणगवई नाम तुह जाता ॥६४॥
पाएण नेव सुहिणो, सोउं पि हु अहिलसन्ति धम्मगिरं । इय सुदुहट्टस्स मए, तुह सिट्ठो एस वुत्तन्तो ॥६५॥
ता सोऽहं तुह मित्तो, सो य तुमं ते इमे य पुव्वभवा । जं बहुगुणोववेयं, तं इत्तो कुण महाभाग! ॥६६॥

"महसेनस्यचिन्तनम्" --

इय कहिए महसेणो, जाइं सरिऊण निरवसेसंपि । मुच्छानिमीलियच्छो, निद्दोवगओ व्व ठाइ खणं ॥६७॥
अह सिसिरपवणपरिलद्ध-चेयणो भालनिमियकरकमलो । सायरकयप्पणामो, राया तं भणिउमाढत्तो ॥६८॥
पडिवन्नभरुव्वहणेण, सुहय! तुमए न केवलं सग्गो । समलंकिओ विरायइ, ओइन्नेणेह धरणी वि ॥६९॥
जइ वि तुह पणयवच्छल्लयाए, तुच्छं तिलोयदाणमवि । पच्चुवयारी होहामि, कहमहं तह वि इइ कहसु ॥७०॥

भणियं सुरेण जइया, जिणपयमूले पवज्जिहिसि दिक्खं । पच्चुवयारी नरवर!, होहिसि निस्संसयं तइया ॥७१॥
एवं काहं ति पयंप-माणमुवलद्धसुद्धसम्मत्तं । मोत्तुं सगिहम्मि निवं, जहागयं पडिगओ तियसो ॥७२॥
राया वि विम्हियमणो, नियनियठाणत्थसुहडकरितुरगं । भवणं देविं च पलो-इऊण चिंतेउमाढत्तो ॥७३॥
देवाणमहो सत्ती! तहाविहं दंसिऊण उड्डमरं । तह उवसामं नीयं, जह न मुणइ पेच्छगो वि जणो ॥७४॥
एवंविहं सुरामत्थ-सुन्दरं सुरभवं सरन्तस्स । माणुस्सएसु किच्चेसु, जीव कह तुज्झ रमइ मई ॥७५॥
कह वा वि वंतपित्तासुईसु, दुग्गन्धमलविलीणेसु । भोगेसु पडिबन्धो, उप्पज्जइ तुज्झ निल्लज्ज! ॥७६॥
किं वा खणभंगुररज्ज-विसयवावारचिंतणं मोत्तुं । अणवरयमिमं चिय मोक्ख-हेउभूयं ण पत्थेसि ॥७७॥
किं होही तं सुदिणं, सव्वं संगं जहिं विमोत्तूणं । मिगचारियं चरिस्सामि, सुमुणिपयसेवणासत्तो ॥७८॥
का होही सा सुनिसा, जीए कंडूयणट्ठया वसभा । घट्टिस्सन्ति ममंडगं, उस्सग्गट्ठियस्स थाणुं व ॥७९॥
को वा सो सुमुहुत्तो, होही खलियाईदोसपामुक्कं । आयारप्पमुहमहं, जम्मि सुत्तं पढिस्सामि ॥८०॥
को वा सा वेला वि हु, होही जीए य पक्खिविस्सामि । देहविणासपसत्ते वि, करुणभरमंथरं दिट्ठिं ॥८१॥
कइया व थेवखलिए वि, परुसवयणेहिं बोहिओ सन्तो । हरिसभरनिब्भरंगो, गुरुण सिक्खं गहिस्सामि ॥८२॥
होही य को स समओ, जम्मि इह-परभवेसु णिरवेक्खो । आराहणमाराहिय, पाणच्चायं करिस्सामि ॥८३॥
इय संवेगोवगओ राया जा चिन्तए रवी ताव । सविसेसमणिच्चं उव-संसिउं अत्थमणुपत्तो ॥८४॥
[1]सूरारुणकरपहकर-करंबिओ सहइ तयणु जियलोओ । जयकवलणमणकीणास-चक्खुपहपसररुद्धो व ॥८५॥
कुणह जणा! अत्तहियं, एस विसप्पइ तमो कयंतो व्व । इय विहगकलयलेणं, कहइ व संझा वियंभंती ॥८६॥
विहलियदोसावेसो, अवहत्थियतमभरो मुणिजणो व्व । विप्फुरइ पयडमाहप्प-निम्मलो तारयसमूहो ॥८७॥
कालपरिणामविहडिय-पुव्वदिसासिप्पिसंपुडुल्लसिओ । मुत्ताहलनिउरंबो व्व, सीयकिरणो वि उग्गमइ ॥८८॥
एवं विह निसिसमए, जाए काउं पओसकिच्चाइं । सुहसेज्जाए निसन्नो, नरनाहो चिंतए एवं ॥८९॥
पुरनगरखेडकब्बड-मडंबगामासमाइणो धन्ना । ते जेसु जिणो विहरति, भुवणगुरु सिरिमहावीरो ॥९०॥
जइ सो भयवं भुवणेक्क-बंधवो एज्ज एत्थ नयरीए । ता पव्वज्जं घेत्तुं, दुक्खाण जलंजलिं देमि ॥९१॥
इय नरवइणो चिन्तागयस्स, निद्दाए अविरइए व्व । पडिवक्खकोवियाए, चिन्तापसरो पडिनिरुद्धो ॥९२॥
अह पच्छिमरयणीए, अत्ताणं दुग्गपव्वयसिरम्मि । आरोहियमुत्तमबल-जुएण पुरिसेण सुमिणम्मि ॥९३॥
दट्ठूणं नरनाहो, मंगलजयतूरघोसपडिबुद्धो । चिन्तइ परमब्भुदओ, होही धुवमज्ज मह को वि ॥९४॥
किंतु मम पव्वयारोहणेण, जो वट्टिओ महाभागो । उवयारेण स नज्जइ, परमब्भुदएक्कहेउ त्ति ॥९५॥
एवं विगप्पमाणस्स, भूमिनाहस्स झत्ति आगंतुं । सिरस्इयपाणिकमला, पडिहारी भणिउमाढत्ता ॥९६॥
देव! दुवारे उज्जाण-पालया तुम्ह दंसणट्ठाए । करकलियकुसुममाला, चिट्ठन्ति किमेत्थ कायव्वं ॥९७॥
रन्ना जंपियमाणेहि, झत्ति तो सा पडिच्छिउं आणं । उज्जाणपालगे लहु, घेत्तु पत्ता निवसमीवं ॥९८॥
उज्जाणपालगेहिं, कयप्पणामेहिं अप्पिउं कुसुमे । सिरसि विरइयंजलीहिं, पयंपियं जयसि तं देव! ॥९९॥

"श्रीवीरजिनागमनम्" —

वद्धाविज्जसि य जओ, तइलोक्कदिवायरो महावीरो । तिहुअणसरपरिसरकुमुय-विब्भमब्भमिरजसपसरो ॥४००॥
छत्तत्तयपिसुणियसग्ग-मच्चपायालपयरसामित्तो । सालत्तयपरिवेढिय-मणिमयसीहासणासीणो ॥१॥
हरिसुद्धुरसुरपक्खित्त-पउरकुसुमंजलीहिं अग्घविओ । संसयवुच्छेयसमत्थ-सत्थवित्थरियधम्मकहो ॥२॥
सहरिससुरवइकरविहुय-कुमुयहिमगोरचामरुप्पीलो । उम्मिल्लपवरपल्लव-कंकेल्लिपसाहियदियंतो ॥३॥
मायंडपयंडपरिप्फुरंत-भामंडलोवहयतिमिरो । सुरपहयदुंदुहीरव-पयडियअप्पडिमरिउविजओ ॥४॥
गणणाइक्कन्तसुरासुरिंद-संदोहपणयपयपउमो । सयमेव समोसरिओ, सरणागयवच्छलो भयवं ॥५॥
एवं सोच्चा अच्चन्त-पहरिसुप्पन्नबहलपुलयंगो । करकमलनिलीणं पिव, मन्नंतो तिहुयणसिरिं पि ॥६॥

1. पहकर-समूहः ।

सो एस जिणो सुमिणम्मि, जेण आरोहिओ म्हि गिरिसिहरे । संसारपारगामी, भवामि एत्तो ति चिन्तन्तो ॥७॥
अद्धत्तेरसलक्खे, रययस्स पणामिउं निवो तेसिं । पीईदाणं तो सिग्घ-मेव करिकन्धरारूढ़ो ॥८॥
सयलंतेउरपुरलोय-परिगओ मागहेहिं थुव्वंतो । निक्खंतो णयरीओ, वंदणवडियाए जयगुरुणो ॥९॥
दूराउ च्चिय छत्ताइ-छत्तमालोइउं च हिट्ठमणो । पम्मुक्करायचिंधो, पंचविहाभिगमसंजुत्तो ॥१०॥
ओसरणे पविसित्ता, उत्तरदिसिसंठिएण दारेण । हरिसवसवियसियच्छो, सामिं तिपयाहिणेऊण ॥११॥
महियिट्ठचुंबिणा मत्थ-एण पुणरुत्तविरइयपणामो । भालयलारोवियपाणि-पल्लवो थुणिउमाढत्तो ॥१२॥
जय विमलकेवलालोय-दलियमिच्छत्तभीमतमपसर! । पसरंतुब्भडकलिकाल-मेहविद्दवणखरपवण! ॥१३॥
खरपवणबलिंदियतुरय-वग्गनिग्गहणतिहुअणपसिद्ध! । तिहुयणपसिद्धसिद्धत्थ-रायकुलकमलमायंड! ॥१४॥
मायंडुड्डामरगुरुपयाव-पडिहयकुतित्थिविप्फुरण! । रणरोगासिवपसमण-सहेक्कनामग्गहण! देव! ॥१५॥
देविन्दविन्दवन्दिय! दढरागद्दोसदारुकरवत्ति! । करवत्तिनिव्वुईसुह! जयसि तुमं जिण! महावीर! ॥१६॥
उवसग्गवग्गनिक्खोभयाए, कह मेरुणोवमा होज्ज । तुह देव! चलियचलणं-गुलीए हलहलियसिहरेण ॥१७॥
कह तेजसोमयासु वि, उवमिज्जसि नाह! तं रविससीहिं । दिणरयणीण विरामे-जेसिं सिरी दूरमुवरमति ॥१८॥
कह वा तेण तुलिज्जति, तुह जिण! गंभीरिमावि जलनिहिणा । जो दुट्ठसत्तकयखोभ-णं पि णो गोविउं तरति॥१९॥
इय दूरमसारिच्छे, उवमाणे जइ परं भुवणनाह! । तुमए च्चिय तुममुवमि-ज्जसि त्ति मह चित्तसंवित्ती ॥२०॥
एयं थोऊण जिणं, गोयमपमुहे य गणहरे नमिउं । राया पसन्तचित्तो, तयणु निविट्ठो महीवट्ठे ॥२१॥
तो जयगुरुणा नरतिरिय-देवसाहारणाए वाणीए । पारद्धा धम्मकहा, कहिउं पीऊसवुट्ठिसमा ॥२२॥
कहं— "धर्मदेशना" —
हंहो देवाणुपिया, जइ वि हु तुज्झेहिं जलहिपब्भट्ठं । रयणं पिव मणुयत्तं, संपत्तं कहवि तुडिजोगा ॥२३॥
जइ वि हु मणवंछियसयल-वत्थुसत्थेक्कसाहणसमत्था! । चिन्तामणि व्व भुयदंड-चंडिमावज्जिया लच्छी ॥२४॥
जइ वि हु णो पेच्छिज्जति, तुच्छं पि हु पुन्नपगरिसवसेण । इट्ठवियोगाणिट्ठ-प्पओगपमुहं च किंपि दुहं ॥२५॥
जइ वि हु विसट्टकन्दोट्ट-दामदीहच्छियासु तरुणीसु । उवरमइ न थेवं पि हु, अच्चन्तं गाढपडिबंधो ॥२६॥
रागद्दोसवियुत्तं, खणमेक्कं तह वि माणसं काउं । परिचिंतह एयाणं, सरुवमिय णिउणबुद्धीए ॥२७॥
एत्थ भवम्मि पत्तं पि, कह वि मणुयत्तमकयधम्मेण । एमेव हारियं पुण, पाविज्जति कहवि तुडिजोगा ॥२८॥
पुढवाइएसु जम्हा, जीवो परिवसति कालमस्संखं । तं चेव अणंतगुणं, वणस्सइम्मि गतो सन्तो ॥२९॥
अन्नासु वि विविहासुं, निंदियजोणीसु णेगवारा तो । जीवस्स भमन्तस्स, कत्तो च्चिय एयसंपत्ती ॥३०॥
अवि लब्भन्ति समत्थाइं, सेसमणवंछियाइं कज्जाइं । सिवसोक्खसाहणखमं, एयं पुण नूण दुल्लंभं ॥३१॥
जा वि हु गरुयकिलेस-प्पसाहिया दुक्खरक्खणिज्जा य । सयणनरनाहतक्कर-[1]तक्कुयसाहारणा लच्छी ॥३२॥
आवयणिबंधणाए संमोहकरीए एगभवियाए । सरयब्भं व चलाए, विहलो तीए वि परितोसो ॥३३॥
जं पि य कहंपि संपइ, इट्ठवियोगाइ नावडइ दुक्खं । किं एत्तियमेत्तेण वि, तस्साभावो सया जातो ॥३४॥
जम्हा सिद्धे मोत्तुं, अन्नो सो नत्थि तिहुयणे वि जणो । सारीरमाणसाइं, जस्स वियंभंति न दुहाइं ॥३५॥
एत्तो च्चिय मुणिवसभा, सव्वं संगं विवज्जिउं दूरे । अब्भुज्जमन्ति भवभीरु-माणसा मोक्खसोक्खत्थं ॥३६॥
जइ पुण इट्ठवियोगाइ, नेव थेवं पि होज्ज इह दुक्खं । तो नो करेज्ज दुक्कर-तवचरणं को वि मोक्खकए ॥३७॥
एयं च चिन्तह दढं, पडिबंधो जो य एस रमणीसु । सो किंपाकफलं पिव, मुहमहुरो अंतविरसो य ॥३८॥
अस्संखभवपरंपर-परिचयकरी सुहासयविदारी । सुमुणिजणवज्जणिज्जा, मणसा वि य नेव सरणिज्जा ॥३९॥
जं किं पि एत्थ वसणं, दुक्खं जं किं पि जं च वयणिज्जं । सव्वस्स तस्स मूलं, एसा च्चिय गिज्जए एक्का॥४०॥
भवसायरस्स धारं, ते च्चिय पत्ता पवित्तिया धरणी । तेहिं चिय सच्चरिएण, जेहिं चत्ता इमा दूरं ॥४१॥
इय भो महाणुभावा!, सुणिउणबुद्धीए चिन्तइत्ताणं । अणुसरह सरहसं धम्म-सारवायारमणवरयं ॥४२॥

1. तक्कुय-याचक ।

एवं जिणेण कहिए, सविसेससमुल्लसन्तसुहभावो । राया कयप्पणामो, णिडालतडघडियकरकमलो ॥४३॥
जंपिउमाढत्तो जाव, नाह रज्जे ठवामि नियपुत्तं । ताव तुह पायमूले, पव्वज्जं संपवज्जामि ॥४४॥
भणियं तिहुयणगुरुणा, जुज्जइ तुम्हारिसाण राय! इमं । नहि विन्नायसरुवा, रमंति थेवं पि संसारे ॥४५॥
अह पणमियजिणचरणो, राया गंतूण नियभवणम्मि । सामन्तमंतिपमुहं, पवरजणं वाहारावेति ॥४६॥

"क्षमायाचना" एवं "हितशिक्षावर्णनम्" —

भणइ य स गग्गरगिरं, अहो ममिन्हिं पव्वज्जिउं दिक्खं । जाया बुद्धी ता अहि-वइत्तदप्पाउ मोहा वा ॥४७॥
जं चट्टियमवयारे, तुम्ह मए किंपि कहवि तं सव्वं । खमियव्वं तुब्भेहिं, वुड्ढिं नेयं च रज्जमिमं ॥४८॥
एवं ते अणुसासिय, महाविभूईए पुण्णदियहंमि । जायम्मि सुहमुहुत्ते, रज्जम्मि ठवेई जयसेणं ॥४९॥
सामंतमंतिमंडल-पमुहपहाणेण परियणेण समं । पणमित्ता सप्पणयं, कयंजली तमणुसासइ य ॥५०॥
जइ वि हु पयडीए च्चिय, सच्चरियालंकियस्स तुह वच्छ! । नो अत्थि सिक्खणिज्जं, तहवि अहं किं पि जंपेमि॥५१॥
सामी मंती रट्ठं, जुग्गं कोसो बलं सुही चेव । अन्नोन्नुवगारेणं, पुत्तय! सत्तंगरज्जमिमं ॥५२॥
अवलंबिऊण सत्तं, बुद्धीए जहोचियं च चिंतित्ता । सत्तंगस्स वि एयस्स, लाभहेउं जएज्ज तुमं ॥५३॥
तत्थप्पाणं पढमं, ठवेज्ज विणए तओ अमच्चे उ । तत्तो भिच्चे पुत्ते य, तयणु पच्छा पुण पयाओ ॥५४॥
उत्तमकुलप्पसुई, रुवं रमणीमणोहरणचोरं । सत्थपरिकम्मिया तह, मई य भुयबलं वच्छ! ॥५५॥
एसो य संपयं जो, विवेयमायंडगुंडणपयंडो । जोवणतमो वियंभइ, मोहमहामेहपडलघणो ॥५६॥
जा य बुहसलहणिज्जा, पयई आणा य पणइसिरवूढा । एयाणेक्केक्कं पि हु, सुदुज्जयं किं पुण समूहो ॥५७॥
गरुयविहलंघलत्तण- कारणदारेण दारुणो भुवणे । लच्छीमओ विपुत्तय! पुरिसं लहुएइ सयराहं ॥५८॥
किंच—
सुइवायदिट्ठिहरणे, नराण लच्छीए को विसंवायो । जं न कुणति गरलसहो-यरा वि मरणं तमच्छरीयं ॥५९॥
अन्नं च—
पुव्वकयकम्मपरिणति-वसेण विहवो कुलं वरं रुवं । संपज्जइ रज्जं पि हु, गुणहेऊ ण उण विणयगुणो ॥६०॥
ता उज्झिऊण दप्पं, विणयं सिक्खेसु नो मयं भयसु। विणयोणयाण पुत्तय!, जायन्ति गुणा महग्घविया ॥६१॥
भुवणयलम्मि वियंभइ, विउसाणणकोणपहयजसपडहो । धम्मो कामो मोक्खो, कला य विज्जा य विणयाओ॥६२॥
विणएण लब्भइ सिरी, लद्धा वि पलाइ दुव्विणीयस्स । नीसेसगुणाहाणं, विणओ च्चिय जीवलोगम्मि ॥६३॥
किं बहुणा णत्थि जए, तं जं नो जायए इमाहिंतो । तम्हा सिक्खसु विणयं, पुत्तय! कल्लाणकुलभवणं ॥६४॥
तहा—
सत्तड्ढिईए गोत्तड्ढिईए, धम्मट्ठिईए अविरोहा । अत्थस्स अज्जणं जं, वद्धणमह रक्खणं जं च ॥६५॥
सम्मं च जं सुपत्ते, विणियोगो रायवित्तमिय चउहा । एत्थं पि पयट्टेज्जासु, परमपयत्तेण पुत्त! तुमं ॥६६॥
सामं भेयं च उव-प्पयाणमह दंडमिय चउब्भेयं । नियनीई पियपुत्तय!, आराहेज्जासु झत्ति तुमं ॥६७॥
किंतु—
पढमाए असज्झे च्चिय, कज्जे बीयाइयाओ नीईओ । वावारेज्ज जहकमं, विचारइत्ता जहाजोगं ॥६८॥
जं सामनए सन्ते, सन्ते पुरिसाण भेयविन्नाणे । दाणे य संपडन्ते, को दंडे आयरं कुणइ ॥६९॥
अणुवत्तेज्जसु नीइं, पाणप्पियपणइणिं व णिच्चंपि । अन्नायं पुण रुंभेज्ज, सव्वहा दुट्ठसत्तुं च ॥७०॥

"विषविकारः वर्णनम्" —

वत्थन्नपाणभूसण-सेज्जाजाणाइएसु अपमत्तो । पेहेज्ज विसविगारं, च भिंगारायाइपक्खीहिं ॥७१॥
पयडीए भिंगराओ, सुगो तहा सारिया इमे विहगा । सन्निहियपन्नगविसा, करुणं कुव्वन्ति उव्विग्गा ॥७२॥
झत्ति विरज्जन्ति विसं, दट्ठूणं लोयणा चकोरस्स । नच्चइ फुडं च कुंचो, मरइ पुण मत्तकोइलओ ॥७३॥
भोतुमहिलसियमन्नं, थेवं हि परिक्खणत्थमग्गीए । पक्खिविऊणं सम्मं, तल्लिंगाइं पि पेहेज्जा ॥७४॥
धुमाभा जाला से, नीलत्तं अग्गिणो य फोडरवो । तल्लग्गमच्छियाईण, निच्छियं होइ मरणं च ॥७५॥

न तहा सुस्सिन्नत्तं, जलाविलत्तं तहा विवन्नत्तं । सिग्घं च सीयलत्तं, जायइ विसभावियन्नस्स ॥७६॥
नीरस्स कोइलाभा, सविसस्स दहिस्स पुण भवे सामा । आयंबा दुद्धस्स य, मज्झम्मि होंति रेहाउ ॥७७॥
पमिलाणत्तं विसदूसियस्स, सव्वस्स अल्लदव्वस्स । सुक्कस्स' विवन्नत्तं, विवरीयत्तं खरमिऊणं ॥७८॥
पाउरणत्थरणाणं, झामप्पहमंडलाण बाहुल्लं । लोहमणिपमुहाणं तु, होइ मलपंककलुसत्तं ॥७९॥
एवं सामन्नेणं, नाऊणं पुत्त! सुत्तजुत्तीए । विसदूसियदव्वाइं, दूरेणं परिहरेज्ज तुमं ॥८०॥

"पुत्रानुशास्तिः" —

अच्चन्तगूढमंतो, परिभागविऊ य देसकालाणं । सारत्थाणमदाई, दाई वि कहिं पि पत्तविऊ ॥८१॥
सुपरिक्खियकज्जकरो, विसेसओ संधिविग्गहविऊ य । उचियन्नू य कयन्नू, पियंवओ [1]सव्वखेयन्नू ॥८२॥
जियनिद्दछुहपियासो, सव्वपरीसहसहो सुसाहुव्व । अदुराराहो गुणिवच्छ-लो य तं वच्छ! होज्ज सया ॥८३॥
मा पेछेज्ज य मइरा-मिगयाजूयाणि पुत्त! तत्तो जं । दीसंति सुणिज्जन्ति य इह-परलोगुब्भवाऽवाया ॥८४॥
कोउयमेत्तं मोत्तुं, थीसु वि मा काहिसि अइपसंगं । वीसासं च बहुविहा, ताहिंतो वि हु जओ दोसा ॥८५॥
तह कोहलोभभयदोह-थंभचवलत्तवज्जिओ होज्जा । मच्छरपेसुन्नपरो-वतावअलियत्तवज्जी य ॥८६॥
सव्वासमयन्नाणं, णियणियठिइठावगो य होज्जाहि । दुट्ठाण णिग्गहं सिट्ठ-पालणं तह करेज्ज सया ॥८७॥
तहा—
जइ होहिसि तिक्खकरो, उव्वियणिओ रवि व्व होहिसि ता । अच्चन्तमिउकरो, पुण पराभवट्ठाणमिंदु व्व ॥८८॥
ता तिक्खमिउकरं तं, पुत्त! पयत्तेण दूरमुज्झित्ता । सव्वत्थ दव्वखेत्ता-इयाण वट्टेज्ज अणुरूवं ॥८९॥
दीणाणमणाहाणं, परेहिं परिपीडियाण भीयाणं । सज्जो करेज्ज जणगो व्व, सव्वजत्तेण पडियारं ॥९०॥
तह विविहवाहिणिहिणो, अज्जं कल्लं व धुवविणासिस्स । मा देहस्सावि कए, अहम्मकम्मे रमेज्जासि ॥९१॥
को नाम कुलपसूओ, तुच्छसुहलेसमोहियमईओ । निस्सारसरीरकए वि, पाणिणो पुत्त! पीडेज्जा ॥९२॥
गुरुदेवातिहिपूया-पडिवत्तिपरो य दव्वभावसुई । होज्जसु पियदढधम्मो, धम्मियवच्छल्लकारी य ॥९३॥
सव्वाओ वि पवित्ती, सव्वसत्ताण सुहकए चेव । न य तं धम्माभावे, भवेज्ज ता पुत्त धम्मपरो ॥९४॥
तह वच्छ तुमं मह किं गुणस्स, रयणीदिणाणि वोलिन्ति । इय सइ संनिहियमई, नासि दुही उभयलोगे वि ॥९५॥
संवासं सीलगुणड्ढएहिं, तह संकहं वियड्ढेहिं । पीई अलुद्धबुद्धीहिं, वच्छ! निच्चं चिय करेज्जा ॥९६॥
अप्पपसंसं च चएज्ज, पुत्त सप्पुरिसनिंदियं अहमं । विसमुच्छा इय पुरिसं, जा कुणइ विवेयनिस्सारं ॥९७॥
अप्पपसंसा हि नरस्स, होइ चिंधं खु निग्गुणत्तस्स । जइ तस्स गुणा हुंता, ता नूण जणो वि सलहंतो ॥९८॥
सयणे य परजणे वा, परपरिवाओ विवज्जणिज्जो त्ति । अप्पहियमहिलसन्तो, परगुणदंसी सया होज्ज ॥९९॥
परगुणमच्छरभावो, सगुणपसंसा य पत्थणाकरणं । अविणीयत्तं पुत्तय! इमाइं गरुयं पि लहुइंति ॥५००॥
परनिन्दापरिहारो, सपसंसालज्जणं अणत्थित्तं । सुविणीयत्तं च पुणो, इमाइं लहुयं पि गरुइंति ॥१॥
परगुणगहणं छन्दाणु-वत्तणं हियमकक्कसं वयणं । सुपसन्नसरूवत्तं, अमंतमूलं वसीकरणं ॥२॥
अन्नं च पुत्त! तुज्झं, पढमं चिय जह जरा किर मणम्मि । अल्लियई तओ देहे, तह कायव्वं तया वच्छ! ॥३॥
निव्वाहियमइगहणं, विणावयाएण जोव्वणं जेण । दोसनिहाणे जम्मे, किमिव न पत्तं फलं तेण ॥४॥
एस सुसीलसहावो, सत्थत्थविऊ य एस एस खमी । एस गुणी इइ कस्सवि, धन्नस्साघोसणा भमइ ॥५॥
तह वच्छ तह [2]सयम्मी, निवेसियव्वो गुणाण पब्भारो । दोसाण [3]दुक्किराणवि, जह अवगासो च्चिय न होइ ॥६॥
हियमियभोयणभोई य, तह हवेज्जासि जह न वेज्जेहिं । वाहिज्जसि किंतु धरेसि, नीतिमित्तेण ते पासे ॥७॥
किं बहुणा—
पयडियपभूयपव्वो, पासनिवेसियसुपत्तसंताणो । पयइसरलो सुवंसो व्व, पुत्त! वट्टसु तुमं दूरे ॥८॥
सोमो नयणाऽऽणंदी, कलालओ पइदिणं पवड्ढंतो । पुत्त! पयाणं चन्दो व्व, जलहिणो होज्ज वुड्ढिकए ॥९॥

1. सर्वखेदज्ञः = सर्वप्रकारगजशिक्षादिवेत्ता । 2. स्वस्मिन् । 3. दुष्किराणाम्-दुःखेन दूरीकर्तुं शक्यानामित्यर्थः ।

पयईए चेव गरुओ, पयईए चेव दढपइट्ठाणो । पयईए थिरसहावो, पयईए सुवण्णरयणपहो ॥१०॥
सुविसुद्धजाइवंसो, विबुहाणुगतो य लोयमज्झंमि । मेरु व्व तुमं पुत्तय!, अचलपहुत्तं चिरं धरसु ॥११॥
गम्भीरिमोदयालं-कितो य गुणमणिणिही पडिच्छंतो । बहुनइनिवहं जलहि व्व, मा हु लंघेज्ज मज्जायं ॥१२॥
इय महसेणनरिंदो, विविहजुत्तीहिं सिक्खविय पुत्तं । सामंतमंतिपमुहं, सप्पणयं भणइ पुरलोयं ॥१३॥
एत्तो तुब्भं एसो, सामी चक्खू य मेढीभूतो य । ता एयस्साणाए, ममं व वट्टेज्जह सया वि ॥१४॥
हासेण व कोहेण व, लोहेण व जं च दूम्मिया तुब्भे । रज्जोवगएण मए, तं पि य खमियव्वमेत्ताहे ॥१५॥

"देव्यनुशास्तिः" —

कणगवई वि य भणिया, देवि! तुमं चयसु संपइ पमायं । अणुसरसु सव्वविरइं, विरमसु संसारवासाओ ॥१६॥
किमिह पडिबन्धठाणं, सयणे य धणे य जोव्वणे य जहिं । अणवरयकयविणासो, वसति समीवे च्चिय कयन्तो ॥१७॥
अहपव्वज्जब्भुज्जय-निववाणीवज्जताडिया देवी । बाहप्पवाहवाउल-विलोयणा जंपए एवं ॥१८॥
देवी-थेरत्तसमुचियमिमं, को संपइ पत्थुयत्थपत्थावो । राजा-तं होज्ज न वा को मुणति, तडिल्लयाचंचले जीए ॥१९॥
देवी-दुस्सहपरीसहे कहं, सहिही तुह सुंदरा सरीरसिरी । राजा-किं सुंदरत्तमेयाए, अट्ठिचम्मावणद्धाए ॥२०॥
देवी-कइयवि दिणाणि निवसह, सगिहे च्चिय कीस ऊसुगा होह । राजा-बहुविग्घे सेयत्थे, खणंपि कह णिवसिउं जुत्तं? ॥२१॥
देवी-पेच्छह तहावि नियपुत्त-रज्जलच्छीए पवरविच्छड्डं । राजा-संसारंमि भमंतेहिं, णंतसो किं ठियमदिट्ठं ॥२२॥
देवी किं दुक्करेण इमिणा, संतीए समुद्धुराए रिद्धीए । राजा-सरयब्भभंगुराए, इमीए को तुज्झ वीसंभो ॥२३॥
देवी-पंचप्पयारपवरे, अपत्तकालेवि चयसि किं विसए । राजा- मुणियसरूवो को ते, सरेज्ज पज्जंतदुक्खकरे॥२४॥
देवी-तइ पव्वज्जोवगए, सुचिरं परिदेविही सयणवग्गो । राजा- नियनियकज्जाइं इमो, परिदेवइ धम्मणिरवेक्खो॥२५॥
इय पव्वज्जापडिकूल-जंपिरं पेच्छिउं निवो देविं । जंपइ महाणुभावे!, एत्थ वि किं तुह रई जाया ॥२६॥
किं पम्हुट्ठं जं मज्झ-वयणओ इय भवाओ तइयभवे । गहिया तुमए दिक्खा, पम्मुक्काऽसेससंगाए ॥२७॥
सोहम्मदेवलोए, देवित्तेणं च मज्झ उववन्ना । इण्हिं पुणो वि भज्जा, परूढदढपेमपडिबद्धा ॥२८॥
इय जंपिरे नरिंदे, देवी अणुसरिय पुव्वभववित्तं । आबद्धकरयलंजलि-मुल्लविउमिमं समाढत्ता ॥२९॥
नरनाह! जुण्णगोणि व्व, विसयपंकंमि नूण [1]खुत्ता हं । उवएसरज्जुणायड्ढि-ऊण तुमए समुद्धरिया ॥३०॥
इण्हिं चिय विप्फुरियं, विवेयरयणेण इण्हिं निन्नट्ठा । घरवासवासणा विय, इण्हिं मोहो मह पलीणो ॥३१॥
ता जह पुव्वं तह संपयं पि, पडिवज्जिमो समणदिक्खं । सुमिणोवमेण एत्तो, पज्जत्तं गेहवासेणं ॥३२॥

"दीक्षाहेतुः प्रयाणः" —

इय तीए जंपियंमि, राया सविसेसवड्ढिउच्छाहो । कयमज्जणोवयारो, परिहियफलिहुज्जलदुगूलो ॥३३॥
मोयावियचारगरुद्ध-बद्धअवराहकारिनरवग्गो । सव्वत्थ वि णयरीए, उग्घोसावियअमाघाओ ॥३४॥
काराविंयजिणमंदिर-पूयासक्कारपेच्छणाइमहो । [2]सुंकाइपरिच्चाया, धम्मियजणजणियपरितोसो ॥३५॥
सम्माणियपणइजणो, [3]जंमग्गिरतक्कुयाण दिण्णधणो । उचियपडिवत्तिपुव्वय-संभासियपयइवग्गो य ॥३६॥
पासायसिहरपरिसंठिएहिं, हरिसुल्लसंतपुलएहिं । पेहिज्जंतो णयरी-जणेहिं दढमणिमिसच्छीहिं ॥३७॥
सब्भूयाहिं महत्थाहिं, हियय़परितोसकरणदक्खाहिं । वेयालियणिवहेणं, गिराहिं पवराहिं थुव्वंतो ॥३८॥
देवीए समं राया, सहस्सनरवाहिणीए सिबियाए । आरुहिऊण पयट्टो, गंतुं जिणपायमूलंमि ॥३९॥
तयणु गहिरदुंदुहीभेरिभंकारसम्मिस्सआवूरियाऽसंखसंखुब्भवाऽऽरावरुद्धंबरं,
जुगविगमसमीरपक्खुद्धखीरोयनिग्घोससंकाकरं किङ्करेहिं हयं तूरचाउव्विहं ।
पहरिसवसनीसरंतऽसुजलायिलच्छेण संखोहपल्हत्थकंचीकलावेण सव्वायरं,
बहुविहकरणंऽचियं नच्चियं वाररामाजणेणं जणाणंदसंदोहदाणक्खमेणं परं [दण्डओ छन्दो] ॥४०॥
इय परमविभूईए, राया संपप्प ओसरणभूमिं । ओयरिउं सिबियाओ, सामिं तिपयाहिणेऊण ॥४१॥
जय भवभयवारण! सिवसुहकारण! दुज्जयणिज्जियविसमसर! सिरिवीरजिणेसर! पणयसुरेसर! थुइपरलोयहं दुरियहर!॥४२॥

1. मग्ना । 2. शुल्कादिपरित्यागात् । 3. याचकेभ्यः ।

इइ थुणिऊणं उज्झइ, रयणालंकारकुसुमसंभारं । पुव्वुत्तरदिसिभाए, तओ जिणं विन्नवइ एवं ॥४३॥
जयगुरु! भवजलहित्तो, पव्वज्जाजाणवत्तदाणेणं । करुणायर! उत्तारेसु, संपयं जणमणाहमिम ॥४४॥

"दीक्षा एवमनुशास्तिः" —

एवं भणिए भुवणेक्क-भाणुणा तेसिं निययहत्थेण । दिन्ना दिक्खा अस्संख-दुक्खनिम्मोक्खणसमत्था ॥४५॥
एवमणुसासियाणि य, दिक्खेयमहो महंतपुन्नेहिं । लद्धा तुम्हेहिं जओ, तम्हा एत्तो पयत्तेण ॥४६॥
पाणिवहो अस्सच्चं, अदत्तमेहुणपरिग्गहारंभो । जोगकरणत्तिगेणं, जावज्जीवं चिय विमोत्तव्वो ॥४७॥
जइयव्वं जहसत्तीए, कम्मनिम्महणमूलहेउंमि । निच्चं पमायविरहा, बारसविहतवविसेसंमि ॥४८॥
धणधन्नाइयदव्वे, खेत्ते पुरखेडकब्बडप्पमुहे । काले सरयाईए, ओदइयाइम्मि भावे य ॥४९॥
थेवं पि नेय रागो, न वा पओसो मणंमि धरियव्वो । जम्हा मूलं एए, पसरंतमहाभवदुमस्स ॥५०॥
इय सुचिरं सिक्खविउं, कणगवई चन्दणाए उवणीया । पहुणा महसेणो पुण, समप्पिओ थेरसाहूण ॥५१॥
तो विहरइ स महप्पा, गामागरनगरमंडियं वसुहं । थेराण समीवंमि, सुत्तं अत्थं च गिण्हंतो ॥५२॥
अह अन्नया कयाई, केवलिपज्जायपालणं काउं । पावापुरीए नाहो, सिवमयलमणुत्तरं पत्तो ॥५३॥
तो तेण चिन्तियमिमं, अहो कयंतस्स किंपि नासज्झं । जं तारिसा वि पहुणो, विणासधम्मत्तणमुवेंति ॥५४॥
जइ ते वि नमंतसुरिंदविंद-मणिमउडलीढपयपीढा । चलणग्गचालियाचल-डोल्लावियसघरधरणियला ॥५५॥
धरणियलछत्तसुरसेल-दण्डकरणप्पहाणसामत्था । कंकेल्लिपमुहवरपाडि-हेरसिरिपायडिस्सरिया ॥५६॥
अंगीकिज्जंति अणिच्चयाए, अच्चंतदुन्निवाराए । ता निस्सारसरीरम्मि, मारिसे होज्ज का गणणा ॥५७॥
अहवा ते जयगुरुणो, असोयणिज्जा जएक्कमहणिज्जा । भेत्तूण कम्मगंठिं, जे पत्ता सासयं ठाणं ॥५८॥
अहमेव सोयणिज्जो, जो अज्जवि निबिडकम्मनिगडेहिं । अच्चंतनिगडिओ चा-रगे व्व चिट्ठामि संसारे ॥५९॥
को वा विसेसलाभो, इओ जराजज्जरस्स मे होही । जेण न काउं तीरंति, निच्चं तवचरणवावारा ॥६०॥
तम्हा जुत्ता इन्हिं, सविसेसाऽऽराहणा मह विहेउं । सा य कह निच्छियत्था, सुवित्थरत्था य नायव्वा ॥६१॥
किं वा एएण विचिन्तिएण, वच्चामि गणहरिंदस्स । उप्पन्नकेवलस्स, गोयमपहुणो समीवंमि ॥६२॥
पुच्छामि तं च आराहणाए, भेयप्पभेयसहियाए । गिहिसाहुगोयराए, विहाणमेगग्गचित्तोऽहं ॥६३॥
तो मुणिऊण सवित्थर-मसेसमवि तव्विहाणमुवउत्तो । सयमायरामि पकहेमि, सव्वसत्ताण य परेसिं ॥६४॥
पढमं सम्मं नाणं, पच्छा करणं परोवएसो य । अमुणियजहट्ठियत्था, परमप्पाणं च नासिंति ॥६५॥
इय चिन्तिऊण वच्चइ, स महप्पा गोयमस्स पासंमि । कलिविजयबद्धलक्खो, पच्चक्खो धम्मराउ व्व ॥६६॥

"श्रीगौतमगणधर स्तुतिः" —

तवसुसियतणुत्तणओ, सणियं कयभूमिचरणविन्नासो । जुगविगमसुसियसुरसरि-पवहोऽनिलचलतरंगो व्व ॥६७॥
थविरत्तवसपकंपिर-करचरणसिरोदराइसव्वंगो । अणवरयं पावरयं, सरीरलग्गं व विधुणंतो ॥६८॥
जुगमेत्तनिहियनयणो, गन्तूणं गोयमं गणहरिन्दं । तिपयाहिणापुरस्सर-मभिवंदइ विणयपणयंगो ॥६९॥
हरिसवसवियसियच्छो, भालयलमिलंतमउलकरममलो । सब्भूयाहिं गिराहिं, थुइं च काउं समाढत्तो ॥७०॥
जय तेलोक्कदिवायर! जयगुरु! जिणवीरपढमवरसिस्स! । भीमभवजलणसंतत्त-गत्तसत्ताण जलवरिस! ॥७१॥
जय हिमवन्तमहाऽचल-महंतरंगंतनयतरंगाए । जणगत्तणेण निम्मल-दुवालसंगीसुरसरीए ॥७२॥
जय अक्खीणमहाणस-तावसजणजणियपरमपरितोस! । अच्चंतपसिद्धपभूय-लद्धिसुसमिद्धिसंपन्न! ॥७३॥
जयधम्मधुराधरणेक्क-धीर! जय विजियसव्वजेयव्व! । जय सव्वायरसुरजक्ख-रक्खपणिवइयपयकमल! ॥७४॥
जय जगचूडामणिणा, जिणेण तित्थत्तणेण वागरिय! । निम्मलछत्तीसगुणालि-निलय! भयवं! कुण पसायं ॥७५॥
भेयप्पभेयदिट्ठंत-जुत्तिजुत्तं सवित्थरं नाह! । गिहिसाहुगोयरं मह, कहेहि आराहणविहाणं ॥७६॥
इय कहिऊणं विरए, फुरंतमणिकंतदंतदित्तीए । धवलिंतो व्व नहयलं, गोयमसामी भणइ एवं ॥७७॥

"श्रीगौतमगणधरोपदेशः" —

भो! भो देवाणुप्पिय!, पहाणगुणरयणणिरुवमनिहाण! । सविसुद्धबुद्धिकुलभवण! सुट्ठु पुट्ठं तए एयं ॥७८॥

न हु कल्लाणपरंपर-परंमुहाणं कयाइ पुरिसाण । जायइ सुदिट्ठपरमत्थ-पेहणुप्पेहणा बुद्धी ॥७९॥
ता निरुवमधम्माऽऽधार-धरियदुद्धरपगिट्ठतवभार! । महसेणमहामुणि! सिस्स-माणमेयं निसामेसु ॥८०॥
इय एसा जह रन्ना, महसेणेणं पवन्नदिक्खेणं । जइगिहिविसया पुट्ठ त्ति, जं पुरा भणिय वुत्तं तं ॥८१॥
अहुणा सिट्ठा जह गोयमेण, महसेणमुणिवरिट्ठस्स । आराहणा तहाऽहं, जहासुयं तं निदंसेमि ॥८२॥
आराहणेह सिवपुर-परमपहो पहयरागदोसेहिं । अणुवकयपराणुग्गह-परेहिं भणिया जिणिंदेहिं ॥८३॥
सा य महाजलजलनिहि-निहित्तरयणं व कहवि तुडिजोगा । ववहारनयमएण वि, कहं पि जइ लब्भइ जिएहिं॥८४॥
ता तीए उत्तरोत्तर-पगिट्ठयारोहणेण पइसमयं । अप्पा विसिट्ठकिच्चेसु, निच्चसो संठवेयव्वो ॥८५॥
एवं च इमं मणुयत्तणं पि, विहलं न होइ संपत्तं । जिणसमयपसिद्धक्कम- [1]कमढस्स व दंसणं ससिणो ॥८६॥
कयमेत्थ पसंगेणं, नाणस्स य दंसणस्स चरणस्स । तवसो य णिरइयारं, कीरइ आराहणं जीए ॥८७॥

"आराधना स्वरुपम् एवं ज्ञानस्य सामान्याराधना" —

सा चउखंधा आराहणेह, भण्णइ इमा य दुविगप्पा । सामन्नविसेसवसा, तत्थ य सामन्नओ भणिमो ॥८८॥
जो जत्थ सुए पढणाइ- अवसरो तस्स तत्थ चेव सया । विणएण सबहुमाणं, उवहाणपुरस्सरं तह य ॥८९॥
जं जत्तो य अहीयं, तस्स तओ धुवमनिण्हवणपुव्वं । सुत्तत्थतदुभयाणं, अणन्नहाकरणओ तह य ॥९०॥
जा सुठ्ठु वायणा पुच्छ-णा य परियट्टणा परूवणया । तस्सेव य परमेगग्ग-याए अणुपेहणा जा य ॥९१॥
जा उ य दिया राओ य, वा वि एगस्स परिसुवगयस्स । अह सुहपसुत्तगस्स य, जागरमाणस्स अहवा वि ॥९२॥
उद्धट्ठियस्स अहवा, अह य निसन्नस्स अह निवन्नस्स । कत्थइ थिरस्स चलिरस्स, वा वि अह खलियपडियस्स॥९३॥
सुत्थस्स दुत्थियस्स य, सवसस्स परव्वसस्स य तहेव । छीए य वियंभणे खास-णेय, अहवा वि किं बहुणा ॥९४॥
जह वा तह वा परिसंठियस्स, अणुवरयचित्तवित्तिस्स । तग्गहणधारणापार-तंतवित्तीउ तत्तेण ॥९५॥
सम्मन्नाणगुणड्ढेसु, पुरिसरयणेसु जं च निच्चं पि । भत्तिबहुमाणकरणं, सन्नाणाराहणा एसा ॥९६॥

"दर्शनसामान्याराधना" —

जा पुण सरुवगुविलत्तणेण, दुक्खोवलक्खणिज्जेसु । जीवाजीवप्पमुहेसु, सव्वसब्भूयभावेसु ॥९७॥
अणुवकयपराणुग्गह-परपरमेसरजिणप्पणीयत्ता । कहवि अबोहे वि परं, भवियव्वमिमेहिमिय भावा ॥९८॥
निस्संसयपडिवत्ती, निच्चं चिय जं च कुच्छियमयं पि । एयं पि इयगुणेणं, सुमयं ति न कंखकारित्तं ॥९९॥
विहियाणुट्ठाणफलंमि, तह य जं संसयस्स परिहरणं । जल्लमलाविलगत्तेसु, जईसु न दुगंछणं जं च ॥६००॥
जो य कुतित्थियअइसय-दंसणाउ न विम्हओ जा य । धम्मियगुणोववूहा, जं गुणदुत्थे य थिरिकरणं ॥१॥
जं च तहाविहसाहम्मिएसु, वच्छल्लमिह जहाथामं । अरिहप्पणीयपवयण-पभावणं जं च बहुभेयं ॥२॥
इणमेव य णिग्गंथं, पवयणमट्ठो अयं खु परमट्ठो । सेसो हु पुणो अणट्ठोत्ति, भावणा जा य भावेण ॥३॥
निम्मलसम्मत्तगुणड्ढ-पुरिसरयणेसु, जं च निच्चं पि । भत्तिबहुमाणकरणं, दंसणआराहणा सा उ ॥४॥

"चारित्रस्य सामान्याराधना" —

तह जा असेससावज्ज-जोगपरिवज्जणेण सुपवित्ती । पंचसु महव्वयेसु, दसप्पयारे य जइधम्मे ॥५॥
पडिलेहणा-पमज्जण-पमुहाए चक्कवालरुवाए दसभेयाए तह जा, जइसामायारीए आसेवा ॥६॥
अहवा—
दसविहवेयावच्चे, नवसु य तह बंभचेरगुत्तीसु । जा पिण्डविसुद्धीए, गुत्तितिगे समिइपणगे य ॥७॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं वाऽऽसज्जऽभिग्गहग्गहणे । इंदियदमणे कोहाइ-निग्गहे जा य पडिवत्ती ॥८॥
जमणिच्चयाइविसए, दुवालसण्हमह पंचवीसाए । पंचमहव्वयविसयंमि, भावणं भावणाण सया ॥९॥
जं च विसेसाभिग्गह-गहणसरुवाण भिक्खुपडिमाण । सम्मं दुवालसण्हं पि, पालणं जा य सामइए ॥१०॥
छेयोवट्ठावणिए, परिहारविसुद्धिए य चरणंमि । जा सुहुमसंपराए, पडिवत्ती तह अहक्खाए ॥११॥
सच्चरणरयणपडिपुन्न-पुरिससीहेसु जं च निच्चं पि । भत्तिबहुमाणकरणं, सा चरणाराहणा भणिया ॥१२॥

1. कच्छपस्य ।

"सामान्यतपाराधना" —

न जहा मणस्स खेओ, तहाविहा जह न देहबाहा वि । इंदियवग्गो वि हु चियल-भावमावज्जए न जहा ॥१३॥
रुहिरपिसियाइधाऊण, जह य न जायइ तहाविहोवचओ । न य अवचओ वि सहसा, न वायपित्ताइखोभो य॥१४॥
पारद्धाणं संजम-गुणाण जायइ जहा न परिहाणी । किंतु जह उत्तरोत्तर-मुस्सप्पणमेव ताण भवे ॥१५॥
तह जा तवे पवित्ती, अणसणप्पभिइंमि छव्विहे बज्झे । पायच्छित्तप्पमुहे, इयरंमि वि छव्विहे चेव ॥१६॥
इहलोयपारलोइय-सव्वासंसाण दूरपरिहरणा । बलवीरियपुरिसकाराण, णिच्चमणिगूहणविहीए ॥१७॥
जिणदेसियं ति जिणसेवियं ति, तित्थेसरत्तणकरं ति । भवसूयणं ति निज्जर-फलं ति सिवसुहनिमित्तं ति ॥१८॥
जहचिंतियत्थसंपाडणं ति, दुक्करचमक्कारजणगं ति । निस्सेसदुट्ठनिग्गह-करं ति करणाण दमणं ति ॥१९॥
देवाणं पि हु आकंपगं ति, निस्सेसविग्घहरणं ति । आरोग्गकरं ति सुमं-गलं ति किच्चं ति काऊण ॥२०॥
कायव्वे च्चिय बहुहा, इमंमि परमारहं ति एहिं खु । हेऊहिं जो य करणु-ज्जमो तवे परमसंवेगो ॥२१॥
जं च विचित्ततवोगुण-मणिरोहणगिरीसु पुरिससीहेसु । भत्तिबहुमाणकरणं, तं च तवाराऽऽहणं जाण ॥२२॥
इय सामन्नेण निदं-सियावि एसा विसेसचिन्ताए । संखेववित्थरवसा, दुवियप्पाऽऽराहणा होइ ॥२३॥

"संक्षेपविशेषाराधना" —

तत्थ य संखेवेणं, ताव इमा जं मुणिय दढमऽसुहं । समणं व सावयं वा, सवित्थराऽऽराहणाणुचिअं ॥२४॥
अच्चंततिव्वगेलन्न-पत्तमप्पत्तचित्तसंतावं । दिन्नालोयणमुद्धुय-सल्लं गुरुणो भणाविंति ॥२५॥
तदसंपत्तीए पुणो, अचलंबियसाहसो सयं चेव । काऊण भूमिगोचिय-चिइवन्दणपमुहकायव्वं ॥२६॥
भालयलधरियकरसंपुडो य, धरिऊण माणसुच्छंगे । अरहंते भगवंते, सिद्धे य भणेइ सो एवं ॥२७॥
भावाऽरिनिहंताणं, भगवंताणं नमोऽरिहंताणं । परमाइसयसमिद्धाणं, तह य नमो सव्वसिद्धाणं ॥२८॥
एसोऽहमिहगओ हु, वन्दामि ते य तत्थ चेव ठिया । पासंतु वंदमाणं, अप्पडिहयनाणउज्जोया ॥२९॥
तह पुव्वं पि हु सक्किरिय-गीयसंविग्गसुकडजोगीणं । पुरओ गुरूण सव्वं, मिच्छत्तं मे पडिक्कंतं ॥३०॥
जीवाऽजीवाइपयत्थ-रुइसरूवं च ताण चेव पुरो । सम्मत्तं पडिवन्नं, भवगिरिणिद्दलणदढकुलिसं ॥३१॥
इण्हिं पि ताण पुरओ, सविसेसमसेसयं पि मिच्छत्तं । तिविहं तिविहेण पडि-क्कमामि भवभमणहेउमऽहं ॥३२॥
सम्मत्तं पुण पुणरवि, तेसिं समीवंमि संपवज्जामि । तत्थ वि पडिवत्ती किर, पुरा वि एसा महं आसि ॥३३॥
भावारिचक्कअक्कमण-पत्तसब्भूयनामधेयवरा । अरिहंता भगवंतो, देवा साहू य गुरुणो त्ति ॥३४॥
सा चेव इयाणिं पि हु, सविसेसा मज्झ होउ पडिवत्ती । एवं वयाणि वि पुणो, विसेसओ संपवज्जामि ॥३५॥
तह मेत्तीभावो मह, समत्तसत्तेसु आसि पुव्विं पि । संपइ सविसेसो सो, तुम्हाण पुरो हवउ मज्झ ॥३६॥
इइ कट्टु सव्वसत्ते, खामेमि खमंतु तह महं ते वि । मित्ती चेव महं ताण-मुवरि मणसा वि न पओसो ॥३७॥
तह पडिबन्धो दव्वाइ-गोयरो सव्वहा वि वोसिरिओ । जाव इमम्मि वि देहे, वोसिरिओ मज्झ पडिबन्धो ॥३८॥
इय पडिहयपडिबन्धो, तिविहं च चउव्विहं च आहारं । सागारमणागारं, पच्चक्खइ सो भवुव्विग्गो ॥३९॥
तत्तो य पंचपरमेट्ठि-मंतमच्चंतभत्तिसंजुत्तो । परियत्तंतो कालं, करेज्ज सज्झाणसंपन्नो ॥४०॥
एत्थ य महुनरनाहो, संखित्ताराहणाए दिट्ठंतो । अन्नो सुकोसलमुणी, मुणियव्वो निच्चलपइन्नो ॥४१॥

तहाहि— 'मधुनृपदृष्टांतः'

अहिगयजीवाइपयत्थ-वित्थरो परमसम्मदिट्ठी य । किं बहुणा आगमभणिय-सयलसावयगुणाणुगओ ॥४२॥
महुराउरीए राया, आसि महू सो य अन्नया धन्नो । कीलानिमित्तमुज्जा-णमुवगतो परिमियबलो य ॥४३॥
तत्थ रमंतो सो हेरिऊण, सत्तुंजएण पडिरिउणा । पडिरुद्धो भूरिबलेण, भाउणा रामदेवस्स ॥४४॥
साहिक्खेवं भणिओ य, रे लहुं चयसु भुयबलचलेवं । जइ जीयत्थी ता मत्थ-एण उव्वहसु मे आणं ॥४५॥
आ पाव! कहं इय जंपिऊण, अज्जवि तुमं धरसि जीयं । इइ तज्जंतो आबद्ध-भिउडिभीमो महूराया ॥४६॥
आवरणविरहियंगो, दप्पुद्धुरपवरसिन्धुरारूढो । जुज्झेण संपलग्गो, तेण समं, जीयणिरवेक्खो ॥४७॥

तो भिन्नकुंभिकंठयं, पडंतदंतिमिंठयं । [1]चलंतपीलुपट्टयं, [2]तुट्टंतसारिवट्टयं ॥६४८॥
दंतग्गदट्ठउट्ठयं, [3]भरंतलट्टवंठयं । सडंतसारखग्गयं, पलाणभीरुवग्गयं ॥६४९॥
छिज्जन्तअंगरक्खयं कुंतग्गभिन्नकक्खयं । भज्जन्तभूरिसंदणं, पहारदाणदारुणं ॥६५०॥
सव्वत्थ लोहियारुणं, अणेगरुंडभीसणं । काऊण सत्तुपक्खयं, महूनिवो विलक्खयं ॥६५१॥
अणवरयवेरिपम्मुक्क-सत्थसंघायघायविहलंगो । नीहरिऊण रणाओ, कुंजरपट्टिट्ठिओ संतो ॥६५२॥
वेरग्गमग्गपडिलग्ग-माणसो माणसोयपरिचत्तो । अच्चंतमहासत्तो, चिन्तिउमेवं समाढत्तो ॥६५३॥
आसि किर मज्झ बज्झ-ट्ठिईए रज्जं पि भुंजमाणस्स । जिणवयणामयभाविय-मणम्मि सुमणोरहा एए ॥६५४॥
अज्जं चयामि कल्लं, चयामि भवसयनिबन्धणं रज्जं । गेण्हामि य परमपएक्क-हेउं सव्वन्नुणो दिक्खं ॥६५५॥
अइयारपंकमुक्कं, पालित्ता तं च अंतकालम्मि । आराहणविहिमणहं, आराहिस्सामि जहविहिणा ॥६५६॥
इण्हिं च न फासुयमही, न य संथारो न चेव निज्जमगा । अहह [4]अथक्के जाया, अतक्किया मे इमाऽवत्था॥६५७॥
अहवा एयावत्थस्स, मह किमिन्हिं पि दीहचिन्ताए । करिपिट्ठी संथारो, अप्पा निज्जामओ होउ ॥६५८॥
इय चिंतिऊण चत्ताणि, तेण लहु दव्वभावसत्थाणि । अप्पा य तक्खणं चिय, णिवेसिओ परमसंवेगे ॥६५९॥
हरिकरिरहनरनिवहा, अंतेउरिया य विविहभंडारा । सनगनगरागरधरा, तिविहं तिविहेणं वोसिरिया ॥६६०॥
वोसिरियं सव्वं पि हु, अट्ठारसपावठाणपडलं मे । नीसेसदव्वखेत्ताइ-गोयरो तह य पडिबन्धो ॥६६१॥
तो धम्मज्झाणरओ, रोद्दट्टज्झाणवज्जिओ धीमं । गरहियचिरदुच्चरिओ, निरुद्धसव्विन्दियप्पसरो ॥६६२॥
पडिवन्नाणसणविही, खामियनीसेससत्तसंताणो । मज्झत्थो भत्तीए, कयंजली भणिउमाढत्तो ॥६६३॥
भावारिविणासीणं, सव्वन्नूणं नमोऽरिहंताणं । कम्मकलावविमुक्काणं, नमो नमो सव्वसिद्धाणं ॥६६४॥
धम्मायाररयाणं, आयरियाणं नमामि सव्वेसिं । सुत्तप्पवत्तगाणं, उवज्झायाणं च पणमामि ॥६६५॥
खन्ताइगुणजुयाणं, नमामि भावेण सव्वसाहूणं । इय पंचनमोक्कारं, कुणमाणो मरणमणुपत्तो ॥६६६॥
तो सत्तसागराऊ, जाओ स सणंकुमारकप्पम्मि । भासुरबोंदी देवो, सुहपणिहाणप्पभावेणं ॥६६७॥
इय महुनरिन्दसंतिय-मक्खाणयमक्खयं समासेण । एत्तो सुकोसलमहा-मुणिस्स वत्तव्वयं भणिमो ॥६६८॥

"सुकोशलनृपदृष्टान्तः" —

साकेयमहानगरे, राया नामेण आसि कित्तिधरो । भज्जा से सहदेवी, सुकोसलो नाम ताण सुओ ॥६६९॥
अह अन्नया कयाई, जायविरागो सुकोसलं रज्जे । ठविऊण सुगुरुमूले, पव्वज्जं गिण्हइ नरिन्दो ॥६७०॥
गहणासेवणरूवं, सिक्खं दुविहं पि सम्ममुवउत्तो । आसेवंतो विहरइ, अममो गामागराईसु ॥६७१॥
एगम्मि य पत्थावे, साकेयपुरे समागओ सो य । भिक्खट्ठाए पविट्ठो, सहदेवीए य दिट्ठो य ॥६७२॥
मा मम पुत्तं उग्गाहिऊण, समणं इमो मुणी काही । इइ चिन्तिऊण तीए, पुराओ निद्धाडिओ सहसा ॥६७३॥
अहह कहं एयाए, हीलिज्जइ नियपहू वि पावाए । इय गाढसोगगग्गिर-गिराए रुन्नं च धाईए ॥६७४॥
पुट्ठा सुकोसलेण य, अम्मो! तं कीस रुयसि? मे कहसु । तीए वुत्तं पुत्तय!, कहेमि जइ सोउमिच्छसि तं ॥६७५॥
जस्स पसाएण इमं, रायसिरिं चाउरंगबलकलियं । पत्तो सि सोवि देवो, कित्तिधरो रायरिसिपवरो ॥६७६॥
चिरकालाओ एत्था-गओ लहुं वेरिओ व्व नयराउ । एयाए तुज्झ जणणीए, अज्ज नीसारिओ वच्छ! ॥६७७॥
एवंविहववहारो, हीणकुलेसु वि न दीसए कहवि । तिहुयणसलाहणिज्जे, तुम्ह कुले होइ चुज्जमिणं ॥६७८॥
एवंविहं च नियसामिणो वि, दट्ठुं पराभवं पुत्त! । अन्नं काउमसक्का, दुक्खं रुन्नेण अवणेमि ॥६७९॥
एवं सोच्चा विम्हइय-माणसो सो सुकोसलो राजा । पिउणो वन्दणहेउं, नीहरिओ झत्ति नयराओ ॥६८०॥
अन्नन्नकाणणेसुं, पलोयमाणेण निउणदिट्ठीए । दिट्ठो य तेण तरुणो, हेट्ठट्ठिओ कित्तिधरसाहू ॥६८१॥
ताहे सुकोसलो परम-हरिसवसनिस्सरंतरोमंचो । अच्चन्तभत्तिसारं, पडिओ साहुस्स चलणेसु ॥६८२॥
भणिउमिमं च पयत्तो, भयवं! गेहम्मि हुयवहपलित्ते । पिउणो नियपियपुत्ते, विमोत्तु किं जुज्जए गमणं ॥६८३॥
अणवरयजम्ममरणग्गि-पउरजालाकलावदज्झन्ते । जं लोए इह मोत्तुं, ममं तुमं ताय! पव्वइओ ॥६८४॥

1. पीलु = हस्ती । 2. त्रुट्यगजपर्याणपृष्ठकम् । 3. वण्ठः - योधः दासः इत्यर्थः । 4. अनघसरे ।

अज्जवि कुणसु पसायं, दिक्खाहत्थावलंबदाणेण । भीमभवकूवकुहरम्मि, निवडमाणस्स मे ताय! ॥८५॥
अच्चन्तनिच्छयं पिच्छि-ऊण परमं च भवविरागित्तं । दिन्ना से पव्वज्जा, कित्तिधरेणं मुणिवरेण ॥८६॥
सहदेवी पुण नाउं, सुकोसल दिक्खियं अइदुहट्टा । मरिऊणं मोग्गिल्ले, गिरिम्मि वग्घी समुप्पन्ना ॥८७॥
ते पुण दोवि मुणिवरा, तवनिरया संजमम्मि उज्जुत्ता ॥ दुस्सहमहापरीसह-रिउसंगरविजयजयपयडा ॥८८॥
अप्पडिबद्धविहारं, विहरन्ता तम्मि चेव गिरिपवरे । संपत्ता अह जाओ, वरिसायालो तहिं तेसिं ॥८९॥
तो गिरिगुहाए मज्झे, सज्झायज्झाणझोसियसरीरा । चाउम्मासं, वसिउं, निस्सरिया सरयकालम्मि ॥९०॥
अह सा वग्घी अच्चन्त-पुव्ववेरेण जायपरिकोवा । ते गच्छन्ते पिच्छिय, अभिमुहमभिधाविया सहसा ॥९१॥
मुणिणो वि अखुद्धमणा, तं इंतिं पासिउं महासत्ता । अव्वो तिव्वुवसग्गो, उवट्ठिओ सावयकओत्ति ॥९२॥
काउं पच्चक्खाणं, सागारमदीणचित्तिणो धीरा । अवलंबियबाहुलया, नासग्गसंगिदिट्ठिया ॥९३॥
मेरु व्व निप्पकंपा, काउस्सग्गे ठिया य चिट्ठन्ति । जा ताव अवक्खंदं, दाऊण सुकोसलो तीए ॥९४॥
वग्घीए [1]सिग्घमवणीए, पाडिओ भक्खिउं समारद्धो । सम्ममहियासमाणो, भावेइ इमं च स महप्पा ॥९५॥
सारीरमाणसेहिं, दुक्खेहिं अभिद्दुयम्मि संसारे । सुलहमिणं जीवाणं, जं किर दुक्खेहिं सह जोगो ॥९६॥
कहमन्नहेह खंदग-मुणिनाहो पंचसाहुसयसहिओ । अच्चंतं जन्तपीडण-पीडाए मरणमणुपत्तो ॥९७॥
कह वा उस्सग्गगयस्स, चत्तदण्डस्स दंडसाहुस्स । सीसं छिन्नं एमेव, जमुणरन्ना परुट्ठेण ॥९८॥
ता एत्थ भवसमुद्दे, सुलहाउ चेव आवयाओ दढं । भव-सयदुहनिम्महणो, दुलहो पुण नवरि जिणधम्मो ॥९९॥
सो पुण कहकहवि, मए चिन्तारयणं च कामधेणु व्व । कप्पदुमो व्व पत्तो, दुल्लहलंभो वि सुकयवसा ॥७००॥
इय एसो च्चिय सफलो, मज्झ अणायरणदोसपरिहीणो । सच्चरणगुणपहाणो, जम्मोऽणाइम्मि संसारे ॥१॥
केवलमेक्कमिमं चिय, चित्तं परितवइ जमहमेयाए । वग्घीए कम्मबन्धस्स, कारणत्तेण उ [2]वयेमि ॥२॥
एत्तो च्चिय ते नमिमो, जे मुणिणोऽणुत्तरं गया मोक्खं । जम्हा ते जीवाणं न, कारणं कम्मबंधस्स ॥३॥
सोएमि न अप्पाणं, एयं सोएमि कम्मपरतन्तं । जिणवयणबाहिरमइं, दुक्खसमुद्दम्मि निवडन्तिं ॥४॥
इय चिन्तयरस्स य से, सरीरकम्ममलतब्भयाऊहिं । समगं पिव तं समसीसि-गाए सहस च्चिय पहीणं ॥५॥
तो उत्तरोत्तरपवड्ढ-माणज्झाणानलेण दड्ढम्मि । सयलम्मि वि कम्मवणे, अन्तगडो केवली होउं ॥६॥
समएण गतो सिद्धिं, रायरिसिसुकोसलो महासत्तो । किं वा सुप्पणिहाणेक्क-बद्धलक्खाण दुस्सज्झं ॥७॥
गाढाउरत्तसंपन्न-साहुगिहिगोयरा समक्खाया । संखेवेणं आरा-हणा इमा कम्मनिम्महणी ॥८॥
वित्थरओ पुण आरा-हणाए सुसिलिट्ठवरपुरीए व्व । चत्तारि चेव मूल-द्दाराइं भवन्ति एयाइं ॥९॥

"विस्तृताराधना स्वरुपम्" —

परिकम्मविही १ परगण-संकमणं २ तह ममत्तउच्छेओ ३ । तत्तो समाहिलाहो ४, जहक्कमेणं जहत्थाइं ॥१०॥
इय पत्थुयत्थवित्थर-पत्थावणकरणपढमठाणाणि । एयाइं चत्तारि वि, मूलद्दाराइं भण्णंति ॥११॥
एएसु य चउसु वि अरिह-लिंगसिक्खाइं नामधेयाइं । पडिदाराइं पन्नरस, दस नव नव हुंतऽणुक्कमसो ॥१२॥
ताइं पुण नियनिय-मूलदारवित्थरपरूवणावसरे । वोच्छं नवरमिमाणं, अत्थववत्था इमा नेया ॥१३॥
इह परिकम्मविहीए, अरिहद्दाराइं चायदारत्तं । जा वि विमिस्सा का वि हु, विभागपरिकीत्तणेणं च ॥१४॥
गिहिसाहूभयविसया, होही वत्तव्वया तदुवरिं तु । पायं साहुगय च्चिय, जम्हा संजायविरइमई ॥१५॥
वड्ढन्तपरमसड्ढो, सड्ढो वि हु कुणइ कालमऽन्तम्मि । अणवज्जं, पवज्जं, पवज्जिउं ते णिसामेह ॥१६॥
अलमिन्हि पसंगेणं, आराहणमेयमऽन्तकालम्मि । अइयारपंकमुक्कं, न थेवपुन्नो जणो लहइ ॥१७॥
जह नाणदंसणाण, य सारो चरणं भवे जहुद्दिट्ठं । चरणस्स य सारो जह, निव्वाणमणुत्तरं भणियं ॥१८॥
निव्वाणस्स य सारो, अव्वाबाहं जहा सुहं बिन्ति । तह सव्वपवयणस्स वि, सारो आराहणा जेण ॥१९॥
सुचिरं पि निरइयारं, विहरित्ता नाणदंसणचरित्ते । मरणे विराहइत्ता, अणंतसंसारिणो दिट्ठा ॥२०॥
आसायणबहुलाणं, विराहगाणं च नाणचरणाणं । पोग्गलपरियट्टद्धं, उक्कोसं अंतरं जम्हा ॥२१॥

1. अवन्याम् । 2. व्रजामि=प्राप्नोमि इत्यर्थः ।

दिट्ठा मिच्छादिट्ठी, अमाइणो तक्खणेण सिद्धा य । आराहियमरणंता, मरुदेवाई महासत्ता ॥२२॥

"मरुदेवा दृष्टान्तः" —

किर मरुदेवी नामं, अहेसि भज्जा नरेन्दनाभिस्स । सा उसभजिणे पव्वज्ज-मुवगए सोगसंतत्ता ॥२३॥
अणवरयविणिंतंगुय-पवाहपक्खालियाणणा रुयइ । जंपइ य ममं पुत्तो, उसहो परिभमइ एगागी ॥२४॥
वसइ य सुसाणसुन्नहर-रण्णपमुहेसु भीमठाणेसु । अच्चन्तनिद्धणो इव, पडिभवणं भमइ भिक्खं च ॥२५॥
एसो पुण से पुत्तो, भरहो हरिकरिरहुब्भडं एवं । भयवसनमंतसामन्त-मण्डलं भुंजए रज्जं ॥२६॥
हा हा हयास! हयविहि! एवंविहवसणमुवणमिंतस्स । मज्झ सुए तुह निग्घिण! का कित्ती को व फललाभो ॥२७॥
इय एवं अणवरयं, कयप्पलावाए सोयविहुराए । तीए रोयंतीए, अच्छीसुं निवडिया नीली ॥२८॥
अह तिहुयणेक्कपहुणो, उप्पन्ने विमलकेवलालोए । तियसेहिं विरइयम्मि, मणिमयसिंहासणसणाहे ॥२९॥
ओसरणे चक्कवई, भरहो सोऊण केवलुप्पायं । मरुदेवीए समेओ, करेणुगाए समारूढो ॥३०॥
जिणवन्दणत्थमिंतो, छत्ताइच्छत्तपमुहमिस्सरियं । दट्ठूणं जयगुरुणो, सविम्हयं भणिउमाढत्तो ॥३१॥
अम्मो! पेच्छ नियसुयं, ससुराऽसुरतिजयपूयणिज्जपयं । भुवणच्छेरयभूयं, परमिस्सरियं च एयस्स ॥३२॥
सलहिज्जंता तुमए, जा मह रिद्धी पुरा पयत्तेण । सा तुह सुयरिद्धीए, न कोडिलेसे वि निव्वडइ ॥३३॥
तहाहि, पेच्छ—
छत्तत्तिगचिन्धबन्धुरं, बहलसाहकंकेल्लिमणहरं । भुवणलच्छिविछड्डसासणं, अम्म! रम्ममेयस्स आसणं ॥३४॥
पंचरायमणिरइयगोउरं, रुप्पहेममणिसालसुंदरं । जाणुमेत्तकुसुमोहभूसियं, नियसु अम्म! ओसरणभूमियं ॥३५॥
इंतजन्तसुरगणविराइयं, वरविमाणमालाहिं छाइयं । दुंदुहीथणियसद्दणिब्भरं, पेच्छ अंब! खणमेक्कमंबरं ॥३६॥
नियसु एत्थ पणमन्तभत्थया, संथुणंति जिणमिंदसत्थया । एत्थ पेच्छ नच्चंतअच्छरा, सहरिसं च गायंति किन्नरा ॥३७॥
अह जिणवाणीसवणुब्भवन्त-हरिसंसुपूरहयनीली । मरुदेवी पेच्छंती, छत्ताइच्छत्तमऽमलच्छी ॥३८॥
तं किं पि सुहज्झाणं, पडिवन्ना जेण तक्खणेणाऽवि । विद्धंसियसयलरया, सिवसोक्खसिरिं समणुपत्ता ॥३९॥
इय निरुवमसुहहेउं, पज्जन्ताराहणाफलं सोच्चा । संसयवाउलचित्तो, सविणयपणओ भणइ सिस्सो ॥४०॥

"महसेनस्य पृच्छा" —

जइ पवयणस्स सारो, मरणन्ताराहणा मुणिवराण । किं दाणिं सेसकाले, जयन्ति तवनाणचरणेसु ॥४१॥
गुरुराह—
जावज्जीवपइन्ना-निव्वहणाराहणा जओ भणिया । पढमं तीए भंगे, सा कत्तो तस्स मरणंते ॥४२॥
तेण जहासत्तीए, आराहिंतेण सेसकालम्मि । मरणंते होयव्वं, मुणिणा दढमऽप्पमत्तेण ॥४३॥
परिजविया वि न सिज्झइ, पहाणसेवं विणा जहा विज्जा । तह पव्वज्जाविज्जा, मरणंताराहणाए विणा ॥४४॥
पुव्वमणब्भत्थकमो, रिउभडगहमम्मि जइ वि परिहत्थो । सुहडो वि जयपडायं, न हरइ जह समरसीसम्मि ॥४५॥
तह उग्गपरीसहसंकडम्मि, न लहइ मुणी वि मरणन्ते । आराहणविहिमणहं, पुव्वमणब्भत्थसुहजोगो ॥४६॥
कयकरणा वि सकज्जं, अच्चंतपमाइणो न साहिंति । परिवडियविरइबुद्धी, आहरणं खुड्डगो एत्थ ॥४७॥
तहाहि—

"क्षुल्लकमुनिदृष्टान्तः"

महिमण्डणाऽभिहाणे, नयरे नाणाइगुणमणिनिहाणो । सिरिधम्मघोससूरी, समोसढो बाहिरुज्जाणे ॥४८॥
पंचसयाइं मुणीणं, परिवारो तस्स निम्मलगुणाणं । तप्परिवुडो य रेहइ, सुरसहिओ सो सुरिन्दो व्व ॥४९॥
रयणायरे व्व नवरं, वडवग्गी सुरपुरम्मि राहु व्व । परितावकरो भीमो, तग्गच्छे ससहरसरिच्छे ॥५०॥
सिस्सो अइकलुसमई, निद्धम्मो सीलपसमगुणवियलो । असमाहिकरो साहूण-मासि नामेण रुद्दो त्ति ॥५१॥
मुणिजणनिन्दियकज्जे, भुज्जो भुज्जो समायरंतं तं । तज्जंति करुणाए, समणा इय महुरवयणेहिं ॥५२॥
पयरकुलवड्ढिओ वच्छ!, तं सि तह दिक्खिओ सुगुरुणा तं । एवंविहस्स तुह निन्दि-यत्थकारित्तणमजुत्तं ॥५३॥
एवं महुरगिराए, वारिज्जंतो वि विरमइ न जाव । दुच्चरियाओ निट्ठुर-गिराए ता तेहिं पुण भणिओ ॥५४॥
रे दुस्सिक्ख दुरासय!, काहिसि जइ दुट्ठच्चेट्ठियमियाणिं । धम्मववत्थाचूरय!, गच्छा निच्छुभिस्सामो ॥५५॥

एवं च तज्जिओ सो, रुट्ठो साहूण मारणनिमित्तं । सयलमुणिजोग्गजलभा-यणम्मि परिखिवइ विसमुग्गं ॥५६॥
अह जाए पत्थावे, पियणत्थं जाव तं जलं जइणो । गिण्हंति ताव तग्गुण-तुट्ठाए देवयाए इमं ॥५७॥
भणियं भो भो समणा!, एत्थ जले तुम्ह दुट्ठसिस्सेण । रुट्ठेण विसं खित्तं, ता मा एयं पिविज्जाह ॥५८॥
एवं सोच्चा समणेहिं, तं जलं तेण दुट्ठसिस्सेण । समगं तव्वेलं चिय, तिविहं तिविहेण वोसिरियं ॥५९॥
अह सो मुणिजणमारण-परिणामज्जियपयंडपावभरो । तज्जम्मे च्चिय अच्चंत-तिव्वरोगाउलसरीरो ॥६०॥
उज्झियजिणिंददिक्खो, इओ तओ परगिहेसु णियसन्तो । बहुपावकम्मपसरो, भिक्खावित्तीए जीवन्तो ॥६१॥
पव्वज्जापरिभट्ठो, अद्दट्ठव्वो सुदुट्ठचेट्ठो य । सो एसो त्ति जणेणं, कित्तिज्जन्तो समक्खं पि ॥६२॥
अट्टदुहट्टोवगओ, पए पए रुद्दज्झाणझाई य । वाहिसिहिविहुरदेहो, अइकूरमई मओ सन्तो ॥६३॥
सव्वपुढवीण पाउग्ग-पावबन्धेक्कहेउभूयासु । अच्चन्तखुद्दनिन्दिय-तिरिक्खजोणीसरुवासु ॥६४॥
पत्तेयं पत्तेयं, एगंतरियासु अंतरगईसु । आहिंडिय आहिंडिय जहक्कमं नरयपुढवीसु ॥६५॥
अइतिक्खदुक्खलक्खक्खणीसु घम्माइयासु सत्तसु वि । उप्पन्नो नेरइओ कयउक्कोसाउयनिबन्धो ॥६६॥
तत्तो जलथलखहयर-जोणीसु अणेगसो समुप्पन्नो । बितिचउरिन्दियजाइसु, जाओ य बहुसु अइबहुसो ॥६७॥
तत्तो जलजलणाऽनिल-पुढवीसुमऽसंखकालमुप्पन्नो । एवं वणस्सइम्मि वि, नवरमणंतं तहिं कालं ॥६८॥
तत्तो बब्बरमायंग-भिल्लचम्मयररयगपमुहेसु । संवुत्थो सव्वत्थ वि, जणवेसो दुक्खजीवी य ॥६९॥
तहा—
कहिं पि सत्थदारिओ, कहिं पि लेट्ठुचूरियो । कहिं पि रोगदूमिओ, कहिं पि विज्जुझामिओ ॥७०॥
कहिं पि धीवराहओ, कहिं पि जायदाहओ । कहिं पि अग्गिदड्ढओ, कहिं पि गाढबद्धओ ॥७१॥
कहिं पि गब्भसाविओ, कहिं पि सत्तुमारिओ । कहिं पि जन्तपीलिओ, कहिं पि सूलकीलिओ ॥७२॥
कहिं पि वारिवूढओ, कहिं पि गड्डछूढओ । सहंतओ महादुहं, गतो य मच्चुणो मुहं ॥७३॥
इय भूरिभवपरंपर-दुहसहणुप्पन्नकम्मलहुभाओ । पयणुकसायत्तेण य, चुन्नउरे पवरनयरम्मि ॥७४॥
वेसमणसेट्ठिगेहिणि-वसुभद्दाए य पुत्तभावेण । उप्पण्णो नियसमये, गुणागरो से कयं नामं ॥७५॥
वड्ढिउमाढत्तो सो, गत्तेणं बुद्धिवित्थरेणं पि । अह अन्नया कयाई, समोसढो तत्थ तित्थयरो ॥७६॥
वन्दणवडियाए जणो, गुणागरो वि य समागतो तुरियं । वन्दित्ता जयनाहं, उवविट्ठो धरणिवट्ठम्मि ॥७७॥
संसयसहस्समहणी, सिवसुहजणणी कुदिट्ठितमहरणी । कल्लाणरयणधरणी, पयट्ठिया देसणा पहुणा ॥७८॥
पडिबुद्धो पउरजणो, पडिवन्नो केणवि विरइधम्मो । मिच्छत्तमुज्झिऊणं, केणवि गहियं च सम्मत्तं ॥७९॥
सो पुण गुणागरो गरुय-हरिसपब्भारपुलइयसरीरो । जयगुरुकयप्पणामो, समुचियपत्थावमुवलब्भ ॥८०॥
भणिउमिमं पारद्धो, भयवं! साहेसु पुव्वजम्मम्मि । किमहं होंतो त्ति महन्त-मेत्थ कोउहलं मज्झ ॥८१॥
अह जयपहुणा तस्सो-वयारमवलोइऊण नीसेसो । रुद्दयखुड्डयमाई, परिकहिओ पुव्ववुत्तन्तो ॥८२॥
इय सो सोउं भयविहुर-माणसो जायगाढपरितावो । जंपइ इमस्स पावस्स, नाह! किं होज्ज पच्छित्तं ॥८३॥
जयगुरुणा भणियं साहु-विसयं बहुमाणपमुहसुहकिच्चं । मोत्तुणं नो भद्दय!, अन्नेणं अत्थि इह सुद्धी ॥८४॥
तो पंचसाहुसयविसय-वन्दणप्पभिइविणयकिच्चपरो । गहिओ अभिग्गहो तेण, घोरसंसारभीएणं ॥८५॥
परिवालइ य जहुत्तं, जत्थ य दिवसे न होंति पंचसया । साहूणं पडिपुन्ना, तत्थ न सो भोयणं कुणइ ॥८६॥
इय छम्मासे पालिय, अभिग्गहं तयणु संलिहियदेहो । मरिऊण बंभलोए, देवत्तेणं समुप्पन्नो ॥८७॥
ओहिबलेणं तत्थ वि, मुणिऊणं पुव्वकालवुत्तंतं । सविसेसजयगुरुसाहूण, वन्दणाइम्मि वट्टन्तो ॥८८॥
अइवाहिय देवत्तं, तओ चवित्ता पुरीए चम्पाए । नरनाहचन्दरायस्स पुत्तभावेण उप्पन्नो ॥८९॥
पुव्वभवसाहुदढपक्ख-वायभावेण तत्थवि स धीमं । मुणिणो दट्ठुं जाइं, सरेइ तोसं च उव्वहइ ॥९०॥
एत्तो च्चिय पियसाहु त्ति, नामधेयं पिऊहिं से विहियं । तरुणत्तणमणुपत्तो, पडिवज्जइ सो य पव्वज्जं ॥९१॥
तत्थवि य समत्थतवंस्सि-लोयविस्सामणाइकरणपरो । विविहाभिग्गहगहणेक्क-बद्धलक्खोऽपमाई य ॥९२॥
संलेहणं करित्ता, पज्जन्ते सुक्कपमुहकप्पेसु । तियससुहमणुभवित्ता, जहक्कमं जाव सव्वट्ठे ॥९३॥

सव्वुक्किट्ठं सोक्खं, अणुभुज्जिय एत्थ लद्धमणुयत्तो । कयपव्वज्जो निरवज्ज–विहियआराहणविहाणो ॥९४॥
निम्महियमोहजोहो, [1]मुसुमूरियभवनिमित्तकम्मंसो । असुरसुरविहियमहिमो, हिमगोरं सिवपुरं पत्तो ॥९५॥
इय खुड्डगनाएणं, पव्वज्जं उवगया वि दक्खा वि । आराहणाविहाणं, काउं पारिंति न पमत्ता ॥९६॥
जे पुण जह एसो च्चिय, तह पइभवविहियपवरसामन्ना । आराहणजयलच्छिं, ते लीलाए च्चिय लहन्ति ॥९७॥
ता निक्कलंकपवज्ज–पालणा मरणकालविसयाए । आराहणाए जणग–त्तणेण णिच्चं पि कायव्वा ॥९८॥
एवं सोच्चा सिस्सेण जम्पियं पुव्वमकयसामन्ना । नणु मरुदेवी सिद्धा, भणियमिणं किमिह तत्तं ति ॥९९॥
गुरुराह–
पुव्वमभावियचित्तो, आराहेइ जइ कोइ मरणंतं । खत्तयनिहिआहरणेण, तं न सव्वत्थ वि पमाणं ॥८००॥
तहाहि–
जइ कीलगखिवणत्थं, दरं खणंतेण भूमियट्ठम्मि । केणवि नरेण पत्तो, रयणनिही कहवि देववसा ॥१॥
ता किं तेणऽन्नेण वि, तहा खणंतेण सो लहेयव्वो । अविसेसेण महीए, तम्हा सव्वत्थ नेगन्तो ॥२॥
इय जइ सा मरुदेवी, पुव्वमणब्भत्थकुसलकम्मा वि । सिद्धा कहंपि किं एव–मेव सिज्झउ जणो सव्वो ॥३॥
पालियमूलपइन्नो, तम्हा कमवड्ढमाणसुहभावो । कुज्जाऽऽराहणमंते, पज्जन्तमइप्पसंगेण ॥४॥
आराहणं च विहिणा, काउं पडिपुण्णमीहमाणेण । मुणिणा वा गिहिणा वा, परिकम्मेयव्वओ अप्पा ॥५॥
पढमं पि रोगिणा इव, विसेसकिरियत्थिण त्ति दंसेमि । परिकम्मविहीणामं, पुव्वुद्दिट्ठं महादारं ॥६॥
तप्पडिबद्धाइं पुण, पन्नरस हवन्ति संगयगुणाइं । जाइं पडिदाराइं, जहक्कमं ताणि कित्तेमि ॥७॥

"पन्द्रहः प्रतिद्वारम्" –

अरिहो[1] लिंगं[2] सिक्खा[3] विणय[4] समाही[5] मणोणुसट्ठी य[6] अणिययविहारदारं[7], रायद्दारं च[8] परिणामो[9] ॥८॥
चाओ[10] मरणविहत्ती[11], अहिगयमरणं च[12] सीइदारं च[13], तह भावणाण दारं[14], चरिमं संलेहणादारं[15] ॥९॥

"अर्हद्धारवर्णनम्" –

अरिहो जोग्गो भन्नइ, सो पुण आराहणाए नायव्वो । सामन्तमन्तिसत्थाह–सेट्ठिकोडुंबियाईणं ॥१०॥
राईसरसेणावइ–कुमारपभिईणमऽहवमऽन्नयरो । तेसिमऽविरुद्धकारी, विरुद्धसंसग्गिपरिहारी ॥११॥
जो जइणो चिन्तामणि–कप्पे त्ति करेइ तीए बहुमाणं । पत्थेइ थिरणुराओ, जो जइसज्झत्तमच्चत्थं ॥१२॥
आराहणाऽरिहेसु य, जो वच्छल्लं करेइ अणवरयं । भावेइ दुल्लहत्तं, तीए धम्मे पमाईणं ॥१३॥
आलोएइ य निच्चं, मच्चुं पच्चूहभीहियत्थाणं । तस्स य निरोहसाहण–माराहणमेव भावेइ ॥१४॥
अरिहन्तेसु य पूया–सक्कारं कुणइ निच्चमुज्जुत्तो । भावेइ य गुणगुरुयं, तेसिं गुणमणिकरंडाणं ॥१५॥
पवयणपसंसणाए, रमेइ विरमेइ धम्मनिन्दाओ । गुणगुरुगुरुभत्तीए, सत्तीए सज्जइ निच्चं ॥१६॥
सुमणे समणे वन्दइ, सुट्ठु निन्देइ णिययदुच्चरियं । गुणसुट्ठिएसु रज्जइ, सज्जइ सइ सीलसच्चेसु ॥१७॥
वज्जेइ कुसंसग्गिं, संसग्गिं कुणइ सीलवन्तेहिं । निच्चं पि गुणे गिण्हइ, परस्स सन्ते वि नो दोसे ॥१८॥
दुट्ठपमायपिसाए, निहणेइ हणेइ इंदियमइंदे । ताडेइ य दुच्चरियं, मणमक्कडमुक्कदुपयारं ॥१९॥
नाणं सुणेइ नाणं गुणेइ, नाणेण कुणइ किच्चाइं । [2]नाणाहिएसु रज्जई, अणुसज्जइ नाणदाणम्मि ॥२०॥
अकुसलखओवसमओ, नियमं कुसलाणुबन्धओ चेव । इइ गुणसत्तो सत्तो, सो च्चिय आराहणा–अरिहो ॥२१॥
तह कुगईपहसहाए, जिणइत्तु परेसि कहमवि कसाए । पसमेइ पसंतमणो, जो सो आराहणा–अरिहो ॥२२॥
अणुवसमपरे वि परे, कुणमाणो सम्ममुवसमोवायं । आराहणारिहत्तं, लहई च्चिय सुद्धभावाओ ॥२३॥
आराहणाठिएण वि, कसायसल्लं समुद्धरेयव्वं । जो पढमं पि तमुद्धरई, तदरिहो सो वि नायव्वो ॥२४॥
जो य न तहारिहेणं [3]मन्नो अन्नस्स तदरिहो सो वि । ईयरो वि तदरिहो, जइ कहमवि ववहरणऽणुन्नाओ ॥२५॥
इहरा आराहणसंठियस्स, संधाणुगम्ममाणस्स । थणवइपओसकरणा, मालिन्नं पवयणस्स भवे ॥२६॥
संमाणदाणसिक्खावणाहिं, ठिइधरियपरिअणच्चाई । जो सो वि तदरिहो खलु, इहरा लोगम्मि परिवाओ ॥२७॥

1. भञ्जित । 2. ज्ञानाधिकेषु । 3. मान्यः ।

तदसामत्थे पुण सव्व-हा वि धम्मियविसिट्ठलोयमओ । जह तह तप्परिचाई वि, तदरिहो होइ विन्नेओ ॥२८॥
तह पयईए विणीओ, पयईए चेव साहसेक्कधणो । पयईए सुकयन्नू, निच्चियनिग्गुणभवठिई य ॥२९॥
तत्तो य तव्विरत्तो, पयईए चेव अप्पहासो य । पयईए अद्दीणो, पयई पडिवन्नसूरो य ॥३०॥
आराहणाए जो वि य, ठियं जणं जणियपावपरिहारं । सोउं दट्ठुं च भवे, तब्भत्तिरसिज्जमाणमणो ॥३१॥
होहं अहं कहंपि पि हु, कयावि कमचिन्नपुन्नसामन्नो । किं मन्ने पुन्नेहिं, सव्वन्नुविहीए इयरुवो ॥३२॥
इय वासणापहाणो, धीबलिओ थिरपसन्तपयई य । सिट्ठजणस्स बहुमओ, नेओ आराहणा-अरिहो ॥३३॥
अहवा
अच्चंतचंडमणवयण-कायकिरिया वि कूरकम्मा वि । अणवरयं महुमेरय-पिसियाऽसणलालसमणा वि ॥३४॥
थीबालवुड्ढमारण-चोरिक्कपरित्थिसेवणपरा वि । अलिउल्लावाभिरती वि, धम्मविहिओवहासा वि, ॥३५॥
होऊण पुव्वकाले, किं पि हु वेरग्गकारणं पप्प । पच्छा पच्छायावा, परमोवसमं पवज्जंति ॥३६॥
जे ते विं हुंति आरा-हणाए अरिहा सुहासया धीरा । रायसुयवंकचूली, चिलाइपुत्ताइणो व्व धुवं ॥३७॥
तहाहि— 'वङ्कचुलस्य दृष्टान्तः'
सुविभत्ततियचउप्पह-चच्चरदेवउलभवणरमणिज्जे । सिरिपुरनगरे राया, अहेसि नामेण विमलजसो ॥३८॥
वइरिकरिकुंभनिब्भेय-लग्गरुहिरारुणुब्भडच्छायो । परिकुवियजमकडक्खो व्व, जस्स खग्गो रणे सहइ ॥३९॥
जस्स य जिणमुणिचलणु-प्पलेसुभसलत्तणं समुव्वहइ । भत्तियसेण य मणिमउड-किरणटिविडिक्कियं [1]सीसं ॥४०॥
तस्स य भज्जा निरुवम-रुवाइगुणोवहसियसुरदयिया । सयलंतेउरपवरा, नामेण सुमंगला देवी ॥४१॥
जमलगजायत्तणओ, पुत्तो नामेण पुप्फचूलो से । धूया य पुप्फचूला, दोन्नि वि अन्नोन्नणिद्धाणि ॥४२॥
नवरं अणत्थसत्थं, उप्पायंतो पुरम्मि सव्वत्थ । भन्नइ स पुप्फचूलो, जणेण किर वंकचूलि त्ति ॥४३॥
नामेण इमेणं चिय, संपत्तो सो पसिद्धिमन्नदिणे । तदुवालंभायन्नण-रुट्ठेणं सो नरिंदेणं ॥४४॥
निव्विसओ आणत्तो, ताहे नियपरिजणेण परियरिओ । तीए विय भइणीए, सहिओ नयराउ नीहरिओ ॥४५॥
लंघित्ता नियदेसं, वच्चंतो पउरगिरिसिणाहाए । हरिनहराऽऽहयकुंजर-विमुक्कसिक्कारभीमाए ॥४६॥
नीरंधगरुयतरुवर-पडिरुद्धाइच्चकंतिपसराए । [2]पसरंतसरहसहरिस-रवसवणपलाणसीहाए ॥४७॥
सीहावलोयणाउल-मयउलकीरंतदरिपवेसाए । वेसाए व्व सया वि हु, महाभुयंगेहिं कलियाए ॥४८॥
अडवीए निवडिओ सो, कत्थ वि य अदिस्समाणमग्गाए । तण्हाछुहाकिलंतो य, जंपिउं एवमाढत्तो ॥४९॥
रे पुरिसा! उच्चतरुंमि, आरुहित्ताऽवलोयह दिसाओ । किं अत्थि एत्थ कत्थ वि, जलासओ [3]वसिममहवा वि ॥५०॥
तव्वयणेणाऽऽरुढा, पुरिसा उच्चम्मि पवरतरुसिहरे । अवलोइउं पवत्ता, दिसिवलयं णिउणदिट्ठीए ॥५१॥
अह थेवभूमिभागे, मसिकोइलगवलसामलसरीरा । जलणं पज्जालिन्ता, भिल्ला आलोइया तेहिं ॥५२॥
सिट्ठं च इमं नरवइ-सुयस्स तेणावि जंपियं भद्दा! गच्छह एसिं समीवे, पुच्छह मग्गं [4]वसिमहुत्तं ॥५३॥
इय सोऊणं पुरिसा, गया समीवम्मि तेसिं भिल्लाणं । आपुच्छिउं पवत्ता, मग्गं भिल्लेहि तो भणिया ॥५४॥
कत्तो तुब्भे एत्था-गया तहा कस्स संतिया किं वा । देसंतरं समीहह, गंतुं साहेह ताव इमं ॥५५॥
पुरिसेहिं जंपियं सिरि-पुराओ नामेण वंकचूलि त्ति । विमलजसरायपुत्तो, पिउअवमाणाउ नीहरिओ ॥५६॥
परदेसं वच्चंतो, इहागतो तस्स सेवगा अम्हे । मग्गस्स पुच्छणट्ठा, तुम्ह समीवं समणुपत्ता ॥५७॥
भिल्लेहिं जंपियं भो!, तं दंसह अम्ह नरवइस्स सुयं । पडिवन्नं पुरिसेहिं, चलिऊण य दंसिओ कुमरो ॥५८॥
अह दुराउ च्चिय मुक्क-कंडकोदण्डपमुहसत्थगणा । भिल्ला नमिउं कुमरं, चिंतेउमिमं समाढत्ता ॥५९॥
एवंविहसुंदरराय-लक्खणालंकिओ इमो अम्ह । जइ कहवि होइ सामी, ता जायइ सव्वसंपत्ती ॥६०॥
इय चिन्तिऊण तेहिं, निडालतडघडियपाणिकोसेहिं । सविणयपणयं भणियं कुमार!, विन्नवणियं सुणसु ॥६१॥
चिरसमुवज्जियपुन्नेण, नूणं तुम्हारिसा पवरपुरिसा । दीसंति ता पसीयह, आगच्छह अम्ह पल्लीए ॥६२॥
कुणह नियपायपंकय-पवित्तियाए य तीइ रज्जं च । सामिवियलाण अम्हं, एत्तो सामी तुमं चेव ॥६३॥

1. मण्डितम् । 2. प्रसरच्छरभसहर्षरवश्रवणपलायितसिंहायाम् । 3. जनाकुलं वासयुक्तं स्थानम् । 4. वासस्थानाभिमुखम् ।

इय सप्पणयब्भत्थण-पल्हत्थियनियकुलव्ववत्थेण । पडिवन्नं कुमरेणं, विसयासंगीण किमकिच्चं ॥८६४॥
अह परियणेण सहिओ, पहिट्ठचित्तेहिं तेहिं भिल्लेहिं । दंसिज्जमाणमग्गो, पडुच्च पल्लिं पयट्टो सो ॥८६५॥
अच्चंतनिबिडदुमदुग्गमेण, सणियं पहेण गच्छंतो । सीहगुहापल्लीए तीए अदूरम्मि संपत्तो ॥८६६॥
दिट्ठा य कुमारेणं, दंसणमेत्ते वि दिन्नभूरिभया । विसमगिरिदुग्गलग्गा, कयन्तजणणि व्व सा झत्ति ॥८६७॥
अवि य—
एगत्थनिहियकुंजर-महंतदंतोवरइयपरिवेढा । अन्नत्थ मंसविक्कय-मिलन्तजणजणियहलबोला ॥८६८॥
एगत्थ [1]बंदपग्गहिय-पहियकीरंतकरुणरुन्नरवा । अन्नत्थं विणासियजंतु-[2]रुहिरविलिप्पिलियमहिवट्ठा ॥८६९॥
एगत्थ घोरसरघुरु-[3]हुरन्तकोलेयनियहदुप्पेच्छा । अन्नत्थुल्लंबियपिसिय-भक्खणुम्मिलियसउणिकुला ॥८७०॥
एगत्थ परोप्परवइर-भावजुज्झंतभीमभिल्लभडा । अन्नत्थ लक्खविंधण-पयट्टएगग्गधाणुक्का ॥८७१॥
जत्थ य दुहत्तजणमारणम्मि, धम्मं वयन्ति निक्करुणा । गिज्जइ य परममंडण-मडकितिमं परजुवइसंगे ॥८७२॥
सलहिज्जइ मइविभवो, विसिट्ठ [विसत्थ] जणवंचणम्मि दढवेरं । वुज्झइ हियभासिम्मि, तव्विवरीए य मित्तत्तं ॥८७३॥
जह तह भासित्तणमडवि, वन्निज्जइ वयणकोसलत्तेण । सत्तवियलो त्ति भन्नइ, नयाणुवत्ती वि मूढेहिं ॥८७४॥
इय एयंविहलोएण, संकुलाए य तीए पल्लीए । अच्चन्तपाववसगो, नरयकुडीए व्व स पविट्ठो ॥८७५॥
ठविओ य सबहुमाणं, चिरपल्लीवइपयम्मि भिल्लेहिं । नियपरक्कमवसओ, जाओ अचिरेण पल्लिवई ॥८७६॥
अवगणियकुलायारो, अविचिन्तियजणगधम्मववहारो । अवहत्थियलज्जभरो, विस्सुमरियसाहुधम्मगिरो ॥८७७॥
वणवारणो व्व अणिवा-रणो सया तेण भिल्ललोएण । परियरिओ अणवरयं, पाणिवहाईसु वट्टंतो ॥८७८॥
पच्चासन्नपुरागर-मडंबकब्बडविणासणुज्जुत्तो । थीबालवुड्ढवीसंभ-घायदिन्नावहाणो य ॥८७९॥
निच्चं जूयपसंगी, निच्चं चिय मज्जमंसउवजीवी । तत्थेव य जायरई, कालं वोलेइ लीलाए ॥८८०॥
अह अण्णया कयाइ, वच्चंता कहवि सत्थपब्भट्ठा । कइवयसिस्सपरिवुडा, संपत्ता तत्थ आयरिया ॥८८१॥
जाओ य तम्मि समए, निवडंतुद्दामसलिलपब्भारो । तंडवियसिहंडिकुलो, पढमो च्चिय पाउसाडंरंभो ॥८८२॥
रेहन्ति जम्मि पल्लव-पसाहिया साहिणो महीवट्ठं । अयगुंठियं व छज्जइ, निरंतरं हरियपडएण ॥८८३॥
गिरिसिहरेहिंतो तुंग-लोलकल्लोलरयनिहेण जहिं । गिम्हं व सवंतीओ, महानईओ पलोट्टंति ॥८८४॥
जम्मि य पउरजलाउल-महिमंडलदुग्गमग्गपरिभग्गा । दूराउ च्चिय सुमरिय-दइया पहिया नियत्तंति ॥८८५॥
इय एयंविहरूवं, वरिसायालं पलोइउं सूरी । समणे सुगुणपहाणे, महुरगिराए इमं भणइ ॥८८६॥
भो भो महाणुभावा!, उब्भिन्नतणंकुरा मही जाया । कुंथुपिवीलियपउरा, ता एत्तो जुज्जइ न गंतुं ॥८८७॥
जम्हा जिणेहिं कहिया, सारो धम्मस्स एत्थं जीवदया । तव्विरहम्मि य दिक्खा, निरत्थिया कुनिवसेव व्व ॥८८८॥
एत्तो च्चिय वासासुं, सुप्पडिलीणंगुवंगवावारा । कुम्मु व्व महामुणिणो, एगट्ठाणम्मि निवसंति ॥८८९॥
ता जामो पल्लीए, इमाए किर एत्थ वंकचूलि त्ति । विमलजसभूवइसुओ, सुम्मइ भिल्लाण नाहो त्ति ॥८९०॥
तं मग्गित्ता वसहिं, अइलंघेमो इमं वरिसयालं । एवं च निक्कलंकं, अणुचिण्णं होइ सामण्णं ॥८९१॥
पडिवन्नं समणेहिं, तओ गया वंकचूलिणो गेहे । गव्वुग्गीवेण मणाग-मेत्तयं तेण पणिवइया ॥८९२॥
दिन्नासीसेण य मुणिवरेण भणियं अहो महाभाग! । अम्हे सत्थब्भट्ठा, संपइ गंतुं च असमत्था ॥८९३॥
जिणसासणसरवरराय-हंसनरनाहविमलजसपुत्तं । सोऊण तुमं इहइं, समागया ता महाभाग! ॥८९४॥
उवणेहि किंपि वसहिं, चाउम्मासं जहा इह वसामो । पयमेत्तं पि न गंतुं, कप्पइ एत्तो तवस्सीणं ॥८९५॥
अह पावपरिगएण वि, अणज्जसंगइसमुत्थदोसाओ । तेणं भणियं भयवं!, नो वसिउं जुज्जए एत्थ ॥८९६॥
जेणं इह मंसासी, पाणिवहाडभिरयमाणसो कूरो । लोगोडणज्जो खुद्दो, न साहुसंवासजोगो त्ति ॥८९७॥
तो मुणिवइणा भणियं, अहो महाभाग! किमिह लोगेण । जीवाण रक्खणं चिय, कायव्वं सव्वजत्तेणं ॥८९८॥
कुंथुपिवीलियपडलाडउलम्मि, नवहरियसलिलकलियम्मि । भूमितले वच्चंता, जइणो धम्माउ भस्संति ॥८९९॥
ता दंसेसु निवासं, साहिज्जं कुणसु अम्ह धम्मम्मि । उत्तमकुलप्पसूयाणं, दूसणं पत्थणाभंगो ॥९००॥

1. 'केदी' इति भाषायाम् 2. रुधिरव्याप्त० । 3. कोलेय = शूकर० ।

एवं सोच्चा नरवइ-सुएण भणियं कयंजलिउडेण । भयवं! देमो वसहिं, परं न एत्थाऽऽवसंतेहिं ॥१॥
तुम्हेहिं थेवमेत्ता वि मज्झ लोयस्स धम्मसंबंधा । कहियव्वा नूण कहा, किंतु सकज्जम्मि जइयव्वं ॥२॥
जम्हा तुब्भं धम्मे, वन्निज्जई सव्वजीवपरिरक्खा । अस्सच्चवयणविरई, परधणगिहिणीपरिच्चाओ ॥३॥
महुमज्जमंसपरिभोग-वज्जणं निच्चमिंदियजओ य । एच करंते य धुवं, सीयइ अम्हाण परिवारो ॥४॥
अहह! कहं सकुलक्कम-संबद्धजिणिंदधम्मसव्वस्सं । विस्सुमरइ दुस्संगइ-गसिओ वि हु अज्ज वि न एस ॥५॥
इय चिंतंतेण मुणी-सरेण पडिवज्जिया ववत्था से । [1]धम्मविवरंमुहम्मि वि, जणम्मि जुत्त च्चिय उवेहा ॥६॥
तो वंकचूलिणा पण-मिऊण तेसिं समप्पिया वसही । सज्झायझाणणिरया, ठिया य ते तत्थ भयवंतो ॥७॥
कुव्वंति विविहदुक्कर-तवचरणमणुत्तरं अहिज्जंति । नयभंगगहणमागम-मणुपरियट्टंति य तदत्थं ॥८॥
भावेंति भावणाओ, पालिंति वयाइं निरइयाराइं । मुणिणो महाणुभाया, सुगुरुसमीवट्ठिया संता ॥९॥
तत्तो—
संथववसथेयुप्पन्न-भत्तिणा वंकचूलिणा सम्मं । णिययपहाणपरियणो, वाहरिऊण य इमं भणितो ॥१०॥
हंभो देवाणुपिया!, खत्तियकुलसंभवं ममं सोच्चा । माहणवणियप्पमुहो, विसिट्ठलोगो इहं एही ॥११॥
तम्हा एत्तो न गिहम्मि, जीवघाओ न मंसपरिभोगो । नो मज्जपाणकीला, कायव्वा किंतु पल्लिबहिं ॥१२॥
एवं च कए एए वि, साहुणो दूरमुक्कविचिकिच्छा । गिण्हंति तुम्ह भवणेसु, भत्तपाणं जहावसरं ॥१३॥
जह आणवेइ सामी, तह काहामो त्ति तेहिं पडिवन्नं । वोलाविंति य दिवसे, मुणिणो वि सकज्जउज्जुत्ता ॥१४॥
अह मुणिवइणा नाउं, विहारकालं ममत्तरहिएण । सेज्जायरो त्ति विहिणा, कहियमिमं वंकचूलिस्स ॥१५॥
भो नरवइसुय! तुह वसहि-दाणसाहेज्जमेक्कमासज्ज । एत्तियदिणाइं वुत्था, एत्थं अम्हे समाहीए ॥१६॥
एत्तो पुण पडिपुण्णा वट्टइ अवही विहारसमओ य । संपत्तो लक्खिज्जइ इमेहिं पच्चक्खलिंगेहिं ॥१७॥
पेच्छसु [2]वइउक्कंता, कच्छा उच्छूणमित्तजंतेहिं । सव्वत्तो सगडेहिं, अक्कंता सयलमग्गा वि ॥१८॥
थेवसलिलाउ पव्वय-नईउ वसभा वि जायदढथामा । सुक्कसलिला य पंथा, गामा [3]पव्वायचिक्खल्ला ॥१९॥
ता भो महायस! तुमं, परमुवयारि त्ति भन्नसे एवं । गामन्तरगमणट्ठा, अणुजाणसु संपयं अम्हे ॥२०॥
जम्हा गोउलसारइय-मेहभमरउलसउणिसुमुणीणं । हुन्ति अनियत्ताओ, वसहीओ सहावओ चेव ॥२१॥
इय भणिउं मुणिवइणो, गंतुं संपट्ठिया सह मुणीहिं । तेसिमणुव्वयणट्ठा, पल्लिवई पट्ठिओ ताहे ॥२२॥
अह सूरीहिं समं चिय, ताव गओ जाव निययसीमंतं । तो वंदिऊण सूरिं, पयंपिउं एवमाऽऽढत्तो ॥२३॥
भयवं! एत्तो उवरिं, एसा परदेससंतिया सीमा । ता गच्छह वीसत्था, अहं पि सगिहम्मि वच्चामि ॥२४॥
वज्जरियं मुणिवइणा, नरवइसुय! जा तए सह ववत्था । धम्माकहणसरूवा, आसी सा संपयं पुन्ना ॥२५॥
ता तुज्झ अणुन्नाए, धम्मुवएसं पयंपिउं किं पि । [4]वंछत्थि वच्छ! वुच्चउ, किंवा पुव्वं पिव निसेहो ॥२६॥
उच्चालियचलणा एत्थ, सूरिणो केत्तियं कहिस्संति । इय चिंतिऊण तेणं, पयंपियं भणसु सुकरं ति ॥२७॥
एत्थन्तरम्मि सूरी, सविसेससुयोवओगओ णाउं । जेहिं नियमेहिं जायइ, इमस्स धम्मुम्मुहा बुद्धी ॥२८॥
जत्तो पच्चक्खं चिय,, उप्पज्जइ आवयापडिग्घाओ । मुणइ य एयं णियमा, नियमाण फलं इमाणं ति ॥२९॥

"वङ्कचुलनियमग्रहणम्" —

तो कहइ जहा भद्दय!, जीवे घाओ न ताव दायव्वो । जाव न सत्तट्ठपए, पच्छाहुत्तं नियत्तो सि ॥३०॥
एगो एसो नियमो, बीओ पुण मा अनायनामाणि । भक्खिहसि फलाणि तुमं, अच्चन्तछुहाऽभिभूओ वि ॥३१॥
तइओ पुण गरुयनरिंद-अग्गमहिसी न कामियव्व त्ति । भोत्तव्वं नेव य काय-मंसमेसो चउत्थो त्ति ॥३२॥
एए चउरो वि तुमं, जाजीवं सव्वजत्तओ नियमे । पालेज्जसु एयं चिय, जम्हा पुरिसाण पुरिसवयं ॥३३॥
किंच—
माणेक्ककणगमुत्ता-हलाइं महिलाण मंडणं एयं । पडिवन्नपालणं पुण, सप्पुरिसाणं अलंकारो ॥३४॥
छिज्जउ सीसं परिगलउ संपया बन्धया वि विहडंतु । पडिवन्नपालणे सुपुरि-साण जं होइ तं होउ ॥३५॥

1. धर्मे विपराङ्मुखे । 2. वृत्युत्क्रान्ताः । 3. म्लानकर्दमाः = शुष्ककर्दमाः । 4. वाञ्छाऽस्ति ।

सदऽसदविसेसणं पि हु, एत्तो च्चिय वुच्चइ इह नराणं । अन्नह समम्मि पंचि-दियत्तणे होज्ज कह भेदो ॥३६॥
इय मुणिवइणा भणिए, सम्ममभिग्गहचउक्कमाऽऽदाय । काऊणं च पणामं, भिल्लवई पडिगओ सगिहं ॥३७॥
सिस्सजणेण परिवुडा, मुणिवइणो वि य जहाभिमयदेसं । इरियासमिइजुत्ता, सणियं गंतुं पयट्ट त्ति ॥३८॥
इयरस्स य पावपओयणेसु, अणवरयकरणपउणस्स । नाणाविहवसणसया-उलस्स वच्चन्ति दियहाइं ॥३९॥
अह अन्नया कयाई, अत्थाणीमंडवे निसण्णेण । तेणं पयंपियमिमं, चिरमिह ववसायरहियस्स ॥४०॥
वोलंति वासरा मे, ता भो पुरिसा! पुरं व नयरं वा । गामं सत्थं [1]वुचियं, सव्वत्थ पलोइउं एह ॥४१॥
जेण तयं लुंटेउं, वच्चामो सेसकज्जचाएण । महुमहणं पि विमुंचइ, लच्छी ववसायपरिहीणं ॥४२॥
आयन्निऊण एवं तहत्ति पडिसुणियसासणा झत्ति । पुरिसा जहुत्तठाणाइं, हेरिऊणाऽऽगया बिन्ति ॥४३॥
नाह! निसामेहि महा-सत्थो बहुसारवत्थुपडिपुण्णो । अमुगपहेणं एही, दोण्हं दिवसाणमुवरिम्मि ॥४४॥
ता जइ [2]वट्टाबंधं काउं, अच्छह अणागयं तुब्भे । ता पावेह जहिच्छिय-लच्छीविच्छड्डमचिरेण ॥४५॥
एवं सोच्चा कइवय-दिणाणमुचियं गहाय पाहेज्जं । नियपरियणपरिकिन्नो, पल्लिवई तं गओ ठाणं ॥४६॥
सो पुण सत्थो अवसउण-दोसओ तं पहं विमोत्तूण । मग्गंतरेण लग्गो, पत्तो य समीहियपएसं ॥४७॥
भिल्लाहिवो य तप्पह-पलोयणं कुणइ अणिमिसच्छीहिं । नवरं पुव्वाणीयं, संबलगं निट्ठियं सव्वं ॥४८॥
ताहे विच्छायमुहो, पीडिज्जंतो छुहाइ पडिवलिओ । पत्तो पल्लिसमीवे, तत्तो गंतुं अचाइंतो ॥४९॥
सिसिरतरुच्छायाए, नवकिसलयसत्थरे [3]समकिलंतो । पामुक्कनीसहंगो, विस्सामं काउमाढत्तो ॥५०॥
परियणपुरिसा य गया, सव्वत्तो कंदमूलफलहेउं । अह एगत्थ पएसे, तेहिं अवलोयमाणेहिं ॥५१॥
फारफलभारभज्जिर-साहासयसंकुलो महासाही । किंपागनामधेओ, दिट्ठो अच्चन्ततुट्ठेहिं ॥५२॥
गहियाणि जहिच्छाए, फलाणि तत्तो विपाकपिंगाणि । उवणीयाणि य सिरिचंक-चूलिणो विणयपणएहिं ॥५३॥
भणियं च तेण हंभो!, फलाणि एयाणि किमभिहाणाणि । दीसन्तसुंदराई, न कयाइ वि दिट्ठपुव्वाइं ॥५४॥
तेहिं भणियं सामी, न याणिमो नामधेयमेयाणं । पागवसेणं केवल-मणुमाणेमो रसं पवरं ॥५५॥

"नियमप्रतिपालनम्" —

पल्लिवइणा वुत्तं, हवंति जइ अमयनिव्विसेसाणि । अमुणियनामाणि इमाणि, तहवि भुंजामि न फलाणि ॥५६॥
तव्वेलावत्तगमेग-मेव मोत्तुं च छुहकिलंतेहिं । आढत्ताइं ताइं, भोत्तुं पुरिसेहिं सेसेहिं ॥५७॥
मुहमुहरेसुं तेसुं, विसएसु य परिणइम्मि विरसेसुं । भुंजेउं सुत्तेसुं, विसवसओ चेयणा नट्ठा ॥५८॥
अह पमिलाणच्छिजुया, अन्तो च्चिय मुज्झमाणनिस्सासा । निद्दाइउं पवत्ता, सुहसेज्जाए पसुत्त व्व ॥५९॥
अह तज्जीयं घेत्तुं व, चोरो इव दिणयरो गओ अत्थं । तग्गमणं पि य पक्खीहिं, पिसुणियं वाउलरवेणं ॥६०॥
कुणमाणो जीयलोयं, कुंकुमरसरंजियं व सव्वत्तो । कयचक्कवायविहुरो, संझाराओ पवित्थरिओ ॥६१॥
गवलगुलियासमप्पह-पडसंछाइयतणु व्व [4]पंसुलिया । ताविच्छगुच्छकसिणा, वियंभिया तिमिररिंछोली ॥६२॥
[5]निच्चविडप्पगसिज्जंत-चंदपब्भट्ठसगलपडलं व । [6]एक्कसरियाए सव्वत्थ, पसरियं तारयाजालं ॥६३॥
तो तिजयविजयदिक्खिय-वम्महमुणिसयणफलिहफलयं व । तियसभवणंगणु-च्छंगपुन्नकलहोयकलसो व्व ॥६४॥
गयणसरोवरवियसंत-सहस्सपत्तं व रयणिरमणीए । [7]रोयण-थोर-थवक्को व्व, उग्गओ तुहिणकिरणो वि ॥६५॥
ताहे गमणऽणुकूलं, वेलं कलिऊण पल्लिनाहेण । सुत्त त्ति मन्नमाणेण, बोहिया ते गुरुगिराए ॥६६॥
पुणरुत्तं जंपिया वि हु, न जाव थेवं पि देन्ति पडिवयणं । ताव समीवे ठाऊण, निउणमवलोइया सव्वे ॥६७॥
निन्नट्ठजीवियव्वे, सव्वे दट्ठूण चिंतियं तेण । अमुणियनामफलाणं उवयोगफलं अहो एयं ॥६८॥
अहमऽवि एयमऽवत्थं, इमाइं भोत्तुं फलाणि वच्चंतो । जइ निक्कारणवच्छल्ल-मुणिवइनियमो न मे हुन्तो ॥६९॥
ते गुरुणो गुणनिहिणो, तमतरुसिहिणो जयंतु जाजीवं । जेहिं नियमप्पयाण-च्छलेण जीयं च मे दिन्नं ॥७०॥
इय सुचिरं गुरुमुववूहि-ऊण अच्चन्तसोगविहुरंगो । तप्पहरणाइउवगरण-मेगठाणम्मि ठविऊण ॥७१॥
भडचडयरपरिखित्तो, पुव्विं भमिऊण पल्लिमज्झम्मि । कह संपइ एगागी, तत्थ वि मयसव्वपरिवारो ॥७२॥

---

1. वा उचितम्। 2. वट्टाबन्धं = मार्गरोधनम् । 3. श्रमक्लान्तः । 4. पंसुलिया = दुराचारिणी स्त्री । 5. ०राहुः । 6. झगिति । 7. गोरोचनस्थूलस्तबकवत्।

दंसिस्सामि मुहमहं, लोगाणं पयडमेव वच्चंतो । इय चिंततो चलिओ, जाए रयणीए मज्झम्मि ॥७३॥
अह सिग्घं चिय पत्तो, निययगिहे खग्गमेत्तयसहाओ । केणावि अनज्जंतो, सेज्जाभवणम्मि य पविट्ठो ॥७४॥
पेच्छइ य पज्जलन्त-प्पईवपसरन्तकंतिपडलेण । सेज्जाए निययभज्जं, पुरिसेण समं सुहपसुत्तं ॥७५॥
ताहे भालयलसमुल्लसंतरंगन्ततिवलिविगरालो । दन्तग्गभागनिट्ठुर-दट्ठोट्ठो गाढकोवेण ॥७६॥
विप्फारियफारारुण-नयणुब्भडकंतिपडलपल्लवियं । आयड्ढिऊण खग्गं, चिंतेउमिमं समाढत्तो ॥७७॥
को अज्ज एस कीणास-नयणमणुसरिउमिच्छइ वरागो । जो मइ जीवंते वि हु, मम भज्जं सेवइ अणज्जो ॥७८॥
किं वा इमा वि पावा, मम भज्जा चत्तलज्जमज्जाया । पुरिसाहमेण केण वि, सद्धिं एवं पसुत्त त्ति ॥७९॥
एत्थ द्वियाणि दोन्नि वि, इमाणि खंडेमि मंडलग्गेण । अहवा लोयविरुद्धे, इत्थीए वहे कहं एस ॥८०॥
विक्कंतुक्कडपरचक्क-करिघडाडोवविहडणपयंडो । वावारिज्जइ बहुसमर-पत्तकित्ती महाखग्गो ॥८१॥
तो एयं चिय एक्कं, हणामि इइ जाव देइ नो घायं । ता चिरगहियाभिग्गह-मणुसुमरइ झत्ति स महप्पा ॥८२॥
ताहे पच्चोसक्किय, सत्तट्ठपयाइं जाव पहरेइ । उवरिं पीढिउक्खलणे, खग्गेण खडक्कियं ताव ॥८३॥
अह भाउजायादेह-भारपीडिज्जमाणबाहाए । विहडंतनिबिडनिद्दा-भराए भगिणीए तं सोच्चा ॥८४॥
चिरकालं जीवउ मज्झ, भाउगो वंकचूलिनामो सो । सज्झसवसप्पबुद्धाए, तीए वि [अ] जंपियं सहसा ॥८५॥
आयन्निऊण एयं विचिंतियं वंकचूलिणा ताहे । अहह! कहं मम भगिणी, सा एसा पुप्फचूला त्ति ॥८६॥
जीए अच्चंतं गाढ-प्पणयवसओ ममं सरंतीए । सुहिसयणजणणि-जणगाइणो वि पुव्वं परिच्चत्ता ॥८७॥
हा! कहमेयमियाणिं, हणिऊणं नियजीवियब्भहियं । अइगरुयपावकारी, जीवंतोऽहं सयमलज्जो ॥८८॥
कत्थ व पसत्थतित्थे, गयस्स केण व तवोविसेसेण । हुंता सुद्धी भइणी-विणासजायाउ पावाओ ॥८९॥
इय चिन्तिऊण भइणीए, कंठमासज्ज मन्नुभरविहुरो । रोविउमारद्धो णियय-पावचेट्ठाए संतत्तो ॥९०॥
कह कह वि पुप्फचूलाए, विम्हयाऽऽक्खित्तचित्तपसराए । उववेसिऊण सेज्जाए वंकचूली इमं भणिओ ॥९१॥
भाउग! विच्छायमुहो, तत्थ वि नीसेसपरियणविहीणो । तत्थवि पच्छन्नो च्चिय, गिहे किमेवं पविट्ठोऽसि ॥९२॥
किं वा जंबूणयसेल-सारसत्तो वि गरुयपयई वि । सहस च्चिय मं अवलंबि-ऊण एवं परुन्नोऽसि ॥९३॥
किंच तुहागमणम्मि, पडिभवणदुवारबद्धधवलधया । [1]हल्लप्फलियजणाउल-रच्छा पल्ली इमा हुंता ॥९४॥
अच्चन्ताऽणिट्ठसमुब्भवे वि, गाढावयानिवडणे वि । दूरे परुन्नमऽन्नह-मुहरागो वि हु न ते हुंतो ॥९५॥
तो तेण तीए कहियो, सव्वो परियणविणासवुत्तन्तो । परपुरिसबुद्धिवावा-रियासिपडिखलणवत्ता वि ॥९६॥
एवं च जंपियं भइणि! नेव सोएमि परिजणविणासं । सोएमि पुण इमं जं, तुमं मए इय हया हुंता ॥९७॥
एत्तो च्चिय इण्हिं पि हु, वइयरमिममेव सुमरमाणो हं । बाहप्पवाहमित्तं, खलिउं न तरामि नयणेसु ॥९८॥
केण पुण कारणेणं, एवं काऊण पुरिसनेवच्छं । भाउजायाए समं, भइणि! पसुत्तासि कहसु ममं ॥९९॥
तीए भणियं भाउग! तुमए पगयम्मि विजयजत्ताए । एत्थागया नडा नच्च-णऽट्ठया तेहिं पुट्ठाऽहं ॥१०००॥
अच्छइ इह पल्लिवई, न व त्ति तो चिंतियं मए एयं । जइ नत्थि त्ति कहिस्सं, ता सोच्चा कोइ रिउपुरिसो ॥१॥
साहिस्सइ सीमालाणं, तुम्ह पडिबद्धगाढवेराणं । ते पुण लद्धोगासा, मा पल्लिं विद्दविस्संति ॥२॥
तेण मए भणियमिमं, अच्छइ सो पल्लिमउडमाणिक्को । सयमेव वंकचूली, नवरं कज्जन्तरासत्तो ॥३॥
कं वेलं पेच्छणयं, दंसेमो मे पयंपियं तेहिं । वुत्तं च मए रयणीए, जेण सोऽणाउलो नियइ ॥४॥
पारद्धं तेहिं तहेव, तयणु कयपुरिसचारुनेवच्छा । भाउजायाए समं, तुमं व तहियं निसन्नाऽहं ॥५॥
अह मज्झरत्तसमए, उचियं दाउं नडाण दायव्वं । निद्दाघुम्मिरनयणा, इमाए सद्धिं पसुत्तम्हि ॥६॥
एत्तो उवरिं न मुणेमि, किंपि नवरं खडक्कयं सोच्चा । जीवउ भाया सुचिरं ति, जंपमाणी विउद्धाऽहं ॥७॥
एवं सोच्चा य ईसिं, पसन्तसोगो पुणो पुणो तेसिं । नियमाण फलं एयं ति, चिन्तयन्तो गमइ कालं ॥८॥
अह परिवारविरहओ, पराऽऽगरे लुंटिउं अपारन्तो । दट्ठूण परियणं सीय-माणमुप्पन्नसंतावो ॥९॥
खत्तखणणं विमोत्तूणं, एत्तो मे नत्थि जीवणोवाओ । इ निच्छिऊण एगो वि, सो गओ नयरिमुज्जेणिं ॥१०॥

1. औत्सुक्यवज्जनाकुल ।

धणवन्तलोयमन्दिर-पवेसनीहरणदारपडिदारे । पेहित्ता य पविट्ठो, मुसणट्ठा गरुयगेहम्मि ॥११॥
अह तम्मि नवरि दीसंत-बाहिराकारसुंदर सोच्चा । कलहं परोप्परं महिलि-याण चिंतेउमारद्धो ॥१२॥
नूणं न तह बहुधणं, अत्थि गिहे एत्थ कलहकरणाओ । [1]छुल्लुच्छलंति ऊणाइं, जेण लोए वि पयडमिणं ॥१३॥
संते वि हु थोवधणे, मुट्ठे का होज्ज मज्झ संपत्ती । नहि बिंदुणा भरिज्जइ, अइगरुएण वि नईनाहो ॥१४॥
इय तं मोत्तूण घरं, स महप्पा सयलनयरिपयडाए । गणियाए देवदत्ताए, मंदिरम्मि गओ झत्ति ॥१५॥
खत्तं च पाडिऊणं, कयकरणो रयणरम्मभित्तिम्मि । वासभवणे पविट्ठो, अच्छिन्नजलंतदीयम्मि ॥१६॥
दिट्ठा य सुहपसुत्ता, सेज्जाए गाढकोढसुढिएण । एगेण नरेण समं, सा गणिया भीसणंगेण ॥१७॥
अहह! कहं एवंविह-धणवित्थारा वि पेच्छ दविणट्ठा । कुट्ठिं पि अभिगमंती एसा इय वट्टइ अणज्जा ॥१८॥
अहवा अहं अणज्जो, जो एत्तो वि हु धणं समीहामि । ता पज्जत्तं इमिणा परमिस्सरगिहमणुसरामि ॥१९॥
ताहे समग्गवणिय-प्पहाणसेट्ठिस्स मंदिरे खत्तं । पाडित्ता सणियगई, झत्ति पविट्ठो भवणमज्झे ॥२०॥
पेच्छइ य तहिं सेट्ठिं, करसंपुडधरियखडियसंपुडयं । पुत्तेण समं लेक्खग-मऽणुक्खणं चिय करेमाणं ॥२१॥
एत्थ य एगम्मि [2]विसोवगम्मि, कहमवि अपुज्जमाणम्मि । रुट्ठो जंपइ सेट्ठी, रे! रे! कुलकयलणकयन्त! ॥२२॥
अवसर दिट्ठिपहाओ, मा गेहे मज्झ वसिहिसि खणं पि । एत्तियमेत्तऽत्थखयं, नाऽहं पिउणो वि हु सहिस्सं ॥२३॥
एवं पयंपमाणं, उब्भडकोवारुणच्छिविच्छोहं । तं पेच्छिऊण चिंतइ पल्लिवई विम्हिओ संतो ॥२४॥
जो एगविसोवगविप्प-णासमऽवलोइऊण पुत्तमऽवि । निस्सारिउं समीहइ, सो जइ मुसियं गिहं मुणइ ॥२५॥
ता नूण मरइ धणविप्पणास-वसजायहिययसंघट्टो । एवं च किविणपिउणो, न मारणं जुज्जइ इमस्स ॥२६॥
वच्चामि मंदिरे नरवइस्स, गिण्हामि वंछियं तत्तो । न हु विरमइ तण्हा वार-णस्स, [3]तणुविरयनीरेण ॥२७॥
एवं परिभावेंतस्स, तस्स रयणी विराममणुपत्ता । अरुणो विप्फुरिओ पुव्व-दिसिमुहे घुसिणतिलउ व्व ॥२८॥
अह सणियं चिय तत्तो, नियत्तिउं सो गओ अरण्णम्मि । पुट्ठसरीरं गोहं, घेत्तुं च समागओ नयरिं ॥२९॥
मुक्का य तेण तप्पुच्छ-बद्धदढदोरगेण अप्पाणं । संजमिऊणं गोहा, निवभवणारोहणनिमित्तं ॥३०॥
निट्ठुरचरणावट्ठंभओ य, सो लंघिऊण गिहभित्तिं । पासायं आरूढो, पल्लिवई तयणु तुट्ठमणो ॥३१॥
तं उज्झिऊण सणियं, आढत्तो पविसिउं भवणमज्झे । तव्वेलं पुण तत्थ य, रन्नो उवरिं विहियकोवा ॥३२॥
मणिभूसणकंतिकडप्प-निहयतिमिरा नरेंदवरभज्जा । सेज्जागया पलोइय, तं जंपिउमेवमाऽऽरद्धा ॥३३॥
को भद्द! तुमं? चोरो म्हि, वंकचूलि त्ति भुवणजणपयडो । मणिकणगचोरणऽट्ठा, इहागओ तेण इय भणिए ॥३४॥
परिवुत्तं देवीए, न तुमं चोरो हिरन्नमाईणं । चोरिउमिच्छसि निग्घिण!, जेणं मम संपयं हिययं ॥३५॥
तेणं पयंपियं सुयणु!, मा तुमं एवमुल्लवसु जेण । को सुचिरजीवियऽत्थी, फणिपहुमणिमभिलसइ घेत्तुं ॥३६॥
अह तस्स मयणसच्छह-सरीरसुंदेरहरियहिययाए । इत्थीसहावओ च्चिय, अच्चन्तं तुच्छबुद्धीए ॥३७॥
कुलंगजणावलोयण-परंमुहाए अणंगविहुराए । तीए भणियं भद्दय!, [4]दूरुज्झियपडिसयविगप्पो ॥३८॥
अभिगमसु ममं संपइ, सेसा तुह चिन्तियत्थसंपत्ती । एत्तो च्चिय नीसेसा, सविसेसा होहिइ अचिरा ॥३९॥
किं नो पेच्छसि अच्चंत-निम्मलुम्मिल्लरयणपहपसरं । आभरणमालियं एत्थ सुहय!, एयाए तं सामी ॥४०॥
इय तीए गिरं सोउण, जंपियं वंकचूलिणा सुयणु! । का सि तुमं किमिहेच्छसि, को वा तुह पाणनाहो त्ति ॥४१॥
तीए भणियं भद्दय!, महानरिंदस्स अग्गमहिसी हं । कयकोवा नरनाहे, एवं एत्थावसामि त्ति ॥४२॥
पुव्वग्गहियाभिग्गह-मणुसरिऊणं पयंपियं तेण । जइ नरवइणो भज्जा, ता मह जणणि व्व होसु तुमं ॥४३॥
ता मा महाणुभावे! पुणरवि एवं समुल्लविज्जासि । मइलिज्जइ जेण कुलं, कुलप्पसूयाण तमऽकिच्चं ॥४४॥
अहह महामुद्ध!, किमेव-मऽणुचियं वाउलो व्व वाहरसि । इय निब्भच्छंतीए तीए, सकोवाए भणिओ सो ॥४५॥
जं सुमिणे वि न पेच्छसि, भूवइभज्जं पि तमहुणा पत्तं । किं मूढ! नोवभुंजसि, पडिभणियं तेण एत्ताहे ॥४६॥
अम्ब! विमुंच ग्गाहं, मणसावि हु चिंतियं न जुत्तमिमं । वरमुग्गविसं खइयं, मा कयमेवंविहमकज्जं ॥४७॥
वयणपडिकूलणावस-सविसेसविसप्पमाणकोवाए । पयडक्खरेहिं भणियं, देवीए तं पडुच्च इमं ॥४८॥

1. 'छलकाय छे' भाषायाम् । 2. 'वसो' इति भाषायाम् (आज की भाषामें नया पैसा के समान)। 3. अल्पविरजोनीरेण । 4. दूरोज्झितप्रतिश्रयविकल्पः ।

होसि वसे मज्झ तुमं, हयास! नूणं विडम्बिओ संतो । जाइस्सइ सग्गं नग्ग-[1]खवणओ नवरि [2]विगुत्तो ॥४९॥
अह तेणं सा भणिया, अम्बा अम्ब त्ति पुव्वमुल्लविउं । तुममेव संपयं कह, जायं भणिऊण सेवेमि ॥५०॥
एयं च तदुल्लावं, कडगंऽतरिओ समग्गमवि सोच्चा । देवीपसायणट्ठा, चिरागओ चिंतए राया ॥५१॥
अच्छरियमहो! सम्माण-दाणनंदिज्जमाणहियया वि । नावत्थाणं बंधइ, इत्थी एगत्थ पुरिसम्मि ॥५२॥
जेण सुकुलुग्गया वि हु, अणुरत्तमणं ममं पि मोत्तूण । अमुणिज्जंतं पि जणं, कामिउमिच्छइ इमा एवं ॥५३॥
धी! धी! पडिबंधो सव्व-हेय रामासु सुहविरामासु । अहह! कहं सुकुला वि हु, विहुरे खिप्पंति एयाहिं ॥५४॥
अज्जऽवि कोवि सुपुरिसो, एसो चोरो न जो मुयइ मेरं । पत्थिज्जंतो वि इमीए, सामभेयाइभणिईहिं ॥५५॥
अज्जऽवि रयणाधारा, धरणी अज्जवि न एइ कलिकालो । दीसंति जेण एवं-विहाइं वरपुरिसरयणाइं ॥५६॥
जे किर करिकुंभत्थल-मेक्कपहारेण चेव खंडंति । ते वि हु अबलालोयण-सरपहरहया किलिस्संति ॥५७॥
एसो य महासत्तो, इमीए इय पत्थिओ वि थेवं पि । सवयत्थं नो चूरइ, ता इत्तो होइ दट्ठव्वो ॥५८॥
इय जाव निवो चिंतइ, ताव विणिच्छयकएण देवीए । भणियं किं रे! नियमा, नो काहिसि मज्झ वयणं ति ॥५९॥
तेणाऽवि जंपियं सहरि-सेण एवं ति अह परुट्ठाए । वाहरियं देवीए, रे पुरिसा! रायसव्वस्सं ॥६०॥
हीरंतं किमुवेक्खह, धावह एसो इहाऽऽवसइ चोरो । इय सोच्चा सव्वत्तो, समागया जामरक्खभडा ॥६१॥
असिचक्कचायहत्था, न जा पहारं कुणंति ता रन्ना । भणिया हंहो! चोरं, ममं व रक्खेज्जह इमं ति ॥६२॥
अह तेहिं पडिरुद्धो, अखुभियचित्तो महागइंदो व्व । विगमेइ वंकचूली, रयणिं करकलियकरवालो ॥६३॥
देवीए विहियकोवो, सेज्जाभवणे गओ य नरनाहो । कह कह वि लद्धनिद्दो, पासुत्तो पच्छिमनिसाए ॥६४॥
अह जायम्मि पहाए, वज्जंतेसुं पहायतूरेसु । अवसरनिवेयगेणं, पढियमिमं मागहसुएण ॥६५॥
अप्पडिहयप्पयावो, समत्थतेयस्सितेयनिम्महणो । अक्खंडमंडलधरो, पडिहयदोसाअरपयासो ॥६६॥
पवियंभमाणकमला-यरो य अचले पइट्ठिओ उदए । संमग्गपयासपरो, जयसि तुमं देव! सूरो व्व ॥६७॥
सुणिऊण इमं राया, कयपाभाइयसमग्गकायव्वो । अत्थाणे आसीणो, निसिवित्तंतं सुमरमाणो ॥६८॥
एत्थेतरम्मि पुरिसेहिं, वंकचूली कयप्पणामेहिं । सो देव एस चोरो त्ति, जंपमाणेहिं उवणीओ ॥६९॥
दट्ठूण य से रूवं, विम्हइयमणेण चिंतियं रन्ना । एवंविहाए कह आ-गिईए चोरो हवेज्जेसो ॥७०॥
जइ सच्चं चिय चोरो, ता किं देवीए नो कयं वयणं । पायं न भिन्नचित्ताण, होइ कत्थ वि जओ खलणा ॥७१॥
अहवा किमऽणेण विगप्पिएण, इममेव ताव पुच्छामि । इइ चिंतिऊण सुसिणिद्ध-चक्खुणा पेक्खिओ रन्ना ॥७२॥
तेण य कओ पणामो, दवावियं आसणं च उचियं से । तहियं आसीणो सो, पुट्ठो सयमेव नरवइणा ॥७३॥
हंहो देवाणुप्पिय!, कोऽसि तुमं किंच असरिसं कम्मं । अच्चन्तनिंदणिज्जं, पारद्धं तेण तो भणियं ॥७४॥
सीयन्तपरियणब्भत्थियाण, पुरिसाण खीणविहवाणं । न हु णवरि कायराणं, गरुयाण वि चलइ मइविहवो ॥७५॥
कोऽसि तुमं जं च तए, पुट्ठं तत्थ वि न किं पि वत्तव्वं । एवंविहकिरियाए, पायडिए णियसरूवम्मि ॥७६॥
रन्ना भणियं मा भणसु, एरिसं होसि तं न सामन्नो । ता अच्छउ ताव इमं, कहेसु रयणीए वित्तंतं ॥७७॥
देवीए उल्लावो, नूणं रन्ना वियाणिओ सव्वो । इइ निच्छिऊण तेणं, पयंपियं देव! निसुणेसु ॥७८॥
तुह गेहं मुसिउमणो, अहं पविट्ठो तहिं च देवीए । दिट्ठो कहंपि एन्तो वि, देव अन्नो न वित्तंतो ॥७९॥
पुणरुत्तं पुच्छिओ वि हु, जाव इमं चिय स जंपइ महप्पा । सप्पुरिसयाए तुट्ठेण, ताव भणियं नरिंदेण ॥८०॥
तो भद्द! वरेसु वरं, तुट्ठोऽहं तुज्झ सुद्धचेट्ठाए । तो वंकचूलिणा भाल-वट्टकयपाणिकोसेण ॥८१॥
विन्नत्तं एसो च्चिय, देव! वरो सव्वहा न कायव्वो । देविं पडुच्च कोवो, जं सा जणणी मए भणिया ॥८२॥
पडिवन्नमिमं रन्ना, तओ वियंभंतगाढपणएण । पुत्ते व्व पक्खवायं, अच्चंतं उव्वहंतेण ॥८३॥
ठविओ महंतसामंत-संतिए सो पयम्मि दिन्नो य । करितुरयरयणविहवो, समप्पिओ सेवगजणो य ॥८४॥
एवं च पत्तविहवो, सो चिंतइ ते समग्गगुणनिहिणो । एरिसकल्लाणाणं, निबन्धणं सूरिणो जाया ॥८५॥
कहमन्नहा तहाऽहं, जीवंतो कह व मज्झ सा भइणी । कह वा इण्हिं एवं-विहं च लच्छिं अणुहवन्तो ॥८६॥

---
1. नग्नक्षपणकः = नग्नसाधुः । 2. विगोपितः

हा मन्दबुद्धिणो मह, परंमुहस्स वि महाणुभावेहिं । कहमुवयरियं तेहिं, परोवयारेक्कनिरएहिं ॥८७॥
ते च्चिय चिंतामणिणो, कप्पदुमा कामधेणुणो य धुवं । नवरं निप्पुण्णेणं, मए न मुणिया मणागं पि ॥८८॥
इय ते च्चिय मुणिवइणो, सुहे व्व सयणे व्व जणणिजणगे व्व । देवे व्व सुमरमाणो, अणवरयं गमइ दियहाइं॥८९॥
अह अन्नम्मि अवसरे, दमघोसा नाम सूरिणो दिट्ठा । अच्चंतपहिट्ठेणं, पणिवइया ते य भत्तीए ॥९०॥
जोगो त्ति कलिय तेहिं, उवइट्ठो अरिहधम्मपरमत्थो । अणुहवसिद्धो त्ति पर-प्पमोयओ तेण गहिओ य ॥९१॥
जाया य समीवग्गाम-वत्तिणा परमधम्मकुसलेण । जिणदाससावगेणं, सह मेत्ती तेण य समं सो ॥९२॥
नयभूरिभंगगंभीर-मणुदिणं आगमं निसुणमाणो । वच्छल्लं कुणमाणो, सयणेसु य तुल्लधम्मेसु ॥९३॥
निव्वत्तिंतो जिणमंदिरेसु, सव्वायरेण पूयाई । पुव्वग्गहियाभिग्गह-निवहं च सया वि चिन्तिन्तो ॥९४॥
जहभणियं जिणधम्मं, परिपालिन्तो पमायविरहेण । सज्जणसलाहणिज्जं, सामंतसिरिं समणुहवइ ॥९५॥
अन्नम्मि य पत्थावे, नरवइवयणाओ पउरबलकलिओ । कामरूवनरिंदं पइ, चलिओ सो विजयजत्ताए ॥९६॥
कालक्कमेण पत्तो, रिउणो देसस्स सीमभागम्मि । एत्थंतरम्मि पत्तो, पडिसत्तू वि हु तओ तत्थ ॥९७॥
ढलंतचारुचामरं, फुरंतछत्तडामरं । [1]थणंतसंदणोहयं समुल्लसंतजोहयं ॥९८॥
ढुक्कन्तमत्तवारणं, भडाण तुट्ठिकारणं । [2]हिंसन्तआसघट्टयं, पढंतभूरिभट्टयं ॥९९॥
रसंततारतूरयं, चोइज्जमाणसूरयं । वज्जंतजुद्धढक्कयं, अन्नोन्नमुक्कहक्कयं ॥११००॥
[3]थुव्वंतचित्तविंधयं अन्नोन्नघायसंधयं । संनद्धबद्धकक्खयं, नदन्तजोड्डसंखयं ॥१॥
फुरन्ततिक्खखग्गयं, दलाण ताण लग्गयं । पयंडकोवकारणं, परोप्परं महारणं ॥२॥
तओ य नट्ठकायरं, हयाऽऽसजोहकुंजरं । पहारजालजज्जरं, पडंतदेहपंजरं ॥३॥
किरासि जं महाबलं, परेसिं संतियं बलं । रणाऽऽगयं समग्गयं, खणेण तं पि भग्गयं ॥४॥
जो आसि रणंगणुक्कडो, राया कामरुओ महाभडो । अह सो वि खणेणनिज्जिओ, लहु पाणेहिं कओ विवज्जिओ॥५॥
वंकचूली वि खरपहरभिन्नंगओ, विजियपडियक्खु, समराउ लहुनिग्गतो ।
पत्तु उज्जेणिनयरीए घायाऽऽउरो, तस्स आगमणि तुट्ठो दढं नरवरो ॥६॥
वेज्जसत्थेण से वणचिकिच्छा कया, नेव जाया मणागंपि नीरोगया ।
रोहपत्ता वि विहडन्ति घाया पुणो, चत्तजीयाऽऽसओ तेण धुवमप्पणो ॥७॥
तो पुणो सोगग्गिरसरो भूवई, भणइ वेज्जे अहो मज्झ सेणावई ।
जेण केणावि दिव्वोसहेणं लहुं, होइ नीरोगु तं देह एत्तो बहुं ॥८॥
तयणु वेज्जेहिं सत्थाइं संचिंतिउं, निउणबुद्धीए अवरोप्परं निच्छिउं ।
कायमंसोसहं संसियं सोहणं, तस्स घायव्वणाणं च संरोहणं ॥९॥
अह--
जिणधम्मणुरत्तिण निरुवमत्तिण, कायमंसु पडिसिद्धु तिण ।
वरि जीविउ वच्चउ नियमु म मुच्चउ, तो वि एउ सुमरंतएण ॥१०॥
अह जइ पुण निब्भरपणय-जुत्तजिणदासवयणओ कुणइ । ओसहमिमं ति रन्ना, पुरिसं पेसित्तु गामाउ ॥११॥
आहूओ इंतो पुण, देविदुगं पेच्छिऊण । जिणदासो पुच्छइ कीस, रुयह ताहिं च संलत्तं ॥१२॥
मयनाहाणं सोहम्म-कप्पदेवीणमिण्हिं अम्हाणं । मरिऊण वंकचूली, अभुत्तमंसो हवइ नाहो ॥१३॥
जइ पुण तुह वयणाओ, कहंपि किर कायमंसमऽसिही सो । ता नूणं भग्गनियमो, पडिही अन्नत्थ कुगईए ॥१४॥
एएण कारणेणं, रोएमो निब्भरं महाभाग! । एवं च तुमं सोच्चा, जं जुत्तं तं करेज्जासु ॥१५॥
आयन्निऊण एवं, विम्हियचित्तो गओ स उज्जेणिं । दिट्ठो य वंकचूली, नरवइवयणाणुरोहेण ॥१६॥
भणिओ य सुहय! नो कीस, कुणसि तं कायमंसपरिभोगं । जायारोग्गसरीरो, पायच्छित्तं चरेज्जासि ॥१७॥
तेणं पयंपियं धम्म-मित्त! एवं तुमंपि उवइससि । जाणन्तनियमभंगे, पच्छित्तं कं गुणं जणइ ॥१८॥

1. स्तनत्स्यन्दनौघकम् । 2. हेषारवं कुर्वदश्वघट्टकम् । 3. स्तूयमानचित्र = आश्चर्यकारिवेधकम् ।

जइ नियमं भंजित्ता, तप्पायच्छित्तमणुचरेयव्वं । ता पढमं चिय जुत्तो, नो काउं नियमभंगो त्ति ॥१९॥
तो कहियं नरवइणो, जिणदासेणं जहा इमो देव! । अवि चयइ जीवियव्वं, न पुणो नियमं चिरग्गहियं ॥२०॥
एत्तो पारत्तहियं, ता कीरउ देव वंकचूलिस्स । निच्छियभाविरमरणे, किमकिच्चेणं कएणिमिणा ॥२१॥
एवं वुत्ते रन्ना सुय-निहिणो साहुणो समाहूय । पज्जंतविहिसणाहो, कहाविओ धम्मपरमत्थो ॥२२॥
अह सो साहुसमीवे, आलोइयसयलपुव्वदुच्चरिओ । खामियसमग्गजीवो, विसेसपडिवन्नवयनिवहो ॥२३॥
पंचपरमेट्ठिमंतं, परियत्तंतो समुज्झियाहारो । मरिऊण अच्चुयम्मि, देवो जाओ महिड्ढीओ ॥२४॥
जिणदाससावगो वि य, सगामहुत्तं पुणो णियत्तंतो । तं तह देविजुयलं, रोयंतं पेच्छिउं भणइ ॥२५॥
मंसम्मि अभुत्ते च्चिय, किं तुब्भे रुयह ताहिं तो कहियं । सविसेसविहियधम्मो, देवो अन्नत्थ सो जाओ ॥२६॥
अम्हे निप्पुन्ना उ, संपयमऽवि पाणनाहरहियाओ । जम्हा तहट्ठियाओ, सोगं तेणं करेमो त्ति ॥२७॥
अह जिणदासो दिव्वं, देविड्ढिं वंकचूलिणा लद्धं । जिणधम्मपहावेणं, नाउं एवं विचिंतेइ ॥२८॥
नमिरपरमपेमुब्भन्तदेविंदविंदु-ब्भडकणयकिरीडुग्घट्ठपायाऽरविंदो ।
जयइ जिणसमूहो देसिओ जेण धम्मो, सिवसुरपुरलच्छि-हत्थदाणेक्कदच्छो ॥२९॥
खणमऽवि परिसुद्धं पालिऊणंऽतकाले, कलिकलिलमऽसेसं खालिउं जम्मभावा ।
पवरगइमुवेंती वंकचूलि व्व जीवा, स जयउ जयपुज्जो वीयरागाण धम्मो ॥३०॥
इय वंकचूलिचरियं, निवेइयं संपयं परिकहेमि । पुव्वं चिय उक्खित्तं, चिलाइपुत्तस्स वित्तंतं ॥३१॥

"चिलातिपुत्रदृष्टान्तः" —

भूमिपइट्ठियनयरे, नामेणं आसि जन्नदेवो त्ति । विप्पो पंडियमाणी, जिणसासणखिंसणाऽऽसत्तो ॥३२॥
जो जेण जिप्पइ इहं, सो सिस्सो तस्स इइ पइन्नाए । वायम्मि निज्जिओ पवर-बुद्धिणा साहुणा सो य ॥३३॥
पव्वाविओ य णवरं, पव्वज्जं देवयाए उज्झन्तो । पडिसिद्धो अह जाओ, निच्चलो साहुधम्मम्मि ॥३४॥
तहऽवि हु जाइमएणं, दुगुंछभावं मणागमुव्वहइ । पडिबोहिओ य तेणं, नीसेसो नियसयणजणो ॥३५॥
भज्जा पुण तस्स परुढ-गाढपेम्माऽणुबंधदोसेण । काराविउं समीहइ, तं पव्वज्जापरिच्चायं ॥३६॥
सो पुण निच्चलचित्तो, सद्धम्मपरो गमेइ दियहाइं । अह अन्नवासरम्मि, दिन्नं से कम्मणं तीए ॥३७॥
तद्दोसेणं मरिऊण, स देवलोए सुरो समुप्पन्नो । इयरी वि य पव्वइया, तन्निव्वेएण संतत्ता ॥३८॥
आलोयणं अकाउं, मया समाणी सुरेसु उप्पन्ना । अह जन्नदेवजीवो, चइऊणं रायगिहनयरे ॥३९॥
धणसत्थवाहगेहे, चिलाइनामाए दासचेडीए । तेण दुगुंछादोसेण, पुत्तभावं समणुपत्तो ॥४०॥
विहियं च जणेणं से, चिलाइपुत्तो त्ति [1]गुत्तमभिहाणं । इयरी वि तओ चइउं, तस्सेव धणस्स भज्जाए ॥४१॥
पंचण्ह सुयाणुवरिं, नामेणं सुंसुमा सुया जाया । सो य चिलाईपुत्तो, बालग्गाहो कओ तीसे ॥४२॥
अच्चन्तकलहकारि त्ति, दुव्विणीओ त्ति सत्थवाहेण । निच्छूढो गेहाओ, परियडमाणो गओ पल्लिं ॥४३॥
आराहिओ य बाढं, पल्लिवई गाढविणयओ तेण । अह पल्लिवइम्मि मए, मिलिऊणं चोरनिवहेण ॥४४॥
जोगो त्ति कलिय विहिओ, पल्लीनाहो महाबलो सो य । अच्चन्तनिग्घिणो हणइ, गामपुरनयरसत्थाई ॥४५॥
एगम्मि य पत्थावे, तेणं चोराण एयमुवइट्ठं । रायग्गिहम्मि नयरे, सत्थाहो अत्थि धणनामो ॥४६॥
तस्स य धूया नामेण, सुंसुमा सा य मज्झ तुम्ह धणं । ता एह तत्थ जामो, अवहरिउं तं च एमो त्ति ॥४७॥
पडिवन्नं चोरेहिं, रयणीए ततो गया य रायगिहे । ओसोयणीं च दाउं, झत्ति पविट्ठा धणस्स गिहे ॥४८॥
मुट्ठं चोरेहिं गिहं, गहिया सा सुंसुमा वि इयरेण । सत्थाहो सुयसहिओ, अन्नत्थ लहुं अवक्कंतो ॥४९॥
पावियसमीहियत्थो, सट्ठाणं पट्ठिओ य पल्लीवई । अह उग्गयम्मि सूरे, पंचहि वि सुएहि परिकिन्नो ॥५०॥
दढदेहबद्धकवओ, नरवइबहुसुहडपरिवुडो सिग्घं । तम्मग्गेणं लग्गो, धूयानेहेण सत्थाहो ॥५१॥
भणिया य रायसुहडा, धणेण धूयं ममं नियत्तेह । दव्वं तुम्हं दिन्नं, इय भणिए धाविया सुहडा ॥५२॥
इंते य ते पलोइय, नट्ठा चोरा धणं विमोत्तूण । घेत्तूण य तं सुहडा, जहागयं पडिगया सव्वे ॥५३॥

1. गोत्रम् = गुणवाचकम् ।

सुयसहिओ सत्थाहो, गंतुं एक्को परं समारद्धो । संपत्तो य समीवे, अचिरेण चिलाइपुत्तस्स ॥५४॥
मा होउ इमा कस्स वि, इइ सीसं सुंसुमाए घेत्तूण । सो सिग्घमवक्कंतो, विमणो वलिओ य सत्थाहो ॥५५॥
अह अडवीए मज्झे, चिलाइपुत्तेण परिभमन्तेणं । दट्ठूण साहुमेगं, उस्सग्गट्ठियं महासत्तं ॥५६॥
जंपियमहो महामुणि!, संखेवेणं कहेसु मह धम्मं । इहरा तुज्झ वि सीसं, फलं व असिणा लुणिस्सामि ॥५७॥
मुणिणा उ निब्भएण वि, उवयारं से मुणित्तु भणियमिणं । उवसम-विवेग-संवर-पयत्तियं धम्मसव्वस्सं ॥५८॥
घेत्तुं च इमं सम्मं, एगंते सो विचिंतिउं लग्गो । उवसमसद्दत्थो घडइ, सव्वकोहाइचायम्मि ॥५९॥
सो कुद्धस्स कहं मे, ता कोहाइ मए परिच्चत्ता । परिहारे धणसयणाण, होइ नूणं विवेगो वि ॥६०॥
ता किं खग्गेणं मे, किं वा सीसेण मज्झ एत्ताहे । इंदियमणसंवरणे य, संवरो णिच्छियं घडइ ॥६१॥
ता तं पि अहं काहं, इइ चिंतन्तो विमुक्कअसिसीसो । नासग्गनिहियदिट्ठी, निरुद्धमणकायवावारो ॥६२॥
परिभावेंतो पुणरुत्त-मेय एयाणि तिन्नि वि पयाणि । काउस्सग्गेण ठिओ, सुनिच्चलो कंचणगिरि व्व ॥६३॥
अह रुहिरगंधलुद्धाहिं, कुलिसतिक्खग्गचंडतुंडाहिं । [1]मुइंगलियाहिं लहुं, सव्वत्तो भोत्तुमारद्धो ॥६४॥
अवि य—
आपायसीसं सयलं पि देहं, मुइंगलियाहि विभक्खिऊण । विणिम्मियं चालणियासमाणं, तहावि झाणाउ न कंपिओ सो॥६५॥
पयंडतुण्डाहिं पिवीलियाहिं, खद्धेसरीरम्मि मुणिस्स तस्स । छिद्दाइं रेहंति समत्थपाव-निस्सारदाराणि व दीहराणि॥६६॥
अड्ढाइएहिं दियहेहिं धीमं, सम्मं समाराहिय उत्तिमट्ठं । सुरालयं सो सहसारनामं, पत्तो सुचारित्तधणो महप्पा॥६७॥
अच्चंतचंडमणवयण-काय इच्चाइ जं पुरा वुत्तं । तं साहरणं भणियं, एत्तो पगयं निसामेह ॥६८॥

"आराधनाधिकारीवर्णनम्" —

सुविणिच्छियपरमत्थो, अणज्जजणकज्जवज्जणुज्जुत्तो । इय गुणवंतो आराह-णाए अरिहो हवेज्ज गिही ॥६९॥
किंतु सुदंसणमूलं, पंचाणुव्वयसमन्नियं तह य । तिगुणव्वओववेयं, चउसिक्खावयसणाहं च ॥७०॥
समणोवासयविसयं, धम्मं परिपालिउं निरइयारं । दंसणपमुहेक्कारस-पडिमाओ तह य फासित्ता ॥७१॥
बलविरियाणं हाणिं, वियाणिउं कुणइ अन्तकालम्मि । आराहणं जिणाणा-णुसारओ सुद्धपरिणामो ॥७२॥
संविग्गं गीयत्थं, साहूं पिव गुरुजणं समासज्ज । पंचसमिओ तिगुत्तो, अणिगूहियसत्तबलविरिओ ॥७३॥
पइदिणपवड्ढमाणुत्त-रोत्तरऽच्चन्तपरमसंवेगो । सम्ममवगम्म रम्मं, सुत्तत्थेहिं जिणिंदमयं ॥७४॥
तप्पारतंतजोगा, [2]अणुसोयं वज्जिऊण जत्तेण । पडिसोयलद्धलक्खो, जुत्तो य पमायपरिहारे ॥७५॥
संते बलम्मि अणहे, संते विरियम्मि चरणकरणखमे । संते पुरिसक्कारे, संतम्मि परक्कमे तह य ॥७६॥
चरिऊण चिरं चरणं, बलविरियाईसु हायमाणेसु । [3]हत्थं पच्छिमकालम्मि, चेव आराहणं कुज्जा ॥७७॥
इहरा बलविरियाईसु, संतेसु वि अहिलसेज्ज जो मूढो । आराहणमिह तमहं, मन्ने सामन्ननिव्विण्णं ॥७८॥
जइ पुण वाही होज्जा, सिग्घं पारद्धधम्मविग्घकरी । माणुसतेरिच्छियतियस-संभवा अहव उवसग्गा ॥७९॥
अणुकूला वा सत्तू, चारित्तधणावहारिणो होंति । दुब्भिक्खं वा गाढं, अडवीए विप्पणट्ठत्तं ॥८०॥
जंघाबलं व हीएज्ज, होज्ज वि गेलन्नमिंदियाणं वा । अपुव्वधम्मगुणअज्ज-णम्मि सत्ती व न हवेज्जा ॥८१॥
अन्नम्मि वावि एया-रिसम्मि आगाढकारणे जाए । आराहणं करेज्जा, ता सिग्घं चिय न वयणिज्जं ॥८२॥
जे पुण सयं कुसीला, कुसीलसंगम्मि चेव हरिसपरा । निच्चंपि चंडदंडा, न हु ते आराहणा-अरिहा ॥८३॥
तह पयइनिग्घिणमणा-कसायकलुसा पवड्ढियामरिसा । अणियत्तचित्ततण्हा, मोहोवहया नियाणकडा ॥८४॥
जे वि य अच्चासायण-निरया जिणसिद्धसूरिपमुहाणं । परवसणदंसणुप्पज्ज-माणमाणसपमोया य ॥८५॥
सद्दाइविसयगिद्धा, सद्धम्मपरम्मुहा पमायपरा । सव्वत्थ निरणुतावा, न ते वि आराहगा होंति ॥८६॥
तह जे न केवलं चिय, अधम्मवंता सयं सहावेण । जे वि य पच्चूहपरा, धम्मपराणं पराणं पि ॥८७॥
चेइयसाहारणदव्व-दोहदुट्ठा ठिया य रिसिघाए । जे जे य जिणवरागम-उस्सुत्तपरूवणपरा य ॥८८॥
सरयससिलच्छिसच्छह-जिणसासणजसविणासगा जे य । जे वि य [4]वइणीविद्धंसकारिणो किर महापावा ॥८९॥

1. पिपीलिकाभिः । 2. अणुसोयं = अनुस्रोतः शरीराद्यनुकूलाचरणम् इत्यर्थः । 3. हत्थं = शीघ्रम् । 4. व्रतिनी = साध्वी० ।

परलोगनिप्पिवासा, इह लोगे चेव सुट्ठु पडिबद्धा । निच्चं पसत्तचित्ता, अट्ठारसपावठाणेसु ॥९०॥
जं च विसिट्ठजणाणं, असंमयं जं च धम्मसत्थाणं । तत्थ वि जे गाढरया, पडिसिद्धाऽऽराहणा तेसिं ॥९१॥
सत्थग्गिविसविसूइय-सावयसलिलाइवसणपत्तो जो । आह स कहमाराहओ, सिग्घं मारिन्ति एयाइं ॥९२॥
गुरुराह—
नणु संखेयाराहण-माराहइ सो वि पुव्वभणियमिणं । जह महुराया जह वा, सुकोसलो रायरिसिपवरो ॥९३॥
अवि य—
जो किर धीबलकलिओ, उवसग्गप्पभवभयममन्नंतो । झत्ति उवट्ठियमेत्ते, उवसग्गे अह व पत्ते वि ॥९४॥
जावऽज्जवि किर सबलो, ताव च्चिय आयहियविइण्णमणो । सम्मं अमूढलक्खो, जीवियमरणेसु य समाणो ॥९५॥
अवि संभवंतमरणे, रणे व्व सुहडो अभिन्नमुहरागो । आराहणं स संखे-वओवि कुज्जा महासत्तो ॥९६॥
इय सुत्तयुत्तजुत्तीजुयाए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥९७॥
आराहणाए पन्नरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । वित्थरओ परिकहियं, पढममिमं अरिहदारं ति ॥९८॥

"द्वितीय लिङ्गद्वारवर्णनम्" —

आराहणाए अरिहो, निदंसिओ संपयं च जेणेसो । लिंगिज्जइ लिंगेणं, लेसुद्देसेण तं भणिमो ॥९९॥
निच्चकरणीयजोगा, परलोयपसाहगा जिणुद्दिट्ठा । जे आसि पुरा अह ताण, चेव सविसेसमत्तम्मि ॥१२००॥
सम्मं उज्जमणं जं, संवेगरसाइरेगओ गाढं । आराहणअरिहत्ते, आराहणलिंगमिणमेव ॥१॥
उस्सग्गियं च तं साव-गस्स निक्खित्तसत्थमुसलत्तं । ववगयमालावन्नग-विलेवणुव्वट्टणत्तं च ॥२॥
अप्पडिकम्मसरीरत्तणं च, पइरिक्कदेसवत्तित्तं । लज्जाछायणमेत्तो-वहित्तसमभावभावित्तं ॥३॥
पाएण पइखणं पि हु, सामाइयपोसहाइनिरयत्तं । पडिबंधच्चाइत्तं, तह भवनेगुण्णभावित्तं ॥४॥
सद्धम्मकम्मउज्जय-जणवज्जियसन्निवेसवज्जित्तं । कामवियारुप्पायग-दव्वाण वि अणभिलासित्तं ॥५॥
निच्चं गुरुजणवयणा-णुरागसंभिन्नसत्तधाउत्तं । परिमियफासुयपाणन्न-भोगवत्तित्तमणुदियहं ॥६॥
एमाइ गुणब्भासत्तणं खु, आराहगस्स इह गिहिणो । लिंगं अह जइणो वि हु, सामन्नेणं इमं णेयं ॥७॥
मुहणंतग १, रयहरणं २, वोसट्ठसरीरया ३, अचेलक्कं ४ । सिरलोय ५, पंचभेयो उस्सग्गियलिंगकप्पो सो॥८॥
संजमजत्तासाहण-चिंधं जणपच्चओ ठिईकरणं । गिहिभावविवेगो वि य, लिंगग्गहणे गुणा होन्ति ॥९॥
तं लिंगं जहाजायं, अव्वभिचारी सरीरपडिबद्धं । उवही पुण थेराणं, चोद्दसहा सुत्तणिद्दिट्ठो ॥१०॥

"मुहपत्यादिलिङ्गप्रयोजनम्" —

सीसोवरिकायपमज्जणा य, मुहमरुतमाऽऽईरक्खट्ठा । रयरेणुरक्खणऽट्ठा, दिट्ठं मुहणंतगं मुणिणो [दारं] ॥११॥
रयसेयाणमऽगहणं, मद्दवसुकुमारया लहुत्तं च । जत्थेए पंच गुणा, तं रयहरणं पसंसंति ॥१२॥
इरिया ठाणे निक्खेव-विवेगे तह य निसियणे सयणे । उव्वत्तणमाईसुं, पमज्जणट्ठाए रयहरणं [दारं] ॥१३॥
अब्भंगसिणाणुव्वट्टणाणि, तह केसमंसु संठप्पं । वज्जेइ दंतमुहनासि-यऽच्छिभमुहाइसंठवणं ॥१४॥
जल्लमलदिद्धदेहो, लुक्खो कयलोयविगयसिरसोहो । जो रूढनक्खरोमो, सो गुत्तो बंभचेरम्मि [दारं] ॥१५॥
जुन्नेहिं मलिणेहि य, पमाणजुत्तेहिं थोवमुल्लेहिं । चेलेहिं संतेहि वि, जियरक्खट्ठा अचेलक्कं ॥१६॥
गंथच्चाओ लाघव-मप्पा पडिलेहणा गयभयत्तं । [1]वेसासियं च रूवं, अणायरो देहसोक्खेसु ॥१७॥
जिणपडिरूवं विरिया-यारो रागादिदोसपरिहरणं । इच्चेवमाऽऽइबहुया, आचेलक्के गुणा होंति [दारं] ॥१८॥
पयडमहासत्तत्तं, जिणबहुमाणो तदुत्तकरणेणं । दुक्खसहत्तं नरगाइ-भावणाए य निव्वेओ ॥१९॥
[2]आणक्खिया य [3]लोएण, अप्पणो होइ धम्मसद्धा वि । न य सुहसंगो पच्छा-पुरकम्मविवज्जणं चेव ॥२०॥
देहम्मि वि अममत्तं, भूसाच्चाओ य निव्वियारत्तं । अप्पा य होइ दमिओ, लोयम्मि गुणा इमे इहरा ॥२१॥
जाएज्ज संकिलेसो, बाहिज्जन्तस्स जूयलिक्खाहिं । कंडुयणे पुण णियमा, तासिं संघट्टमाऽऽईया ॥२२॥
इय पंचरूवसामन्न-लिंगमुवदंसियं समणविसयं । एत्तो सविसेसं पि हु, तमऽहं दोण्हं पि पकहेमि ॥२३॥

1. विश्वास्यं = विश्वासयोग्यम् । 2. आणक्खिया = परीक्षा । 3. लोचेन ।

नाणाऽऽइगुणगणाऽऽगर–गुरुपयपंकयपसायणपरत्तं । थेवे वि हु अवराहे, पुणो पुणो अत्तणो गरिहा ॥२४॥
सविसेसाऽऽराहणकरण–निरयमुणिसक्कहासवणवंछा । अइचारपंकपम्मुक्क–मूलगुणसेवणाऽभिरई ॥२५॥
पिंडविसुद्धिपमुहप्पहाण–किरियासु बद्धलक्खत्तं । पुव्वपडिवन्नसंजम–निरवज्जुज्जोगसंजुत्तं ॥२६॥
एमाइ गुणकलावो, विसेसलिंगत्तणेणमऽवसेओ । समणाण गिहत्थाण य, हियाभिकंखीण जहजोग्गं ॥२७॥
नवरं एवंविहगुण–जुआ वि कहमवि य कोहपडिबद्धा । चोयणवसेण सुगुरूसु, सुगईपहसत्थवाहेसु ॥२८॥
कुव्वंति जे पओसं, [1]उक्कलिज्जंति कूलवालो व्व । आराहणामहाधण–निहाणलाभाओ ते अचिरा ॥२९॥
तहाहि— "कुलवालकमुनि दृष्टान्तः"
आसि चरणाऽऽइगुणमणि–रोहणगिरिणो विसिट्ठसंघयणा । निज्जिणियमोहमल्ला, महल्लमाहप्पदुद्धरिसा ॥३०॥
संगमसीहा नामेण, सूरिणो भूरिसिस्सपरिवारा । तेसिं सिस्सो एगो, मणागमुस्सिंखलसहावो ॥३१॥
कुणमाणो वि हु दुक्कर–तवोविहाणाऽऽइं णिययबुद्धीए । आणासारं चरणं, न पवज्जइ कुग्गहवसेण ॥३२॥
चोइंति सूरिणो तं,दुस्सिक्ख! किमेवमऽफलमप्पाणं । उस्सुत्तकट्ठचेट्ठाए दुट्ठ! सन्तावमुवणेसि ॥३३॥
आणाए च्चिय चरणं, तब्भंगे जाण किं न भग्गं ति । आणं चऽइक्कमंतो, कस्साऽऽएसा कुणसि सेसं ॥३४॥
एवं सासिज्जंतो, गुरूसु वेरं स उव्वहइ घोरं । अह अन्नया कयाई, तेणेक्केणं समं गुरुणो ॥३५॥
एक्कम्मि गिरिवरम्मि, सिद्धसिलावंदणत्थमाऽऽरूढा । सुचिरं च तं नमंसिय, सणियं ओयरिउमाऽऽरद्धा ॥३६॥
अह तेण दुव्विणीएण, चिंतिअं नूण एस पत्थावो । ता दुव्वयणणिहाणं, हणामि आयरियमेयमऽहं ॥३७॥
जइ एत्थ वि पत्थावे, उवेहियो एस निस्सहावो वि । ता जाजीवं निब्भ–च्छिही ममं दुट्ठसिक्खाहिं ॥३८॥
इय चिंतिऊण पट्ठि–ट्ठिएण महई सिला परिम्मुक्का । सूरीणं हणणट्ठा, दिट्ठा य कहंपि सा तेहिं ॥३९॥
तो ओसरिउं सिग्घं, पयंपियं रे महादुरायार! । गुरुपच्चणीय! अच्चंत–पावमिय ववसिओ कीस ॥४०॥
न मुणसि लोगठिइं पि हु, उवयारिसु जं करेसि वहबुद्धिं । [2]जेसुवयारे थोवं, समग्गतइलोक्कदाणं पि ॥४१॥
मन्नंति उवयारं, ताण वि सीसा उ केवि अवणीए । उट्टिंति वहाय परे, तुमं च सुचिरोवचरिया वि ॥४२॥
अहवा कुपत्तसंगहवसेण, एसेव नूण होइ गई । न कयाइ महाविसविस–हरेण सह निव्वहइ मेत्ती ॥४३॥
इय एवंविहगुरुपाव–कम्मनिम्मूलदलियसुकयस्स । सव्वन्नुधम्मपालण–दूराजोग्गस्स तुह पाव! ॥४४॥
होही एत्तो इत्थी–सयासओ नूण लिंगचाओ वि । एवं सविउं सूरी, जहागयं पडिनियत्तो त्ति ॥४५॥
तह काहं जह एयस्स, सूरिणो भवइ वयणमऽस्सच्चं । इय चिंतिउं कुसिस्सो, सो य गओऽरन्नभूमीए ॥४६॥
जणसंचारविरहिए, एगम्मि तावसाऽऽसमम्मि ठिओ । कूले नईए उग्गं, तवं च काउं समाढत्तो ॥४७॥
पत्ते य वरिसयाले, तत्तवतुट्ठाए देवयाए नई । मा हीरिही जलेणं ति, वाहिया अवरकूलेण ॥४८॥
अह कूलंऽतरलग्गं, दट्ठूण नइं जणेण से विहियं । तद्देसगेण गुत्तं, अभिहाणं कूलवालो त्ति ॥४९॥
तप्पहपयट्टसत्थाओ, लद्धभिक्खाए जीवमाणस्स! । लिंगच्चागो जाओ, जह से तह संपयं भणिमो ॥५०॥
चंपाए नयरीए, असोगचंदो त्ति पत्थिवो अत्थि । सेणियनरिंदपुत्तो, विक्कमअक्कन्तरिउचक्को ॥५१॥
हल्लविहल्ला से लहुग–भाउणो तेसिं सेणिएण वरो । हत्थी हारो दिन्नो, अभएण वि पव्वयंतेण ॥५२॥
खोभं कुंडलजुयलं, जणणीतणयं पणामियं तेसिं । अह खोमहारकुंडल–विराइए करिवराऽऽरूढे ॥५३॥
ते चंपाए तियच्चच्चरेसु, दोगुंदुगे व्व कीलंते । दट्ठुं असोगचंदो, भणिओ भज्जाए सामरिसं ॥५४॥
रायसिरी परमत्थेण, देव! एएसिं तुज्झ भाऊण । जेणेवमऽलंकरिया, करिखंधगया पकीलंति ॥५५॥
तुह पुण मोत्तुं आयास–मेक्कमऽन्नं न रज्जफलमऽत्थि । ता तुममेए पत्थेसु, हत्थिप्पमुहाइं रयणाइं ॥५६॥
रन्ना पयंपियं कह, मयच्छि! पिउणा पणामियाइं सयं । लहुभाईणमिमाइं, मग्गन्तो नेव लज्जामि ॥५७॥
तीए भणियं का नाह!, एत्थ लज्जा परं बहुं रज्जं । दाऊणमिमेसिं करि–पमोक्खरयणाइं लिंतस्स ॥५८॥
इय पुणरुत्तं तीए तज्जिज्जंतो महीवई सम्मं । एगम्मि अवसरम्मि, हलविहल्ले इमं भणइ ॥५९॥

1. उक्कलिज्जंति = भ्रश्यन्ते । 2. येषामुपकारे

भो! तुब्भमहं सविसेस-मऽवरकरितुरयरयणदेसाई । देमि ममं च समप्पह, ताव इमं हत्थिवररयणं ॥६०॥
आलोचिऊण देमो त्ति, जंपिउं ते गया णिययठाणे । मा णेहिइ हढेणं ति, भयवसा रयणिसमयम्मि ॥६१॥
हत्थिम्मि समारुहिउं, अमुणिज्जन्ता जणेण णीहरिया । वेसालीए पुरीए, चेडगरायं समल्लीणा ॥६२॥
नाया असोगचंदेण, तदणु विणएण दूययवणेहिं । हल्लविहल्ले पेसेहि, सिग्घमिइ चेडगो भणिओ ॥६३॥
अह चेडगेण भणियं, नीणेमि कहं इमे हढेणाहं । सयमेव तुमं संबो-हिऊण उचियं समाचरसु ॥६४॥
एए तुमं च जम्हा, धूयसुया मज्झ नत्थि हु विसेसो । गेहाऽऽगय त्ति णवरं, बला न सक्केमि पेसेउं ॥६५॥
एवं सोच्चा रुट्ठेण, तेण पुणरऽवि य चेडगो भणिओ । पेसेसु कुमारे अहव, जुज्झसज्जो लहुं होसु ॥६६॥
पडिवन्ने जुज्झे चेडगेण, काउं समग्गसामग्गिं । वेसालीए पुरीए असोगचंदो लहुं पत्तो ॥६७॥
जुज्झेण संपलग्गो, णवरं चेडगमहामहीवइणा । कालप्पमुहा दस अवर-माउगा भाउगा तस्स ॥६८॥
दसहिं दिवसेहिं वहिया, अमोहमेक्कं सरं खिवंतेण । किर से एक्कदिणंऽत्तो एक्कसरक्खेवनियमो त्ति ॥६९॥
एक्कारसमे य दिणे, भयभीएणं असोगचंदेणं । चिंतियमहो इयाणिं, जुज्झंतो हं विणस्सामि ॥७०॥
ता जुज्झिउं न जुज्जइ, इइ ओसरिउं रणंऽगणाउ लहुं । कुणइ स अट्ठमभत्तं, सुरसन्निज्झाऽभिलासेण ॥७१॥
अह सोहम्मसुरिंदो, चमरो वि य पुव्वसंगयं सरिउं । तम्मूले संपत्ता, पयंपिउं एवमाऽऽढत्ता ॥७२॥
भो भो देवाणुप्पिय!, कहेसु किं ते पियं पयच्छामो । रन्ना भणियं मारेह, चेडयं वेरियं मज्झ ॥७३॥
सक्केण जंपियं परम-सम्मदिट्ठिं इमं न मारेमो । सण्णिज्झं तस्स तुज्झ य, जइ भणसि ता कुणिमो त्ति ॥७४॥
एयंपि होउ इइ जंपिऊण रन्ना असोगचंदेण । चेडगनिवेण सद्धिं, पारद्धो समरसंरंभो ॥७५॥
अप्पडि हयसुरवइपाडि-हेरपायडपहावदुप्पेच्छो । रिउपक्खं निहणंतो, सो पत्तो चेडगं जाव ॥७६॥
तो आयन्नं आयड्ढिऊण, चावं कयंतदूओव्व । तं पइ अमोहयिसिहो, पामुक्को चेडगनिवेण ॥७७॥
तं च तदंतरचमरिंद-रइयफालिहसिलापडिक्खलियं । अवलोइऊण सहसा, विम्हइओ चेडयनरिंदो ॥७८॥
खलिए अमोहसत्थे, एत्तो नो मज्झ जुज्झिउं जुत्तं । इइ चिंतिउं पविट्ठो, वेगेण पुरीए मज्झम्मि ॥७९॥
किंतु गयं से निहणं, असुरिंदसुरिंदनिम्मिएहिं बहुं । रहमुसलसिलाकंटग-रणेहिं चउरंगमऽवि सेन्नं ॥८०॥
नयरीरोहं काउं, असोगचंदो ठिओ चिरंकालं । उत्तुंगसालकलिया, न वि भज्जइ सा कहंपि पुरी ॥८१॥
एगम्मि य पत्थावे, राया तं भंजिउं अपारंतो । जा सोइंतो अच्छइ, ता पढियं देवयाए इमं ॥८२॥
'समणे जइ कूलवालए, मागहियं गणियं लग्गिस्सई । राया य असोगचंदए, वेसालिं नगरिं गहिस्सइ' ॥८३॥
हरिसवियसंतवयणो, पाउं अमयं व सवणपुडएहिं । वयणमिमं नरनाहो, तं समणं पुच्छए लोयं ॥८४॥
अह कहमवि लोगाउ, नईकूलट्ठियमिमं वियाणित्ता । पणतरुणीण पहाणं, मागहियं वाहरावेइ ॥८५॥
भणइ य भद्दे! तं कूल-वालगं समणमेत्थ आणेहि । एवं करेमि तीए, पडिवन्नं विणयपणयाए ॥८६॥
तो कवडसाविया सा, होउं सत्थेण तं गया ठाणं । वंदित्ता तं समणं, सविणयमेवं पयंपेइ ॥८७॥
गिहनाहे सग्गगए, जिणिंदभवणाइं वंदमाणाऽहं । सोउं तुब्भे एत्थं, समागया वंदणट्ठाए ॥८८॥
ता अज्जं चिय सुदिणं, पसत्थतित्थं च जं तुमं दिट्ठो । एत्तो कुणसु पसायं, भिक्खागहणेण मुणिपवर! ॥८९॥
तुम्हारिसे सुपत्ते, निहित्तमप्पंपि दाणमचिरेण । सग्गाऽपवग्गसोक्खाण, कारणं जायए जेण ॥९०॥
इय बहुभणितो सो कूल-वालओ आगओ य भिक्खट्ठा । दिन्ना य मोयगा दुट्ठ-दव्वसंजोइया तीए ॥९१॥
तब्भोगाऽणंतरमवि, अइसारो से दढं समुप्पन्नो । तेण विबलोऽतरंतो, काउं उव्वत्तणाइं पि ॥९२॥
तीए भणियं भयवं, उस्सग्गऽववायवेइणी अहयं । गुरुसामिबंधुतुल्लस्स, तुज्झ जइ किंपि पडियारं ॥९३॥
काहं फासुयदव्वेहिं, होज्जा एत्थ वि असंजमो कोई । ता अणुजाणसु भंते, वेयावच्चं करेमि त्ति ॥९४॥
पगुणसरीरो सन्तो, पायच्छित्तं इहं चरेज्जासि । अप्पा हि रक्खियव्वो, जत्तेणं जेण भणियमिमं ॥९५॥
सव्वत्थ संजमं संज-माउ अप्पाणमेव रक्खेंतो । मुच्चइ अइवायाओ, पुणो वि सोही न याऽविरई ॥९६॥
इय सिद्धंताभिप्पाय-सारवयणाणि सो निसामित्ता । मागहियं अणुजाणइ, वेयावच्चं करेमाणिं ॥९७॥

तो उव्वत्तणधावण-निसियावणपमुहसव्वकिरियाओ । कुणइ समीवत्थिया सा, अणवरयं तस्स परितुट्ठा ॥९८॥
कइवयदिणाइं एवं, पालित्ता ओसहप्पयोगेण । पगुणीकयं सरीरं, तवस्सिणो तस्स लीलाए ॥९९॥
अह पवरुब्भडसिंगार-सारनेवत्थसुंदरंगीए । एगम्मि दिणे तीए, सवियारं सो इमं वुत्तो ॥१३००॥

"कुलवालकस्य पतनः" —

पाणनाह! निसुणेसु मे गिरं, गाढरुढपडिबंधबंधुरं । मं भयाहि सुभरासिणो निहिं, मुंच दुक्करमिमं तवोविहिं ॥१॥
किं अणेण तणुसोसकारिणा, पइदिणं पि विहिएण वेरिणा । पत्तमेव फलमेयसंतियं, मं लहित्तु [1]पइं कुंददन्तियं॥२॥
किं वऽरन्नमिममस्सिओ तुमं, दुट्ठसावयसमूहदुग्गमं । एहिं जामु नयरं मनोहरं, रइसरूवहरिणच्छिसुंदरं ॥३॥
मुद्ध! धुत्तनिवहेण वंचिओ, अच्छसे जमिह सीसलुंचिओ । किं विलासमऽणुवासरं तुमं, नो करेसि भवणे मए समं ॥४॥
तुज्झ थेवविरहे वि निच्छियं, निस्सरेइ मह नाह! जीवियं । ता उवेहि सममेव वच्चिमो, दूरदेसगयतित्थं वंदिमो ॥५॥
एत्तिएण वि समत्थपाववं, तुज्झ मज्झ चिय वच्चिही खयं । पंचरूवविसए य भुंजिमो, जाव नाह! इह किंपि जीविमो॥६॥
इय सवियारं मंजुल-गिराहिं, तीए पयंपिओ संतो । सो संखुद्धो परिचत्त-धीरिमो मुयइ पव्वज्जं ॥७॥
अच्चन्तहरिसियमणा, तो तेण समं समागया रन्नो । पासे असोगचंदस्स, पायवडिया य विन्नवइ ॥८॥
सो एस देव! मुणिकूल-वालगो मज्झ पाणनाहो त्ति । जं कायव्वं इमिणा, तं संपइ देह आएसं ॥९॥
रन्ना भणियं भद्दय!, तह कुण जह भज्जए इमा नयरी । पडिवज्जइ सो वयणं, तिदंडिरूवं च काऊण ॥१०॥
पविसइ पुरीए मज्झे, मुणिसुव्वयनाहथूहमऽह दट्ठुं । चिन्तेइ नेव भज्जइ, धुवमेयपभावओ नयरी ॥११॥
ता तह करेमि अवणेन्ति, जह इमं नयरिवासिणोमणुया । इइ चिन्तिऊण भणियं, हंहो लोगा! इमं थूभं ॥१२॥
जइ अवणेह लहुं चिय, ता परचक्कं सदेसमणुऽसरइ । इहरा नयरीरोहो, न फिट्टिही जावजीवं पि ॥१३॥
संकेइओ य राया, अवसरियव्वं तए वि थूभम्मि । अवणिज्जंते दूरं, घेत्तुं णियसव्वसेन्नं ति ॥१४॥
अह लोगेणं भणियं, भयवं! को एत्थ पच्चओ अत्थि । तेणं पयंपियं थूभे, थेवमेत्तम्मि अवणीए ॥१५॥
जइ परच्चक्कं वच्चइ, ता एसो पच्चओ त्ति इइ वुत्ते । लोगेणं आरद्धं, अवणेउं थूभसिहरऽग्गं ॥१६॥
अवणिज्जंते तम्मि, वच्चंतं पेच्छिऊण रिउसेन्नं । संजायपच्चएणं, अवणीयं सव्वऽवि थूभं ॥१७॥
तो भग्गा वलिऊणं, रन्ना नयरी विडम्बिओ लोगो । अवडम्मि निवडिओ चेड-गो य जिणपडिमामाऽऽदाय॥१८॥
इय एवंविहगिरिगरुय-पावरासिस्स भायणं जाओ । जं कूलवालगो सुगुरु पच्चणीयत्तदोसेण ॥१९॥
जं च सुदुक्करतवचरण-करणनिरओ वि रन्नवासी वि । भग्गपइन्नो जाओ, तमऽसेसं गुरुपओसफलं ॥२०॥
तेणं सविसेसमिणं, लिंगं गुरुपयपसायणारूवं । आराहणाऽरिहाणं, भन्नइ कयमिह पसंगेण ॥२१॥
इय निव्वुइपहसंदणसमाए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥२२॥
आराहणाए पन्नरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । लिंगाभिहाणमेयं, अक्खायं बीयपडिदारं ॥२३॥
पुव्वुत्तलिंगजुत्ता वि, सम्ममाऽऽराहणं न पावेंति । जम्हा विणा इमीए, ता एत्तो भण्णए सिक्खा ॥२४॥

"तृतीयशिक्षाद्वारस्वरूपम् - ग्रहणशिक्षास्वरूपम्" —

गहणाऽऽसेवणतदुभय-भेएहिं सा भवे तिहा तत्थ । नाणब्भाससरूवा, सिक्खा वुच्चइ गहणसिक्खा ॥२५॥
सा य जहन्नेण जइस्स, सावयस्स य पडुच्च सुत्तत्थे । अट्ठ उ पवयणमाया, जाव भवे तुच्छमइणो वि ॥२६॥
उक्कोसेणं साहुस्स, सुत्तओ अत्थओ य होइ इमा । पवयणमायाइबिंदु-सारपुव्वाऽवसाण त्ति ॥२७॥
जावं छज्जीवणियं, उक्कोसा सुत्तओ गिहत्थस्स । अत्थं पडुच्च पिंडेस-णाऽवसाणा स किर जेण ॥२८॥
पवयणमायाऽहिगमं, विणा वि सामाइयं कह करेज्ज । छज्जीवणियानाणं, विणा य कह रक्खइ जीवे ॥२९॥
पिंडेसणऽत्थविन्नाण-विरहओ कह य देज्ज समणाणं । फासुयएसणियाइं, पाणाऽसणवत्थपत्ताइं ॥३०॥
इय घोरभवऽन्नवतरण-तरीसमुद्दामपायडपहावं । पुन्नाऽणुबंधिपुण्णाण, कारणं परमकल्लाणं ॥३१॥
मुहपरिणईसु महुरं, पमायदढसेलवज्जऽमणवज्जं । जरमरणरोगपसमण-मणहारिरसायणविहाणं ॥३२॥
जिणवयणं पढमं सुद्ध-मऽविकलं सुत्तओ पढेयव्वं । पच्छा सुसाहुपासे, सोयव्वं अत्थओ सम्मं ॥३३॥

1. त्वया

पढिय-सुणियं पि एक्कसि, जत्तेण पुणो पुणो हु पेहेज्जा । आजम्ममऽप्पणो तयणु-बंधथिरीकरणहेउ त्ति ॥३४॥
तं किं पि परमतत्तं, इमं मए पावियं सुपुन्नेहिं । एवं च भावसारं, बहुमन्नेज्जाऽणवज्जं तं ॥३५॥
भद्दं समंतभद्दस्स, तस्स पायडियसुगइमग्गस्स । जिणवयणस्स भगवओ, भवंति जत्तो गुणा एए ॥३६॥
आयहियपरिन्ना भाव-संवरो नवनवो य संवेगो । निक्कंपया तवो भाव-णा य परदेसियत्तं च ॥३७॥
नाणेण सव्वभावा, जीवाऽजीवाऽऽसवाइणो सम्मं । नज्जंति आयहियं, अहियं च भवे इह परे य ॥३८॥
आयहियमऽयाणंतो, मुज्झइ मूढो समाइयइ पावं । पावनिमित्तं जीवो, भमइ भवसायरमणंतं ॥३९॥
जाणंतस्सायहियं, अहियनियत्ती य हियपवित्ती य । होइ जओ ता निच्चं, आयहियं आगमेयव्वं ॥४०॥
सज्झायं कुव्वंतो, पंचिंदियसंवुडो तिगुत्तो य । संवरइ असुहभावे, रागद्दोसाऽऽइए घोरे [दारं] ॥४१॥
जह जह सुयमऽवगाहइ, अइसयरसपसरनिब्भरमऽउव्वं । तह तह पल्हाइ मुणी, नवनवसंवेगसद्धाए [दारं] ॥४२॥
आयोवायविहिन्नू, [1]विज्जा तवनाणदंसणचरित्ते । विहरइ विसुद्धलेसो, जावज्जीवं पि निक्कंपो [दारं] ॥४३॥
बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिन्तरबाहिरे कुसलदिट्ठे । नऽवि अत्थि नऽवि य होही, सज्झायसमं तवोकम्मं [दारं] ॥४४॥
सज्झायभावणाए य, भाविया होंति सव्वगुत्तीओ । गुत्तीहिं भावियाहिं, मरणे आराहओ होइ [दारं] ॥४५॥
आयपरसमुत्तारो, आणावच्छल्ल दीवणा भत्ती । होइ परदेसियत्ते, अव्वोच्छित्ती य तित्थस्स ॥४६॥
अन्नं च—
उवएसमंऽतरेण वि, कामऽत्थे कुसलो सयं लोगो । धम्मो उ गहणसिक्खं, विणा न ता तीए जइयव्वं ॥४७॥
अत्थाऽऽइसु अविहीए, तदभावो चेव जइ परनराणं । रोगचिगिच्छाऽऽहरणा, धम्मे अविही अणत्थकए ॥४८॥
ता निच्चं धम्मऽत्थी, जत्तपरो होज्ज गहणसिक्खाए । निम्मोहं धम्मिजणे, पवित्तिहेऊ तदुज्जोओ ॥४९॥
नाणं चिंतारयणं, नाणं कप्पद्दुमो परो लोए । तह सव्वगयं चक्खू, धम्मस्स य साहणं नाणं ॥५०॥
जस्सेह न बहुमाणो, अफल च्चिय तस्स धम्मकिरियाऽवि । पेक्खणगेक्खणकिरिया, जह जच्चंधस्स लोयम्मि ॥५१॥
अन्नं च विणा नाणं, जो वट्टइ कामचारओ किच्चे । लहइ न तस्सिद्धिं सो, न सुहं न परं गइं वाऽवि ॥५२॥
इय मोत्तूण पमायं, पढमं चिय कज्जसाहणमणेण । सम्मं सया वि जत्तो, कायव्वो नाणगहणम्मि ॥५३॥
अन्नं च पत्थुयऽत्थे, एत्थं नीसेसनयमयाणं पि । संगाहिणो नया दोन्नि, नाणकिरियाऽभिहाणाओ ॥५४॥
तत्थ किर नाणनयमय-मेयं जं सव्वहा वि कज्जत्थी । गहणस्सिक्खाए च्चिय, जएज्ज सम्मं सइ तहाहि ॥५५॥
हेओवाएयऽत्थे, विन्नाए चेव गहणसिक्खाए । सम्मं बुहेहिं जइयव्वं, अन्नहा फलविसंवाओ ॥५६॥
फलसाहणेक्कहेऊ, सन्नाणं चिय नराण नो किरिया । मिच्छानाणपवत्ताणं, फलविसंवायभावाओ ॥५७॥
इय इहलोगफलं पइ, जह भणियं तह भवंऽतरफलं पि । आसज्ज सो च्चिय विही, जिणनाहेहिं जओ भणियं ॥५८॥
'पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए । अन्नाणी किं काही, किंवा नाही छेयपावयं' ॥५९॥
इह जह खाओवसमिग-नाणस्स तहेव खाइगस्साऽवि । संमं विसिट्ठफलसाह-गत्तणं होइ विन्नेयं ॥६०॥
जम्हा अरिहन्तस्स वि, संसारसमुद्दपारपत्तस्स । दिक्खापडिवन्नस्स वि, पगिट्ठतवचरणवंतस्स ॥६१॥
नो ताव सिद्धिगमणं, केवलनाणं न जाव उप्पन्नं । जीवाऽऽइसमत्थपयत्थ-सत्थवित्थारणसमत्थं ॥६२॥
तम्हा इहपरलोइय-फलसंपत्तीए कारणमऽवंझं । सन्नाणं चिय तत्तो, तम्मि पयत्तो न मोत्तव्वो ॥६३॥
नाणं विणा न गोरव-मेइ नरो इंददत्तपुत्तोव्व । नाणाउ तस्सुओ च्चिय, सुरिंददत्तो व्व गउरविओ ॥६४॥

तथाहि— "सुरेन्द्रदत्तस्य दृष्टान्तः"

इंदपुरे इव रम्मे, इंदपुरे वरपुरम्मि नरनाहो । नामेण इंददत्तो, इंदो इव विबुहमहणिज्जो ॥६५॥
सिरिमालिपमुहपुत्ता, बावीसमणंगचंगरूवधरा । बावीसाए देवीण-मऽत्तया तस्स य अहेसि ॥६६॥
एगम्मि य पत्थावे, अमच्चधूया रइ व्व पच्चक्खा । दिट्ठा तेणं गेहे, कीलंती विविहकीलाहिं ॥६७॥
तो पुच्छिओ परियणो, कस्सेसा तेण जंपियं देव! । मंतिसुया अह रन्ना, तदुवरि संजायरागेण ॥६८॥

1. विद्वान् ।

विविहपयारेहि मग्गिऊण, मंतिं सयं समुव्वूढा । परिणयणाणंऽतरमवि, खित्ता अंतउरे सा य ॥६९॥
अन्नन्नपवररामा-पसंगवासंगओ य नरवइणो । विस्सुमरिया चिरेण य, दट्ठुं [1]ओलोयणठियं तं ॥७०॥
जंपियमऽणेण ससहर-सरिच्छपसरंतकंतिपब्भारा । का एसा कमलऽच्छी, लच्छी विव सुंदरा जुवई ॥७१॥
कंचुइणा संलत्तं, सा एसा देव मंतिणो धूया । जा परिणिऊण मुक्का, तुब्भेहिं पुव्वकालम्मि ॥७२॥
एवं भणिए राया, तीए समं तं निसीहिणिं वुत्थो । उउण्हाय त्ति तय च्चिय, पाउब्भूओ य से गब्भो ॥७३॥
अह सा पुव्वमऽमच्चेण, आसि भणिया जहा तुहं पुत्ति! । पाउब्भवेज्ज गब्भो, जं च नरिंदो समुल्लवइ ॥७४॥
तं साहेज्जसु तइया, महं ति तीए वि सव्ववुत्तंतो । सिट्ठो पिउणो तेणाऽवि, भुज्जखंडम्मि लिहिऊण ॥७५॥
पच्चयकएण मुक्को, पइदियहं सारवेइ अपमत्तो । जाओ य तीए पुत्तो, सुरिंददत्तो कयं नामं ॥७६॥
तम्मि य दिणे पसूयाणि, तत्थ चत्तारि चेडरूवाणि । अग्गियओ पव्वयओ, बहुली तह सागरयनामो ॥७७॥
उवणीओ पढणत्थं, लेहाऽऽयरियस्स सो अमच्चेण । तेहिं चेडेहिं समं, कलाकलावं अहिज्जेइ ॥७८॥
ते वि सिरिमालिपमुहा, रन्नो पुत्ता न किंचिवि पढंति । थेवं पि कलाऽऽयरिएण, ताडिया निययजणणीए ॥७९॥
साहेंति रोयमाणा, एवं एवं च तेण हणियम्ह । अह कुवियाहिं भणिज्जइ, उज्झाओ रायमहिलाहिं ॥८०॥
हे कूडपंडिय! सुए, अम्हाणं कीस हणसि [2]णिस्सट्ठं । पुत्तरयणाइं जह तह, न होंति एयं पि नो मुणसि ॥८१॥
हो! होउ तुज्झ पाढणविहीए, अच्चंतमूढ! विहलाए । जो न सुए थेवं पि हु, ताडिंतो वहसि अणुकंपं ॥८२॥
इय ताहिं फरुसवयणेहिं, तज्जिएणं उवेहिया गुरुणा । अच्चन्तमहामुक्खा, जाया ताहे नरिंदसुया ॥८३॥
राया वि वइयरमिमं, अयाणमाणो मणम्मि चिन्तेइ । अच्चंतकलाकुसला, मम चेव सुया परं एत्थ ॥८४॥
सो पुण सुरिंददत्तो, कलाकलावं अहिज्जिओ सयलं । अगणेंतो समवयचेड-रूवविहियं पि पच्चूहं ॥८५॥
अह महुराए नयरीए पव्वयगनराहिवो नियधूयं । पुच्छइ पुत्ति! तुह वरो, जो रोयइ तं पणामेमि ॥८६॥
तीए पयंपिअं ताय!, इंददत्तस्स संतिया पुत्ता । सुव्वंति कलाकुसला, सूरा धीरा सुरूवा य ॥८७॥
तेसिं एक्कं सुपरिक्खिऊण, राहापवेहविहिणाऽहं । जइ भणसि ता सयं चिय, गंतूण तहिं वरेमि त्ति ॥८८॥
पडिवन्नं नरवइणा, ताहे पउराए रायरिद्धीए । सा परिगया पयट्टा, गंतु नयरम्मि इंदपुरे ॥८९॥
तं इंतिं सोऊणं, तुट्ठेणं इंददत्तनरवइणा । कारविया नियनयरी, उब्भवियविचित्तधयनिवहा ॥९०॥
अह आगयाए तीए, दवाविओ सोहणो य आवासो । भोयणदाणप्पमुहा, विहिया उचिया पवित्ती वि ॥९१॥
विन्नत्तो तीए निवो, राहं जो विंधिही सुओ तुज्झ । सो च्चिय मं परिणेही, एत्तो च्चिय आगयाऽहमिहं ॥९२॥
रन्ना भणियं मा सुयणु!, एत्तिएणाऽवि तं किलिस्सिहसि । एक्केक्कपहाणगुणा, सव्वे वि सुया जओ मज्झ ॥९३॥
उचियपएसे य तओ, सव्वेयरभमिरचक्कपंतिल्लो । सिरिरइयपुत्तिगो लहु, महं पइट्ठाविओ थंभो ॥९४॥
अक्खाडओ य रइओ, बद्धा मंचा कया य उल्लोया । हरिसुल्लसन्तगत्तो, आसीणो तत्थ नरनाहो ॥९५॥
उवविट्ठो नयरिजणो, आहूया राइणा नियपुत्ता । वरमालं घेत्तूणं, समागया सा वि रायसुया ॥९६॥
अह सव्वपुत्तजेट्ठो, सिरिमाली राइणा इमं वुत्तो । हे वच्छ! मणोवंछिय-मऽवंझमेत्तो कुणसु मज्झ ॥९७॥
धवलेसु नियकुलं पर-मुन्नइं नेसु रज्जमऽणवज्जं । गिण्हाहि जयपडायं, सत्तूणं विप्पियं कुणसु ॥९८॥
एवं रायसिरिं पिव, पच्चक्खं निव्वुइं नरिंदसुयं । परिणेसु कुसलयाए, राहावेहं लहुं काउं ॥९९॥
एवं च वुत्तु सो रायपुत्तु, संजायखोहु निन्नट्ठसोहु । पस्सेयकिन्नु अइचित्तसुन्नु दीणाऽऽणणत्थुं पगलंतकच्छु ॥१४००॥
विच्छायगत्तु नं लच्छिचत्तु, लज्जायमाणु विहलाऽभिमाणु । हेट्ठं नियंतु पोरिसु मुयंतु, ठिउ थंभिउ व्व दढजंतिउ व्व ॥१॥
पुणरवि भणिओ रन्ना, संखोहं उज्झिऊण हे पुत्त! । कुणसु समीहियमऽत्थं, केत्तियमेत्तं इमं तुज्झ ॥२॥
संखोहं पुत्त! कुणंति, ते परं जे कलासु न वियड्ढा । तुम्हारिसाण स कहं, अकलंककलाकुलगिहाणं ॥३॥
इय संलत्तो धिट्ठिम-मऽवलंबिय सो मणागमऽवियड्ढो । कह कहवि धणुं गेण्हइ, पकंपिरेणं करऽग्गेण ॥४॥
सव्वसरीराऽऽयासेण, कहवि आरोविऊण कोदंडं । जत्थ व तत्थ व वच्चउ, मुक्को सिरिमालिणा बाणो ॥५॥

1. गवाक्षस्थिताम् 2. अत्यन्तम् ।

थंभे अब्भिट्टित्ता, झडत्ति, सो भंगमुवगतो तयणु । लोगो कयतुमुलरवो, निहुयं हसिउं समारद्धो ॥६॥
एवं सेसेहि वि नर-वइस्स पुत्तेहिं कलाविउत्तेहिं । जह तह मुक्का बाणा, न कज्जसिद्धी परं जाया ॥७॥
लज्जामिलंतनयणो, वज्जाऽसणिताडिओ व्व नरनाहो । विच्छायमुहो विमणो, सोगं काउं समाढत्तो ॥८॥
भणिओ य अमच्चेणं, देव! विमुंचह विसायमऽन्नो वि । अत्थि सुओ तुम्हाणं, ता तंपि परिक्खह इयाणिं ॥९॥
रन्ना भणियं को पुण, समप्पियं मंतिणा तओ भुज्जं । तं वाइऊण रन्ना, पयंपियं होउ तेणाऽवि ॥१०॥
अच्चंतपाढिएहिं पि, इमेहिं पावेहिं जं समायरियं । सो वि हु तमाऽऽयरिस्सइ, धी धी एवं विहसुएहिं ॥११॥
जइ पुण तुह निब्बंधो, विन्नासिज्जउ तदा सुओ सो वि । तो मंतिणोवणीओ, सुरिंददत्तो सउज्झाओ ॥१२॥
अह तं भूमीवइणा, विचित्तपहरणपरिस्समकिण्णंकं । उच्छंगे विणिवेसिय, पयंपियं जायतोसेणं ॥१३॥
पूरेसु तुमं मम वच्छ!, वंछियं विंधिऊण राहं च । परिणेसु निव्वुइं राय-कन्नेगं अज्जिणसु रज्जं ॥१४॥
ताहे सुरेंददत्तो, नरनाहं नियगुरुं च नमिऊण । आलीढट्ठाणठिओ, धीरो धणुदंडमाऽऽदाय ॥१५॥
निम्मलतेल्लाऊरिय-कुंडयसंकंतचक्कगणछिड्डं । पेहिन्तो अवरेहिं, हीलिज्जन्तो वि कुमरेहिं ॥१६॥
अग्गीययप्पमुहेहिं, रोडिज्जन्तो वि तेहिं चेडेहिं । गुरुणा निरुविएहिं, पासट्ठिएहिं च पुरिसेहिं ॥१७॥
आयड्ढियखग्गेहिं, जइ चुक्कसि ता वयं हणिस्सामो । इइ जंपिरेहिं दोहिं, तज्जिज्जंतो वि पुणरुत्तं ॥१८॥
लक्खुम्मुहकयचक्खू, एगग्गमणो महामुणिंदो व्व । उवलद्धचक्कविवरो, राहं विंधइ सरेण लहुं ॥१९॥
विद्धाए तीए खित्ता, वरमाला निव्वुईए से कण्ठे । आणंदिओ नरेंदो, जयजयसद्दो समुच्छलिओ ॥२०॥
विहिओ वीवाहमहो, दिन्नं रज्जं पि से महीवइणा । एवं सुरेंददत्तो, नाणाउ गउरवं पत्तो ॥२१॥
इय नाणनयमएणं, जत्तो निच्चं पि गहणसिक्खाए । कायव्वो इहपरभव-सुहदाणअवंझहेऊए ॥२२॥
एयरहिया न जम्हा, किरियाजुत्ता वि होंति जणपुज्जा । अचंतकलावियला, निवसुयसिरिमालिपमुह व्व ॥२३॥
इय ताव गहणसिक्खा, निदंसिया इन्हिं पुव्वउद्दिट्ठा । किरियाकलावरुवा, वुच्चइ आसेवणासिक्खा ॥२४॥
एयाए विणा वणमालईए, कुसुमोग्गमो व्व विहवाए । रुवाऽऽइगुणगणोइव, होइ विहला गहणसिक्खा ॥२५॥
किंच—

"आसेवनशिक्षास्वरूपम्"

जोगतिगेणासेवण-सिक्खं चिय सम्ममायरन्तस्स । गहणस्सिक्खा जायइ, न अन्नहा जेण पयडमिणं ॥२६॥
गुरुचरणपसायणओ, असेसवक्खेववज्जणुज्जमओ । सुस्सूसणपडिपुच्छण-पमुहगुणपउंजणेणं च ॥२७॥
बहुबहुतरबहुतमबोह-संभवा परमपगरिसमुवेइ । गहणस्सिक्खा न उ अन्न-हा वि सिरिमालिणो व्व धुवं ॥२८॥
एवं जाया वि अभिक्खणं पि, मणवयणकायकिरियाहिं । आसेविज्जन्त च्चिय, वड्ढइ एसा थिरा य भवे ॥२९॥
ता होइ अहुन्ता वि हु, हुंतीए अहुंतियाए हुन्ता वि । न हु होइ जप्पभावा, भव्वाण इमा गहणसिक्खा ॥३०॥
तीए च्चिय एक्काए, नमोऽत्थु सव्वसुहसिद्धिभूमीए । आसेवणसिक्खाए, भवतरुपलवानलसमाए ॥३१॥
एत्थ य किरियानय-मयमेयं जं सव्वहा वि कज्जत्थी । किरियाए च्चिय सम्मं, जएज्ज निच्चं चिय तहाहि ॥३२॥
हेओवादेयऽत्थे, विन्नाए उभयलोगफलसिद्धिं । इच्छन्तेण मइमया, जइयव्वं चेव जत्तेण ॥३३॥
जम्हा पयित्तिलक्खण-पयत्तविरहे न नाणिणो वि इहं । अहिलसियवत्थुसिद्धी, दीसइ अन्नेहि वि जमुत्तं ॥३४॥
किरिय च्चिय फलजणणी, नो नाणं संजमऽत्थविसयाण । विन्नाया वि सुनिउणं, न नाणमेत्ता सुही होइ ॥३५॥
तिसिओ वि हु सलिलाइय-मवलोयन्तो वि जाव न पयट्टो । पियणाऽऽइकिरियाए, [1]तत्तित्तिफलं न ता लहइ ॥३६॥
अग्गट्ठियइट्ठरसोयवेय-भोयणतडोवविट्ठो वि । हत्थमवावारिन्तो, नाणी वि हु मरइ भुक्खाए ॥३७॥
अइपंडिओ वि वाई, आहसिय परं गतो निवसभाए । वयणमवावारिन्तो, न लहइ अत्थं सलाहं च ॥३८॥
इय इहलोयफलं पइ, जह वुत्तो तह भवन्तरफलं पि । आसज्ज सो च्चिय विही, जओ जिणिंदेहिं भणियमिणं ॥३९॥
चेइयकुलगणसंघे, आयरियाणं च पवयणसुए य । सव्वेसु वि तेण कयं, तवसंजममुज्जमन्तेण ॥४०॥
इय जह खाओवसमिग-चरणस्स तहेव खाइगस्सावि । सम्मं पगिट्ठफलसाह-गत्तणं होइ विन्नेयं ॥४१॥

1. तत्तृप्तिफलम् ।

जम्हा अरिहन्तस्स वि, पत्तस्स वि विमलकेवलाऽऽलोयं । नो ताव नाणओ च्चिय, संपज्जइ मुत्तिसंपत्ती ॥४२॥
जाव न समत्थकम्मिं-धणग्गितुल्ला परा विसुद्धिकरी । लहुपंचऽक्खरसंगिरण-मेत्तकालप्पमाणट्ठिई ॥४३॥
नीसेसाऽऽसवसंवर-रूवा एत्थं अपत्तपुव्वा य । सेसकिरियापहाणा, पत्ता चारित्तकिरिय त्ति ॥४४॥
नायं च एत्थ सो च्चिय, सुरिंददत्तो न जइ मुणन्तो वि । राहं विंधंतो ता, परे व्व हीलापयं हुंतो ॥४५॥
तम्हा इहपरलोइय-फलसंपत्तीए कारणमऽवंझं । आसेवासिक्खं च्चिय, ता इह जत्तो न मोत्तव्वो ॥४६॥
एवं च नाणकिरिया-नएहिं उद्दिट्ठमुभयपक्खे वि । सिद्धंतुद्दिट्ठविचित्त-जुत्तिनिविहं निसामेत्ता ॥४७॥
एगत्थ मांसलाऽऽमोय-मणहरं फूडियकेयईकोसं । अन्नत्तो दरविदलिय-मवलोइय मालईमउलं ॥४८॥
तग्गंधलुद्धओ महु-यरो व्व दोलायमाणमणपसरो । सिस्सो पुच्छइ सट्ठाण-जुत्तिगरुयत्तणे [1]भंतो ॥४९॥
किं तत्तमेत्थ गुरुणा, पयंपियं हंत उभयसिक्खं त्ति । गहणाऽऽसेवणरूवा, अन्नोन्नसवेक्खयाए जओ ॥५०॥
आसेवणाए सिक्खा, न गहणसिक्खं विणा भवइ सम्मं । सहला न गहणसिक्खा वि, इह विणाऽऽसेवणासिक्खं॥५१॥
संमत्तं पि जओ इह, सुयाऽऽणुसारेण जा पवित्ती उ । सुत्तऽत्थगहणपुव्वा, किरिया तेणेह सिवजणणी ॥५२॥
किंच— ''ज्ञानक्रियासापेक्षउपादेयता''
सुयनाणम्मि वि जीवो, वट्टन्तो सो न पाउणइ मोक्खं । जो तवसंजममइए, जोए न चएइ वोढुं जे ॥५३॥
'हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणओ किया । पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अंधओ' ॥५४॥
'संजोगसिद्धीए फलं वयंति, न हु एगचक्केण रहो पयाइ । अंधो य पंगू य वणे समेच्चा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा'॥५५॥
नाणं नयणसमाणं, चरणं चरणप्पवित्तिपडिरूवं । दोण्हं पि समाजोगे, सिवपुरगमणं जिणा बिंति ॥५६॥
सिक्ख्यादुगोउवएसो, जइ ता मुणिणो वि वन्निओ एवं । सविसेसं समणोवास-एण ता तत्थ जइयव्वं ॥५७॥
एत्तो च्चिय वन्निज्जइ, ते च्चिय धन्ना जयम्मि सप्पुरिसा । जे निच्चमऽप्पमत्ता, नाणी य चरित्तजुत्ता य॥५८॥
परमत्थम्मि सुदिट्ठे, अविनट्ठेसु तवसंजमगुणेसु । लब्भइ गई विसिट्ठा, कम्मसमूहे विणट्ठम्मि ॥५९॥
लक्खित्ता दक्खो लक्ख-णिज्जभावे उ गहणसिक्खाए । लक्खाणुरूवमह अणु-सरेज्ज आसेवणासिक्खं ॥६०॥
जइ ताव गहणसिक्खा, एक्क च्चिय फलवई हवेज्ज इहं । ता नहि सुयनिही सो वि हु, महुरामंगू तहा हुंतो॥६१॥
तहाहि-- ''आर्यमङ्गूआचार्यदृष्टान्तः''
महुराए नयरीए, जुगप्पहाणो सुयस्स य निहाणो । अणवरयसिस्ससुत्तत्थ-कहणपडिबद्धवावारो ॥६२॥
अगणियपरिस्समो भव्व-सत्तसद्धम्मदेसणाईसु । नामेण अज्जमंगू, आसि सूरी जणपसिद्धो ॥६३॥
सो पुण जहुत्त किरिया-कलाववियलो सुहाभिलासी य । सावयकुलपडिबद्धो, पग्गहिओ गारवतिएण ॥६४॥
अणवरयभत्तजणदिज्ज-माणपाणऽन्नवत्थलाभेण । तत्थेव चिरं वुत्थो, चिच्चा अब्भुज्जयविहारं ॥६५॥
अह सिढिलियसामन्नो, निस्सामन्नं पमायमुवचिणिउं । अकयनियदोससुद्धी, मरिऊणं आउविगमम्मि ॥६६॥
तीए चेव पुरीए, निद्धमणाऽऽसन्नजक्खभवणम्मि । अच्चंतं किव्विसिओ, जक्खो होऊण उप्पन्नो ॥६७॥
मुणिऊण विभंगेणं, पुव्वभवं तो विचिंतिउं लग्गो । हा हा पावेण मए, पमायमयमत्तचित्तेण ॥६८॥
पत्तं पि विचित्ताऽइसय-रयणपडिपुन्नजिणमयनिहाणं । तक्कहियपवित्तिपरं-मुहेण विहलत्तमुवणीयं ॥६९॥
माणुस्सखेत्तजाई-पमोक्खसद्धम्महेउसामग्गिं । चरणं पमायभट्ठं, एत्तो कत्तो लहिस्सामि ॥७०॥
हा जीव! पाव! तइया, इड्ढीरसगारवाण विरसत्तं । सत्थऽत्थजाणगेण वि, न लक्खियं किं तए आसि॥७१॥
मायंगनिव्विसेसं, किव्विसियसुरत्तणं इमं पत्तो । जाओऽम्हि चिरमऽजोग्गो, विरइपहाणस्स धम्मस्स ॥७२॥
धी धी सत्थत्थपरि-स्समो ममं धी मईए सुहुमत्तं । धी धी परोवएस-प्पयाणपंडिच्चमच्चंतं ॥७३॥
धी भावविंयलकिरिया-कलावमणुदिणमणुट्ठियं तं पि । वेसानेवत्थं पिव, परचित्तपसायणामेत्तं ॥७४॥
इय एवं नियदुच्चरिय-मणुखणं परमजायवेरग्गो । निंदंतो दिवसाइं, गमेइ [2]गोत्तीनिहित्तो व्व ॥७५॥
अह तेण पएसेणं, उच्चारमहिं पडुच्च वच्चंते । दट्ठूण नियसिस्से, मुणिणो पडिबोहणऽट्ठाए ॥७६॥
जक्खपडिमामुहाउ, दीहं निस्सारिउं ठिओ जीहं । तं च मुणिणो पलोइय, पइदियहं भणिउमाढत्ता ॥७७॥
जो कोई एत्थ देवो, जक्खो रक्खो व किन्नरो वाऽवि । सो जंपउ पयडं च्चिय, न किंपि एवं वयं मुणिमो॥७८॥

1. भ्रान्तः । 2. गोत्ती = कारागृहम् ।

तो सविसायं जक्खेण, जंपियं भो तवस्सिणो सोऽहं । तुम्हाण गुरू किरियाए, मंगुलो अज्जमंगु त्ति ॥७९॥
तेहिं वुत्तं हा सुयनिहाण!, सिक्खादुगम्मि वि सुदक्ख! । कह हीणजक्खजोणिं, गतोऽसि चोज्जं महंतमिमं ॥८०॥
तेणं भणियं नो किं पि, चोज्जमिह साहुणो महाभागा! । एस च्चिय होइ गई, सिढिलियसद्धम्मकम्माण ॥८१॥
सावयपडिबद्धाणं, इड्ढिरससायगारवगुरूणं । सीयविहारीणं मारि-साण जिब्भिंदियजियाण ॥८२॥
इय मह कुदेवजोणिं, जाणित्ता साहुणो महासत्ता! । जइ सुगईए कज्जं, ता दुलहं संजमं लद्धुं ॥८३॥
परिहरिंपमाया, निज्जियाऽणंगजोहा । चरणकरणरत्ता, नाणवंताण भत्ता
परिच्चइयममत्ता, मोक्खमग्गे पसत्ता । विहरह लहुभूया, भूयरक्खं कुणंता卐 ॥८४॥
भो भो देवाणुप्पिय!, संमं संबोहिया तए अम्हे । इइ जंपिऊण मुणिणो, पडिवन्ना संजमुज्जोयं ॥८५॥
इय पुन्ना वि हु वंछिय- [1]सोगतिफलसाहिगा गहणसिक्खा । आसेवणसिक्खाए, रहिया नो जायइ कहं पि ॥८६॥
आसेवणसिक्खा वि हु, असहाय च्चिय गुणाय नो भणिया । अंगारमद्दगस्स व, सम्मं सन्नाणसुन्नस्स ॥८७॥
तथाहि— "अङ्गारमर्दकस्य दृष्टान्तः" —
अत्थि पुरं गज्जणयं, सुसाहुगणपरियुडो विजयसेणो । सूरी सद्धम्मपरो, तत्थ ठिओ मासकप्पेण ॥८८॥
पच्छिमरयणीसमए, सीसेहिं तस्स सुमिणओ दिट्ठो । पंचसयकलहकलिओ, कोलो वसहीए किल पत्तो ॥८९॥
विम्हियमणेहिं तेहिं, सुमिणऽत्थं पुच्छिया य तो सूरी । तेहिं कहियं एही, गुरुकोलो साहुगयसहिओ ॥९०॥
अह उग्गयम्मि सूरे, सोमग्गहसंगओ रविसुओ व्व । कप्पतरुसंडमंडल-सहिओ एरंडरुक्खो व्व ॥९१॥
पंचसयसुमुणिजुत्तो, आयरिओ रुद्ददेवनामोत्ति । पत्तो साहुहिं कया, उचिया से सव्वपडिवत्ती ॥९२॥
अह वत्थव्वा मुणिणो, परिक्खणऽट्ठा निसिम्मि कोलस्स । गुरुवयणेणं खिविउं, काइयभूमिम्मि अंगारे ॥९३॥
पच्छन्नपएसगया, पलोयमाणा य जाव चिट्ठंति । पाहुणगसाहुणो ताव, पट्ठिया काइयमहीए ॥९४॥
अंगारक्कमणुप्पन्न-किसिकिसाऽऽरावसवणओ चेव । मिच्छा मि दुक्कडं हा, किमेयमेवं ति जंपंता ॥९५॥
अंगारकिसकिसारव-ठाणम्मि विरइऊण चिंधाइं । गोसे पेहिस्सामो, होज्ज किमेयं ति बुद्धीए ॥९६॥
विणियत्तंति जवेणं, तेसिं गुरू पुण तदारवे तुट्ठो । एए वि जिणेहिं अहो, जीवा कहिय त्ति भासंतो ॥९७॥
[2]खरयरं अंगारे, मद्दंतो काइयामहिम्म गओ । एसो य वइयरो तेहिं, संसिओ निययसूरिस्स ॥९८॥
तेणाऽवि जंपियं भो, तवस्सिणो एस सो गुरू कोलो । एए वि महामुणिणो, सिस्सा एयस्स गयकलहा ॥९९॥
तो पत्थावे पाहुणग-साहुणो विजयसेणसूरिहिं । जहदिट्ठहेउजुत्तीहिं, बोहिऊणं इमं भणिया ॥१५००॥
भो भो महाणुभावा! तुम्ह गुरू एस निच्छियमऽभव्वो । जइ मोक्खकंखिणो ता, चएह एयं लहुं चेव ॥१॥
जम्हा गुरुणो वि हु उप्पहम्मि, लग्गस्स मूढबुद्धिस्स । चागो विहिणा जुत्तो, इहरा दोसप्पसंगाओ ॥२॥
एवं सोच्चा तेहिं, उवायओ उज्झिओ इमो झत्ति । कयउग्गतवविसेसेहिं, पाविया देवलच्छी वि ॥३॥
अंगारमद्दगो पुण, सन्नाणवियज्जियत्तणेण चिरं । कट्ठाणुट्ठाणपरो वि, दुक्खभागी भवे जाओ ॥४॥
इय भो देवाणुपिया!, गहणाऽऽसेवणसरूवसिक्खासु । दोसु वि जएज्ज सम्मं, तुममाराहणमभिलसंतो ॥५॥
"ग्रहण-आसेवन शिक्षाभेदाः" —
एवं तदुभयसिक्खा, भणिया वि पुणो हवेज्ज दुवियप्पा । सामन्नविहिसरूवा, सविसेसविहीसरूवा य ॥६॥
एक्केक्का वि य दुविहा-जइगिहिविसयत्तणेण नायव्वा । ताव गिहत्थाणमऽहं, भणामि सामन्नविहिसिक्खं ॥७॥
"साधु-गृहस्थाभ्यां सामान्य-आचारधर्मः" —
ववहारसुद्धी जणणिंदणिज्ज-वावारचागनिप्फन्ना । कालुस्सवियलसद्धम्म-कम्मपरिवालणसरूवा ॥८॥
संखाण व धवलपहा गभीरया, विव महासमुद्दाणं । चंदाण सिसिरजोण्ह व्व, नयणसोह व्व हरिणीणं ॥९॥
उच्छूण महुरया विय, सुस्सावयकुलपसूइसब्भावे । जइ वि हु सिद्धा सा तेसिं, तह वि एवं समवसेया ॥१०॥
नाणवयवुड्ढसेवा, सत्थऽब्भासो परोवयारित्तं । सच्चरियजणपसंसा, दक्खिन्नपरायणत्तं च ॥११॥
उत्तमगुणाणुरागो, अणूसुगत्तं अखुद्दभावो य । परलोयभीरुयत्तं, सव्वत्थ अणक्खपरिहारो ॥१२॥

1. सदगति० 2. खरकतरम् = गाढम् इत्यर्थः 卐 निर्णय सागर से प्रकाशित में ये दो गाथाएँ की हुई है।

गुरुदेवाऽतिथिपूयण-मपक्खवाएण नायदरिसित्तं । असदऽग्गहवज्जणया, सपणयपुव्वाऽभिभासित्तं ॥१३॥
वसणम्मि सुधीरत्तं, संपत्तीए [1]अणुत्तुणत्तं च । सगुणपसंसालज्जण-मऽत्तुक्करिसस्स परिहारो ॥१४॥
नयविक्कसमालित्तं, लज्जालुत्तं सुदीहदरिसित्तं । उत्तमकमवत्तित्तं, पडिवन्नभरेक्कधवलत्तं ॥१५॥
उचियठिइपरिवालण-मऽदुराराहत्तणं जणपियत्तं । परपीडापरिहारो, थिरयासंतोससारत्तं ॥१६॥
अणवरयगुणऽब्भासो, परत्थसंपाडणेक्करसियत्तं । पयइए विणीयत्तं, हिओवएसोवजीवित्तं ॥१७॥
गुरुजणरायाऽऽईणं, अवन्नवायाऽऽइकारिपरिहरणं । इहपरलोयाऽपायाऽऽइ-चिन्तणं चेव अइनिउणं ॥१८॥
एमाइगुणगणो सावगेहिं, इह परभवे य हियहेऊ । अप्पाणयम्मि निच्चं, निवेसियव्वो पयत्तेण ॥१९॥
इय गुणजोगाराऽऽहिय-सामन्नविही गिही अ जत्तेण । साहेइ विसेसविहिं पि, नूण तदऽवंझहेउत्ता ॥२०॥
सामन्नगुणाऽसत्तो, किमऽलं धरिउं नरो विसेसगुणे । न हु सरिसवं पि वोढुं, असमत्थो मंदरं धरिही ॥२१॥
लोगट्ठिइपगिट्ठो, एवं चिय भूमिगाऽणुसारेण । सामन्नविहीसिक्खं, सुस्समणो वि हु अणुसरेज्ज ॥२२॥
अह पुव्वसूइयं चिय, संखेवेणं विसेसविहिसिक्खं । सुस्सावगसाहुगयं, भणामि दुविहं पि सुविभत्तं ॥२३॥

"गृहस्थस्य विशेषाराधना" —

तत्थ य सामन्नविहि-प्पवित्तिअब्भहियजोग्गयगयस्स । गिहिणो विसेससिक्खा, पढमं चिय वुच्चए ताव ॥२४॥
सम्ममवगयस्स जिणमय-मऽणुदिणवड्ढन्तसुद्धपरिणामो । परिणाममंगुलं जाणि-ऊण घरवासवासंगं ॥२५॥
पडुपवणंऽदोलियकयलि-पत्तपडिबद्धतोयबिंदुं व । सुविणिच्छिऊणं भंगुर-माऽऽउं तारुन्नमऽत्थं च ॥२६॥
पयइविणीओ पयईए, भद्दओ पयइपरमसंविग्गो । पयईउदारचित्तो, पयइजहुक्खित्तभरधवलो ॥२७॥
निच्चं चिय साहम्मिय-वच्छल्ले जुन्नचेइउद्धारे । परपरिवायच्चाए, जएज्ज सुस्सावगो मइमं ॥२८॥
निद्दाविरमम्मि तहा, सम्मं कयपंचमंगलविहाणो । अणुसरणपुव्वयं उट्ठि-ऊण उचियं च काऊण ॥२९॥
संखेवेणं पि हु वीय-रायपडिमाउ वंदिउं सगिहे । गच्छेज्ज साहुवसहिं, करेज्ज आवस्सयाइ तहिं ॥३०॥
एवं हि कीरमाणे, जिणाणमाऽऽणा कया हवइ सम्मं । गुरुपरतंतत्तं सुत्त-अत्थसविसेसनाणं च ॥३१॥
जहठियसामायारी-कुसलत्तमऽसुद्धबुद्धिविगमो य । गुरुसक्खिओ य धम्मो, संपुण्णविही य होइ कया ॥३२॥
साहूण असइ वसही-संकिन्नत्ताइकारणेहिं वा । गुरुणा समणुन्नाओ, पोसहसालाईसु वि कुज्जा ॥३३॥
सज्झायं काऊणं, खणं अपुव्वं पढेज्ज सुत्तं पि । तत्तो य विणिक्खमिउं, होऊण य दव्वभावसुई ॥३४॥
पढमं नियगेहे च्चिय, निच्चं चिइवंदणं समयविहिणा । विभवाऽणुसारिपूया, पुव्वमऽणुट्ठेज्ज गोसम्मि ॥३५॥
तयणंतरं तु जइ ता, तहाविहं तस्स नऽत्थि गिहकिच्चं । ता तव्वेलं चिय कय-सरीरसुद्धी सुनेवत्थो ॥३६॥
पुप्फाइपवरपूयंग-वग्गहत्थेण परियणेण समं । वच्चेज्ज जिणिंदगिहे, पंचविहाभिगमपुव्वं च ॥३७॥
तत्थ पविसित्तु विहिणा, उदारपूयापुरस्सरं सम्मं । चिइवंदणं करेज्जा, पणिहाणंऽतं सुसंविग्गो ॥३८॥
अह कारणेण केणऽवि, जिणवरभवणम्मि अहव नियगेहे । पोसहसालाए वा, हवेज्ज सामाइयाऽऽइ कयं ॥३९॥
तो साहुसमीवम्मि, गंतुं किइकम्मपुव्वगं सम्मं । कुज्जा पच्चक्खाणं, खणं च जिणवयणसवणं च ॥४०॥
भत्तीए तहा काउं, बालगिलाणाइगोयरं पुच्छं । तक्किच्चं च समग्गं, संपाडेज्जा जहाजोग्गं ॥४१॥
अणइक्कमणेण कुलक्कमस्स, लोगाऽववायविरहेण । तत्तो वित्तिनिमित्तं, ववहारमऽणिंदियं कुज्जा ॥४२॥
भोयणकाले य गिहं, आगम्म चउव्विहाए पूयाए । [2]पुप्फाऽऽमिसवत्थेहिं, थोत्तेहिं य भावसारेहिं ॥४३॥
संपूइऊण विहिणा, जिणबिंबं तयणु साहुमूलम्मि । गंतूण भणइ एवं, अणुग्गहं कुणह मे भंते! ॥४४॥
असणाऽऽईदव्वाणं, गहणेण भवाऽवडे निवडियस्स । जयजीववच्छलेहिं, दिज्जउ हत्थावलंबो मे ॥४५॥
संपट्ठियसंघाडग-पट्ठिठिओ जाइ जाव नियदारं । एत्थंतरमऽन्ने वि हु, गिहट्ठिया अभिमुहा इंति ॥४६॥
वंदंति य तो सड्ढो वि, जायसड्ढो पमज्जिउं पाए । दाऊण आसणं कुणइ, संविभागं जहाविहिणा ॥४७॥
वंदणपुव्वं अणुगच्छिऊण, तत्तो गिहे समागम्म । भुंजाविय जणयाई, चिंतिय गोणाइ [3]पेसाई ॥४८॥
देसंऽतराऽऽगयाणं, चिंतं काऊण सावगाणं पि । पडियग्गिउं गिलाणे, ताहे उचियप्पएसम्मि ॥४९॥

1. अनुत्तानत्वं = गर्वरहितत्वम् इत्यर्थः । 2. पुष्पनैवेद्यवस्त्रैः (यहां पर भी प्रथम पुष्प पूजा का विधान दर्शाया है)। 3. प्रेष्यादीन्।

उचियाऽऽसणोयविट्ठो, पच्चक्खाणं च सरिय जहगहियं । कयपंचनमोक्कारो, सुसावगो तयणु भुंजेज्जा ॥५०॥
भोत्तूण तओ विहिणा, पुरओ घरचेइयाण ठाऊण । तव्वंदणं करित्ता, पच्चक्खइ दिवसचरिमाऽऽइं ॥५१॥
खणमेत्तं सज्झायं, अपुव्वपढणं च किंचि काऊणं । पुणरवि वित्तिनिमित्तं, ववहारमऽणिंदियं कुज्जा ॥५२॥
संझासमयम्मि पुणो, पूयं काऊण जिणवरिंदाणं । सारथुइथोत्तपुव्वं, सगिहम्मि वि वंदणं कुज्जा ॥५३॥
तो जिणभवणे गंतुं, वंदेज्जा पूइऊण जिणबिंबे । सामाइयपडिक्कमणाऽऽइ, गोसभणियं पिव करेज्जा ॥५४॥
साहुसमीवे अकए य, तम्मि गच्छेज्ज साहुवसहीए । वंदणमालोयणयं, खामणयं पि य तहिं काउं ॥५५॥
गिण्हइ पच्चक्खाणं, खणमिह सवणं च धम्मसत्थस्स । विस्सामणाऽऽइं विहिणा, भत्तीए करेज्ज साहूणं ॥५६॥
संदिद्वपए पुच्छिय, सावगवग्गस्स काउमुचियं च । गिहगमणं विहिसुयणं, विहेज्ज गुरुदेवसरणं च ॥५७॥
उक्कोसबंभयारी, परिमाणकडो व होज्ज नियमेण । कंदप्पाइविउत्तो, पइरिक्कम्मि य तुयट्टेज्जा ॥५८॥
उद्दाममोहवसओ, पयट्टिउं कहवि अहमकिच्चम्मि । उवसन्तमोहवेगो, चिन्तेज्जा भावसारमिमं ॥५९॥
मोहो दुहाण मूलं, मूलं च विवज्जयस्स सव्वस्स । एयस्स वसं पत्ता, सत्ता मन्नंति हियमऽहियं ॥६०॥
जस्स वसेणं पि य कामिणीण, वयणाऽऽइयं असारं पि । [1]चंदाईहुवमिज्जइ, थिरत्थु ही तस्स मोहस्स ॥६१॥
इत्थीकडेवराणं, [2]सतत्त-चिन्तं तओ तहा कुज्जा । जह मोहाऽरिजयाउ, संवेगरसो समुच्छलइ ॥६२॥
तहाहि—
जं ताव कामिणीणं, मणोहरं हरिणलंच्छणच्छायं । वयणं तं पि हु मलगलिर-[3]विवरसत्तयसमाउत्तं ॥६३॥
विच्छिन्नथोरथणया, मंसचया पोट्टमऽसुइमंजूसा । मंसट्ठिनसाविरयण-मेत्तं सेसं पि हु सरीरं ॥६४॥
जं पि य पयईए च्चिय, दुग्गंथिमलाऽऽविलं विलीणं च । पयइअहोगतिदारं, बीभच्छं कुच्छणिज्जं च ॥६५॥
अइलज्जणीयमंगुल-रूवं ति [4]ठइज्जइ य किर रमणं । तम्मि वि रमेज्ज जो नणु, स केण अव्वो विरज्जेज्ज ॥६६॥
एवं गुणाण सीमंतिणीण, रमणम्मि जे विरत्तमणा । जम्मजरामरणाणं, दिन्नो हु जलंऽजली तेहिं ॥६७॥
इय जेण जेण बाहा, हवेज्ज तं तस्स तस्स पडिवक्खं । पुव्वाऽवरनिसिसमए, सम्मं भावेज्ज किं बहुणा ॥६८॥
तित्थयरप्पडिवत्तिं, पंचविहाऽऽयारसारगुरुभत्तिं । सुविहियजइजणसेवं, सम-समहियगुणसमावासं ॥६९॥
अप्पुव्वगुणसमज्जण-मऽप्पुव्वापुव्वतरसुयऽब्भासं । अप्पुव्वत्थाऽहिगमं, अपुव्वाऽपुव्वसिक्खगहं ॥७०॥
सम्मत्तगुणविसुद्धिं, जहगहियवएसु निरइयारत्तं । अंगीकयधम्मगुणा-विरोहिगिहकज्जकारित्तं ॥७१॥
धम्मे च्चिय धणबुद्धिं, समधम्मिसु चेव गाढपडिबंधं । आगमविहिविहियाऽतिहि-प्पयाणपरिसेसभोइत्तं ॥७२॥
इहलोयसिढिलभावं, परलोयाराहणेक्करसियत्तं । चरणगुणलंपडत्तं[5], जणवायाऽभिगमभीरुत्तं ॥७३॥
संसारमोक्खपरमत्थ-दोसगुणभावणाणुसारेण । पइवेलं चिय सम्मं, परमं संवेगरसगमणं ॥७४॥
सव्वत्थ विहिपरत्तं, जिणसासणपरमसमरसाऽऽपत्तिं । संवेगसारसमइय-सज्झायज्झाणरसियत्तं ॥७५॥
एमाइ उत्तरोत्तर-गुणगणमऽवियन्हमाणसो धीमं । आराहेंतो सम्मं, गमेज्ज कालं कुलपसूओ ॥७६॥
एवं च गुरुं पि गिरिं, आरुहइ पयंपएण जह कोई । आराहणागिरिं तह, सम्मं धीरो समारुहिही ॥७७॥
एवं धम्मऽत्थिगिहत्थ-गोयरा इह विसेसविहिसिक्खा । वुत्ता एत्तो वुच्चइ, मुणिविसया सा समासेण ॥७८॥

"साधु विशेषाराधना" —

नवरं समयविऊहिं, सा च्चिय भणिया विसेसविहिसिक्खा । जा किर पइदिणकिरिया, जईण पुण सा इमा नेया ॥७९॥
पडिलेहणापमज्जण-भिक्खिरियालोयभुंजणा चेव । पत्तगधुवणवियारा, थंडिलमाऽऽवस्सयाऽऽइया ॥८०॥
जा वि य इच्छामिच्छ-प्पमुहा उवसंपयाऽवसाणाओ । सुविहियजणपाउग्गा, सामायारी दसपयारा ॥८१॥
पढउ सयं पाढेउ य, परे वि तत्तं पि चिंतउ पयत्ता । जइ नत्थि विसेसविहिम्मि, आयरो ता मुणी वसणी ॥८२॥
इय गुणदोसपरिक्खं, काउं अवगम्म तह गहणसिक्खं । समणुसरेज्ज अभिक्खं, सम्मं आसेवणासिक्खं ॥८३॥
एवं च सप्पभेओ-भयसिक्खजुओ हवेज्ज धम्मऽत्थी । सव्वो वि सव्वया वि, किं पुण आराहणाचित्तो ॥८४॥
आराहणा वि न जओ, पायं तह सम्ममरिहइ होउं । एमेव अत्थिणो वि हु, पुव्वमऽणब्भत्थजोगस्स ॥८५॥

1. चन्द्रादिभिः उपमीयते । 2. स्वतत्त्वचिन्ताम् = स्वरूपचिन्तनम् । 3. विवरसप्तकं० । 4. स्थग्यते = आच्छाद्यते । 5. लंपडत्तं = लम्पटत्वं

तम्हा तदऽत्थिणा सव्वहा वि, एयासु भणियसिक्खासु । जइयव्वं जत्तेणं, एत्तो य कयं पसंगेण ॥८६॥
इय धम्मुवएसमणो-हराए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥८७॥
आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । तइयं सिक्खादारं, समत्तमेयं सभेयं पि ॥८८॥
आराहगो न पुव्वुत्त-सिक्खदक्खो वि विणयविरहेण । होइ कयत्थो जत्तो, एत्तो वुच्चइ विणयदारं ॥८९॥

"चतुर्थ विनयद्धारवर्णनम्" —

विणओ य पंचरूवो, परूवियो नाणदरिसणचरित्ते । तवविणओ य चउत्थो, चरिमो उवयारिओ विणओ ॥९०॥
'काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहा अनिन्हवणे । वंजण-अत्थ-तदुभए, विणओ नाणस्स अट्ठविहो' ॥९१॥
'निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य । उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ' ॥९२॥
पणिहाणपहाणस्स उ, गुत्तीओ तिन्नि पंच समिईओ । आसज्ज उज्जमंतस्स होइ विणओ चरित्तस्स ॥९३॥
भत्ती तवम्मि तह तवरएसु सेसेसु हीलणच्चाओ । जहविरिअमुज्जमो वि अ, तवविणओ एस नायव्वो ॥९४॥
काइयवाइयमाणस्सिओ अ, तिविहोवयारिओ विणओ । सो पुण सव्वो वि दुहा, पच्चक्खो तह परोक्खो अ॥९५॥
तत्थ य गुणवंताणं दंसमणमेत्ते वि आसणच्चाओ । सत्तट्ठपओसप्पणम-ऽभिमुहमिन्ताण सप्पणयं ॥९६॥
अंजलिकरणं पाय-प्पमज्जणं आसणोवणयणं च । आसीणेसु य तेसु, सयमुवविसणं उचियठाणे ॥९७॥
इच्चाइ काइओ वाइ-ओ य नाणाहिए पडुच्च भवे । कित्तंतस्स गुणगणं, गउरवसारेहिं वयणेहिं ॥९८॥
अकुसलमणनिरोहो, कुसलस्स उदीरणं च ते चेवं । आसज्ज जं किर भवे, एसो माणस्सिओ विणओ ॥९९॥
आसणदाणाईओ पच्चक्खो, एस चेव गुरुविरहे । तक्कहियविहिपहाण-प्पवित्तिओ हवइ य परोक्खो ॥१६००॥
इय भूरिभेयभिन्नं, विणयं निउणं वियाणिउं धीरो । आराहणाऽभिलासी सम्मं कुज्जा तयं जम्हा ॥१॥
जो परिभवइ अविणया, धम्मगुरुं जत्थ सिक्खए विज्जं । सा सुगहिया वि विज्जा, दुक्खेणं तस्स देइ फलं ॥२॥
किंच—
सव्वत्थ लभेज्ज नरो, वीसंभं पच्चयं च बुद्धिं च । जइ गुरुजणोवइट्ठं, विणयं भावेण गिण्हेज्जा ॥३॥
पव्वइयस्स गिहिस्स य, विणयं चेव कुसला पसंसंति । न हु पावइ अविणीओ, कित्तिं च जसं च लोयम्मि ॥४॥
जाणंता वि य विणयं, केई कम्माऽणुभावदोसेण । नेच्छंति पउंजेउं, अभिभूया रागदोसेहिं ॥५॥
विणओ सिरीण मूलं, विणओ मूलं समत्थसोक्खाणं । विणओ हु धम्ममूलं, विणओ कल्लाणमूलं ति ॥६॥
विणएण विहीणस्स, उ, सव्वं पि, निरत्थयं अणुट्ठाणं । तं चेव विणयसारं, सयलं सहलत्तणमुवेइ ॥७॥
तह विणयविहीणम्मि सिक्खा वि निरत्थिया भवे सव्वा । विणओ सिक्खाए फलं, विणयफलं सव्वपाहन्नं ॥८॥
दोसा वि गुणा विणयाउ, होंति दोसा गुणा वि अविणीए । सज्जणजणमणरंजण-जणणी मेत्ती वि विणयाओ ॥९॥
विणयपरम्मि गुरुत्तं, सम्मं दंसंति जणणिजणया वि । विणयविहीणे पुण ते वि, अहह! सत्तुं विसेसेंति ॥१०॥
विणयोवयारकरणा, अदिस्सरूवा वि दिंति दरिसावं । [1]अविणयजणियाऽणक्खा, फिडंति पासट्ठिया वि लहुं ॥११॥
पत्थरखरहियया [2]दुक्कुहावि विणयाउ पल्हयंति लहुं । नियवच्छदंसणेण य, पसूयसुरहि व्व निब्भंतं ॥१२॥
विणयाओ विस्सासो, विणयाउ सयलअत्थसिद्धीओ । विणयाओ च्चिय फलदाइ-णीओ सव्वाओ विज्जाओ ॥१३॥
अविणीयस्स पणस्सइ जइ न पणस्सइ न जुज्जइ गुणेहिं । विज्जा सुसिक्खियावि हु, गुरुपरिभवबुद्धिदोसेणं ॥१४॥
अविणीयस्स उ विज्जं, गुरु वि दिंतो लहेज्ज वयणिज्जं । हारेज्ज सकज्जं पि हु, पावेज्ज ततो विणासं पि ॥१५॥
किंच—
विज्जा वि होइ बलिया गहिया पुरिसेण विणयवंतेण । सुकुलपसूया कुलबा-लिय व्व पवरं पइं पत्ता ॥१६॥
संकमइ दुव्विणीए, गुरुपरिभवकारए य नो विज्जा । सेणियनिवे व्व तत्थेव, संकमेज्जा उ विवरीए ॥१७॥
तहाहि— "श्री श्रेणिकनृपदृष्टान्तः"
रायगिहम्मि नगरे, राया नामेण सेणिओ आसि । [3]संमत्तथिरत्तपहि व्व, सक्कविप्फारियपसंसो ॥१८॥

1. अविनयजनितरोषाः । 2. दुष्कुहा = अरुचयः । 3. सम्यक्त्वस्थिरत्वप्रधीः ।

सयलंतेउरपवरा!, देवी नामेण चेल्लणा तस्स । चउव्विहबुद्धिसमिद्धो, मंती पुत्तो य अभओ त्ति ॥१९॥
एगम्मि य पत्थावे, देवीए पत्थिवो इमं भणिओ । पासायमेगखंभं, मम जोग्गं कारवेसु त्ति ॥२०॥
दुन्निग्गहेण इत्थी-गहेण, संताविएग नरवइणा । पडिवन्नं तव्वयणं, अभयकुमारो य आइट्ठो ॥२१॥
तो वड्ढइणा समगं थंभनिमित्तं महाडवीए गओ । दिट्ठो तहिं च रुक्खो!, सुसिणिद्धो अइमहासाहो ॥२२॥
[1]अहिट्ठिओ सुरेणं, होहि त्ति [2]विचित्तकुसुमधूवेहिं । अहिवासिओ स साही, कओववासेण अभयेण ॥२३॥
अह बुद्धिरंजिएणं, तरुवासिसुरेण निसिपसुत्तस्स । सिट्ठं अभयस्स महाणु-भाव! मा छिंदिहिसि एयं ॥२४॥
वच्चसु तुमं पि सगिहं, काहमहमेगखंभपासायं । सव्वोउयतरुफलफुल्ल-मणहराऽऽरामपरिकलियं ॥२५॥
इय पडिसिद्धो अभओ, वड्ढइणा सह गओ सगेहम्मि । देवेण वि निम्मविओ, आरामसमेयपासाओ ॥२६॥
तम्मि य देवीए समं, विचित्तकीलाहिं कीलमाणस्स । रइसागरावगाढस्स, राइणो जंति दियहाइं ॥२७॥
अह तन्नयरनिवासिस्स, पाणवइणो कयाइ गब्भवसा । भज्जाए समुप्पन्नो, दोहलओ अंबगफलेसु ॥२८॥
तो तम्मि अपुज्जंते, पइदियहं खिज्जमाणसव्वंगिं । तं दट्ठूणं पुट्ठं, तेण पिए! कारणं किमिह? ॥२९॥
परिपक्कंऽबयफलदोहलो य, तीए निवेइओ ताहे। पाणाऽहिवेण भणियं, चूयफलाणं अकालोऽयं ॥३०॥
जइ वि हु तहावि कत्तो वि, सुयणु! संपाडिमो थिरा होसु । निसुओ य तेण रन्नो, सव्वोउयफलदुमारामो ॥३१॥
तं चाऽऽरामं बाहिट्ठिएण, पेहंतएण पक्कफलो । दिट्ठो अंबयसाही ताहे जायाए रयणीए ॥३२॥
ओणामणीए विज्जाए, साहमोणामिऊण गहियाइं । अम्बयफलाइं पुणरवि पच्चोणामणिसुविज्जाए ॥३३॥
साहं विसज्जिऊणं, समप्पियाइं पियाए हिट्ठेण । पडिपुन्नदोहला सा, गब्भं वोढुं समाढत्ता ॥३४॥
अह अवरावरतरुवर-पलोयणं राइणा कुणंतेण । पुव्वदिणदिट्ठफलपडल-वियलमवलोइउं चूयं ॥३५॥
भणिया रक्खगपुरिसा रे! केणेसो विलुत्तफलभारो । विहिओ त्ति तेहिं वुत्तं, देव! न तावेत्थ परपुरिसो ॥३६॥
नूणं पविट्ठो न य नीहरंत-पविसंतयस्स वि पयाणि । कस्स वि दीसंति मही-यलम्मि ता देव! चोज्जमिणं ॥३७॥
जस्साऽमाणुससामत्थ-मेरिसं तस्स किंपिऽकरणिज्जं । नत्थि त्ति य चिंतंतेण, राइणा सिट्ठमऽभयस्स ॥३८॥
एवंविहऽत्थकरण-क्खमं लहुं लहसु पुत्त! चोरं ति । जह हरियाइं फलाइं, तहऽन्नया दारमऽवि हरिही ॥३९॥
भूमियलनिलीणसिरो, महापसाओ त्ति जंपिउं अभओ । तियचच्चरेसु चोरं निरुविउं बाढमाऽऽढत्तो ॥४०॥
वोलीणाइं कइवयदिणाइं पत्ता न तप्पउत्ती वि । चिंतावाउलचित्तो, ताहे अभओ दढं जाओ ॥४१॥
पारद्धमऽन्नदियहे नडेण नयरीए बाहि पेच्छणयं । मिलिओ पउरनरगणो अभएण वि तत्थ गंतूणं ॥४२॥
मायोवलक्खणट्ठा, पयंपियं भो जणा! निसामेह । जाव नडो नागच्छइ, ताव ममऽक्खाणयं एक्कं ॥४३॥
तेहिं पयंपियं नाह!, कहह तो कहिउमेवमाऽऽरद्धो । नयरम्मि वसंतपुरे, आसि सुया जुन्नसेट्ठिस्स ॥४४॥
दारिद्दविद्दुयत्तेण, नेव परिणाविया य सा पिउणा । वड्ढकुमारी जाया, वरऽत्थिणी पूयए मयणं ॥४५॥
आरामाउ सा चोरियाए, कुसुमोच्चयं करेमाणी । पत्ता मालागारेण, जंपियं किंपि सवियारं ॥४६॥
तीए वुत्तो किं तुज्झ, भइणिधूयाओ मह सरिच्छाओ । नेवऽत्थि जं कुमारिं पि, मं तुमं एवमुल्लवसि ॥४७॥
संलत्तं तेण तुमं, उव्वूढा भत्तुणा अभुत्ता य । एसि समीवे जइ मे, मुंचामि अन्नहा नेव ॥४८॥
एवं ति पडिसुणित्ता, गया गिहं सा कयाइ तुट्ठेण । मयणेणं से दिन्नो, मंतिस्स सुओ वरो पवरो ॥४९॥
सुपसत्थे हत्थग्गह-जोगे लग्गम्मि तेण उव्वूढा । एत्थंतरम्मि अत्थगिरि- मुवगयं भाणुणो बिम्बं ॥५०॥
कज्जलभसलच्छाया वियंभिया दिसिसु तिमिररिंछोली । हयकुमुयसंडजड्डं समुग्गयं मण्डलं ससिणो ॥५१॥
अह सा विचित्तमणिमय-भूसणसोहंतकन्तसव्वंगा । वासभवणम्मि पत्ता, भत्ता, एवं च विन्नत्तो ॥५२॥
तव्वेलुव्वूढाए, आगंतव्वं ति मालियस्स मए । पडिवन्नमाऽऽसि पिययम!, ता जामि तहिं विसज्जेसु ॥५३॥
सच्चपइन्ना एस त्ति, मन्नमाणेण तेणऽणुन्नाया । वच्चन्ती परिहियपवर-भूसणा सा पुराउ बहिं ॥५४॥
दिट्ठा चोरेहिं तओ, महानिही सो इमो त्ति भणिरेहिं । गहिया नवरं तीए, णिवेइओ निययसब्भावो ॥५५॥

1. अधिष्ठितः । 2. विविध० ।

चोरेहिं जंपियं सुयणु!, जाहि सिग्घं परं वलेज्जासि । मुसिऊणं जेण तुमं, जहाऽऽगयं पडिनियत्तामो ॥५६॥
एयं काहं ति पयंपिऊण संपट्ठिया अहऽद्धपहे । तरलतरतारयाऽऽउल-समुच्छलंतऽच्छियच्छोहो ॥५७॥
रणरणिरदीहदंतो, दूरपसारियरउद्दमुहकुहरो । चिरछुहिएणं लद्धाऽसि, एहि एहि त्ति जंपन्तो ॥५८॥
अच्चन्तभीसणंऽगो, समुट्ठिओ रक्खसो सुदुप्पेक्खो । तेणाऽवि करे धरिया कहिओ तीए य सब्भावो ॥५९॥
पामुक्का आरामे गंतूणं बोहिओ सुहपसुत्तो । मालागारो भणिओ य, सुयणु! साऽहं इहं पत्ता ॥६०॥
एयंविहरयणीए, साऽऽभूसणा कह समागया तं सि । इय तेणं सा पुट्ठा सिट्ठं तीए य जहवित्तं ॥६१॥
अव्वो! सच्चपइन्ना, [1]महासईम त्ति भावमाणेण । चलणेसु निवडिऊणं, मालागारेण तो मुक्का ॥६२॥
पत्ता रक्खसपासे, सिट्ठो से मालियस्स वुत्तन्तो । अव्वो! महप्पभावा, एसा जा उज्झिया तेण ॥६३॥
इति भावेंतेण निवडिऊण, पाएसु तेण वि विमुक्का । चोरसमीवे य गया, सिट्ठो तह पुव्ववुत्तन्तो ॥६४॥
तेहि वि अणप्पमाहप्प-दंसणुप्पन्नपक्खवाएहिं । सालंकार च्चिय वंदि-ऊण सगिहम्मि पट्ठविया ॥६५॥
अह आभरणसमेया अक्खयदेहा अभग्गसीला य । पत्ता पइस्स पासे, कहियं सव्वं जहावित्तं ॥६६॥
परितुट्ठमणेण समं, तेण पसुत्ता समत्थरयणिं पि । जाए पभायसमए, चिंतियमिय मंतिपुत्तेण ॥६७॥
छंदट्ठियं सुरूवं, समसुहदुक्खं अनिग्गयरहस्सं । धन्ना सुत्तविउद्धा, मित्तं महिलं च पेच्छंति ॥६८॥
इति भावेंतेण कया, घरस्स सा सामिणी समग्गस्स । किं व न कीरइ निक्कवड-पेमपडिबद्धहिययम्मि ॥६९॥
इय पइतक्कररक्खस-मालागाराण मज्झओ केण । तच्चागेण कयं दुक्क-रं ति भो! मज्झ साहेह ॥७०॥
ईसालुएहिं भणियं, सामी! पइणा सुदुक्करं विहियं । परपुरिससमीवे जेण, पेसिया सव्वरीए पिया ॥७१॥
भणियं छुहालुएहिं सुदुक्करं रक्खसेण चेव कयं । जेण चिरं छुहिएण वि, न भक्खिया भक्खणिज्जा वि ॥७२॥
अह पारदारिएहिं, पयंपियं देव! मालिओ एक्को । दुक्करगारी जेणं,, चत्ता सा निसि सयं पत्ता ॥७३॥
पाणेण जंपियं होउ, ताव चोरेहिं दुक्करं विहियं । पइरिक्के वि विमुक्का, ससुवन्नाजेहिं सा तइया ॥७४॥
एवं वुत्ते चोरो त्ति, निच्छिउं सोऽभएण मायंगो । गिण्हाविऊण पुट्ठो, कहमाऽऽरामो विलुत्तो त्ति ॥७५॥
तेणं पयंपियं नाह!, पवरविज्जाबलेण णियएण । कहिओ य वइयरो सेणि-यस्स एसो समग्गो वि ॥७६॥
रन्ना वि संसियं देइ, मज्झ जइ कहवि निययविज्जाओ । सो पाणो ता मुंचह, इहरा से हरह जीयं ति ॥७७॥
पडिवन्नं पाणेणं, विज्जादाणं पि अह महीनाहो । सिंहासणे निसण्णो, विज्जाओ पढिउमाढत्तो ॥७८॥
पुणरुत्तपयत्तुक्कित्तिया वि, रन्नो न ठंति जा विज्जा । सो ता तज्जइ रुट्ठो, न रे! तुमं देसि सम्मं ति ॥७९॥
अभएण भणियमिह देव!, नत्थि एयस्स थेवमवि दोसो । विणयग्गहिया हि विज्जाओ, ठंति फलदा य जायंति ॥८०॥
ता पाणमिमं सीहासणम्मि, ठविऊण सयमऽवि महीए । होऊण विणयसारं, पढसु जहा ठंति इन्हिं पि ॥८१॥
तह चेव कयं रन्ना संकंताओ लहुं च विज्जाओ । सक्कारिऊण मुक्को, पाणो अच्चंतपणइ व्व ॥८२॥
इय जइ इहलोइयतुच्छ-कज्जविज्जा वि भावसारेण । पाविज्जइ हीणस्स वि, गुरुणो अच्चंतविणएण ॥८३॥
ता कह समत्थमणवंच्छियत्थ-दाणक्खमाए विज्जाए । जिणभणियाए [2]दाएण विणयविमुहो बुहो होज्ज ॥८४॥
अन्नं च-
पत्थरकया वि देवा, साण्णिज्झपरा हवंति विणयाओ । जइ ता का गणणा अन्न-यत्थुसिद्धीए धीराणं ॥८५॥
जइ वि सुयनाणकुसलो होइ नरो [3]हेउकारणविहन्नू । अविणीयं तहवि न तं, समयऽत्थविऊ पसंसंति ॥८६॥
संमत्तनाणचारित्त-पमुहगुणहेउविणयकरणपरं । अबहुस्सुयं पि कुसला, बहुस्सुयपयम्मि ठावेंति ॥८७॥
जस्स विणओ स नाणी, जो नाणी तस्स सम्मकिरियाओ । सम्मकिरियाओ जस्स उ, सो च्चिय आराहणाजोग्गो ॥८८॥
तम्हा कल्लाणपरंपराए, संपाडणेक्कपडुयम्मि । विणयम्मि निमेसं पि हु, बुहेण न पमाइयव्वं ति ॥८९॥
इय संसारमहोयहि-तरीए संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥९०॥
आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । संखेवेणं भणियं,, विणयो त्ति चउत्थपडिदारं ॥९१॥

1. महासती इयम् । 2. दातरि (सप्तम्यर्थे तृतीया) 3. हेतुकारणविधिज्ञः ।

"समाधिनामकपञ्चमद्वारवर्णनम्" —

[1]विणयपणयस्स वि परं, समाहिविरहम्मि जेण पुरिसस्स । सग्गाऽपवग्गजणणी, न सम्ममाऽऽराहणा घडइ ॥९२॥
ता एत्तो दारं पिव, मणवंछियसव्वकज्जसिद्धीए । सिद्धीपुरीए पवरं,, समाहिदारं पवक्खामि ॥९३॥
सो य समाही दुविहो,, दव्वे भावे य तत्थ दव्वम्मि । पयइप्पहाणदव्वो-वओगओ जायइ समाही ॥९४॥
अहवा वि सुदुल्लंभं, पयईए सुंदरं तहा इट्ठं । सद्दं रूवं च रसं, गंधं फासं च जहसंखं ॥९५॥
सोउं दट्ठुं भोत्तुं, जिंघित्ता फासिउं समाहाणं । जं पाउणेज्ज पाणी, दव्वसमाही भवे सो उ ॥९६॥
तेण न इहाऽहिगारो,, अहवा सो वि हु कहिं पि केसिं पि । भावसमाहिनिमित्तं, इच्छिज्जइ चेव जं भणियं॥९७॥
'मणुन्नं भोयणं भोच्चा,, मणुन्नं सयणाऽऽसणं । मणुन्नम्मि अगारम्मि, मणुन्नं झायए मुणी' ॥९८॥
भावम्मि समाही पुण, एगंतेणेव चित्तविजयाओ । चित्तविजओ य सम्मं, रागद्दोसाण परिहरणा ॥९९॥
तप्परिहारो य सुहेयरेसु, सद्दाइएसु विसएसु । पत्तेसु विचित्तेसु वि, अभिसंगपओससंचारो ॥१७००॥
तम्हा कुमग्गलग्गं, विवेयरज्जूए चडुलतुरगं व । सुदढं संजमिऊणं, माणसमुस्सिंखलपयारं ॥१॥
जइयव्वं सव्वेण वि, सुहऽत्थिणा सुपुरिसेण निच्चं पि । सम्मं समाहिकरणे, विसेसओ धम्मनिरएण ॥२॥
तत्थऽवि सविसेसतरं, पज्जंताऽऽराहणुज्जयमणेण । न तमंतरेण हि सुहं, धम्मो आराहणा य भवे ॥३॥
तहाहि—
असमाहीओ दुक्खं,, दुहिणो पुण अट्टमेव न उ धम्मो । धम्मविहीणस्स पुणो, दूरे आराहणामग्गो ॥४॥
मोत्तुं समाहिमेक्कं, असेससेसंऽगसंगया वि जओ । सव्वा सुहसामग्गी, दावऽग्गी चेव पुरिसस्स ॥५॥
जं वा तं वाऽसिस्स वि, जेण व केणं पि पाउयस्साऽवि । जत्थ व कत्थ य वासिस्स, जम्मि कम्मि वि अहव काले॥६॥
जं वा तं वा विसमं, समं व संपावियस्स वि अवत्थं । परमसुहं चिय निच्चं, समाहिमंतस्स पुण नियमा॥७॥
सोक्खं च समाहिकयं, अभयं अकिलेसजं अलज्जणियं । परिणामसुंदरं सवस-मऽक्खयं निरुवममपावं ॥८॥
किंच--
पज्जत्तमेत्तिएण वि, सुसमाहिठियस्स वीरपुरिसस्स । जं सो न [2]भरइ कस्सवि, नयावि से [2]भरइ को वि परो ॥९॥
अवि य—
जे सुसमाहिम्मि रया, विरया नीसेसपावठाणाओ । सुहिसयणधणाऽऽइविणास-दंसणे वि हु न तेसिं मणो॥१०॥
अचलो व्व चलइ थेवं पि, सुसंजमाउ ममत्तचत्ताण । सुसमाहिनिही भयवं, रायरिसिनमीह दिट्ठंतो ॥११॥
तहाहि—

"नमिराजर्षिदृष्टान्तः"

नगनगराऽऽगरवरपुर-धणधण्णसमिद्धगामरंमम्मि । नामेण विदेहाजण-वयम्मि मिहिलापुरी आसि ॥१२॥
नयविणयसच्चसूरत्त-सत्तपमुहप्पहाणगुणकलिओ । पालेइ तं च राया, जयभमिरजसो नमी नाम ॥१३॥
जम्मि नरेंदे रज्जं, पालिंते खंडणाऽहरदलाण । करपीडणं उरोजाण, जइ परं तरुणिलोगस्स ॥१४॥
गुणबाहाए वुड्ढी य, सद्दसत्थेसु सुम्मइ विरोहो । उप्पेक्खा वि य दीसइ, जइ पर सुकईण कव्वेसु ॥१५॥
सो एवंविहगुणवं, अणप्पमाहप्पनिहयपडिवक्खो । सहसक्खो इव, विसए, निसेवमाणो गमइ कालं ॥१६॥
अह एगम्मि अवसरे, वेयणियवसेण पलयजलणसमो । नरवइणो तस्स महा-घोरो दाहज्जरो जाओ ॥१७॥
तेण य वाउलियतणू, वज्जाऽनलमुम्मुरे नियडिओ व्व । उव्वेल्लइ परियत्तइ, सुदीहमुस्ससइ स महप्पा ॥१८॥
वाहरिया वरवेज्जा, कया य तेहिं च भेसहपओगा । न य पसममुवगतो से, मणागमेत्तं पि परितावो ॥१९॥
अवरे वि मंततंताऽऽइ-जाणगा जे जणे पसिद्धिगया । आहूया ते वि तहिं असाहियट्ठा य नीहरिया ॥२०॥
नवरं पइखणचंदण-रससिसिरमुणालियाजलद्दाहिं । अच्चंतदाहविहुरस्स, होइ से थेवमाऽऽहारो ॥२१॥
अह तन्निमित्तमणऽवरय-मेव अंतेउरीहिं समकालं । पियविहुरजायदुक्खाहिं, चंदणम्मि घसिज्जंते ॥२२॥
पयलंतकोमलभुया-परोप्परप्फिडियकणगवलयभवो । अवहरियऽन्ननिनाओ, वियंभिओ रणझणाऽऽरावो ॥२३॥
तं चायण्णिय रन्ना, पयंपियं किंसमुब्भवो एसो । बाढमऽणिव्वुइकारी, अहो निनाओ पवित्थरइ ॥२४॥

1. विनयप्रणतस्य = विनयतत्परस्य 2. भरइ = स्मरति ।

भणियं च परियणेणं देव! रवो कणयवलयसंभूओ । अंतेउरीण चंदण-मुग्घरिसंतीणमेसो त्ति ॥२५॥
सोउं च नरवइगिरं, एक्केक्कं धरिय सेसवलयाइं । अवणीयाइं अंते-उरीहिं भुयवल्लरीहिंतो ॥२६॥
खणमेत्तम्मि अइगए, पुणो वि पुच्छियमिमं नरिंदेण । किं रे! न संपयं सो, निसुणिज्जई कणयवलयरवो ॥२७॥
भणियं जणेण सामी!, परोप्परप्फिडणविरहओ इण्हिं । एगागीणं वलयाण, कह रवो संभवेज्ज इहं ॥२८॥
अव्वो! जह एयाणं, असहायाणं तहा जीयाणं पि । नूणमणत्थुप्पाओ, रवो व्व नो जायइ कहं पि ॥२९॥
जेत्तियमेत्तो संगो, तेत्तियमेत्ता अणत्थपत्थारी । संगं विवज्जिऊणं, ता होमि अहं पि निस्संगो ॥३०॥
इय संवेगोवगयस्स, राइणो जाइसरणमुप्पन्नं । पुव्वभवचिन्नसामन्न-सुत्तमणुसुमरियं झत्ति ॥३१॥
अणुकूलकम्मवसओ, सो वि हु दाहज्जरो अवक्कंतो । अह नियपए पुत्तं, ठविऊणं सो महाभागो ॥३२॥
पत्तेयबुद्धलिंगी, एगागी सव्वसंगमवहाय । नयरी बहियाऽऽरामे उस्सग्गेणं ठिओ भयवं ॥३३॥
तो रायरिसिम्मि नमिम्मि, तहट्ठिए हरियसव्वसार व्व । अच्चंतपणइविच्छो-हिय व्व गुरुरोगविहुर व्व ॥३४॥
कयकरुणविप्पलावा, वाउलहलबोलबहुलियदियंता । अंसुजलाऽऽविलनयणा,, तव्वेलं चिय अहेसि पया ॥३५॥
अह ओलंबियभुयपरिह-मऽमरसेलं व निच्चलं दट्ठुं । नमिरायरिसिं सक्को, चिन्तेउमिमं समाढत्तो ॥३६॥
पढमं पडिवन्नम्मि, सामन्ने संपयं नमिमुणिस्स । केरिच्छा हु समाही, हवेज्ज गंतुं परिक्खामि ॥३७॥
तो कयमाहणरूवो, विउव्विउं नयरिदाहमुद्दामं । विलवंतलोयनिवहं च, कुलिसपाणी नमिं भणइ ॥३८॥
किं मुणिपुंगव! मिहिलाए, अज्ज सुव्वंति सव्वठाणेसु । करुणप्पलावरूवा, लोयाणं विविहआरावा ॥३९॥
नमिणा भणियं सच्छाय-फुल्लफलमणहरम्मि वच्छम्मि । जह भज्जंते वाएण, पक्खिणो दुक्खिया संता ॥४०॥
कंदंति सरणरहिया, तह लोया वि हु पुरीविणासम्मि । अच्चंतसोगविहया, परिदेवन्ति बहुदुहत्ता ॥४१॥
सक्केण जंपियं पेच्छ, पेच्छ एसा कहं तुहं नयरी । कीलापासाओ वि य, डज्झइ पबलेण जलणेण ॥४२॥
अंतेउरं पि पेच्छसु, उब्भियभुयनालमुब्भडपलावं । हा नाह! रक्ख रक्ख त्ति, जंपिरं परमकरुणमयं ॥४३॥
नमिणा भणियं परिचत्त-पुत्तसुहिसयणगिहकलत्तस्स । जइ मज्झ होज्ज किंचि विय, किंचणं ता तयं दज्झे ॥४४॥
तदऽभावे मिहिलाए, डज्झंतीए वि किं नु डज्झेज्जा । एवं च पेहियाए वि, भद्द! किं वा मह पुरीए ॥४५॥
एयं हि परमसोक्खं, नूण मुमुक्खूण चत्तसंगाण । जं नत्थि पियं न य किं पि, अप्पियं मोक्खकंखीण ॥४६॥
इय पसमसारमाऽऽयन्निऊण, नमिणो पयंपियं सक्को । संहरियनयरिदाहो, पुणो वि एवं समुल्लवइ ॥४७॥
नाहो त्ति ताणकारि त्ति, सरणकारि त्ति परभयवसट्टो । निबिडभुयदंडमंडव-मऽल्लीणो एस तुज्झ जणो ॥४८॥
तम्हा पुरीए पायारं, गोउरग्गलदुग्गमं । आउहाणि य कारित्ता, पव्वज्जं काउमऽरिहसि ॥४९॥
मुणिणा जंपियं हंत! सद्ध व्विय पुरी महं । कओ य तीए पायारो, सुतुंगो खंतिलक्खणो ॥५०॥
संवरऽग्गलदुग्गम्मो, धिईकेयणसंगओ । परक्कमो धणू तत्थ, तवो नारायराइयं ॥५१॥
आउहं पि कयं चारु, कम्मसत्तुविणासगं । एवं पि कयरक्खस्स, किं न पव्वइउं खमं ॥५२॥
सक्केण जंपियं भन्ते!, कारइत्ताणमुत्तमे । पासाए विविहे पच्छा, पव्वज्जं काउमऽरिहसि ॥५३॥
नमिणा भासियं भद्द!, को करेज्ज पहे गिहं । जीवस्स जत्थऽवत्थाणं, तत्थ कुव्वेज्ज तं बुहो ॥५४॥
वज्जाउहेण संलत्तं, खुद्दे चोराइणो परे । हणित्ता लोगखेमत्थं, पव्वज्जं काउमऽरिहसि ॥५५॥
नमिणा जंपियं एए, मिच्छा हम्मंति निच्छियं । अखेमयाणि कम्माणि,, हंतुं जुत्ताणि ताणि मे ॥५६॥
हरिणा जंपियं भंते!, जे नमंति न पत्थिवा । ते लहुं निज्जिउं सव्वे, पव्वज्जा तुज्झ जुज्जए ॥५७॥
मुणिणा वुत्तमत्ताणं, जो जिणेज्ज सुदुज्जयं । सहस्सजोहिणो [1]वीह, सो एक्को विजई परं ॥५८॥
ता अप्पणा समं ताव, जुज्झिउं मज्झ जुज्जए । निस्सेयसत्थिणो बज्झ-जुज्झेणं विहलेण किं ॥५९॥
कोहं लोहं मयं माय-मिन्दियाणि य पंच वि । जियाणि जेण सव्वंपि, जेयव्वं तेण निज्जियं ॥६०॥
अक्कमित्ता तिलोक्कं पि, कित्ती तस्स परं ठिया । सासया सिद्धिखेत्तं च, जेण एयं विणिज्जियं ॥६१॥

1. वीह = इव इह ।

सोच्चा एयं सहस्सक्खो, भत्तिपब्भारसंगओ । पुणो नमिं रायरिसिं, एवमाऽऽह महायसं ॥६२॥
जइत्ता पउरे जन्ने भोइत्ता माहणाऽऽइणो । दाणं दीणाऽऽइयाणं च सामन्नं काउमऽरिहसि ॥६३॥
गिहासमं विमोत्तूण किं वा पव्वज्जमिच्छसि । पोसहाऽभिरओ राय!, एत्थेवाऽऽवससु तुमं ॥६४॥
नमिणा भासियं जन्ने, दक्खिणालक्खसुंदरे । जो कारवेज्ज तत्तो वि, संजमो गुणकारगो ॥६५॥
मासे मासे कुसऽग्गेण, जो भुंजेज्ज गिहट्ठिओ । विमुक्कसव्वसंगस्स, लेसेण वि न सो समो ॥६६॥
जंपियं हरिणा राया!, सुवन्नं मणिसंचयं । कंसं दूसं च वड्ढित्ता, पव्वज्जं काउमऽरिहसि ॥६७॥
मुणिणा भणियं भद्द!, सुवन्नमणिमाऽऽइणो । केलासतुंगकूडा वि, असंखा वि पणामिया ॥६८॥
लुद्धस्स जंतुणो तित्तिं, एगस्स वि जणिंति नो । इच्छा आगाससंकासा सक्का केण व पूरिउं ॥६९॥
जहा जहा भवे लाभो, लोहो होइ तहा तहा । एवं तेलोक्कलाभे वि, न होज्जा का वि निव्वुई ॥७०॥
वज्जिणा जंपियं राय! संते भोगे मणोहरे । चिच्चा असंते पत्थिंतो, संकप्पेणं विहम्मसि ॥७१॥
मुणिणा भासियं मुद्ध!, वरं सल्लं वरं विसं । वरं आसीविसो सप्पो, वरं कुद्धो य केसरी ॥७२॥
वरं अग्गी य नो भोगा, चिंतिज्जंता वि जे नरं । नरयं निंति दुत्तारं, भामयंति भवऽन्नवे ॥७३॥
सल्लाईणं हि जोगे वि, मच्चू एगभवो भवे । भोगाणं पत्थणेणावि, पाणी हम्मइ लक्खसो ॥७४॥
ता चत्तभोगवंछो हं, अहोगइकरं परं । कोहं हंतूण माणं च, दिन्नाऽहमगईगमं ॥७५॥
सुगईघायगं मायं, लोहं पि दुहओ भयं । विद्धंसिऊण सामन्ने, उज्जमिस्सामि एगगो ॥७६॥
इय परमसमाही-मंतमऽच्चन्तसन्तं; बहुविहभणिईहिं, तं परिक्खित्तु सक्को ।
कणगमिव मुणित्ता, एगरूवं सरूवं; पयडियहरिसेणं, थोउमेवं पवत्तो ॥७७॥
जयसि विजियकोह!, धंसियासेसमाण!; पडिहयपसरंतु-द्दाममायापवंच ।
मुणिवर! हयलोह-जोहसंचत्तसंगो; तुममिह परमेक्को, पुज्जणिज्जो जयम्मि ॥७८॥
तुममिह परमेक्को, उत्तमो उत्तमाणं; भविहसि परजम्मे, उत्तमो तं सि चेव ।
तिजयतिलयतुल्लं, उत्तमं सिद्धिखेत्तं; अणुसरिहिसि नूणं, पिट्ठकम्मऽट्ठगंठी ॥७९॥
भयति कह न सुद्धी, तुज्झ संकित्तणेणं; कहमुवसममेई, दंसणे वा न पावं ।
फुरति मणनिरोहा-ऽऽयाससज्झो अवंझो; सियसुहजणणम्मि, जस्स एसो समाही ॥८०॥
इय थुणिय मुणिंदं, वंदिऊणं च पाए; कमलकुलिसचक्काऽ-लंकिए भत्तिसारं ।
भसलगयलनीलं, वोममुल्लंघिऊणं; सुरपुरमऽणुपत्तो, तक्खणेणं सुरेन्दो ॥८१॥
एवं नमि व्व धीरा,, इहलोइयपावसंगविरयमणा । अच्चंतसमाहीए, कुणंति सव्वुज्जमं जम्हा ॥८२॥
धम्मगुणनागराणं निवासनयरं परं चिय समाही । आराहणालयाए, रुंदो कंदो तह समाही ॥८३॥
सम्मत्तनाणचारित्त-खन्तिपमुहा महागुणा वि फलं । देन्ति ससज्झं सम्मं, समाहीगब्भ च्चिय जहुत्तं ॥८४॥
उवविसउ य एगंते, बन्धउ पउमासणं पयत्तेण । धरउ य सासं रुंधउ, बज्झं तह कायचेट्ठं पि ॥८५॥
निमिओट्ठपुडं मंथर-तारं दिट्ठिं च [1]निसउ नासग्गे । जइ न समाही लग्गइ तप्फलभोगी न ता जोगी ॥८६॥
करयलनिलीणनिम्मल-फलिहं व सुदिव्वजोइणो जं च । पासंति जगं सचरा-चरं पि तं पि हु समाहिफलं ॥८७॥
किंच—
चित्तं समाहियं जस्स होइ सवसं [2]विसोत्तियारहियं । सो वहइ निरइयारं, सामन्नधुरं अपरितंतो ॥८८॥
ते धन्ना भुवणयले, समाहिबलदलियरायदोसा जे । परमं देहाऽऽहारं, आहारं पि हु अणीहंता ॥८९॥
सुविइयवत्थुसरुवा,, हरिसविसायाऽऽइएहिं अप्पुट्ठा । बहुजम्मनिम्मियंपि हु, कम्मं निम्मूलयंति लहुं ॥९०॥
ता चित्तविजयलक्खण-भावसमाहीए होइ जइयव्वं । एएणं चिय एत्थं, पगयं ति कयं पसंगेण ॥९१॥
इय सुत्तवुत्तजुत्तीजुयाए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहिपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥९२॥

1. न्ययस्तु । 2. विस्रोतसिका = दुर्ध्यानम् ।

आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । पंचमगं भणियमिमं, समाहीनामं पडिद्दारं ॥९३॥
एसो य समाही चित्त-विजयजणिओ वि ने हु थिरो होइ । आराहगो मणं जइ वारंवारं न सासेइ ॥९४॥
जओ— "षष्टम् मनः अनुशास्तिद्वारं" —
पोयवहणं व चित्तं, चिन्तासागरगयं परिभमंतं । अन्नाणपवणपेल्लिय-विसोत्तियावीइहम्मंतं ॥९५॥
पडियं मोहावत्ते, कह लग्गेज्जा समाहियरमग्गे । जइ जाएज्ज न सम्मं अणुसासणकन्नधारो से ॥९६॥
दोसाण नासणं गुण-पयासणं ताऽणुसासणं एत्तो । चित्तस्स वुच्चइ तयं, एवं सुसमाहिओ कुज्जा ॥९७॥
हं भो! चित्त! विचित्तं, चित्तं व तुमं पि वहसि बहुभावे । किंतु परतंतेहिं, मोहेइ तुमं तु अप्पाणं ॥९८॥
सइ रुइयगीयनच्चिय-हसियाऽऽइवियारओ जणं दट्ठुं । मत्तं व हियय! तह तं, वट्टसु जह नाऽसि हसणीयं ॥९९॥
मोहभुजंगमदट्ठं, सुविसंथुलचेट्ठियं जयमसंतं । किं न पुरत्थं पेच्छसि, विवेयमंतं न जं सरसि ॥१८००॥
चित्तचपलत्तणेणं, रसायलं विससि जासि गयणं पि । भमसि दिसिमंडलाणि वि, असंगयं पुण न तं फुससि ॥१॥
जम्मजरमरणसिहिणा, भवभवणे सव्वओ पलित्तंमि । नाणोदहिमऽवगाहिय, सुत्थत्तं लहसु हियय! तुमं ॥२॥
हियय! तुमे एस कओ, भववासणवागुराए महबन्धो । ता तह पसिय इयाणिं, जह तव्विगमो लहुं होइ ॥३॥
किं चित्त! चिंतिएहिं, विहवेहिं अत्थिरेहिं अह न तुहं । तत्तण्हाऽवगमो ता, संतोसरसायणं पियसु ॥४॥
हे हियय! भवसरूवं, पुत्तकलत्ताऽऽइवइअरविचित्तं । चिन्तेसु इंदजालं ति, जइ सुहं महसि अवियारं ॥५॥
भववणगयम्मि सारंग-गहणपडुयम्मि कामगुणकूडे । हिययगयमऽप्पयं किं नो, कासि जं तुह सुहमरट्टो ॥६॥
भवपभवे जइ दुक्खे, तुज्झ पओसो सुहे य मणवंछा । ता तह कुण जह न सिया, तं तं च भवे जह अणंतं॥७॥
मित्ताऽमित्तेसु समा, चित्तपवित्ती जया य तुह होही । लहिहिसि तं तइय च्चिय सुहमऽवगयसयलसंतावं ॥८॥
नरयतिदिवेऽरिमित्ते, भवमुक्खे दुहसुहे तणमणीसु । जइ लेट्ठुकंचणेसु य सममऽसि ता मण! कयत्थमऽसि ॥९॥
दुव्वारमिमं मच्चुं, पच्चासन्नीभवन्तमऽणुसमयं! हे हियय! चिंतसु तुमं किं सेसवियप्पजालेण ॥१०॥
हे हियय! चिन्तसि तुमं, नाऽणज्जजराए जज्जरिज्जंतिं । नियतणुकुडिं पि एयं, अहह महामोहमहिमा ते॥११॥
जत्थ जरमरणदारिद्द-रोगसोगाइदुहगणो लोए । तत्थ वि कहं तुमं मूढ-हियय! न विरागमुव्वहसि ॥१२॥
जीयं पि तणुम्मि गयाऽगयाइं सासच्छलेण कुणमाणं । किं न मणो! मुणसि जेणं, चिट्ठसि अजराऽमरं व तुमं ॥१३॥
सह रागेण मण! तुमं, सुहाऽभिमाणाउ भमडियं सुइरं । चय तं भय तदुवसमं ईयाणिं जं मुणसि सुहभेयं ॥१४॥
अविवेयता बालत्तणम्मि वियलत्तणाउ वुड्ढत्ते । मण! धम्मचित्तविरहे, बहू वि विहलो नरभवो ते ॥१५॥
मयरद्धएक्कमित्तं, कुगइमहादुक्खं संततिनिमित्तं । विसयाणुगामिचित्तं मोहुप्पत्तीए हेउं च ॥१६॥
अविवेयविडविकंदं, चन्दणरुक्खो व्व दप्पसप्पस्स । नीरंधमेहपडलं, सन्नाणमयंकबिंबस्स ॥१७॥
तारुण्णं पि हु तुह मण! उम्मायपरस्स निच्चकालं पि । सव्वाऽणत्थकए च्चिय, न धम्मगुणसाहगं पायं ॥१८॥
एयं कयं इमं पुण, करेमि काहं इमं च गिहकिच्चं । इय आउलस्स तुह हियय!, यासरा जंति अकयत्था ॥१९॥
वीवाहिया न दुहिया, न पाढिओ बाढमेस बालो वि । तं तं च किंचि वि महं अज्जऽविकज्जं न सिद्धं ति ॥२०॥
अज्ज इमं काहमऽहं इमं च कल्लम्मि किर करिस्सामि । एयं च तम्मि दियहे, पक्खे या अहव मासंते ॥२१॥
वरिसंऽते या एयं, काहं इच्चाइ निच्चचिन्ताहिं । हे खिज्जमाणमाणस!, कत्तो तुह निव्वुइलयो वि ॥२२॥
किंच—
एयं करेमि इन्हिं एयं काऊण पुण इमं कल्ले । काहं को मण! चिन्तइ, सुमिणयतुल्लमि जियलोगे ॥२३॥
कत्थ गयं होसि गयं मण! काउं किं च होहिसि कयऽत्थं । थिरयाए गच्छ कुणसु य, न गयस्संऽतो न य कयस्स ॥२४॥
चिन्तासन्ताणपरं जइ चिट्ठसि चित्त! निच्चकालं पि । अच्चन्तदुरुत्तारे, ता रे! निवडसि दुहसमुद्दे ॥२५॥
हा हियय! किं न चिन्तसि, जमेस रिउरूवचरणछक्किल्लो । वित्थारियपक्खदुगो, तिलोयपउमस्स सारं य ॥२६॥
पिवमाणो वि पइदिणं, अतितिमं चेव अक्खलियपसरो । सव्वजगजीवतुल्लो, इह कीलइ कालभमरुल्लो ॥२७॥
अधणे धणं धणे पुण, कमेण निवचक्किसक्कपयवीओ ।
मण! मग्गसि तुमं लहसि य, जइ वि तहा वि हु न ते तित्ती, ॥२८॥

पविसंता सल्लं पिव, पयईए पइदिणं पि पीडकरा । जे कामकोहपमुहा, अब्भिन्तरसत्तुणो तुज्झ ॥२९॥.
निच्चं देहगय च्चिय, चित्त! तदुच्छायणे न वंछा वि । बज्झारिसु पुण थायसि, अहो महामोहमाहप्पं ॥३०॥
बज्झारिसु मित्तत्तं, करेसि सत्तुत्तमन्तरारीसु । जइ ताहे हियय! तुमं, अइरा साहसि सकज्जं पि ॥३१॥
मुहमहुरकडुविवागेसु हियय! विसएसु कुणसु मा गिद्धिं । विहिवसविवज्जमाणा, सुतिक्खदुक्खाइं से देन्ति ॥३२॥
जइ पढमं पि न रज्जसि, मुहमहुरऽवसाणविरसविसएसु । ता हियय! तुमं पच्छा वि, लहसि न कयावि संतावं॥३३॥
विसएहिं विणा न सुहं, विसया वि हवंति बहुकिलेसेहिं । ता तव्विमुहं चिन्तसु,, सुहंऽतरं किं पि हे हियय!॥३४॥
जह आवायं विसयाणं पेच्छसे जइ तहा विवागं पि । ता चित्त! एत्तिय तुमं, न कयाइ विडंबणं लहसि ॥३५॥
विसतुल्लविसयवंछाए, कीस हे हियय! वहसि संतावं । ता किंपि चिन्तसु तुमं, होइ जओ निव्वुई परमा ॥३६॥
तह विसयासाछिड्डेण, नाणजणिया गुणा गलिस्संति । ता चयसु तं तुमं मूढ-हियय! तेसिं थिरत्तकए ॥३७॥
विसयासावाओलि-जणियरओगुंडियं कह न हियय! । सहजायकरणवग्गस्स, लज्जसे भमिरमऽणिबद्धं ॥३८॥
कामसरजज्जरे रे!, तुमंमि मणकुंभ! कम्ममलहरणं । भवसंतावखयकरं, न ठाइ सव्वन्नुवयणजलं ॥३९॥
अह तं पि ठियं कहमवि, किं नो पसमइ कसायदाहो ते । एसो किं व न भिज्जइ, जो तुह अविवेयमलगंठी॥४०॥
अणवरयगरुयदुक्खोह-मन्दरुद्दाममंथमहियस्स । तहवि तुह हिययसायर!, विवेयरयणं न उच्छलियं ॥४१॥
अविवेयपंककलुसस्स, चित्त! नो ताव तुह मई कुसला । जायइ न जाव विहिओ, सुविवेयजलाऽभिसेयविही ॥४२॥
हे हियय! सुंदरा वि हु, सद्दा रूवाणि रसविसेया य । गंधा फासा य वरा, ताव च्चिय तरलयंति तुमं ॥४३॥
जाव न सम्मं अवगा-हिओ तए तत्तबोहरयणिल्लो । सुहसलिलपूरपुन्नो, सुयनाणअगाहमयरहरो ॥४४॥
सद्दा [1]निरु सुइसुहया रूवाणि य चक्खुहरणचोराणि । रसणासुहया य रसा, गंधा घाणिन्दियाऽऽणंदा ॥४५॥
फासा फरिसणसुहया, संगे दाउं पि सुहमऽह वियोगे । देन्ति दुहं तहऽणंतं, चित्त! अलं तुज्झ ता तेहिं ॥४६॥
अइरम्मं हम्मयलं, सरयससी पियजणेण संगो य । कुसुमाणि मलयजरसो, दाहिणपवणो य मइरा य ॥४७॥
एयाणि समुदिताणि वि, चित्त! सरागस्स होंति खोभाय । तुह विसयसंगविमुहस्स, किं पुणेयाणि काहिंति ॥४८॥
किं बहुणा दाणेणं, किं वा बहुणा तवेण तविएण । कट्ठाऽणुट्ठाणेण वि, बज्झेण किमेत्थ बहुणा वि ॥४९॥
किं च पढिएण बहुणा, जइ ता मण! मुणसि अप्पणो पत्थं । ता रागाइपयाओ विरमसु रमसु विरागपए ॥५०॥
कसिणाहिबिलसमीवे, बहुच्छिड्डं चारुचंदणदलेण । काउं गिहं तदन्तो य, मालईकुसुमसयणिज्जे ॥५१॥
निद्दं जिगीससि तुमं, जं सुहमेयं ति कट्टु हे हियय! । अभिलससि विसयसंगं, नीरागत्तं विमोत्तूणं ॥५२॥
अणहं परिणामसुहं, जइ ईसरीयत्तमीहसे हियय! । ता तुममप्पाणुगयं, धरेसु सन्नाणवररयणं ॥५३॥
घोरं तमो तुहंऽतो, जा वियरइ ता तुमं निरालोयं । अह हियय! जिणमयरविं, धरेसि ता होसि साऽऽलोयं॥५४॥
मोहमहातमसंकुल-भवविसमगुहंतराउ तुह हियय! । न विणा नाणपईवं निग्गमुवायं परं मन्ने ॥५५॥
दव्वाइसु पडिबंधं, मोत्तुं चित्ताऽणुसरसु संवेगं । जेणाऽऽमूलाओ तुह, तुट्टइ एसो भवपबंधो ॥५६॥
हियय! सकिलेसविहवेहिं, सुहकए कामिएहिं किं मूढ! । अप्पाणं संतोसे, निवेसिउं होसु तं सुहियं ॥५७॥
जणयंति किलेसं अज्जणम्मि, मोहं समज्जियाओ पुणो । तावं परं च नासे, पयईए च्चिय विभूईओ ॥५८॥
ता तासु कुगइगमवत्तिणीसु, रायग्गिचोरसज्झासु । हे चित्त! तत्तचिन्तण-पुरस्सरं चयसु पडिबन्धं ॥५९॥
अट्ठियथूणाधरिए, पए पए ण्हारुबन्धणनिबद्धे । तयमंसवसाछन्नम्मि, इंदियाऽऽरक्खगुत्तम्मि ॥६०॥
अंतो सकम्मनिगडा-ऽवबद्धजीवे य गुत्तिगेहे व्व । दुक्खाणुभवणठाणे, मण! कुण काए वि मा मोहं ॥६१॥
सच्चित्तपमुहदव्वाइ-विसयपडिबन्धनिबिडतंतूहिं । अप्पाणमप्पणो चेव, चित्त! निच्चं पि हु समंता ॥६२॥
गाढं परिवेढंतस्स, तुह कहं कोसियारकिमिणो व्व । मोक्खो पुणो वि होही, हे मूढ! इमं पि चिन्तेसु ॥६३॥
इंदियगज्झं जं किञ्चि, कत्थई एत्थ अत्थि वत्थु न तं । थिरमऽह तत्थ वि जइ रमसि, मण! तुमं चेव ता मूढं ॥६४॥
एक्कं निययाऽणुभवा बीयं पुण जिणवरिंदवयणाओ । करिकलहकन्नपाली-तरलतरत्तं खु पयईए ॥६५॥

1. निश्चितम् ।

संसारसमुत्थसमत्थ-वत्थुसत्थस्स मण! मुणित्ताणं । मा पडिबन्धं बंधसु, खणमेत्तंपि हु तुमं तत्थ ॥६६॥
किंच—
निस्सारे संसारे, सारो सारंगलोयणा चेव। इय कुम्भममइरामत्त-चित्त! तुह निव्वुई कत्तो ॥६७॥
एत्थ परत्थ य जम्मे,, जंतूणं जाणि तिक्खदुक्खाणि । ताण न निमित्तमऽन्नं, मोत्तूणं मण! मयच्छीओ ॥६८॥
मुहमहुरत्तं पज्जंत-दारुणत्तं च पेच्छिऊण विही । पलियच्छलेण मन्ने जुवईण सिरे खिवइ छारं ॥६९॥
तहा—
पप्फुल्लाणि वि सुविसाल-नेत्तपत्तोवसोहियाणि वि । लायण्णजलऽड्ढाणि वि, अलयाऽलिकुलाउलाणि वि ॥७०॥
पसरंतपरिमलाणि वि, असरिसरूवसिरिपरिगयाइं पि । मयपरवसलीलाऽलस-विलासिणीवयणकमलाणि ॥७१॥
आवायमेत्तसुहदाय-गाणि होऊण किंपि ताइं पि । हे मणमहुयर! बंधाय, तुज्झ होहिन्ति पज्जंते ॥७२॥
वसफेप्फसहड्डकरंक-ण्हारुजंबालपूइपमुहाण । बीभच्छकुदव्वाण वि, रासी जं जुवईजणदेहं ॥७३॥
रत्तुप्पलरंभाखम्भ-जच्चकंचणसिलासुकलसेहिं । कंकेल्लिपल्लवलया-ससिविद्दुमकुंदकलियाहिं ॥७४॥
कुवलयदलऽट्ठमीचंद-सिहिकलावेहिं उवमइ बुहो वि । तं चित्त! तुहंऽतो विप्फु-रंतरागस्स माहप्पं ॥७५॥
कलमलगमंससोणिय-पुरीसकंकालकलुसकोट्ठासु । दीसंतसुंदरासु वि, ता मण मा [1]रज्ज रमणीसु ॥७६॥
सद्धाऽऽइसमुदयदहे, विलसन्तं झत्ति पक्खिवित्ताणं । जुवइजणनिबिडबडिसं, मयरद्धयधीवरेण तुमं ॥७७॥
तस्संगाऽऽमिसरसियं, वेगादाऽऽगरिसिऊण मणमीण! । तिव्वाऽणुरागअग्गीए, मूढ! ताविज्जसि समन्ता ॥७८॥
थेवं पि हु न वियारं, कुणन्ति रमणीण हसियललियाइं । जिणवयणमऽमयभूयं, जइ मण! तुह परिणमइ सम्मं ॥७९॥
जीए विओगऽग्गिपली-विओ तुमं मण! मुहुत्तमेत्तं पि । वरिससयसमइरित्तं, परिमन्नसि समयमेत्तं पि ॥८०॥
सह तीए विप्पओगो, स कोवि तुह होहिइ न जेण पुणो । जायइ संजोगाऽऽसा वि, सागरोवमसएहिं पि ॥८१॥
अच्चन्तं संवासो, लब्भइ न सए वि चित्त! देहम्मि । नियजीवेणाऽवि सया, किं पुण अन्नेण केणाऽवि ॥८२॥
जोगा य वियोगा वि य जीवाण धुवं जयम्मि जायाण । मण! बुब्बुय व्व सलिले, भवन्ति न भवन्ति य खणेण ॥८३॥
जं पयइचला पाणा, चिट्ठंति खणं पि तं मण! ऽच्छेरं । न हु होइ खणाउ परं, विज्जुलयाए समुज्जोओ ॥८४॥
इट्ठेहिं विप्पओगो, जम्मसहस्साइं संगमो य खणं । तह वि तुमं हे हयहियय!, महसि पियसंगमं चेव ॥८५॥
आवायमेत्तरमणीयगाण, पियसंगमाण हे हियय! । [2]भुत्ताणमऽपत्थाण व, परिणामो दारुणो चेव ॥८६॥
संतोसपरस्स तवे रयस्स, सव्वत्थ निरभिलासस्स । चिट्ठउ ता इह धम्मो, दूरीकयदुग्गईमग्गो ॥८७॥
एत्तियमेत्तेणं चिय, हे माणस! तुज्झ किं न पज्जत्तं । तम्मसि तोसकए जं, न चक्किसक्कत्तणाणं पि ॥८८॥
तह अत्थऽऽज्जणरक्खण-[3]वयणकयं वेयणं न पावेसि । मण! परमनिव्वुई ते, भवे वि संतोसओ होही ॥८९॥
संतोसाऽमयरससिच्चमाण-माणस! सुहं सया जं ते । तमऽसंतुट्ठे कत्तो, इओ तओ चिन्तणाऽऽसत्ते ॥९०॥
तमुदारत्तं तं चिय, गुरुत्तणं तह तमेव सोहग्गं । सा कित्ती तं च सुहं, संतोसपरं तुमं मण! जं ॥९१॥
सव्वाउ संपयाओ, संतोसपरे तुमम्मि हे चित्त! । चक्कित्तसुरत्तेसु वि, इहरा दारिद्दमेव सया ॥९२॥
दीणत्तमेसि अत्थी, लद्धत्थं गव्वमऽपरितोसं च । नट्ठधणं पुण सोगं सुहेण चिट्ठसि मण! निरासं ॥९३॥
अन्तोसारो नीसरइ, नूणमत्थित्तणेण सममेव । अन्नह तदवत्थस्स वि, कह मण! हलुयत्तमऽत्थिस्स ॥९४॥
जं किर मयस्स भारो! तं पि फुडं जाणियं जह जियन्तो । अत्थिताउ हलुओ हुंतो तं पुण मए नत्थि ॥९५॥
उव्वियसि दुहेहिन्तो निच्चं पि समीहसे पुण सुहाइं । न य पुण कुणसि तुमं तं, समीहियं लहसि मण! जेण ॥९६॥
जं विहियं हियय! पुरा, तुमए च्चिय तमऽहुणा तुह उवेइ । मा कुण हरिसविसायं, सह सम्मं परिणतिं काउं ॥९७॥
किंच—
संजोगा सविओगा, विसं व विसया वि परिणईविरसा । काओ य बहुअवाओ, रूवं खणभंगुरसरूवं ॥९८॥
एवं परोवएसं, देन्तस्स जहा महं फुरइ वयणं । तह जइ! चित्त तुमम्मि वि, एवं ता किं न पज्जत्तं ॥९९॥

1. रागी भव । 2. ०अपथ्यानां । 3. ०व्ययन ।

जं पुण्णपावरूवं, वट्टइ तुह हियय! निबिडनिगडदुगं । सज्झाणकुंचियाए, विहाडिउं लहसु तं मुत्तिं ॥१६००॥
मायण्हियाउ तण्हा-विगमकए पिबसि चित्त! चुलुएहिं । सारगवेसणहेउं, तयमुव्वेढेसि कयलीए ॥१॥
नवणीयकए सलिलं, [1]विरोलसे वालुयं च तेल्लकए । पीलसि तुमं जमीहसि, संसारे वि हु सुहाऽणुभवं ॥२॥
किं पि हु निप्फज्जन्तं, किंपि हु निप्पन्नमिह परं मुक्कं । अंकम्मि कीरमाणं, परं च विहडइ जहा भंडं ॥३॥
तह गब्भाइअवत्थं,, विविहं पावित्तु पाणिणोऽणेगे । विहडंते मुणिउं चित्त!, चिन्तसु किं पि सुहचिन्तं ॥४॥
एक्कं पि तुमं बहुवत्थु-चिन्तणा चित्त! पावसि बहुत्तं । तहभूयं पुण एत्तिय, कस्स न दुक्खस्स होसि पयं ॥५॥
सयलऽन्नवत्थुचिन्तं, चइत्तु ता चित्त! चिन्तसु परं तं । एक्कं पि किंपि वत्थुं, जेण परं निव्वुइं लहसि ॥६॥
सज्झाणबलेणं कम्म-मूलभवकाणणम्मि भग्गम्मि । मत्तमहाकरिणा इव, तुमए हे चित्त! लहु मज्झ ॥७॥
रागाऽऽइएहिं पमिलाण-मेय पच्चग्गपल्लवेहिं च । कम्मेहिं पक्खीहि व, उड्डेऊणं कहिं पि गयं ॥८॥
जम्मजरामरणेहिं, पुप्फेहि व सव्वहा पणट्ठं व । दुक्खेहिं तु फलेहिं व, खीणं जह होइ तह कुणसु ॥९॥
कम्मजलसंगवड्ढंत-गुविलभववल्लरिं दुहफलिल्लं । झाणऽग्गिणा मण! तुमं, जइ डहसि न रोहइ तओ सा ॥१०॥
लच्छीए जइ न मज्जसि नयाऽवि रागाइयाण वसमेसि । रमणीहिं न हीरिज्जसि, तरलिज्जसि जइ न विसएहिं ॥११॥
संतोसेण न मुच्चसि, आलिंगिज्जसि य जइ न इच्छाए । पावं च जइ न चिन्तसि, तुह चेव नमोऽत्थु ता चित्त! ॥१२॥
तहा—
जइ ताव तुमं माणस!, रागं अभिसंगचागओ जिणसि । दोसं अपीइपरिहा-रओ य मोहं तु सन्नाणा ॥१३॥
कोहं खमाए सम्मं, मिउभावाऽऽनयणओ य पुण माणं । सरलत्तणेण मायं, संतोसगुणेण लोहं तु ॥१४॥
संतोसवसं नयसि य, इंदियगामं बला वि जइ निच्चं । जइ जीवाणं कप्पसि य, अप्पियं पियकए चेव ॥१५॥
अस्संजमम्मि अरइं, रइं च पुण संजमम्मि जइ कुणसि । जइ भयसि भवभयं चिय, पावं चिय जइ दुगुंछिहसि ॥१६॥
जइ वत्थुसरूऽऽवालोयणाउ, न करेसि हरिससोगाइ । तह वयणनिसिरणे जइ सच्चं चिय चिन्तसे निच्चं ॥१७॥
जइ जिणवरेसु भत्तिं, निच्चं तप्पवयणे पुण पसत्तिं । सम्मं जहसत्तीए, धम्मगुणेसुं च आसत्तिं ॥१८॥
कालाऽणुरूवसुंदर-किरियापरपरमसाहुबहुमाणं । दीणदुहिएसु करुणं, पावपरेसु पुण उवेहं ॥१९॥
जइ कुणसि ता परेणं, किं किरियावित्थरेण विहलेणं । तुज्झ पसाएण ममं, मुत्ती करपल्लवऽल्लीणा ॥२०॥
मइलिज्जइ निस्सासेहिं, दप्पणो लहु जहा सुविमलो वि । धूमेणं जलणसिहा, कलुसिज्जइ जह सुबहुलेण ॥२१॥
विच्छाइज्जइ जह ससहरो वि, पसरंतरेणुपडलेण । तह मण! कुवासणाए, मलिणिज्जसि धवलमऽवि तं पि ॥२२॥
जं नियमिय अप्पाणं, न रागदोसाऽऽइनिग्गहो विहिओ । न य सुहझाणग्गीए, दड्ढो कम्मेंधणपबन्धो ॥२३॥
विसएहिंता खंचिय, धरिओ सारे न इंदियग्गामो । तं किं न तुज्झ हे चित्त!, मुत्तिसोक्खम्मि वंछा वि ॥२४॥
सज्जिज्जन्ति न करिणो, न पक्खरिज्जन्ति तुरयघट्टाइं । नाऽऽयासिज्जइ अप्पा, वावारिज्जइ न खग्गं पि ॥२५॥
किन्तु सुहज्झाणेणं, अरिणो रागाऽऽइणो हणिज्जन्ति । तह वि तुमं माणस! कीस, परिभवं सहसि तेहिं तो॥२६॥
गुरुकहिओवाएणं, पढमं सालंबणं पयत्तेण । अब्भसिऊणं जोगं, वियलियनिसेसपच्चूहं ॥२७॥
जइ बज्झविसयचिन्ता-वावारविवज्जणा निरालंबे । तत्ते परे निलीयसि, ता चित्त! न चेव चरसि भवे ॥२८॥
पयईए चलसहावं, दुद्दंतिंदियतुरंगथट्टमिणं । विसयाभिलासवेगं, वियेगरज्जूए संजमिउं ॥२९॥
जइ मण! थरेसि सवसं, फुरन्ति रागाइसत्तुणो न तओ । इहरा उ परिभविज्जसि, लद्धप्पसरेहिं तेहिं सया ॥३०॥
जह न वरिसन्तमेहेहिं,, नेय पविसंतसरिसहस्सेहिं । उक्करिसो जलनिहिणो, न याऽवकरिसो वि तदऽभावे ॥३१॥
तह सयमुवितभोगोव-भोगजोगे वि हियय! जइ तुह वि । नोक्करिसो तदऽभावे, न याऽवकरिसो वि होइ तया ॥३२॥
संपत्तपावियव्वं, सुकयऽत्थं तह परं तुमं चेव । भोगाइकयाऽऽसंसो, दुक्करकारी वि न उण मुणी ॥३३॥
अन्नं च—
मोहो एस नराणं जं गिहचागा वणम्मि जोगरओ । साहइ मोक्खं ति भणंति, जेण सन्नाणओ मोक्खो॥३४॥

1. मथ्नासि ।

तं पुण गिहे य रन्ने व, होइ कज्जं पि साहइ ससज्झं । उज्झिय सेसवियप्पं, चित्त! विचिन्तेसु ता नाणं ॥३५॥
संसारुत्थपयत्था परं सुरम्मा वि न हु हरंति तुमं । जइ मण चिट्ठसि सन्नाण-पवरपागारपरिखित्तं ॥३६॥
जइ सन्नाणतरंडं अक्खण्डं छड्डसे न कइया वि । हे हियय! हीरसि न ता, अविवेयसरिप्पवाहेण ॥३७॥
जीवे सुपत्तभूए, चिट्ठंति मोहतन्तुमयवट्टिं । नेहं च निट्ठविंतो, मिच्छत्ततमोविणासी य ॥३८॥
कालुस्सकज्जलं उव्व-मन्तओ जइ गिहस्स य तुहंऽतो । सन्नाणपईवो जलइ, चित्त! ता किं न पज्जत्तं ॥३९॥
गुरुगिरितडसंभूयं, विसयविरागमज्झमुद्धुरक्खंधं । धम्मऽत्थिसउणरुद्धं च, परमतत्तोवएसतरुं ॥४०॥
होऊणमऽणुत्तालं, सणियं चित्त! जइ समारुहिउं । गिन्हसि सन्नाणफलं, ता आसाएसि मुत्तिरसं ॥४१॥
रोगाण व कम्माणं, विज्जासिद्धो व्व वियरइ सुगुरु । बज्झोवयारविमुहं, पसमणपरमोवएसं जं ॥४२॥
तं झायसु चित्त! न केव-लं जओ अहिगयक्खओ चेव । सयलकिलेसविमुक्कं जायइ अजरामरत्तं पि ॥४३॥
हे चित्त! पयत्तेणं, चिन्तसु तत्तं तुमं तयं किंचि । चिन्तियमेत्तेणं चिय, चिरं पि जेणासि सुनियुत्तं ॥४४॥
थीमं विऊ सुरूवो, चाई सूरोऽहमेव इच्चाई । दप्पजरो ता तुह मण!, जा न निलीयसि परे तत्ते ॥४५॥
अविवेयमिंठमुल्लुंठिऊण, थंभं पि भंजिय दढं पि । पुत्तकलत्ताइसिणेह-निबिडनिगडाइं तोडेउं ॥४६॥
रागाऽऽइबन्धणदुमे वि, दूरमुम्मूलिऊण धम्मवणे । हे चित्त! चरसु हत्थी व, जं परं निव्वुइं लहसि ॥४७॥
सक्खं जिणिन्दभणियं, इमं ति एयं च गणहरेण पुणो । तस्सीसेण य एयं, चोद्दसदसपुव्विणा य इमं ॥४८॥
पत्तेयबुद्धपमुहेहिं, भासियं पुव्वजिणवरेहि इमं । भणियं इच्चाई पर-पच्चायणवयणचिन्तणओ ॥४९॥
हे चित्त! खिज्जसि च्चिय, सयं रसाऽणुभवसुन्नमेव तुमं । दव्वि व्व दिव्वभोयण-बहुविहरसपयडणपरा वि ॥५०॥
अहवा वासिज्जइ भिज्जइ य, दव्वी रसेहिं न उण तुमं । जिणवयणमऽणुसरंतं पि, मूढ! हे हियय! कहमिहरा॥५१॥
वररिसिसुहासियाइं अणेगसो पढसि सुणसि तह निच्चं । भावेसि य अइनिउणं, तप्परमऽत्थं च बुज्झसि य ॥५२॥
न उण अणुभवसि पसमं, न य संवेगं न यावि निव्वेयं । न मुहुत्तमेत्तमवि तह, तब्भावत्थेण परिणमसि ॥५३॥
जिणवयणसमरसाऽऽपत्ति-मन्तरेणं तु बज्झचरणे वि । सुविसुद्धसाहुकिरिया-सेवणरूवे जहाथामं ॥५४॥
उच्छहसि वि न मण! तुमं, पमायमयघुम्मिरं मणागं पि । एवं च लद्धपोयं पि, मूढ! बुड्डसि भवोहऽन्तो ॥५५॥
अहव न जिणवयणत्थेण केवलं न परिणमसि चेव तुमं । साभिप्पायविसरिसं, किंतु तयं उव्ववत्थिसि वि ॥५६॥
नियबोहवाहगेणं, हे हियय! कहिं पि जिणमएणाऽवि । मउलाविज्जसि बाढं, मूढ! तुमं सव्वहा वि जओ ॥५७॥
कइयवि रुहसि नहग्गे एगंतुस्सग्गतरलियं संतं । कइयवि विससि रसायल-मऽववाए च्चिय निलीणं तु ॥५८॥
उस्सग्गदिट्ठिणो तुह, अववायठिया न चेव रोयंते । अववायदिट्ठिणो उण, उस्सग्गठिया न रोयन्ति ॥५९॥
तह दव्वखेत्तकालाऽऽइयाण-मऽणुसारओ जहाविसयं । उभयपयसेवगा जे य, ते वि नो तुज्झ रोयन्ति ॥६०॥
एवं मण! निच्छयनय-ठियस्स ववहारनयठिया तुज्झ । ववहारनयठियस्स उ, रोयन्ति न निच्छयनयत्था ॥६१॥
तह दव्वखेत्तकालाइऽऽयाण-मऽणुसारओ जहाविसयं । उभयनयमयठिया जे उ, ते वि णो तुज्झ रोयन्ति ॥६२॥
उस्सग्गपमुहसमत्थ-नयमयं मयमरोयमाणस्स! । कह नज्जइ निरवज्जा, मण! जिणमयपरिणई तुज्झ ॥६३॥
तव्विसए सुयनिहिणो, नो बहु पुच्छसि वि किर मए तत्तं । नायं ति किं पि अंसं, निरुवसमं चित्त! घेत्तूण॥६४॥
एवं च तुज्झ न गिलाण-कज्जविसया वि जायए चिन्ता । कालाऽणुरूवगुणिगोय-रं च न पमोयकरणं पि ॥६५॥
वच्छल्लथिरीकरणोव-वूहणाइ वि न चेव सव्वत्थ । अविगाणेणं चिन्तसि, साहिप्पाया जइ कहं पि ॥६६॥
एवंविहं च कुग्गह-चक्कं छेत्तुं विवेयचक्केण । सव्वोवाहिविसुद्धं, सद्धम्मे कुणसु पडिबन्धं ॥६७॥
जइ तुममिह पडिबन्धं, हुंतं थेवंपि ता न इयकालं । होज्ज महदुक्खजालं, किं न सुयमिमं तए चित्त! ॥६८॥
एगदिवसं पि जीवो पव्वज्जमुवागओ अनन्नमणो । जइ वि न पावइ मोक्खं, अवस्स वेमाणिओ होइ ॥६९॥
अहवेगदिवसमिच्चाइ-थूलं माणं जओ मुहुत्ते वि । सन्नाणपरिणईए उ, फलमिट्ठं होइ जमिहुत्तं ॥७०॥
जं अन्नाणी कम्मं, खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ ऊसासमेत्तेण ॥७१॥
कहमिहरा मरुदेवी, पुव्वं अगुणा वि तक्खणा चेव । सिद्धा तुमं तु हे मण!, सुनाणपरिणइगुणविहीण! ॥७२॥

कइया वि रागरत्तं, कइयवि दोसेण कलुसियसरूवं । कइया वि मोहमूढं कया वि कोहग्गिसंतत्तं ॥७३॥
कइयावि माणथद्धं कयाइ मायाए बाढमाऽऽविद्धं । कइया वि महालोहोय-हिम्मि सव्वंगनिम्मग्गं ॥७४॥
कइया वि वेरमच्छर-रणरणयभयट्टरोद्दझाणगयं । कइया वि दव्वखेत्ताऽऽइ-विसयचिन्ताभरक्कन्तं ॥७५॥
निच्चं पि वायडं चिय, खरपवणपणुन्नधयवडो व्व तुमं । नाऽवत्थाणं थेवं पि, लहसि कइया वि परमत्थे ॥७६॥
इच्चाइ चित्त! केत्तिय-मऽणुसासिज्जसि तुमं सयं चेव । कुसलाऽकुसलविभागं परिभावसु तह य निच्छयसु ॥७७॥
तत्तो कुसलपवित्तिं, निच्चं कुसलट्ठिएसु बहुमाणं । कुणसु अ कुसलाऽकुसलत्थ-चायमज्झत्थभावे य ॥७८॥
एयमऽकुसलविवज्जण-कुसलपवित्तिप्पहाणकारणओ । कज्जं पि मण! समाही-रूवं परमं चिय लहेसि ॥७९॥
इय जो निच्चं पि मणो, अणुसासइ भावसारमऽणुसमयं । [1]समयं मायं कोहं लोहं, च जिणेज्ज किं चोज्जं॥८०॥
इहरा अणप्पकुविकप्प-कप्पणाऽऽसत्तचित्तवेलविओ । हियमवि अहियं सयणं पि, परजणं मित्तमवि सत्तुं ॥८१॥
सब्भूयमऽसब्भूयं पि, मन्नमाणो करि व्व दुव्वारो । किं किं न पावठाणं वसुदत्तो इव करेज्ज जणो ॥८२॥
तहाहि— "वसुदत्तदृष्टान्तः"
उज्जेणीए पुरीए नरवइणो सूरतेयनामस्स । सोमप्पहो त्ति नामं, आसी उवरोहिओ विप्पो ॥८३॥
नीसेससत्थपरमत्थ-जाणगो सव्वदरिसणविहन्नू । अच्चन्तवल्लहो गुणि-जणस्स रन्नो य सुगुणो त्ति ॥८४॥
एगम्मि य पत्थावे, दिवं गओ सो तओ य से पुत्तो । वसुदत्तो नामेणं, तप्पयविनिवेसणट्ठाए ॥८५॥
सयणेहिं दंसिओ नरवइस्स, नयरं लहु त्ति अपढो त्ति । पडिसिद्धो रन्ना सो, अन्नोय निवेसिओ तत्थ ॥८६॥
परिभूयं अप्पाणं, मन्नंतो गुरुविसायसंतत्तो । वसुदत्तो नीहरिओ, पढणऽत्थं तयणु गेहाओ ॥८७॥
पवरं विज्जाखेत्तं, नाणाविहविउससंगयं सोच्चा । पाडलिपुत्तं लोयाओ, तत्थ गन्तुं समारद्धो ॥८८॥
कालक्कमेण पत्तो, पढियाओ तहिं च सव्वविज्जाओ । अह सिद्धवंछियऽत्थो, समागतो नियनयरम्मि ॥८९॥
तुट्ठो विज्जाए निवो दिन्ना पिउसंतिया य से भुत्ती । जाओ य सम्मओ राय-पउरलोयस्स सव्वस्स ॥९०॥
नरवइसम्माणेणं, इस्सरिएणं च सुयमएणाऽवि । तिणमिव जयं नियन्तो, कालं वोलेइ सो तत्थ ॥९१॥
इस्सरियाऽऽइलवेण वि, तरलिज्जइ माणसं अधीराणं । किं पुण कुलबलविज्जाऽऽइ-याण सव्वेसिं समवाए ॥९२॥
अवि तीरिज्जइ जुगविगम-जलहिकल्लोलपडलमऽवि खलिउं । इस्सरियाऽऽइमहामय-विवसं तु मणो न थेवं पि॥९३॥
इय सो उम्मत्तमणो, एगम्मि दिणे नडाण पेच्छणयं । कोऊहलेणं दट्ठुं, निसिम्मि मित्तेहिं संलत्तो ॥९४॥
हे मित्त! एहि जामो नडपेच्छणयं खणं पलोएमो । दिट्ठी दट्ठव्वपलोय-णेण सहलत्तणमुवेइ ॥९५॥
तेसिं अणुवित्तीए गओ तहिं सो ठिओ य खणमेक्कं । अह तत्थ तया जुवई, विडेण सह जंपिरी एवं॥९६॥
अलियविउसेण पइणा, निरुद्धपसराए संपयं मज्झ । तुह सुहय! दंसणामऽय-लाभेणं निव्वुई जाया ॥९७॥
हे पेच्छणगपयट्टग!, चिरकालं जीवियं हवउ तुज्झ । जेण कओ वक्खेवो, मह पइणो कोवजलनिहिणो ॥९८॥
ता एहि सुहय! जावेस, कूडविउसो इहेव जावेइ । ताव खणं कीलित्ता, नियनियगेहेसु वच्चामो ॥९९॥
इय तीए पणयसारं, गिरमायन्निय विचिन्तियं तेण । अलियवियप्पविगप्पण-पवणपणोल्लियमणेण इमं ॥२०००॥
नूणं सा मे भज्जा, एसा परपुरिसमणुसरइ पावा । कूडविउसं च मन्ने, ममं च उद्दिस्स वागरइ ॥१॥
पुव्वं पि दुट्ठसीला, लिङ्गेहि मए वियाणिया आसि । संपइ पच्चक्खं चिय, दिट्ठा ता निग्गहामि इमं ॥२॥
इय चिन्तेन्तो जा ताड-णट्ठया पट्ठिओ इमो तीए । ता सच्छंदपयारा, सा जुवई कत्थइ गय त्ति ॥३॥
मन्ने इंतं मं पेच्छिऊण, पावा घरं गया तुरियं । इय बुद्धीए तओ सो, वेगेण गिहुम्मुहो चलिओ ॥४॥
अह पबलकोवविवसो, जा पत्तो नियगेहदारम्मि । ताव य सरीरचिन्तं, काउं गेहम्मि पविसंती ॥५॥
दिट्ठा नियगा भगिणी, भज्ज त्ति वियाणिऊण तो तेण । आ पावे! मज्झ गिहे, दुस्सीला वि हु कहं विससि॥६॥
कूडविउसं ति मं दूसिऊण, पुरओ विडस्स रमिउं च । तेण सह सहरिसं आग-याऽसि इय उल्लवंतेण ॥७॥
हा हा किमेयमेयं, को एसो किं मए कयमऽकज्जं । इइ पुणरुत्तं बहुजं-पिरी वि अच्चन्तकोववसा ॥८॥

1. समदं ।

अवियाणित्ता तह तेण, जट्ठिमुट्ठीहिं निट्ठुरं पहया । सा मम्मपएसम्मि जह मुक्का जीवियव्वेण ॥९॥
अह अणुमग्गेणं चिय, समागएणं समित्तवग्गेण । पडिसिद्धो सविसेसं, कुद्धो तत्तो इमं भणइ ॥१०॥
रे पावा! तुम्हाणं, भेएणं नूणमेरिसमऽकज्जं । मह भज्जाए कीरइ तेणं तुब्भे ममं खलह ॥११॥
नडपेच्छणए वि धुवं, एत्तो च्चिय अहमऽणिच्छमाणो वि । नीओ तुम्हेहिं इमीए, कज्जनिव्विग्घसिद्धिकए ॥१२॥
कित्तिममेत्तीजुत्ताण, होज्ज अहवा न किंचि वि अकिच्चं । परिचयह दुट्ठसीला!, ता एत्तो मज्झ चक्खुपहं ॥१३॥
एवं वसुदत्तेणं, अलीयकुवियप्पवाउलमणेण । निद्दोसा वि हु ते तज्जि-या तहा जह गया सगिहं ॥१४॥
कोलाहलं च सोच्चा, समागया मन्दिराओ से भज्जा । दट्ठूण वइयरमिमं, एवं भणिउं पवत्ता य ॥१५॥
हा हा निग्घिण! निल्लज-ऽणज्ज! किं हणसि अप्पणो भइणिं । जेणेवंविहपावं, सोवागा वि हु न कुव्वंति ॥१६॥
एवं तीए वुत्तो, पुरलोगेण वि य निन्दिओ संतो । सो चिन्तेइ पुणो वि हु, अणप्पकुविगप्पविहुरमणो ॥१७॥
असई न केवलं चिय, मह भज्जा किन्तु साईणी वि भवे! । एवं वामोहित्ता, ममं पि जा सयमऽवक्कंता ॥१८॥
भइणीए विणिहयाए, पसंतकोवो त्ति मं वियाणित्ता । विणिवारिउमाऽऽरद्धा, साहु व्व अभिन्नमुहरागा ॥१९॥
किमऽहं नियभइणिं पि हु, न मुणेमि सुदूरमन्धयारे वि । जइ एयाए नो दिट्ठि-वंचणं मह कयं हुंतं ॥२०॥
इय चिन्तिऊण कुवलय-दलसामं कड्ढिऊण असिधेणुं । पावे डाइणि! भइणी-विणासजणणि! पलाइहसि ॥२१॥
कत्थेयाणिं सुरगुरुसमो वि, जो हं तए वि विब्भमिओ । इति जंपन्तो भज्जाए, लुणइ नासं सउट्ठउडं ॥२२॥
अह उग्गयम्मि सूरे, निसिवइयरसवणजायरोसेण । लोगेण नरिंदेण य, सो नयरीओ विणिच्छूढो ॥२३॥
एगागी य भमंतो, वइदेसाए पुरीए संपत्तो । तारापीढो राया, तहिं च आराहिओ तेण ॥२४॥
तुट्ठेण नरिन्देणं, दिन्नं से जीवणं पहिट्ठमणो । तत्थ ट्ठिउं पवत्तो, अह जाए सूरगहणम्मि ॥२५॥
सो चिन्तिउं पवत्तो, अज्ज अहं बम्भणे निमंतित्ता । बहुभक्खं वंजणाऽऽउल-मऽणेगपाणगसमाइन्नं ॥२६॥
बहुविच्छित्तिसणाहं, भोयणजायं करावइस्सामि । खीरं च खीरहरियाउ, राइणो मग्गइस्साम्मि ॥२७॥
जइ सो कह वि न दाही, पुणो पुणो मग्गिओ वि सप्पणयं । तो अत्ताणं हणिउं, बम्भणहच्चं पि से काहं ॥२८॥
एवं कूडविगप्पेहिं, भामिओ, चिन्तणं पि सच्चं व । मन्नंतो सो भोयण-वेलापत्त त्ति पुणरुत्तं ॥२९॥
किर सुचिरमग्गिओ वि हु, न खिरहरिओ पणामए खीरं । तो गाढकोववसओ, छुरियाए हणइ अप्पाणं ॥३०॥
वाहरइ य उद्धकरो, बम्भणहच्चा इमा अहो लोगा! । खीरहरियस्स रन्नो, जेणं खीरं न मे दिन्नं ॥३१॥
इय खणमेगं वाहरिय, गाढघाएण हम्मिओ संतो । रोद्दज्झाणोवगओ, मरिऊणं नारगो जाओ ॥३२॥
एवं सच्छंदपयट्ठ-चित्तदोघट्टपडिहयऽप्पाणो । जम्हा जीवा ठाउं, खणं पि न सुहेण पारेंति ॥३३॥
तेणाऽणुसासणं माणसस्स, कीरइ पइक्खणं चेव । इहरोयदंसियठिईए, होइ न खणं पि कुसलत्तं ॥३४॥
किंच—
दासं व मणं अवसं, सवस जो कुणइ तेण जयरंगे । गहिया विजयपडागा, सो च्चिय सूरो स विक्कमवं ॥३५॥
अवि नाम कहवि कीरइ, पिवणं पुरिसेण जलनिहीणं पि । पज्जलियजलणजाला-कलावमज्झे य सयणं पि ॥३६॥
चंकमणं पि हु तिक्खऽग्ग-खग्गधाराए वीरचरिएण । पउमाऽऽसणं पि बज्झइ, तिव्वऽग्गिजलंतकुंतऽग्गे ॥३७॥
न य पुण पयईए च्चिय, चलस्स कुप्पहपसज्जमाणस्स । कीरइ जओ जए माण-सस्स अकयाऽऽउहस्साऽवि ॥३८॥
मत्तगइंदं पि दमन्ति, निंति सीहं पि अप्पवसिगत्तं । पक्खुहियजलहिजल-पसरमवि लहुं निरुंभन्ति ॥३९॥
न य सक्का अकिलेसेण, चेव पुण माणसं जिणेउं जे । अह कह वि तं पि हु जियं, जियं खु ता सव्वजेयव्वं ॥४०॥
किं बहुणा तव्विज्जए, विजिओ च्चिय दुज्जओ हवइ अप्पा । सो पुण विजिओ जायइ, परमप्पा परमपयसामी ॥४१॥
इय मणअलिमालइमालियाए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥४२॥
आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । चित्ताणुसासणमिणं, भणियं छट्ठं पडिद्दारं ॥४३॥

"अनियतविहारनामकसप्तमद्वारवर्णनम्" —

अणुसासिज्जंतं पि हु, चित्तं पाएण निच्चवासाओ । पडिबन्धलेवलित्तं, निरभिस्संगं न भविउमऽलं ॥४४॥
अनिययविहारमेत्तो, ता कित्तेमो समत्थदोसहरं । जं सोच्चा परिचइउं, आलस्समऽवस्समुज्जुत्तो ॥४५॥

वसहीसु य उवहीसु य, गामे नयरे गणे य सन्निजणे । सव्वत्थ अपडिबद्धो, विसुद्धसद्धम्मकरणरई ॥४६॥
सइ अनिययं विहारं, करेज्ज साहू विसेसगुणकंखी । तित्थजत्ताऽऽइकरणे, जएज्ज तह सावगो वि सया ॥४७॥
जम्हाऽनिययविहारो, सक्खं चिय नत्थि किर गिहत्थस्स । किन्तु गिहत्थो वि अहं, दव्वत्थयसारमरिहन्ते ॥४८॥
निक्खमणपमुहतित्थेसु, ताव वंदामि तो पवज्जिस्सं । चिच्चा संगमऽसेसं, आराहणमऽहव पव्वज्जं ॥४९॥
एवंविहबुद्धीए, पसत्थतित्थेसु वच्चमाणस्स । सुट्ठियगवेसणं वा, कुणमाणस्स य भवे सो वि ॥५०॥
तत्थ य जो पव्वज्जं, काउं आराहणं समीहइ से । सुट्ठियगवेसणं गण-संकमदारे निदंसिस्सं ॥५१॥
जो पुण गिहट्ठिओ च्चिय, आराहणमेक्कमेव काउमणो । सुट्ठियगवेसणविही, वत्तव्वो तस्स इह चेव ॥५२॥
अह साहुसावयाणं, सव्वाण वि जिणमयाऽणुसारीणं । खित्ताओ खित्तमऽन्नं, गच्छंताणं विही एसो ॥५३॥
किर जस्स जेण सद्धिं, मणसा वयणेण अहव काएणं । किं पि कयं कारियमणु-मयं च जं दुक्कडं अत्थि ॥५४॥
थेवं पि तं समत्थं, सम्मं खामेइ समाहिमग्गंतो! । मा होउ कहवि मरणा-इए वि वेराणुऽबन्धो त्ति ॥५५॥
जइ ताव मुणी गंता, वंदित्ता सूरिणो सउज्झाए । परियायलहू पुण सेस-ए वि समणेऽभिवंदित्ता ॥५६॥
इय भणइ जहाऽहं तुज्झ, सन्तियं चेइयाण साहूणं । संघस्स य नयराईसु, गच्छंतो वंदणं काहं ॥५७॥
अहवा गंता जेट्ठो, तो तं वंदित्तु बिंति ठियसमणा । अम्हच्चयं करेज्जसु, चेइयसाहूण वंदणयं ॥५८॥
तत्तो चेइयभवणे, गंतुं भत्तीए चेइयाण पुरो । सम्मं तव्वंदावण-पच्चयमिह कुणइ पणिहाणं ॥५९॥
एमेव सावगो वि हु, सम्मं खामियसमत्थवत्थव्वो । सम्मं कयचेइयसूरि-साहुवंदणविहाणो य ॥६०॥
तद्दिन्नगहियनिरवज्ज-विसयसंदेसगो सपणिहाणो । गामनगरागराऽऽइसु महया जाणाइविहवेण ॥६१॥
नायऽज्जियवित्तेणं, मग्गट्ठियभूरिधम्मठाणेसु । जिणसासणुन्नइं निच्च-मेव परमं पकुव्वन्तो ॥६२॥
दीणाऽणाहाण परं,, अणुकंपादाणओ य आणंदं । उप्पायन्तो धीमं, परिभमइ समत्थतित्थेसु ॥६३॥
तत्थ गिही साहू वि य, पासित्ता चेइयाइं तो सम्मं । संघो किरेस वंदइ, इय पणिहाणेण पढमं तु ॥६४॥
काऊण वंदणं संघ-संतियं चेइयाणमुवउत्तो । तो अप्पसंतियं पि हु, तदऽवत्थो च्चिय कुणइ सम्मं ॥६५॥
अह दव्वखेत्तकालाऽऽइयाण, संकिन्नया भवे कहऽवि । ताहे पणिहाणाऽऽइ, संखित्तं पि हु कुणइ चेव ॥६६॥
अह साहुसावगजणं, नाणाऽऽइगुणागरं भणइ दट्ठुं । अमुगत्थामे तुब्भे, वंदाविज्जह जिणवरिन्दे ॥६७॥
ते वि ससंभमपाउब्भवंत-रोमंचकंचुइयकाया । महियल्लठवियसीसा, सुभत्तिभरनिब्भरमणा य ॥६८॥
जय तइलोक्कमहापहु!, पभूयगुणरयणसायर! जिणिंद! । इय देवगुणे अहवा, नमोऽत्थुणं एवमाईणि ॥६९॥
सक्कत्थयवयणाइं, कित्तंति ताव जाव आगंता । भणइ पुणो आयरियाइ-पेसिए धम्मलाभाऽऽई ॥७०॥
अभिवन्दणाऽणुवन्दण-रूवं उचियट्ठिइं किर जणो ता । कुणइ ततो अन्नोन्नं, विसेसपुच्छाइसु विभासा ॥७१॥
इय पेरणीयपेरग-भावा, सुहजोगओ य उभएसिं । सुहबन्धो जयगुरुणो, निद्दिट्ठो इट्ठसिद्धिफलो ॥७२॥
एयं सामायरिं, नाऊण विहीए जे पउंजन्ति । ते एत्थ कुसला, सेसा सव्वे अकुसला उ ॥७३॥
इयं भणियविहीए गिही, हिंडंतो तेसु तेसु देसेसु । अप्पाणए परम्मि य, सविसेसे कुणइ धम्मगुणे ॥७४॥
तहाहि—
दट्ठूण सावयजणं सविसेसं दव्वभावथयनिरयं । सयमऽवि सविसेसं चिय, तक्करणपरायणो होइ ॥७५॥
तं च तहाविहिनिरयं, पए पए पासिउं पयट्टंतं । पवियंभन्ति सुहगुणा, धम्मपराणं पराणं पि ॥७६॥
किंच—
तद्दंसणाउ सद्धा, पायमऽसद्धालुणो वि सद्धम्मे । सद्धालुणो सयं पुण, संजायइ तप्पवित्ती वि ॥७७॥
अथिरा जायन्ति थिरा, थिराउ गिण्हन्ति तह विसेसगुणे । अगुणा वि होंति सगुणा, सगुणा दढबहुतरगुणा य ॥७८॥
इय जिणदिक्खानिव्वाण-नाणतित्थेसु सुप्पसत्थेसु । वंदंतो सव्वन्नू, सुट्ठियगुरुणो य पेहन्तो ॥७९॥
ता भमति गिही जा कह वि, पाविओ सुट्ठिओ गुरु परमो । पत्ते य तम्मि हरिसु-ल्लसंतरोमंचकंचुइओ ॥८०॥
संपत्तपावणिज्जं, समत्थतित्थोहपूयपावं च । अप्पाणं मन्नंतो, विहिणा आलोयणं देज्जा ॥८१॥

तो गुरुजणोवइट्ठं, पडिवज्जेज्जा य सम्मं पच्छित्तं । एवं च विचिन्तेज्जा, अहो कहं पावकलुसो वि ॥८२॥
पच्छित्तदाणजलखालणेण, नीओ परं विसोहिमऽहं । निक्कारणकरुणासा-यरेण एएण मुणिवइणा ॥८३॥
नूणमिमो जणणिं पि हु, जणगं पि हु बन्धवं पि मित्तं पि । अभिभविऊणं वच्छल्ल-भावतो विहरति जयम्मि॥८४॥
कहमऽन्नन्ना अदिट्ठं, असुयं देसंतराऽऽगयं च ममं । पियपुत्तं पिव एवं, बहुमन्नेज्जा महाभागो ॥८५॥
अह परमविम्हिउप्फुल्ल-लोयणो पज्जुवासिऊण चिरं । तस्सुवएसे गिण्हिय, निमन्तइ गुरुं विहारेण ॥८६॥
इय ताव पुन्नपब्भार-पुन्नवंछस्स सावयवरस्स । कस्सवि निव्विग्घं चिय, वंछियसिद्धी हवेज्ज फुडं ॥८७॥
कस्स वि य तहा संपट्ठियस्स, अवि नाम अंतरा चेव । होज्जा पाणवियत्ती, उवक्कमाऽऽविहियवसेण ॥८८॥
सुहपणिहाणगुणेणं, तित्थाईणं अपूयणेणाऽवि । दुग्गयनारीए इव, तस्सज्झफलं तहवि होज्जा ॥८९॥
तहाहि— "दुर्गतानारीदृष्टान्तः"
कायंदीए पुरीए सुरसिर-मणिकिरणविच्छुरियचरणो । चरणपयट्टियलोगो, लोगाऽलोगप्पयासकरो ॥९०॥
करुणामयखीरनिही, निहीणउत्तमजणेसु समदिट्ठी । सिद्धत्थपत्थिवसुओ, समोसढो सिरिमहावीरो ॥९१॥
पवरमणिरयणरुइरं, नाणाविहधुव्वमाणधवलधयं । सिंहासणाऽभिरामं, सुरेहिं रइयं च ओसरणं ॥९२॥
तत्थ य पुव्वाऽभिमुहो, ससुराऽसुरतिजयपूयणिज्जकमो । आसीणो जयनाहो, भव्वजणविबोहओ वीरो ॥९३॥
असुरसुरखयरकिंनर-नरनरवइणो य पुलइयसरीरा । जिणवन्दणऽट्ठमऽचिरा,, ओसरणमहिं समल्लीणा ॥९४॥
नयरीजणो वि हरिकरि-जाणविमाऽऽणाइएसु आरूढो । उब्भडकयसिंगारो, तियससमूहो व्व सोहंतो ॥९५॥
धूवसमुग्गयवरगन्ध-कुसुमपडलाऽऽइवावडकरेण । किंकरनियरेण समं, झत्ति जिणं वंदिउं चलिओ ॥९६॥
अह तत्थेव पुरीए, वत्थव्वाए दरिद्दथेरीए । घेत्तूण दारुयाइं, इंतीए नयरीबाहिम्मि ॥९७॥
अच्चन्तविम्हियाए, पुट्ठो एगो नरो अहो भद्द! । एगाभिमुहो लोगो, कत्थ इमो गन्तुमाऽऽरद्धो ॥९८॥
तेणं पयंपियं तिजय-बन्धुणो धुयकिलेसकलुसस्स । जम्मजरमरणवल्ली-वियाणविच्छेयपरसुस्स ॥९९॥
सिरिवीरजिणस्स पयाऽरविंद-पूयणनिमित्तमेस जणो । वच्चइ सिवसुहकारण-धम्मनिसामणनिमित्तं च ॥२१००॥
एवं सोच्चा सुहकम्म-जोगओ जायभत्तिपब्भारा । सा चिन्तिउं पवत्ता, किमऽहमऽपुन्ना दरिद्दा य ॥१॥
पकरेमि जेण सुविसिट्ठ-ऽणग्घपूयंऽगवग्गसामग्गी । नेवऽत्थि जीए जिणवर-चरणुप्पलजुयलमऽच्चेमि ॥२॥
अहवा किमऽणेणं सिंदु-वारकुसुमाइं पुव्वदिट्ठाइं । मुहियालब्भाइं लहुं, घेत्तूण करेमि जिणपूयं ॥३॥
ताहे ताइं घेत्तुं, वड्ढंतजिणिंदपूयपरिणामा । ओसरणस्साऽभिमुहं, तुरियं गन्तुं समारद्धा ॥४॥
नवरं अद्धपहे च्चिय, अच्चन्तं थेरभावविहुरंगी । पंचत्तमुवगया सा, वड्ढंतविसुद्धपरिणामा ॥५॥
अह जिणपूयापणिहाण-मेत्तसुविढत्तकुसलकम्मेण । सोहम्मदेवलोए, अतुच्छसुरलच्छिमऽणुपत्ता ॥६॥
थेरत्तणेण मुच्छं, गय त्ति सुढिय त्ति वा विचिन्तन्तो । अणुकंपाए लोगो, जलेण सिंचइ य से अंगं ॥७॥
अपरिप्फंदं, च तयं, पलोइउं पुच्छइ जिणं भन्ते! । किं सा जियइ मया वा, वुत्तं नाहेण य मय त्ति ॥८॥
अह सो थेरीजीवो, देवत्तं पाविऊण तव्वेलं । ओहीए मुणियनियपुव्व-वइयरा परमभत्तीए ॥९॥
जयगुरुचरणसरोरुह-मऽभिवन्दिय संनिहिम्मि वट्टंतो । लोगस्स दंसिओ भग-वया य जह तीए थेरीए ॥१०॥
जीवो देवो एसो त्ति, विम्हिओ तो पयंपई लोगो । सुकयविरहे वि कह तीए, सुरसिरी एरिसी पत्ता ॥११॥
नाणं दाणं च तवो, सीलं सवन्नुपूयणं वा वि । सोग्गइनिबन्धणं नाह!, कित्तियं किर कयं तीए ॥१२॥
एयं च कहमिमीए, सयाऽवि दारिद्दरुंदकंदाए । आजम्मदुक्खियाए, परपेसत्तोवतत्ताए ॥१३॥
तो जयगुरुणा कहिओ, पूयापणिहाणगोयरो सव्वो । तव्वुत्तन्तो पुणरवि, लोगेणं पुच्छिओ सामी ॥१४॥
अन्नायजिणवरगुणा, पूयापणिहाणमेत्तओ चेव । कह भयवं! उप्पन्ना, सुरलोयम्मि इमा थेरी ॥१५॥
भणियं जिणेण अमुणिय-गुणा वि मणिणो जहा पणासिंति । जररोगाऽऽइसमुदयं, तह जयगुरुओ जिणिंदा वि ॥१६॥
अच्चन्तगुणपहाण-त्तणेण सामन्नमेत्तमुणिया वि । बहुमाणपराण पराण-मऽसुहकम्मं पणासिंति ॥१७॥
एत्तो च्चियऽणुन्नाओ, एत्थं दव्वत्थओ गिहत्थाणं । एयविरहम्मि जम्हा, दंसणसुद्धी वि नेव भवे ॥१८॥

ता मोक्खसोक्खमूलं, पुव्वऽज्जियपावसेलवज्जसमं । जिणपूयापणिहाणं, निहाणमभिवंछियऽत्थाण ॥१९॥
जिणपूयापरिणामो, न होइ सुहकम्मुणो अभावम्मि । अच्चंतकंतचिन्ता-मणिगहणिच्छेव मुद्धाण ॥२०॥
ता भो देवाणुपिया!, एत्तियमेत्ते वि चोज्जमुव्वहह । अज्जऽवि एस महप्पा, सिवपयमऽवि पाविही जम्हा ॥२१॥
एसो इओ चइत्ता, कुले पहाणम्मि पाविउं जम्मं सुस्साहुसंगईए, पवज्जिही पवरपव्वज्जं ॥२२॥
तत्तो देवो होही, पुणो वि पुन्नाऽणुबन्धिपुन्नेण । मणुओ एवं अट्ठम-भवम्मि नयरम्मि कणगपुरे ॥२३॥
होही पुहवीनाहो, कणगज्झयनामगो जयपसिद्धो । सो अन्नया य धन्नो, काले सरयम्मि संपत्ते ॥२४॥
इंदमहपेच्छणऽट्ठा, महाविभूईए निग्गओ संतो । अवलोइऊण दद्दुरम-ऽहिणा महया गसिज्जंतं ॥२५॥
अहिमवि कुररेणं चण्ड-चंचुणा कुररमऽवि य करुणरवं । घोरेणमऽयगरेणं, गसिज्जमाणं जमेणं व ॥२६॥
परिचिन्तिही महप्पा, मंडुक्को इव इमो जणो हीणो । अहिगारिणा गसिज्जइ, भीमेण भुयंगमेणेव ॥२७॥
अहिगारी वि गसिज्जइ, कुररेण व मण्डलस्स अहिवइणा । सो वि य सव्वग्गासेण, अयगरेणं पिव जमेण ॥२८॥
इय अणवरयं निवडंत-आवयाऽवायपूरिए लोगे । भोगप्पसंगवंछा, जणस्स ही ही महामोहो ॥२९॥
जम्मणमरणविमुक्को, तइलोक्कंमि न विज्जए कोई । वेरग्गं तह वि न अत्थि, अहह मणुयाण मूढत्तं ॥३०॥
इय चिन्तिऊण रज्जं, रट्ठं अंतेउरं पुरं चिच्चा । समणो होही सिद्धिं च, पाविही खवियकम्मंऽसो ॥३१॥
एवमऽरिहंतपूया-पणिहाणं पि हु हवेज्ज मोक्खकरं । एत्तो य भन्नइ इहं, पूयापणिहाणओ चेव ॥३२॥
तित्थाण पूयणफलं, सड्ढो पावेज्ज अद्धमग्गे वि । पंचत्तं संपत्तो वि, कह वि तिव्वाऽऽवयवसेण ॥३३॥
एवं आलोयणपरि-णओ वि संपट्ठिओ गुरुसयासं । जइ अंतरा वि असुहो, हवेज्ज आराहओ तहऽवि ॥३४॥
आलोयणापरिणओ, सम्मं संपट्ठिओ गुरुसयासे । जइ अंतरा स कालं, करेज्ज आराहओ तह वि ॥३५॥
एवं आलोयणपरिणयस्स, संपट्ठियस्स वि गुरुसयासे । असुहो भवेज्ज अहवा, मरेज्ज आराहओ तह वि ॥३६॥
सल्लं उद्धरिउमणो, संवेगुव्वेयतिव्वसड्ढाए । जं जाइ सुद्धिहेउं, सो तेणाऽऽराहओ होइ ॥३७॥
एवं तवस्सिणो वि हु, आलोयणपरिणयस्स इन्तस्स । गुरुणो व अप्पणो वा, वियलत्ते होज्ज संसोही ॥३८॥
अहवा साहुगिहीणं, दोण्ह वि साहारणे गुणे पायं । अणिययविहारजणिए, सव्वन्नुमए इमे सुणह ॥३९॥

"अनियतविहारकरणे गुणाः" —

दंसणसोही[1] थिरकरण,[2] । भावणा[3] अइसयऽत्थ[4] कुसलत्तं । [5]जणवयपरिक्खणा वि य[6] । अणिययवासे गुणा होंति [दारगाहा] ॥४०॥
निक्खमणनाणनिव्वाण-ठाणचिइचिन्धजम्मभूमीओ । पेच्छंतो उ जिणाणं, सुविसुद्धं दंसणं कुणइ [दारं] ॥४१॥
संवेगं संविग्गाणं, जणइ इय सुविहिओ सुविहियाण । अथिरमइणं च पुणो, जणेइ धम्मम्मि थिरीकरणं ॥४२॥
संविग्गपरे पासिय, पियधम्मपरे यऽवज्जभीरू य । सयमवि पियथिरधम्मो पायं विहरंतओ होइ [दारं] ॥४३॥
चरिया छुहा य तण्हा, सीयं उण्हं च भावियं होइ । अहियासिया य सेज्जा, सम्मं अणिययविहारेण [दारं] ॥४४॥
सुत्तऽत्थथिरीकरणं, अइसइयऽत्थाण होइ उवलंभो । अइसइयसुयहराणं, पलोयणे विहरमाणस्स [दारं] ॥४५॥
निक्खमणपवेसाईसु, आयरियाणं च बहुपयाराणं । सामायारीकुसलो, जायति गणसंपवेसेण [दारं] ॥४६॥
साहूण सुहविहारो, निरवज्जो जत्थ सुलहवित्ती य । तं खेत्तं विहरंतो, नाही आराहणाजोग्गं ॥४७॥
एमाइयं गुणगणं, समीहमाणेण साहुणा निच्चं । अणिययविहारचरियाए, वट्टियव्वं सइ बलम्मि ॥४८॥
जो पुण रसाऽऽइगिद्धी-वसेण बलवं पि इह पमाएज्ज । न स केवलं मुणीहिं, मुंचेज्ज गुणेहि वि अवस्सं ॥४९॥
पच्चागयसुहभावो, सो च्चिय इह उज्जओ मुणिगुणेहिं । परियारिज्जइ सज्जो, उभयऽत्थ वि सेलगो नायं ॥५०॥
तहाहि—

"श्रीसेलकसूरिदृष्टान्तः"

सेलगपुरम्मि नगरे, आसी निवो सेलगो पुरा तस्स । पउमावई य देवी, ताण सुओ मड्डुगो नाम ॥५१॥
थावच्चापुत्तमुणिन्द-चलणसेवोवलद्धजिणधम्मो । सो राया नयसारं, भुंजइ निरवज्जरज्जसुहं ॥५२॥
एगम्मि य पत्थावे, थावच्चापुत्तसूरिपयवित्ती । सुयसूरी विहरंतो, समागओ तत्थ नयरम्मि ॥५३॥
मियवणउज्जाणम्मि य, समोसढो मुणिजणोचियपएसे । मुणियाऽऽगमो य राया, समागतो वन्दणनिमित्तं ॥५४॥
तिपयाहिणापुरस्सर-मह तच्चलणुप्पले नमंसित्ता । हरिसवसपुलइयंगो, आसीणो धम्मसवणऽत्थं ॥५५॥

मुणिवइणा वि हु संसार-परमनिव्वेयकारिणी तस्स । विसयविरागुप्पायण-पवणा संमोहनिम्महणी ॥५६॥
संसारसमुत्थसमत्थ-वत्थुविगुणत्तपयडणपहाणा । धम्मकहा सुइसुहवयण-वित्थरेणं कया सुचिरं ॥५७॥
पडिबुद्धो नरनाहो, परमपमोउब्भवन्तरोमंचो । गुरुचरणे पणमित्ता, जंपिउमेवं समाढत्तो ॥५८॥
भयवं! जाव नियसुयं, ठवेमि रज्जम्मि ताव तुह पासे । उज्झित्ता रज्जमऽहं, पव्वज्जं संपवज्जामि ॥५९॥
जुत्तमिणं जाणियभवठितीण, तुम्हारिसाण नरनाह! । ता एत्तो पडिबन्धं, मा काहिसि थेवमऽवि एत्थ ॥६०॥
एवं गुरुणा अणुसासिओ य, राया गओ सगेहम्मि । नियपयम्मि निवेसइ, मड्डुगनामं वरकुमारं ॥६१॥
तत्तो कयसिंगारो, सहस्सनरवाहिणीए सिबियाए । आरुढो पंथयपमुह-मंतिसयपंचगाऽणुगओ ॥६२॥
गन्तूण गुरुसमीवे, उज्झियसंगो पवज्जइ दिक्खं । संवेगसारमऽणुदिण-मुज्जमइ य धम्मकम्मेसु ॥६३॥
कालक्कमेण एक्कारसाऽवि, अंगाणि सो अहिज्जेइ । दुक्करतवकरणपरो, विहरइ य महीए वाउ व्व ॥६४॥
अह पंथगपमुहाणं, पंचण्हं मुणिसयाण सुयसूरी । तं सूरित्ते ठविउं साहुसहस्सेण परियरिओ ॥६५॥
विहरित्ता बहुकालं, पुंडरियमहानगे कयाऽणसणो । असुरसुरविहियपूओ, निव्वाणपयं समणुपत्तो ॥६६॥
सो पुण सेलगसूरी, तवोविसेसेहिं अरसविरसेहिं । पाणेहिं भोयणेहि य, जातो चम्मऽट्ठिमेत्ततणू ॥६७॥
गहिओ रोगेहिं पि य, तहाऽवि सत्ताहिओ त्ति विहरंतो । सेलगपुरे पहुत्तो, समोसढो मिगवणुज्जाणे ॥६८॥
पीइपडिबन्धेण य मड्डुगो, निवो वन्दणट्ठया पत्तो । सोऊण य धम्मकहं, पडिबुद्धो सावगो जातो ॥६९॥
अह सो सूरिं दट्ठुं, सरोगमच्चंतकिससरीरं च । जंपेइ अहं भन्ते!, अहापवत्तेण तेगिच्छं ॥७०॥
कारेमि तुम्ह एसणिय-भत्तपाणोसहाइएणं ति । पडिसुणियं मुणिवइणा, कारविया तयणु से किरिया ॥७१॥
अह पगुणीभूयतणू वि, पबलरसगारवाऽऽइपडिबद्धो । सूरी मुणिगुणविमुहो, तत्थेव ट्ठाउमाऽऽरद्धो ॥७२॥
पंथगवज्जेहिं ततो, परिचत्तो सेसएहिं साहूहिं । अह चउमासगरयणीए, निब्भरं सुहपसुत्तो सो ॥७३॥
चउमासियाऽइयारं, खामेउं पंथगेण सीसेणं । छिक्को चलणेसु ततो, झत्ति विउद्धो भणति कुद्धो ॥७४॥
को एस दुरायारो, मं पाएसुं सिरेण घट्टेइ । तेणं भणियं भन्ते!, पंथगनामो अहं साहू ॥७५॥
खामेमि चउम्मासिय-मेक्कसि खमह न पुणो इमं काहं । अह संवेगोवगओ, सूरी इय भणिउमाऽऽरद्धो ॥७६॥
रसगारवाऽऽइविसविहय-चेयणो सुट्ठु बोहिओ तुमए । पंथय! ता कयमेत्तो, एत्थाऽवत्थाणसोक्खेण ॥७७॥
अह विहरिउमाऽऽरद्धो, स महप्पा अणिययाए वित्तीए । विहरंतो परियरिओ, पुणरऽवि पोराणसिस्सेहिं ॥७८॥
कालंऽतरे य विहुणिय-रयमलो मलियपबलमोहभडो । सेत्तुंजपव्वयम्मि निव्वाणमऽणुत्तरं पत्तो ॥७९॥
इय दोसगुणे नाउं, सीयल-उज्जयविहारचरियाए । अविहारपक्खमाऽऽसज्ज को णु वट्टेज्ज कुसलऽत्थी ॥८०॥
किंच—
पडिबन्धो लहुयत्तं, न जणुवयारो न देसविन्नाणं । नाऽऽणाऽऽराहणमेए, दोसा अविहारपक्खम्मि ॥८१॥
कालाऽऽइदोसओ पुण, न दव्वओ एस कीरइ नियमा । भावेण उ कायव्वो, संथारगवच्चयाऽऽईहिं ॥८२॥
इय पावकलिलजलविब्भमाए, संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥८३॥
आराहणाए पतरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । अणियविहारनामं, सत्तमदारं समत्तमिमं ॥८४॥

"नृपस्यानियतविहारनामकाष्टमद्वारवर्णनम्" —

अणियविहारचरिया, एसा गिहिसाहुगोयरा भणिया । संपइ नरिंदविसयं, एयं चिय किं पि कित्तेमि ॥८५॥
जम्हा को वि हु चिरभूरि-सुकयसंभारभाविकल्लाणो । नरनाहो वि य होउं, अच्चंतं पसमरससरसिओ ॥८६॥
परलोयभीरुचित्तो, सम्मं विसकप्पकलियविसयसुहो । मोक्खसुहबद्धबुद्धी, आराहणकरणमीहेज्जा ॥८७॥
तस्स सए देसे, जिणिन्दबिंबाइं वंदमाणस्स । होज्ज अणियओ विहारो, परदेसे विग्घसब्भावा ॥८८॥
तहाहि—
करडिघडुब्भडसुहडोह-तुरयरहवूहपरिवुडे तम्मि । परदेसेसु वि तित्थाइं, वंदिउं संपयट्टम्मि ॥८९॥
रज्जाऽवहारमाऽऽसंकिऊण, पडिनरवई पकुप्पेज्जा । हीरेज्ज व तद्देसो, पडिरिउणा सामिरहिओ त्ति ॥९०॥
तम्हा भत्ते गुणसंगयम्मि, सत्थऽत्थबोहकुसलम्मि । मंतिम्मि रज्जभारं, आरोविय अप्पतुल्लम्मि ॥९१॥

साहियजेयव्वगणो, सुत्थीकयमण्डलो महाकोसो । नियनियनियोगसुनिउत्त-भत्तिमन्तप्पहाणजणो ॥९२॥
अच्चंतपवरपूया-पुरस्सरं लोकपीडमऽकरेंतो । जिणभवणाइं वन्देज्ज, निययदेसे च्चिय नरिंदो ॥९३॥
अह तं अदुट्ठदोघट्ट-घट्टपडिरुद्धरायपहपसरं । सहरिसहरिहेसाऽऽरव-खरखुररवभरियनहविवरं ॥९४॥
पम्मुक्कहक्कपोक्कार-घोरपाइक्कचक्कपरिकिन्नं । पउरसियछत्तछाइय-दिणयरकरपहकराऽऽभोगं ॥९५॥
नियदेसट्ठियजिणभवणाण, पेच्छणं आयरेण कुणमाणं । दट्ठुं धम्मपसंसं, के के मणुया न कुव्वंति ॥९६॥
के या उत्तमजणपूइयं ति, सोमं ति मोक्खहेउं ति । विमंसिऊण जिणधम्म-मेक्कचित्ता न गेण्हंति ॥९७॥
एवं च सो महप्पा, संपाइयपवरधम्मकायव्वो । कइया वि विसयनिंदं, करेइ जिणभणियनीईए ॥९८॥
कइया वि महामुणिपवर-चरियमेगग्गमाणसो सुणइ । कइया वि मंतिसामन्त-संगओ कुणइ जणचिन्तं ॥९९॥
धम्मविरोहं कइया वि, पेच्छिउं सव्वहा निरुंभेइ । कइया वि नियपरियण-मुवउत्तो एवमुल्लवइ ॥२२००॥
हंहो! निउणं पेहह, संसारे सारमऽत्थि नो किं पि। जं तडिचवलं जीयं, तरंगतरलाओ रिद्धीओ ॥१॥
अवरोप्परपडिबन्धा, बन्धा इव दिन्ति निव्वुइं नेव । निच्चपगुणो य मच्चू, निस्सारो वत्थुपरिणामो ॥२॥
कम्मविवागो अच्चंत-भीसणो सोक्खसंभवो तुच्छो, अस्संखदुक्खकारी, सेविज्जंतो पमाओ य ॥३॥
दुलहो य मणुस्सभवो, दुलहा सद्धम्मकम्मसामग्गी । नीसेसदोसकारण-अतुच्छमिच्छत्तचागेण ॥४॥
तइलोक्कचक्कचमढण-विढत्तजयकाममल्लमलणखमो । दुलहो देवो भवजलहि-तारगो वीयरागो वि ॥५॥
दुलहा विमुक्कसंगा, गुरुणो सव्वन्नुसासणं दुलहं । लद्धे वि एत्थ धम्मु-ज्जमो न जं तं महऽच्छरियं ॥६॥
एवं समीववत्तिण-मऽणुसासित्ता जणं स कइया वि । गीयऽत्थे संविग्गे, मुणिवइणो पज्जुवासेइ ॥७॥
ते वि य गम्भीरुत्तीहिं, जुत्तिजुत्ताहिं वागरिन्ति जहा । नरवर! पयईए च्चिय, धीमं तुम्हारिसो पुरिसो ॥८॥
जिणवयणाओ नाउं, निबन्धणं असुहकम्मबन्धस्स । अवराहकरे वि परे, न पउस्सेज्जा मणागं पि ॥९॥
नमिरनरिंदामरमउड-लग्गरयणप्पहापहासिल्लं । चक्कधरसुरपहुत्तं पि, मोक्खकंखी न कंखेज्जा ॥१०॥
सारीरमाणसाऽणेग-तिक्खदुक्खोहखोहपउराओ । गुत्तिट्ठिओ व्व मुत्तिं, चिन्तेज्जा पयइभीमभवा ॥११॥
दट्ठूण य दुक्खत्ते, तद्दुक्खाऽऽलिंगिओ व्व सव्वंगं । करुणापहाणचित्तो, दीणाऽऽणाहेऽणुकंपेज्जा ॥१२॥
जीवाऽजीवाइसमत्थ-वत्थुवित्थारमऽवितहं सम्मं । मन्नेज्ज जिणाणाए, सम्मत्तविसुद्धिमिच्छंतो ॥१३॥
कामो कोहो लोहो, हरिसो माणो मओ य इयरूवं । दरियाऽरिछक्कमन्तर-मऽलद्धपसरं सया कुज्जा ॥१४॥
सव्वाओ वि किरियाओ, किलिट्ठचित्तस्स होंति विहलाओ । तस्साफल्लकए ता, सया विसुद्धं धरेज्ज मणं ॥१५॥
विसपरिभावियधारा-करालकरवालतच्छियंऽगो व्व । संजायइ जीए परो, न तं गिरं कह वि भासेज्जा ॥१६॥
न कयाइ कुलप्पसूओ, सुहलेसविमोहिओ महासत्तो । खणभंगिसरीरेणं, किलिट्ठचेट्ठं अणुट्ठेज्जा ॥१७॥
तहा—
चिन्ताऽणंतरसमकाल-मेव संपज्जमाणसयलत्थं । वीरस्स धरापहुणो, रज्जं पि हु भुंजमाणस्स ॥१८॥
धम्माऽभिमुहा चिन्ता, सम्मं संवेगभावियमइस्स । संसारसरूवविभा-विरस्स एवंविहा होज्जा ॥१९॥
हद्धी सव्वंगं पि हु, सया वि सावज्जजीविणो मज्झ । संसारसरणकारण-वावारपरायणमणस्स ॥२०॥
नणु होही तं किंपि हु, भविस्सवरिसं रिऊ व सा काऽवि । सो मासो पक्खो वा, तमऽहोरत्तं अहव दिवसो॥२१॥
दिवसे वा स मुहुत्तो, तम्मि खणो अहव को वि सो वारो । वारे तां नक्खत्तं, जत्थाऽहं विइयपरमऽत्थो ॥२२॥
संकामिऊण पुत्ते, रज्जधुरं धीरपुरिसपन्नत्तं । सव्वन्नुपणीयाऽऽणाए, पारतंतं परिवहंतो ॥२३॥
संवेगगरुयगीयऽत्थ-सुकिरियाणं गुरुण पयमूले । पडिवज्जिऊण दिक्खं, निरवेक्खो सव्वसंगेसु ॥२४॥
छट्ठऽट्ठमदसमदुवालसाऽऽइ-विविहेहिं तवविसेसेहिं । संलिहियऽप्पा तह दव्व-भावसंलेहणविहीए ॥२५॥
वोसट्ठचत्तदेहो, निबद्धपउमाऽऽसणो गिरिसिलाए । थाणुमईए परिजुत्त-हरिणकयकायकंडुयणो ॥२६॥
सव्वाऽऽहारच्चाई, जहट्ठियाऽऽराहणाविहाणेण । पंचनमोक्कारपरो, पाणच्चायं करिस्सामि ॥२७॥
नवरं नो जावऽज्जवि, लभामि पव्वज्जमऽकयपुन्नोऽहं । ता सगिहे च्चिय वसहिं, दाउं सेवेमि मुणिणो त्ति ॥२८॥

"वसतिदानस्यगुणाः" —

जुत्ता य इमा चिन्ता, विसेसओ वसहिदाणविसयम्मि । जं सेसदाणऽविक्खाए, वसहिदाणं च्चिय पहाणं ॥२९॥
वसहिअलाभे हि मुणीण, दाउमऽणवट्ठियाण न तरंति । अत्ताऽणुग्गहहेउं, गिहिणो भत्ता वि भत्ताऽऽई ॥३०॥
न य भेसज्जं न य ओसहं च, नो कंबलं न वत्थं च । फासुयमऽकयमऽकारिय-मऽणणुमयं नेव पायं पि ॥३१॥
नो पायपुंछणं डंड-गं च मइमन्तयं विणेयं च । सत्थं पोत्थयमऽन्नं पि, साहुजणजोग्गमुवगरणं ॥३२॥
दाउं पारेन्ति न सुगुरु-सेवणं नेव तव्वयणसवणं । काउं खमंति के वि हु, भववासविरत्तचित्ता वि ॥३३॥
अणिययविहारचरियाए, आगयाणं च जइ न खेत्तम्मि । वसहीलाभो जायइ, जईण ता कह ठिती तत्थ॥३४॥
ठिइमऽन्तरेण तक्खेत्तजा य, कह उभयलोगसंभविणो । समणाण गिहत्थाण य, पत्तेयं संभवंति गुणा ॥३५॥
तत्थ इहलोइया संजयाण असणाऽऽइलाभपभिईया । परलोयसंभवा पुण, संजमपरिपालणाऽऽईया ॥३६॥
गिहीण उ इहभविया पुण, मुणिसंगाउ कुसंगचागाई । परभविया पुण सद्धम्म-सवणपमुहा गुणाऽणेगे ॥३७॥
तह ते सयं न गेहं, कुणन्ति न य कारविंति अन्नेहिं । अणुमन्नंति वि नो पर-कयं पि मणवयणकाएहिं ॥३८॥
जम्हा न सुहुमबायर-छज्जीवनिकायहणणविरहेण । जायइ गिहं कुडीरग-मेत्तं पि अओ च्चिय पवुत्तं ॥३९॥
अविकत्तिऊण जीवे, कत्तो घरसरणगुत्तिसंठप्पं । अवि कप्पिऊण तं तह, पडिओ अस्संजयाण पहे ॥४०॥
अन्नं च-
जइ तूररवपुरस्सर-मऽणेगजणसुगुरुसंघपच्चक्खं । चईय गिहं च करेमि, भन्ते! सामइयं इण्हिं ॥४१॥
सव्वं पि हु सावज्जं, जोगं पच्चक्खिमो उ जाजीवं । तिविहं तिविहेणं ति, महापइन्ना कया एसा ॥४२॥
ता कह सव्वंगेहिं, छज्जीवनिकायरक्खणेक्कपरं । सक्कयपइन्नं मोत्तुं, कुणंति मुणिणो गिहाऽऽइ सयं ॥४३॥
तम्हा अन्नकए च्चिय पारद्धं निट्ठियं च अन्नकए । मणवइकाएहिं सयं अकयमऽकारियमऽह परेहिं ॥४४॥
अणणुमयं च अओ च्चिय, मूलुत्तरगुणजुयं पमाणिल्लं । थीपसुपंडगदुस्सील-वज्जमुज्झियतदाऽऽसन्नं ॥४५॥
सज्झायकालउच्चार-पासवणभूमिसंजुयं गुत्तं । जइजोग्गं निरवज्जं सेज्जं देज्जा जईण गिही ॥४६॥
दव्वं खेत्तं कालं भावं च पडुच्च जइ तहारुवा । नो संपज्जइ तहवि हु, चिन्तिय सारेतरविभागं ॥४७॥
सुहुमप्पदोसजुत्तं, गुरुबहुगुणसंगयं सया वसहिं । देज्ज जईणं न जं ते, तीए विणा संजमायाऽलं ॥४८॥
दुत्तरमऽवि भवजलहिं, सेज्जाए तरइ जेण तद्दाया । सेज्जायरो त्ति वुत्तो, एत्तो च्चिय समयकेऊहिं ॥४९॥
तत्थ ट्ठिया य जइणो, अन्नेहिंतो वि वत्थपत्ताऽऽई । जं पावंति तयं पि हु, दिन्नं परमत्थओ तेण ॥५०॥
जइ वि न कहिं पि हु सयं संपन्नं पुव्ववन्नियं ताणं । तह वि हु वसहीदाया, जातो तम्मूलहेउ त्ति ॥५१॥
जं मूलकारणं सो, अह उत्तरकारणाइं इयरे उ । सइ मूलंऽगे पायं, विसयो किर उत्तरंऽगाणं ॥५२॥
बलिए मूलजुयम्मि, जहा तरू लहइ परमवित्थारं । तह वसहिमूलबलिओ, पावइ पसरं जइजणो वि ॥५३॥
किंच-
वायरयवासधारा-सीयाऽऽयवमारुओवसग्गाणं । चोराण दुट्ठसावय-गणाण तह दंसमसगाण ॥५४॥
रक्खेमाणो मुणिपुंगवे उ, सगिहम्मि वसहिदाणाओ । ताण मणवयणकाये, कुणइ पसन्ने सयाकालं ॥५५॥
जोगप्पसन्नयाए य, चेव जायइ सुई मई सन्ना । तह निव्वुईसुहं तणु-बलं च सुहझाणवुड्ढीकए ॥५६॥
जम्हा सुमणुन्नाऽऽलय-सयणाऽऽसणभोयणेसु पाएणं । सुमणुन्नझाणझाई, जायति 'साहू भवविरागी ॥५७॥
जस्साऽऽसमम्मि मुणिणो, मुहुत्तमेत्तं पि विस्समन्ति सो । कयकिच्चो तेणं च्चिय, किमऽन्नपुन्नेण किर तस्स ॥५८॥
धन्नो तेसिं जम्मो, कुलं च धन्नं सयं पि ते धन्ना । पक्खालियपावमला, सुसाहुणो जाण ठंति गिहे ॥५९॥
जइ पुण दुगंछिएसु, कुलेसु एयाण जणणमिह हुंतं । ता कह जएक्कपुज्जा, ठायंता तग्गिहे मुणिणो ॥६०॥
पुन्नकलियाण गेहेसु, ठन्ति मुणिणो पणट्ठमयमोहा । न कयाइ रयणवुट्ठी, निवडइ पावाण गेहेसु ॥६१॥
सो नाम को वि कालो, कलिकलुसविवज्जिओ जियाण भवे । गुणरयणमहानिहिणो, जम्मि गिहे ठंति वरमुणिणो॥६२॥
सेवा वि दुल्लह च्चिय महाणुभावाण पावनिद्दलणी । छाया वि कप्पतरुणो, पुन्नेहिं विणा न संपडइ ॥६३॥
अक्खण्डसंजमधुरं-धराण धीराण धम्मबुद्धीए । मुणिवसभाणं वसहिं, दिंतेण इमं इमं च कयं ॥६४॥

चारित्तपक्खवाओ गुणाणुरागित्तणं सुधम्मित्तं । सुद्धाण पक्खवाइ-तणं च कित्तीसमुच्छालो ॥६५॥
संमग्गवुड्ढिकरणं, कुसंगचाइत्तणं सुसंगरई । सगिहंऽगणम्मि कप्प-दुमस्स आरोवणविहाणं ॥६६॥
कामदुहधेणुगहणं, चिन्तामणिणो य करयले धरणं । नियमभवणंऽगणे च्चिय, पहाणरयणायराऽऽणयणं ॥६७॥
धम्मपवाए दाणं, पियणं अमयस्स पवरनिहिगहणं । सव्वसुहसंचयारो, विजयपडायाए गहणं च ॥६८॥
परमं च सव्वकामिय-विज्जामन्ताण साहणविहाणं । भवइ य विवेगसंगय-गुणन्नुयापयडणं च कयं ॥६९॥
तह तस्सुवस्सए संठियाण, साहूण गुणसमिद्धाणं । पायसमीवमुवागम्म, धम्मसवणं कुणंति जणा ॥७०॥
जं जं च तदाऽऽयन्नण-पच्चागयचेयणा भवियसत्ता । धम्मकिरियासु निच्चं, रमन्ति विविहासु जं च तहा ॥७१॥
पडणीया भद्दत्ते भद्दा उ दयाए जं च जहसत्तिं । मंसाऽऽसवाइणियमे, अन्ने पुण जं च संमत्ते ॥७२॥
संपावियसम्मत्ता य, जं परे परमभत्तिसंजुत्ता । मणहरजिणिंदमंदिर-बिंबपइट्ठच्चणाईसु ॥७३॥
जिणहरजत्ताईसु य, महूसवेसु सया पयट्टंति । जं जं च जिणप्पवयण-पभावणापमुहकिच्चे य ॥७४॥
जं उज्जमंति केई, गिलाणसाहम्मियाऽऽइकज्जेसु । जं च जिणाऽऽगमपोत्थय-लिहावणं केई कारिंति ॥७५॥
जं केइ देसविरतिं गिण्हंति जं च सव्वविरइं च । जं च विचित्तेसु तवो-कम्मेसु य के वि हु रमंति ॥७६॥
सव्वाण ताण तेहिं, विहिज्जमाणाण पुन्नहेऊणं । साहूवस्सयदाया, निद्दिट्ठो मूलहेउ त्ति ॥७७॥
सो च्चिय राया सो चेव, रायमत्थयमणी स थिररज्जो । रज्जे जस्स जइजणो विहरति अप्पडिहयप्पसरं ॥७८॥
रज्जे य सेसदेसाण, रायभूओ स चेव देसो वि । उव्वहइ आरियत्तं, सुसाहुणो जत्थ विहरंति ॥७९॥
देसे पुण नयरं सेस-नयरसिरसेहरं पवित्तं च । तं चिय चरंति निच्चं, जत्थ गुणड्ढा महामुणिणो ॥८०॥
नगरे य पाडगो पाव-साडगो जइजणो जहिं वसइ । सो चिय धन्नो, पुन्नो, सुन्नो अन्नोऽत्ति मन्नेऽहं ॥८१॥
तत्थ पुण जत्थ गीयत्थ-सुत्थियजईण जायए वसही । भवणं तं चिय एक्कं, लक्खणपुन्नं खु मन्नेऽहं ॥८२॥
लच्छीए तमाऽऽवासो, तं अरिहं पवररयणवुट्ठीए । वत्थु पुरिसो वि भुवि, तस्स चेव परमत्थओ उदई ॥८३॥
कहमऽन्नहा मुणीणं, संजम-सिरिपरमरमणभूमीणं । तत्थाऽवत्थाणं पि हु, होज्जा जिणवयणनिरयाणं ॥८४॥
न हु होंति तत्थ दोसा, सिद्धंतुग्घोसणाझुणिगुणेण । खुद्दोवद्दवपमुहा, अब्भुदयाऽऽई य होंति गुणा ॥८५॥
जं रोगऽग्गिपिसाय-ग्गहपभिइयखुद्ददेवजा दोसा । कूरनरतिरियजा वि य, पावा पावाउ पभवंति ॥८६॥
पावस्स य पडिवक्खो, दक्खो नेओ जिणिंदसद्धम्मो । जत्थ पुण तप्पयारो, पावविपारा कुओ तत्थ ॥८७॥
नहि बलियम्मि सपक्खे, दीसइ पडिवक्खसंभवो पायं । पभवंते सइ मायंड-मंडले तिमिरनियरो व्व ॥८८॥
इय मोक्खसाहणाऽवंझ-हेउणो नाणदंसणसमग्गा । विविहतवनियमसंजम-सज्झायऽज्झयणझाणाई ॥८९॥
सद्धम्मगुणा गुणिसेव-गस्स रन्नोऽहवा अमच्चस्स । सेट्ठिस्स सत्थवाहस्स, इब्भपमुहस्स वसहीए ॥९०॥
अन्नस्स व जस्स परं, अणुग्गहं समणुमन्नमाणस्स । चिट्ठंताणं साहूण, निव्वहंति निराबाहं ॥९१॥
धम्माऽणुभावओ चेव, तस्स दोसा न होंति पावकया । हुंति य सद्धम्मकया, परमब्भुदया, विविहरूवा ॥९२॥
अच्चंतऽणुरत्तकलत्त-पुत्तसुविणीयपरियणप्पमुहा । चउरंगबलाईया, नियनियपयवीए अणुसरिसा ॥९३॥
दाउं वसहिमिहभवे, जरंततणकयकुडीरकोणे वि । भवसोक्खनिराकंखीण, मोक्खसोक्खेक्कलक्खाणं ॥९४॥
साहूण सुविहियाणं, महाणुभावाण परमभत्तीए । चइउं मलाविलं देह-पंजरं अन्नजम्मम्मि ॥९५॥
मणिमयमहंतभासंत-भित्तिविच्छित्तिचित्तरइजणए । सुविसालसालभंजिय-मत्तालंबाइसयकलिए ॥९६॥
नाणामणिघडणुब्भड-थंभसहस्सूसियम्मि रयणयले । अणवरयरयणमणिकंत-किरणभरनिब्भरुज्जोए ॥९७॥
गयणंऽगणसंलग्गऽग्ग-तुंगतोरणमणाभिरामिल्ले । धुव्वंतधवलधयवड-मालाकलिए परमरम्मे ॥९८॥
आएसाऽणंतरतूर-माणअणुरत्तकिंकरसुरड्ढे । ललमाणजणियनयण-च्छणऽच्छराजणसमाइन्ने ॥९९॥
वररयणकणगमणिमय-सयणाऽऽसणछत्तचमरभिंगारे । तह पंचवन्नमणिरयण-कुसुमदेवंऽसुयसमिद्धे ॥२३००॥
चिंताऽणंतरसमकाल-संमिलंताऽणुकूलसयलऽत्थे । सव्वुत्तमे विमाणे, जायति देवो महिड्ढिओ ॥१॥
तत्तो य चुओ संतो, उदग्गसोहग्गरूवधारी य । जणमणनयणाऽऽणंदी, निरुवक्कमदीहनिरुयाऽऽऊ ॥२॥

लायन्नपुन्नगत्तो, बंदियणुग्घुस्समाणगुणनिवहो । मणिकणगरयणसयणा-सणड्ढपासायतलललणो ॥३॥
संपज्जमाणमाणस-समीहियऽत्थो महाविभूइल्लो । सव्वाऽइसयनिहाणं, दिसि दिसि पसरंतजसपसरो ॥४॥
पुन्नाऽणुंबंधिपुन्नो, अखंडछक्खंडभरहभोत्ता य । होज्जेह चक्कवट्टी, राया वाऽखंडमंडलिओ ॥५॥
तदमच्चो वा सेट्ठी, सत्थाहो वा महिब्भपुत्तो वा । संपाविऊण परमे, चारित्तगुणे ततो धन्नो ॥६॥
तेणेव भवेणं सो, तिहिं सत्तहिं वा भवेहिं नियमेणं । काऊणं कम्मखयं, खिप्पं मोक्खं पि पाउणइ ॥७॥
इय भावसारवसही-दाणेण नरिंदपुन्नमऽकलंकं । वंछियपूरणपवणं, जं जायइ तं किमऽच्छरियं ॥८॥
अच्छरियं पुण तं जं, उवरोहेणाऽवि वसहिदाणाओ । अणवरयसाहुदंसण-ईसिं पडिबन्धभावेण ॥९॥
अहमगइमुचगओ वि हु, पमायमयमोहिओ वि मुद्धो वि । पडिबुद्धो कुरुचंदो, जाइं सरिऊण सयमेव ॥१०॥
तहाहि— "वसतिदाने ताराचन्दकुरुचन्दयोःदृष्टान्तः"
कुलभवणं व सिरीए, अच्छरियाणं पि जम्मभूमि व्व । विज्जाणमागरो इव, सावत्थी, नाम आसि पुरी ॥११॥
तत्थ य नमंतपत्थिव-सिररयणपहापहासियपयजुयलो । नामेणाऽऽइवराहो भुवणपसिद्धो महीनाहो ॥१२॥
तस्स य अप्पडिमगुणो, रुवेणं वम्महो व्व पच्चक्खो । समरंगणरणपरिहत्थ-याए जिण्हु व्व विण्हु व्व ॥१३॥
ताराचंदो नामेण; अत्तओ रायलक्खणाऽणुगतो । नियजीयनिव्विसेसो, कुरुचंदो नाम से मित्तो ॥१४॥
अह सो ताराचंदो, जुवरायपयप्पयाणकामेण । इयरकुमारेहिंतो, सविसेसं पेहिओ रन्ना ॥१५॥
अह निवसिणिद्धसवियास-चक्खुविक्खेवगोयरीभूयं । दट्ठुं सवत्तिजणणीए, रायसन्निहिनिसन्नाए ॥१६॥
नियरसुयरज्जविग्घं, विभावयंतीए निहुयमेगंते । भक्खविमिस्सं कम्मण-मुवणीयं तस्स हणणट्ठा ॥१७॥
अविगप्पिऊण तेण य, उवभुत्तं अह तदुत्थदोसेण । रुवबलंऽगविणासी, पाउब्भूओ महावाही ॥१८॥
तेण य विहुरमऽसारं, दुगुंछणिज्जं च पेच्छिय सरीरं । अच्चतसोगघत्थो, ताराचंदो विचिंतेइ ॥१९॥
अधणाण गरुयरोगाऽऽउराण, नियसयणपरिहवहयाण । मरणमहवऽन्नदेसे, गमणं जुज्जइ सुपुरिसाण ॥२०॥
ता एत्थ निवसिउं मे, खणं पि न खमं विणट्ठदेहस्स । खलसविलासऽद्धच्छीहिं, निच्चं पेच्छिज्जमाणस्स ॥२१॥
तो रयणीए अनिवेइऊण, नियपरियणस्स वि [1]सवत्तं । गंतुं जवा पयट्टो, पुव्वदिसाहुत्तमेगागी ॥२२॥
अच्चंतं विमणमणो, सणियं सणियं कमेण गच्छंतो । अन्नऽन्नगाऽऽगरनगर-गामनियरं च पेच्छंतो ॥२३॥
सम्मेयमहागिरिपरि-सरम्मि पत्तो पुरम्मि एगम्मि । लोगो य पुच्छिओ तत्थ, को गिरि भन्नइ इमो त्ति ॥२४॥
लोगेण जंपियं मुद्ध!, दूरदेसाऽऽगयत्तणेण इमं । रविमिव सुविस्सुयं पि हु, जइ पुच्छसि ता निसामेसु ॥२५॥
सम्मेयमहागिरिराउ एहु!, जहिं जिणसमूहु परिच्चत्तदेहु । निव्वाणह पत्तु सुरासुरेहिं, थुव्वंतु भत्तिब्भरनिब्भरेहिं ॥२६॥
पवणुल्लसंततरुपल्लवेहिं, सव्वायरेण [2]नावइ करेहिं । आराहणत्थु पहि इन्त भव्व, जो विहगरवेहिं निमंतइ व्व॥२७॥
नासग्गनिवेसियचक्खुलक्खु, थेवं पि देहसोक्खाणऽवेक्खु । एगग्गचित्तु निव्विग्घु जित्थु, परमक्खरु झायइ जोगिसत्थु॥२८॥
भूमिगुणेण जहिं मुक्कवेर, कीलंति दुट्ठसत्ता वि पउर । मुद्धा वि जेत्थु कयपाणचाय, देवत्तणु [3]पावहिं गयविसाय ॥२९॥
अइरम्मयगुणरंजिय, पडिभयवज्जिय; विलसहिं जहिं किन्नरमिहुण ।
सव्वोउयकुसुमसमुद्धुर, फलभरमणहर; चाउद्दिसि छज्जंति वण ॥३०॥
एवं निसामिऊणं, अच्चंतं जायचित्तपरितोसो । सो देहं चइउमणो, चलितो तित्थं ति काऊण ॥३१॥
गयणग्गलग्गदीहर-करालसिहरोवरुद्धदिसिपसरं । अह उवउत्तो सम्मं, सणियं सणियं तमाऽऽरुढो ॥३२॥
कयकरचरणविसुद्धी, सरसिरुहाइं गहाय सरसीओ । अंसुयसंजमियमुहो, अजियाऽऽईणं जिणिंदाणं ॥३३॥
मणिरयणभासुराणं, पडिमाणं कंतिसलिलधोयाणं । फालियसिद्धसिलाण य, पूयापब्भारमुचरयइ ॥३४॥
जिणपायपूयसुहसिद्ध-खेत्तगुणवड्ढमाणसुहभावो । आणन्दसंदिरऽच्छो, थुइं च इय काउमाऽऽढत्तो ॥३५॥
इह निहणियमोहा-ऽणंतकालप्परुढं । पबलजणणमच्चू-वेल्लिमुल्लूरिऊणं ।
दरिसियसिवमग्गा, जे गया सिद्धिवासं । सिवमऽयलमऽणंतं, ते जिणिंदा जयंति ॥३६॥

1. स्ववार्ताम् । 2. इव । 3. पावहिं = प्राप्नुवन्ति । (गाथा नं. ३६-३७ निर्णयसागर प्रेस में प्रकाशित प्रत में तीन गाथा के रूप में है।)

पयपणइप्पभावे-णंपि जेसिं असेस-प्पवरसुहसणाहा हुंति लीलाए भव्वा ।
नियकरयलं वा-ऽऽलोइयाऽलोयलोया, तिहुयणजणपुज्जा ते जिणिन्दा जयंति ॥३७॥
इय थोऊण जिणिंदे-समुच्चगिरिसिहरमऽयरमारुहइ । रोगघुणजज्जरं देह-मुज्झिउं जाव परितुट्ठो ॥३८॥
ताव सरइंदुसुंदर-पसरंतुद्दामकंतिपब्भारं । सीलंऽगभरक्कंतं व, दूरमोणयकायलयं ॥३९॥
हेट्ठामुहलंबियदीह-बाहुकरनहमऊहरज्जूहिं । नरयावडनिवडियपाणि-लोयमाऽऽगरिसयंतं व ॥४०॥
अमराचलनिच्चलचलण-अंगुलीयविमलकंतिनहमिसओ । खंतिपमोक्खं दसविह-मुणिधम्मं पिव पयासंतं ॥४१॥
फालिहमणिरुइरप्पह-गिरिकंदरसंठियं सुदित्ततणुं । साहुं उस्सग्गगयं, पेच्छइ सुहनिवहभूमिं व ॥४२॥
सवसं चिय मरणं मह, ताव मुणिंदं इमं नमंसामि । इति चिंतिऊण संभम-भरियऽच्छो नमइ सो साहुं ॥४३॥
नमिऊण भत्तिसारं, रुवं जा नियइ विम्हइयचित्तो । ता विज्जाहरमिहुणं, गयणयलाओ समोयरियं ॥४४॥
हरिसवसवियसियऽच्छं पडियं चलणुप्पलम्मि से मुणिणो । गुणसंथवं च काउं, निसन्नमऽमले महीवट्ठे ॥४५॥
ताराचंदेण ततो, भणियं इह भे कुओ समागमणं । केण व कज्जेण ततो, वुत्तं विज्जाहरेण इमं ॥४६॥
विज्जाहरसेणीओ, पहुणो एयस्स वंदणनिमित्तं । भणियं ताराचंदेण, भद्द! को एस मुणिसीहो ॥४७॥
परिचत्ताऽऽभरणो वि हु, दिव्वालंकारभूसियंऽगो व्व । लक्खिज्जइ मणुओ वि हु, अमणुयमाहप्पकलिओ व्व॥४८॥
अह खेयरेण हरिसूसियेण, अच्चयत्तेण पुच्छिएण । पडिभणिउ निसुणि बहुगुणसणाहु, विज्जाहरसेणीहि एहु नाहु ॥४९॥
जरजम्ममरणरणरणयभीमु, सयमेव मुणिवि भवदुहु असीमु । रज्जम्मि ठवेविणु नियपुत्तु, सुस्समणु जाउ समसत्तुमित्तु॥५०॥
सा रायलच्छी अच्चंतभत्त, जिं लीलइं खलमहिल व्व चत्त । जसु अज्ज वि विरहहुयासतत्तु, अंतेउरु विरमति नो रुयंतु ॥५१॥
पन्नत्तिपमोक्खपहाणविज्ज, दासि व्व जस्सु कज्जेसु सज्ज ।
चिरु वड्ढिय नट्टिय जेम्व कित्ति, तइलोक्करंगि नच्चिय सुदित्ति ॥५२॥
तवसत्तिए जायअणेगलद्धि, जसु अणुवम रेहइ सुहसमिद्धि ।
जो कुणइ अखंडिउ मासखवणु, तसु तुल्लु होउ धरणीए कवणु ॥५३॥
एरिसगुणजुत्तउ, भवह विरत्तउ; चारित्तुत्तमरयणनिहि । एहु मुणहि मुणीसरु, पणयनरेसरु; निरुवमकरुणाऽमयरसजलहि॥५४॥
इय जंपिऊण विरए, खयरे रोमंचकंचुइयकाओ । ताराचंदो भत्तीए, तं मुणिं पणमइ पुणो वि ॥५५॥
अह तस्स तणुं गुरुरोग-जज्जरं पेच्छिउं भणइ खयरो । हंहो महायस! तुमं, न कीस एयस्स वरमुणिणो ॥५६॥
कप्पतरुकिसलयसमं, पयजुयलं नणु परामुसित्ताणं । अवणेसि रोगमेयं, अणप्पमाहप्पगुणनिहिणो ॥५७॥
एवं वुत्तो परम-प्पमोयलच्छिं समुव्वहंतो सो । परिमुसइ महामुणिणो, पयपंकयमुत्तमंगेण ॥५८॥
अह मुणिमाहप्पेणं, तक्खणमेव य पणट्ठचिररोगो । अब्भहियसुरुवतणू, ताराचंदो दढं जातो ॥५९॥
परमपरितोससारं, तद्दियहुवलद्धजीवियव्वं व । अप्पाणं मन्नंतो य, थोउमेवं समाढत्तो ॥६०॥
जय निज्जियकुसुमाउह!, वज्जियसावज्जपडिबंध! । अंगीकयसंजमभर!, समाहिनिग्गहियमोहगह! ॥६१॥
सुरविज्जाहरवंदिय!, रागमहाकरिविणासखरनहर! । हरिणऽच्छिसुतिक्खकडक्ख-बाणलक्खेहि वि अखुद्ध! ॥६२॥
तिव्वदुहजलणसंतत्त-सत्तपीऊसवरिससंकास! । कासकुसुमप्पगासु-च्छलंतजसधवलियदियंत! ॥६३॥
कलिकालुब्भडपसरंत-धंतहीरंतसिवपहपईव! । निस्सामन्नमहागुण-रयणोहनिहाण! जयसि तुमं ॥६४॥
रोगाऽऽउरंगचागत्थ-मित्थ मज्झागमो वि धुवमिण्हिं । सहलो जाओ तुह नाह!, पायपंकयपभावेण ॥६५॥
ता एत्तो जयबंधव!, माया जणगो य बंधवो सयणो । तुममेवेक्को मुणिवर!, आइससु मए जमिह किच्चं ॥६६॥
अह मुणिवइणा जोग्गो त्ति, कलिय पाराविऊण उस्सग्गं । सम्मत्तुत्तममूलो, पंचाणुव्वयमहाखंधो ॥६७॥
तिगुणव्वयसाहालो, चउसिक्खावयमहंतपडिसाहो । बहुनियमकुसुमकिन्नो, जससोरभभरियदिसिनिवहो ॥६८॥
सुरमणुयरिद्धिफलपडल-मणहरो पावतावपसरहरो । उवइट्ठो तस्स जिणिंद-कहियसद्धम्मकप्पतरू ॥६९॥
अच्चंतसुद्धसद्धा-वेरग्गविलग्गतिव्वभावेण । सद्दहणनाणसारं, जहोचियं तेण य पवन्नो ॥७०॥
पडिबोहिऊण एवं, ताराचंद पुणो वि मुणिवसभो । मुक्खेक्कबद्धलक्खो, काउस्सग्गे ठिओ थिमिओ ॥७१॥

तो विज्जाहरमिहुणं, ताराचंदो य झाणविग्घो त्ति । बाहिं नीहरियाइं, सप्पणयं पणमिउं साहुं ॥७२॥
साहम्मिओ त्ति संजाय-पणयभावेण तेण खयरेण । ताराचंदस्स विसाऽऽइ-दोसविद्धंसणी गुलिया ॥७३॥
दिन्ना भणितो य इमं, अहो महाभाग! तुममिमं भोत्तुं । विसकम्मणाऽऽइभोगे वि, निब्भओ भमसु निस्संकं ॥७४॥
गहिया ताराचंदेण, सायरं तयणु खयरमिहुणम्मि । गयणयलं उप्पइए, सा उवभुत्ता पहिट्ठेण ॥७५॥
ओयरिओ सेलाओ, पगुणसरीरो कमेण गच्छन्तो । पुव्वमहोयहितीरे, रयणपुरं नयरमऽणुपत्तो ॥७६॥
अइकसिणकंतकुंतल-कलावरेहंतसीसमऽइरुइरं । रूवजियकुसुमविसिहं, दट्ठूणं तं च गणियाए ॥७७॥
रूवाऽऽगरिसिवहियियाए, मयणमंजूसनामधेयाए । भणिया जणणी अम्मो!, जइ पुरिसमिमं न आणेसि ॥७८॥
ता जीवियव्वमुज्झामि, निच्छियं मा करेज्जसु विगप्पं । इय भणिए अत्ताए, रायसुओ आणीओ सगिहे ॥७९॥
न्हाणविलेवणभोयण-पमुहपडिवत्तिपुव्वमऽह तत्थ । वुत्थो तीए सद्धिं, सुचिरं सो नियगेहि व्व ॥८०॥
नवरं अत्ता जंपइ आ पावे मुद्धि मयणमंजूसे! । समणं य निद्धणं धरसि, कीस एयं तुमं पहियं ॥८१॥
पणरमणीणं वच्छे, कुलक्कमो एस जं न धणहीणो । कामिज्जइ वज्जहरो वि, अहव मीणज्झओ वि सयं ॥८२॥
धूयाए जंपियं अम्म!, तुज्झ पायप्पसायओ होही । आसत्तवेणियं धण-मिमं पि किं काहिसि परेण ॥८३॥
अह निट्ठुरेहिं वयणेहिं, तज्जिया वारिया य सा बहुसो । जा नेव तं विमुंचति, अत्ताए चिन्तियं ताव॥८४॥
एयम्मि जीवंते पडिवज्जइ मज्झा नेव वयणमिमा । ता उग्गविसं दाउं, हणामि निहुयं ठियाऽहमिमं ॥८५॥
तो एगम्मि अवसरे, उग्गविसुम्मिस्सचुन्नयसणाहो । तंबोलबीडगो से, उवणीओ तीए पणएण ॥८६॥
गहिओ ताराचन्देण, भक्खिओ वि य वियप्परहिएण । जाओ य विसवियारो, न पुव्वगुलियाऽणुभावेण ॥८७॥
हा! कह विसप्पओगे वि, नो मओ एस संपयं पावो । इइ तीए जीयहरणं, पुणो वि से कम्मणं दिन्नं ॥८८॥
तेणाऽवि तस्स गुलियाऽणु-भावओ नो अहेसि जियनासो । अवि अहिययरी आरोग्ग-रूवलच्छी पवित्थरिया ॥८९॥
वज्जाऽऽहय व्व मुसिय व्व, सयणदूरुज्झिय व्व सा तत्तो । करपल्हत्थियवयणा, सोगं काउं समाढत्ता ॥९०॥
भणिया ताराचन्देण, अम्म! तं कीस अज्ज कसिणमुही । पेच्छिज्जसि पढमसमुब्भ-वंतघणपाउससिरि व्व ॥९१॥
तीए भणियं हे वच्छ!, तेण कहिएण को गुणो होही । हियमऽवि सुजुत्तियं पि हु, जं काउं नेव सक्किहसि॥९२॥
तेणं पयंपियं अम्म!, कहसु काहामऽहं तुहं वयणं । तीए वुत्तं पुत्तय!, जइ एवं ता निसामेहि ॥९३॥
सुविसिट्ठलक्खणधरो, रूवी सुगुणो मणोरमसरीरो । तं वच्छ! विसयगिद्धीए, निहणमऽचिरेण पाविहसि ॥९४॥
जं वायामं न करेसि, नेव उवविससि सिट्ठगोट्ठीसु । देवभवणाऽऽसमेसु य, न कयाइ वि जं च परिभमसि॥९५॥
अच्छिन्नविसयवंछाए, वच्छ! गच्छति हरी वि मच्चुमुहं । किं पुण तुमं सरोरुह-मुणालदलकोमलसरीरो ॥९६॥
दुल्लहलंभं पि हु वत्थु-मऽवरमिह संघडेज्ज विहिजोगा । पुरिसरयणाण तुम्हारि-साण कत्तो पुणो घडणा ॥९७॥
ता वच्छ! अहं एयाए, चेव चिंताए सोगसंतत्ता । पइदियहहीयमाणं, दट्ठुं तुममेव वट्टामि ॥९८॥
सच्छसहावत्तणओ, ताराचंदेण पडिसुयमिमं च । नवरं रहम्मि इयरीए, कवडमेयं ति सिट्ठं से ॥९९॥
अह पुव्वट्ठिईए पइ-दिणं पि वट्टंतयम्मि सा तम्मि । चिंतेइ विसाईण वि, अगोयरो एस पाविट्ठो ॥२४००॥
जइ सत्थेण हणिज्जइ, एसो ता मरइ नूण धूया वि । अहह पडियाररहियं, केरिसगं वसणमाऽऽवडियं ॥१॥
इय सोगाऽऽउलहियया, गिहम्मि ठाउं अपारयंती सा । चेडीहिं परिवुडा नयर-परिसरं निग्गया दट्ठुं ॥२॥
पेच्छंती य जहिच्छं, इओ तओ जलहितीरमऽणुपत्ता । दिट्ठं च तत्थ देसं-तराऽऽगयं तीए बोहित्थं ॥३॥
पुट्ठो तव्वासिजणो, कत्तो इममाऽऽगयं कया जाही । तेणं वुत्तं दूराओ आगयं अज्ज निसि जाही ॥४॥
एवं भणिए तीए वि, चिन्तियं होउ सेसचिंताहिं । इह सो आरोविज्जउ, निसाए अइनिब्भरपसुत्तो ॥५॥
वच्चइ य दूरदेसंत-रम्मि जह तह पुणो वि न वलेज्ज । एवं च कए धूया वि, मज्झ नो जीवियं चइही ॥६॥
अह जाणवत्तनाहो, एगंते तीए भासिओ एवं । पुत्तसमेया अहयं, तुमए सह आगमिस्सामि ॥७॥
तेणं पयंपियं अम्ब!, जइ तुमं इच्छसे समागन्तुं । ता मज्झरत्तसमए, अज्जं नावं सरेज्जासि ॥८॥
पडिवन्नं तीए गया य, मंदिरे आगए य निसिमज्झे । निब्भरनिद्दासुत्तो, ताराचंदो ससयणिज्जे ॥९॥

थूयाए पसुत्ताए, सणियं चेडीहिं उक्खिविय नीओ । नावाए एगदेसे, सेज्जाऽऽरूढो च्चिय विमुक्को ॥१०॥
भणिओ य तीए नावाए, नायगो एस मज्झ पुत्तो त्ति । एसा अहं पि एत्तो, तुममेक्को अम्ह सत्थाहो ॥११॥
आमं ति जाणनाहेण, जंपिए भूरिकवडभरिया सा । तज्जणदिट्ठिं वंचिय, जहाऽऽगयं लहु पडिनियत्ता ॥१२॥
मुक्कं च जाणवत्तं, वज्जंताऽऽउज्जघोररसिएण । बुद्धो ताराचंदो य, संभमुब्भंतनयणपुडो ॥१३॥
किं एयं को देसो, कत्थाऽहं को व मम इह सहाओ । इय चिंतन्तो जा नियइ, ताव पेच्छइ महाजलहिं॥१४॥
अच्चंतचंडकोदंड-मुक्ककंडं व सिग्घवेगेण । आपूरियसियवडयं, गच्छंतं जाणवत्तं पि ॥१५॥
विम्हियमणो य चिन्तइ, छायाखेड्डं व इंदजालं व । अविभावणिज्जरूवं, किमिव ममाऽऽवडियमिममऽहवा॥१६॥
चिंताऽइक्कंतमऽवयण-गोयरं विहलपुरिसवावारं । अघडंतघडणरइणो, हयविहिणो विलसियं किं पि ॥१७॥
ता होउमिण्हि एयं पि, किं पि किं एत्थ विहलचिन्ताए । इति भाविऊण पुणरवि, सुत्तो सेज्जाए निच्चिन्तो॥१८॥
अह उग्गमंतरविमंडलम्मि, अत्ताए विलसियं नाउं । सुपसन्नवयणकमलो, सेज्जाए समुट्ठिओ संतो ॥१९॥
नावाऽहिवेण चिररूढ-गाढपणएण बालमित्तेण । कुरुचंदेणं दिट्ठो, झडत्ति तह पच्चभिन्नाओ ॥२०॥
आलिंगिऊण गाढं, ससंभमं पुच्छिओ य सो तेण । अच्छरियमिमं कत्तो, वयंस! तुह एत्थ आगमणं ॥२१॥
कत्थ व एत्तियकालं, सावत्थीओ विणिक्खमित्ताणं । भमिओ सि कह व संपइ, पुणन्नवंगो तुमं जातो ॥२२॥
ताराचन्देण ततो, ता नयरीनिग्गमाओ आरब्भ । कहिओ से वुत्तंतो, जाव निसंते पबुद्धो त्ति ॥२३॥
कुरुचन्देण वि सिट्ठो, अत्ताए वइयरो समग्गो वि । तो नायतप्पवंचो, ताराचन्दो विचिन्तेइ ॥२४॥
अन्नं जपंति कुणंति, अन्नमऽन्नं नियन्ति ससिणेहं । नेहरहिया विकामिंति, अन्नमित्थीण थी! चरियं ॥२५॥
मायंगाण वि गंडं, जाओ चुंबंति दाणलोभेण । भमरीओ विव जुवईण, ताण किं एत्थ वयणिज्जं ॥२६॥
अहवा गिरिसिरनिवडंत-सरियकल्लोलचंचलमणाण । कवडकुडीणं रामाण, नूण एसो च्चिय सहावो ॥२७॥
इइ चिन्तिऊण भणियं, हंहो कुरुचन्द! कहसु नियवत्तं । किं एत्थ तुहाऽऽगमणं, गमणं च पुणो कहिं होही॥२८॥
कह वा ताओ, निवसति, अवि कुसलं सयलरायचक्कस्स । सुत्था सावत्थी वि य सगामपुरजणवया थणियं॥२९॥
कुरुचन्देणं भणियं, रायाऽऽएसेण एत्थ रयणपुरे । आओम्हि संपयं पुण, सावत्थीए गमिस्सामि ॥३०॥
कुसलं च रायचक्कस्स तह य नयरीए जणवयजुयाए । तुह गाढविरहदुहियं, एक्कं मोत्तुं महीनाहं ॥३१॥
जद्दियहाओ तं निग्गओ सि, तत्तो वि पेसिया पुरिसा । सव्वदिसासुं रन्ना तुज्झ पउत्तीए लहणऽत्थं ॥३२॥
ता रयणपुराऽऽगमणं, जायं मे बहुफलं महाभाग! । जं लद्धो तुममिण्हिं, पुन्नेणाऽतक्कियाऽऽगमणो ॥३३॥
इओ य—
ताराचन्दं सयणे, पडिबुज्झिय झत्ति मयणमंजूसा । अनियंती हा पिययम!, कहिं सि इति जंपिरी जाव॥३४॥
रोविउमाऽऽरद्धा! ताव, तीए अत्ताए रयणऽलंकारं । अवहरिऊणं भणिया, अच्छिन्नं रुयसि किं वच्छे! ॥३५॥
तीए कहियं पेच्छामि, एत्थ नो हिययवल्लभं अम्मो! । तो कवडेण पलोइय, सबाहिरऽब्भंतरं गेहं ॥३६॥
अत्ताए आउलाए, वुत्तं सो वि हु न रयणऽलंकारो । दीसइ मन्ने तं गिण्हि-ऊण सो अज्ज नट्ठो त्ति ॥३७॥
आ पाविट्ठि! सुमुट्ठाऽसि, तेण जोग्गाऽसि एत्तियस्स तुमं । जा वारिया वि बहुसो, अणुरत्ता निद्धाणे पहिए॥३८॥
एमाइ पवंचपहाण-वयणनिवहेण तज्जिया तीए । तह सा जह जायभया, सहसा मोणं समल्लीणा ॥३९॥
एत्तो य जलहिपारे, पत्ता नावा समुज्झिउं तं च । कुरुचंदेण समेओ, ताराचन्दो रहारूढो ॥४०॥
वच्चंतो कालेणं, पत्तो सावत्थीनयरीबाहिम्मि । जाणियतदागमेणं, पिउणा य पवेसिओ गेहे ॥४१॥
पुट्ठो नियवुत्तंतं कहिओ सयलो वि से कुमारेण । तुट्ठेण तओ रन्ना, कओ अमच्चो उ कुरुचन्दो ॥४२॥
सुपसत्थवासरम्मि, ताराचन्दो निवेसिओ रज्जे । सयमऽवि कयपव्वज्जो, मरिऊण सुरालयं पत्तो ॥४३॥
पउररहजोहवारण-तुरंगवड्ढंतकोसकोट्ठारो । राया ताराचन्दो, निरवज्जं रज्जमऽणुहवइ ॥४४॥
चारणमुणिपुंगवकहिय-धम्ममेगग्गमाणसो कुणइ । अच्चन्तभावसारं, पूयइ य जिणिंदबिंबाइं ॥४५॥
अह एगम्मि अवसरे, बहुस्सुया सूरिणो विजयसेणा । अणिययविहारवित्तीए, आगया तत्थ विहरंता ॥४६॥

महईए विभूईए, ताराचन्देण वंदिया ते य । दिन्ना वसही सगिहे, सविसेसं धम्मसवणट्ठा ।।४७।।
तो अणवरयं नयभंग-संगयं बहुवियारभारसहं । जुत्तीहिं अविरुद्धं, सिद्धंतमऽविस्समं सुणइ ।।४८।।
इय अणवरयं समयं, सुणमाणेणं सया वि नरवइणा । संलेहणाऽवसाणो, मुणिओ गिहिधम्मपरमऽत्थो ।।४९।।
पडिबुद्धा अन्ने वि य, तन्नयरिनिवासिणो बहुलोगा । सद्धम्मविमुहचित्तं, एक्कं मोत्तूण कुरुचन्दं ।।५०।।
तं च तहाविहमवलोइऊण, रन्ना विचिन्तिमिमस्स । नो उवगारो जातो, मए समं धम्मसवणेऽवि ।।५१।।
जइ पुण गेहसमीवे, ठिएहिं सूरीहिं होज्ज धम्ममई । एयस्स पइखणं चिय, मुणिकिरियाऽऽलोयणवसेण ।।५२।।
ताहे वाहरिऊणं, कुरुचन्दो भासिओ नरिंदेण । हंभो देवाणुप्पिय!, जंगमतित्थं इमे गुरुणो ।।५३।।
ता एयाणं नियमन्दिरम्मि, थीपसुविवज्जिए देहि । वसहिं तयणु निसामेहि, धम्ममऽरिहंतपन्नत्तं ।।५४।।
धम्मो च्चिय दोग्गइमज्ज-माणमाणवसमुद्धरणधीरो । सग्गाऽपवग्गसुहफल-संपाडणकप्पविडवी य ।।५५।।
सेसं पुण खणभंगुर-मऽसारमच्चन्तमाऽऽहिजणगं च । पियपुत्तमित्तधणदेह-पमुहमेगंतसो मुणसु ।।५६।।
इय भणिए नरवइणा, कुरुचन्दो धम्मकम्मविमुहो वि । उवरोहेणं सगिहे, उवस्सयं देइ सूरीणं ।।५७।।
गुरुणो धम्मुवएसे, सुणेइ पेच्छइ य विविहतवनिरयं । ईसिं पडिबन्धबंधुर-हियओ निच्चं तवस्सिजणं ।।५८।।
तह वि हु न भावसारं पडिवज्जइ वीयरायसद्धम्मं । कम्मगरुयाण किं वा, करेज्ज सुगुरूण संजोगो ।।५९।।
अह कप्पसमत्तीए, ठाणंऽतरमुवगएसु सूरीसु । ताराचन्दो राया, अहिगयजिणसमयसब्भावो ।।६०।।
कारियजिणिन्दभवणो, जत्तापूयाऽऽइकरणनिरयमणो । अणुकंपादाणाऽऽईसु, जहाविहाणेण वट्टंतो ।।६१।।
गेहसमीवनिवेसिय-पोसहसालाए पोसहुज्जुत्तो । अट्ठमीचउद्दसीसुं, अन्नेसु य धम्मदियहेसु ।।६२।।
पासं पिव गिहवासं, कप्पिंतो पावलोयपरिहारी । पवरुत्तरोत्तरगुणेसु, चित्तवित्तिं ठविंतो य ।।६३।।
बाहिरवित्तीए च्चिय चिन्तन्तो रज्जरट्ठवावारं । सच्चरिएसु पयट्टं, अणुमोयंतो य धम्मिजणं ।।६४।।
आराहणाऽभिलासी, निम्मलपरिणामसंगओ सो य । मरिऊण अच्चुए दिव्व-देवरिद्धिं समणुपत्तो ।।६५।।
कुरुचन्दो वि तहाविह-धम्मविहिवज्जिओ पमाई य । अट्टज्झाणोवगओ, मरिउं तिरिएसु उववन्नो ।।६६।।
तत्तो उव्वट्टित्ता, महाऽडवीए पुलिंदगो जातो । सत्थेण समं समणे, वच्चंते पेच्छिउं तत्थ ।।६७।।
एगंतनिलुक्केणं, तेणेरिसगा पुरा मया के वि । आसी दिट्ठ त्ति विचिन्ति-रेण सरिओ सपुव्वभवो ।।६८।।
संभरिया य महागुण-मणिनिहिणो सगिहे वि धारिया मुणिणो । तेहिं पुणरुत्तदिन्ना, सरिया धम्मोवएसा वि।।६९।।
तो चिन्तिउं पवत्तो, महाणुभावेहिं तेहिं तइयाऽहं । सासिज्जन्तो वि तहा, धम्मुज्जोगं न पडिवन्नो ।।७०।।
जइ वि हु महाणुभावेण, राइणा ठाविया मह गिहम्मि । गुरुणो उवयारऽट्ठा, उवयारो तह वि नो जातो ।।७१।।
गुरुकम्मणो कहं मह, एत्तो होही सुधम्मसामग्गी । अहवा किमऽणेण विचिन्ति-एण एवं ठितो वि लहुं ।।७२।।
काऊण अणसणं सास-णं च धरिउं मणम्मि जयगुरुणो । झायंतो ते च्चिय सूरि-णो वि साहेमि नियकज्जं।।७३।।
इय निक्कलंकसम्मत्त-संगतो उज्झिऊण आहारं । कुरुचन्दो सोहम्मे, मरिउं देवत्तमऽणुपत्तो ।।७४।।
एवं वसहिपयाणं, उवरोहकयं पि जणइ कल्लाणं । पाएण परभवम्मि वि, दंसियकुरुचन्दनाएणं ।।७५।।
ता सव्वसंगरहियाण, तियसमहियाण जयजियहियाणं । साहूण वसहिवियरण-परंमुहो कह बुहो होज्ज ।।७६।।
किंच—
साहूण वसहिदाणे, तब्बहुमाणा विसुद्धिभावेणं । अकलंकचरणसेवा, कम्मखओ निव्वुई य भवे ।।७७।।
तहा—
सोम्ममुणिदंसणेणं, केई तद्धम्मदेसणाए परे । तक्कयदुक्करकिरियं, दट्‌ठूणऽन्ने पबुज्झन्ति ।।७८।।
बुद्धा अन्ने पडिबोहयंति, कारिन्ति चेइयघराइं । साहम्मियवच्छल्लं, करेन्ति साहूण विहिदाणं ।।७९।।
एवं तित्थविवड्ढी, थिरया सेहाण तित्थवन्नो य । जीवाणमऽभयदाणं, तम्हा एयम्मि जइयव्वं ।।८०।।
एवं सुगुरुसमीवा-दाऽऽयन्निय भूवई विसिट्ठेसु । वट्टेज्जा किच्चेसुं, निच्चं पि कयं पसंगेण ।।८१।।
इय करणसउणिपंजर-तुलाए संवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ।।८२।।
आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । रायाभिहाणमेयं, पडिदारं अट्ठमं भणियं ।।८३।।

"परिणामनामकनवमद्वारम्" —

पुव्वुत्तगुणगणाऽलं-किओ वि न विणा विसेसपरिणामं । आराहेउं पारइ, पत्थुयमाऽऽराहणं जीवो ॥८४॥
ता परिणामद्दारं, एत्तो भन्नइ दुहा य तं होइ । गिहिसाहुगोयरत्तेण, तत्थ गिहिवग्गविसयस्स ॥८५॥
इहपरभवगुणचिन्ता[१], सुयसिक्खा[२] कालविगमणं चेव[३] । सुयबोहणं च[४] सुट्ठिय-घडणा[५] आलोयणादाणं[६] ॥८६॥
आउपरिन्नाणं पि य[७], अणसणसंथारदिक्खपडिवत्ती[८] । अट्ठप्पडिदाराइं, इमाइं परिणामदारस्स ॥८७॥

"धर्मजागरिकाः इहभव-परभव-हितचिन्तनम्" —

तत्थ य इहभवपरभव-गुणचिन्तादारमेवमऽवसेयं । किर पुव्वदंसियगुणो, रया सामन्नमणुओ वा ॥८८॥
कारियजिणिंदभवणो, पयट्टियाऽणेगधम्मठाणो य । लोगदुगसलहणिज्ज-ट्ठिईए किच्चेसु वट्टंतो ॥८९॥
मंदीकयविसयरई, धम्मे च्चिय णिच्चबद्धपडिबन्धो । अत्थोवज्जणगिह-विविहकज्जवासंगविरयमणो ॥९०॥
सो अन्नया कयाई, पुव्वाऽवररत्तकालसमयम्मि । जागरमाणो सम्मं, सुपसन्नो धम्मजागरियं ॥९१॥
गुरुसंवेगपरिगतो, भववासुव्विग्गमाणसो धणियं । आसन्नभाविभद्दो, निउणं एवं विचिन्तेइ ॥९२॥
अणुकूलकम्मपरिणति-वसेण केणाऽवि अह उ ताव मए । अइदुल्लहो वि लद्धो, जम्मो विउलुज्जलकुलम्मि॥९३॥
अन्नऽन्नगुणगणाऽऽरोवणेक्क-रसियंतकरणवित्तीण । जाया पुणो वि दुलहा, मायावित्ताण संपत्ती ॥९४॥
दिट्ठसुयसत्थपरमऽत्थ-गहणनिउणा य तप्पभावेणं । बुद्धिविज्जाविन्नाण-पयरिसो वि य महं जातो ॥९५॥
निजभुयजुयलबलऽज्जिय-मऽणवज्जमऽवज्जवज्जियविहीए । विनिओइयं जहिच्छं, दविणं पि हु उचियठाणेसु॥९६॥
भुत्ता य कामभोगा, अभग्गपसरं मणुस्सपाउग्गा । निप्फाइया य पुत्ता, तदुचियकायव्वमऽवि विहियं ॥९७॥
एवं सम्माणियसयल-इहभवाऽविक्खणिज्जभावस्स । इहभवियभूरिसद्दाऽऽइ-विसयसम्माणणाविसयं ॥९८॥
आलम्बणभरियस्स वि, इमस्स दुल्ललियमामगजियस्स । अहुणा वि किर किमऽण्णं, विज्जइ आलंबणट्ठाणं ॥९९॥
जं नेगंतेणं चिय, चिन्तामणिकप्पपायवऽब्भहिए । विसयाऽऽसत्तिं मोत्तुं, धम्मे च्चिय निच्चलो होमि ॥२५००॥
अहह! कुसलस्स कस्स वि, विवेगसारस्स भविउकामस्स । पयइगरुयस्स बाढं, भववासुव्विग्गचित्तस्स ॥१॥
संते वि हु भोगाणं, समग्गसामग्गिसमुदए सवसे । तदऽवत्थुचिंतणाओ, तदप्पवित्तिप्पहाणस्स ॥२॥
जम्माउ च्चिय निच्चं, धम्मे च्चिय किच्चबुद्धिणो धणियं । परलोयविसयकिच्चेसु, चेव संजायइ पवित्ती ॥३॥
आसापिसाइयाविणडियस्स, अम्हारिसस्स तुच्छस्स । तव्विवरीयस्स भवा-ऽभिनंदिणो पुण इमा कुमई ॥४॥
एयं न सुयं दिट्ठं पि, नेवमेयं तु नेव अणुभूयं । कत्थवि कयावि सुविणे वि, अहह! विहलो गओ जम्मो ॥५॥
ता ताव इममिममहं, इहं तहिं तं च तं च माणेमि । तदऽसंमाणणजणियं, जेण ण दुक्खं खुडुक्कइ मे ॥६॥
अहवा इमं तयं पि य, अणुभूयं किंतु परिमियं कालं । ता ताव किंपि कालं, करेमि वंछाऽणुरूवमऽहं ॥७॥
कालाइक्कमणेण य, पच्छा वोच्छिन्नवंछरिंछोली । सीईभूओ जं जं, काहं तं तं सुहं होही ॥८॥
को नाम किर सकन्नो, करेज्ज एयं वियप्पणमजुत्तं । पयईए च्चिय करिकलह-कन्नपालीचले जीए ॥९॥

तहा—

एयं करेमि इण्हिं, एयं काऊण पुण इमं कल्ले । काहामि को विचिंतइ, सुमिणयतुल्लम्मि जियलोए ॥१०॥

अन्नं च—

जइ ता तत्तगवेसी, ता अणणुभवे वि माणियं सव्वं । अह न तहा ता तम्माण-णे वि सव्वं अणणुभूयं ॥११॥

जओ—

हियइच्छियाइं जह जह, संपज्जंतीह कह वि जीवाण । तह तह विसेसतिसियं, चित्तं दुहियं चिय वरायं ॥१२॥

किंच—

उवभोगोवायपरो, पसमेउं मणइ विसयतण्हं जो । नियछायऽक्कमणकए, पुरोऽवरण्हे पहावइ सो ॥१३॥

तहा—

सुट्ठु वि भुत्ता भोगा, सुट्ठु वि रमियं पिएहिं दारेहिं । सुट्ठु वि पियं सरीरं, हा जिय! कइया वि मोत्तव्वं॥१४॥
सुचिरं वसिउं सह बंधवेहिं, रमिऊण इट्ठमित्तेहिं । सुचिरं पि सरीरं लालि-ऊण छड्डेवि गंतव्वं ॥१५॥

इट्ठजणो धणधन्नं, भवणं विसया य मणहरणचोरा । एगपए मोत्तव्वा तहा वि किं गयनिमीला मे ॥१६॥
अरिहं देवो गुरुणो य, साहुणो जिणमयम्मि पडिवत्ती । धम्मियसंसग्गी निम्म-लो य बोहो भवविरागो ॥१७॥
एमाइ मए सम्मं, पत्तो परलोयसाहगो वि विही । भवसयपरंपरासु वि, दुल्लंभो मंदपुन्नाणं ॥१८॥
अह पत्ते तम्मि महं, महंतपुन्नेहिं संपयं धम्मो । आराहेउं जुत्तो, विसेसओ अत्तहियहेउं ॥१९॥
तं च न तह काउमणो वि, विविहगिहकिच्चनिच्चपडिबद्धो । पुत्तकलत्ताऽऽसत्तो, तरामि काउं सुनिव्विग्घं ॥२०॥
ता जाव अज्जवि जरा, दूरे वाहीओ नेव बाहिंति । जाव पबलं बलं पि हु, इंदियवग्गो समग्गो य ॥२१॥
जावऽणुरागी लोगो, जाव न चवलत्तणं भयइ लच्छी । जाव न इट्ठविओगो, जाव वियंभेइ न कयंतो ॥२२॥
ताव परिवारदुत्थत्त-भाविजिणधम्मखिंसरक्खऽट्ठा । निप्पच्चवायनिरवज्ज-कज्जसंसाहणट्ठा य ॥२३॥
नियगं कुडुंबभारं, पुत्ते संकामिऊण विहिपुव्वं । सिढिलियतप्पडिबंधो, तप्परिणतिदंसणकएण ॥२४॥
परमगुरुपरमपूया-संपाडणलक्खणं जहाऽवसरं । नियभत्तिसत्तिसरिसं, मोत्तुं दव्वत्थयं सेसे ॥२५॥
सावज्जाऽऽरंभपए, परिच्चइत्ताण तणुयमेत्ते वि । कारावणकरणेहिं, मणेण वायाए काएणं ॥२६॥
पोसहसालमऽइगओ, आगमविहिसुद्धधम्मकिच्चेहिं । सम्मं भावियचित्तो, किं पि हु कालं किल गमेमि ॥२७॥
पच्छा पुत्ताऽणुमओ, संलेहणपुव्वयं जहाऽवसरं । आराहणविहिमऽणहं, सव्वपयत्तेण काहामि ॥२८॥
इय उभयलोगगोयर-गुणचिंतणदारमाऽऽहियं पढमं । एत्तो य पुत्तसिक्खा-दारं लेसेण कित्तेमि ॥२९॥

"पुत्रशिक्षा दापनम्" —

अह पुव्वपवंचियउभय-लोगहियधम्मपरिणइपहाणो । सो गिहवई निवो वा, उज्झिउकामो घरनिवासं ॥३०॥
रयणिविरामबिउद्धं, सव्वाऽऽयरकयपयप्पणामं च । पुत्तं नियगाऽभिप्पाय-संसणट्ठा इय वएज्ज ॥३१॥
पयईए च्चिय पुत्तय!, जइ वि विणीयस्स गुणगवेसिस्स । सुविसिट्ठचेट्ठियस्स य, सिक्खिवियव्वं न तुह अत्थि॥३२॥
अम्मापिऊण तह वि हु, हिओवएसप्पयाणमुववण्णं । ता तं पइ संपइ सप्प-ओयणं किं पि जंपेमि ॥३३॥
वच्छ! सुगुणा वि भद्दसालिणो वि, सुकुलुग्गया वि नरवसभा । उव्वणजोव्वणगहनिहय-बुद्धिणो लहु विसीयंति॥३४॥
ससिरविरयणहुयासण-पहापवाहाऽऽहयं पि अणवरयं । विरमइ न मणागं पि हु, जम्हा तारुण्णतिमिरमिमं ॥३५॥
एयम्मि य पसरंते, फुरइ कुवियप्पतारयाचक्कं । पसरइ विचित्तविसया-भिलासकडपूयणानिवहो ॥३६॥
उम्मायघूयसंघा, समुच्छलंति य पावियाऽवसरा । पवियंभइ सव्वत्तो, कलुसमई वग्गुलीवग्गो ॥३७॥
सज्जो पमायखज्जोय-या वि विलसंति पत्तपहपसरा । वग्गइ कुवासणापंसु-लीण सत्थो [1]अणुप्पित्थो ॥३८॥
तह वच्छ! दप्पदाह-ज्जरो वि सिसिरोवयारनिरुवसमो । जलण्हाणाऽणुत्तारो, दढरागमलाऽवलेवो वि ॥३९॥
तह विसयविसवियारो, अनिवारो मंततंतजंताणं । लच्छिमयंऽधत्तं पि हु, असज्झमंऽजणपओगाणं ॥४०॥
विसयसुहसन्निवाओ-ब्भवा य निद्दा निसाऽवसाणे वि । अप्पडिबोहा इह वच्छ!, निच्छियं जायइ जणाणं ॥४१॥
पुत्तय! तुमंपि तरुणो, उदग्गसोहग्गसंगयसरीरो । पवरिस्सरियसणाहो य, नूणमाऽऽबालकालातो ॥४२॥
अप्पडिमरूवभुयबल-साली विन्नाणनाणसंपन्नो । एवंगुणो य एएहिं, चेव हीरिज्जसि गुणेहिं ॥४३॥
न जहा तह वट्टेज्जसु, एक्केक्को वि हु गुणो जओ एसिं । दुव्विणयकारणं किं, पुणेसि सव्वेसिं समवाओ॥४४॥
ता पुत्त! परित्थीपेच्छणम्मि, आजम्मचक्खुवियलेण । परमम्मजंपणम्मि, सया वि अच्चंतमूएण ॥४५॥
अस्सच्चवयणसवणे, बहिरेणं पंगुणा कुसंचरणे । आलस्ससंगएणं, सव्वासु असिट्ठचेट्ठासु ॥४६॥
पुव्वाभिभासिणा पाणि-लोयपीडाविवज्जिणा णिच्चं । वितहाऽभिणिवेसपरं-मुहेण गंभीरभावेण ॥४७॥
उचियमुदारत्तं पि य, समुव्वहंतेण परियणपिएण । लोगाऽणुवित्तिजुत्तेण, उज्जमंतेण धम्मम्मि ॥४८॥
सुमरंतेणं चिरपवर-पुरिसचरियाइं तदणुसारेण । संचरमाणेण सया, वड्ढिंतेणं च कुलकित्तिं ॥४९॥
गुणकित्तणं कुणंतेण, गुणिजणाणं पमोयमऽणुसमयं । धारेंतेणं धम्मिय-जणम्मि परिहारिणाऽऽणत्थे ॥५०॥
कल्लाणमित्तसंसग्गि-कारिणा कुसलसयलचेट्ठेण । सव्वत्थ लद्धलक्खेण, पुत्त! होयव्वमऽणवरयं ॥५१॥
इय वट्टंतो पुत्तय!, पियामहप्पमुहपुरिसकमपत्तं । माणेसु विभूइमिमं, चिरभवसुकयाऽणुसारेण ॥५२॥

1. अणुप्पित्थो = अत्रस्तः ।

अंगीकरेसु सयलं, कुडुंबभारं विहेहि तच्चिंतं । अब्भुद्धरेसु बंधव-जणं पि पीणेसु पणइगणं ॥५३॥
अप्पोवरिसंकामिय-समग्गकायव्वभारमऽहुणा मं । पकरेसु वच्छ! संपइ, तुह जुत्तं वट्टिउं एवं ॥५४॥
उक्खित्तसव्वभारस्स, तुज्झ अहयं तु संनिहिम्मि ठिओ । कल्लाणवल्लिजलकुल्लि-तुल्लसद्धम्मगुणनिरओ ॥५५॥
तुह सच्चरियकलावाऽ-वलोयणत्थं कियंतमऽवि कालं । चिट्ठामि तयणु तुह अणु-मईए संलेहणं काहं ॥५६॥
इच्चेवमाऽऽइयाहि गिराहिं कंताहिं तह मणुन्नाहिं । सुयमऽपडिवज्जमाणं, दढपिइपडिबंधभावेण ॥५७॥
पडियज्जाविय सम्मं, दंसियभूमीगयं पि निहिनिवहं । जाणाविऊण लेक्खग-मह वहिगासंपुडाऽऽइगयं ॥५८॥
दावाविऊण दायच्च-मऽत्थमुग्गाहिऊण लब्भं च । घरभारनायगत्ते, ठवेज्ज सयणाऽऽइपच्चक्खं ॥५९॥
नवरं किं पि हु वित्तं जिणभवणमहूसवाइकरणत्थं । साहारणजोग्गं किंचि, किंचि सयणाण पाउग्गं ॥६०॥
किंचि सविसेससीयंत-संतसाहम्मिओवठंभऽत्थं । किंचि वि अहिणवपडिवन्न-धम्मसम्माणणनिमित्तं ॥६१॥
भइणीधूयाजोग्गं च-किंचि दीणाऽणुकंपगं किंचि । उवयारिमित्तबंधव-उद्धरणणिबंधणं किंचि ॥६२॥
धारेज्ज सहत्थे च्चिय, सुसावगो संकिलेसचागऽट्ठा । इहरा जिणभवणाऽऽइसु, निउंजिउं नेव पभवेज्जा ॥६३॥
इय सामन्नगिहीविही, राया पुण सोहणे तिहिमुहुत्ते । रज्जाऽभिसेयपुव्वं, पुत्तं सपए निवेसित्ता ॥६४॥
कुज्जा सव्वसमप्पण-मुवदंसेज्जा नयक्कमं णिउणं । सामी मंती रट्ठं, एमाई पुव्वविहिणा उ ॥६५॥
सामंतमंतिसेणाऽहिवाण, पयईण सेवगाणं पि । नरवइणो वि य साहा-रणं च सिक्खं पयच्छेज्जा ॥६६॥
एवं कयकायव्वो, पुत्ताऽऽरोवियसमत्थकज्जभरो । पवरुत्तरोत्तरगुणे, आराहेज्जा जहाऽभिमए ॥६७॥
जो पुण धम्मपवत्तो वि, निम्मलाऽऽराहणाऽभिलासी वि । पुव्वुत्तविहाणेणं, नरेज्ज सुयस्स सिक्खवणं ॥६८॥
नेव य मुच्छाऽऽइवसा, उवदंसेज्जा सविहववित्थारं । सो तस्स कम्मबंधाय, होज्ज वइरो व्व केसरिणो ॥६९॥
तहाहि— "पुत्रस्य अशिक्षणे दोषोपरिवज्र-केसरिदृष्टान्तः"
कुसुमत्थलंमि नयरे, धणसारो नाम आसि वरसेट्ठी । नियसमुद्धररिद्धीए, दूरमुवहसियवेसमणो ॥७०॥
उवजाइयसयतोसिय-देवयदिन्नो अणामयसरीरो । वइरो नामेण सुओ, अहेसि एक्को परं तस्स ॥७१॥
सो पुण समहिगयकलो, पिउणा तरुणत्तणं समणुपत्तो । परिणाविओ महेसर-सेट्ठिसुयं विणयवइकन्नं ॥७२॥
अह विज्जुलयासरयऽब्भ-चंचलत्तेण सव्वभावाणं । हरिचक्किसक्कविक्कम-अगोयरत्तेण मच्चुस्स ॥७३॥
पइखणविणाससीलत्तणेण, अच्चंतमाऽऽउकम्मस्स । धणसारो नियपए, तं ठविउं मरणमऽणुपत्तो ॥७४॥
हा ताय! परमवच्छल!, गुणणिवहनिवास! पणइकयतोस! । पुरलोयलोयणोवम!, कत्थ गतो देहि पडिवयणं ॥७५॥
हा ताय! तायसु ममं, विओगवज्जाऽसणीए भिज्जंतं । हियं हिययसुहावह!, नियपुत्तमुवेहसे कीस ॥७६॥
ताय! तए सग्गगए, गयाइ पंच वि इमाइं सग्गंमि । गंभीरत्तं खंती सच्चं विणओ नओ य धुवं ॥७७॥
ताय! तुह विप्पयोगे, न दुक्खमेक्को अहं चिय पवन्नो । विफलियमणोरहो पइ-दिणं पि नणु मग्गणगणो वि॥७८॥
इय जंपिरेण पामुक्क-दीहपोक्केण सोगविहुरेण । वइरेण पारलोइय-किच्चमसेसं कयं तस्स ॥७९॥
पइदिणदंसणसारत्तणेण, पेम्माऽणुबंधबुद्धीणं । कालक्कमेण ववगय-सोगाऽऽवेगो य सो जातो ॥८०॥
पुव्वपवाहेणं चिय, कुडुंबचिंताए लोयववहारे । दाणाऽऽईसु य वट्टइ, नो खंडइ पुव्वपुरिसकमं ॥८१॥
नवरं लच्छी तुच्छत्त-मुवगया नाऽऽगया वणियपुत्ता । देसंतरेसु चिरकाल-पेसिया लाभकज्जेण ॥८२॥
निहिणो सुन्नीहूया, वड्ढिपउत्तो खयं गतो अत्थो । धन्नाऽऽइसंचया वि हु, निद्दड्ढा तिव्वजलणेण ॥८३॥
जं जत्तो तं तत्तो, पुन्नविवज्जयवसेण से नट्ठं । सयणो वि परजणो इव, सव्वो वि परंमुहीहूओ ॥८४॥
इय छायाखेड्डं पिव, सुमिणुवलद्धं व सो पलोइत्ता । दव्वाइसरूवं जाय-पउरसोगो विचिंतेइ ॥८५॥
परिचत्तकुसंगस्स वि, थीजूयविवज्जिणो वि ही! मज्झ । नायट्ठियस्स वि कहं, सव्वमऽचक्कंतमऽत्थाई ॥८६॥
अहवा वच्चउ अत्थो, विज्जुज्जोउ व्व चंचलसहावो । अनिमित्तमेव सयणा वि, कीस विवरंमुहीहूया ॥८७॥
हुं नायं सयणा वि हु, धणभंगे कज्जसिद्धिविरहेण । दंसिंति कह वरागा, पणयं मइ रोरतुल्लम्मि ॥८८॥
ताव च्चिय सयणा बंधवा य, मित्ता य होंति मणुयस्स । जाव न मुच्चइ कुवलय-दलदीहऽच्छीए लच्छीए॥८९॥

थणवज्जियस्स य ममं, एत्तोऽवत्थाणमेत्थ नो जुत्तं । परमा विडंबणा का वि, पुव्वकमखंडणा जेण ॥९०॥
इइ चिंतिऊण तेणं, कहिओ खेमिलगनामधेयस्स । मित्तस्सऽन्नत्थगमा-ऽभिलसरूवो सवुत्तंतो ॥९१॥
मित्तेण जंपियं जुत्त-मेव देसंतरंमि तुह गमणं । नवरं अहं पि तुमए, समगं चिय आगमिस्सामि ॥९२॥
तो दो वि नियपुराओ, विणिक्खमित्ता सुवन्नभूमीए । ते सिग्घगईए गया, पारद्धा तत्थ य उवाया ॥९३॥
अत्थोवज्जणकज्जेण-ऽणेगसो अह कहं पि विहिवसओ । खेत्ताऽणुभावओ विय, उवज्जियं केत्तियं पि धणं॥९४॥
तेण य धणेण रयणाइं, अट्ठ गहियाइं पवरमुल्लाइं । सुमरिय गिहाय तत्तो, विणियत्ता नियपुराऽभिमुहं ॥९५॥
इंताण य अद्धपहे, अइपबलत्तेण लोहपसरस्स । खेमिलगस्स पयट्टा, समत्थरयणग्गहणवंछा ॥९६॥
कह वंचिस्सामि इमं, कह व गहिसामि सव्वरयणाइं । अणवरयमेगचित्तो, चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥९७॥
अह एगम्मि दिणम्मि, गामस्संऽतो गयम्मि वइरम्मि । रयणऽट्ठयगंठिसमा, अंतो पक्खित्तलेट्टुदला ॥९८॥
रइया अवरा गंठी, वइरस्स इमं समप्पइत्ताणं । रयणीए वच्चिस्सं, इति चिन्तेऊण पाविट्ठो ॥९९॥
सो जाव गंठिजुयलं, संजमइ ससंभमं लहुं ताव । वइरो समागतो भणइ, मित्त! किं कुणसि तुममेयं ॥२६००॥
किं दिट्ठोऽहमऽणेणं ति, संकिएणाऽवि नियडिनिउणेण । तेणं पयंपियं मित्त!, कुडिलरूवा हि कम्मगई ॥१॥
सच्छंदविलसियाइं, विहिस्स चिंतापहे वि न पडंति । जं सुमिणे वि न दीसइ, तं पि बला कुज्जमाऽऽवडइ॥२॥
एवं विभाविऊणं, कयं मए रयणगंठिजुयलमिमं । मा एगट्ठाणठियं, पणस्सिही कहवि हत्थाओ ॥३॥
ता नियरयणचउक्कस्स, गंठिमेगं तुमं धरसु हत्थे । अवरं च अहं धारेमि, होउ दढरक्खणा एवं ॥४॥
इति संसिऊण-सम्मोहमूढहियएण वइरत्थम्मि । साररयणाण गंठी, बद्धा इयरा य नियगकरे ॥५॥
तो तत्थेव पसुत्ता, संपत्ते कहवि मज्झरत्तम्मि । तं लेट्टुगंठिमाऽऽदाय, खेमिलो निग्गओ तुरियं ॥६॥
गंतुं जोयणसत्तग-मुच्छोडइ जाव तं रयणगंठिं । ता पेच्छइ पुव्वनिहित्त-लेट्टुसयलाइं से अंतो ॥७॥
हा असिवत्तुक्कत्तिय-सच्छंदुद्दामविलसियसहाव! । पावविहि! किमिव तुमए, मम चिंतियमऽन्नहा विहियं ॥८॥
हंदि पुव्वभवुब्भूय-भूरिपावस्स दुक्खदाइत्तं । मित्तवियोगत्थकयं फलजणगत्तेण निव्वडियं ॥९॥
मन्ने सुद्धसहावस्स, तस्स मित्तस्स वंचणाजणियं । पावं इह जम्मे च्चिय, उवट्ठियं [1]पत्तपागं व ॥१०॥
एवं समुल्लवन्तो, सोगमहाभरसमोत्थयसरीरो । संजमिओ इव वज्जा-हउ व्व ठाऊण खणमेक्कं ॥११॥
अच्चंतछुहाऽभिहओ, मग्गपरिस्समकिलामिओ बाढं । भिक्खं भमिउमऽसत्तो, गिहम्मि एगंमि य पविट्ठो ॥१२॥
भणिया तग्गिहविलया, अम्मो! मे देहि भोयणं किंपि । आसऽग्गलाए खलियं, जावऽज्ज वि जाइ नो जीयं॥१३॥
तद्दीणवयणसवणुब्भवंत-करुणाए तीए सप्पणयं । आरद्धं दाउं नवर-माऽऽगओ झत्ति गिहनाहो ॥१४॥
सो तं च पजेमंतं, पेक्खिय रोसाऽरुणच्छिविच्छोहो । आ पावे! मइ गेहाउ, निग्गए पोससि विडे तं ॥१५॥
इय निब्भच्छिय गिहिणिं, खेमिलमुवणेइ रायपुरिसाण । एसो अकज्जकारित्ति, तेसिं पुरतो निवेइत्ता ॥१६॥
भयकंपंतसरीरो, विच्छायमुहो य सो तओ तेहिं । कहिओ जारो त्ति निवस्स, तेण वज्झो य आणत्तो ॥१७॥
तो विरसमाऽऽरसंतो, सो नीओ तेहिं वज्झठाणम्मि । भणितो य इट्ठदेवय-मऽणुसुमरसु रे! तुममियाणिं ॥१८॥
भयवसविसंठुलंऽतक्ख-राए वाणीए किंपि जंपंतो । उल्लंबिउं विमुक्को, दीहररज्जूए रुक्खम्मि ॥१९॥
अह जावज्जऽवि नीहरइ, नेव जीयं कहंपि तुडिजोगा । ता उल्लंबणरज्जू, तुट्टा पडिओ य सो झत्ति ॥२०॥
सिसिरवणमारुएणं, मणागमाऽऽसासिओ खणद्धेण । मरणमहाभयविहुरो, ठाणाउ तओ लहुं चलिओ ॥२१॥
जाव य केत्तियमेत्तं पि, भूमिभागं स जाइ वेगेण । ताव तमालमहातरु-तलम्मि पेच्छइ मुणिं एगं ॥२२॥
सज्झायं कुणमाणं, वरविणावेणुविजइवाणीए । तस्सवणऽक्खित्तकुरंग-वग्गसेविज्जमाणपयं ॥२३॥
तो अच्छरियब्भूयं, तं वंदित्ता महीए उवविट्ठो । जोगो त्ति लक्खिऊणं, मुणिणा वि पयंपिओ एवं ॥२४॥
हंभो देवाणुप्पिय!, अणाइसंसारमऽणुसरंताण । जीवाण वंछियत्था, के वि य सिज्झन्ति कह वि परं ॥२५॥
भत्ती जिणेसु मेत्ती, जिएसु तत्ती गुरुवएसेसु । पीई सीलगुणड्ढेसु, तह मई धम्मसवणम्मि ॥२६॥

1. पत्तपागं = प्राप्तविपाकम् ।

परउययारे वित्तं चित्तं परलोयकज्जचिंताए । धम्मपहाणो जम्मो, निरुवमपुन्नाण जइ होइ ॥२७॥
लद्धे वि दुल्लहे माणु-सत्तणे धम्मगुणविहूणाण । वोलेंति जाण दियहा, विहल च्चिय ताण ते नेया ॥२८॥
ताण वरमऽजणणं चिय, जणणे वि हु वरमऽरन्नपसुभावो । धम्मगुणविरहिएहिं, जेहिं जम्मो कओ विहलो ॥२९॥
आसन्नं चिय जेसिं, महाणुभावाण भाविभद्दत्तं । धम्मपवित्तिपहाणाइं, जंति तेसिं चिय दिणाइं ॥३०॥
ते च्चिय धन्ना ते पुन्न-भाइणो ताण जीवियं सहलं । धम्मुज्जयाण जेसिं, रमइ मई नेव पावेसु ॥३१॥
एवं मुणिणा कहिए, नियदुच्चरिएण जायवेरग्गो । पव्वज्जं पडिवज्जइ, खेमिलगो सुद्धभावेण ॥३२॥
एत्तो य सो महप्पा, वइरो मित्ताऽवलोयणं काउं । तव्विरहहुयवहाऽऽउल-देहो कह कहवि दीणमणो ॥३३॥
कुसुमत्थलंमि पत्तो, कयं च से पारलोइयविहाणं । रयणविणिवट्टणेण य, जाया पउरा समिद्धी य ॥३४॥
भोगे भुंजंतस्स य, जातो कालक्कमेण से पुत्तो । सुपसत्थवासरम्मि, अभिदाणं केसरि त्ति कयं ॥३५॥
अणुकूलयाए कम्मोदयस्स, थेवुज्जमे वि निरवज्जा । धणसंपत्ती जाया, सयणा वि हु सम्मुहीहूया ॥३६॥
तो तेण चिंतियं लच्छि-वज्जिओ सव्वहा इहं मणुओ । तूललवकासकुसुमं व, नूणं लहुयत्तणमुवेइ ॥३७॥
ता एत्तो उवरि मए, रक्खेयव्वं धणं सजीवियं व । एएण विणा नूणं, पुत्तो वि हु परिभवं कुणइ ॥३८॥
इति चिंतिऊण सव्वो, अत्थचओ सायरं सहत्थेण । निक्खित्तो धरणियले, सुयं पि दूरे ठविंतेण ॥३९॥
अह अन्नया कयाइ, सो खेमिलगाऽभिहाणसाहुवरो । सुत्तऽत्थपारगामी, विचित्ततवसोसियसरीरो ॥४०॥
अणिययविहारचरियाए, विहरेमाणो समागतो तत्थ । वइरेण वंदिओ तह, कह कहवि य पच्चभिन्नाओ ॥४१॥
अवितक्कियतदुवागम-वट्टंताऽऽणंदसंदिरऽच्छेण । भणिओ य सबहुमाणं, भयवं! को एस वुत्तंतो ॥४२॥
पावेण मए तुज्झं, पंचत्तगमो वितक्किओ आसि । तह तेसु तेसु ठाणेसु, पेहणेण वि अदिट्ठस्स ॥४३॥
ताहे मुणिणा निच्छउम-मेव सव्वा जहट्ठिया वत्ता । नियगा सवित्थरं तस्स, संसिया सच्छहियएण ॥४४॥
आयन्निऊण य इमं, परमं विम्हयमुवागओ वइरो । पडिबोहिओ य मुणिणा, विचित्तजुत्तीहिं वयणेहिं ॥४५॥
अब्भुवगओ य तेणं, संसारुव्वेयमुव्वहंतेण । सग्गापवग्गहेऊ, धम्मो सव्वन्नुपन्नत्तो ॥४६॥
पालेइ निरइयारं, तं च पयत्तेण परमसाहुजणं । अच्चंतभत्तिजुत्तो, पइदियहं पज्जुवासइ य ॥४७॥
थेरत्तंमि य पत्ते, तेण सुओ केसरी नियवठाणे । ठविओ सयं च पवरो, पारद्धो धम्मकम्मविहि ॥४८॥
नयरं सुचिरायासेणु-वज्जियं निहिगणं महिनिहित्तं । मुच्छावसेण साहइ, पुच्छिज्जंतो वि न सुयस्स ॥४९॥
अज्जं कहेमि कल्लं, कहेमि एवं पयंपइ सया वि । जाणंतो वि हु नियजीवि-यव्वमऽइथोयदियहथिरं ॥५०॥
सत्तोवरोहरहिए गिहेगदेसे य पोसहाऽऽईहिं । आराहणाभिलासेण, चित्तपरिकम्मणं कुणइ ॥५१॥
पुत्तो वि पियरमऽच्चंत-थेरमुवलक्खिउं पइखणं पि । अत्थं पुच्छइ सो विय, अच्छइ सामाइयंमि ठिओ ॥५२॥
नो किंपि कहइ अह सो, अन्नम्मि दिणम्मि मरणमऽणुपत्तो । इयरो य तेण दुक्खेण, दुक्खिओ जायवियलमणो ॥५३॥
हा! हा! निहिणो धरणीए [1]सोत्थया ते कहं मुहा विगया । हा! हा! अणज्ज हे ताय!, पुत्तवेरी तुमं परमो ॥५४॥
धी धी धम्मो वि हु तुज्झ, मूढ! धी धी विवेयसारो ते । इय विलवंतो संतो, मरिउं तिरियत्तणं पत्तो ॥५५॥
इय सो धम्मत्थी वि हु, जातो पुत्तस्स कम्मबंधाय । धम्मत्थीणं पुण कम्म-बंधहेउत्तणमऽजुत्तं ॥५६॥
तेणं चिय भुवणगुरु, वीरो तह वरिसयालमज्झे वि । अन्नत्थ विहरिओ ताव-साणमऽप्पत्तियं नाउं ॥५७॥
ते धन्ना सप्पुरिसा, ते च्चिय सद्धम्मकम्मपडिवन्ना । जे नो होंति निमित्तं, जीवाणं कम्मबंधस्स ॥५८॥
बहुभवपरंपरावेर-वज्जणट्ठा सुयं ठवेऊण । जत्तेण समाहीए, ता धम्मम्मि जएज्ज गिही ॥५९॥
इय पुत्तसिक्खपडिदार-मेत्थ बीयं इमं समक्खायं । एत्तो य कालविगमण-पडिदारं तइयमऽक्खामि ॥६०॥

"कालनिर्गमनद्वारम्" —

सो पुव्वुत्तो सड्ढो, राया वा पुत्तनिहियनिययपओ । तप्परिणइमवलोइउ-कामो जा किंपि किर कालं ॥६१॥
अच्छिउमिच्छइ ता सव्व-सत्तसंताणबाहरहियम्मि । सच्चरियजणाऽहिट्ठिय-पेरंते पयइसोमंमि ॥६२॥
सुविवित्तंमि पएसे, परिवाराऽणुमयसुद्धचित्तेणं । परिसुद्धेण दलेण य, विड-विलयासंगपरिमुक्कं ॥६३॥

1. सुस्थिताः = सुगुप्तं स्थिताः।

सुविसिट्ठमट्ठथिरथोर-थंभमऽइघणकवाडसंपुडयं । मसिणसमभित्तिभागं, सुमट्ठमणिभूमियट्टं च ॥६४॥
सुकरपडिलेहपमज्जणं च, पविसंतसत्तचित्तकरं । बहुसावगपाउग्गं, तिकालसाहारणसरूवं ॥६५॥
उच्चारभूमिजुत्तं, पायमहारोगिलोगपडियारं । सद्धम्मोसहसालं, पोसहसालं करावेज्जा ॥६६॥
अहया पारद्धविसुद्ध-धम्मकरणोचियं पुरा सिद्धं । पेहेज्ज किंपि गेहं, तं चिय पगुणं करायेज्जा ॥६७॥
तत्थ य पसत्थधम्मऽत्थ-चिंतणक्खित्तचित्तवावारो । सावज्जकज्जपरिवज्ज-णुज्जओ पायमाऽऽसज्ज ॥६८॥
कइया वि वायणाए, कइया वि य पुच्छणाए कइया वि । परियट्टणाए कइया वि, सत्थपरमऽत्थचिंतणए ॥६९॥
कइया वि य झाणेणं, मोणेण कयाइ संकुचियगत्तो । वीरासणाऽऽइणा तह, आसणबंधेण कइयावि ॥७०॥
कइया वि दुवालस भाव-णाण परिभावणेण कइया वि । सद्धम्मकहासवणेण नेज्ज कालं समाहीए ॥७१॥
उचियसमए य मुणिणो, सिद्धंतमहारहस्समणिनिहिणो । बहुमाणभत्तिमंतो गंतूणं पज्जुवासेज्ज ॥७२॥
भोयणकाले य तहा, ताय! पसीयह अणुग्गहं कुणह । एह मह मंदिरंमी, संपइ आहारगहणऽत्थं ॥७३॥
इय पुत्तेण सविणयं, आहूओ थिमियमाणसो सणियं । गंतूण घरे विहिणा, रहिओ मुच्छाए भुंजेज्जा ॥७४॥
तह पवरवीरियवसा, सइ सामत्थम्मि अत्तहियकंखी । सविसेसुज्जमजुत्तो, मइमं पडिमाउ पडिवज्जे ॥७५॥
ताओ पुण एक्कारस, संखाए सावगाण भणियाओ । दंसणपडिमाऽऽईया, जिणेहिं इय महियमोहेहिं ॥७६॥

"एकादशपडिमावर्णनम्" —

दंसण[1] वय[2] सामाइय[3], पोसह[4] पडिमा[5] अबंभ[6] सच्चित्ते[7] । आरंभ[8] पेस[9] उद्दिट्ठ-वज्जए[10] समणभूए य[11][दारगाहा] ॥७७॥
पुव्वपवंचियगुणमणि-पसाहिओ सावगो महप्पा सो । पढमं दंसणपडिमं, पडिवज्जइ तीए पुण सम्मं ॥७८॥
मिच्छत्तपंकविघलत्तणेण, थेवं पि कुग्गहकलंकं । नाऽऽयरइ जेण मिच्छत्त-मेव तस्साहणायाऽलं ॥७९॥
होज्ज णऽणाभोगजुओ, न विवज्जययं तहेस धम्मंमि । अत्थिक्काऽऽइगुणजुओ, सुहाऽणुबंधो निरइयारो ॥८०॥
नणु पुव्वपरूवियगुण-गणस्स सुस्सावयस्स सम्मत्ते । विज्जंते वि किमेयं, दंसणपडिमा पुणो भणिया ॥८१॥
भन्नइ इह आगारे, रायाऽभिओगाऽऽइणो वि यज्जेइ । परिपालेइ य सम्मं अट्ठविहं दंसणाऽऽयारं ॥८२॥
इय सविसेसं दंसण-पडिवत्तिपहाणभावमाऽऽसज्ज । दंसणपडिमा पढमा, नायव्वा सावयस्स भवे ॥८३॥
नणु जो निसग्गओ वा, अहिगमओ वा वि जायसुहबोहो । देवगुरुतत्तगोयर-गरुयवियज्जासजणगं ति ॥८४॥
नाऊणं मिच्छत्तं, पच्चक्खइ दंसणं पवज्जइ य । तं पइ पडियत्तिकमो, को णु भवे भण्णए एसो ॥८५॥
स महप्पा दंसणनाण-पमुहगुणरयणरोहणगिरीणं । सुगुरूण भत्तिसारं, कयप्पणामो पयंपेइ ॥८६॥
तुम्ह समीवे भंते!, करणेणं कारणेणऽणुमईए । मणवायाकाएहिं, जावज्जीवं पि मिच्छत्तं ॥८७॥
पच्चक्खिऊण नीसेस-मोक्खसंपाडणेक्ककप्पतरुं । जावज्जीवं सम्मं, सम्मत्तं संपवज्जामि ॥८८॥
अज्जप्पभिइं मज्झं, जावज्जीवं पि परमभत्तीए । सम्मत्तसंठियस्स, होउ इमा भावपडिवत्ती ॥८९॥
अंतरअरिहणणाओ, देवो अरिहं खु देवबुद्धीए । निव्वाणसाहगगुणाण साहणा साहुणो गुरुणो ॥९०॥
जिणपहुपणीयजीवाऽऽइ-तत्तमयसमयसत्थसद्दहणं । निव्वुइपुरप्पयाणे, पउणप्पयवीपडिसमाणं ॥९१॥
होउ य मे पईदिण-मुचियपूयपुव्वं जिणिंदवंदणयं । सुसमाहियमणवइकाय-वित्तिणो तिसु वि संझासु ॥९२॥
धम्माऽभिप्पाएण य, न कप्पए किं पि मह समायरिउं । लोइयतित्थेसु ण्हाण-दाणपिंडप्पयाणाऽऽई ॥९३॥
तह अग्गिहुणणकिरिया, घडियाहडिगाऽऽइजुत्तहलदाणं । संकंतिगहणदाणं, कन्नाहलविसयदाणं च ॥९४॥
संडपरिणयणकरणं, तिलगुलकणगकयथेणुदाणं च । कप्पासपवागोलोह-पमुहदाणं तहऽन्नं पि ॥९५॥
धम्ममईए नाऽहं, दाहं जम्हा अधम्मविसए वि । धम्ममईए निवेसो, नासइ पत्तं पि सम्मत्तं ॥९६॥
जं सम्मत्तं सुत्ते, अविवज्जासो मईए निद्दिट्ठो । सो पुण पुव्वुत्तेसुं, पवत्तमाणस्स कह होइ ॥९७॥
नो मे संपइ कप्पइ, कुतित्थिपडिबद्धदेवलिंगीसु । देवगुरुणो त्ति काउं, पडिवत्ती धम्मबुद्धीए ॥९८॥
नो मह तेसु पओसो, मणयं पि न भत्तिमेत्तमऽवि किंतु । देवगुरुगुणविओगा, तेसु उदासत्तणं चेव ॥९९॥
को नाम किर सकन्नो, कणगगुणविवज्जिए वि वत्थुम्मि । कणगं ति मइं कुज्जा, कणगऽत्थी जइ वि सो गाढं ॥२७००॥
नहि अकणगं पि संतं, जणेण गहियं पि कणगबुद्धीए । कणगप्पओयणाइं, साहेउमऽलं परं वत्थुं ॥१॥

गयरागदोसमोहत्तणेण, देवस्स होइ देवत्तं । तच्चरियाऽऽगमपडिमाण, दंसणा तं च विन्नेयं ॥२॥
सिवसाहगगुणगणगउरवेण, सत्थऽत्थसम्मगिरणेण । इह गुरुणो वि गुरुत्तं, होइ जहत्थं पसत्थं च ॥३॥
एवं नियनियलक्खण-लक्खियफुडदेवगुरुसरूवस्स । तत्थुत्ततत्तपडिवत्ति-रूवसम्मत्तपडिमा मे ॥४॥
भवउ दव्वविसुद्धा, दुल्लंभगुणप्पहाणदव्वेहिं । सत्तीए दंसणंऽगाणं, गउरवेणं पगिट्ठेणं ॥५॥
खेत्तविसुद्धा सव्वत्थ, देवगुरुगोयरा हु पडिवत्ती । तुल्ल च्चिय मज्झ परं, सीयंतेयरविभासाओ ॥६॥
कालविसुद्धा सा निर-इयारपरिपालणेण जाजीवं । भावविसुद्धा वि दढं, हट्ठप्पहट्ठत्तणं जाव ॥७॥
अहवा भावेणेवं, साइणिगहपमुहदोसगयसन्नो । उम्मत्तुक्खयचित्तो य, जाव न भवामि किं बहुणा ॥८॥
जाव य दंसणपडिमा-परिणामो कह वि नोवधायवसा । परिवडइ ताव मज्झं, दंसणपडिमा इमा होउ ॥९॥
एत्तो संकं संखं, वितिगिच्छं तह कुतित्थिसत्थस्स । संथवपसंसणाइ य, वज्जइस्सामि जाजीवं ॥१०॥
नरवइगणबलदेवय-अभियोगा एत्थ मोक्कला मज्झ । वित्तिअभावो पिइमाइ-पमुहगुरुनिग्गहो य तहा ॥११॥
इय कयपडिमापडिवत्ति-सुंदरं सावगं गुरुजणो वि । उव्वूहइ कयपुन्नो, धन्नो य तुमं ति जेण इहं ॥१२॥
ते धन्ना ताण नमो, ते च्चिय चिरजीविणो बुहा ते य । जे निरइयारमेयं, धरंति सम्मत्तवररयणं ॥१३॥
एयं हि परं मूलं, कल्लाणाणं तहा गुणगणस्स । एएण विणाऽणुट्ठाण-मऽफलमुच्छूण पुप्फं व ॥१४॥

अविय— "मिथ्यात्वे अन्धपुत्रस्यदृष्टान्तः"

कुणमाणो वि हु किरियं, परिच्चयंतो वि सयणधणभोए । दिंतो वि दुहस्स उरं, जिणइ न अंधो जह विपक्खं ॥१५॥
तह लिंतो वि निविर्त्ति, परिच्चयंतो वि सयणधणभोए । दिंतो वि दुहस्स उरं, मिच्छदिट्ठी लहइ न सिवं॥१६॥
एत्थ य अंधक्खाणय-मेवं अक्खंति किर वसंतपुरे । नयरे राया नामेण, आसि रिउमद्दणो तस्स ॥१७॥
अंधो अहेसि पुत्तो, पढमो बीओ य दिव्वचक्खु त्ति । अज्झावगस्स पढणऽत्थ-मप्पिया ते य नरवइणा॥१८॥
गंधव्वप्पमुहाओ कलाओ, अंधो त्ति तेण जेट्ठसुओ । जाणाविओ तदियरो, धणुवेयाऽऽईओ सव्वाओ ॥१९॥
अह परिभूयं मुणिऊण अप्पयं, विगयचक्खुणा वुत्तो । उज्झाओ कीस न मइ, सत्थं तुं सिक्खवेसि त्ति ॥२०॥
उज्झाएणं जंपिय-मऽहो महाभाग! चक्खुरहियस्स । कह तुज्झ तमऽहमुज्जो-गिणो वि पारेमि परिकहिउं ॥२१॥
अंधेणं पडिभणियं, जइ वि हु एयं तहा वि मं अहुणा । सिक्खवसु धणुव्वेयं, अह तग्गाढोवरोहेण ॥२२॥
उवइट्ठो गुरुणा से, तेण वि नाओ सुबुद्धिविभवेण । जाओ य सद्दवेही, चुक्कइ न कहं पि लक्खस्स ॥२३॥
एवं ते दोवि सुया, कलासु कुसलत्तणं परं पत्ता । अन्नम्मि य पत्थावे, समागयं तत्थ परचक्कं ॥२४॥
अह सो कणिट्ठपुत्तो, पिउणो आणाए पवरबलकलितो । आहवविहिपरिहत्थो, चलिओ रिउचक्कमऽक्कमिउं ॥२५॥
कह जेट्ठे विज्जंते, काउमिमं जुज्जए कणिट्ठस्स । इति जंपिऊण सामरिस-मऽसमकोवं परिवहंतो ॥२६॥
रिउसेन्नं पइ अंधो वच्चंतो सासिओ इमं पिउणा । वच्छ! नियभूमिगाए उचियं चिय जुज्जए काउं ॥२७॥
न य सुट्ठु कलाकुसलो वि, पबलभुयजुयलबलसणाहो वि । दिट्ठिविरहेण काउं, तुममऽरिहसि समरवावारं ॥२८॥
इच्चाइभूरिवयणेहिं, णेगवाराउ वारिओ वि बहुं । अवगन्निऊण अंधो, दढकंकडनूमियसरीरो ॥२९॥
करडतडपगलियमयं, निबिडगुडाऽऽडोवकप्पणाभीमं । आरुहिऊण गयवरं, निहरिओ झत्ति नयराओ ॥३०॥
सद्दाऽणुसारपम्मुक्क-मग्गणुप्पीलछाइयदियंतो । परचक्केणं सद्धिं, जुज्झेणं संपलग्गो य ॥३१॥
अह सव्वत्तो सद्दाऽणु-सारनिवडंतघायसंघायं । दट्ठूण मुणियतत्ता, रिउणो मोणं समल्लीणा ॥३२॥
रिउसद्दं असुणंतो, तत्तो अंधो पहारमऽकुणंतो । पारद्धो हणिउमऽरीहिं, सव्वओ विहियमोणेहिं ॥३३॥
मोयाविओ य कहकहवि, भाउणा सो सचक्खुणा झत्ति । दिट्ठंतोवणओ इह, पढमं चिय दंसिओ चेव ॥३४॥
पत्थुयमेत्तो भन्नइ, जाजीवं दंसणं गिही घेत्तुं । पच्छा य निरइयारं, दंसणपडिमं पवज्जेइ ॥३५॥
अह तं सम्मं परिपालि-ऊण तग्गुणजुओ पुणो बीयं । वयपडिमं पडिवज्जइ, तीए पुण गिण्हइ वयाइं ॥३६॥
पाणिवहाऽलियअद्दत्त-बंभपरिग्गहनिवित्तिरूवाइं । बंधाऽऽई अइयारे, वज्जइ य इमे सुजत्तेण ॥३७॥
सविसेसधम्मसवणाऽऽइएसु, किच्चेसु वट्टई सम्मं । अणुकंपारसरसियंऽत-करणवित्ती य हवइ सया ॥३८॥
अह तइयं सामाइय-पडिमं पुव्वोवइट्ठगुणकलिओ । पडिवज्जेइ महप्पा, सम्ममुदासीणयाऽऽइजुओ ॥३९॥

उदासीणय १ मज्झत्थ २-संकिलेसविसुद्धीओ ३ । अणाउलत्त ४ असंगत्तं, ५ एए पंच गुणा इहं ॥४०॥
जेहिं तेहिं जह तह, भोयणसयणाऽऽइएहिं चित्तस्स । जो संतोसो जायइ, सा हु उदासीणया वुत्ता ॥४१॥
सामाइयपढमंगं, एसा य विसुद्धिकारणत्तेण । भणिया जिणेहिं संपइ, भन्नइ मज्झात्थवित्ती उ ॥४२॥
एस सयणो परो वा, इय बुद्धी पयइतुच्छचित्ताण । पयईए विउलचित्ताण, पुण इमं जयमवि कुडुंबं ॥४३॥
जम्हा अणाइनिहणे, संसारमहासरे सरंताणं । बहुभवसयअज्जियकम्म-रासिवसगाण सत्ताणं ॥४४॥
अन्नोन्नमऽणेगविहो, कस्सेह न केण को य संबंधो । संजाओ इय चिंता, जा सा मज्झत्थवित्ती उ ॥४५॥
अह संकिलेसविसुद्धी, भन्नइ संवसइ जेहिं सह ताणं । अन्नाण य दुन्नयदंस-णे वि जमऽणक्खपरिहरणं ॥४६॥
ठाणगमसुयणजागर-लाभाऽलाभाइएसु सव्वत्थ । जो हरिसवेमणस्सा-ऽभावो सो पुण अणाउलया ॥४७॥
अह कणयकयवरेसुं, मित्ताऽमित्तेसु सोक्खदुक्खेसु । बीभच्छपेच्छणिज्जेसु, तह य थुइवायनिंदासु ॥४८॥
अन्नत्थ य विविहमणो-वियारकारणसमागमे वि सया । समचित्तत्तं जं तं, असंगयं बिंति जयपहुणो ॥४९॥
एयाणं समुदाओ पंचण्ह गुणाण परमसामइयं । अहव उदासत्तं चिय, एक्कं तक्कारणं परमं ॥५०॥
किं बहुणा—
सावज्जजोगवज्जण-निरवज्जजोगसेवणारूवं । सामाइयमित्तरियं, गिहिणो परमं गुणट्ठाणं ॥५१॥
इय तइयाए सम्मं, करेइ सामाइयं स पडिमाए । मणदुप्पणिहाऽऽणाई, तहाऽईयारे य परिहरइ ॥५२॥
पुव्वप्पडिमाजुत्तो, अट्ठमीमाईसु पव्वदियहेसु । पडिवज्जई चउत्थीए, पोसहं चउविहंपि गिही ॥५३॥
अप्पडिदुप्पडिलेहिय-सेज्जासंथारगाऽऽइ वज्जेइ । सम्मं च अणणुपालण-माऽऽहाराईसु एयाए ॥५४॥
अह पंचमपडिमाए, पोसहदिवसेसु एगराईयं । सो पडिमं पडिवज्जइ, पुव्वोइयसव्वगुणजुत्तो ॥५५॥
असिणाणो दिणभोई, अबद्धकच्छो दिणम्मि कयबंभो । रत्तिं परिमाणकडो, पडिमावज्जेसु दियहेसु ॥५६॥
झायइ पडिमाए ठिओ, तिलोयपुज्जे जिणे जियकसाए । नियदोसपच्चणीयं, अन्नं वा पंच जा मासा ॥५७॥
छट्ठीए बंभचारी, रत्तिं पि स होइ नवरि सविसेसं । जियमोहो अविभूसो, ठाइ रहे सह न इत्थीहिं ॥५८॥
चयइ य अइप्पसंगं, सिंगारकहं च जाव छम्मासा । पुव्वोइयपडिमासु, पडिबद्धमणो य अपमाई ॥५९॥
सत्तमपडिमाए पुणो, सचित्तमाऽऽहारमेस परिहरइ । पुव्वोइयगुणजुत्तो, अपमत्तो सत्त जा मासा ॥६०॥
आरंभमऽट्ठमीए सावज्जं कारवेइ पेसेहिं । पुव्वपवत्तं न सयं वित्तिकए अट्ठ जा मासा ॥६१॥
नवमीए पेसेहि वि, सावज्जं कारवेइ नाऽऽरंभं । धणवं संतुट्ठो पुत्त-भिच्चनिक्खित्तभारो त्ति ॥६२॥
लोगववहारविरओ, थेवममत्तो य परमसंविग्गो । एसो पुव्वपवंचिय-गुणजुत्तो जाव नव मासा ॥६३॥
दसमीए तदुद्देसेण, जं कडं तंपि भुंजइ न भत्तं । छुरकयमुंडो कोई, सिहाधरो वा हवेज्ज गिही ॥६४॥
पुट्ठो य निहाणाऽऽई, सयणेहिं कहेज्ज जइ स जाणेज्जा । पुव्वपडिमासमग्गो, दस मासा जाव विहरेज्जा ॥६५॥
एगारसीए एसो, खुरेण लोएण वा वि मुंडसिरो । रयहरणोवग्गहधारी, समणभूओ दढं विहरे ॥६६॥
नवरं सयणसिणेहे, अव्वुच्छिन्ने तहाविहे कहवि । सन्नायसन्निवेसं, दट्ठुं वच्चेज्ज नियसयणे ॥६७॥
तत्थ वि सो आहारं, साहू विव एसणाए उवउत्तो । कयकारियाऽणुमोयण-विवज्जियं चेव गिण्हेज्जा ॥६८॥
अह तस्सऽभिगमणाउ, पुव्वाउत्तं तु भत्तसूयाई । कप्पइ आहारगयं, पच्छाउत्तं तु नो कप्पे ॥६९॥
तस्स य भिक्खट्ठाए, घरप्पविट्ठस्स जुज्जए वोत्तुं । पडिमोवगयस्स महं, भिक्खमऽहो देह गिहिणो त्ति ॥७०॥
एवं च विहरमाणो, को सि तुमं इय परेण सो पुट्ठो । सड्ढो सावगपडिमा-पडिवन्नो हं ति पडिभणइ ॥७१॥
एवं उक्कोसेणं, एक्कारस-मास जाव विहरेइ । एगाहादियरेणं, सेसासु वि इय जहन्नेणं ॥७२॥
सम्मत्तासु य एयासु, कोवि धीरो गहेज्ज पव्वज्जं । अन्नो गिहत्थभावं, वएज्ज पुत्ताऽऽइपडिबंधा ॥७३॥
गेहट्ठिओ य संतो, पायं पम्मुक्कपाववावारो । सइ सामत्थे सीयंत-जिणगिहाऽऽई पडियरेज्जा ॥७४॥

"साधारणद्रव्यविषयवर्णनम्" —

तदऽभावे साहारण-दव्ववएण वि करेज्ज तच्चिंतं । साहारणऽत्थविणिओग-विसयमिय नवरि जाणेज्जा ॥७५॥
जिणभवणं१ जिणबिंबं२, तहजिणबिंबाण पूयणं तइयं३ । जिणपवयणपडिबद्धाइं, पोत्थयाणि य पसत्थाइं ॥७६॥

निव्वाणसाहगगुणाण, साहगा साहुणो, य५ समणीओ६ । सद्धम्मगुणाऽणुगया, सुसावगा७ साविगाओ तहा८ ॥७७॥
पोसहसाला९ दंसण-कज्जं पि तहाविहं भवे किंपि१० । एवं दस ठाणाइं, साहारणदव्वविसओ त्ति ॥७८॥

"जिनभवनं" —

तत्थ य समणा अणियय-विहारचरियाकमेण जहसुत्तं । अणुपुव्वेण पुराईसु, मास-चउमासकप्पेण ॥७९॥
पडिबंधपरिच्चाएण, दव्वखेत्ताऽऽइएसु विहरंता । तह सावगा वि वाणिज्ज-तित्थजत्ताऽऽइकज्जेण ॥८०॥
मुणियाऽऽगमपरमत्था, जिणसासणपरमभत्तिसंजुत्ता । गामाऽऽगरनगराईसु, किर चरमाणा पयत्तेण ॥८१॥
मग्गाऽणुलग्गगामाऽऽइएसु, जिणभवणपमुहनियपक्खं । गामदुवारऽब्भासाइ-संठियं पसिणयंति जणं ॥८२॥
तव्वयणाओ अत्थि त्ति, सम्ममऽवगम्म जिणगिहाऽऽईयं । गच्छंति तत्थ विहिणा, पमोयभरपुलइयसरीरा ॥८३॥
जइ ताव थिरा ता पढम-मेव चिअवंदणं जहुत्तविहिं । काऊणं जिणगेहम्मि, [1]भग्गलुग्गाइ पेहंति ॥८४॥
अह ऊसुगत्तणं ता, संखित्तयरं पि पणमिउं पच्छा । तस्सडियपडियमंगं, पेहंति होज्ज तं कह वि ॥८५॥
तत्तो कुणंति सामत्थ-संभवे सावगा उ तच्चिंतं । तद्देसणादुवारेण, चेव मुणिणो वि जहजोग्गं ॥८६॥
अहवा सदेसपरदेस-गामनगराऽऽगराइठाणेसु । सच्चरियजणाऽऽइन्नेसु, सावगेहिं विरहिएसु ॥८७॥
परिदुब्बलसावगसंग-एसु या उदयियत्थुपुरिसेसु । जं होज्ज जिणघरं जिण्ण-सिण्णपरिसडियपडियाइं ॥८८॥
विहडियसंधिचयं या, परिखीणदुवारदेसपिहणं वा । देसणपयट्टमुणिजण-मुहाउ तं अहव लोगातो ॥८९॥
सोच्चा किंपि कहिं पि य, दट्ठुं सयं सावगो विचिंतेज्जा । अणुरत्तअट्ठिमिंजो, जिणसासणभत्तिरागेण ॥९०॥
केणाऽवि पुन्ननिहिणा, इयरूवजिणालयं कुणंतेण । परिपुंजिऊण धरिओ, नियजसपसरो अहं मन्ने ॥९१॥
किंतु इय निबिडघडणे वि, अहह! कालेण विहियमिह खूणं । अहवा विणस्सरा च्चिय, सव्वपयत्था भयसमुत्था॥९२॥
ता अहमऽहुणा भंजेमि, एयक्खूणं तहा कए य इमं । भवगत्तऽतोणिवडिय-जणहत्थाऽऽलंबणं होही ॥९३॥
इति चिंतिऊण जइ तं, सत्तो सयमेव सुंदरं काउं । ता एक्को च्चिय कुणेइ, सक्को काउं अह न एक्को ॥९४॥
ता अन्नेसिं पि हु सावगाण, जाणाविउं तमऽत्थं तो । तव्विसयमऽब्भुवगमं, कारावेज्जा भणिइकुसलो ॥९५॥
अह जह सो तह ते वि हु, असमत्था तत्थ पत्थुए अत्थे । अन्नो वि नऽत्थि तक्कज्ज-कारओ को वि जइ ताहे॥९६॥
इह अंतरम्मि साहा-रणस्स दव्वस्स होइ तं विसओ । न हु साहारणदव्वं, वएज्ज धीमं जहकहंपि ॥९७॥
सीयंतजिणगिहाइ वि, नो वट्टेज्जा अओ उ अन्नत्तो । दव्वाऽभावे साहा-रणं पि विवेज्जसु तहाहि ॥९८॥
जिन्नं नवीकरेज्जा, [2]सिन्नं पुण संठवेज्ज लहसियं च । पुणरवि संपधरेज्जा, सडियं च पुणो वि संधेज्जा ॥९९॥
पडियं समुद्धरेज्जा, लिंपावेज्जा य विगयलेवं च । विगयछुहं च [3]छुहावेज्ज, देज्ज पिहणं च अपिहाणे॥२८००॥
तह कलसाऽऽमलसारग-पट्टथंभाऽऽइयं तदंगं च । सडियपडियं तहा पडिय-खंडिच्छिड्डं च पायारं ॥१॥
एमाईयं अन्नं पि, तग्गयं परिविसंठुलं दट्ठुं । सम्मं समारएज्जा, सव्वं सव्वप्पयत्तेण ॥२॥
साहारणदव्वेण वि, तं जिणगिहमुद्धराविंयं संतं । गुणरागिपेच्छगाणं, होइ धुवं बोहिलाभकए ॥३॥
पुढवाइयाण जइ वि हु, होइ विणासो जिणिंदगिहकरणे । तव्विसया तह वि सुदिट्ठि-णोऽत्थि नियमेण अणुकंपा ॥४॥
एयाहिंतो बुद्धा, विरया रक्खंति जेण पुढवाई । तत्तो निव्वाणगया, अबाहगा आभवमिमाणं ॥५॥
रोगिसिरावेहाऽऽईसु, वेज्जकिरिया व सुप्पउत्ता उ । परिणामसुंदर च्चिय, चेट्ठा संबाहजोगे वि ॥६॥
इय जिणभवणद्दारं, भणियं जिणबिंबदारमऽह भणिमो । तत्थ पुराऽऽइसु सव्वंग-संगयं अत्थि जिणभवणं ॥७॥

"जिनबिम्बं" —

किंतु न तत्थऽत्थिजिणिंद-बिंबमंतो जओ उ केणाऽवि । तमयहीरियं व होज्जा, भग्गं व विलुंगियं च तओ ॥८॥
पुव्वत्तविहाणेणं, साहारणदव्वमवि समादाय । नियसामत्थाऽभावे, सम्मं कारेज्ज जिणबिंबं ॥९॥
कारित्ता जिणबिंबं, निरुवमरूवं ससिं व सोमं च । पुव्वुत्तजिणगिहे तं, उचियविहीए पइट्ठेज्जा ॥१०॥
तं च गुणरागिणो केई, पेच्छिउं उच्छलंतरोमंचा । बोहिं लभेज्ज अन्ने, जिणदिक्खं तम्मि चेव भवे ॥११॥
जइ पुण अणज्जजणसंगएसु, खिज्जंतवत्थुपुरिसेसु । पच्चंतदेसवत्तिसु सावगजणवज्जिएसुं च ॥१२॥

1. भग्गलुगाइ = रुग्णं = जीर्णम् । 2. सिन्नं = शीर्णम् । 3. छुहावेज्ज = सुधयेत् = धवलयेत् ।

गामनगराऽऽगराइसु, जिणभवणं होज्ज नयरि जज्जरियं । जिणबिंबं पुण सव्वंग-सुंदरं दरिसणीयं च ॥१३॥
तत्थ अणारियजणकीर-माणआसायणाऽऽइदोसभया । तत्तो जिणालयाओ, तहट्ठियाओ वि कड्ढित्ता ॥१४॥
जिणबिंबं अन्नम्मि वि, संचारेज्जा पुराइए उचिए । अन्नत्तो संचारण-सामग्गीए पुण अभावे ॥१५॥
साहारणदव्वाओ, तस्सामग्गिं करेज्ज जहजोगं । एगं च कए के के, न बोहिबीयाऽऽइणो सुगुणा ॥१६॥
इय जिणबिंबद्दारं, भणियं जिणपूयदारमऽह भणिमो । तत्थ सुचरियजणड्ढत्त-पमुहगुणजुत्तखेत्तेसु ॥१७॥
अणहं जिणिंदभवणं, अणहं जिणबिंबमऽवि परं किंतु । न कुओ वि पत्तियामेत्त-मऽवि तहिं किंपि पूयंगं॥१८॥

"साधारणद्रव्यव्ययविषये जिनपूजा" —

होइ त्ति सयं दट्ठुं, पुव्वुत्तविहीए अहव सोऊणं । तो मेलिय सव्वे वि हु, तप्पुरगामाइमयहरगे ॥१९॥
साहू व सावगो वा, सुनिउणवयणेहिं पन्नवेज्ज जहा । इह तुम्हे चेव परं, एक्के धन्ना न अन्ने उ ॥२०॥
जाण किर सन्निवेसे, इयरूवाइं विचित्तभत्तीणि । दीसंति कित्तणाइं, मणोहराइं तहऽन्नं च ॥२१॥
सव्वे वि पूयणिज्जा, सम्मं सव्वे वि वंदणिज्जा य । सव्वे वि अच्चणिज्जा, तुम्हाणं देवसंघाया ॥२२॥
तह कीस इह न संपइ, पूया जुत्तं न चेव तुम्हाणं । पूयंऽतरायकरणं, देवाणेवमाइएहिं च ॥२३॥
वयणेहिं ते सम्मं, उवरोहेज्जा अणिच्छमाणेसु । अन्नत्तो पूयाऽसं-भवे य साहारणं पि धणं ॥२४॥
दाउं तत्थाऽऽवासिय-मालागाराऽऽइलोयहत्थेणं । पूयं थूवं दीवं च, संखसद्दं च कारेज्जा ॥२५॥
एवं च कए ठाणाऽणु-रागकारीण भव्वसत्ताण । कप्पद्दुमो व्व [1]उत्तो, नूणं गेहंऽगणे चेव ॥२६॥
दट्ठुं पूयाऽइसयं, परमगुरूणं जिणाण बिंबेसु । बंधंति बोहिबीयं, जीवा संजायबहुमाणा ॥२७॥
एवं पूयादारं, सम्मं संखेवओ समक्खायं । वोच्छं गुरुयएसा, पोत्थयदारं पि अह तत्थ ॥२८॥

"आगमलेखन" —

अंगोवंगनिबद्धं, अणुओगचउक्कओवओगिं वा । जोणीपाहुडजोइस-निमित्तगब्भऽत्थमऽवरं वा ॥२९॥
जं सत्थं जिणपवयण-परमुन्नइकारणं महत्थं च । वोच्छिज्जंतं दिट्ठं, सुयं च तं जइ लिहावेउं ॥३०॥
सयमऽसमत्थो अन्नो य, नऽत्थि जइ तल्लिहावगो कोई । ता साहारणदव्वेण, तं लिहावेज्ज वुड्ढिकए ॥३१॥
तिसरं चउस्सर बहुस्सरं च, विहिणा लिहाविऊणं च । तप्पोत्थयाइं सुवियड्ढ-संघट्ठाणेसु ट्ठावेज्जा ॥३२॥
जे गहणधारणाए पडुया ओयस्सिणो वईकुसला । पइभाऽऽइगुणसमेया, ताण समप्पेज्ज विहिपुव्वं ॥३३॥
आहारवसहिवत्थाऽऽइएहिं, काऊणुवग्गहं ताण । सासणवन्ननिमित्तं, कुज्जा तव्वायणविहिं च ॥३४॥
अद्धरिसणीयमऽन्नेसिं, सासणं कयमिणं कुणंतेणं । थिरया नवधम्माणं, चरणगुणाणं विसुद्धी य ॥३५॥
अव्वोच्छित्ती जिणसासणस्स, भव्वाऽणुकंपणं अभयं । सत्ताण य ता एत्थं पयट्टियव्वं जहासत्तिं ॥३६॥
पोत्थयदारं भणिऊण, भन्नई साहुदारमऽह तत्थ । वत्थाऽसणपत्तोसह-भेसज्जाऽऽइसमत्थं पि ॥३७॥

"साधु-साध्वी" —

फासुयमऽकयमऽकारिय-मऽणणुमयं कोडिनवगपरिसुद्धं । उस्सग्गेणं मुणिपुंग-वाण संजमकए देज्जा ॥३८॥
संजमपोसकए च्चिय, जइ जइदाणं कहं तयट्ठाउ । एमेव पुढविकायाइ-हिंसणं होइ जुत्तं ति ॥३९॥
'संथरणम्मि असुद्धं, दोण्ह वि गिण्हंतदिंतयाणऽहियं । आउर-दिट्ठंतेणं, तं चेव हियं असंथरणे' ॥४०॥
चोरहरिओवहित्तं, गाढगिलाणत्तमोमवत्तितं । एमाई अन्नं पि हु, अववायपयं पडुच्च पुणो ॥४१॥
वत्थाऽसणाऽऽइयाणं, ओसहभेसज्जमाऽऽइयाणं च । जइ सव्वोवाएहिं अहागडाणं न संपत्ती ॥४२॥
तो कीयगडाऽऽईणि वि, संपाडेज्जा हु सपरसामत्था । अह अन्नत्तो तस्सत्ति-संभवो नेव से अत्थि ॥४३॥
संपाडेज्जा इय अंतरम्मि, साहारणेण सो सम्मं । साहू वि ताणि गिण्हइ, छट्ठुणचित्तो अयन्नाए ॥४४॥
जं उस्सग्गनिसिद्धाइं, जाइं दव्वाणि संथरे मुणिणो । कारणजाए जाए, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥४५॥
चोयग आह—

1. उम।

जं चिय पए निसिद्धं, तं चिय जइ कप्पई पुणो तस्स । एवं होइ अणवत्था, न य तित्थं नेय सच्चं तुं ॥४६॥
उम्मत्तवायसरिसं खु, दंसणं न विय कप्पऽकप्पं तु । अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥४७॥
आयरिय आह—
न वि किंचि अणुन्नायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं । एसा हु तेसिमाऽऽणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं॥४८॥
किंच—
दोसा जेण निरुब्भंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं । सो सो मोक्खोवाओ, रोगाऽवत्थासु समणं व ॥४९॥
उज्जुयमग्गुस्सग्गो, अववाओ तस्स चेव पडिवक्खो । उस्सग्गा विणिवइयं धरेइ सालंबमऽववाओ ॥५०॥
धावंतो उच्चाओ, मग्गन्नू किं न गच्छति कमेण । किं वा मउई किरिया, न कीरई असहओ तिक्खं ॥५१॥
उन्नयमऽवेक्ख निन्नस्स पासिद्धी उन्नयस्स निन्नाओ । इय अन्नोन्नपसिद्धा, उस्सग्गऽववाय दो तुल्ला ॥५२॥
जावइया उस्सग्गा, तावइया चेव होंति अववाया । जावइया अववाया उस्सग्गा तत्तिया चेव ॥५३॥
सट्ठाणे सट्ठाणे सेया बलिणो य होंति खलु एए । सट्ठाणपरट्ठाणा य, होंति वत्थूउ निप्फन्ना ॥५४॥
संथरओ सट्ठाणं, उस्सग्गो असहुणो परट्ठाणं । इय सट्ठाण परं वा न होइ वत्थुं विणा किंचि ॥५५॥
अववाओ वि ठियस्स हु, गीयस्स य पुट्ठकारणे नेओ । अलमऽइपसंगभणणेण, पत्थुयं चेव अह भणिमो ॥५६॥
सणाऽऽइलाभे, चएज्ज साहू असुद्धए विहिणा । पगुणत्ते आलोयइ, असुद्धमऽन्नाइ जं भुत्तं ॥५७॥
इय जह साहुदारं, समणीदारं पि तह वियाणेज्जा । नवरं इत्थित्ताओ, तासिमऽवायाण बहुलत्तं ॥५८॥
परिपिक्कसाउफलभर–बदरिसमाओ हवंति अज्जाओ । गुत्तिवइपरिगयाओ वि, सव्वगम्माउ पयईए ॥५९॥
ता ताण परमजत्तेण, सव्वओ निच्चरक्खणीयाण । जइ पच्चणीयदुस्सील–लोयवसओ भवेऽणत्थो ॥६०॥
ता साहारणदव्व–प्पयाविहिणा वि सयमऽसामत्थे । कुज्जा संजमपच्चूह–कारिविद्धंसणं सम्मं ॥६१॥
भणियं समणीदारं, सावगदारं भणामि तहियं च । धम्माणुरत्तचित्तो, धम्माऽणुट्ठाणनिरओ य ॥६२॥

"श्रावक–श्राविका" —

जह कहवि गुणपहाणो, सुसावओ वित्तिदुब्बलो होइ । अत्थि य वणिक्कला से, दविणविणासी य जइ नो सो ॥६३॥
ताहे साहारणदव्वओ वि, काऊण कं पि हु ववत्थं । ववहारनिमित्तं, तस्स, मूलरासिं समप्पेज्जा ॥६४॥
अह निव्विन्नाणो तह वि, अद्धपायाऽऽइ देज्ज से अहवा । जइ नो वसणोवहओ न, कलहणो नेय पिसुणो य ॥६५॥
करकच्छाऽऽइसु सुद्धो, पवन्नदक्खिन्नविणयसारो य । तत्तो कम्मकरंतर–ठाणे सो च्चिय धरेयव्वो ॥६६॥
समधम्मवत्तिणो वि हु, तव्विवरीयस्स धारणे नियमा । संभवइ अप्पणो पव–यणस्स खिंसापयं लाए ॥६७॥
एवं सावगदारं व, साविगादारमऽवि वियाणेज्जा । सविसेसमऽइ विहेया, तव्विंता अज्जियाणं व ॥६८॥
एवं च कुणंतेणं, तेणं जिणसासणस्स धीरेणं । अव्वोच्छित्तिनिमित्तं, परमपयत्तो कओ होइ ॥६९॥
अहवा—
एवं विहिए विहियं, सम्मत्ताऽऽइगुणपक्खवाइत्तं । सव्वन्नुसासणं पि य, पभावियं होइ तेणेव ॥७०॥
अविभावियसपरजणो, अणविक्खियसरिसजाइउवयारो । सहधम्मयरा मह बंध–व त्ति निच्चं विचिंतिंतो ॥७१॥
साहम्मियाण सड्ढो, करेइ संसुमरणं पगरणेसु । संभासणं च दिट्ठाण, पूयणं पूगमाईहिं ॥७२॥
पडियरणं रोगाईसु विस्सामणमऽद्धगमणखिन्नाणं । ताण सुहेण सुहित्तं, तग्गुणउब्भावणं चेव ॥७३॥
अवराहगोवणं जोयणं च, बहुगुणअवंझलाभम्मि । ववहारे सीयंताण, सारणं धम्मकिच्चेसु ॥७४॥
दोसाण सेवणे वा–रणं तहा चोयणं सुमहुरेहिं । वयणेहिं तेहिं परुसेहिं, चेव पडिचोयणं बहुसो ॥७५॥
सइ सामत्थे उवठंभ–करणमऽह वित्तिदुब्बलाणं च । पडियारकरणमऽच्चन्त–वसणगत्तानिवडियाणं ॥७६॥
नीसेसधम्मकज्जुज्जयाण, साहेज्जकरणमऽणवरयं । दंसणनाणचरित्ते, ठियाण सम्मं थिरीकरणं ॥७७॥
इय बहुविहप्पगारं, साहम्मियवच्छलत्तणं नियमा । कुणमाणो सड्ढो तित्थ–वुड्ढिमऽणहं जणइ भुवणे ॥७८॥
एवं पसंगपत्तऽत्थ–जुत्तमऽक्खायसाविगादारं । पोसहसालादारं पि, संपयं संपवक्खामि ॥७९॥

"पोषधशाला स्वरुपम्" —

सुस्सामिपरिग्गहिएसु, तहय सुविसिट्ठजणसमिद्धेसु । गामनगराऽऽगराइसु, पोसहसाला सडियपडिया ॥८०॥
जइ होज्ज होज्ज सड्ढा य, तत्थ भवभीरुणो महासत्ता । निच्चं पि छव्विहाऽऽवस्स-याइसद्धम्मकम्मरया ॥८१॥
नवरि तहाविहलाभं-ऽतरायकम्मोदयस्स दोसेण । सव्ववसाया वि हु कट्ठ-कप्पणा होंति निव्वाहा ॥८२॥
उद्धरिउमणा वि न चेव, सत्तिमंता तमुद्धरेउं जे । वियलियपक्खा सलहा य अप्पयं दीवए पडियं ॥८३॥
ता सइ सत्तीए सयं अन्नत्तो देसणं च काऊणं । उभयाऽभावे साहा-रणाओ तं उद्धरावेज्जा ॥८४॥
एवं समुद्धराविय-पोसहसालो विहीए सो धन्नो । अन्नेसिं सुपवित्ती-निबंधणं होइ नियमेण ॥८५॥
दंसाई अगणिंते, पोसहसामाइयं पवत्ते उ । संवेगभावियमई, झाणऽज्झयणं करेंते उ ॥८६॥
दट्ठूण तत्थ सड्ढे, केइ निबंधंति बोहिबीयाइं । अन्ने उ लहुयकम्मा, एत्तो च्चिय संपबुज्झंति ॥८७॥
तित्थस्स वन्नवाओ, गुणरागीणं तहा पवित्ती य । अव्वोच्छित्ती तित्थे अभयं घोसावियं लोए ॥८८॥
एत्तो जे पडिबुद्धा, नियमा निव्वाणभायणं ते उ । ता तक्कयववहणाउ, विमोइया होंति जीवा उ ॥८९॥
जइ वि नियनियगिहेसु, आणंदाईण पुरिससीहाणं । एक्केक्कगाणुवासग-दसापमोक्खेसु सत्थेसु ॥९०॥
पोसहसालाओ वन्नियाओ, न तहा वि संभवइ दोसो । सुबहूणं साहारण-पोसहसालाए भणणे वि ॥९१॥
जम्हा सुबहूणं मीलगम्मि, सविसेसभाविणो सुगुणा । सम्मं अन्नोन्नकया, अणुहवसिद्ध च्चिय तहाहिं ॥९२॥
अन्नोन्नविणयकरणं, अन्नोन्नं सारणाऽऽइकरणं च । धम्मकहावायणपुच्छ-णाऽऽइसज्झायकरणं च ॥९३॥
सज्झायपरिस्संताण, तह य विस्सामणाऽऽइकरणं च । अन्नोन्नं सुहदुक्खाइ-पुच्छणं धम्मबंधूणं ॥९४॥
सुत्तऽत्थतदुभयाणं, तुट्टाणं संधणं च अन्नोन्नं । अन्नोन्नं दिट्ठस्सुय-सामायारीए परिकहणं ॥९५॥
अन्नोन्नसुयऽत्थाणं, विसयविभागम्मि ठावणं सम्मं । कायव्वं जोगविसए विहिअविहिनिरुवणं च मिहो ॥९६॥
पुच्छा य एक्कपोसह-सालामिलियाण होइ अन्नोन्नं । सइ निव्वहंतगेयर-धम्मऽक्खणगोयरा तत्तो ॥९७॥
तन्निव्वहणुववूहा, इयरेसुच्छाहणं सुयविहीए । इय पेरणीयपेरग-भावेण गुणुब्भवो परमो ॥९८॥
एत्तो च्चिय ववहारे वि, रायपुत्ताऽऽइयाण निद्दिट्ठं । धम्मक्खणस्स करणं, पोसहसालाए एक्काए ॥९९॥
एवं किर सुबहूण वि, सुसावयाणं सुधम्मकरणाय । पोसहसाला एक्का, जुत्त त्ति कयं पसंगेण ॥२९००॥
पोसहसालादारं, गुरुवएसेण साहियं एयं । दंसणकज्जद्दारं, दरिसेमि संपयं किंपि ॥१॥

"दर्शनकार्यस्वरुपम्" —

दंसणकज्जं नेयं, चेइयसंघाइगोयरं जमिह । अवितक्कियं कया वि हु, विसेसकिच्चं तहारुवं ॥२॥
तं पुण दुविहं इहइं, अपसत्थपसत्थभेयओ जाण । तत्थाऽपसत्थगं तं, जं पडणीयाऽऽइदारेण ॥३॥
तित्थयरभवणपडिमा-भवंतभंगाऽऽइयाऽणुबद्धाणं । संघोवद्दवछोभगरुवं, पडणीयकयमऽहवा ॥४॥
देवादायाऽऽइकरावणाऽऽइ-विसयं च जं पसत्थं तं । तत्थ दुगे वि हु रायाइ-दंसणं संभवइ पायं ॥५॥
तं च न विणोवयारं, तदऽसंपत्ती जया उ अन्नत्तो । ता साहारणदव्वाओ, तं विचिंतेज्ज उचियन्नू ॥६॥
एवं च कए के के, न उभयलोगुब्भवा गुणा तस्स । इह लोयम्मि कित्ती, परलोए सुगइगामित्तं ॥७॥
चेइयकुलगणसंघे, आयरियाणं च पवयणसुए य । सव्वेसु वि तेण कयं, एत्थ जयंतेण जहजोगं ॥८॥
साहारणस्स जम्हा, चेइयभवणाऽऽइयं इमं चेव । वुत्तं दसगं विसओ, ता धन्नाणं खु एत्थ मई ॥९॥
इह होज्ज कस्सइ मई, ठाणगदसगं इमं न हु कहिंपि । वुत्तं जिणुत्तसुत्ते, न परुत्तं पुण पमाणत्ते ॥१०॥
स इमं वत्तव्वो हंत!, समुदियं नो कहिं पि भणियमिणं । भेएणं पुण सुत्ते भणियं चिय बहुसु ठाणेसु ॥११॥
तह साहारणदव्वं, पयडं चिय ताव दंसियं सुत्ते । चेइयदव्वं साहा-रणं च इच्चाइवयणेहिं ॥१२॥
तस्स विणिओगठाणं पि, अत्थओ भणियमेव भवइ धुवं । इह पुण दसहा जिणमंदि-राऽऽइरुवेण तं चेव ॥१३॥
विसयविभागेण फुडं, निरुवियं भव्वजणहियऽट्ठाए । आगमविरोहविरहेण, कुसलबंधिक्कहेउ त्ति ॥१४॥
जिणभवणाऽऽइपयाणं, एक्केक्कंमि वि कया य पडियत्ती । पुन्ननिमित्तं जायइ, किं पुण ताणं समुदियाणं ॥१५॥
साहारणं च दव्वं आरंभंतस्स तद्दिणाओ वि । जिणभवणप्पमुहेसु, जायइ सव्वेसु पडियत्ती ॥१६॥

जं तस्स साऽणुबंधो, पधावइ पढममेव समकालं । तव्विसयसव्वदव्व-कूखेत्ताऽऽइसु चित्तपडिबंधो ॥१७॥
तम्हा नियदव्वाओ, किंचि विहवाऽणुसारओ चेव । परिचिन्तिऊण साहा-रणस्स पारंभगा जे उ ॥१८॥
जे य अणिंदियविहिणा, पइदिणमेयंनयंति परिवुड्ढिं । परियालयंति जे वि य, अचलियचित्ता महासत्ता ॥१९॥
जे वि य पुव्वुत्तकमेण, चेय जुंजंति त जहाजोगं । तित्थयरनामगोत्तं, कम्मं बंधंति ते धीरा ॥२०॥
पइदिणतव्विसयपवड्ढ-माणमाणसविसेसपरिओसा । नारयतिरयगइदुगं, ते नूण नरा निरुंभंति ॥२१॥
संपज्जंति कया वि य, न बंधगा अयसनीयगोत्ताणं । जायंति य सविसेसं, निम्मलसम्मत्तरयणधरा ॥२२॥
थी पुरिसो वा पच्छा वि, तत्थ रित्थं नियं पयच्छइ जो । सो कल्लाणपरंपर-मऽवियप्पं पावए परमं ॥२३॥
इह लोगे व्विय जायइ, नियजसपब्भारभरियभुवणयलो । पुण्णाऽणुबंधिसंपय-सामी भोई सुपरिवारो ॥२४॥
जंमंतरम्मि उत्तम-देवो तदणंतरं सुकुलउत्तो । पत्तो चरित्तसंपत्ति-भायणं तयणु सिद्धो वि ॥२५॥
किं बहुणा भणिएणं, जइ ता न हु तब्भवेण से मोक्खो । ता तइयसत्तमेसुं, अट्ठमयं पुण न लंघेइ ॥२६॥
जे पुण तम्मूढमणा, वामोहेणं कहिं पि केणाऽवि । नियपक्खवायवसगा, एक्कम्मि चेव जिणभवणे ॥२७॥
जिणबिंबे वा मुणिसाव-गाऽऽहए वा वि एक्कहिं चेव । न य सव्वजिणगिहाऽऽईसु, सम्मं पुव्वोदितविहीए॥२८॥
वेच्चंति वंचगा पव-यणस्स ते कुगतिगामिणो जेण । तारिसपवित्तिओ ते, सासणवोच्छेयमिच्छंति ॥२९॥
भणियमियकालविगमण-पडिदारं सप्पसंगमऽवि तइयं । वुच्चइ चउत्थमेत्तो, पुत्तपडिबोहपडिदारं ॥३०॥

"पुत्रप्रतिबोधकद्वारं" —

अह पुव्वपवंचियनिच्च-किच्चनिच्चलनिलीणनियचित्तो । केवइए वि हु काले, वोलीणे वाहिविरहेण ॥३१॥
पुत्तपयमरिणइं पेच्छि-ऊण सविसेसवड्ढिउच्छाहो । आराहणाऽभिलासी, सुसावगो जायवेरग्गो ॥३२॥
निबिडपडिबंधबंधुर-मऽणल्द्धुरं पुत्तगं समाहूय । भववेरग्गकरीए, गिराए एवं पयंपेज्जा ॥३३॥
वच्छ! नियच्छसु पयईए, दारुणत्तं भवस्स एयस्स । जम्हा इह दुल्लंभं, पढमं पि जियाण मणुयत्तं ॥३४॥
मरणस्स संचयारो, जम्मो अच्चंतकट्ठसंट्ठपा । संज्झब्भरायचवला य, संपया पयइओ चेव ॥३५॥
भीमा रोगभुयंगा, विबलत्तं निंति थेवकाले वि । वडविडविबीयतुच्छो, साऽयाओ वि य सुहाऽणुभयो ॥३६॥
सुरगिरिगरुयाइं आव-डंति दुक्खाइं परमतिक्खाइं । अणुपयमऽणुलग्गाओ, वियरंति आवयाओ वि ॥३७॥
निच्छियभाविवियोगा, सव्वे वि हु लट्ठइट्ठसंजोगा । उप्पज्जंतमणोरह-पच्चूहा एइ मच्चू वि ॥३८॥
न य लक्खिज्जइ एत्तो, मरिऊणं पेच्च कत्थ गंतव्वं । एवंविहा य दुलहा, पुणो वि सद्धम्मसामग्गी ॥३९॥
ता वच्छ! न जावऽज्ज वि, कवलज्जिइ मह जरापिसाईए । तणुपंजरमऽबलत्तं, वच्चंति न इंदियाइं पि ॥४०॥
उट्ठाणबलपरक्कम-वियलत्तणमऽवि न जाव आवडइ । ताव तुहाऽणुन्नाए, परलोयहियं पवज्जामि ॥४१॥
अह कन्नकुहरकडुयं, विओगसंसूयगं गिरं सोच्चा । गिरिगरुयमोग्गरेणा-ऽऽहओ व्व पाहाणपडिओ व्व ॥४२॥
मुच्छानिमीलियऽच्छो, ताविच्छसरिच्छआणणच्छाओ । उप्पन्नमन्नुखलिरऽक्खर-राए वाणीए नियजणगं ॥४३॥
सोगविगलंतनेत्तो, पुत्तो जंपेज्ज ताय! हा कीस । एयमऽकंडुड्डमर-प्पायं वयणं समुल्लवसि ॥४४॥
अज्ज वि न पत्थुयऽत्थस्स, को वि संपज्जईह पत्थावो । अज्झवसायाओ इमाओ, ताय! ता संपयं विरम॥४५॥
तो जणगो से जंपेज्ज, पुत्त! अच्चंतविणयपडिबंधो । संजायपलियसंगं, ममोत्तिमंगं न किं नियसि ॥४६॥
संचलियसंचयऽट्ठिं, न कायजट्ठिं पि किं पलोएसि । ईसिपयासे वि न किं, विचलंतिं दंतपंतिं पि ॥४७॥
लोयणबलियं नो नयण-जुवलियं किं न पेहसे वच्छ! । वलिसंतयं सरीरत्त-यं पि निन्नट्ठलायन्नं ॥४८॥
पवरपरक्कमनिव्वत्त-णिज्जकज्जोवजायसंदेहं । देहं बिंबं व रविस्स, पच्छिमाऽऽसाविलंबिस्स ॥४९॥
पब्भट्ठलट्ठसोहं, न वा विभावेसि किं तुमं वच्छ! । जेणाऽकालं जंपसि, पत्थावे पत्थुयऽत्थस्स ॥५०॥
लद्धूण हि मणुयत्तं, जिणधम्मजुयं गिहीणमिणमुचियं । जं अब्भुज्जयजीविय-मंते अब्भुज्जयं मरणं ॥५१॥

किञ्च—

विहियं निंदियदमणं, काऊण मणोनिरुंभणं जेण । लद्धं पि माणुसत्तं, अहह! गयं निप्फलं तस्स ॥५२॥
ता पुत्त! समणुमन्नसु, सुपुरिसचरियाऽणुरुवमऽहमिन्हिं । मग्गं समणुसरामि, अह पुत्तो जंपए ताय! ॥५३॥

कत्थ इमं तुह तेलोक्क-विम्हउप्पायगं तणुसरुवं । कत्थ य तदन्नहाकरण-कारणं चिंतियमिणं ते ॥५४॥
तहाहि—
कट्ठाऽणुट्ठाणमिमा, सुकोमला तुह तणू कहं सहिही । तिव्वाऽऽयवं दुमो च्चिय विसहइ न उणो कमलमाला॥५५॥
जं जत्थ वत्थु जुज्जइ, काउं तं तत्थ कुणइ किर विबुहो । किं कुणइ कट्ठकुंडम्मि, को वि बालो वि हव्ववहं॥५६॥
एवं तुज्झ तणूए, मणहरलायन्नकंतिकलियाए । होइ तवाऽणुट्ठाणं, कीरंतं नणु विणासाय ॥५७॥
ता ताय! नियबलवीरिय-पुरिसकारपरक्कमे कमसो । सफलत्तं नेऊणं, कट्ठाऽणुट्ठाणमाऽऽयरसु ॥५८॥
अह ईसिहसणवसविहड-माणलट्ठोट्ठउडदलं किंचि । दीसंतदन्तपंतिं च, पुत्तमेवं भणेज्ज पुणो ॥५९॥
वच्छ! ममोवरि गुरुनेह-मोहिओ तेणमेवमुल्लवसि । कहमऽन्नहा विवेए, संते एवं हवइ वयणं ॥६०॥
किं न कयं पुत्त! मए, मणुस्सजम्मंमि जमुचियं किच्चं । सुविसिट्ठलोयहिययस्स, तुट्ठिजणयं सइ तहाहि ॥६१॥
अणुरुवट्ठाणवयणा नीया लच्छी सलाहणिज्जत्तं । आरोवियभारक्खम-खंधो य सुओ तुमं जणिओ ॥६२॥
नियवंसपसूयाणं चिरपुरिसाणं कमो य अणुसरिओ । इय कयकिच्चो संपइ, परलोयहियं करिस्सामि ॥६३॥
जं पुण बलविरियपरक्कमाण, सहलत्तणाऽऽइयं तुमए । पुव्विं ममोवइट्ठं, तं पि न जुत्तं जओ वच्छ! ॥६४॥
धम्माऽणुट्ठाणस्स वि, कालो सो चेव होइ पुरिसस्स । सामत्थं जत्थ समत्थ-कज्जविसयं परिप्फुरइ ॥६५॥
निरवज्जिंदियसामत्थ-जोगओ सइ परक्कमे चेव । सयलाण वि करणीयाण, पच्चलो जायए पुरिसो ॥६६॥
जइया पुण सयलिंदिय-वेयल्लवसेण नीसहसरीरो । इह उट्ठिउं पि न तरइ, तइया किं कुणउ कायव्वं ॥६७॥
जे धम्मअत्थकामा, नूणं तरुणत्तणंमि कीरंति । परिणयवयस्स ते चेव, होन्ति गिरिणो व्व दुल्लंघा ॥६८॥
जिणवयणमुणियतत्तस्स, सयलकिरियाकलावसज्जम्मि । बलसमुदयम्मि तम्हा, नरस्स धम्मुज्जमो जुत्तो ॥६९॥
वीरियसज्झो जायइ, तवो हि तणुमेत्तसाहणो नेय । कुलिसो निद्दलइ गिरिं, कयाइ नो मट्टियापिंडो ॥७०॥
परिवज्जिओ न सामत्थ-याए काउं तरेज्ज किंपि नरो । इच्छामि सबलविरिओ, काउं धम्मे मइं तेण ॥७१॥
तहा—
तं विन्नाणं सो बुद्धि-पयरिसो बलसमत्थया सा उ । जा उवओगं वच्चइ एगंतेणेव अप्पहिए ॥७२॥
ता पुत्त! ममं हियइच्छियम्मि, अणुमन्निउं तुमं पि सयं । धम्मक्खणं कुणंतो, करेज्ज इहलोगकज्जाइं ॥७३॥
जओ—
सद्धम्मकरणरहिए, अइक्कमंते खणे वि अप्पाणं । मुसियं मन्नइ धीरो, पमायदढदंडचरडेहिं ॥७४॥
कुज्जा य मइं सुधम्मे, जावऽज्ज वि पभवइ चिरं जीयं । संकिन्नीभूयम्मि, तम्मि किं कीरए पच्छा ॥७५॥
जइयव्वं चिय धम्म-क्खणम्मि न पमाइयव्वयं तत्थ । सद्धम्मे निरयनरे, जं जायइ जीवियं सहलं ॥७६॥
जे निच्चं धम्मरया, अमय च्चिय ते जए मया वि नरा । जीवंता वि मय च्चिय, ते उण जे पावपडिबद्धा॥७७॥
जाइजरामरणहरं, सद्धम्मरसायणं पिबेज्ज सया । पीएण जेण जायइ, पुत्तय! मणनिव्वुई परमा ॥७८॥
तहा—
धम्मज्झाणेण मणं, तयऽणुट्ठाणेण मणुयजम्मं पि । पसमऽज्जणेण य सुयं, पुत्त! पयत्तेण सलहेज्जा ॥७९॥
इच्चाईवयणेहिं, पुत्तो पडिबोहिओ समाणो सो । अणुमन्नेज्जा पियरं, परलोयहियऽत्थवित्तीए ॥८०॥
पुत्तपडिबोहदारं, चउत्थमेत्थं मए समक्खायं । सुट्ठियघडणापडिदार-मिण्हि पंचमगमऽक्खामि ॥८१॥

"पञ्चमसुस्थितघटनाद्वारम्" —

अह सो अहिगयसत्तो कह कह वि तणुब्भवेणऽणुन्नातो । पइसमयमुत्तरोत्तर-वड्ढंतविसुद्धपरिणामो ॥८२॥
अप्पविणासाऽऽसंकाए, मुच्चमाणो व्व रागदोसेहिं । जोगो त्ति कलिय सहसा, सरिज्जमाणो व्व पसमेण॥८३॥
पुव्वकयकम्मकुलसेल-दलणदंभोलिविब्भममऽदब्भं । चारित्ताऽऽराहणमुज्ज-एण चित्तेण पत्थिन्तो ॥८४॥
संसारसमुत्थसमत्थ-वत्थुविगुणत्तणं च भावेंतो । पेच्छन्तो सुहसुमिणे य, कम्मल्लाघवयसेण जहा ॥८५॥
किर अज्ज मए पत्तो, पवित्तफलफुल्लसीयलच्छाओ । पवरतरु तच्छायाऽऽइ-एहिं आसासिओ य दढं ॥८६॥
उत्तारिओ य केणऽवि, पहाणपुरिसेण पयइभीमाओ । हत्थाऽवलंबदाणेण, सागराओ अपाराओ ॥८७॥

इच्चाइसुमिणदंसण-पमोयवसपसरमाणरोमंचो । पडिबुद्धो वि समाणो, सविम्हयं इय विचिंतेज्ज ॥८८॥
एवंविहं न दिट्ठं, न सुयं सुमिणं मया वि अणुभूयं । ता मन्ने कल्लाणं, भावि ममं किंपि अह कहवि ॥८९॥
तप्पुन्नपगरिसागरि-सिए व्व कालक्कमेण विहरंते । पुव्वगविट्ठे सुट्ठिय-मुणियइणो आगए सोच्चा ॥९०॥
आगमणेणं एएसिं, नूणं किं किं न भावि भद्दं मे । के वा निसामइस्सामि, नेव सिद्धंतपरमत्थे ॥९१॥
पुव्विं निसुए थिरपरि-चिए य काहामऽहं ति चिंतंतो । गच्छेज्ज गुरुसमीवे, पमोयभरभरियसव्वंगो ॥९२॥
काउं पयाहिणतिय-माणंद जलाउलऽच्छिविच्छोहो । तो पाएसु पडेज्जा, निडालताडियधरावट्ठो ॥९३॥
अह पज्जुवासिऊणं सोउं च तदंतिए समयसारं । सो एस सुमिणदिट्ठो, सुविसिट्ठमहाफलो साही ॥९४॥
सो च्चिय एसो हत्थाऽव-लंबदाया ममं समुद्दऽतो । एवं विचिंतयंतो, पत्थावम्मि भणेज्ज गुरुं ॥९५॥
भयवमऽतुच्छविसप्पिर-मिच्छत्तजलप्पवाहपडहत्थं । दीसंतमहाभीसण-मोहमहावत्तसयकिन्नं ॥९६॥
अणवरयमरणजम्मण-महल्लकल्लोलवाउलियपारं । पइसमयभमिरबहुरोग-सोगमयरोरगाऽऽइन्नं ॥९७॥
पयईए गंभीरं, अणोरपारं च पयइओ चेव । पयईए य रउद्दं, अपत्तमुद्दं भवसमुद्दं ॥९८॥
पव्वज्जजाणवत्तं, समारुहित्ता विलंघिउं एयं । निज्जामगेण तुमए, हत्थं वंछामि मुणिनाह! ॥९९॥
अह धम्मगुरु पसरंत-भूरिकारुन्नमंथरपुडाए । अंतोफुरंतऽणुग्गह-वससवियासाए दिट्ठीए ॥३०००॥
अणुगिण्हंतो व्व समत्थ-तित्थजलण्हाणपूयपावं च । पकरिंतो महुरगिराए, तं च एवं पडिभणेज्जा ॥१॥
हंभो देवाणुप्पिय! विन्नायसमत्थभवसरूवस्स । पडिवक्खपक्खनिक्खित्त-सव्वविसयाऽभिलासिस्स ॥२॥
आसंसापंकविमुक्क-चित्तवित्तिस्स जियपमायस्स । पसमरसपाणपइखण-पवड्ढमाणप्पिवासस्स ॥३॥
परमूसवठाणट्ठविय-समयविहिसारमरणकालस्स । अच्चन्तं जुत्तमिमं, तुह काउं एत्थ पत्थावे ॥४॥
आलोइऊण नवरं, पडिवन्नगुणाऽइयारमुज्जुत्तो । भणवंछियं महायस!, करेसु निरवज्जपव्वज्जं ॥५॥
एवं चिय गिहिणो पाउणंति, चिरचिन्नसुगिहिधम्मस्स । फलमऽहवा पज्जंते, संथारगदिक्खगहणेण ॥६॥
तदऽसंपत्तीए पुण, सामाइयभावपरिणया संता । सुमुणि व्व चत्तसंगा, भत्तपरिण्णं पवज्जेंति ॥७॥
इच्छामो अणुसट्ठिं ति, कट्टु बहुमन्निउं गुरुगिरं सो । चिरकालपुन्नवंछो ति, किं पि इय जंपइ सखेयं ॥८॥
अहह! न कहिंपि भयवं!, विन्नाओ वि हु मए अपुन्नेण । एत्तियमेत्तं कालं, अच्छउ ता दंसणं तुम्ह ॥९॥
अहवा चिट्ठउ दंसण-छायासेवाइसंभवो ताव । कह कप्पपायवं पइ-विन्नाणं पि हु अपुन्नाण ॥१०॥
सयलपुहवीपयाणं, पयडपयावो वि जह सहस्सकरो । निच्चमऽविन्नाउ च्चिय, सहावतामसखगकुलस्स ॥११॥
एवं ममाऽवि सामिय!, मोहमहातामसेक्कपयइस्स । विगुणस्स य अच्चंतं, कह च तुमं दंसणं एसि ॥१२॥
एस पुण मोहमइलस्स, मज्झ दोसो न चेव पहु! तुज्झ । पयडो च्चिय दिणनाहो, उलुएण अदीसमाणोवि ॥१३॥
अणुपयमऽक्खलियप्पसर-प्पसरंतसुकंतकित्तिकोस! तुमं । इह कत्थ कत्थ तह केण, केण भयवं! न विन्नाओ॥१४॥
अवि य—
वासावज्जविहारी, जइ वि य न विकत्थए गुणे नियए । अभणंतो च्चिय नज्जइ, पयइ च्चिय सा गुणगणाणं॥१५॥
भमरेहिं महुयरीहि य, सेविज्जइ जह विसिट्ठगंधेणं । पाउसकालकयंबो, तह नाह! तुमं पि लोएण ॥१६॥
कत्थ व न जलइ अग्गी कत्थ य चंदो न पायडो होइ । कत्थ य न होंति पयडा, सुगुणा तुम्हारिसा पुरिसा॥१७॥
उदए न जलइ अग्गी मेहच्छइओ न दीसए चंदो । तुम्हारिसा पुण पहू, सव्वत्थ सया पभासंति ॥१८॥
अच्चंतमणहरो वि हु नाऽऽणंदं जणइ कमलसंडाण । छणससहरो न सारय-रवी वि रम्मो वि कुमुयाणं ॥१९॥
भयवं! तुमं पुण महा-पसमप्पमुहप्पहाणगुणजोगा । परमपरितोसयारी, सव्वस्स वि जीवरासिस्स ॥२०॥
किं बहुणा भणिएणं, अज्जं मह सव्वसामिसम्माणो । अज्जं चिय अणुकूला, जाया भवियव्वया मज्झ ॥२१॥
अज्जं वद्धावणयं अज्जं सयलूसवाण समवायो । दिणमवि अज्ज कयत्थं, अज्जं चिय सुप्पभायं ति ॥२२॥
अज्जं चिय चित्तरई, अज्जं चिय परमबंधुसंबंधो । अज्ज कयत्थो जम्मो, साफल्लं लोयणाणऽज्ज ॥२३॥
अज्ज समीहियलाभो, अज्जं चिय पुन्नरासिणा फलियं । अज्ज सवंछं लच्छीए पेच्छियं किर ममाऽभिमुहं ॥२४॥
निरवज्जं अज्ज मए अणप्पपुन्नाण पावणिज्जं जं । तुह पावपंसुपसमण! मुणिंद! पयपंकयं पत्तं ॥२५॥

इय सुद्धियघडणानाम-धेयं पंचममिमं पडिद्दारं । वन्नियमेत्तो भन्नइ छट्ठं आलोयणादारं ॥२६॥

"षष्टम् आलोचनाद्वारम्" —

अह सो सुगुरुवइट्ठं, उवट्ठिओऽणुट्ठिउं महासत्तो । सुस्सावगो विसोत्तिय-वसेण एवं न चिंतेज्जा ॥२७॥
भुज्जो भुज्जो बहुसो, बहूण सुगुरुणमंतियम्मि मए । आलोयणा वि दिन्ना, चरियाणि य पायच्छित्ताणि ॥२८॥
सव्वत्थ वि जयणासार-मेव किरियासु वट्टमाणस्स । थेवं पि मह नेवऽत्थि, किं पि आलोइयव्वं ति ॥२९॥
किंतु दुरवगमसुहुमाऽइ-यारसंसोहणऽत्थमऽवि देज्जा । आलोयणं पडुच्च, चारित्ताऽइयारमिह एक्कं ॥३०॥
नाणद्दंसगतववीरिय-गोयराऽऽलोयणं तु साहु व्व । उवरिपवुत्तविहीए, देज्जा ता देसचारित्तो ॥३१॥
पुढविदगाऽगणिपवणे, वणे य पत्तेयऽणंतरुवम्मि । बितिचउपंचिंदियगोय-रं पि अइयारमाऽऽलोए ॥३२॥
तत्थ पुढवाऽऽइपणगे सम्मं जयणा पमायदोसेणं । जं न कया कह वि तयं, आलोएज्जा सुयविहीए ॥३३॥
बितिचउपणिंदियाणं, परितावाऽऽईण करणओ जो य । अइयारो भंगो वा, वियडेज्जा तं च हियकंखी ॥३४॥
अलिए अब्भक्खाणाऽऽइ-दिट्ठिवंचणमऽदत्तदाणंमि । तुरियवए सुमिणम्मि वि, वियक्खकिड्ढंऽगफासाई ॥३५॥
तह सकलत्तादन्नत्थ-केलिगुज्झंऽगफासणाऽऽईयं । वीयाहपीइकरणाऽऽइ, इत्थिपुरिसाणमऽविसेसा ॥३६॥
तह य परिग्गहमाणे खित्ताइअइक्कमं समालोए दिसिमाणाउ परेणं, सयंगमं अन्नपेसं च ॥३७॥
उवभोगप्परिभोगे, अणंतबहुबीयगाऽऽइभोयणओ । कम्मयओ खरकम्मं, इंगालाई तहाऽऽलोए ॥३८॥
वियडे अणत्थदंडे, तेल्लाऽऽइणं पमायकरणं तुं । पावुवएसं हिंसप्प-याणमऽवज्झाणमऽवि सम्मं ॥३९॥
सामाइए फुसणाऽऽई, दुप्पणिहाणाइ छिन्नणाई य । दंडगचालणमऽविहाण-करणपमुहं समालोए ॥४०॥
देसाऽवगासियम्मि वि, पुढविकायाऽऽइसंवराऽकरणं । अजयणचीवरधुवणा-ऽऽइयं च सव्वं समालोए ॥४१॥
पोसहविसए सेज्जा-थंडिलपडिलेहणाइ जं न कयं । तप्पालणं च सम्मं, जं न कयं तं पि वियडेज्जा ॥४२॥
अतिहिविभागो य कओ, असुद्धअमणुन्नभत्तपाणेहिं । इयरेहिं पुण न कओ, जईण जं तं पि वियडेज्जा ॥४३॥
नियमेण गेण्हियव्वा, अभिग्गहा केई धम्मियजणेणं । निरभिग्गहस्स जम्हा, न वट्टए आसिउं तस्स ॥४४॥
एएसिं जमऽग्गहणं, पमायओ भंसणा य गहियाणं । एसो उ अइयारो, भणितो आलोयणाविसओ ॥४५॥
इय देसचरणविसए, अइयारे वियडिउं अह जइ व्व । तववीरियदंसणगए वि, नूण वियडेज्ज अइयारे ॥४६॥
तहा—
साहुसाहुणिवग्गे, गिलाणओसहनिरुवणं न कयं । जिणइंदमंदिराऽऽईसु, पमज्जणाई य जं न कयं ॥४७॥
चेइयभवणंऽतो जं, सुत्तं भुत्तं च पीयऽमह जं च । जं पाणिपायपमुह-पक्खालणं तं च वियडेज्जा ॥४८॥
तंबुलभक्खणावील-खेलसिंघाणजल्लखिवणाई । तह साहणाइयं वाल-वियुरणं तह जिणगिहंऽतो ॥४९॥
जमऽणुचियाऽऽसणगहणं, असक्कहा वि य जिणिंदभवणंऽतो । विहिया तं सव्वं पि हु, जिणभत्तिपरो उ वियडेज्जा ॥५०॥
जं चेइयदव्वुवजीवणं च, रागाइणा कह वि विहियं । [1]विवलायंतं चेइय-दव्वं समुवेक्खियं जं च ॥५१॥
आसायणा अवन्ना अरहंताऽऽईण जा कया का वि । तं सम्मं सव्वं पि हु, वियडेज्जा अत्तसोहिकए ॥५२॥
धम्मगुणसंजुयाणं, निच्चं उववूहणाइ जं न कयं । जं मच्छरदोसुब्भा-वणाइकरणं पि तं वियडे ॥५३॥
किं बहुणा जं किंपि हु, कहिं पि पडिसिद्धकरणमिह विहियं । कायव्वाणमऽकरणं, करणे वि हु जं न सम्मकयं ॥५४॥
जिणभणियाऽसद्दहणं, विवरीयपरुवणं च जं विहियं । तं सव्वं भव्वेणं, आलोएयव्वयं सम्मं ॥५५॥
इय छट्ठं गिहिगोयर-माऽऽलोयणदाणदारमुवइट्ठं । जंपेमि किंपि संपइ, आउपरिन्नाणदारमऽहं ॥५६॥

"सप्तमम् आयुपरिज्ञानद्वारम्" —

अह दंसियविहिणाऽऽलो-यणाए दिन्नाए सो गिही कोई । होज्जा [2]सहू [3]असहु वा, समग्गमाऽऽराहणं काउं ॥५७॥
जो तत्थ सहू सो वि य, नीरोगंऽगो तहेयरो य भवे । असहू वि य दुवियप्पो, एवं चिय होइ नायव्वो ॥५८॥
तत्थ य सहू व्व असहू, समीवसंपत्तमरणकालो जो । सो पुव्वभणियविहिणा, भत्तपरिन्नं लहु करेज्जा ॥५९॥
आसन्नाऽणासन्नं, सेसाणं पुण वियाणिउं मरणं । भत्तपरिन्नाऽऽइविही, तक्कालुचिया भवे जुत्ता ॥६०॥

1. विवलायंतं = विपलायमानं = विनश्यद् इत्यर्थः। 2. समर्थः । 3. असमर्थः ।

आसन्नेयरमच्चू, कालविभागो य जइ वि सव्वन्नुं । न विणा नज्जइ सम्मं, विसेसओ दूसमासमए ॥६१॥
तस्स परिन्नाणऽट्ठा, केइ उवाए तहा वि परिथूले । अहभुवइसामि तव्विसय-सत्थसामत्थजोगेणं ॥६२॥
जह जलहराउ वुट्ठी, जह दीवाउ तमोगयपयत्था । जह थूमाओ अग्गी, जह पुप्फाओ फलुप्पाओ ॥६३॥
बीयाओ अंकुरो जह, तह एयद्दारसमुदयाओ वि । लक्खिज्जइ पाएणं, कुसलेहिं मरणकालो वि ॥६४॥

"मृत्युकालपरिज्ञानद्वारे एकादशप्रतिद्वारवर्णनम्" —

देवय-सउण-उवस्सुइ,-छाया-नाडी-निमित्त-जोइसओ । सुविणग-अरिट्ठ-जंत-प्पओग-विज्जाहिं कालगमो [दारगाह]॥६५॥
अंगुट्ठखग्गदप्पण-कुड्डाइसु पवरविज्जसत्तीए । अवयारिया विहीए, तहाविहा देवया का वि ॥६६॥
साहेज्ज पुच्छियऽत्थं, नवरं विहिणा दढं सुइब्भूओ । निच्चलमणो सरेज्जा, विज्जं तद्देवयाऽऽहवणिं ॥६७॥
विज्जा एत्थं पुण 'ॐ नरवीरे ठ ठ' इम त्ति नायव्वा । रविससिगहणे एसा, अट्ठुत्तरदससहस्साण ॥६८॥
जावेण साहियव्वा, अह संपत्तम्मि कज्जकालम्मि । अंगुट्ठाइसु लीयइ, अट्ठोत्तरसहसजावेण ॥६९॥
तत्तो कुमारियाओ, वंछियमऽत्थं नियंति निब्भंतं । सम्मत्तनिच्चलाणं, णवरं वंछियकरी एसा ॥७०॥
अहव सयं चिय सक्खा, अक्खित्तमणा गुणेहिं खवगस्स । तं नत्थि जं न साहइ केत्तियमिह मरणकालं तु [देवयादारं]॥७१॥
सज्जो व गिलाणो वा, सयं परेणं व आउनाणकए । सउणं निरूवएज्जा, अह पढमं तत्थ सज्जकए ॥७२॥
कयदेवगुरुपणामो पसत्थदियहंमि परमसुइभूओ । गेहे बहि च सम्मं, परिभावेज्जा सउणभावं ॥७३॥
अहिमूसयकिमिकीडा-कीडियगिहगोहविच्छियाऽऽईणि । [1]रप्फुद्देहियफोडा-मंकुणजूयाइ अइरित्तं ॥७४॥
लुयमक्कडियाजालय-भमरीगिहधन्नकीडया लोणं । लेवप्फोडविचन्नं, कारणरहियं भवे अहियं ॥७५॥
उव्वेयकलहझंझा, धणनासो वाहिमरणवसणाई । उच्चाडणं विएसो, सुण्णघरं होइ अचिरेण ॥७६॥
अह कहवि कया वि कहिं पि, वायसो सुहपसुत्तऽवत्थस्स । चंचूए चिहुरचयं, चुंटइ ता मरणमाऽऽसन्नं ॥७७॥
वाहणसत्थोवाणह-छत्तयछायंगकुट्टणमऽसंको । जस्स किर कुणइ काओ, सो वि लहुं जममुहगमिस्सो ॥७८॥
पाएहिं महिं गाढं, गावो कुद्दंति अंसुपुन्नऽच्छा । जइ ता न केवलो च्चिय, रोगो मरणं पि तप्पहुणो ॥७९॥
इय सज्जाऽवत्थकए, सउणसरूवं पयासियं किंपि । संपइ गिलाणविसयं पि, किंपि साहेमि निसुणेह ॥८०॥
जइ पिट्ठंऽतं चट्टइ, सुणहो वलिऊण दाहिणदिसाए । तो मरइ वाहिघत्थो एगदिणऽब्भंतरे मुणह ॥८१॥
जइ लिहइ उरं तो दोन्नि, वासरे चट्टियंमि नंगूले । दियहाइं तिन्नि जीवइ, णिवेइयं साणसउणेणं ॥८२॥
जइ सव्वंगं संकोचिऊण, सोवइ निमित्तकालंमि । तो जाणह वाहिल्लो, गयजीओ तक्खणे जातो ॥८३॥
धुणिऊण कन्नजुयलं, अंगं वलिऊण धुणइ जइ सुणओ । ता मरइ रोगगहिओ, इंदो वि न रक्खिउं तरइ ॥८४॥
वाइयवयणो लाला-मुयंतओ झंपिऊण नयणजुयं । संकोचिऊण अंगं, सोवंतो जमपूरिं नेइ ॥८५॥
वायसपक्खिसमूहो, आउरगेहस्स उवरि जइ मिलिओ । संझासु तीसु दीसइ, तो जाण विणासए जीयं ॥८६॥
जस्स सयणीयगेहे, महाणसे वा ठविन्ति किर कागा । चम्मं रज्जुं वालं हड्डं वा सो वि लहु मरिही [सउणद्दारं] ॥८७॥
अह एत्तो कित्तिज्जइ, अव्वभिचरियं उवस्सुइदारं । तत्थ पसत्थम्मि दिणे, जाए जणसुयणसमयम्मि ॥८८॥
अंतो बहिं य लिंपित्तुमुदरेणऽद्दचंदणेण तओ । गंधसमुद्धुरबंधुरगंधेहिं समभिवासित्ता ॥८९॥
सूरी परंपराऽऽगय-गणहरगणमणऽभिरामणीएण । मंतेणं कन्नजुयं, अभिमंतित्ता पयत्तेणं ॥९०॥
पंचनमोक्कारेण वि, अहवा कयदेवयागुरुपणामो गंधक्खयजुयहत्थो, सियवत्थकउत्तरासंगो ॥९१॥
आउपरिमाणकए, कयपणिहाणो अणऽन्नचित्तो य । परिपिहियकन्नकुहरो, विणिक्खमित्ता सठाणातो ॥९२॥
उत्तरईसाणपसत्थ-दिसिमुहं अह कमेण गंतूण । चंडालवेससिप्पिय-चच्चरतियवलणदेसेसु ॥९३॥
पक्खिविय अक्खए गंध-बंधुरे तो उवस्सुइसद्दं । अवधारेज्जा सम्मं सो सद्दो उण दुहा नेओ ॥९४॥
एगो य पयत्थंतर-ववएसा तस्सरूवगो इयरो । पढमो चिंतागम्मो फुडकहियऽत्थो च्चिय परो उ ॥९५॥
जह एस गिहत्थंभो, एवइयदिणेहिं अहव पक्खेहिं । मासेण वच्छरेण व, भज्जिस्सइ नेव वा नूणं ॥९६॥
आसि असुंदरो वा, किं तु लहुं एस भज्जए लग्गो । चिरठाई वा दीवो, अहवा लहुं नंदए लग्गो ॥९७॥
[2]पीढीदीवसिहाकट्ठ-पत्तिपभिईउ जाण थीविसए । इच्चाइपयत्थंतर-ववएसा उवसुईसद्दो ॥९८॥

1. रप्फु = वल्मीक = राफडो इति भाषायाम्। 2. पीढी = पीढिउं (देशी)।

एस पुमं इत्थी वा, न जाइहि च्चिय इमाउ ठाणातो । न वयं गंतुं देमो, एसो वि न चेव गमणमणो ॥९९॥
दोण्हं तिण्ह चउण्ह व, दिणाण मज्झम्मि अहव उवरिं वा । एवइयसंखदिणपक्ख–मासवरिसुवरि अंतो वा॥३१००॥
जइ अज्ज वि एस गमं, काही अहवा महायरेणाऽवि बहुसो वि धरिज्जंतो, गमिही लहु एस न हु ठाही ॥१॥
अज्जं चिय रयणीए, कल्लं वा परतरम्मि वा दिवसे । गमणूसुगो धुवमिमो, वयं पि लहु पेसणमण त्ति ॥२॥
तेण लहुं गमिहि च्चिय, इच्चाई तस्सरूवगो नाम । बीओ उवस्सुईए, सद्दो एवं दुगं सोच्चा ॥३॥
निज्जामगो मुणिवरो, अहवा तप्पेसिओ परो को वि । पत्थुयगिलाणमाऽऽसज्ज, उचियकिच्चं करेज्जऽहवा ॥४॥
कन्नुग्घाडणसमणंतरं खु जं किंपि सुणइ तत्तो वि । आसन्नाऽणासन्नं कलिंति कालं कलाकुसला [उवस्सुईदारं]॥५॥
भणियमुवस्सुइदारं, दारं छायाए समयं तत्थ । छायं बहुभेयं पि हु, वोच्छं सामन्नओ चेव ॥६॥
आउपरिन्नाणकए, सम्मं निक्कंपमणवईकाओ । पइदिवसं पि किर नरो, निरुवएज्जा नियं छायं ॥७॥
सम्मं वियाणइत्ता, सरूवओ अप्पणो तणुच्छायं । सत्थनिदंसियविहिणा, सुहाऽसुहं तो वियाणेज्जा ॥८॥
आयवदप्पणसलिलाऽऽइएसु, अंगाउ जा पडिप्फलइ । संठाणमाणवन्ना–इएहिं सा खलु पडिच्छाया ॥९॥
सा होज्ज जस्स सहसा, छिन्ना भिन्ना तहाऽऽउला सहसा । अहवूणा अहिया वा, संठाणपमाणवन्नेहिं ॥१०॥
रज्जुसमाणाऽऽगारा व, जस्स कंठप्पइट्ठिया छाया । लक्खिज्जइ अक्खिज्जइ, खिप्पं कं खइ खयमिमो त्ति ॥११॥
जलतीरठिओ पट्ठीए, कयरवी पेच्छिरो नियच्छायं । भिन्नठियउत्तिमंगं, जमगेहे गच्छइ हत्थं ॥१२॥
असिरं व बहुसिरं वा, किं बहुणा पयइविसरिससरूवं । नियछायं जो पेच्छइ, हत्थं गच्छइ स जमगेहं ॥१३॥
छाया जस्स न दीसइ, वियाण तज्जीवियं दस दिणाणि । छायादुगं च दीसइ, जइ ता दो चेव दिवसाणि॥१४॥
अहवा—
अंतोमुहुत्तमेत्ते, दिवसे उदयाउ सम्ममुवउत्तो । अच्चंतसुईभूओ, पट्ठीए ठवेत्तु रविबिंबं ॥१५॥
अहिगयसुहाऽसुहकए, नेमित्ती निप्पकंपमऽप्पाणं । धारेंतो थिरचित्तो, छायापुरिसं निरुवेज्जा ॥१६॥
तत्थ जइ ता तमऽक्खय–सव्वंगं पासए तया कुसलं । तप्पायाणं पुण जइ, अदंसणं ता विदेसगमो ॥१७॥
ऊरुण जुगे रोगं, गुज्झो उ विणस्सए पिया नूणं । उयरे अत्थविणासो, हियए मच्चू अदीसंते ॥१८॥
दक्खिणवामभुअअदंसणे उ, जाणाहि भायसुयनासो । सीसे उ अदीसंते, छम्मासाओ भवे मरणं ॥१९॥
सव्वंगमऽदीसंतम्मि, तम्मि जाणाहि सज्जमरणं तु । एवं छायापुरिसातो, आउकालं वियाणेज्जा ॥२०॥
जो न जलदप्पणाऽऽईसु, नियछायं नियइ नियइ वा विगियं । [1]समवत्ती तस्स फुडं, समीववत्ती परिब्भमइ ॥२१॥
एवं छायाहिन्तो वि, सम्ममुवओगसारपारम्भो । पाएण मच्चुविसयं, कलेइ कालं कलाकुसलो [छायादारं] ॥२२॥
एत्तो नाडिद्दारं, नाडिं च तिहा भणंति तव्विउणो । पढमो इडा परा पिं–गला य तइया सुसुमणा य ॥२३॥
वामवहा आइल्ला, दाहिणपरिवाहिणी भवे बीया । तइया पुण उभयवहा, तव्विसयं निच्छियपहाणो ॥२४॥
[2]ऊंपियवयणो निप्फंद–लोयणो मुक्कसयलवावारो । जो [3]एहावत्थुगतो, सो जोगी लहइ फुडलक्खं ॥२५॥
सड्ढं घडियाण दुगं, वहइ इडा पिंगला य अणुकमसो । खणमेत्तं खु सुसुमणा, एत्थऽत्थे बिन्ति अन्ने उ ॥२६॥
गरुयक्खरछक्कुच्चार–कालपरिमाणमेगमूसासं । नीसासं वा पाणं ति, बेन्ति सुत्थंऽगदेहिस्स ॥२७॥
तेसिं पाणाणं तिहिं, सएहिं सट्ठीए समहिएहिं तु । जायइ बज्झा घडिया, एक्का अह तेण माणेणं ॥२८॥
वहइ इडा घडियापं–चगंति तं पिंगला छपाणोणं । छप्पाणे उ सुसुमणा, [4]पइय पवाहो इमाणमिमो ॥२९॥
एत्थ य वामा चंदो, दिणनाहो दाहिणे भवे इण्हिं । कालपरिन्नोवायं, वोच्छं एयाऽणुसारेणं ॥३०॥
आउयचिन्ताऽवसरे, पाणपवेसाउ जीवियं जाण । निग्गमणे पुण मरणं, भणियमिणं परमरिसिगुरुणा ॥३१॥
चंदायए दिणेसो, अहव दिणेसायए जया चंदो । असमंजसवहगा वा, दो वि तया जियइ छम्मासं ॥३२॥
जइ उत्तरायणदिणा–दाऽऽरब्भ दिणाणि पंच परिवहइ । एक्कसरो च्चिय सूरो, तो जीवति वरिसतिगमेव ॥३३॥
अह वहति दिवसदसगं, ता जीयति दोण्णि चेव वरिसाणि । पन्नरसदिणवहे पुण, एक्कसरे वरिसमेगं तुं ॥३४॥
अह उत्तरायणादेव, जस्स वीसं दिणाणि एक्कसरो । वहई दिणाहिवो ता, छम्मासे चेव सो जियइ ॥३५॥

1. यमराजः । 2. आच्छादित० 3. एतदवस्थागतः । 4. प्रतीतः ।

पणुवीसाए तिमासं, छव्वीसाए य जियइ दो मासे । सत्तावीसदिणवहे, रविम्मि पुण मासमेक्कं खु ॥३६॥
अह उत्तरायणाउ, अट्ठावीसं दिणाणि परिवहति । एक्कसरो चेव रवी, पन्नरस दिणाणि ता जियइ ॥३७॥
एगूणतीसदिणवह-रविम्मि पुण जाण दिवसदसगं खु । तीसाए दिणपणगं, एक्कतीसाए दिवसतिग ॥३८॥
बत्तीसाए दिणदुगं अह तेत्तीसाए जियइ दिणमेक्कं । अन्नं पि सप्पसंगं, किंपि पवक्खामि संखेवा ॥३९॥
सयलदिणं दिणनाहो, वहमाणो माणवाण साहेइ । उप्पायं किंपि गिहे, दिणदुगवाही य गोत्तभयं ॥४०॥
गामे गोत्ते य भयं, तिदिणवहो कहइ चउदिणवहो उ । सत्थावत्थस्स वि जो-गिणो धुवं पाणसंदेहं ॥४१॥
पंचदिणप्पवहो पुण, मच्चुं [1]सच्चवइ जोगिणो नूणं । वाहिं च किच्छसज्झं, दिणछक्कवहो नरवइस्स ॥४२॥
सत्ताऽहोरत्तवहो, तुरगाण खयं कहेइ निब्भंतं । अंतेउरभयजणगो, अणवरयं अट्ठदिणवाही ॥४३॥
नववासरवाही पुण, महाकिलेसं कहेइ नरवइणो । मरणं दसदिवसवहो, तंतभयं [2]रुद्ददिणवाही ॥४४॥
बारसतेरसदिवस-प्पवहो कमसो अमच्चंतिभयं । कुणइ चउद्दहदिणपरि-वहो तहा मंडलब्भंसं ॥४५॥
पन्नरसदिणपवाही, महाभयं भणइ सव्वलोयस्स । सव्वमिमं जहभणियं, नेयव्वं चंदचारे वि ॥४६॥
जस्स रविम्मि वहंते, पयईए जायए विवज्जासो । बज्झऽब्भंतरवत्थूसु, कारणविरहे वि किर एवं ॥४७॥
दिव्वे सद्दे सुणई, समुद्दपुरसंभवे य अच्चंतं । अक्कोसेसु पसीयइ, हरिसिज्जइ न सुहिसद्देसु ॥४८॥
विज्झायदीवगंधं, न पडुयघाणिंदिओ वि उवलभइ । उन्हे वि सीयबुद्धी, सीए पुण उन्हपडिहासो ॥४९॥
नीलच्छविमच्छीणं, रिंछोलीहिं तु आवरिज्जइ य । मणसो य [3]विंभलत्तं, जायइ जस्स य अकम्हा वि ॥५०॥
इच्चाई अन्नो वि हु विवज्जओ होइ जस्स पयईए । सूरम्मि परिवहंते, तस्साऽवस्सं लहुं मरणं ॥५१॥
चंदोदए वि पयइ-विवज्जयाऽणुभवणेण होइ धुवं । उद्वेगरोगसोग-प्पहाणभयमाणमलणाऽऽई [नाडीदारं] ॥५२॥
भणियं नाडीदारं, एत्तो भोमाइअट्ठभेयं पि । सामन्नेणेव परं, निमित्तदारं पयंपेमि ॥५३॥
चंकमणठाणनिसियण-सोवणभूमिनिमित्तविरहे वि । दुग्गंधत्तं जालाओ, जस्स दावेइ विदलइ वा ॥५४॥
अन्नं वा कलुणक्कंद-सद्दकरणाऽऽइयं जइ वियारं । सहसा दरिसेइ तया, छम्मासंतो भवे मरणं ॥५५॥
सज्जं परकेसेसुं, धूमाऽग्गिफुलिंगसंभवे मरणं । सुणगेहिं अट्ठिमडगा-वयवपवेसा गिहे मरणं ॥५६॥
राया वि उवक्खित्तो, हेट्ठा आराहगत्तणेण इहं । तं पि पडुच्चुप्पाए, केत्तियमेत्ते वि जंपेमि ॥५७॥
अणभिहयतूरनाओ, सद्दो वा ताडिएसु जइ न भवे । जलमंसउल्लजलणे, अणब्भवुट्ठीए नियमरणं ॥५८॥
सक्कधयचिंधतोरण-दुवारथंभिंदकीलगाऽऽईणं । सहसा भंगो पडणाणि, मरणमऽक्खंति नरवइणो ॥५९॥
कुसुमफलाणि अकाले, अहवा जालाउ धूममुयणं च । सुंदरदुमेसु दट्ठुं, हत्थं निच्छयसु रायवहं ॥६०॥
निसि दिवसे य निरब्भे, पेच्छंतो सुरधणुं जियइ न चिरं । गीयरवतूरसद्दा, गयणे धुवरोगमरणाय ॥६१॥
पवणस्स गइं फासं, न विंदइ विंदइ य विवरीयं । ससिजुयलं वा पेच्छइ, जो तं मरणूसुगं जाण ॥६२॥
गुदतालुयजीहाऽऽईसु, अनिमित्तमतक्कियं मसाऽइसयं । दट्ठुं दुट्ठुट्ठाणं, उवट्ठियं जाण लहु मरणं ॥६३॥
जस्स य जीहऽग्गम्मि, दीसइकसिणो अदिट्ठपुव्वो य । अनिमित्तो च्चिय बिंदू, सो वि न मासा परं जियइ ॥६४॥
अहवा निमित्तविरहा-ऽतक्कियं कह वि किर सरो वि दढं । जस्स सहावाउ पडइ, चडइ वा कम्मवसगस्स॥६५॥
अइकलुणदीणविरस-त्तणं च कंठग्गहं च दरिसेइ । निस्संदेहं देहंऽ-तरं लहुं लहइ सो वि नरो ॥६६॥
एगा व दो व तिन्नि व, चउ पंच व जस्स होंति पुरिसस्स । अइदीहराउ पिहुलाउ, भालवट्टम्मि रेहाउ ॥६७॥
सो वरिसाणं तीसं, चालीसं सट्ठिमऽसिइमेक्कसयं । जीवति अणिंदियं चिय, जहासंखेण मुणियव्वं ॥६८॥
अनिमित्ते सहस च्चिय, जस्संऽगं सव्वहा वि पुरिसस्स । पयईए परिच्चायं, काऊणं दरिसइ वियारे ॥६९॥
रिज्जइ सिज्जइ खिज्जइ, उवयाराओ वि नवि गुणं लहइ । तं पि हु अयालपत्तं, कालप्पत्तं वियाणाहि ॥७०॥
लेसुद्देसेण इमं, निमित्तदारं मए समक्खायं । एत्तो भणामि किंचि वि, सत्तमयं जोइसद्दारं [निमित्तद्दारं] ॥७१॥
जम्मि सणी नक्खत्ते, तं नक्खत्तं मुहंमि दायव्वं । चत्तारि दाहिणकरे, पाएसु य तिन्नि तिन्नि भवे ॥७२॥
चत्तारि वामहत्थे, हियए पुण पंच तिन्नि सीसम्मि । लोयणजुयलंमि दुगं, गुज्झे य दुगं विणिद्दिट्ठं ॥७३॥

1. सच्चवइ = दर्शयति । 2. एकादशदिनवाही । 3. विह्वलत्वम् = व्याकुलत्वम् ।

इय रिक्खंठावणाए ठविउं सणिपुरिसचक्कमडइनिउणं । जोएहु अप्पणो जम्म-रिक्खमडहनामरिक्खं वा ॥७४॥
त जइ निमित्तकाले, हवेज्ज सणिपुरिसगुज्झदेसत्थं । तह सव्वहा वि सोम-ग्गहेहिं अजुयं अदिट्ठं च ॥७५॥
पावग्गहेहिं पुण सं-जुयं च दिट्ठं च सयलदिट्ठीए । ता सज्जस्स वि मरणं, सूयइ रोगिस्स का उ कहा ॥७६॥
अहवा पुच्छालग्गाडणु-सारओ णिउणजोइसविउस्स । आएसाओ जाणेज्ज, मरणकालं फुडं खु जहा ॥७७॥
पिट्ठोदए वि लग्गे, कूरा लग्गत्थहिवुगदसमठिया । जइ होंति अट्ठछट्ठम्-रासीसु निसाडहिवो होइ ॥७८॥
तो रोगी मरइ धुवं, अहवा लग्गाडहिवो गहो अत्थं । उवणमइ तो वि मरणं, रोगी सज्जो वि उवणमइ ॥७९॥
चंदसणिभोमसूरा, लग्गदुवालसनवडट्ठमत्था य । साहिंति रोगिमरणं, जइ बलवंतो न देवगुरु ॥८०॥
चंदो जइ दसमगओ, रवी तइज्जे व संठिओ छट्ठे । मरइ असुहेण मणुओ, तइए दियहे न संदेहो ॥८१॥
उदयाओ उ चउत्थे, निहणे वा जइ हवंति पावगहा । तो जाणवेंति मरणं, तइए दियहे मणुस्साणं ॥८२॥
कूरग्गहाणमुदए, पंचमए वा वि जइ ठिओ पावो । नीरोगो वि हु फिट्टइ, दसद्धदियहे न संदेहो ॥८३॥
धणमिहुणे जामित्ते, असुहगहा जइ भवंति तो वाहिं । साहेंति मरणमडहवा, वियाण सव्वन्नुणा भणियं [जोइसदारं] ॥८४॥
इय लेसुद्देसेणं, जोइसदारं पि वन्नियं किंपि । सुविणगविसयं दारं, दरिसेमि संपयं किंपि ॥८५॥

"स्वप्नवर्णनम्" —

वानरी विगरालच्छी, आलिंगइ सुविणयम्मि जइ कहवि । तह मंसुकेसनहक-प्पणं च ता मरणमडचिरेण ॥८६॥
तेल्लमसिलित्तअंगो, विलुलियकेसो य विवसणो सुविणे । खरकरहगओ जमदिस-गामी जइ तो वि लहु मरणं ॥८७॥
रत्तवडखवणयाणं, सविणे दंसणमडवस्समरणाय । रत्तवसणो य सुविणे, गायंतो निच्छियं मरइ ॥८८॥
उट्टखरजुत्तजाणं, एगागी आरुहेज्ज जो सुविणे । जग्गइ तत्थ ठिओ च्चिय, जइ ता मरणं समासन्नं ॥८९॥
कसिणंडबरनेवत्थो, कसिणविलेवणविलित्तगत्ता य । नारी जइ उवगूहइ, सुविणे ता मरणमडचिरेण ॥९०॥
जग्गंतो च्चिय निच्चं, जो पासइ दुट्ठसुविणयं पुरिसो । सो मरइ वच्छरंडतो, सच्चमिणं केवलीभणियं ॥९१॥
सुविणे [1]पेएहिं समं, सुरं पियंतो सियालसुणएहिं । जो कड्ढिज्जइ पायं, जरेण सो पाविही मरणं ॥९२॥
सुमिणे वराहरासभ-कुक्कुरकरभविगमहिसयाईहिं । जो निज्जई जमदिसं, स सोसदोसेण पुण मरिही ॥९३॥
जायइ हियए तालो, वंसो वा कंटइल्लवली वा । जस्स सुमिणे स नासं, अणुगमिही [2]गुम्मदोसेणं ॥९४॥
सुविणे च्चिय गयजालं, जलणं तप्पिंतयस्स पुण जस्स । नग्गस्स तह घएणं, सव्वंडब्भंगजुत्तस्स ॥९५॥
पुरिसस्स हि हिययसरे, उट्ठाणं पाउणंति पउमाइं । लहु गमिही जमगेहं, कुट्ठविणट्ठंडगजट्ठी सो ॥९६॥
रत्तंबरकुसुमधवे, कड्ढिज्जइ इत्थियाहि हसमाणो । जो सो गमिही पुण रत्त-पित्तदोसेण पज्जन्तं ॥९७॥
नेहं सह चंडालेहिं, पिबइ सुमिणे पमेहदोसा सो । जो पुण जले निमज्जइ, सो रक्खसदोसओ मरिही ॥९८॥
जो पुण मत्तो नच्चंतओ य, पेएण निज्जए सुविणे । उम्मायदोसओ सो, अंते पाणे परिच्चइही ॥९९॥
नयणाडडमएण मरिही, ससिसूरनिवायदंसणे सुमिणे । सुविणे ससिरविगहणाण, दंसणे पुण [3]अमारीए ॥३२००॥
पूयगसक्कुलिभक्खी, मरिही पुण तव्विहं चिय वसंतो । जलतेल्लवसामज्जाडडइ-पाणओ पुण अईसारा ॥१॥
वानरखरुट्टमज्जार-वग्घविगसूयरेहिं सुविणम्मि । पेएहिं सियालेहिं य, जस्स गमो सो वि गमणमणो ॥२॥
रत्तकुसुमस्स पुरिसस्स, सुमिणए मुंडियस्स नग्गस्स । चंडालेहि दक्खिण-दिसाए नयणं पुणो जस्स ॥३॥
जस्स सिरे वंसलयाइ-संभवो पक्खिनिलयकरणं च । चडणं च कागगिद्धाडडइ-याण मुंडत्तमडह सुविणे ॥४॥
सुमिणे च्चिय पेयपिसाय-इत्थीचंडालसंगमो जस्स । तह वेत्तलयातणवंस-उवलकंटगकडिल्लम्मि ॥५॥
गत्ताए मसाणेसु य, सयणं पडणं व छारपंसूसु । जलपंकखुप्पणं सिग्घ-वेगसोएण हरणं च ॥६॥
तह रत्तकुसुममाला-विलेवणंडबरविभूसणविहाणं । सुमिणम्मि गीययाइय-नट्टविहीए य करणं च ॥७॥
जस्संडगवओवुड्ढी, सुविणे अब्भंगणं च [4]गायस्स । मंगलविवाहहासाडडइ-कम्मकरणं च तह जस्स ॥८॥
अब्भवहरणं सुमिणे य, जस्स पक्कन्नपमुहभक्खाण । [5]छड्डीविरेयणं दम्म-लोहपमुहाण लाभो य ॥९॥
वल्लीवियाणवक्कल-सव्वंगाडडवेढणं च सुमिणम्मि । तत्थेव कलहकरणं, तह बंधपराजया जस्स ॥१०॥

1. प्रेतैः = भूतैः मृतैः वा । 2. गुल्मदोषेण । 3. अमारीए = मूत्रकृच्छ्रेण । 4. गात्रस्य । 5. छड्डी = छर्दिः वमनम् ।

देवगहरिक्खचक्खु-पईवदंताऽऽइपडणनासाऽऽई । नासो य [1]पाणहाणं, पाओ करचरणचम्माण ॥११॥
निब्भच्छणं च परिकुविय-पियरलोयाउ जस्स सुविणम्मि । सहसा अइहरिसो वा, पच्चयभेओ य तह जस्स॥१२॥
तह पागकम्मगेहे, जणणीए चियाए रत्तकुसुमवणे । अइसंकडऽऽधयारेसु, जस्स सुविणे च्चिय पवेस्सो ॥१३॥
कासायवत्थरत्तच्छ-दंडधारीण नग्गकालाणं । मंदाणं खुद्दाणं च, दंसणं जस्स सुविणम्मि ॥१४॥
निस्साहारं च तहा, पडणं पासायपव्वएहिन्तो । मच्छेहिन्तो गसणं च, जस्स सुविणे च्चिय नरस्स ॥१५॥
अइकसिणकायचीरं, अइपिंगललोयणं वियत्थं च । विगियागारं खीणो-यरिं च अइदीहनहरोमं ॥१६॥
हसमाणिं जो इत्थिं, अवगूहन्तिं व पेच्छए सुविणे । जो य अईयनिएहिं, हक्कारिज्जइ य गच्छइ य ॥१७॥
जो वा करिजुत्तेणं, जाणेणं पेयपव्वइयसहिओ । पविसेइ सिंबलीपारि-भद्ददुमदुग्गगहणम्मि ॥१८॥
सो सुत्थो वि हु मरणं, अहवा दव्वाऽऽइयं महावसणं । पाउणिही रोगी पुण, नियमा मरणं चिय तहाहि ॥१९॥
मरइ च्चिय रोगी पा-सिऊण इय परमदारुणे सुविणे । सुत्थो पुण संदेहं, संपाविय को वि जीवइ वि॥२०॥
दिट्ठो सुओऽणुभूओ, दोसुत्थो कप्पिओ य पत्थियओ । कम्मजणिओ य एवं, सत्तविहो वन्निओ सुमिणो ॥२१॥
अह तेसु निप्फला खलु, आइल्ला पंच देसिया सुमिणा । दो चेव सुहाऽसुहसू-यणा उ अंतिल्लया नेया ॥२२॥
तत्थ अइदीहहस्सो, जो सुमिणो जो य दिट्ठपम्हुट्ठो । अइपुव्वरत्तकालम्मि, जो य दिट्ठो कहिंचि भवे ॥२३॥
स चिरेण फलं तुच्छं व, देइ अह अइपहायदिट्ठो ता । तद्दिवसे चेव महं-तयं च अन्ने पुण भणंति ॥२४॥
रयणीए पढमजामे, दिट्ठो सुविणो फलेइ वासाउ । बीए मासतिगाउ, तइए पहरंमि मासदुगा ॥२५॥
रयणीए चउत्थे पुण, पहरे दिट्ठो हु मासओ सुविणो । गोसम्मि वासराणं, दसण्ह सत्तण्ह वा फलइ ॥२६॥
दट्ठूण अणिट्ठं पि हु, पच्छा जो पासइ सुहं सुविणं । तस्स सुहं चेव भवे, एवं इट्ठे वि दट्ठव्वं ॥२७॥
जिणबिंबपूयणाओ, पंचनमोक्कारमंतसरणाओ । तवनियमदाणओ तह, सुविणो पावो वि मंदफलो [सुविणगदारं]॥२८॥
एवं सुविणगदारं, दंसिय दंसेमि रिट्ठमिह जम्हा । न विणा रिट्ठं मरणं, न जीवियं दिट्ठरिट्ठम्मि ॥२९॥
ता सव्वपयत्तेणं, रिट्ठं आराहणऽत्थिणा सम्मं । सययं निरूवणीयं, सुगुरुवएसाऽणुसारेण ॥३०॥
जो अनिमित्तो वि अतक्किओ वि, सहस त्ति होइ पुरिसस्स । पयइविगाराऽणुभयो, निद्दिट्ठं रिट्ठमिह तं खु ॥३१॥
पुरओ व पिट्ठओ वा, जस्स पयं पंकपंसुपमुहेसु । खंडमकंडे दीसइ, न जियइ सो अट्ठमासे वि ॥३२॥
घयभायणमज्झगयं, रविबिम्बं आउरेण दीसन्तं । पुव्वादाहिणअवरु-त्तरासु खंडं जियं कुणइ ॥३३॥
छम्मास तिन्नि मासा, दो मासा एक्कमासपरिमाणं । रेहा-रंध-सधूमे, पनरस दोपंच पंचदिणा ॥३४॥
जस्स निवाए वि गिहे, समग्गजलणंऽगवंझजोगे वि । [2]नंदइ दीवो सहसा, बोहिज्जंतो वि पुणरुत्तं ॥३५॥
तह आउरस्स जस्स वि, गेहे अनिमित्तमेव अइमत्तं । निवडंति भायणाइं, भज्जंति य सो वि लहु मरइ ॥३६॥
नियनियकरणेहि वि जस्स, सद्दरसरूवगंधफासाणं । अनिमित्तमऽणुवलद्धी, उवलद्धी वा वि विवरीया ॥३७॥
तह जो वेज्जवरं ओसहं च, अभिणंदइ न उवणीयं । तं पि हु नीसंदेहं, देहंऽतरपत्थियं जाण ॥३८॥
अंजणपुंजपगासं, बिंबं मयलंछणस्स रविणो य । जो पेच्छइ सो गच्छइ, जमाऽऽणणं बारसदिणंऽतो ॥३९॥
समहियमुत्तपुरीसो, जो परिमियभत्तपाणभोई वि । [3]इय विवरीओ जो वा, तस्साऽऽसन्नं मुणसु मरणं ॥४०॥
पुव्वं सुविणीओ वि हु, सगुणस्स वि जस्स परियणो सहसा । वियरीयं परिचिट्ठइ, तं पि वियप्पेसु अप्पाउं॥४१॥
न गयणगंगं पेच्छइ, पेच्छइ य दिवा य तारए जो य । सुरजाणविमाणाणि य, सो वि समासन्नजमनिलओ॥४२॥
एक्कं व दो बहूणि व, रविससिबिंबेसु तारएसुं वा । जो पेच्छइ छिड्डाइं, जाण तदाऽऽउं वरिसमेक्कं ॥४३॥
उभयकरंऽगुट्ठट्ठइय-कन्नकुहरो न निसुणइ जो य । नियकन्नाणं घोसं, सो मरइ सत्तदिणमज्झे ॥४४॥
दाहिणकरनिबिडऽक्कंत-वामहत्थंऽगुलीण पव्वग्गा । जस्साऽरुणा न दीसंति, तस्स वि जाण लहु मरणं ॥४५॥
मुहदेहवणाईसुं, अईव इट्ठो दढं अणिट्ठो वा । जस्सुच्छलइ अहेऊ, गंधो सो वि हु लहुं जाइ ॥४६॥
जायइ मुणालसीयल-मंऽगमऽकम्हा सउम्हमऽवि जस्स । जमरायरायहाणी- पंथपयट्टो लहुं सो वि ॥४७॥
पस्सेयहेउगेहे, होउं निच्चं निएज्ज नियभालं । जइ ता न हाइ [4]सेओ, ता जाण जहाऽऽगओ मच्चू ॥४८॥

1. उपानहाम् । 2. विध्यायति । 3. एतस्माद् विपरीतः । 4. स्वेदः ।

जस्स य सुक्का विट्ठा, निट्ठुयं च लहुं बुड्डइ जलंमि । सो पुरिसो मासेणं, पासेणं वच्चइ जमस्स ॥४९॥
जूया व मच्छिया वा, निरंतरं ज भयंति पच्छा वा । उवसप्पंति य तं काल-कवलियं कुसल! कलसु लहुं ॥५०॥
विज्जुं पुरंदरधणुं, थणियमऽमेहे वि नहयले नियइ । सुणइ य गज्जियसद्दं, जो सो लहु जमपुरपवेसी ॥५१॥
जस्स सिरे कागोलूग-कंकप्पमुहा पलासिणो विहगा । सहसाऽऽवडंति सो जाइ, जमगिहे थोवदियसेहिं ॥५२॥
विच्छाए पेच्छंतो, रविससितारागणे जियइ वरिसं । अह सव्वहा न पेच्छइ, अच्छइ छम्मासमेव जइ ॥५३॥
तह ससिरविबिंबाणं, भूपडणं पासइ अकम्हा जो । निस्संसयं वियाणसु, बारस दिवसाणि तस्साऽऽउ ॥५४॥
जो पुण दो रविबिंबे, पासइ नासइ स मासतियगेण । रविबिम्बमंऽतरिच्छे, पेच्छइ भमिरं अह लहुं ता ॥५५॥
सूरस्स अप्पणो या, जो जुगवं नियइ चउसु वि दिसासु । रविबिम्बाणि तदाउं, दिणाण घडियाण य चउक्कं ॥५६॥
सव्वंगं व नियंतो, छिड्डं मायंडमंडलमऽकंडे । नणु सग्गमग्गलग्गो, दसदिवसऽब्भन्तरे नेओ ॥५७॥
जियइ तिदिणं स सव्वं, पासइ पीयं पयत्थसत्थं जो । जस्स य कसिणं भिन्नं, हवइ पुरीसं स लहुमरणो ॥५८॥
बद्धद्धचक्खुलक्खो, निरिक्खमाणो वि न य नियं नियइ । भुमयाण जुयं जो सो, नवदिवसऽब्भंतरे मरइ ॥५९॥
भालुवरि धरियहत्थो, पयइत्थं चेय नियइ मणिबंधं । जो न पुण अइकिसतरं, तरसा सो वि हु मरणसरणो ॥६०॥
न नियइ नियनयणाणं, अग्गंऽगुलिघट्टियऽच्छिपेरंतो । जो जोइं जाइ जमा-ऽऽणणं स नियमा दिणतिगंऽते ॥६१॥
वामऽच्छिणो न पेच्छइ, अह रुद्धाऽवंगकोणजोइं जो । तं पि कमेण वियाणसु, छत्तिदुमासेक्कमासाऽऽउं ॥६२॥
अह तं सकरंऽगुलिचंपियस्स, इयरऽच्छिणो न पेच्छइ जो । दस पंच तिन्नि दो या-सरे उ तज्जीवियं जाण ॥६३॥
अणविक्खियऽन्नलक्खं, अहोमुहाऽऽवडियलोयणुद्धउड्ड । परिमंथरथिरतारं, नासग्गाऽऽसंगिदिट्ठिजुयं ॥६४॥
जह होइ तहा [1]नियम, नियमं जो नासियं नियंतो वि । न हु पिच्छइ सो गच्छइ, [2]हत्थं पंचाऽहमित्तेण ॥६५॥
एवं चिय जीहग्गं, नियगमुहा निग्गयं नियंतो वि । जो न हु पिच्छइ अच्छइ, सो परमेगं अहोरत्तं ॥६६॥

"कालचक्रस्य विधि" —

तह भूमिगाऽणुरूवं, होऊणं परमदव्वभावसुई । काऊण परमपूयं, परमगुरूणं परमविहिणा ॥६७॥
सुक्किलपक्खं दक्खिण-पाणिं परिकप्पिउं कमेण पुणो । हेट्ठिममज्झिमउवरिम-पव्वाणि कणिट्ठियाए य ॥६८॥
पडिवयछट्ठिक्कारसि-तिहीओ परिकप्पिउं पयाहिणओ । सेसंऽगुलिपव्वेसु तु, सेसतिहीओ वियप्पेज्जा ॥६९॥
पंचमिदसमीपुन्निम-तिहीओ ता जाव ठविय अंगुट्ठे । एवं वामकरे पुण, परिकप्पिय कसिणपक्खकमं ॥७०॥
ता जाव तदंगुट्ठे, उवरिमपव्वे अमावसाऽऽईए । एवं तीस तिहीओ, परिकप्पित्ता जहाभणियं ॥७१॥
तत्तो विवित्तदेसे, निबद्धपउमासणो महासत्तो । बद्धकरकमलकोसो, पसण्णथिरमणवईकाओ ॥७२॥
झाएज्ज कसिणवन्नं, सुन्नं करकमलकोसमज्झगयं । सियवत्थछाइयऽप्पा, सुबद्धलक्खो तहिं चेय ॥७३॥
उग्घाडिय करकमलं, पलोइओ जीए कीए वि तिहीए । दीसइ स कालबिंदू, सो कालो नत्थि संदेहो ॥७४॥
जम्मन्तरलक्खेण वि, न मुणिज्जइ कह वि अप्पणो अप्पा । सयलसमयण्णुणा वि हु, सिरिगुरुवयणं पमोत्तूणं ॥७५॥
इय कालचक्कसारं, गाहादसगेण वन्नियमिमं च । पडिवयदिवसे झायह, [3]जिं पेच्छह आगयं मच्चुं ॥७६॥
बालिंदुसमाउ आगिईए, भालम्मि वच्छि सीसे वा । जस्स अपुव्वाउ सिराउ, अहव रेहाउ जायंति ॥७७॥
जस्स सिरे गोमयचुण्ण-वण्णचुण्णो सिणिद्धधूमो वा । उवलक्खिज्जइ खिज्जइ, मासंऽतो जीवियं तस्स ॥७८॥
दंता वि जस्स सहसा, सुपुप्फिया सक्कराऽऽउला लुक्खा । सामा वा होंति तमं- [4]तगंऽतिगं पत्थियं जाण ॥७९॥
विरहे वि दंतरोगस्स, जस्स तेसिं अतक्कियं चेव । पडणं भंगो व भवे, भवंऽतरं तुरियगामी सो ॥८०॥
जीहा वि जस्स सामा, सुक्का [5]सूणा पमाणओ अहिगा । हीणा वा थद्धा वा, सरणं मरणं खु तस्साऽवि ॥८१॥
अनिमित्तं अविलंबी, चक्खुस्सावो य लंबगे सोसो । जइ ता कमेण दससत्त-वासरंऽते धुवं मरणं ॥८२॥
कंठक्खोभे पहरा, तालुक्खोभे य आणुपाणुसया । अणवज्जवज्जपंजर-गयं पि पुरिसं जमो नेइ ॥८३॥
जस्संऽगुलीओ सहसा, फुडन्ति आयड्ढणं विणा चेय । सो वि अवस्सं काही, देही देहऽन्तरं तरसा ॥८४॥
अनिमित्तथक्कवयणो, अनिमित्तं चेव नट्ठदिट्ठी वा । वासरतिगं जइ परं, पुरिसो जीवइ न उवरिं पि ॥८५॥

1. नियतम् । 2. शीघ्रम् । 3. यथा । 4. अन्तकान्तिकम् = यमराजके पास• । 5. शूना = सूजी हुई ।

सत्थो वि सरीरेणं, न नियइ नियवामखंधसिहरं जो । तं पि न चिरकालेणं, कालेणं कवलियं कलसु ॥८६॥
थरिसिज्जन्ता वि दढं, निस्सद्दा चेव जस्स करचरणा । जस्स य निसि दिसिमोहो, रेयं च सरन्तमऽइरित्तं ॥८७॥
छीयणकासणमुत्तण-किरियासुं कारणं विणा चेव । जस्स य अपुव्वसद्दो, जायइ जमकवलिओ सोऽवि ॥८८॥
ण्हायंतस्स वि नलिणी-दलं व सलिलेण छिप्पइ न जस्स । अंगं संगं काही, स जमेण समं छमासंऽतो ॥८९॥
ण्हायाऽणुलित्तगत्तस्स, जस्स सुक्कइ उरत्थलं पढमं । सेसंऽगेसुं उल्लेसु, अद्धमासं न सो जियइ ॥९०॥
तेल्लाऽऽयिल व्व लुक्खा वि, जस्स सहसा भवंति सुसिणिद्धा । केसा [1]असमारा वि हु, विभत्तसीमन्तजुत्ता य॥९१॥
तहऽसंखित्तभुजुयलं, दीसइ य अतक्कियं सुसंखित्तं । अंतोपविट्ठमऽहवा, विणिग्गयं लुलियपम्हउडं ॥९२॥
घूयकवोयऽच्छिसमं, उम्मेसनिमेसरहियमऽच्छिजुयं । जस्स पणट्ठऽब्भत्ता-लोयं य लहुं मरइ सो वि ॥९३॥
नासा वि जस्स सहसा, कुडिला पिडगाऽऽउला दढं फुडिया । सवुडछिड्डा य भवे, भवंऽतरं सो वि अभिलसइ ॥९४॥
अनिमित्तं चिय सत्ती, सील वाऊ [2]सई बलं बुद्धी । छक्कमिणं विणियत्तइ, छम्मासाऽऽसन्नमरणस्स ॥९५॥
नीसरइ देहवेहे, विगंधि अइकसिणसोणियं जस्स । जीहामूले सूलं, पाणितले वा महावियणा ॥९६॥
साडो तयकेसाणं, लुयरोमाणं न जस्स वुड्ढी य । हियए अईव उम्हा, जस्सुयरे पुण सुसीयत्तं ॥९७॥
वालविलुंचणवेयण-मऽणुभवइ न जो उ दिवसछक्केण । अवगच्छ गच्छमाणं व, माणवं तं जमपुरीए ॥९८॥
भणियं अरिट्ठदारं, जो होज्ज विसिट्ठधारणाकलिओ । तं पुण पडुच्च जंत-प्पओगमह किंपि जंपेमि ॥९९॥
वक्खेवंऽतरविरओ, तग्गयचित्तो कओवयारविही । पढमं मज्झे नसिउं, अहिगयसत्तस्स नाम ततो ॥३३००॥
अणंतरगाहासूइयजंतठवणा इमा—

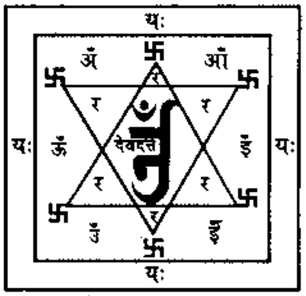

ॐकारगब्भमऽग्गेय-मंडलं कोणमज्झठियरेहं ।
सोत्थियलंछियबाहिर-कोणं सिहिजालजडिलं व ॥१॥
साऽणुस्सारअगाराइ-छस्सराऽऽवेढियं च पासेसुं ।
स्वाअक्खरमज्झगयं, चउपासट्ठियगुरुजयारं ॥२॥
मारुयमंडलपरिवेढियं च, कप्पेत्तु नियबुद्धीए ।
तं पायतले हियए, सीसे संधीसु य नसेउं ॥३॥
तो पट्ठीए सूरं, काउं सूरोदए च्चिय सुनिउणं । सपराऽऽउनिच्छयकए, नियछायं चिय पलोएज्जा ॥४॥
जइ संपुण्णं पासइ, आवरिसं ता न अत्थि मच्चुभयं । अह नियइ कन्नसुन्नं, ता जीवइ वरिसबारसगं ॥५॥
करविरहे दस वरिसे, अंगुलिविरहे य अट्ठ वरिसाणि । खंधाऽभावे सत्त उ, पासाण अदंसणे तिन्नि ॥६॥
नासाविरहे वरिसं, केसाऽभावे य जियइ तप्पणगं । सिरवियलच्छायादं-सणे नरो जियइ छम्मासं ॥७॥
गीवाविरहे मासं, चिबुगाऽभावे य जियइ छम्मासं । एक्कारस चेव दिणाणि, दिट्ठीविरहे जियइ पुरिसो ॥८॥
सच्छिड्डे पुण हियए, दीसंते सत्त वासरे जियइ । अह छायदुगं पासइ, जमपासे पडइ ता खिप्पं ॥९॥
न्हायस्स य जस्संऽगाणि, कन्नपमुहाणि झत्ति सुक्कंति । पुव्वविहिभणियवच्छर-मासदिणेहिं स मरइ धुवं ॥१०॥
जंतप्पओगदारं, निदंसियं आउजाणणोवायं । एक्कारसमं चरमं, विज्जादारं भणामिण्हिं ॥११॥
विज्जामंतकुऊहल-परो वि आराहगो तदऽपरो वा । सम्मं जह सपरगयं, कलेइ कालं तह भणामि ॥१२॥
विण्णसिऊण सिहाए, स्वा ॐ सीसे तहा क्षि चक्खुम्मि । पं ठविऊण य हियए, हा नाहीए नसित्तु तओ ॥१३॥
'ॐ जुसः ॐ मृत्युंजयाय, ॐ वज्जपाणिने शूलपाणिने हर हर दह दह स्वरूपं दर्शय दर्शय हुं फट्'
एयाए विज्जाए, सुइभूओ दढमऽनन्नचित्तो य । अट्ठुत्तरसयवारं, सम्मं नयणेऽभिमंतित्ता ॥१४॥
अरुणोदयवेलाए, छायं पि नियं तहाऽभिमंतित्ता । पट्ठीए ठावित्ता, आइच्चं निच्चलसरीरा ॥१५॥
अह अप्पणिज्जमेव-ऽप्पणो कए परकए य परछायं । सम्मं तक्कयपूओ, परमुवउत्तो पलोएज्जा ॥१६॥
जइ तं संपुन्नं, चिय पासइ ता नत्थि मरणमाऽऽवरिसं । कम-जंघ-जाणुविरहे, ति-दु-इगवरिसेहिं मरइ धुवं॥१७॥
दसमासंऽतंमि तदूरु-संखए कडिखए नवऽट्ठहिं च । मरइ तदुदरअभावे, मासेहिं पंचहिं छहिं वा ॥१८॥

1. असमारचिताः । 2. स्मृतिः ।

गीवाऽभावे चउतिदु-एक्कगसंखेहिं मरइ मासेहिं । पक्खं कक्खाण खए, बाहुखए दस दिणे जियइ ॥१९॥
खंधखए अट्ठ दिणे, चउमासं जियइ हियपछिड्डत्ते । पहरदुगं चिय जीवइ, छायाए सिरोविहूणाए ॥२०॥
अह सव्वहा वि छाया-वोच्छेओ भवइ जोगिणो कहवि । ता तक्खणमज्झे च्चिय, खिप्पं अक्खइ खयं नूणं॥२१॥
एमाइणो अणेगा, जइवि उवाया निदंसिया समए । आउपरिन्नाणकए, तह वि हु लेसेण इह कहिया ॥२२॥
इय पडु पडिदारं आउ-नाणदारं भणित्तु सत्तमगं । वोच्छं अणसणसंथार-दिक्खपडिवत्तिदारमहं ॥२३॥

"अनशनप्रतिपत्तिद्वारम्" —

अह भणियविहाणवसा, विन्नायाऽऽसन्नमरणसमयस्स । पज्जन्ताऽऽराहणविहि-मऽसेसमाऽऽराहिउमणस्स ॥२४॥
जम्मजरामरणदारुण-दीहरसंसारवासभीरुस्स । जिणवयणसवणजायंत-तिव्वसंवेगसद्धस्स ॥२५॥
पयईए च्चिय निच्चं, सुस्समणोवासगस्स चित्तम्मि । पसमाऽऽइगुणसमिद्धस्स, भावणा भवइ किर एसा॥२६॥
अहह कहं परमाऽमय-कप्पे मह परिणए वि जिणवयणे । वसिउं जुज्जइ अज्जं पि, गिहवासे [1]दुक्कियनिवासे॥२७॥
थी! धी! मज्झ अणज्जस्स, इंदियऽत्थेसु संपउत्तस्स । परमत्थवेरिएसु वि, दाराऽऽइसु गाढरत्तस्स ॥२८॥
ते च्चिय धन्ना निज्जिणिय-मोहजोहा जिइंदिया सोमा । रागद्दोसविउत्ता, भवतरुनिसियाऽसिणो समणा ॥२९॥
पिहियाऽऽसवा तवड्ढा, थणियं किरियासु संपउत्ता जे । सासयसोक्खं मोक्खं, पडुच्च अब्भुज्जमंति दढं ॥३०॥
ता कइया तं होही, दियहं गीयत्थगुरुसमीवम्मि । जत्थ चरणं पवज्जिय, मोक्खऽत्थं उज्जमिस्सामि ॥३१॥
संपत्तेसु वि सेसेसु, सयलमोक्खऽत्थसाहणंऽगेसु । सव्वविरइं विणा कह, सासयसोक्खो भवइ मोक्खो ॥३२॥
ता जावऽज्जवि छम्मास-वरिसपमुहं ममाऽऽउयं अत्थि । ता सव्वसंगचागेण, मोक्खमग्गं अणुसरामि ॥३३॥
कह व चिरं चिट्ठउ ता, समभावठियस्स किर मुहुत्तं पि । पव्वज्जपरिणई जइ, जायइ ता किं न पज्जत्तं ॥३४॥
इय परिणामपरिणओ, सविसेसुल्लसियतिव्वसंवेगो । गंतूण गुरुसमीवे, अपावभावो भणइ भंते! ॥३५॥
कारुन्नाऽमयनीसंद-सुंदरं भणियमाऽऽसि जं तुमए । आलोयणाइपुव्वं, पव्वज्जाऽऽइ करेज्जासु ॥३६॥
इच्छामो त्ति भणित्ता, मए वि पडिवन्नमाऽऽसि जं इन्हिं । आउंमि पहुप्पंते, चेय तयं तह करेमि अहं ॥३७॥
आरुहिउमऽहं सुपुरिस!, पव्वज्जासुप्पसत्थबोहित्थं । निज्जामएण भवया, भवऽन्नवं तरिउमिच्छामि ॥३८॥
तत्तो य तस्स निब्भर-भत्तिभारोणमन्तसीसस्स । निरवज्जं पव्वज्जं, गुरु वि आरोवए विहिणा ॥३९॥
अह होज्ज देसविरओ, संमत्तरओ रओ य जिणधम्मे । ता तस्सऽणुव्वयाइं, आरोवइ सुपरिसुद्धाइं ॥४०॥
अणिआणोदारमणो, हरिसयसविसट्टकंटयकरालो । पूएइ गुरुं संघं, साहम्मियमाऽऽइ भत्तीए ॥४१॥
नियदव्वमऽउव्वजिणिंद-भवणतब्बिंबवरपइट्ठासु । वियरइ पसत्थपोत्थय-सुतित्थतित्थयरपूयासु ॥४२॥
अह कहवि सव्वविरइ-कयाऽणुराओ विसुद्धमइकाओ । छिन्नसयणाऽणुराओ, विसयविसाउ विरत्तो ता ॥४३॥
संथारयपव्वज्जं पि, सव्वसावज्जवज्जणुज्जुत्तो । पडिवज्जइ संजमसज्ज-रज्जरसिओ हु स महप्पा ॥४४॥
तत्थ यऽणुव्वयधारी, पवन्नसंथारसमणदिक्खो य । संलेहणापुरस्सर-मंऽतम्मि अणसणं कुणइ ॥४५॥
इय अणसणसंथारग-दिक्खापडिवत्तिदारमऽट्ठमयं । भणियं तब्भणणे पुण, भणिओ गिहिविसयपरिणामो ॥४६॥

"परिणामद्वारम्" —

संपइ समग्गगुणमणि-निहिणो मुणिणो पडुच्च परिणामो । उवदंसिज्जइ सो पुण, हवेज्ज इय चिन्तणेण सुहो॥४७॥
पुव्वावरत्तकाले, जागरमाणो य धम्मजागरियं । परिवड्ढियपरिणामो, मुणी मणम्मि विचिन्तेइ ॥४८॥
रोगजरामगरालो, निरंतरुप्पत्तिमरणनीरिल्लो । दव्वक्खेत्ताऽऽइचउ-व्विहाऽऽवयापूरिओऽणाई ॥४९॥
अणवरउट्ठिंतवियप्प-लहरीहीरंतजन्तुसंताणो । अइतिक्खदुक्खहेऊ, अहो! रउद्दो भवसमुद्दो ॥५०॥
लद्धूण वि इह किच्छा, सुदुल्लहं कहवि माणुसं जम्मं । न लहंति परमदुलहं, जीवा धम्मं जिणक्खायं ॥५१॥
लद्धे वि तम्मि अविरइ-पिसाइयानिबिडपासपडियाण । दुलहं चिय सामन्नं, निस्सामन्नं गुणपहाणं ॥५२॥
किच्छेण पाविऊण य, सामन्नं दुल्लहं पि ओसन्ना । सीयंति सायबहुला, पंकोसन्ना गइंद व्व ॥५३॥
जह कागणीए हेउं, महग्घरयणाण हारए कोडिं । तह भवसुहप्पसत्ता, सत्ता हारिंति मुत्तिसुहं ॥५४॥

1. दुष्कृतनिवासे ।

अहह! अणिच्चमऽसारं, परिणामे भंगुरं सरीरमिमं । जीयं जोव्वणमिड्ढी, पिअसंजोगा सुहं च तओ ॥५५॥
अइदुलहं मणुयत्तं, जिणिंदवयणाऽऽइयं च सामग्गिं । पप्प पुरिसेण सासय-सुहेएक्करसिएण होयव्वं ॥५६॥
जं अज्ज सुहं भविणो, संभरणीयं तयं भवे कल्लं । मग्गंति निरुवसग्गं, अपवग्गसुहं बुहा तेणं ॥५७॥
नरविबुहेसरसोक्खं, दुक्खं चिय भावओ बुहा बेंति । परिणामदारुणमऽसा-सयं च जं ता अलं तेणं ॥५८॥
सासयसुहं च नियमेण, जिणाऽऽणाऽऽराहणाफलं जम्हा । ता तीए उज्जमिमो, जिणवयणविसुद्धबुद्धीए ॥५९॥
चिन्नं सामन्नेणं, सामन्नं एत्तियं मए कालं । अह संपयं विसेसा-ऽणुट्ठाणमऽणुट्ठिमो किंचि ॥६०॥
पच्छायायपरद्धो, पियधम्मो दोसनिरसणसयन्हो । अरिहइ पासत्थाई वि, जं तयं जइ वि दुस्सीलो ॥६१॥
निच्चं परिगलति बलं, निच्चं परिगलति पुरिसयारो वि । निच्चं परिगलति वओ, निच्चं परिगलइ विरियं पि ॥६२॥
निच्चं परिगलइ सुई, निच्चं परिगलइ दिट्ठिसामत्थं । निच्चं परिगलई मई, निच्चं परिगलइ आउं पि ॥६३॥
ता जाव बलं सन्तं, सन्तं विरियं तहऽज्जवि जाव । संतो य पुरिसयारो, संतो य परक्कमो जाव ॥६४॥
जावऽज्जवि अणुवहओ, इमो समग्गो वि इंदियग्गामो । जावऽज्जवि अणुकूला, दव्वक्खेत्ताऽऽइसामग्गी ॥६५॥
जिणकप्पियाऽऽइयविसयं, विहारमऽब्भुज्जयं किमणुसरिमो । अहवा विसिट्ठसंघयण-विसयमेयं न अम्हाणं ॥६६॥
ता अज्जकालियजइ-संघयणाऽणुसरिसं विसेसविहिं । विहिणा पडिवज्जामो, दुल्लहनरभवफलमिमं ति ॥६७॥
एवं न केवलं चिय, सामन्नमुणी मुणीण वसभो वि । निययाऽवत्थासरिसं, जग्गेज्जा धम्मजागरियं ॥६८॥
जहा—
परिवालिओ सुदीहो, परियाओ वायणा य मे दिन्ना । निप्फाइया य सीसा, तदुचियमऽवि विहियमेवं च ॥६९॥
जं अम्ह भूमिगाए, उचियं किच्चं कमंकमेण तयं । विहियं तयं विसेसेण, अप्पणो किंपि कप्पेमि ॥७०॥
अच्चंतदुप्परक्कम-पमायपरचक्कपारवस्सेण । जं किंचि किच्चवग्गे, कयाऽकयत्तं तयं चेच्चा ॥७१॥
चिरचरियचरणकरणस्स, चिरप्परूवियजिणिंदधम्मस्स । [1]सेयं मज्झं संपइ, विसेसहियमऽप्पणो काउं ॥७२॥
किंतु अहालंदविहिं, परिहारविसुद्धियं व जिणकप्पं । पाओवगमणमिंगिणी-भत्तपरिन्नाविहिं वा वि ॥७३॥
सइ सामत्थे सइ आउगे य, अनिग्ग (गू)हियऽत्तबलविरिओ । सइ सद्धासंवेगे, अहिगयजिणसमयसारस्स ॥७४॥
पसमाऽऽइगुणगणाऽलं-कियस्स सीसस्स नियपयं दाउं । संठाविऊण य गणं, पडिवज्जामि इयाणीमऽहं ॥७५॥
एवं वियारइत्ता, तुलिऊण य अप्पयं पयत्तेण । सेसाणमऽसत्तीए, भत्तपरिन्नाए कुणइ मइं ॥७६॥
इय सुद्धबुद्धीसंजीवणीए, संवेगरंगसालाए । आराहणाए सिवपुर-पयट्टजणजाणतुल्लाए ॥७७॥
पढमद्दारनवमए, दुभेयपरिणामनामपडिदारे । साहुपरिणामनामो, भेओ बीओ वि परिकहिओ ॥७८॥
तव्भणणा पुण भणियं, परिकम्मविहिस्स मूलदारस्स । नवमं दुभेयजुयमऽवि, एयं परिणामपडिदारं ॥७९॥

"त्यागद्वारवर्णनम्" —

सुहपरिणामेणं परि-णओ वि न विसेसचागविरहेण । आराहणमाऽऽराहिउ-मलं भवे अहिगओ सत्तो ॥८०॥
ता चागदारमऽहुणा, कित्तेमो सो य चउविहो चागो । दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च नायव्वो ॥८१॥
तत्थ य गिहिणा जइ वि हु, आराहणकरणमूलकाले वि । पुत्तदविणऽप्पणेणं, विहिओ च्चिय दव्वओ चागो॥८२॥
तह वि हु सरीरपरियण-उवहिप्पमुहाणि भूरिदव्वाणि । पडिबंधाऽकरणेणं, सविसेसं वज्जणिज्जाणि ॥८३॥
तह खेत्तओ वि जइ वि हु, पुरा पुराऽऽगरगिहाऽऽइयं चत्तं । तह वि समीहियठाणे वि तेणं मुच्छा विमोत्तव्वा ॥८४॥
न य कालओ वि सरयाऽऽइएसु पडिबंधबंधुरा बुद्धी । कायव्वा एवं चिय, भावंमि वि अप्पसत्थंमि ॥८५॥
एवं संजमसाहण-मेत्तं मोत्तुं समत्थमऽवि उवहिं । चयइ विसुद्धलेसो, मुणी वि मुत्तिं गवेसंतो ॥८६॥
अप्पपरिकम्ममुवहिं, बहुपरिकम्मं च दो वि वज्जेइ । सेज्जासंथाराई वि, उस्सग्गपयं गवेसंतो ॥८७॥
किंच—
जे साहू पंचविहं, सुद्धिमऽलद्धूण मुत्तिमिच्छंति । पंचविहं च विवेयं, ते हु समाहिं न पावेंति ॥८८॥
आलोयण[1] सेज्जाए[2], उवहीए[3] तह य भत्तपाणस्स[4] । वेयावच्चकराण[5] य, सुद्धी खलु पंचहा भणिया ॥८९॥

1. श्रेयः = उचितम् ।

अहवा दंसणनाण-चरित्तसुद्धी य विणयसुद्धी य । आवासयसुद्धी वि य, पंचवियप्पा हवइ सुद्धी ॥९०॥
इंदिय[1]कसाय[2]उवहीण[3], भत्तपाणस्स[4] तह सरीरस्स[5] । एस विवेगो भणितो, पंचविहो भावदव्वगता ॥९१॥
अहवा सरीर[1]सेज्जा[2]-संथारु[3]वहीण[4] भत्तपाणस्स[5] । वेयावच्चगराण य, एस विवेगो उ पंचविहो ॥९२॥
इय कयसव्वच्चागो, लीलाए हरइ मरणकाले वि । विजयपडायं सहसा, सहस्समल्लो व्व मुणिवसभो ॥९३॥
तहाहि— "सहस्रमल्लदृष्टान्तः"
संखउरंमि पुरवरे, अहेसि भूमिवई कणगकेऊ । नयसच्चचायसोंडीर-याऽऽईगुणरयणरयणनिही ॥९४॥
सेवाविहिंमि कुसलो, गुणाऽणुरागी य परमभत्तो य । नामेण वीरसेणो, तस्साऽसी सेवगो एक्को ॥९५॥
सो पुण विणयपरक्कम-पमुहगुणाऽऽवज्जिएण नरवइणा । गामसयजीवणं पि हु, दिज्जन्तं नो समीहेइ ॥९६॥
अह एगंमि अवसरे, सदेससीमामडंबनाहेण । दुग्गबलगव्विएणं, चोराहिवकालसेणेणं ॥९७॥
हीरंतं निजदेसं, निसामिउं जायगाढकोवेणं । उब्बद्धभिउडीमीमा-ऽऽणणेण भणियं महीवइणा ॥९८॥
हंहो महन्तसामन्त-मन्तिसेणाहिवा! सुहडपवरा! । किं कोवि कालसेणं, णिज्जिणिउं भे समत्थोऽत्थि ॥९९॥
अह जायऽज्ज वि सामन्त-पभिइणो नेव किंपि जंपंति । देव! समत्थोऽहं ताव, जंपियं वीरसेणेणं ॥३४००॥
तो सविलासाए सपम्हलाए, वियसंतकुमुयसोहाए । दिट्ठीए सप्पसायं, पलोइओ सो नरिंदेणं ॥१॥
सामिसपसायलोयण-पलोयणुऽप्पन्नगुरुपमोएण । पुणरवि तेणं भणियं, देव! विसज्जेसु मं एगं ॥२॥
रन्ना सहत्थतंबोल-दाणपुव्वं विसज्जिओ ताहे । सामन्ताऽऽइजणो वि य, मोणेण ठिओ असूयाए ॥३॥
अह रायाणं पणमिय, नीहरिओ सो झडत्ति नयराओ । पत्तो य कालसेणस्स, पल्लिनाहस्स पासम्मि ॥४॥
भणितो य तेण एसो, रुट्ठो तुह भूवई कणगकेऊ । [1]कालमुहं पविससि काल-सेण! सेणाए सममिन्हिं ॥५॥
दुव्वहगव्वुग्गीवेण, कालसेणेण सोउमऽवि एवं । किं एगागी काही, इमो वरागो त्ति अवगणिओ ॥६॥
तो कुवियकयन्तकडक्ख-तिक्खमुक्खणियखग्गधेणुलयं । पाइक्कचक्कपम्मुक्क-घायसंघायमऽगणेंतो ॥७॥
अत्थाणमंडलिं भिंदिऊण, कयकरणयाए रणसूरो । केसेसु कालसेणं, झडत्ति सो गिण्हिउं भणइ ॥८॥
रे रे पुरिसा! जइ मज्झ, घायमेत्तो करिस्सह हयासा! । कालेण नूण कवलि-ज्जिही तया तुम्ह एस पहू ॥९॥
तग्घायकरा पुरिसा, पडिसिद्धा तयऽणु कालसेणेण । जो इह पहरइ सो मह, पहरइ [2]जीए त्ति भणिरेण ॥१०॥
एत्थंऽतरंमि तग्गुण-रंजियमणकणगकेउवयणेण । हरिकरिरहजोहाऽऽउल-मऽणुपत्तं चाउरंगबलं ॥११॥
ताहे सो वंचित्ता, अणाऽऽउलंगेण वीरसेणेण । भत्तिभरनिब्भरेणं, उवणीओ कणयकेउस्स ॥१२॥
तुट्ठो राया दिन्नं गामसहस्सं च से पसाएण । नाममऽवि तस्स ठवियं, सहस्समल्लो त्ति भूवइणा ॥१३॥
सो वि मडंबाऽहिवई, संधिं घडिऊण निययठाणम्मि । सक्कारिऊण रन्ना, विसज्जिओ हरिसियमणेण ॥१४॥
कालक्कमेण पवरो, सुदंसणो नाम मुणिवई तत्थ । उज्जाणम्मि णिसन्नो, दिट्ठो य सहस्समल्लेण ॥१५॥
अह भत्तिभरोणयमत्थएण, वंदित्तु तस्स सो चरणे । जिणधम्मं सोउमणो, आसीणो भूमिवट्ठम्मि ॥१६॥
गुरुणा वि य संसारा-ऽसारत्तपरूवणागुणपहाणो । निव्वाणलाभसारो, कहिओ जिणदेसिओ धम्मो ॥१७॥
आयन्निऊण य इमं, महन्तजायन्तपवरवेरग्गो । नमिऊण पुणो चलणे, गुरुणो भणिउं समाढत्तो ॥१८॥
भयवं! तवचरणविवज्जियाण, अच्चंतमोहमूढाण । भवजलहिनिवडियाणं, जीवाणं कामभोगेहिं ॥१९॥
धणसयणाऽऽईएहिं, थेवो वि हु जायए न साहारो । मोत्तूणमेक्कमऽमलं, धम्मं, चिय परभवसहेज्जं ॥२०॥
ता जइ पेच्छह मम किंपि, जोग्गयं देह झत्ति पव्वज्जं । पज्जंतदारुणेणं, पज्जत्तं गेहवासेणं ॥२१॥
ता सुत्तुवओगेणं, गुरुणा से जोग्गयं मुणेऊण । दिन्ना जिणिंददिक्खा, असंखदुक्खोहखयजणणी ॥२२॥
तो नायसाहुजणजोग्ग-पवरकिरियाकलावपरमत्थो । अहिगयबहुसुत्तऽत्थो, सो जाओ थेवदियहेहिं ॥२३॥
कालक्कमेण य दढं, देहाऽऽईसु चत्तपणयभावेण । पडिवन्नो जिणकप्पो, तेण सुहनिप्पिवासेण ॥२४॥
जत्थऽत्थमियनिवासी, सुसाणसुन्नहररन्नसेवी य । वाउ व्व अपडिबद्धो, अणिययवित्तीए विहरन्तो ॥२५॥
संपत्तो स महप्पा, तत्थ मडंबम्मि जत्थ चिरवेरी । वसति किर कालसेणो, सणि व्व कूरो सहावेण ॥२६॥

1. कालमुखं = मृत्युमित्यर्थः । 2. जीवे ।

अह तब्बहिया उस्सग्ग-मुवगतो सो पलोइओ तेण । तद्देसमाऽऽगएणं, पावेणं कालसेणेणं ॥२७॥
तो भणिया नियपुरिसा, रे! रे! सो एस वेरिओ मज्झ । एगागिणा वि जेणं, तइया बद्धो म्हि लीलाए ॥२८॥
ता संपयं पणासह, संहसा एयस्स पोरुसऽवलेवं । मुक्काऽऽउहो सयं चिय, जा वट्टइ एस वीसत्थो ॥२९॥
सोऊण इमं पुरिसेहिं, कोववसफुरुफुरंतअहरेहिं । सत्थेहिं विचित्तेहिं, सो हम्मन्तो विचिंतेइ ॥३०॥
रे जीव! मणागं पि हु, मा काहिसि बालिसेसु एएसु । वहणुज्जएसु वि तुमं, पओसभावं कहंपि जओ॥३१॥
'सव्वो पुव्वकयाणं, कम्माणं पावए फलविवागं । अवराहेसु गुणेसु य, निमित्तमित्तं परो होइ' ॥३२॥
जइ पच्छा वि हु तुमए, सोढव्वा तिक्खदुक्खदंदोली । ता वरमिन्हिं सहिया, सन्नाणसहाइसहिएण ॥३३॥
जइ चंडचक्किणो वि हु, तहाविहं बंभदत्तनामस्स । नयणुप्पाडणदुक्खं, विहियं पसुवालमेत्तेण ॥३४॥
जइ अरिहा वि हु होउं, पत्तो उवसग्गवग्गमऽइघोरं । तइलोक्करंगमज्झे,* अतुल्लमल्लो महावीरो ॥३५॥
जइ वा वि तहा दुसहं, बंधुक्खयपमुहपायवेहंऽतं । अच्चन्ततिक्खदुक्खं, पत्तो सिरिवासुदेवो वि ॥३६॥
ता जीव! तुमं थेवं पि, कीस अवयारकारिसु पओसं । अवहंतो नो वट्टसि, सायत्ते पसमसोक्खम्मि ॥३७॥
उवहिगणगुरुकुलेसु वि, पडिबंधो सव्वहा जइ विमुक्को । सइ भंगुरे, असारे, तया सरीरे कह णु मोहो ॥३८॥
इय धम्मज्झाणपरो, स महप्पा तिक्खखग्गघाएहिं । निहओ तेहिं जाओ, देवो सव्वट्ठसिद्धम्मि ॥३९॥
इय जं भणियं पुव्विं, कयचागो निम्ममो य लीलाए । साहू पत्थुप्पमऽत्थं, साहइ तं दंसियमिमं ति ॥४०॥
इंय मणअलिमालइमा-लियाए संवेगरंगसालाए । आराहणाए मूलि-ल्लयम्मि परिकम्मविहिदारे ॥४१॥
पत्थुयपन्नरसण्हं, पडिदाराणं कमाऽणुसारेण । चायाऽभिहाणमेयं, पडिदारं देसियं दसमं ॥४२॥

''मरण विभक्तिद्वारम्'' —

सव्वच्चागो पुव्वं, पयन्निओ सो य संभवति मरणे । ता मरणविभत्तिमऽहं, दारं एत्तो निदंसेमि ॥४३॥
आवीचि[१] ओहिं[२] अंतिय[३]-बलायमरणं[४] वसट्टमरणं च[५] । अंतोसल्लं[६] तब्भव[७]-बालं[८] तह पंडियं[९] मीसं[१०] ॥४४॥
छउमत्थमरण[११] केवलि[१२]-वेहाणस[१३] गिद्धपिट्ठमरणं[१४] च। मरणं भत्तपरिन्ना[१५], इंगिणि[१६] पाओवगमणं[१७] च ॥४५॥
इय सत्तरस विहीउ[1], मरणे गुरुणो गिरंति गुणगुरुया । तेसिं सरूवमऽहुणा, वोच्छामि अहाऽऽणुपुव्वीए ॥४६॥
पइसमयाऽऽउयदलविह-डणं जमाऽऽवीइमरण वुत्त तं । नरगाऽऽइभवनिमित्ता-ऽऽउकम्मदलियाणि पुण जाणि॥४७॥
अणुभविय संपयं मरइ, जइ पुणो ताणि चेव अणुभविउं । मरिही तया तमेवं-भूयं भणियं अवहिमरणं॥४८॥
नरगाऽऽइभवनिमित्ता-ऽऽउदलियमऽणुभविय मरइ हु मओ वा । न य तदणुभविय मरिही, पुणो तमाऽऽयंतियं मरणं॥४९॥
संजमजोगविसन्ना, मरंति जे तं बलायमरणं ति । इंदियविसयवसगया, मरंति जे तं वसट्टं ति ॥५०॥
लज्जाए गारवेण य, बहुस्सुयमएण या वि दुच्चरियं । जे न कहिंति गुरूणं, न हु ते आराहगा होंति ॥५१॥
गारवपंकनिबुड्डा, अइयारं जे परस्स न कहेन्ति । दंसणनाणचरित्ते, ससल्लमरणं भवति तेसिं ॥५२॥
एयं ससल्लमरणं, मरिऊण, महाभए दुरुत्तारे । सुइरं भमंति जीवा, दीहे संसारकंतारे ॥५३॥
नरतिरिभवपाउग्गाऽऽउं, बंधिउं तक्कए मरंतस्स । तिरियस्स नरस्स य जं, तं तब्भवमरणमाऽऽहंसु ॥५४॥
मोत्तुं अकम्मभूमग-नरतिरिए सुरगणे य नेरइए । सेसाणं जीवाणं, तब्भवमरणं तु केसिंपि ॥५५॥
मोत्तूण ओहिमरणं, आवीचिआइयं ति पंचेव । सेसा मरणा सव्वे, तब्भवमरणेण नेयव्वा ॥५६॥
अविरयमरणं बालमरणं ति, विरयाण पंडियं बेंति । जाणाहि बालपंडिय-मरणं पुण देसविरयाणं ॥५७॥
मणपज्जवोहिनाणी-सुयमइनाणी मरंति जे समणा । छउमत्थमरणमेयं, केवलिमरणं तु केवलिणो ॥५८॥
गिद्धाऽऽइभक्खणं गिद्ध-पट्ठमुब्बंधणाऽऽइ वेहासं । एए दोन्नि वि मरणा, कारणजाए अणुन्नाया ॥५९॥
जओ—
आगाढे उवसग्गे, दुब्भिक्खे सव्वओ दुरुत्तारे । अविहिमरणं पि दिट्ठं, कज्जे कडजोगिणो सुद्धं ॥६०॥
तेणं चिय मुणिपवरा, जयसुंदरसोमदत्तनामाणो । मरणाइं पडिवन्ना, वेहाणसगद्धपट्ठाइं ॥६१॥
तहाहि—

''जयसुंदरसोमदत्तदृष्टान्तः''

1. उत्तराध्ययन सूत्र ।

वइदेसाए पुरीए, नरविक्कमरायविहियरक्खाए । सेट्ठी सुदंसणो आसि, तस्स पुत्ता दुवे जाया ॥६२॥
जयसुंदरो त्ति पढमो, बीओ पुण सोमदत्तनामो त्ति । दो वि य कलासु कुसला, दो वि य रूवाऽऽइगुणजुत्ता ॥६३॥
दो वि परोप्परपणय-प्पहाणचित्ता पगिट्ठसत्ता य । वट्टंती किच्चेसुं, इहपरलोयाऽविरुद्धेसु ॥६४॥
एगम्मि य पत्थावे, महल्लमुल्लं कयाणयं घेत्तुं । ते बहुनरपरियरिया, अहिछत्ताए पुरीए गया ॥६५॥
तत्थ य अच्छंताणं, ववहारवसा परोप्परं मेत्ती । जाया भावपहाणा, जयवद्धणसेट्ठिणा सद्धिं ॥६६॥
सोमगिरी विजयसिरी, दोण्णि य धूयाउ तस्स सेट्ठिस्स । दिन्ना तो तेण तेसिं, विहिओ य विहीए वीवाहो ॥६७॥
तो ते ताहिं सद्धिं, अणिंदियं बुहयणस्स जहसमयं । पंचविहविसयसोक्खं, उवभुंजंता परिवसंति ॥६८॥
अन्नम्मि अवसरम्मि, निजनगराऽऽगयनरेण ते वुत्ता । हंभो! पिउणा तुब्भे, सिग्घं एह त्ति आणत्ता ॥६९॥
जम्हा अणिवत्तयसास-कासपमुहेहिं भूरिरोगेहिं । सो पीडिओ समीहइ, तुब्भाणं दंसणं हत्थं ॥७०॥
एवं सोच्चा ते त-क्खणेण मोत्तुं तहिं चिय कलत्ते । ससुरस्स कहिय वत्तं, पिउपासे पट्ठिया झत्ति ॥७१॥
अच्छिण्णपयाणेहिं, वच्चंता निययमंदिरे पत्ता । दिट्ठो य परियणो तत्थ, सोयविच्छायमुहसोहो ॥७२॥
दिट्ठं भवणं पि पणट्ठ-सोहमऽइभीसणं सुसाणं व । उवरयदीणाऽणाह-प्पयाणसालानिउत्तजणं ॥७३॥
हा हा हयम्ह ताओ, दिवंगओ फुडमिमं घरं तेणं । कमलवणं पिव अत्थमिय-दिणयरं जणइ नेव रइं ॥७४॥
एवं परिभावित्ता, चेडीदिन्नाऽऽसणम्मि आसीणा । एत्थंऽतरंमि गुरुसोग-वेगवाहाऽऽउलऽच्छेण ॥७५॥
काऊण पायवडणं, णिवेइया परियणेण नीसेसा । अच्चंतसोगजणणी, तेसिं पिउणो मरणवत्ता ॥७६॥
तो ते विमुक्ककंठं, विसंथुलं रोविउं समारद्धा । पडिसिद्धा य कहं पि हु, महुरगिराए परियणेण ॥७७॥
अह तेहिं जंपियं कहह, असरिसं पेममुव्वहंतेण । अम्हाणमऽपुण्णाणं, ताएणं किं समाइट्ठं ? ॥७८॥
सोगभरगग्गिरेणं, ता भणियं परिजणेण निसुणेह । ताएण तुम्ह दंसण-मऽच्चंतं अहिलसंतेण ॥७९॥
एहिन्ति मज्झ पुत्ता, ते तप्पुरओ इमं च तं च अहं । साहिस्सामि त्ति पयं-पिरेण नो पुच्छिराणं पि ॥८०॥
अम्हाण किंपि सिट्ठं, अच्चन्तपयंडरोगवसओ य । तुम्हमऽणागमणे च्चिय, पत्तो सो झत्ति पंचत्तं ॥८१॥
एयं च निसुणिऊणं, किं पि अणाइक्खणिज्जसंतावं । तिव्वं समुव्वहन्तेहिं, तेहिं पामुक्कपोक्करवं ॥८२॥
हा कीस निग्घिण! तए, कीणास! न संगमो समं पिउणा । विहिओ त्ति किं च पावेहिं, तत्थ अम्हेहिं वुत्थं ति ॥८३॥
एमाऽऽइ विलविरेहिं, पुणो पुणो ताडिउत्तमंगेहिं । तह कह वि परुण्णं जह, जणेहिं पहिएहि वि य रुण्णं ॥८४॥
तो चत्तभत्तपाणा, ते कहमऽवि परियणेण पण्णविया । तह वि य उवरोहेणं, समत्थकिच्चेसु वट्टंति ॥८५॥
अण्णम्मि अवसरम्मि, तेहिं दमघोससूरिणो पासे । संसारुच्छेयकरो, निसुओ सव्वन्नुणो धम्मो ॥८६॥
तो मच्चुरोगदोगच्च-सोगजरपमुहदुक्खपडिहत्थं । संसारमऽसारं नि-च्छिऊण संजायवेरग्गा ॥८७॥
ते दो वि हु गुरुपुरतो, भणन्ति भालयलधरियकरकमला । भयवं! तुम्ह समीवे, पव्वज्जं गिण्हिमो अम्हे ॥८८॥
अह गुरुणा सुत्तुवओग-मुणियतब्भावविग्घलेसेण । भणियं महाऽणुभावा!, उचिया तुम्हाण पव्वज्जा ॥८९॥
नवरं थीपच्चइओ, भावी तुम्हं सुदूरमुवसग्गो । जइ तं जीवाऽवगमे वि, निप्पकंपा सहह सम्मं ॥९०॥
ता पडिवज्जह सज्जो, पव्वज्जं उज्जमेह मोक्खकए । इहरा हासट्ठाणं, किरियां आरूढवडियाण ॥९१॥
तेहिं भणियं भयवं!, जइ अम्हं जीवियव्वपडिबंधो । होज्ज मणागं पि तया, न धरेज्जा विरतिगहणमई ॥९२॥
ता भयवासुव्विग्गाण, तुज्झ पयपउमजुयललग्गाण । विग्घे वि अविचलाणं, अम्हाणं देहि पव्वज्जं ॥९३॥
तो दिक्खिऊण गुरुणा, कायव्वविही निदंसिओ सव्वो । सुत्तऽत्थेहिं च परं, निप्फत्तिं सम्ममुवणीया ॥९४॥
गुरुकुलवासे सुचिरं, वसिउं ते एगया महासत्ता । नियगुरुणो आणाए, एगागिविहारिणो जाया ॥९५॥
अह कहवि विहरमाणो, अणिययवित्तीए सम्ममुवउत्तो । अहिछत्ताए पुरीए, साहू जयसुंदरो पत्तो ॥९६॥
तत्थ य जा किर तेणं, परिणीया आसि सेट्ठिणो धूया । सोमसिरी सा पावा, तक्कालं असईवित्तीए ॥९७॥
गब्भवई संजाया, चिंतइ जयसुंदरो जइ इहेइ । [1]उप्पव्वाविय तो तं, नियदुच्चरियं निगूहेमि ॥९८॥

1. उत्प्रव्राज्य = प्रव्रज्यां मोचयित्वा इत्यर्थः ।

भिक्खऽट्ठाए पविट्ठो, दिट्ठो तीए य सो कहवि साहू । गेहे [1]सएज्झियाए, समाणसीलाए तो झत्ति ॥९९॥
गेहस्संऽतो खित्तो, भणितो य सविणयपणयचलणाए । हे जीयनाह! विरमसु, दुक्करतवचरणओ एत्तो ॥३५००॥
तुज्झ मए जत्थ दिणे, दिक्खावत्ता निसामिया सुहय! । वज्जवडणाऽइरित्तं, दुक्खं जायं ममं तत्थ ॥१॥
अज्जं चयामि कल्लं, चयामि किर जीवियं तुह विओगे । नवरं एत्तियदियहे, ठियं पि तुह दंसणाऽऽसाए ॥२॥
इण्हिं च तए सद्धिं, जीयं मरणं व नत्थि संदेहो । ता पाणनाह! जं तुज्झ, रोयए तं समायरसु ॥३॥
एवं तीए भणिए, साहू सरिऊण सूरिणो वयणं । पुव्वुवइट्ठं नाउं च, धम्मपच्चुहमऽणुवसमं ॥४॥
मोक्खऽत्थबद्धलक्खो, बाढं नियजीवियव्वनिरवेक्खो । तं भणति खणं एक्कं, भद्दे! तं ठाहि गिहबाहिं ॥५॥
जाव अहं नियकिच्चं, करेमि किंपि हु तदुत्तरं जं ते । होही हियमाऽऽयंतिय-सुहं च तं आयरिस्सामि ॥६॥
अह सा पहिट्ठवयणा, तहत्ति पडिसुणिय संठिया बाहिं । दाऊण गिहकवाडाइं, निबिडकयडुक्कडाऽऽयारा ॥७॥
साहू वि कयाऽणसणो, धम्मज्झाणे परम्मि वट्टन्तो । वेहाणसेण विहिणा, मरिउं अच्चुयसुरो जातो ॥८॥
जाया पुरम्मि वत्ता, इमीए साहू हओ त्ति तो पिउणा । हत्थं णिब्भच्छेउं, निच्छूढा सा नियगिहातो ॥९॥
अच्चंतसिणेहवसा, विजयसिरी वि हु समं विणिक्खन्ता । मग्गे च्चिय सोमसिरी, सूइदोसा गया निहणं ॥१०॥
विजयसिरी पुण एगत्थ, आसमे तावसाण पव्वज्जं । घेतूण ठिया सम्मं, भुंजंती कंदमूलाइं ॥११॥
अवरम्मि अवसरम्मि, पुव्वोइयमुणिवरस्स लहुभाया । सो सोमदत्तनामो, विहरन्तो तत्थ संपत्तो ॥१२॥
तिक्खऽग्गकीलएणं, विद्धो चलणम्मि अक्खमो भमिउं । थक्को एगपएसे, विजयसिरीए कहवि दिट्ठो ॥१३॥
नाओ य तओ तीए, मयणाऽनलदज्झमाणहिययाए । विविहेहिं पयारेहिं, पारद्धो खोहिउं सो य ॥१४॥
एवं पइक्खणं चिय, खोभिज्जंतस्स तीए पावाए । सुमरियगुरुवयणस्सा, गंतुं च अचायमाणस्स ॥१५॥
कह उज्झामि सजीयं ति, चिन्तयन्तस्स तम्मि देसम्मि । जायं दोण्ह निवाणं, तत्थ खणे बद्धवेराणं ॥१६॥
[2]आओहणं महंतं, निवाडियाऽणेगसुहडकरितुरयं । पवहंतरुहिरपवहं, दंसणमेत्ते वि भयजणगं ॥१७॥
परपक्खसपक्खखयं, दट्ठुं च निवेसु पडिनियत्तेसु । मडएसु खज्जमाणेसु, गिद्धभल्लुंकमाऽऽईहिं ॥१८॥
साहू परिचिन्तइ नऽत्थि, मरणकिच्चे परो उवाओ ता । ठाउं रणंऽगणे गद्ध-पट्ठमरणं पवज्जामि ॥१९॥
एवं विणिच्छिऊणं, स महप्पा तीए कह वि पावाए । कंदफलाऽऽइनिमित्तं, गयाए कयसव्वकायव्वो ॥२०॥
सणियं सणियं गंतुं, तेसिं मडयाण मज्झयारम्मि । पडिओ निज्जीवो इव, खद्धो अह दुट्ठसत्तेहिं ॥२१॥
अच्चंतसमाहीए, मरिउं जाओ सुरो जयंतम्मि । इय गद्धपट्ठमरणं, सम्मं आराहियं तेणं ॥२२॥
एवं वेहाणसगद्ध-पट्ठमरणाइं कारणवसेण । नूणमऽणुण्णायाइं, जिणेहिं तइलोक्कमहिएहिं ॥२३॥
तहा—
[3]अभिमरएणं निवइम्मि, मारिए गहियसमणलिंगेणं । उड्डाहपसमणऽत्थं, सत्थग्गहणं कयं गणिणा ॥२४॥
तहाहि— "उदायिनृपमारकस्यदृष्टान्तः"
पाडलिपुत्तम्मि पुरे, अच्चन्तपयंडसासणो राया । सामन्तचक्कपणओ, उदायिनामो जयपसिद्धो ॥२५॥
थेवाऽवराहमेत्ते वि, तेण एगस्स राइणो रज्जं । अवहरियं नीसेसं, सो पुण राया लहुं नट्ठो ॥२६॥
पुत्तो य तस्स एगो, उज्जेणीए गओ परिभमंतो । ओलग्गिउं च लग्गो, उज्जेणीपत्थिवं पयओ ॥२७॥
अह सो उज्जेणिनिवो, [4]परिसवइ उदायिराइणो बहुसो । तेण य रायसुएणं, विन्नत्तो रहसि नमिऊण ॥२८॥
देव! मह जइ सहाई होसि तुमं ता हणामि तुह सत्तुं । पडिसुयमेयं रन्ना, दिन्नं से जीवणं च बहुं ॥२९॥
तो कंकलोहकत्तिय-माऽऽदाय सुगोविउं इमो वि गतो । मारिउमुदायिरायं, नवरं छिद्दं अपावितो ॥३०॥
अट्ठमीचउद्दसीसुं, मुणिवइणो राउलंमि वच्चंते । कयपोसहस्स रन्नो, रयणीए सासणनिमित्तं ॥३१॥
दट्ठूण सो विचिन्तइ, सिस्सो होउं इमाण समणाण । पविसित्तु राउलं वं-छियत्थमऽचिरा य साहेमि ॥३२॥
तो कंककत्तियं गो-विऊण गहिया अणेण पव्वज्जा । अच्चंतविणयवित्तीए, तोसिया सूरिणो य दढं ॥३३॥

1. प्रातिवेस्मिकयाः = पाडोशणना घरमां । 2. आयोधनम् = युद्धम् । 3. अभिमरकेण = घातकेन । 4. परिशपति = आक्रोशयति

एगम्मि य पत्थावे, रयणीए पोसहं पवन्नस्स । रन्नो धम्मकहऽत्थं, दट्ठूणं पट्ठियं सूरिं ॥३४॥
सो झति अइविणीय-त्तणेण घेत्तूण कत्तियं चलितो । संथारगाऽऽइहत्थो, रायउले सूरिणा सद्धिं ॥३५॥
चिरदिक्खिओ त्ति संजम-रओ त्ति सुपरिक्खिओ त्ति काऊण । न निसिद्धो सूरीहिं, गया ततो रायभवणम्मि॥३६॥
तत्तो य पोसहं गाहिऊण, भूमीवइं सुचिरवेलं । कहिऊणं धम्मकहं, सुत्ता रयणीए मुणिवइणो ॥३७॥
तेसिं चेव समीवे, राया वि हु निद्दमुवगतो सहसा । अह ते निब्भरसुत्ते, स दुट्ठसिस्सो विजाणित्ता ॥३८॥
रन्नो कंठम्मि निवेसिऊण, तं कत्तियं विणिक्खन्तो । साहू त्ति न य निसिद्धो, वच्चंतो जामइल्लेहिं ॥३९॥
अह कंककत्तियाछिन्ना-कंठनि(न)वरुहिरभूरिपवहेण । सित्तसरीरो सूरी, झत्ति विबुद्धो निवं दट्ठुं ॥४०॥
वायाइयं विचिंतइ, तस्स कुसीसस्स नूण कम्ममिमं । ता जइ पाणच्चायं, इन्हिमऽहं नो करिस्सामि ॥४१॥
तो पवयणस्स खिंसा, होही सव्वत्थ धम्मनासो य । इति चिन्तिऊणमऽणसण-पमुहं सव्वं विहिं काउं ॥४२॥
तं चेव कत्तियं नियय-कंठदेसम्मि ठावइत्ताणं । कालं कुणइ महप्पा उस्सग्गऽववायविहिकुसलो ॥४३॥
इय सत्थुब्बंधणपभिइणा वि, आगाढकारणे मरणं । निद्दोसं चिय वुत्तं, भत्तपरिण्णं अह भणामि ॥४४॥
भत्तं हि भुत्तपुव्वं, अणेगसो णेगहा मए एत्थ । जाया तित्ती तत्तो, न तओ तह कहवि जीवस्स ॥४५॥
कहमऽन्नहा पुणो वि हु, असुयं व अदिट्ठमिव अभुत्तं व । अमयं व पढमलाभे, बहुमन्नइ दिवसदिवसे तं॥४६॥
असुइत्तणाऽऽइबहुविह-वियारपरिणामधम्मुणा तम्हा । किमिमिणा मणसा वि अवज्ज-हेउणा चिंतिएणाऽवि ॥४७॥
इय जाणगप्परिन्नाए, भत्तविसयं हि जं परिन्नाणं । पच्चक्खाणपरिन्नाए, तह य भयवंतवयणाओ ॥४८॥
सव्वं पि असणपाणं, चउव्विहं जा य बाहिरो उवही । अब्भिन्तरो य तं पि हु, जाजीवं वोसिरे सव्वं ॥४९॥
इच्चाइ जा उ तिविहस्स, अहव सम्मं चउव्विहस्साऽवि । आहारस्सिह जाव-ज्जीवं पि परिच्चयणरूवं ॥५०॥
पच्चक्खाणं जं तं, भत्तपरिन्न त्ति तीए किर मरणं । भत्तपरिन्नामरणं, सप्पडिकम्मं तयं णियमा ॥५१॥
भत्तपरिन्नामरणं, दुविहं सवियारं मो अवीयारं । सपरक्कमस्स मुणिणो, संलिहियतणुस्स सवियारं ॥५२॥
अपरक्कमस्स मुणिणो, भत्तपरिन्नं भणंति अवियारं । काले अपहुप्पंते, तं पि हु तिविहं समासेणं ॥५३॥
पढमं जाण निरुद्धं, निरुद्धतरयं च भन्नए बीयं । परमनिरुद्धं तइयं, तेसिं सरूवं पुण भणामि [दारगाहा] ॥५४॥
जो जंघाबलरहिओ, रोगाऽऽयंकेहिं करिसियसरीरो । तस्स मरणं निरुद्धं, अवियारं भण्णए पढमं ॥५५॥
तम्मि वि पुव्वुत्तविही, दुविहं तं पि य पयासमऽपयासं । जणनायं तु पयासं, जणे अविन्नायमऽपयासं [दारं]॥५६॥
वाल-ऽग्गि-वग्घमाऽऽईहिं, सूल-मुच्छा-विसूइयाऽऽईहिं । नच्चा संवट्टिज्जन्त-माऽऽउयं सिग्घमेव मुणी ॥५७॥
जाव न वाया अक्खिवइ, जाव चित्तं न होइ अक्खित्तं । संनिहियाणाऽऽलोयइ, गणिमाऽऽईणं पि सो ताव॥५८॥
एयं निरुद्धतरयं, बीयं मरणं भणंति अवियारं । सो चेव जहाजोगं, पुव्वुत्तविही भवइ तम्मि [दारं] ॥५९॥
वायाइऽऽएहिं जइया, अक्खित्ता होज्ज भिक्खुणो वाया । तइया परमनिरुद्धं, तइयं मरणं अवीयारं ॥६०॥
नच्चा संवट्टिज्जंत-माउयं सिग्घमेव सो भिक्खू । अरिहन्तसिद्धसाहूण, अन्तियं सव्वमाऽऽलोए ॥६१॥
एयं भत्तपरिन्ना, सुयाऽणुसारेण वन्निया एसा । एत्तो इंगिणिमरणं, भणामि सम्मं समासेणं ॥६२॥
इंगिज्जइ चेट्ठिज्जइ, पइनियए, चेव भूपएसम्मि । अणसणकिरिया इमाए, इंगिणी तीए य जं मरणं ॥६३॥
भन्नइ इंगिणिमरणं, तं चउहाऽऽहारचायजुत्तस्स । निप्पडिकम्मस्सिंगिय-देसंतोवत्तिणो चेव ॥६४॥
जो भत्तपरिन्नाए, उवक्कमो भन्निही सवित्थारो । सो चेव जहाजोगं, उवक्कमो इंगिणीमरणे ॥६५॥
संलिहियदव्वभावो, इंगिणिमरणम्मि बद्धववसाओ । आइमतियसंघयणो, धीमंतो खामिउं सगणं ॥६६॥
अंतो बाहिं च ततो, विसुद्धमाऽऽरुहिय थंडिलं एक्को । संथरिय तणाइं तहिं, उत्तरसिरमऽहव पुव्वसिरो ॥६७॥
अरिहाऽऽइअंतिगे सो, सीसम्मि कयंऽजली विसुद्धमणो । आलोयणं च दाउं, वोसिरइ चउव्विहाऽऽहारं ॥६८॥
सयमेव अप्पणो सो, करेइ आउंटणाऽऽइकिरियाओ । उच्चाराऽऽइ विगिंचइ, सयं च सम्मं निरुवसग्गो ॥६९॥
जाहे पुण उवसग्गा, दिव्वा माणुस्सया व से होज्जा । ताहे निप्पडिकंपो, ते अहियासेइ विगयभयो ॥७०॥
पत्थिज्जंतो वि ततो, किंनरकिंपुरिसदेवकन्नाहिं । न य सो तहाऽवि खुब्भइ, न विम्हयं कुणइ रिद्धीए ॥७१॥

जइ से दुक्खत्ताए, सव्वे वि हु पोग्गला परिणमेज्जा । तहवि न से थेया वि हु, विसुत्तिया होइ झाणस्स॥७२॥
जइ सव्वपोग्गलचओ, अहव सुहत्ताए तस्स परिणमइ । तह वि न से संजायइ, विसोत्तिया सुद्धझाणस्स ॥७३॥
सच्चित्ते साहरिओ, सो तत्थुप्पिक्खए विमुक्कंऽगो । उवसंते उवसग्गे, जयणाए थंडिलमुवेइ ॥७४॥
वायणपरियट्टणपुच्छणाओ, मोत्तूण तह य धम्मकहं । सुत्तऽत्थपोरिसीए, सरेइ सुत्तं च एगमणो ॥७५॥
एवं अट्ठ वि जामे, अनुअट्ठो झायए पसन्नमणो । आहच्च निद्दभावे वि, नऽत्थि थेवं पि सइनासो ॥७६॥
सज्झायकालपडिले-हणाऽऽइयाओ न संति किरियाओ । जम्हा सुसागठाणे वि, तस्स झाणं न पडिकुट्ठं ॥७७॥
आवासयं च सो कुणइ, उभयकालं पि जं जहिं कमइ । उवहिं पडिलेहेइ य, मिच्छक्कारो य से खलिए ॥७८॥
वेउव्वियआहारग-चारणखीरासवाऽऽइलद्धीओ । कज्जे वि समुप्पन्ने, विरागभावा न सेवइ सो ॥७९॥
मोणाऽभिग्गहनिरओ, आयरियाऽऽईण पुट्ठवागरगो । देवेहिं माणुसेहि य, पुट्ठो धम्मक्कहं कहइ ॥८०॥
एवं इंगिणिमरणं, सुयाऽणुसारेण साहियं सम्मं । पाओवगमणमेत्तो, समासओ चेव वन्निस्सं ॥८१॥
किर जत्थ कत्थई एत्थ, मरणभेयम्मि पाययस्सेव । उवगमणमऽवत्थाणं, जायइ पाओवगमणं तं ॥८२॥
जं जत्थ जहा अंगं, निक्खिवइ तं तहिं तह धरेइ । पाओवगमणमेयं, नीहारं वा अनीहारं ॥८३॥
उवसग्गेण वि जं सो, साहरिओ कुणइ कालमऽन्नत्थ । तं भणियं नीहारिय-मियरं पुण निरुवसग्गम्मि ॥८४॥
पुढवी-आऊ-तेऊ,-वाउ-वणस्सइ-तसेसु साहरितो । वोसट्ठचत्तदेहो, अहाऽऽउयं पालइ महप्पा ॥८५॥
मंडण-गंधाऽऽलेवण-भूसियदेहो वि जावजीवं सो । पाअवोगतो विट्ठइ, निच्चेट्ठो सुद्धलेसागो ॥८६॥
जं पायवो व्व उद्धट्ठिओ व्व, पासट्ठिओ व्व सो भाइ । उव्वत्तणाऽऽइरहितो, निच्चेट्ठो होइ तेणं ति ॥८७॥
इय सत्तरसमरणसरूव-कित्तणं किंपि काउमेत्ताहे । तच्चरिमत्तिगविसयं, वत्तव्वं किंपि देसेमि ॥८८॥
सव्वाओ अज्जाओ, सव्वे च्चिय पढमसंघयणवज्जा । सव्वे वि देसविरया, भत्तपरिन्नं पवज्जंति ॥८९॥
अह इंगिणिमरणं पुण, दढतरधिइबलजुया अणुट्ठिन्ति । अज्जापमुहाणं पुण, लक्खिज्जइ तस्स पडिसेहो ॥९०॥
पढमिल्लुयसंघयणा, संलिहियऽप्पाऽहवा असंलिहिया । दढतमथीबलजुत्ता, पाओवगमं पुण कुणंति ॥९१॥
नेहयसा देवेणं, साहरिया [1]देवऽरन्नमाइसु । न वि ते चलंति धीरा, पारद्धविसुद्धझाणातो ॥९२॥
तेसिं पुणवोच्छेओ चोद्दसपुव्वीण होइ वुच्छेए । पढमिल्लुयसंघयणं तत्तो न परेण होइ जओ ॥९३॥
एवं इमंमि दारे मरणं संखेवतो समक्खायं । आराहणफलदारे, फलं तु एयस्स वि भणिस्सं ॥९४॥
इय समओदहिअमओ-वमाए संवेगरंगसालाए । आराहणाए मूलि-ल्लयंमि परिकम्मविहिदारे ॥९५॥
पत्थुयपन्नरसण्हं पडिदाराणं कमाऽणुसारेण । एक्कारसमं भणियं, मरणविभत्ति त्ति पडिदारं ॥९६॥
पुव्विं मरणाणि पय-न्नियाणि सामन्नओ बहुविहाणि । एत्तो य पगयमरण-द्दारसरुवं परुवेमि ॥९७॥

"अधिगतमरणद्वारम्" —

किं पुण पगयं भण्णइ, पंडियमरणं दुहोहवल्लीण । विद्धंसणेक्क[2]निक्कड-धारुब्भडपरसुपडितुल्लं ॥९८॥
एयविवक्खं पुण, बाल-मरणमऽक्खंति खीणमोहमला । उभयसरूवं च इमं, पंचवियप्पं परिकहेमि ॥९९॥
पंडियपंडियमरणं[१], पंडिययं[२] बालपंडियं तइयं[३] । बालमरणं चउत्थं[४], पंचमगं बालबालं ति[५] ॥३६००॥
तत्थ पढमं जिणाणं, बीयं साहूण देसविरयाणं । तइयं [3]संनिसु तुरियं, मिच्छद्दिट्ठीण पंचमयं ॥१॥
अन्ने उ सूरिणो पुण, एत्थं पत्थुयपमेयविसयम्मि । मरणपणगस्सरुवे, इमं विभागं भणंति जहा ॥२॥
पंडियपंडियमरणं, मरमाणाणं तु केवलीण भवे । भत्तपरिन्नाऽऽई पुण, पंडियमरणं मुणिवराणं ॥३॥
देसविरयाणमऽविरय-संमाण य बालपंडियं मरणं । मिच्छद्दिट्ठीउवसम-पराण जं बालमरणं तं ॥४॥
जं च कसायकलुसिया, मरंति दढमऽभिगहीयमिच्छत्ता । सव्वजहन्नं भन्नइ, तं मरणं बालबालं ति ॥५॥
अहवा पंडियमरणाइं, तिन्नि दो चेव बालमरणाइं । पढमाइं संमदिट्ठिस्स, जाण बीयाइं इयरस्स ॥६॥
तत्थाऽऽइल्लेहिं तिहिं, मरमाणाणं कमेण मरणेहिं । उत्तम-मज्झ-जहन्नो, नेओ अब्भुज्जओ उ विही ॥७॥
संमत्ताऽणुगयमणो, जीवो मरणे असंजओ जइ वि । जिणवयणमऽणुसरंतो, परित्तसंसारियो तहवि ॥८॥

1. देवरन्नमाइसु - तमस्कायादिषु । 2. ०निक्कड = कठिन । 3. सम्यग्दृष्टिषु ।

सद्दहगा पत्तियगा य, रोयगा जे हु जिणवराऽऽणाए । संमत्तमऽणुसरंता, ते खलु आराहगा होंति ॥९॥
जिणभणियपवयणमिणं, असद्दहंतेहिं अणेगजीवेहिं । बालमरणाणि तीए, मयाणि काले अणंताणि ॥१०॥
न य तेहिं अणंतेहिं वि, विवेयवियलाण नाणरहियाण । जीयाण वरायाणं, संपन्नो को वि गुणलेसो ॥११॥
बालमरणस्स तम्हा, वित्थरमऽवहत्थिउं विवागं मे । संखेवेण भणन्तस्स, दिन्नकण्णा निसामेह ॥१२॥
बालमरणेहिं जीवा, वियडंमि भवाऽऽडवीकडिल्लमि । भमिया भमिन्ति भमिहिन्ति, दीहकालं किल दुहत्ता ॥१३॥
तहाहि—
एत्थ पुणरुत्तदुत्तर–जम्मजरामरणपरिसरणरीणा । भवजंतजंतुगोणा, अपत्तपारा परिभमंता ॥१४॥
चउसु वि गईसु जं जं, जं जं चुलसीइजोणिलक्खेसु । जीवाणमऽणिट्ठपयं, तं तं दुक्खं अणुभवंति ॥१५॥
किंच—
जं तिरऽणुबंधमिट्ठं, जं चाऽणिट्ठमऽणुबंधि दुद्धरिसं । तं बालमरणतरुणो, फलविलसियमाऽऽहु मुणिवसभा ॥१६॥
इय बालमरणभीसण–सरूवमुवजाणिऊण धीरेहिं । पंडियमरणं [1]गज्झं, नामऽथो तस्स पुण एवं ॥१७॥
पंडा भन्नइ बुद्धी तीए जुओ पंडिओ त्ति नायव्वो । तस्स मरणं तु जं तं, पंडियमरणं समक्खायं ॥१८॥
तं पुण भत्तपरिन्ना–मरणं चिय एत्थ पत्थुयं सत्थे । जेण मरंताण धुवं, जायइ वंछियफलपसिद्धी ॥१९॥
काले वि दुस्समाए, संघयणे वि हु अणिट्ठछेवट्ठे । विरहे वि [2]अइसईणं, तह दढधिइबलअभावे वि ॥२०॥
एयं पि वियरइ, च्चिय, सुंदरकालाऽऽइजोगसज्झाणं । पाओयगमणइंगिणि–मरणाणं साहणिज्जफलं ॥२१॥
एयं हि मणोवंछिय–सुहफलदाणेक्ककप्पतरुसंडं । इममऽन्नाणतमोघण–दुस्समरयणीए सरयससी ॥२२॥
एयं हि भीमभवमरु–मज्झे विलसंतविमलजलसरसी । अच्चंतियदोगच्चे, चिंतारयणं पहाणमिणं ॥२३॥
इममऽइदुरंतदुग्गइ–गत्ताओ उत्तमुत्तरणमग्गो । एयं सिधपासाया–ऽऽरुहणविहीए सुनिस्सेणी ॥२४॥
धीबलवियलाणमऽकाल–मच्चुकलियाणमऽकयकरणाण । निरवज्जमऽज्जकालिय–जईण जोग्गं निरुवसग्गं ॥२५॥
निच्छियमरणाऽवत्थो, वाहीघत्थो जई गिहत्थो वा । भविओ भत्तपरिन्ना–पंडियमरणे जएज्ज ततो ॥२६॥
पंडियमरणेण मया, अणंतसत्ता सिवाऽऽलयं पत्ता । बालमरणेण य पुणो, भमंति भीमं भवाऽरन्नं ॥२७॥
एगं पि एगवारं, पंडियमरणं जियस्स दुक्खाइं । निन्नासित्ता दूरं, सग्गऽपवग्गे सुहं देइ ॥२८॥
जाएण जीवलोगे, सव्वेण वि जं अवस्समरियव्वं । ता कहवि तह मरिज्जइ, जह मरणं पुण ण संभवइ ॥२९॥
तिरियत्तमुवगतो वि हु, पंडियमरणं कहं पि जइ लहइ । तो वंछियत्थसिद्धिं, सुंदरिनंदो व्व कुणइ जिओ ॥३०॥
तहाहि— "सुन्दरिनन्ददृष्टान्तः"
एत्थेव जंबुदीवे, भरहे वासम्मि वासवपुरि व्व । विबुहजणहिययहरणी, अणवरयपयट्टपरममहा ॥३१॥
सिरिवासुपुज्जजिणवर–वयणिं दुविबुद्धभवियकुमुयवणा । लच्छीए सोहिया चक्क–पाणिमुत्ति व्व जयपयडा ॥३२॥
चंपा नामेण पुरी, आसि परिभवियधणवइधणोहो । वत्थव्वो तत्थ धणो, अहेसि सेट्ठी गुणविसिट्ठो ॥३३॥
तस्स य वसुनामेणं, निवासिणा तामलित्तिनयरीए । वणिएण समं मेत्ती, संजाया निरुवचरिय त्ति ॥३४॥
जिणधम्मपालणपरा–यणाण सुस्समणचलणभत्ताणं । तेसिं वच्चंतेसुं, दिणेसु एगम्मि पत्थावे ॥३५॥
अव्वुच्छिन्नं पीइं, पवंछमाणाण निच्चकालं पि । सुंदरिनामा धूया, नियगा धणसेट्ठिणा दिन्ना ॥३६॥
नंदस्स वसुसुयस्स उ, कओ विवाहो य सोहणमुहुत्ते । दावियभुवणऽच्छरिओ, महया रिद्धीसमुदएणं ॥३७॥
अह सुंदरीए सद्धिं, पुव्वऽज्जियपुन्नपायवस्सुचियं । नंदस्स विसयसुहफल–मुवभुंजंतस्स जंति दिणा ॥३८॥
अच्चंतविमलबुद्धि–त्तणेण विन्नायजिणमयस्सावि । तस्सेगम्मि अवसरे, जाया चिंता इयसरुवा ॥३९॥
ववसायविभवविगलो पुरिसो लोगम्मि होइ अवगीओ । कापुरिसो त्ति विमुच्चइ, पुव्वसिरीए वि अचिरेण ॥४०॥
ता पुव्वपुरिससंतइ–कमाऽऽगयं जाणवत्तवाणिज्जं । पकरेमि पुव्वधणविल–सणेण का चंगिमा मज्झ ॥४१॥
किं सो वि जीवइ जए, नियभुयजुयलऽज्जिएण दव्वेण । जो वंछियं पयच्छइ, न मग्गणाणं पइदिणं पि ॥४२॥

1. गज्झं = ग्राह्यम् । 2. अतिशयिनाम् = अतिशययुक्तज्ञानिपुरुषाणाम् ।

विज्जाविक्कमगुणसलह-णिज्जवित्तीए जो धरइ जीयं । तस्सेव जीवियं वन्न-णिज्जमियरस्स किं तेण ॥४३॥
उप्पज्जंति विणस्संति, णेगसो के जयम्मि नो पुरिसा । जलबुब्बुय व्व परमत्थ-रहियसोहेहिं किं तेहिं ॥४४॥
कह सो वि पसंसिज्जइ, न जस्स सप्पुरिसकित्तणाऽवसरे । चागाऽऽइगुणगणेणं, पढमं चिय जायए रेहा ॥४५॥
इति चिंतिऊण तेणं, परतीरदुल्लंभभंडपडिहत्थं । पारे पारावारस्स, झत्ति पगुणीकयं पोयं ॥४६॥
गमणुम्मणं च तं पेच्छि-ऊण अइविरहकायरत्तेण । अच्चंतसोगविहुराए, सुंदरीए इमं भणियं ॥४७॥
हे अज्जउत्त! अहमऽवि, तुमए सह नूणमाऽऽगमिस्सामि । पेमपरायत्तमिमं, चित्तं न तरामि संठविउं ॥४८॥
इय भणिए दढतरपणय-भावयक्खित्तचित्तपसरेणं । पडिवन्नमिमं नंदेण, तयऽणु जायम्मि पत्थावे ॥४९॥
आरुढाइं दोन्नि वि, ताइं विसिट्ठम्मि जाणवत्तम्मि । पत्ताणि य परतीरं, खेमेणाऽणाऽऽउलमणाणि ॥५०॥
विणिवट्टियं च भंडं, उवज्जिओ भूरिकणगसंभारो । पडिभंडं घेत्तूण य, इंताण समुद्दमज्झम्मि ॥५१॥
पुव्वकयकम्मपरिणति-वसेण अच्चंतपबलपवणेण । विलुलिज्जन्ती नावा, क(झ)ऽत्ति सयसिक्करा जाया ॥५२॥
अह कहवि तहाभवियव्वयाए, उवलद्धफलगखंडाणि । एक्कम्मि चेव वेला-उलम्मि लग्गाणि लहु ताणि ॥५३॥
अघडंतघडणसुघडिय-विहडणवायडविहिस्स जोगेण । जायं परोप्परं दंस-णं च गुरुविरहविहुराणं ॥५४॥
तो हरिसविसायवसु-च्छलन्तदढमन्नु[1]फुन्नमलसरणी । सहस त्ति सुंदरी नंद-कंठमऽवलंबिउं दीणा ॥५५॥
रोविउमाऽऽरद्धा निव्वि-रामनिवडंतनयणसलिलभरा । जलनिहिसंगुवलग्गंऽबु-बिंदुनिवहं मुयंति व्व ॥५६॥
कह कहवि धीरिमं धा-रिऊण नंदेण जंपियं ताहे । सुयणु किमेवं सोगं, करेसि अच्चंतकसिणमुही ॥५७॥
को नाम मयच्छि! जए, जाओ सो जस्स नेव वसणाणि । पाउब्भूयाणि न या, जायाणि य जम्ममरणाणि ॥५८॥
कमलमुहि! पेच्छ गयणं-गणेक्कचूडामणिस्स वि रविस्स । उदय-पयाव-विणासा, पइदिवसं चिय वियंभंति ॥५९॥
किं वा न सुयं तुमए, जिणिंदवयणम्मि जं सुरेंदा वि । पुव्वसुकयक्खयम्मि, दुत्थाऽवत्थं उवलभंति ॥६०॥
कम्मवसवत्तिजंतूण, सुयणु! किं एत्तिए वि परितावो । जेसिं छाय व्व समं, भमडइ दुक्खाण दंदोली ॥६१॥
इय एवमाऽऽइवयणेहिं, सुंदरिं सासिउं वसिमहुत्तं । तीए समं चिय चलिओ, नंदो तन्हाछुहकिलंतो ॥६२॥
अह सुंदरीए भणियं, पिययम! एत्तो परिस्समकिलन्ता । अच्चंततिसाऽभिहया, पयमऽवि न तरामि गंतुमऽहं ॥६३॥
नंदेण जंपियं सुयणु, एत्थ वीसमसु तं खणं एक्कं । जेणाऽहं तुज्झ कए, सलिलं कत्तो वि आणेमि ॥६४॥
पडिसुयमऽणाए ताहे, नंदो आसन्नकाणणुद्देसे । सलिलाऽवलोयणत्थं, तं मोत्तूणं गतो सहसा ॥६५॥
दिट्ठो य कयंतेण व, विजंभिउब्भडमुहेण सीहेण । तिव्वछुहाऽभिहएणं, अइचवललललंतजीहेण ॥६६॥
तत्तो भयसंभंतो, विस्सुमरियअणसणाऽऽइकायव्वो । अट्टज्झाणोवगतो, निहओ सो असरणो तेण ॥६७॥
उववन्नो य तहिं चिय वणसंडे बालमरणदोसेण । चुयसम्मत्तसुहगुणो, सो नंदो वानरत्तेण ॥६८॥
एत्तो य सुंदरीए, परिवालिंतीए अइगयं दिवसं । तह वि हु न जाव नंदो, समागतो ताव संखुद्धा ॥६९॥
निच्छइयतव्विणासा, धसत्ति सा निवडिया धरणिवट्ठे । मुच्छानिमीलियऽच्छी, मय व्व ठाऊण खणमेक्कं ॥७०॥
वणकुसुमसुरहिमारुय-मणागउवलद्धचेयणा दीणा । रोविउमाऽऽरद्धा निबिड-दुक्खपामुक्कपोक्कारा ॥७१॥
हा अज्जउत्त! हा जिणवरिंद-पयपउमपूयणाऽऽसत्त! । हा सद्धम्ममहानिहि!, कत्थ गओ? देहि पडिवयणं ॥७२॥
हा पावदइव! धणसयण-गेहनासे वि किं न तुट्ठो सि । जमऽणज्ज! अज्जउत्तो वि, निहणमिन्हिं समुवणीओ ॥७३॥
हे ताय! सुयावच्छल! हा हा हे जणणि! निक्कवडपेमे । दुहजलहिनिवडियं कीस, नियपधूयं उवेहेह ॥७४॥
इय सुचिरं विलवित्ता, निबिडपरिस्समकिलामियसरीरा । करयलनिहित्तवयणा, सुतिक्खदुक्खं अणुहवंती ॥७५॥
तुरगपरिवाहणऽत्थं, तत्थोवगएण सिरिउरनिवेण । दिट्ठा कह वि पियंकर-नामेणं चिन्तियं च इमं ॥७६॥
सावब्भट्ठा किमिमा, तियसवहू मयणविरहिया व रई । वणदेवया व विज्जा-हराण रमणि व्व होज्ज त्ति ॥७७॥
विम्हियमणेण पुट्ठा य, सुयणु! का तं सि? किमिह आवससि? । कत्तो य आगया? कीस, वहसि संतावमेवं ति ॥७८॥
अह सुंदरीए दीहुउण्ह-मुक्कनिस्सासतरलियगिराए । सोगवसमउलियऽच्छीए, जंपियं भो महासत्त! ॥७९॥

1. फुन्न = पूर्ण । 2. प्रेतैः = भूतैः मृतैः वा । 3. गुल्मदोषेण ।

वसणपरंपरनिव्वत्तणेक्क-पडुविहिविहाणवसगाए । मज्झ पउत्तीए अलं, इमाए दुहणिवहहेऊए ॥८०॥
आवइगया वि उत्तम-कुलप्पसूयत्तणेण नो एसा । साहिस्सइ नियवत्तं ति, चिंतिऊणं महीवइणा ॥८१॥
अणुणइऊणं मंजुल-गिराहिं नीया कहं पि नियगेहे । काराविया य गाढो-वरोहओ भोयणाऽऽइविहिं ॥८२॥
मणवंछियं च सव्वं संपाडइ तीए मेइणीनाहो । अणुरागेणं सप्पुरिस-वित्तिभावेण य सया वि ॥८३॥
समाणदाणसप्पणय-संकहारंजिय त्ति मुणमाणो । महुरगिराए नरेंदो, एगंते सुंदरिं भणइ ॥८४॥
ससिमुहि! सरीरमणनि-व्वुइहरं पुव्वकालवुत्तंतं । मोत्तूण मए सद्धिं, जहिच्छियं भुंज विसयसुहं ॥८५॥
पइदिणसोगोवहया, सुकुमारा सुयणु! तुज्झ कायलया । दीवयसिहोवतत्ता, मालतिमाल व्व पमिलाइ ॥८६॥
न य सुयणु! जोव्वणं पव्व-णिंदुबिंबं व जणमणाऽऽणंदं । सोगविडप्पकडप्पु-प्पीडियमुवचिणइ सोहग्गं ॥८७॥
अच्चंतसुंदरं पि हु, मणोऽभिरामं पि भुवणदुलहं पि । पब्भट्ठं नट्ठं वा, वत्थुं सोइंति नो कुसला ॥८८॥
ता होउ भूरिभणिएण, कुणसु मह पत्थगं तुमं सहलं । पत्थायुचियपवित्तीए, चेव जत्तं कुणंति बुहा ॥८९॥
अच्चन्तकन्नकडुयं, अस्सुयपुव्वं च तीए सोच्चेमं । वयभंगभयवसट्टाए, गाढदुक्खाऽऽउलमणाए ॥९०॥
भणियं भो नरपुंगव!, सुकुलपसूयाण जणपसिद्धाण । नयमग्गदेसगाणं, तुम्हारिसपवरपुरिसाण ॥९१॥
अच्चन्तमऽणुचियं उभय-लोगविद्धंसणेक्कपडुयं च । पररमणिरमणमेयं, अवजसपडहो तिहुयणे वि ॥९२॥
रन्ना पयंपियं कमल-वयणि! चिरपुन्ननिवहउवणीयं । रयणनिहिमऽणुसरंतस्स, होज्ज किं दूसणं मज्झ ॥९३॥
तो नरवइनिरुवक्कम-निब्बंधं मुणिय तीए पडिभणियं । जइ एवं ता नरवर!, चिरगहियाऽभिग्गहो जाव ॥९४॥
पुज्जइ ता पडियालेसु, मज्झ तं केत्तियं पि नणु कालं । पच्छा य तुज्झ वंछा-ऽणुरूवमऽहमाऽऽचरिस्सामि ॥९५॥
एवं सोच्चा तुट्ठो, भूमिवई नट्टखेड्डमाऽऽईणि । चित्तविणोयऽत्थं से, दरिसावित्तो गमइ कालं ॥९६॥
अह पुव्वभणियनंदो, वानरभावेण वट्टमाणो सो । गहिओ मक्कडखेड्डा-वगेहि उविओ ति काऊण ॥९७॥
नट्टाइबहुकलाओ, सिक्खवियो पइपुरं पि दंसित्ता । ते पुरिसा तं घेत्तुं, समागया सिरिपुरे कहवि ॥९८॥
खेल्लावित्ता पइमंदिरं च, ते रायमंदिरम्मि गया । पारद्धो य तहिं सो, पणच्चिउं सव्वजत्तेण ॥९९॥
अह नच्चंतेण कहिं पि, सुंदरी रायसंनिहिनिसन्ना । दिट्ठा णेणं चिरपणय-भाववियसंतनेत्तेण ॥३७००॥
कत्थ मए दिट्ठेयं ति, चिंतयंतेण तेण पुणरुत्तं । जाई सरिया नाओ, सव्वो च्चिय पुव्ववित्तंतो ॥१॥
तो परमं निव्वेयं, समुव्वहंतेण चिन्तियं तेण । हा! हा! अणत्थनिहिणो, धिरत्थु संसारवासस्स ॥२॥
जेण तहाविहनिम्मल-विवेयजुत्तो वि धम्मरागी वि । अणुसमयसमयसंसिय-विहिणाऽणुट्ठाणकारी वि ॥३॥
तह बालमरणवसओ, विसमदसं एरिसिं समणुपत्तो । तिरियत्ते वट्टंता य, संपयं किं करेमि अहं ॥४॥
अहवा किमऽणेण विचिंतिएण, इय अवसराऽणुरूवं पि । पकरेमि धम्मकम्मं, पज्जत्तं जीवियव्वेण ॥५॥
इय सो परिभावंतो [1]सुढिओ त्ति मुणित्तु तेहिं पुरिसेहिं । नीओ सट्ठाणम्मि उ, तेणं पुण अणसणं गहियं ॥६॥
पंचपरमेट्ठिमंतं, अणुसुमरंतो य सुद्धभावेण । मरिऊणं उववन्नो, दिव्वो देवो महिड्ढियो ॥७॥
ओहिवसमुणियचिरवइ-यरो य अवयरिय बोहइ नरिंदं । सुंदरिमऽवि सूरीणं, अप्पइ पव्वज्जगहणऽत्थं ॥८॥
इय तिरियत्तगयस्स वि, पंडियमरणं पणामइ जीयस्स । सुगइपुरपरमरज्जं, निरवज्जं भणियजुत्तीए ॥९॥
किंच—
आजम्मं पि करित्ता, कडमद्दं रइयपावपब्भारं । पच्छा पंडियमरणं, लहिऊण य सुज्झए जीवो ॥१०॥
संसाररन्नपडिओ, अणाऽऽइजीवो न ताव उत्तरइ! जाव न पंडियमरणं, अपत्तपुव्वं इहं लहइ ॥११॥
पंडियमरणेण मया, तेणेव भवेण केई सिज्झंति । केई पुण देवलोए, गंतूण इहाऽऽगया सन्ता ॥१२॥
सावयकुलेसु जम्मं, पावित्ता सुचिरचरियसामन्ना । पंडियमरणेण मया, सिज्झंति भवम्मि तइयम्मि ॥१३॥
नारयतिरियविवज्जं, सुमणुयदेवेसु विलसमाणा वि । अट्ठभवऽब्भन्तरओ, पंडियमरणेण सिज्झंति ॥१४॥
तत्थ य गिही मुणी वा, निज्जंतुपएससंठियो विहिणा । उद्धरियसव्वसल्लो वज्जियनीसेसआहारो ॥१५॥

1. सुढिओ = श्रान्तः ।

छक्कायरक्खणपरो, खामणमरिसावणाहिं उज्जुत्तो । अविराहगो अचवलो, जिइंदियो जियतिदंडरिऊ ॥१६॥
जियचउकसायसेन्नो, समसत्तमित्तयाए वट्टंतो । इय पंडियमरणेणं, जो हु मओ [1]सुम्मओ सो हु ॥१७॥
एयं पंडियमरणं, सम्मद्दिट्ठी लहंति लहुकम्मा । पावेंति मंदपुन्ना वि, किमिह चिन्तामणीरयणं ॥१८॥
सेसं तु बालमरणं, बालाण पए पए सुलभमेव । नवरं तमऽणत्थफलं, संसारपवड्ढणं जेण ॥१९॥
बालो मुक्खो सो पुण, सनियाणं अणसणं तवं विविहं । काऊण मओ जायइ, वंतरजाईसु असुहासु ॥२०॥
तत्थुप्पन्नो तं तं, करेइ बालो व्व केलिपडिबद्धो । जेण पुण भवसमुद्दे, अणोरपारम्मि परिभमइ ॥२१॥
तो तं पंडियमरणं, असेसकम्मक्खयत्थमुवउत्ता । कुणमाणा सइ धीरा, नित्थारगपारगा हुंतु ॥२२॥
एगं पंडियमरणं, मरिऊण पुणो बहूणि मरणाणि । न मरंति अप्पमत्ता, चरित्तमाऽऽराहियं जेहिं ॥२३॥
संजमगुणेसु सम्मं, सुसंवुडा सव्वसंगओ मुक्का । जे उ चयंति सरीरं, पंडियमरणं कयं तेहिं ॥२४॥
जं निज्जरेइ कम्मं, असंवुडो सुबहुणा वि कालेण । तं संवुडो तिगुत्तो, खवेइ ऊसासमित्तेण ॥२५॥
निच्छयतिदंडविरया, तिगुत्तिगुत्ता तिसल्लनिस्सल्ला । तिविहेण अप्पमत्ता, जयजीवदयापहाणमणा ॥२६॥
पंचमहव्वयनिरया, संपुन्नचरित्तसीलसंजुत्ता । विहिपुव्वविहियमरणा, भवंति आराहगा मुणिणो ॥२७॥
अच्चाहीणा जाहे, धीरा सुयसारकलियपरमऽत्था । तो आयरियचिदिन्नं, उवेंति अब्भुज्जयं मरणं ॥२८॥
पंडियमरणं च इमं, विसुज्झमाणस्स चेव जीवस्स । कस्स वि जइ संपज्जइ, विसेसकुसलाऽणुबन्धस्स ॥२९॥
रयणकरंडयतुल्लं, उम्बरपुप्फं व दुल्लहं लोए । एयं पंडियमरणं, पुन्नविहीणा न पावेंति ॥३०॥
मरणं चिय मरणाणं, जराण पुण पडिजर च्चिय विणासे । एयं पंडियमरणं, अपुणब्भावो य जम्मस्स ॥३१॥
सारीरमाणसोभय-समुब्भवाऽसंखतिक्खदुक्खाणं । पंडियमरणमएणं, सव्वाण जलंऽजली दिन्नो ॥३२॥
अन्नं च—
जं जं जयम्मि जायइ, जीवाणं साऽणुबंधमिट्ठसुहं । तं तं वियाण सव्वं, पंडियमरणस्स विप्फुरियं ॥३३॥
अहवा—
जं साऽणुबंधमिट्ठं, जमऽणिट्ठं निरऽणुबंधमिह किंपि । तं सव्वं पि वियाणसु, पंडियमरणद्दुमस्स फलं ॥३४॥
एक्कं पंडियमरणं, सव्वभवाऽणिट्ठनिट्ठवणदक्खं । अहवेक्को अग्गिकणो, न डहइ किं इंधणपबंधे ॥३५॥
एयं पंडियमरणं पिया य माया य बंधुवग्गो य । जीवाणं हियकरणे, रणम्मि सुहडोव्व [2]परिहत्थं ॥३६॥
ढक्कियकुगइदुवारं पयडीकयसुगइपुरपवेसं च । निद्दारियदुरियरयं, पंडियमरणं जए जयउ ॥३७॥
अहमपुरिसाण दुलहं, उत्तमपुरिसाण सेवणिज्जं जं । उत्तमफलसंजणयं, पंडियमरणं जए जयउ ॥३८॥
जं जं अहिलसणिज्जं, जं जं च सुदुल्लहं सलहणिज्जं । तस्संपाडणपडुयं, पंडियमरणं जए जयउ ॥३९॥
जं किर चिन्तामणिकाम-धेणुकप्पद्दुमाण वि असज्झं । तस्संपाडणपडुयं पंडियमरणं जए जयउ ॥४०॥
एक्कं पंडियमरणं, छिन्दइ जाईसयाइं बहुयाइं । तं मरणं मरियव्वं, जेण मओ सुहमओ होइ ॥४१॥
जइ भयमऽत्थि मरणत्तं, पंडियमरणेण ता मरेयव्वं । एक्कं पंडियमरणं छिन्दइ सयलाणि मरणाणि ॥४२॥
के सक्का वन्नेउं, पंडियमरणस्स गुणगणं सम्मं । जं चरिऊण सुधीरा, असेसकम्मक्खयमुवेंति ॥४३॥
इय पावजलणजलभर-समाए संवेगरंगसालाए । आराहणाए मूलिल्ल-यम्मि, परिकम्मविहिदारे ॥४४॥
पत्थुयपन्नरसण्हं, पडिदाराणं कमाऽणुसारेण । भणियमिमं बारसमं, अहिगयमरणं ति पडिदारं ॥४५॥

"श्रेणिद्वारम्" —

अहिगयमरणे अंगी-कए वि नाऽऽराहणं विणा [3]सीतिं । आरोढुमऽलं जीवो त्ति, सीइदारं पवक्खामि ॥४६॥
सीई य होइ दुविहा, दव्वे भावे य तत्थ दव्वम्मि । उच्चट्ठाणाऽऽरोहण-हेऊ निस्सेणिगाऽऽईया ॥४७॥
संजमठाणाणं कंडगाण, लेसाठिईविसेसाणं । सुद्धतराणऽक्कमणं भावसिई केवलं जाव ॥४८॥
तहाहि—
उवरुवरिमगुणठाणं, पडियज्जंतस्स होइ भावसिई । दव्वसिई निस्सेणी, पासायमिवाऽऽरुहंतस्स ॥४९॥

1. सुमृतः । 2. परिहत्थं = कुशलं = समर्थमित्यर्थः । 3. सीतिं = श्रेणिम् ।

अह सो सिइमाऽऽरूढो!, वसहिं उवहिं च उग्गमाऽऽईहिं । दोसेहिं उवहयं परि-हरित्तु सम्मं ख्नु विहरेज्जा ॥५०॥
गणिणा सह संलावो, कज्जं पइ सेसएहिं साहूहिं । मोणं से मिच्छजणे, भज्जं [1]सन्नीसु सजणे य ॥५१॥
इहरा जह तह अन्नोऽन्न-संकहक्खित्त चित्तपसरस्स । कस्स वि पमायओ पत्थु-यऽत्थविग्घो वि होज्ज तओ॥५२॥
आराहणमिच्छंतो, तदेगचित्तो जएज्ज सीईए । एयाए विगमम्मि, सयंभुदत्तो व्व सीएज्ज ॥५३॥
तहाहि— "स्वयम्भूदत्तदृष्टान्तः"
कंचणपुरम्मि नगरं, वसंति दो भायरा जणपसिद्धा । अवरोप्परदढपणया, सयंभुदत्तो सुगुत्तो य ॥५४॥
णियकुलक्कमअविरुद्ध-सुद्धवित्तीए जीवणोवायं । कुणमाणाणं तेसिं, कालो वोलेइ लीलाए ॥५५॥
अह एगम्मि अवसरे, वुट्ठीविरहेण कूरगहवसओ । पउरजणजणियदुक्खं, दुब्भिक्खं निवडियं घोरं ॥५६॥
खीणा चिरसंगहिया, ताहे तणरासिणो महंता वि । सुमहल्ला वि य पल्ला, धन्नाण वि उवगया निहणं ॥५७॥
सीयंतचउप्पयदुपयवग्ग-मऽवलोइऊण उव्विग्गो । परिचत्तववत्थो प-त्थियो वि आणवइ नियपुरिसे ॥५८॥
रे! रे! पुरीए जस्सऽत्थि, जेत्तिओ धन्नसंचओ एत्थ । तत्तियमेत्तस्सऽद्धं, तस्स बलो गेण्हह लहु त्ति ॥५९॥
एवं आणत्तेहिं, तहेव सव्वं अणुट्ठियं तेहिं । रायपुरिसेहिं जमभिउडि-भंगभीमेहिं सव्वत्थ ॥६०॥
तो सविसेसं लोगो छुहाओ धणसयणनासओ य दढं । अच्चन्तरोगभरविहु-रियो य मरिउं समाढत्तो ॥६१॥
सुन्नीहुंतेसु य मंदिरेसु, रत्थासु रुंडमुंडेहिं । दुग्गम्मासु लोएसु, सुत्थदेसे सरंतेसु ॥६२॥
सो वि हु सयंभुदत्तो, सुगुत्तसहितो पुराउ नीहरिओ । सत्थेण समं लग्गो, गंतुं देसंतराऽभिमुहं ॥६३॥
दूरपहमऽइक्कंते सत्थे, पत्ते य रन्नमज्झम्मि । संनद्धा रणसज्जा, चिलायधाडी समावडिया ॥६४॥
पमुक्कहक्कभीसणा, चावोवलग्गमग्गणा । उब्बद्धउद्धकेसिया, जमेण [2]नाइ पेसिया ॥६५॥
तमालतालसामला, विपक्खभंगपच्चला । फुरंततारखग्गिया, सविज्जू [3]नं [4]घणोलिया ॥६६॥
वेल व्व सागरुट्ठिया, संछन्नभूमिवट्टिया । सच्छंदचारदारुणा, निब्भिन्नरन्नवारणा ॥६७॥
कुरंगमंसपोसिया, विसिट्ठलोयदूसिया । जुज्झेण सा य लग्गिया, रणेक्कबद्धरंगिया ॥६८॥
अह कुंतखग्गभल्लय-पमुहप्पहरणकरा समरधीरा । सत्थसुहडा वि तीए, समगं जुज्झेण संलग्गा ॥६९॥
खंडियपयंडसुहडं, विहडियरणरहसनस्सिरनरोहं । [5]उप्पित्थसत्थनाहं, जायं समरं महाभीमं ॥७०॥
अच्चंतनिद्दएणं, पबलबलेणं चिलायनिवहेणं । कलिकालेण य धम्मो, निहतो सत्थो समत्थो वि ॥७१॥
घेत्तूण सारमऽत्थं, सुरूवरामाजणं मणुस्से य । बंदग्गाहेण ततो, चिलायसेणा गया पल्लिं ॥७२॥
सो वि य सयंभुदत्तो, कहं पि नियलहुगभाउगविउत्तो । धणवं ति चिंतिऊणं, चिलायसेणाए संगहितो ॥७३॥
सुचिरं निद्दयकसघाय-बंधणाऽऽईहिं उवहओ वि दढं । सो इच्छइ जाव न किंपि, देयदव्वं चिलाएहिं ॥७४॥
ताव विणासियपसुमहिस-रुधिरधाराऽणुलित्तभवणाए । दाराऽयबद्धकुस्सर-रणंतगुरुघंटयाऽऽलीए ॥७५॥
पइदिणपुन्नोवाइय-चिलायकीरंततप्पणविहीए । रत्तकणवीरमाला-विरइयपूओवयाराए ॥७६॥
गयचम्मनिवसणाए, चामुंडाए पयंडरुवाए । उवहारऽत्थं नीओ, भयवसवेवंतसव्वंऽगो ॥७७॥
रे वणियाऽहम! जइ जीवि-यव्वमऽभिलससि ता लहुं दव्वं । अज्ज वि इच्छसु अम्हं, किमऽकंडे जासि जमभवणं॥७८॥
एवं ते जपंता, सयंभुदत्तं न जाव खग्गेण । घायंति ताव सहसा समुट्ठिओ बहलहलबोलो ॥७९॥
हंहो! मुंचह एयं, धरागमऽणुसरह वेरियग्गमिमं । थीबालबुड्ढविद्धंस-कारिणं मा चिरावेह ॥८०॥
एसा हम्मइ पल्ली दज्झन्ति इमां मंदिराइं पि । इय उल्लावं सोच्चा, सयंभुदत्तं विमोत्तूण ॥८१॥
पवणजइणा जवेणं, सुमरियचिरवेरिसुहडसंपाया । कच्चाइणीगिहातो, ते पुरिसा झत्ति नीहरिया ॥८२॥
जाओ अज्जेव अहं, अज्जे य य सयलसंपयं पत्तो । इइ चिंतंतो तुरियं, सयंभुदत्तो अवक्कंतो ॥८३॥
भीसणचिलायभयतर-लिओ य गिरिकुहरमज्झयारेण । बहलतरुवल्लिपडला-ऽऽउलेण अपहेण वच्चंतो ॥८४॥
खद्धो भुयंगमेणं, उप्पन्ना वेयणा महाघोरा । परिचिंतियं च तेणं, नूण विणस्सामि एत्ताहे ॥८५॥

1. सन्नीसु = सम्यग्दृष्टिषु । 2. नाइ = इव । 3. नं = इव । 4. घणोलिया = मेघपङ्क्तिः । 5. उप्पित्थ = त्रस्त ।

जइ कहवि चिलाएहिं, पम्मुक्को ता कयंततुल्लेण । डसिओम्हि भुयंगेणं, अहह! विचित्तं विहिसरुवं ॥८६॥
अहवा जम्मो मरणेण, जोव्वणं सह जराए संजोगो । सममेव वियोगेणं, उप्पज्जइ किमिह सोगेण ॥८७॥
एवं परिभावेंतो, जा वच्छच्छायमऽणुसरइ सिसिरं । ता तरुणो हेट्ठठियं, चारणसमणं महासत्तं ॥८८॥
सुत्तं परियत्तंतं, विचित्तनयभंगसंगदुव्विगमं । पेच्छइ पउमासणबन्ध-धीरमुवरुद्धमणपसरं ॥८९॥
विसमविसोरगविसविहु-रियस्स भयवं! ममेत्थ पत्थावे । सरणं तुमं ति जंपिय, विचेयणो तयणु सो पडिओ॥९०॥
अह तं विसवसनिन्नट्ठ-चेयणं पेच्छिऊण करुणाए । परिचिंतइ मुणिवसभो, किमियाणिं जुज्जाए काउं ॥९१॥
पावपओयणनिरयाण, नो गिहत्थाण ताव उवयारे । वट्टिउमुचियं साहूण, सव्वभूयऽप्पभूयाण ॥९२॥
ताणुवयारे तव्विहिय-पावट्ठाणाण कारणं जम्हा । निरवज्जवित्तिणो वि हु, भवंति गिहिसंगदोसेणं ॥९३॥
जइ पुण ते उवयरिया, मोत्तूणं सव्वसंगमऽचिरेणं । पडिवज्जिय पव्वज्जं, जयंति सद्धम्मकज्जेसु ॥९४॥
ता होज्ज तक्कया नि-ज्जरा वि इय चिन्तिरस्स समणस्स । अनिमित्तमेव सहसा, विप्फुरियं दाहिणं नयणं ॥९५॥
तो तदुवयारमाऽऽभो-गिऊण दट्ठूण से भुयंगदंसं । चरणोवरिम्मि सुहुमं, वियाररहियं च मुणिवसभो ॥९६॥
परिभावइ नूणमिमो, जीविस्सइ जेण दंसठाणमिमं । अविरुद्धं सिरपमुहाणि, चेव सत्थे विरुद्धाणि ॥९७॥
तहाहि—
सीसे लिंगे [1]चिबुए, कंठे [2]संखेसु तह गुदे य थणे । ओट्ठे वच्छयलम्मि य, भुमयासुं नाभिनासउडे ॥९८॥
करचरणतले खंधे, कक्खासुं इक्खणे निडाले य । केसंतसंधिदेसेसुं, जाइ दट्ठो जमगिहम्मि ॥९९॥
तहा—
पंचमीअट्ठमीछट्ठी-नवमीचउद्दसीतिहीसु अहिदट्ठो । पक्खंते वि विणस्सइ, अज्जं च तिही वि न विरुद्धा ॥३८००॥
नक्खत्तं पि हु दुट्ठं, मघा विसाहा य मूलमऽसिलेसा । रोहिणिअद्दा[3]कित्तिय, तं पि न वट्टइ इह मुहुत्ते ॥१॥
रिट्ठं पि पुव्वमुणिणो, भणंति मणुयस्स भुयंगदट्ठस्स । कंपो लालामुयणं, [4]जिंभा नयणाऽरुणत्तं च ॥२॥
मुच्छा सरीरभंगो, कयोलखामत्तणं पहाहाणी । [5]हिक्का सरीरसीय-त्तणं च अचिरेण मरणाय ॥३॥
न य एत्तो एगं पि हु, दीसइ रिट्ठं इमस्स भव्वस्स । ता कीरइ पडियारो, दयापहाणो हि जिणधम्मो ॥४॥
परिभाविऊण एवं, मुणिवसहो झाणनिमियथिरनयणो । अणुसुमरिउं पवत्तो, विसेससुत्तं समुवउत्तो ॥५॥
अह जाय सरयससहर-निब्भरपसरंतपहपहासिल्लं । उल्लवइ अमयकुल्ला-ऽणुकारिणिं अक्खरस्सेणिं ॥६॥
ताव तिमिरं व दिवसयर-पहभरऽब्भाहयं महाऽहिविसं । नट्ठं सुत्तविउद्धो व्व, उट्ठिओ सो वि पडुदेहो ॥७॥
तो जीवियव्वदाय त्ति, पवरसाहु त्ति जायपडिबन्धो । नमिऊण सबहुमाणं, तं समणं भणिउमाऽऽढत्तो ॥८॥
भयवं! भमंतभीसण-सावयकुलसंकुलाए अडवीए । मन्ने पुन्नेणं मे, तुम्ह निवासो इहं जातो ॥९॥
कहमऽन्नहा महाविस-विसहरविसहरियचेयणस्स ममं । होज्जेह जीवियव्वं, जइ न तुमं नाह! होंतो सि ॥१०॥
कत्थ मरुमंडलो कत्थ, कप्पविडवी महाफलसमिद्धो । कत्थ अधणस्स गेहं, कत्थ व तत्थेव रयणनिही ॥११॥
कत्थाऽहं सुदुहट्टो, अणप्पमाहप्पवं च कत्थ तुमं । अहह! विहिविलसियाणं, को परमत्थं जए मुणइ ॥१२॥
एवंविहोवयारिस्स, तुज्झ भयवं महं अधन्नस्स । दिन्नेण केण केण व, कएण जाएज्ज रिणमोक्खो ॥१३॥
मुणिणा भणियं भद्दय!, जइ रिणमोक्खं समीहसे काउं । निरवज्जं पव्वज्जं, पडिवज्जसु ता तुममियाणिं ॥१४॥
उवयारो वि मए तुह, एईए कएण नणु कओ इहरा । अस्संजयचिन्ताए, अहिगारो नत्थि सुमुणीण ॥१५॥
न य भद्द! धम्मवियलं, सलहिज्जइ जीवियं मणुस्साणं । ता चयसु गिहाऽऽसंगं, णिस्संगो हवसु सुस्समणो॥१६॥
भालयलाऽऽरोवियपाणि-कमलमउलेण तेण तो भणियं । भयवं! करेमि एयं, नवरं लहुभाइपडिबंधो ॥१७॥
विहुरेइ मम मणं जइ य, होज्ज सह तेण दंसणं कहवि । ता निस्सल्लो पव्वज्ज-मेक्कचित्तो करेज्जमऽहं॥१८॥
मुणिणा पयंपियं भद्द!, जइ तुमं विसवसा मओ होंतो । ता कह लहुगं भाउग-मऽवलाइंतो सि एवं च ॥१९॥

1. चिबुके = होठना नीचेना भागमां । 2. शङ्खेषु = आंखनी नजीकना अवयवोने विषे । 3. कृतिकानक्षत्रम् । 4. जृम्भा = बगासुं ।
5. हिक्का = हेडकी आववानो रोग।

परिचय पडिबंधमिमं, निरत्थयं सरसु धम्ममऽणवज्जं । भाइ-पिइ-माइतुल्लो, एक्को एसो च्चिय जियाण ॥२०॥
एवं मुणिणा भणिए, सयंभुदत्तो परेण विणएण । पडिवज्जइ पव्वज्जं, कुणइ विचित्तं तवोकम्मं ॥२१॥
विहरइ गुरुणा सद्धिं, गामाऽऽगरनगरसंकुलं वसुहं । दुस्सहपरीसहचमुं, अहियासिंतो महासत्तो ॥२२॥
एवं च चिरं कालं, विहरित्ता नाणदंसणसमग्गो । थोवाऽऽउयं च नाउं, भत्तपरिन्नं पवज्जंतो ॥२३॥
गुरुणा पन्नविओ सो, अहो महाभाग! पुन्नभरलब्भं । पज्जंतकालियमिमं, सविसेसाऽऽराहणविहाणं ॥२४॥
ता सयणे उवहिम्मि य, कुले य गच्छे य नियदेहे वि । पडिबंधं मा काहिसि, मूलमऽणत्थाणमेस जओ॥२५॥
इच्छामो अणुसट्ठिं ति, जंपिउं गुरुगिराए बद्धरई । ताहे सयंभुदत्तो, पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥२६॥
तप्पुन्नपगरिसेण य, [1]आउट्टो कुणइ पुरजणो पूयं । अह सो पुव्वविउत्तो, सुगुत्तनामो लहुगभाया ॥२७॥
परिभममाणो पत्तो, तम्मि पएसम्मि तो पुरीलोगं । एगाऽभिमुहं मुणिवं-दणऽट्ठमिं तं पलोइत्ता ॥२८॥
पुच्छियऽमणेण किं एस, एत्थ वच्चइ जणो समग्गो वि । कहियं नरेण एक्केण, तस्स जह एत्थ मुणिवसभो॥२९॥
कयभत्तपरिच्चागो, सद्धम्ममहानिहि व्व पच्चक्खो । निवसइ तं पुण तित्थं य, वंदिउं एस जाइ जणो ॥३०॥
एवं सोच्चा कोऊहलेण, लोगेण सह सुगुत्तो वि । समणं सयंभुदत्तं, दट्ठुं तं देसमऽणुपत्तो ॥३१॥
अह मुणिणो रूवं पे-च्छिऊण संजायपच्चभिन्नाणो । पम्मुक्कदीहपोक्कं, रोइत्ता भणिउमाऽऽढत्तो ॥३२॥
हे भाय! सयणवच्छल!, छलिओ सि कहं व कूडसमणेहिं । जं एरिसिं अवत्थं, गओ तुमं दूरकिसियंऽगो॥३३॥
अज्ज वि छड्डेहि लहुं, पासंडमिमं वयामु नियदेसं । तुज्झ वियोगेण फुडं, फुट्टइ मह हिययमऽचिरेण ॥३४॥
इय जंपियम्मि तेणं, सयंभुदत्तो वि ईसिपडिबंधा । तं वाहरिउं पुच्छइ, समग्गमऽवि पुव्ववुत्तंतं ॥३५॥
सो वि य चिलायधाडी-विहडणपामोक्खनियगवुत्तंतं । साहेइ सोगखलिर-ऽक्खराए वाणीए दुक्खत्तो ॥३६॥
अह कलुणवयणसवणुब्भवंत-पडिबंधकलुसियज्झाणो । सव्वट्ठसिद्धिपाओग्ग-[2]कंडगाइं पि खंडित्ता ॥३७॥
तदुवरि सिणेहदोसेणं, मरिय सोहम्मदेवलोगम्मि । मज्झिमगाऽऽऊ देवो, सयंभुदत्तो समुप्पन्नो ॥३८॥
एवं भावसिईए, जो जो जोगो हवेज्ज पडिपंथी । आराहणाऽभिलासी, तं तं वज्जेज्ज उज्जुत्तो ॥३९॥
एत्तो च्चिय गणिणा सह, इच्चाइ निदंसियं पयत्तेण । आराहणुच्चपासाय-भावसिइं विलग्गस्स ॥४०॥
ता उत्तिमट्ठकारी, सव्वं सुहसीलयं [3]पयहिऊण । भावसिइमाऽऽरुहित्ता, विहरेज्जा पेमपामुक्को ॥४१॥
इय मयणभुयगगरुलो-वमाए संवेगरंगसालाए । आराहणाए मूलि-ल्लयम्मि परिकम्मविहिदारे ॥४२॥
पत्थुयपन्नरसण्हं, पडिदाराणं कमाऽणुसारेण । भणियमिमं तेरसमं, सीइविसयं पडिद्दारं ॥४३॥

"भावनाद्वारम्" —

सीइसमारूढो वि हु, न भावणाए विणा थिरो होइ । ता भावणदारमऽह, सवित्थरत्थं परूवेमि ॥४४॥
भाविज्जइ इमीए, जीवो जं तेण भावणा भणिया । दुविहा सा पुण णेया, अपसत्था तह पसत्था य ॥४५॥
कंदप्प[1] देवकिब्बिस[2], अभियोगा[3] आसुरी[4] य संमोहा[5] । एसा हु अप्पसत्था, पंचविहा भावणा तत्थ ॥४६॥
कंदप्पभावणा नाम, जत्थ हासाऽऽइबहुपयारेहिं । अप्पाणं भावेई, सा य भवे पंचहा एवं ॥४७॥
कंदप्पे[1] कोक्कुइए[2], दुयसीलत्ते य[3] हासकरणे य[4] । परविम्हयजणणे वि य, कंदप्पो णेगहा तत्थ ॥४८॥
अट्टट्टहास-परिहास-णिहुयउल्लावकामकहरूवो । कामोवएसकाम-प्पसंसविसओ य नायव्वो ॥४९॥
कुक्कुइयं पुण तं जं, [4]सयमऽहसं अच्छिभुमयपमुहेहिं । देहाऽवयवेहिं परं, सपरिप्फंदेहिं हासेइ ॥५०॥
दुयसीलत्तं तं पुण, जं किर दप्पेण गमणभासाऽऽइ । सव्वं पि कज्जजायं, अच्चंतदुयद्दुयं कुणइ ॥५१॥
हासकरणं पि तं जं, वेसविसेसस्स करणओ अहवा । सवियारवयणतो वा, सपरेसिं हासजणणं ति ॥५२॥
परविम्हयजणणं पि हु, जमिंदजालक्कुहेडगा[5]ऽऽईहिं । परविम्हयं जणेई, थेवं पि सयं अविम्हइओ ॥५३॥
इय निद्दिट्ठा कंदप्प-भावणा अह कुदेवभावकरी । पंचवियप्पा किब्बिसिय-भावणा भन्नए बीया ॥५४॥
सुयनाण१ केवलीणं२, धम्मायरियाण३ सव्वसाहूणं४ । [6]अव्वन्नभासणं तह य, गाढमाइल्लया य त्ति ॥५५॥

---

1. आवृत्त = आवर्जितः । 2. कण्डकानि = संयमश्रेणिअध्यवसायस्थानानि । 3. प्रहाय । 4. स्वयमहसन् । 5. कुहेडगं = चमत्कारकारकं मन्त्रतन्त्रादिज्ञानम्।
6. अवर्णवादकथनम् ।

तत्थ सुयस्साऽवन्ना, एवं जे जीवयपमायाऽऽई । अत्था एगत्थुत्ता, अन्नत्थ वि ते पुणो वुत्ता ।।५६।।
केवलिणं पि अवन्ना, जइ सच्चं ते पणट्ठपेमाणो । तो कीस भव्वसत्ताणं, चेव धम्मं उवइसंति ।।५७।।
धम्मगुरूणमवऽन्ना, जच्चाऽऽईहिं तु हीलणे तेसिं । एगक्खेत्ते न रइं, लहन्ति एमाऽऽइ य मुणीणं ।।५८।।
माइल्लया उ अप्पस्स, भावविणिगूहणाऽऽइवावारो । इय भणिया पंचविहा, किब्बिसिया भावणा बीया ।।५९।।
गारवपडिबद्धस्सा-ऽभिओगिएहिं च मंतमाऽऽईहिं । जं अप्पभावणं सा, अभिओगियभावणा नेया ।।६०।।
कोउय! भूइकम्मं[2], पसिणेहिं[3] तह य पसिणपसिणेण[4] । तह य निमित्तेणं चिय, पंचवियप्पा भवे सा य ।।६१।।
तत्थ य अग्गीहोमो-सहाऽऽइणा जं परं वसे काउं । भत्ताऽऽइ उवजीवइ, कोउगआजीवणं तं तु ।।६२।।
जं पुण भूईसुत्ताऽऽइएहिं, रक्खं परस्स काऊणं । असणाऽऽई आजीवइ, भूइकम्माऽऽजीवणं तं च ।।६३।।
अंगुट्ठाऽऽइसु देवय-मऽवयारिय जा परऽत्थनिन्नयणे । भत्ताऽऽईणुवलद्धी, तं पसिणाऽऽजीवणं बिन्ति ।।६४।।
सुमिणगविज्जाघंटिग-सबरीहिंतो परऽत्थनिच्छयणे । विंति पसिणापसिणा-ऽऽजीवणमाऽऽहंसु मुणिवसभा ।।६५।।
लाभाऽलाभाऽऽइणिवे-यणेण उवजीवइ परेहिंतो । असणाऽऽइ जं निमित्ता-ऽऽजीवणमऽक्खंति तं गुरुणो ।।६६।।
अभियोगभावणा वि य, निदंसिया इन्हि असुरसिरिजणगा । पंचवियप्पा आसुरिय-भावणा भन्नए किंपि ।।६७।।
सइ विग्गहसीलत्तं[1], संसत्ततवो[2] निमित्तकहणं च[3] । निक्किवया वि य अवरा[4], पंचमगं निरऽणुकंपत्तं ।।६८।।
तत्थ उ विग्गहसीलत्त-माऽऽहु निच्चं पि कलहकरणरइं । आहाराऽऽइनिमित्तं, तवं पि संसत्ततवकम्मं ।।६९।।
अभिमाणेण पओसेण, वा वि तीयाऽऽइयाण जं कहणं । भिक्खुस्स गिहत्थं पइ, निमित्तकहणं तयं भणियं ।।७०।।
जं हट्ठसरीरो वि हु, चंकमणाऽऽईणि किर तसाऽऽईसु । पकरेइ निरऽणुतावो, भणियमिमं निक्किवत्तं तु ।।७१।।
दट्ठूण वि दुक्खत्तं, अच्चंतभएण कंपमाणं च । जं निट्ठुरहिययत्तं, तं भणियं निरऽणुकंपत्तं ।।७२।।
आसुरियभावणेवं, वुत्ता संमोहभावणा इन्हिं । भन्नइ सपरेसिं पि हु, संमोहुप्पायणसरूवा ।।७३।।
उम्मग्गदेसणा[1] मग्ग-दूसणा[2] मग्गविपडिवत्ती य[3] । मोहो[4] य मोहजणणं[5], एवं सा भवति पंचविहा ।।७४।।
उम्मग्गदेसणा तत्थ, सम्मनाणाऽऽइयाणि दूसित्ता । तव्विपरीयं सिवपह-मुवइसमाणस्स मुणियव्वा ।।७५।।
निव्वाणमग्गभूयाणि, नाणमाऽऽईणि तट्ठियं च जणं । दूसिंतस्स भवे मग्ग-दूसणा मूलमऽसुहस्स ।।७६।।
तह मग्गविपडिवत्ती, मग्गं दूसित्तु नियवितक्काए । उम्मग्गमऽणुसरंतस्स, जंतुणो होइ नायव्वा ।।७७।।
नाणंऽतरेसु चरणंऽतरेसु, परतित्थियाण रिद्धिसु य । मोहिज्जइ जेण, जिओ, सो मोहो भन्नइ तहाहि. ।।७८।।
मन्ने परमऽत्थेणं, धम्मो ससरक्खगेरुयाऽऽईण । पूयासक्कारा जेसिं, होंति लोगे परा एवं ।।७९।।
सब्भावेणं कवडेण, वा वि अन्नयरकुमयविसए जं । लोयस्स मोहमुवजणइ, तं भवे मोहजणणं ति ।।८०।।
एयाओ भावणाओ, चरित्तमलिणत्तहेउभूयाओ । अच्चंतदुग्गदुग्गइ-करीओ भणियाओ लेसेण ।।८१।।
जो संजओ वि एयासु, अप्पसत्थासु वट्टइ कहंपि । सो तव्विहेसु गच्छइ, सुरेसु भइओ चरणहीणो ।।८२।।
एयाहिं अप्पाणं, भावेंतो देवदुग्गइं जाइ । तत्तो चुओ समाणो, भमइ भवसायरमऽणंतं ।।८३।।
ता एयाओ दूरेण, वज्जिउं भावणाओ भावेइ । सुपसत्थाओ सम्मं, निस्संगो सव्वसंगेसु ।।८४।।
तवभावणा[1] य सुय[2] सत्त[3], भावणेगत्तभावणा[4] चेव । धीइबलभावणा वि य[5], इय ताओ भवंति पंचविहा ।।८५।।
तवभावणाए पंचेन्दियाणि, दंताणि जस्स वसमेंति । इंदियजोग्गाऽऽयरिओ, समाहिकरणाणि सो कुणइ ।।८६।।
मुणिनिंदियम्मि इंदिय-सुहम्मि सत्तो परीसहपरद्धो । अकयपरिकम्मकीवो, मुज्झइ आराहणाकाले ।।८७।।
जोगमऽकारिज्जंतो, आसो सुहलालिओ चिरं कालं । रणभूमीए वाहिज्ज-माणओ जह न कज्जकरो ।।८८।।
पुव्वमऽकारियजोगो, समाहिकामो तहा मरणकाले । न भवइ परीसहसहो, विसयसुहपरम्मुहो जीवो ।।८९।।
सुयभावणाए नाणं, दंसणतवसंजमं च परिणमइ । तो उवयोगपइन्नं, सुह[1]मऽव्वहिओ समाणेइ ।।९०।।
जयणाए जोगपरिभावियस्स, जिणवयणमऽणुगयमइस्स । परिणामो न भविस्सइ, घोरे वि परीसहाऽऽवाए ।।९१।।
समगं आवाए वि हु, सारीरियमाणसोभयदुहाण । चिन्तिय दुहं अईअं, न हु मुज्झइ सत्तभावणओ ।।९२।।

1. अव्यथितः ।

बालमरणाणि धीरो, परिभाविय अत्तणो अणंताइं । मरणे समुट्ठिए वि हु, न मुज्झइ सत्तभायणंतो ॥९३॥
जुज्झपरिभावियऽप्पा, बहुसो मुज्झइ रणे न जह सुहडो । तह सत्तभावणाए, मुज्झइ न मुणी वि उवसग्गे ॥९४॥
देवेहिं भेसिओ वि हु, दिया य राओ य भीमरूवेहिं । तो सत्तभावणाए, धम्मधुरं निब्भरो वहइ ॥९५॥
एगत्तभावणाए. न कामभोगे मणे सरीरे वा । सज्जइ वेरग्गगतो, फासेइ अणुत्तरं धम्मं ॥९६॥
भगिणीए वि हम्मंतियाए, एगत्तभावणाए जहा । जिणकप्पियो न मूढो, खवगो वि न मुज्झइ तहेव ॥९७॥
तहाहि— "पुष्पचुलदृष्टान्तः"
पुप्फउरे नरवइपुप्फ–केउणो पणइणीए उप्पन्नो । पुप्फवईए जमल–त्तणेण पुत्तो य धूया य ॥९८॥
उचियसमयंमि नामं, विहियं पुत्तस्स पुप्फचूलो त्ति । धूयाए पुप्फचूल त्ति, दो वि पत्ताइं तारुण्णं ॥९९॥
अच्चंतपरोप्परनिविड–पणयमवलोइऊण तेसिं च । रन्ना वियोगवज्जण–कएण अणुरुवपत्थावे ॥३९००॥
परिणाविऊण पडिरूव–पुरिसहत्थेण पुप्फचूला उ । धरिया नियभवणे च्चिय, पइणा सह सा गमइ कालं ॥१॥
भुंजेइ पुप्फचूलो य, रज्जलच्छिं जहिच्छमऽच्छिन्नं । अविरहियं भइणीए, परमप्पणयम्मि वट्टन्तो ॥२॥
एगम्मि य पत्थावे, स महप्पा जायपरमसंवेगो । पव्वइओ तन्नेहेण, पुप्फचूला वि पव्वइया ॥३॥
सो अहिगयसुत्तत्थो, जिणकप्पपवज्जणट्ठया धीरो । एगत्तभावणाए, परिकम्मइ बाढमऽप्पाणं ॥४॥
अह [1]तव्वीमंसऽट्ठा, एक्केण सुरेण पुप्फचूलाए । विडपुरिसहढाऽऽरंभिय–वयभंगाए दुहऽट्टाए ॥५॥
जेट्ठऽज्ज! रक्ख रक्ख त्ति, जंपिरीए, विउव्वियं रूवं । तं दट्ठुं पि स धीमं, अगणेंतो सुद्धपरिणामो ॥६॥
एगो च्चिय जीव! तुमं, किमिमेहिं बज्झसयणजोगेहिं । इय भावणाए चलितो, थेवं पि न धम्मझाणाओ ॥७॥
कसिणा परीसहचमू, सहोवसग्गेहिं जइ वि उट्ठेज्जा । दूरं दुस्सहवेगा, भयजणणी अप्पसत्ताणं ॥८॥
धिइधणियबद्धकच्छो, हत्थं पीडिज्जमाणगत्तो वि । पडिपुन्नवंछियऽत्थो व्व–ऽणाउलो तमऽहियासेइ ॥९॥
एयाए भावणाए, चिरकालं पविहरेज्ज सुद्धाए । काऊण अत्तसुद्धिं, दंसणनाणे चरित्ते य ॥१०॥
पडिवज्जंतो कप्पं, अप्पाणमिमाहिं तुलइ मुणिवसभो । एसो वि जहासत्तिं, भावेइ इमाउ को दोसो ॥११॥
धन्नो सो च्चिय भयवं, सिरिअज्जमहागिरी गरुयसत्तो । [2]तीए वि हु जिणकप्पे, तप्परिकम्मं कयं जेण ॥१२॥
तथाहि— "श्रीआर्यमहागिरिदृष्टान्तः"
कुसुमपुरनगररन्नो, नंदस्स विसिट्ठबुद्धिमयरहरो । मंती सगडालो नाम, सावगो जिणमयविहन्नू ॥१३॥
नलकूबरो व्व रूवेण, तस्स पुत्तो पवित्तगुणकलितो । नामेण थूलभद्दो, परमविलासी य भोगी य ॥१४॥
सो सगडालेण विस–प्पओगओ साहियम्मि मरणट्ठे । वररुइपवंचरुट्ठं, दट्ठुं नंदं महासत्तो ॥१५॥
भणिओ रन्ना [3]पिउसं–तियं पयं भयसु पुव्वनाएण । रज्जभरमुद्धुरं धरसु, धीर! मोत्तूण कुवियप्पं ॥१६॥
मुहमहुरं परिणइमंगुलं च, सो चिन्तिऊण घरवासं । निच्छिन्नविसयवंछो, पडिवन्नो संजमुज्जोगं ॥१७॥
संभूयविजयमुणिवइ–पयंऽतिएऽहिगयसयलासुत्तऽत्थो । अणुयोगधरो जातो, तक्कालियमुणिवरवरिट्ठो ॥१८॥
जो पुव्वपरिचियाए, उवकोसविलासिणीए गेहम्मि । वुत्थो चाउम्मासं, मुसुमूरियमयणमाहप्पो ॥१९॥
अच्चंतविम्हयकरं, चरियं अज्जऽवि निसामिउं जस्स । के के न होंति आणंद–बहलपुलयंऽचियसरीरा ॥२०॥
धीरा ते च्चिय जेसिं, संते वि मणवियारहेउम्मि । न वियारमेइ तग्गिह–गएण इति संसियं जेण ॥२१॥
सीहगुहामुहउस्सग्ग–कारिपमुहप्पहाणमुणिमज्झे । अइदुक्करदुक्करकार–गो त्ति जो भासिओ गुरुणा ॥२२॥
निम्मलसीलाऽऽणंदिय–मणाए नरनाहदिन्नपइपुरओ । उवकोसाए वि सभत्ति–पुव्वमुववूहिओ जो य ॥२३॥

'न दुक्करं अम्बयलुंबितोऽणं, न दुक्करं सिक्खिउ नच्चियाए ।
तं दुक्करं तं च महाऽणुभावं, जं सो मुणी पमयवणम्मि वुत्थो' ॥२४॥

इय कोमुइमयलंछण–सच्छहजसलच्छिमंडियजयस्स । जाया से दो सीसा, महागिरि तह सुहत्थी य ॥२५॥
ते वि तहाविहनिम्मल–गुणमणिनिहिणो विणिज्जियाऽणंगा । भव्वजणकुमुयबोहण–पयंडससिमंडलसमाणा ॥२६॥
चरणकरणाऽणुओग–प्पहाणसव्वाऽणुओगपरिहत्था । उच्छाइयबहलसमु–च्छलन्तमिच्छत्ततमपसरा ॥२७॥

1. तद्विमर्शार्थं = तत्परीक्षार्थम् । 2. तीए = अतीते = व्युच्छिन्ने । 3. पितृसत्कम् ।

उवलद्धसुद्धगुणमणि-खणिगणिपयपयडपसरियपयावा । भुवणजणपणयचरणा, चिरकालं विहरिया वसुहं ॥२८॥
अह सिस्सपसिस्साण वि, विहिपुव्वुयइट्ठसयलसुत्तऽत्थो । नियगणमऽप्पिउणं, महागिरी सिरिसुहत्थिस्स ॥२९॥
वुच्छिन्नं जिणकप्पं, मुणिऊण वि तदऽणुरूवपरिकम्मं । कुणमाणो सो विहरिउ-माऽऽरुद्धो गच्छनिस्साए ॥३०॥
विहरंतो य महप्पा, पाडलिपुत्तम्मि वरपुरम्मि गतो । भिक्खऽट्ठा य पविट्ठो, समुचियसमयम्मि उवउत्तो ॥३१॥
अह तत्थेव पुरम्मि, वत्थव्वेणं स सयणबोहऽत्थं । अज्जसुहत्थी वसुभूइ-सेट्ठिणा नियगिहे नीओ ॥३२॥
पारद्धा धम्मकहा, तेणाऽवि य तव्विबोहणनिमित्तं । एत्थंतरम्मि पत्तो, महागिरी तत्थ भिक्खऽट्ठा ॥३३॥
दट्ठुं सुहत्थिणा भाव-सारमऽब्भुट्ठिओ य स महप्पा । तो विम्हइयमणेणं, भणियं वसुभूइणा एवं ॥३४॥
भयवं! किं तुम्हाण वि, अन्ने विज्जंति सूरिणो गरुया । जं एवमिमस्स कया, अब्भुट्ठाणाऽऽइपडिवत्ती ॥३५॥
भणियं सुहत्थिणा भद्द! एस भयवं सुदुक्कराऽऽरंभे । अईए वि हु जिणकप्पे, तप्परिकम्मं इय करेइ ॥३६॥
उवसग्गवग्गसंसग्ग-निच्चलो उज्झियऽन्नभोई य । निच्चोलंबियहत्थो, धम्मज्झाणेक्कपडिबद्धो ॥३७॥
ससरीरे वि हु मुच्छा-विवज्जियो नियगणे वि अममत्तो । सुन्नहरसुसाणाऽऽइसु, विचित्तठाणोवठाई य ॥३८॥
इय एवमाऽऽइजिणकप्प-विसयपरिकम्मकारिणो तस्स । गुणसंथयं करित्ता, सूरी धम्मे य ठविऊणं ॥३९॥
वसुभूइसयणवग्गं, विणिग्गओ तग्गिहाओ अह सेट्ठी । भणइ नियपरियणं जइ, कहंपि एवंविहो साहू ॥४०॥
आगच्छेज्जा भिक्खऽट्ठ-मेत्थ उज्झंतगाणि ता तुब्भे । काऊणाऽसणपाणाऽऽई, तस्स देज्जह पयत्तेणं ॥४१॥
एवं दिन्नं हि बहु-फलं भवे इय परूविए संते । पत्तो महागिरी अन्न-वासरे भिक्खणट्ठाए ॥४२॥
वसुभूइदिन्नसिक्खाऽणु-रूवओ परियणं च दट्ठूणं । दाणऽट्ठमुवट्ठियमुज्झि-यऽन्नपाणप्पयारेण ॥४३॥
दव्वाऽऽइसु उवउत्तो, महागिरी मंदरो व्व गुरुसत्तो । जाणइ कयऽविरयणं, अगहियभिक्खो नियत्तइ य ॥४४॥
कहइ य सुहत्थिणोऽणेस-णा कया सो भणेइ नणु केण । तुमए मइ इंतम्मि, अब्भुट्ठाणं कुणंतेण ॥४५॥
अह ते दो वि समं चिय, वइदिसनयरिं गया विहारेण । जियपडिमं वंदित्ता, तत्थऽज्जमहागिरिमुणिंदो ॥४६॥
तत्तो विणिक्खमित्ता, गयग्गपयचंदणट्ठया चलितो । नयरम्मि एलगच्छे, तमेलगच्छं च जह जायं ॥४७॥

"एडकाक्षनगरोत्पत्तिवर्णनम्" —

तह भन्नइ किर पुव्वं, नामेण इमं दसन्नपुरमाऽऽसि । तत्थ य सुसाविया मिच्छ-दिट्ठिणो संतिया गिहिणी ॥४८॥
जिणधम्मनिच्चलमणा, पच्चक्खाणं पओससमयम्मि । कुणमाणी हीलाए, भणिया सा भत्तुणा एवं ॥४९॥
रयणीए मुद्धि! किं कोई, भोयणं कुणइ जेण संवरणं । एवं पइदियहं पि हु, निरऽत्थयं तं समायरसि ॥५०॥
जइ पुण अभुज्जमाणऽत्थ-पच्चक्खाणे वि होज्ज कोई गुणो । ता कहसु जेण अहमऽवि, पच्चक्खाणं करेमि त्ति॥५१॥
तीए पयंपियं अत्थि, चेव विनिवित्तिसंभवो सुगुणो । नवरं पच्चक्खाणे, घेत्तुं भग्गे महादोसो ॥५२॥
आ मुद्धि! निसिम्मि तए, दिट्ठो हं किं कयाइ जेमंतो । इय हीलाए जंपिय, पच्चक्खाणं कयं तेण ॥५३॥
अह तद्देसगयाए, विचिंतियं देवयाए एक्काए । हीलाकरस्स एयस्स, अज्ज फेडेमि दुव्विणयं ॥५४॥
तत्तो भगिणीरूवेण, दिव्वमोयग[1]पहेणयं घेत्तुं । देवी समागया से, पणामियं तीए तं भोज्जं ॥५५॥
सो भुंजिउमाऽऽरद्धो, पडिसिद्धो साविगाए तो भणइ । हो! होउ कयं तुह मुद्धि! कूडनियमेहिं मह इन्हिं ॥५६॥
आ पाव! जिणमयं पि हु, उवहससि विणट्ठसुहसमायार! । इइ जंपिरीए दढजाय-कोववसपाडलऽच्छीए ॥५७॥
तह देवयाए पहओ, मुहम्मि सो रयणिभोयणाऽऽसत्तो । जह अच्छिगोलगा दो वि, निवडिया तस्स भूवट्ठे ॥५८॥
अहह! मह अवजसो एस, होहिइ इय वियक्कजायभया । काउस्सग्गेण ठिया, जणपुरओ साविगा ताहे ॥५९॥
अह अड्ढरत्तसमए, समागया देवया इमं भणइ । किं सुमरियम्हि तीए, पयंपियं देवि! अवणेसु ॥६०॥
अयजसमिमं ति तक्खण-हणिज्जमाणेलगस्स अच्छीणि । अह घेत्तुं देवीए, तस्सऽच्छिजुयम्मि ठवियाणि ॥६१॥
जाए पभायसमए, सविम्हयं सयणनयरलोएण । भणियं चोज्जमिमं भो!, जाओ तं एलगऽच्छो त्ति ॥६२॥
एवं च एलगऽच्छो त्ति, सो पसिद्धिं गतो हु सव्वत्थ । तस्संबंधेण पुरं पि, एलगऽच्छं तओ जायं ॥६३॥
अह पुव्वऽभिहाणेणं, दसन्नकूडो त्ति विस्सुओ वि जए । स गयऽग्गपओ सेलो, जह जाओ तह परिकहेमि॥६४॥

1. पहेणयं = भोजनम् वा प्राभृतम्।

"दशार्णकूटस्य गजाग्रपदनामोत्पत्तिः" —

किर पुव्विं तत्थ पुरे, दसन्नभद्दो महानिवो आसि । तस्स य पंच सयाइं, सुरुवरमणीण [1]ओरोहो ॥६५॥
नियजोव्वणेण रुवेण, रायलच्छीए पयरसेणाए । पडिबद्धो सो सेसे, अवमन्नइ मेइणीवइणो ॥६६॥
अह एगम्मि अवसरे, दसन्नकूडे गिरिम्मि जगनाहो । सिरिवद्धमाणसामी, समोसढो आगया तियसा ॥६७॥
तह वंदिस्सामि जिणं, जह केणवि नेव वंदिओ पुव्विं । इइ गव्वमुव्वहंतो, सव्वविभूईए संजुत्तो ॥६८॥
चउरंगबलसणाहो, दसन्नभद्दो निवो गयाऽऽरुढो । अंतेउरपरियरिओ, गंतूणं वंदए नाहं ॥६९॥
अह तम्मणोगयकुवियप्प-मऽवगच्छिऊण सुरनाहो । अइरावणवयणे निम्म-वेइ अट्ठेव वरदसणे ॥७०॥
एक्केक्कम्मि य दसणे, विउव्वइ अट्ठ अट्ठ वावीओ । एक्केक्काए वावीए, तयऽणु अट्ठऽट्ठ पउमाइं ॥७१॥
पउमे पउमे पयराइं, अट्ठ पत्ताइं तत्थ एक्केक्के । पत्ते बत्तीसनिबद्ध-नाडयं निम्मवित्ताणं ॥७२॥
तत्थाऽऽरुढो संतो, अणेगसुरकोडिपरियुडो सामिं । तिपयाहिणिउं वंदइ, अच्छरियकरीए रिद्धीए ॥७३॥
इय रिद्धिजुयं सक्कं, दट्ठुं गयरिद्धिगारवो राया । पुव्विं अणेण धम्मो, कओ मए नो अहन्नेण ॥७४॥
ता संपयं पि तं उवचिणेमि, इइ चिंतिऊण तव्वेलं । पव्वज्जं पडियज्जइ, चेच्चा रज्जं महप्पा सो ॥७५॥
अह सक्कहत्थिणो तत्थ, पव्वए देवयाऽणुभावेण । अग्गपयाइं खुत्ताइं, टंकि उक्कीरियाणि व्व ॥७६॥
तो सो दसन्नकूडो, तप्पभिइं चिय समत्थलोयम्मि । पत्तो परं पसिद्धिं, गयऽग्गपयगो त्ति नामेण ॥७७॥
इय तत्थ गयऽग्गपए, भयवं स महागिरी समणसीहो । चिरसुचरियसामन्नो, निस्सामन्नं तवं काउं ॥७८॥
जहविहिभावियभावण-नियहो कयभत्तपच्चक्खाणो य । असुरसुरखयरमहिओ, मरिउं देवत्तमऽणुपत्तो ॥७९॥
एवं सव्वेणं चिय, भववासविणासमऽभिलसंतेण । सुपसत्थभावणासुं, पमायविरहेण जइयव्वं ॥८०॥
इय चउकसायभयभंजणीए, संवेगरंगसालाए । आराहणाए मूलिल्ल-यम्मि परिकम्मविहिदारे ॥८१॥
पत्थुयपन्नरसण्हं, पडिदाराणं, कमाऽणुसारेणं । भणियमिमं चोद्दसमं, भावणविसयं पडिद्दारं ॥८२॥
सुपसत्थभावणाभावगो वि, नाऽऽराहणं खमइ काउं । जेण विणा तं भन्नइ, एत्तो संलेहणादारं ॥८३॥
अहवा सव्वेसुं पि हु, अरिहाऽऽइसु पुव्वभणियदारेसु । परिकम्ममेव पगयं, तं च भवे भावसुद्धीए ॥८४॥
भावविसुद्धी उ हवेज्ज, तिव्वरागाऽऽइवासणाविगमे । तव्विगमो पुण मोहो-दयस्स विद्धंसभावम्मि ॥८५॥
तव्विद्धंसो पाएण, देहधाऊणमऽवचयवसेण । तदऽवचओ पुण जायइ, विचित्ततवसेवणाऽऽईहिं ॥८६॥
तवसेवणं पि संले-हणाऽणुगं होइ पत्थुयऽत्थकरं । ता एत्तो वित्थरओ, भन्नइ संलेहणादारं ॥८७॥

"संलेखनाद्वारम्" —

संलेहणा य एत्थं, तवकिरिया जिणवरेहिं पन्नत्ता । जं तीए संलिहिज्जइ, देहकसायाऽऽइ नियमेण ॥८८॥
ओहेणं सव्वा चिय, तवकिरिया जइ वि एरिसी होइ । तह वि य इमा विसिट्ठा, घेप्पइ जा चरिमकालम्मि ॥८९॥
एसा हि सुदीहरदुप्प-सज्झवाहिम्मि अहव उवसग्गे । चारित्तथणविणासण-करम्मि वा कारणम्मि परे ॥९०॥
सोइंदियाऽऽइविगलत्त-संभवे अहव तिक्खदुब्भिक्खे । कायव्वा धीरेणं, समणेणं सावएणं च ॥९१॥
जओ—
परिवालिऊण विमलं, सावगधम्मं सुदीहरं कालं । आगमविहीए काउं, सम्मं संलेहणं अंते ॥९२॥
आराहिउग्गकिरिया, इह आणंदाऽऽइणो महासत्ता । पत्ता कमेण परमं, कल्लाणपरंपरमुयारं ॥९३॥
तह आदिक्खाउ च्चिय, चिरं पि चरिऊण दुच्चरं चरणं । आजम्मं तं दित्तं, तवं च तविउं महापुरिसा ॥९४॥
अंते विसेससंले-हणाए संलिहियदव्वभावा य । कालं काउं सुव्वंति, पुव्वरिसिणो वि सिद्धिगया ॥९५॥
तित्थयरा वि हु तइलोक्क-तिलयभूया वि विबुहमहिया वि । अप्पडिहयनिम्मलनाण-किरणउज्जोवियजया वि ॥९६॥
सिरिरिसहसामिपमुहा, जेहि वि किर सिज्झियव्वयमऽवस्सं । ते वि विसेसतवपरा, अंते जाया किर तहाहि ॥९७॥
[2]निव्वाणमेत्तकिरिया, सा चोद्दसमेण पढमनाहस्स । सेसाणं मासिएणं, वीरजिणिंदस्स छट्ठेणं ॥९८॥
तप्पक्खवाइणो ता, ताण कमेणेव भविउकामस्स । भवभीयरसऽन्नस्स वि, जुत्ता संलेहेणा काउं ॥९९॥

1. ओरोहो = अवरोधः = अन्तःपुरम् । 2. निव्वाणमन्तकिरिया = निर्वाणम् = अन्तक्रिया = मोक्षः B ।

किंतु विणा तवकम्मं, पायं नो झत्ति उज्झइ देहो । चियमंससोणियत्तं, ता कायव्वं इमं पढमं ॥४०००॥
चियमंससोणियस्स हि, असुहपवित्तीए कारणमऽवंझं । संजायइ मोहुदओ, सहकारिविसेसजोगेण ॥१॥
सइ तम्मि विवेगी वि हु, साहेइ न नियमओ अहिगयऽट्ठं । किं पुण विवेयवियलो, अदीहदरिसी अतवसेवी॥२॥
ता जह न देहपीडा, न याऽवि चियमंससोणियत्तं तु । जह धम्मझाणवुड्ढी, तहेव संलेहणं कुज्जा ॥३॥
एसा य दुविहभेया, उक्कोसा तह भवे जहन्ना य । उक्कोसा वरिसबारस-छम्मासे जाव य जहन्ना ॥४॥
अहवा वि दव्वओ भावओ य, संलेहणा दुहा तत्थ । दव्वे सरीरगस्सा, भावे इंदियकसायाणं ॥५॥
तत्थ य जा उक्कोसा, बारसवरिसाइं कालओ भणिया । सा दव्वओ पवुच्चइ, सुत्तऽणुसारेण इय किंपि ॥६॥
विविहाऽभिग्गहसंगय-चउत्थछट्ठऽट्ठमाऽऽइविविहतवं । काऊण सव्वकाम-ग्गुणिएणं चेव पारेंतो ॥७॥
पढमं वासचउक्कं, गमेइ खमगो पुणो वि चत्तारि । सुविचित्ततवोजुत्ताइं, नवरि भुंजइ न सो विगइं ॥८॥
एगंऽतरिओवासा-ऽऽयंबिलपारणगविहिसणाहाइं । तवइ वरिसाइं दोन्नि, इय वरिसाइं दस गयाइं ॥९॥
अह एक्कारसवच्छर-छम्मासे आइमे तवं काउं । नाऽइविगिट्ठं परिमिय-माऽऽयामेणं च भुंजेइ ॥१०॥
अन्तिमछम्मासे पुण, अट्ठमदसमाऽऽइतवविहिं काउं । आयामेण जहिच्छं, भुंजइ तणुधारणट्ठाए ॥११॥
एवं एक्कारसवच्छराणि, गमिऊण बारसमवरिसं । कोडीसहियाऽऽयंबिल-तवकरणेणं समाणेइ ॥१२॥
नवरं बारसमस्सा वरिसस्स उ अन्तिमम्मि चउमासे । एगंऽतरियं सुचिरं, धारेज्जा तेल्लगंडूसं ॥१३॥
तं छारमल्लगे प-क्खिवित्तु, धोवेज्ज आणणं तत्तो । किं पुण एत्थ निमित्तं, भन्नइ वाएण मा वयणं ॥१४॥
संमिल्लेज्जा तस्स उ, एवं च कयम्मि मरणसमए वि । उच्चरइ नमोक्कारं, सयं अजत्तेण स महप्पा ॥१५॥
एसुक्कोसा संले-हणा मए दव्वओ समक्खाया । छ-च्चउम्मासाऽऽइया, एस च्चिय भन्नइ जहन्ना ॥१६॥
सविसयपसत्तइंदिय-कसायजोगाण निग्गहणरूवा । एसा उ भावसंले-हणेह नाणीहिं उवइट्ठा ॥१७॥
इय ताव विसेसविहिं, पडुच्च संलेहणा विणिद्दिट्ठा । चिन्नियसामन्नेणं, एवं चिय अणसणाऽऽईहिं ॥१८॥
अणसण[1] मूणोयरिया[2], वित्तीसंखेवणं[3] रसच्चाओ[4] । कायकिलेसो[5] सेज्जा, विवित्तसंलीणयाऽऽई[6] य ॥१९॥
देसे सव्वेऽणसणं, सव्वाऽणसणं भणंति भवचरिमं । देसे चउत्थमाऽऽई, जहसत्तीए कुणइ एसो ॥२०॥
ऊणोयरिया दुविहा, दव्वे भावे य तत्थ दव्वम्मि । उवगरणभत्तपाणे, सा उवगरणे जिणाऽऽईणं ॥२१॥
जिणकप्पऽब्भासीण य, न उ अन्नेसिं पि संजमाऽभावा । अइरित्तपरिच्चाया, सव्वेसिं वा जओ भणियं ॥२२॥
जं वट्टइ उवयारे, उवगरणं तं खु होइ नायव्वं । अइरेगं अहिगरणं, अजओ अजयं परिहरंतो ॥२३॥
तहा—
बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणितो । पुरिसस्स महिलियाए, अट्ठावीसं भवे कवला ॥२४॥
कवलाण उ परिमाणं, कुक्कुडिअंडयपमाणमेत्तं तु । जं वा अविगियवयणो, वयणम्मि छुहेज्ज वीसत्थो ॥२५॥
एवं ववत्थियम्मि, ऊणोयरिया उ भत्तपाणेसु । जिणगणहरपन्नत्ता, अप्पाऽऽहाराऽऽइपंचविहा ॥२६॥
अप्पाऽऽहार-अवड्ढा, दूभागपत्ता तहेव किंचूणा । अट्ठदुवालससोलस-चउवीस तहेक्कतीसा य ॥२७॥
अहवा—
एगाऽऽइकवलहाणी, नियगाऽऽहाराउ ताव जा कवलं । कवलऽद्धमेगसित्थं, ऊणोयरिया इमा दव्वे ॥२८॥
कोहाऽऽईणमऽणुदिणं, चाओ जिणवयणभावणाए उ । भावेणोमोयरिया पन्नत्ता, वीयरागेहिं ॥२९॥
वित्तीसंखेवो पुण, गोयरकालम्मि दत्तिभिक्खाण । जं परिमाणं पिंडे-सणाण पाणेसणाणं च ॥३०॥
अहवा पइदिवसं सो, [1]चित्ताऽभिग्गहपरिग्गहणरूवो । ते पुण दव्वे खेत्ते, काले भावे य नायव्वा ॥३१॥
तत्थ—
लेवडमऽलेवडं वा, अमुगं दव्वं व अज्ज [2]घेच्छामि । अमुगेण य दव्वेणं, अह दव्वाऽभिग्गहो नाम ॥३२॥
तहा—
अट्ठ उ गोयरभूमी, एलुगविक्खंभमेत्तगहणं च । सग्गामपरग्गामे, एवइयघराउ खेत्तम्मि ॥३३॥

1. चित्त० = चित्र = विविध० । 2. घेच्छामि = ग्रहीष्यामि ।

उज्जुयगंतुं पच्चाऽऽगई य, गोमुत्तिया पयंगविही । पेडा य अद्धपेडा, अब्भिन्तरबाहिसंबुक्का ॥३४॥
काले अभिग्गहो पुण, आई मज्झे तहेव अवसाणे । अप्पत्ते सइ काले, आई बी मज्झि तइयंऽते ॥३५॥
दिंतगपडिच्छगाणं, हवेज्ज सुहुमं पि मा हु अचियत्तं । इइ अप्पत्त अईए, पवत्तणं मा य तो मज्झे ॥३६॥
उक्खित्तमाऽऽइचरगा, भावजुया खलु अभिग्गहा होंति । गायं तो य रुयंतो, जं देइ निसन्नमाऽऽई वा ॥३७॥
ओसक्कणअहिसक्कण-परंमुहाऽलंकिएयरो वा वि । भावऽन्नयरेण जुओ, अह भावाऽभिग्गहो नाम ॥३८॥
खीराऽऽईरसो विगई, तासिं चाओ उ होइ परिहारो । संथरओ जं ताओ, दुग्गइमूलाउ भणियाउ ॥३९॥
चत्तारि महाविगईओ, होंति नवणीयमंसमहुमज्जं । कंखापसंगदप्पा-ऽसंजमकारीउ एयाउ ॥४०॥
आणाऽभिकंखिणाऽवज्ज-भीरुणा तवसमाहिकामेण । ताओ जावज्जीवं, [1]निज्जूढाओ पुरा चेवं ॥४१॥
खीरदहिसप्पितेल्लं, गुलो य ओगाहिमं च जहसत्तिं । निज्जूहइ अन्नाणि वि, सो लोणपलंडुमाऽऽईणि ॥४२॥
विगतिपरिणतिधम्मो, मोहो जमुदिज्जए उइन्ने य । सुट्ठु वि चित्तजयपरो, कहं अकज्जे न वट्टिहिइ ॥४३॥
दावाऽनलमज्झगतो, को तदुवसमऽट्ठयाए जलमाऽऽई । संते वि न सेवेज्जा, मोहाऽनलदीविएसुयमा ॥४४॥
अणुसूरं पडिसूरं च, उड्ढसूरं च तिरियसूरं च । समपायमेगपायं, गद्धोलीणाऽऽइठाणाइं ॥४५॥
वीराऽऽसण-पलियंकं, समपुय-गोदोहिया य उक्कुडुयं । दंडाऽऽयय-उत्ताणय-ओमंथ-लगंडसयणाऽऽई ॥४६॥
मगरमुहहत्थिसुंडी-उड्ढसइत्तेगपाससाइत्ते । तणकलगसिलाभूमी-सयणाणि निसाअसाइत्तं ॥४७॥
अण्हाणमऽणुव्वट्टण-मऽकायकंडुयणकेसलोय च । कायकिलेसो एसो, सीओण्हाऽऽयावणाऽऽई य ॥४८॥
दुक्खसहत्तमिह गुणा, कायनिरोहो दया य जीवेसु । परलोयमई य तहा, बहुमाणो चेव अन्नेसिं ॥४९॥
एत्तोऽणंततरगुणा, कट्ठाओ वेयणाओ नरएसु । [2]अवसेहिं सहिज्जंती, तदवेक्खाए किमिह कट्ठं ॥५०॥
इय भावणयसपाउ-ब्भवंतसंवेगपयरिसगुणाण । कायकिलेसो संसार-वासनिव्वेय-रसभवणं ॥५१॥
तरुमूलाऽऽरामुज्जाण-गिरिगुहाऽऽसम-पवा-मसाणेसुं । सुन्नघर-देउलेसु य, जाइयपरदिन्नगेहेसु ॥५२॥
उग्गमउप्पायण-एसणाहिं परिसुद्धिया अओ चेव । अकया अकारियाऽणणु-मया य मूलाऽवसाणेसु ॥५३॥
इत्थिनपुंसगपसुवज्जिया य, सीया व होज्ज उसिणा वा । उच्चावया व समविसम-भूमिगा वा वि बहिरंऽतो ॥५४॥
भद्दयपावयसद्दाऽऽइएहिं, जीए विसोत्तिया णऽत्थि । सज्झायझाणविग्घं व, नऽत्थि सेज्जा विवित्ता सा ॥५५॥
एवंविहसेज्जाए, जम्हा पायं न संभवंती वि । सपरोभयसंजणिया, रागद्दोसाऽऽइया दोसा ॥५६॥
सेज्जाए अणुगुणाए वि, संठिओ भावएज्ज अप्पाणं संलीणयाए सम्म, निग्गिन्हिय इंदियाऽऽईणि ॥५७॥
सो नऽत्थि इंदियऽत्थो, निच्चमऽतित्ताणि जमऽणुभविऊण । जंतिन्दियाणि तित्तिं, नाणाविहविसयरसियाणि ॥५८॥
एक्केक्को य इमेसिं, विसयाण विसोवमाण हणणखमो । खेमं पुण तस्स कहं, पंच वि जो सेवए जुगवं ॥५९॥
जह किर दुद्दंतेहिं, तुरएहिं रणंऽगणम्मि सारहिणो । विणडिज्जंति तह इहं, परत्थ वि इंदिएहिं पि ॥६०॥
अन्ने वि बहुविहा इह, मुक्कमहापुरिससेवियकमाण । इंदियनिग्गहरहियाण, होंति दुहदारुणा दोसा ॥६१॥
एमाऽऽइदुहविवागं, सम्मं परिभाविउं नियमईए । विसयरसिइंदियाणं, धीरो संलीणयं कुज्जा ॥६२॥
सा पुण तेसिं इट्ठे-यरेसु विसएसु सम्मभावेणं । रागद्दोसपसज्जण-धज्जणरूवा मुणेयव्वा ॥६३॥
अवि य—
सोच्चा दट्ठुं भोतुण, जिंघिउं फासिऊण तह विसए । जस्स न रई न अरई, इदियसंलीणया तस्स ॥६४॥
ता गुविलविसयरण्णे, अणिबद्धमिओ तओ य वियरंतं । नाणंऽकुसेण कुज्जा, अप्पवसं इंदियगइंदं ॥६५॥
इय धीबलेण धीरो, दमेज्ज मणकुंजरं पि तह कहवि । जह निज्जियपडिवक्खो, गिण्हेज्जाऽऽराहणपडायं ॥६६॥
एवं कसायजोगे, निरुद्धपसरेऽरिणो व्व कुणमाणो । जणइ च्चिय तग्गोयर-मऽणहं संलीणयं धीमं (धणियं) ॥६७॥
संलीणयं उवगतो, पसत्थजोगेहिं सुप्पउत्तेहिं । पंचसमिओ तिगुत्तो, [3]आयऽट्ठपरायणो होइ ॥६८॥
जं निज्जरेइ कम्मं, असंवुडो सुमहया वि कालेणं । तं संवुडो तवस्सी, खवेइ अंतोमुहुत्तेणं ॥६९॥

1. निर्यूढाः = त्यक्ताः । 2. अवशैः = परवशैः । 3. आयट्ठ० = आत्मार्थ० ।

तवमऽवि तं कुज्जा सो, जेण मणो मंगुलं ण चिंतेइ । जेण य न जोगहाणी, मणनिव्वाणी य होइ जओ ॥७०॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं मुणिऊण धाउणो य तहा । कुज्जा तवं जहा वाय-पित्तसिंभा न खुब्भंति ॥७१॥
इहरा उग्गमउप्पा-यणेसणासुद्धभत्तपाणेण । मियलहुयविरसलुक्काऽऽ-इणा वि [1]जावेज्ज अप्पाणं ॥७२॥
अणुपुव्वेणाऽऽहारं, संवट्टिंतो य संलिहे देहं । आयंबिलं तु तहियं, समयविऊ बिंति उक्कोसं ॥७३॥
अप्पाऽऽहारस्स न इंदियाइं, विसएसु संपयट्टंति । नेव किलिम्मइ तवसा, रसिएसु न सज्जए वा वि ॥७४॥
किं बहुणा एक्केक्कं, तह [2]असइं सो तवं समऽब्भसइ । जह तेण करिसियस्स वि, न जायए कहवि असमाही॥७५॥
एवं सरीरसंले-हणाविहिं बहुविहं पि फासंतो । अज्झवसाणविसुद्धिं, खणं पि खवओ न मुंचेज्जा ॥७६॥
अज्झवसाणविसुद्धीए, वज्जिओ जो तवं विगिट्ठं पि । कुणइ न जायइ जम्हा, सुद्धि च्चिय तस्स कइया वि॥७७॥
अविगिट्ठं पि तवं जो, करेइ सुविसुद्धसुक्कलेसागो । अज्झवसाणविसुद्धो, सो पावइ केवलं सुद्धिं ॥७८॥
अज्झवसाणविसुद्धी, कसायकलुसीकयस्स य न अत्थि । ता तस्स सुद्धिहेउं, संलिहइ दढं कसायकलिं ॥७९॥
कोहं खमाए माणं च, मद्दवेणऽज्जवेण मायं च । संतोसेण य लोभं, संलिहइ लहुं लहुब्भूओ (लहूभूओ)॥८०॥
कोहस्स य माणस्स य, मायालोभाण सो न एइ वसं । जो ताणं मूलाओ, उप्पत्तिं चेव वज्जेइ ॥८१॥
तं वत्थुं मोत्तव्वं, जं पइ उप्पज्जए कसायऽग्गी । तं वत्थुमाऽऽयरेज्जा, जेण कसाया न उट्ठिंति ॥८२॥
जं अज्जियं चरित्तं, देसूणाए वि पुव्वकोडीए । तं पि कसाइयमेत्तो, हारेइ नरो मुहुत्तेण ॥८३॥
जलिओ हि कसायऽग्गी, चरित्तसारं डहेज्ज कसिणं पि । संमत्तं पि विराहिय, अणंतसंसारियं कुज्जा ॥८४॥
धन्नाणं खु कसाया, [3]जगडिज्जंता वि परकसाएहिं । न चयंति उट्ठिउं जे, सुनिविट्ठो पंगुलो चेव ॥८५॥
जइ जलइ जलउ लोए, कुसत्थपवणाऽऽहतो कसायऽग्गी । तं चोज्जं जं जिणवयण-सलिलसित्तो वि पज्जलइ॥८६॥
कलुसफलेण न जुज्जइ, किं चोज्जं जं इह हं विगयरागो । संते वि जो कसाए, निगिण्हइ सो वि तत्तुल्लो॥८७॥
रूवं उच्चं गोयं, अविसंवाओ सुहो य लाभो त्ति । कोहाऽऽइनिग्गहाणं, फलं कमेणुत्तमं नेयं ॥८८॥
ता उप्पज्जंतो च्चिय, कसायदावाऽनलो लहुं चेव । इच्छामिच्छाउक्कड-जलेण विज्झावणिज्जो हु ॥८९॥
तह चेव नोकसाया, संलिहियव्वा परेणुवसमेणं । संनाओ गारवाणि य, तह लेसाओ असुद्धाओ ॥९०॥
परिवट्टिओवहाणो, वियडसिरान्हारुपंसुलिकडाहो । संलिहियकसाओ वि य, दुविहं संलेहणमुवेइ ॥९१॥
एवं सम्मं कयदव्व-भावपरिकम्मविहिसमाओगो । संलिहियऽप्पा पाउणइ, चेव आराहणपडागं ॥९२॥
जो पुण इयविहिविपरीय-करणओ नियमईए वट्टेज्जा । आराहगो न सो होज्ज, गंगदत्तो व्व पज्जंते ॥९३॥
तथाहि—

"गङ्गदत्तस्य दृष्टान्तः"

पुरनगरनिगमसंकुल-कुलगिरिगुरुदेवभवणरमणिज्जे । वच्छाविसए नयरं, जयवद्धणमाऽऽसि सुपसिद्धं ॥९४॥
सिद्धंतपसिद्धविसुद्धधम्म-कम्मेक्कबद्धपडिबंधो । बंधुपिओ नाम तहिं, अहेसि [4]सिट्ठी नयविसिट्ठो ॥९५॥
सिट्ठाऽणुमओ पुत्तो य, गंगदत्तो त्ति तस्स सुविणीतो । सो य कमेणऽणुपत्तो, तारुण्णं तरुणिमणहरणं ॥९६॥
तं च तहाविहमऽवलोइऊण, पिउणा सयंभुनामस्स! वणिणो धूया वरिया, वीवाहऽट्ठं पहिट्ठेणं ॥९७॥
अह सुपसत्थे हत्थग्गहस्स, जोग्गम्मि तिहिमुहुत्तम्मि । सा हरिसमुवगएणं, उव्वूढा गंगदत्तेणं ॥९८॥
नवरं जव्वेलं चिय, तीसे सो पाणिपल्लवे लग्गो । तव्वेलं चिय तीए, वियंभिओ दुस्सहो दाहो ॥९९॥
किं हुयवहेण आलिंगियम्हि, सित्तम्हि किं विसरसेण । इति चिंतंती पल्हत्थ-वामहत्थाऽऽणणा विमणा ॥४१००॥
अच्छिन्नमऽच्छिपुडसं-घडंतबाहच्छडा वलियगीवा । निहुयं परिदेवंती, सयंभुणा एवमुल्लविया ॥१॥
वच्छे! हरिसट्ठाणे वि, कीस संतावमेवमुव्वहसि । पहसिरवयणा जं सहि-जणं पि नाऽऽलवसि सप्पणयं ॥२॥
किंच न पेच्छसि तुह [5]छणए, लोयणाऽऽणंदनिब्भरमणस्स । सविलासगीयनट्टाइं, सयणलोयस्स पुत्ति! तुमं ॥३॥
ता कुण सरलं गीवा-मुणालमऽवणेहि नयणजलकणियं । सच्छायं मुहलच्छिं, पयडेहि विमुंच सोगमिमं ॥४॥
अह अत्थि गाढतरसोग-कारणं किंपि ता तमऽविसंकं । फुडवयणेहिं साहेहि, जेण अवणिज्जए सज्जो ॥५॥

1. जावेज्ज=निर्वाहयेत्। 2. असइं=असकृत् = पुनः पुनः इत्यर्थः। 3. जगडिज्जंता = उत्थाव्यमानाः=उत्पन्न कराता। 4. सिट्ठी=श्रेष्ठी। 5. क्षणके=उत्सवे।

तीए पयंपियं ताय! इण्हिं किमऽईययत्थुकहणेण । नक्खत्तमग्गणा मुं-डिए सिरे कं गुणं कुणइ ॥६॥
भणियं सयंभुणा पुत्ति!, तहवि साहेहि एत्थ परमत्थं । तो तीए सव्वो वि य, वरवुत्तंतो समाऽऽइट्ठो ॥७॥
सोऊण तं च वज्जाऽऽ-हओ व्व अवहरियगेहसारो व्व । [1]मसिसलिलोहलिओ इव, सो विच्छायत्तमऽणुपत्तो॥८॥
वित्तो य वियाहविही, सयणजणो वि य गओ सगेहेसु । अह अवरयासरम्मि, ससुरगिहे निज्जमाणीए ॥९॥
अच्चंतदइयदोहग्ग-खग्गनिब्भिज्जमाणहिययाए । अन्नं मोक्खोवायं, थेवं पि अपेच्छमाणीए ॥१०॥
पासायसिहरमाऽऽरुहिय, तीए मरणऽट्टया लहु विमुक्को । अप्पा निवडियमेत्ता य, सा गया झत्ति पंचत्तं ॥११॥
मिलिया अम्मापिउणो, सयणजणो वि य समागतो तुरियं । विहिओ य से समग्गो, सरीरसक्कारपमुहविही ॥१२॥
तम्मरणनिमित्तं पि य, सव्वत्थ पुरम्मि तत्थ वित्थरियं । नियदोहग्गेण दढं च, लज्जिओ गंगदत्तो वि ॥१३॥
नवरं पिउणा भणिओ, मा वच्छ! विसायमेत्थ थेवं पि । काहिसि तहा जइस्सं, जह अवरा होज्ज तुह भज्जा॥१४॥
अह कहवि दूरपुरवासि-वणियधूयं पुणो वि सो तेण । परिणाविओ तहाविह-पभूयतरदव्ववियिणिओगा ॥१५॥
सा वि तहच्चिय हत्थ-ग्गहाओ उड्ढं गया परमसोगं । तग्गिहगमणाऽवसरे, नवरं उल्लंबणेण मया ॥१६॥
तो सव्वत्थ वि देसे, दुस्सहदोहग्गदूसणं पत्तो । सोगभरविहुरियंऽगो य, गंगदत्तो विचिंतेइ ॥१७॥
किं पुव्वभवेसु मए, पावं पावेणुवज्जियं गरुयं । जस्स पभावेणेवं, भवामि [2]वेसोऽहमित्थीणं ॥१८॥
धन्ना भयवंतो ते, सणंकुमाराऽऽइणो महासत्ता । दढपणयसालिणं पि हु, तत्तियमंऽतेउरं मोत्तुं ॥१९॥
लग्गा संजममग्गे, अहं तु निब्भग्गवग्गवग्गू[3] वि । दोहग्गवमित्थीणं, सुमिणे वि अपत्थणिज्जो य ॥२०॥
मिगपोयगो व्व मायण्हियाए, निव्विसयविसयतण्हाए । विणडिज्जामि हयाऽऽसाए, अहह! एत्तो सुहं कत्तो ॥२१॥
इय जाव सो विचिंतइ, ताव पिया से समाऽऽगओ भणइ । वच्छ! परिच्चय सोगं, निरत्थयं कुणसु कायव्वं॥२२॥
चिरभवपरंपरोवज्जियाण, पावाण विलसियं एयं । वयणिज्जमेत्थ कस्स वि, परमऽत्थेणं अओ नत्थि ॥२३॥
ता एहि पुत्त! जामो, भयवं गुणसायरो इहं सूरी । सुव्वइ समोसढो तं च, वंदिमो नाणरयणनिहिं ॥२४॥
पडिवन्नं तेण ततो, सूरिसमीवे गया विणयपुव्वं । वंदित्तु तं निसन्ना, संनिहियम्मि धरावट्टे ॥२५॥
सूरी वि दिव्वनाणो-वओगविन्नायसव्वनायव्वो । अक्खेवणिविक्खेवणि-सरूवमऽह कहइ धम्मकहं ॥२६॥
अह पत्थावं उवलब्भ, गंगदत्तेण पुच्छिओ सूरी । भयवं! पुरा मए किं?, दोहग्गकरं कयं कम्मं ॥२७॥
जेणेह भवे परमं, विद्देसं पाविओ म्हि जुवईण । इति तेण पुच्छियम्मि, भणइ गुरु भो! निसामेहि ॥२८॥
नयरम्मि सयदुवारे, रन्नो सिरिसेहरस्स तं भज्जा । अच्चंतवल्लहा आसि, गाढकामाऽणुबंधा य ॥२९॥
तस्स य रन्नो निम्मेर-रूवलायन्नमणहरंऽगीण । भज्जाणमऽणूणाइं, हुन्ताणि सयाणि किर पंच ॥३०॥
ताणि य तुमए विद्देसणाऽऽइ-बहुकूडमंततंतेहिं । हणियाणि जहिच्छमऽविग्घ-मवणियइरमणवंछाए ॥३१॥
समुवज्जिउं च वज्जं व, दारुणं भूरिपावसंभारं । तप्पच्चयं च अच्चंत-दुग्गदोहग्गकम्मं पि ॥३२॥
पज्जन्ते य सुदुस्सह-सासाऽऽइपभूयपवलरोगेहिं । मरिऊण नरयतिरिएसु, णेगसो सहिय दुक्खाइं ॥३३॥
कहकहवि कम्मलाघव-वसेण एत्थोवलद्धमणुयत्तो । पुव्वकयपावदोसेण, इण्हि दोहग्गमऽणुहवसि ॥३४॥
एव सोच्चा संजाय-धम्मसद्धो भवाउ उव्विग्गो । आपुच्छिऊण पियरं, सो पव्वज्जं पवज्जित्ता ॥३५॥
गामाऽऽगरनगरेसुं, विहरइ वाउ व्व चत्तपडिबंधो । गुरुकुलवासोवगतो, सुत्तऽत्थविभावणुज्जुत्तो ॥३६॥
अह केत्तियं पि कालं, पव्वज्जं निक्कलंकमणुचरिउं । भत्तपरिन्नाविहिणा, उवट्ठिओ अणसणं काउं ॥३७॥
भणिओ थेरेहिं तओ, अहो महाभाग! अणुचियमिमं ते । उवचियसोणियमंसस्स, अणसणं एत्थ पत्थावे ॥३८॥
चत्तारि विचित्ताइं, विगईनिजूहियाइं चत्तारि । इच्चाऽऽइणा कमेणं, तम्हा संलेहणं कुणसु ॥३९॥
संलिहियदव्वभावो, पच्छाऽणुट्ठेज्ज वंछियऽत्थंपि । इहरा विसोत्तिया वि हु, भवेज्ज बहुविग्घमिममाऽऽहु ॥४०॥
इय पन्नविओ वि बहुं, तग्गिरमऽवगन्निऊण सच्छंदो । घेत्तूण अणसणं गिरि-सिलायले सो निसन्नो त्ति ॥४१॥
अह तस्स तहा झाण-ट्ठियस्स पडिरुद्धदुट्ठजोगस्स । अणसणगयस्स जं किर, वित्तं तं संपइ सुणेह ॥४२॥

1. मषीसलिलावलितः । 2. वेसो = द्वेष्यः 3. वग्गू = अग्रेसरः ।

तावििच्छगुच्छसच्छह-सुकंतकुंतलकलायकलियाहिं । छणमयलंछणसच्छह-मुहजोन्हाधवलियदिसाहिं ॥४३॥
निम्मलमऊहमुत्ताकलाव-रेहंतथोरथणयाहिं । सुसिलिट्ठलट्ठमणिकंचि-दामसोहंतरमणीहिं ॥४४॥
वट्टाऽणुपुव्वरंभा-ऽभिरामदिप्पंतजंघजुयलाहिं । चरणपरिलग्गरणझणिर-मंजुमंजीररम्माहिं ॥४५॥
अच्चंतविचित्तमहग्घमुल्ल-दोगुल्लवरनियत्थाहिं । मंदारकुसुमपरिमल-मिलंतभसलोलिसामाहिं ॥४६॥
सुंदेरमणहराहिं, तरुणीहिं परिगतो अणेगाहिं । विज्जाहररायसुओ, अणंगकेऊ त्ति सुपसिद्धो ॥४७॥
सिद्धाऽऽययणाइं वंदिऊण, सगिहं पडुच्च वच्चंतो । मुणिमऽणसणट्ठियं जाणि-ऊण भूमितलमोइन्नो ॥४८॥
तो गंगदत्तमऽइभूरि-भत्तिभरनिस्सरंतरोमंचो । सुचिरं थुणिऊण गतो, रामाजणपरियुडो सपुरं ॥४९॥
साहू वि तस्स सोहग्ग-मुग्गमऽबलामणोहरणदक्खं । दट्ठुं पडिभग्गमणो चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥५०॥
एस महप्पा एवं, विलासिणीसत्थपरिगओ ललइ । अहयं तु पावकम्मो, तह तइया ताहिं परिभूओ ॥५१॥
ता धी! निरत्थयं मज्झ, जीवियं दुट्ठु माणुसं जम्मं । निरुवहयंऽगो वि तहा, विडंबणं जोऽणुपत्तो म्हि ॥५२॥
इय कुवियप्पवसगतो, सो जंपइ जइ इमस्स फलमऽत्थि । सामन्नस्स तया हं, इमो व्व होज्जामि परजम्मे ॥५३॥
एवं नियाणबंधं, काऊण मओ महिंदकप्पम्मि । उववन्नो पवरसुरो, तत्थ य विसए निसेवित्ता ॥५४॥
आउगविगमम्मि चुओ, उववन्नो भूमितिलयभूयाए । उज्जेणीए पुरीए, रन्नो सिरिसमरसीहस्स ॥५५॥
भज्जाए सोमनामाए पुत्तभावेण पवरसुमिणेहिं । कयसूओ नीरोओ, समुचियसमए पसूओ य ॥५६॥
विहियं वद्धावणयं पत्थावे ठावियं च से नामं । रणसूरो त्ति कमेणं, तारुन्नं पवरमऽणुपत्तो ॥५७॥
अह पुव्वऽज्जियनिरवग्ग-हुग्गसोहग्गसंगतो जत्थ । सो भमइ तत्थ जुवईण, तम्मि निक्खित्तचक्खूण ॥५८॥
मयणवसविहियबहुहाव-भावविब्भमविलासलीलाण । अवहत्थियलज्जाणं, अवरे विरमंति वावारा ॥५९॥
राइसरसेणावइ-महिब्भसामंतमंतिधूयाहिं । एसोऽम्ह पई अहवा वि, हुयवहो इइ वयंतीहिं ॥६०॥
उव्वूढो गाढपरूढ-पणयसाराहिं ताहिं समगं च । पंचविहविसयसोक्खं, अणुभुंजइ दीहरं कालं ॥६१॥
मरिउं च भवुत्थसुतिक्ख-दुक्खलक्खाण भायणं भूओ । नियदुव्विलसियवसओ, चिरकालं गंगदत्तो त्ति ॥६२॥
एएण कारणेणं, वुच्चइ संलेहणं दुविहरूवं । काउं पुव्वं पच्छा, भत्तपरिन्नं अणुट्ठेज्जा ॥६३॥
एवं कयपरिकम्मस्स, पायसो नो विसोत्तिया होइ । आराहिज्जइ सम्मं, एवं चिय जिणवराऽऽणा वि ॥६४॥
इय सिरिजिणचन्दमुणिन्द-रइयसंवेगरंगसालाए । परिकम्मविहीपामोक्ख-चउमहामूलदाराए ॥६५॥
आराहणाए पनरस-पडिदारमयस्स पढमदारस्स । परिकम्मविहीनामस्स, दंसियं चरमपडिदारं ॥६६॥
तद्दंसणाओ पनरस-पडिदारमयं पदंसियं सम्मं । परिकम्मविहीनामग-मेयं पढमं महादारं ॥६७॥
संवेगरंगसालाऽऽराहणाए, पनरसपडिदारपडिबद्धं । परिकम्मविहीनामगं पढमदारं समत्तं ति ॥६८॥

॥ प्रथमद्वारम् समाप्तः ॥

"परगणसंक्रमनामक द्वितीयद्वारम्" —

अणहं अरयं अरुयं, अजरं अमरं अरागमऽपओसं । अभयमऽकम्ममऽजम्मं, सम्मं पणमह महावीरं ॥६९॥

अह कयपरिकम्मविहिस्स, तस्स गणसंकमं करेंतस्स । विहिमऽवितहं भणिस्सं, तत्थ य दाराणिमाणि दस ॥७०॥

दिस[१] खामण[२] अणुसट्ठी[३], परगण[४] सुट्ठियगवेसणा चेव[५] । उवसंपया[६] परिच्छा[७], पडिलेहा[८] पुच्छण[९] पडिच्छा[१०]॥७१॥

"प्रथम दिशाद्वारम्" —

तत्थ य दिस त्ति गच्छो, जं तीए दिसिज्जए जइसमूहो । तीए दिसाए अणुण्णं, वण्णेमि जहाविहिं एत्तो ॥७२॥

इह पुण पुव्वपयंपिय-कमाऽणुसारेण गहियपव्वज्जो । सड्ढो य सुचिरपालिय-पव्वज्जो कोई साहू वा ॥७३॥

अहवा निम्मलगुणगण-वसपावियपूयणिज्जसूरिपओ । साहु च्चिय आराहण-विहिमणहं काउमिच्छेज्जा ॥७४॥

एत्थ य जो सूरिपयं, पवयणविहिणाऽणुपालिउं सुचिरं । निप्फाइउं च सिस्से, सुत्तऽत्थेहिं समत्थेहिं ॥७५॥

इड्ढिरससायगारव-रहियं आगमठिईए विहरित्ता । बोहित्ता भव्वजणं, वंछिज्जाऽऽराहणविहाणं ॥७६॥

वड्ढन्तउत्तरोत्तर-पसत्थपरिणामपरमसंवेगो । सो अणुसरेज्ज पढमं, बहुजइजोग्गं महाखेत्तं ॥७७॥

तो वाहरिऊण गणं, निययं पुरखेडकब्बडाऽऽइगयं । तप्पुरओ पयडेई, तहाविहं अप्पऽभिप्पायं ॥७८॥

आभोइऊण य तओ, अपक्खवाएण सम्मबुद्धीए । पढमं खु सगच्छे च्चिय, परगच्छे वा पुरिसरयणं ॥७९॥

"आचार्यस्य योग्यतावर्णनम्" —

आरियदेसुप्पन्नं, जाईकुलरुवसंपयाकलियं । कुसलं कलाकलावे, लोयट्ठिइसुट्ठुपत्तट्ठं ॥८०॥

पयइसुविसिट्ठचेट्ठं, पयइगुणऽब्भासनिच्चतल्लिच्छं । पयईए थिमियरुवं, पयईए जणाऽणुरागपयं ॥८१॥

पयइसुपसन्नचित्तं, पयईए पियपयंपणपहाणं । पयइसुपसंतमुत्तिं, एत्तो च्चिय पयइगंभीरं ॥८२॥

पयइसुविसालसीलं, पयइमहापुरिसचरियचित्तरइं । पयइनिरऽवज्जविज्जा-समज्जणुज्जुत्तचित्तं च ॥८३॥

कल्लाणमित्तमेत्ती-पहाणमऽविकत्थणं अमाइल्लं । दढसंघयणं धीबलिय-मऽणुमयं धम्मियजणाण ॥८४॥

आहिंडियबहुदेसं, अवधारियसयलदेसभासं च । परिचियबहुववहारं, आयन्नियविविहवुत्तंतं ॥८५॥

दीहदरिसणमऽखुद्दं, दक्खिन्नमहोयहिं सुलज्जालुं । वुड्ढाऽणुगं विणीयं, सव्वत्थ सुबद्धलक्खं च ॥८६॥

अदुराऽऽराहं गुणपक्ख-वाइणं देसकालभावन्नुं । परहियरइं विसेस-न्नुयं परं पावभीरुं च ॥८७॥

सुगुरुविहिदिन्नदिक्खं, तयऽणुकमाऽहीयसपरसमयविहिं । चिरपरिचियसुत्तऽत्थं, जुगप्पहाणाऽऽगमधरं च ॥८८॥

सुत्ताऽणुसारिबोहं, तत्तविहिविसारयं च खंतिखमं । सक्किरियाकरणरयं, संविग्गं लद्धिमंतं च ॥८९॥

भावियभवनेगुन्नं, सम्मं तत्तो विरत्तचित्तं च । सन्नाणाऽऽइगुणाणं, परुवगं पालगं च सयं ॥९०॥

संगहसीलं अपमाइणं च, कडजोगिणं भणिइनिउणं । तह परलोगपसाहग-गुणगणसंगाहणे कुसलं ॥९१॥

निच्चाऽऽसेवियगुरुकुल-निवासमाऽऽदेयमऽसमपसमरसं । संजमगुणेक्करसियं, वच्छल्लपरं पवयणस्स ॥९२॥

मणसुद्धं वइसुद्धं, कायविसुद्धं विसुद्धऽणुट्ठाणं । दव्वाइअगिद्धिपरं, जयणासारं च सव्वत्थ ॥९३॥

दंतिंदियं तिगुत्तं, गुत्ताऽऽयारं अमच्छरमऽणीसं । जहसत्तीए तवचाय-संगयं गयमयवियारं ॥९४॥

अणुवत्तणापहाणं, सच्चुवयारुज्जयं दढपइन्नं । उक्खित्तभरुव्वहणेक्क-धीरधवलं अणाऽऽसंसं ॥९५॥

तेयस्सिणमोयस्सिण-मऽविसाइणमऽपरिस्साविणं धीरं । हियमियफुडवत्तारं, कन्नसुहोदत्तघोसं च ॥९६॥

मणवयणकायचावल्ल-वज्जियं सयलजइजणगुणड्ढं । अगिलाणीए जहट्ठिय-पवयणसुत्तऽत्थवत्तारं ॥९७॥

दढजुत्तिहेउदाणा, पारद्धपमेयठावणपडिट्ठं । तक्कालुप्पन्नुत्तर-पयाणपडुयं सुमज्झत्थं ॥९८॥

पंचविहाऽऽयारधरं, भवियाणुवएसदाणदुल्ललियं । जियपरिसं जियनिद्दं, विविहाऽभिग्गहगहणनिरयं ॥९९॥

कालसहं भारसहं, उवसग्गसहं परीसहसहं च । खेयसहमऽवक्कसहं, कट्ठसहमिलव्व सव्वसहं ॥४२००॥

उस्सग्गऽववायाणं, नियनियसमए निसेवणपहाणं । मुद्धजणसमक्खं पुण, निसेवगं नाऽववायाणं ॥१॥

आवाए संवासे य, भद्दगं तह समुद्दबुद्धिल्लं । रायकरंडगतुल्लं, महुकुंभं महुपिहाणं च ॥२॥

वुट्ठिपरगज्जिरहिएण, जणगनिप्फायगेण य तहेव । खेत्ते च्चिय काले च्चिय, देसे सव्वे य वुड्ढिमया ॥३॥

पुक्खलसंवट्टेण य, मेहेण समं वहंतमुवमाणं । अंतो बहिं च सारं, तह अप्पपराऽणुकंपपरं ॥४॥

तह परिगलंतसोयं, निच्चं आसंगलंतसोयं च । सुयदाणगहणविहिणा, सीयासीओयहरयं व ॥५॥
कालपरिहाणिदोसा, एत्तो एक्काऽऽइगुणविहीणं पि । अप्पलहुदोसयंतं पि, सेसबहुगुरुगुणोवेयं ॥६॥
एवंविहं सुसिस्सं, सूरी रिणमोयणं करिउकामो । आपुच्छित्ताण गणं, गणाऽहिवत्ते निरुवेज्जा ॥७॥
नवरं गुरुसीसाणं, दोण्हं पि हु पयरचंदबलकलिए । उच्चट्ठाणट्ठियसव्व-[1]सुहगहालोगिए लग्गे ॥८॥
नीसेससंघसहिओ, हिओवउत्तो गणे गणवई सो । सुत्तुत्तविहाणेणं, नियपयं निसिरइ तम्मि ॥९॥
अह संघसमक्खं चिय, सुत्तुत्तविहीए चेव निस्संगो । अणुजाणेइ दिसं सो, एस दिसा भे त्ति भणमाणो ॥१०॥
जो पुण सविसेसाऽसेस-गुणगणोवेयपुरिसविरहम्मि । कइवयसुगुणुववेयं पि, तदवरस्समणऽवेक्खाए ॥११॥
नियए पयम्मि न ठवेज्ज, नेव तस्साऽणुजाणइ दिसं पि । सो हारेज्ज सकज्जं, गणं च सिवभद्दसूरि व्व ॥१२॥
तहाहि- "सिवभद्रसूरि कहा"
कंचणपुरम्मि नयरे, सुयरयणमहोयही महाभागो । आसि सिवभद्दसूरी, बहुसिस्सगणस्स चक्खुसमो ॥१३॥
सो य महप्पा एगम्मि, अवसरे रयणिमज्झसमयम्मि । कालपरिन्नाणऽट्ठा, अवलोयइ नहयलं जाव ॥१४॥
तावुच्छलन्तजोन्हा-पवाहधवलियसमग्गदिसिचक्कं । समकालं पेच्छइ हरिण-लंछणाणं जुगमऽकम्हा ॥१५॥
मइसंमोहा किं दिट्ठि-विब्भमो किं विहीसिया किं वा । इति विम्हियचित्तेणं, तेणुट्ठविओ अवरसाहू ॥१६॥
भणितो य भद्द! पेच्छसि, गयणे हरिणंऽकमंडलजुगं किं । तेणं पयंपियं एक्क-मेव पेच्छामि निसिनाहं ॥१७॥
तो मुणिवइणा नायं, नूणं पज्जंतपत्तमिव जीयं । तेणेसुप्पाओ मे, अदिट्ठपुव्वो पजाओ त्ति ॥१८॥
न कयाइ जेण चिरजीवि-णो जणा एरिसे उ उप्पाए । पेक्खंति विम्हयकरे, परेसिमऽच्चंतमऽघडंते ॥१९॥
अहवा किऽमणेण विगप्पिएण, उप्पायविरहओ वि जियं । तिणयऽग्गलग्गजलमिव, न चिराऽवत्थाणमऽणुभवइ॥२०॥
ता किमिह चोज्जमऽह किंव, वाउलत्तं क एव संमोहो? । अणुसमयविणस्सिरजीवि-यव्वजुत्ताण सत्ताण ॥२१॥
चिरकालकलियनिम्मल-सीलाणं घोरचरियसुतवाणं । परमऽब्भुदयनिमित्तं, मरणं पि मणोरहं कुणइ ॥२२॥
अणुवज्जियसद्धम्मा अपोढपाहेज्जदूरपहिय व्व । परभवसंकमकाले, जे ते पुण दुत्थिआ होंति ॥२३॥
तम्हा पडिरूवगुणम्मि, सयलमुणिलोयलोयणाऽऽणंदे । आरोविऊण गणभर-मेगम्मि नियविणेयम्मि ॥२४॥
अच्चंतविगिट्ठविसिट्ठ-तवविसेसेहिं संलिहियकाओ । दीहरसामन्नफलं, एगग्गमणो उवचिणामि ॥२५॥
नवरं सिस्साणमिमाण, कोवि कोवाऽऽउरो सहावेण । को वि य वियक्खणो नेव, सत्थपरमऽत्थबोहम्मि ॥२६॥
को वि य वियलो रूवेण, को वि सिस्साऽणुवत्तणे अविऊ । को वि य कलिप्पिओ को वि, लोभमायाऽभिभूतो य॥२७॥
को वि पभूयगुणो वि हु, थद्धो हा! किं करेमि सव्वगुणो । नेवऽत्थि कोवि गणहर-पयमिममाऽऽरोविमो जस्स॥२८॥
भन्नइ य इमं गणधर-पयं हि जो ठवइ किर कुपत्तम्मि । जाणंतो वि सिणेहा, सो पवयणपच्चणीओ त्ति ॥२९॥
इय [2]दुक्कहयाए तहाविहेहिं, केहि वि गुणेहिं जुत्तं पि । सिस्सगणं अवगणिउं, अविभावियभाविराऽणत्थो ॥३०॥
कालाऽणुरूवकायव्व-मूढभावो तहाविहं किंचि । संलेहणं करेत्ता, भत्तपरिण्णं चिय पवन्नो ॥३१॥
तम्मि य तहट्ठिए जा न, सारणावारणाऽऽइ संभवति । ताव वणवारणा इव, सीसावि निरंकुसीहूया ॥३२॥
तह अप्पणो उवेहा-परं पहुं पेक्खिऊण निरवेक्खा । तप्पडियरणाऽऽइपओ-यणेसु मंदाऽऽदरा जाया ॥३३॥
सूरी वि ते तहा पे-च्छिऊण हिययम्मि धरियसंतावो । असमत्थिउत्तिमट्ठो मरिउं असुरेसु उप्पन्नो ॥३४॥
सीसगणो वि य बाढं, नायगविरहेण नयरलोगो व्व । अक्कंतो अइनिक्किव-पमायरिउसुहडचक्केण ॥३५॥
सिढिलियमुणिकायव्वो, कोउयमंताऽऽइएसु वट्टंतो । जाओ य सामिविरहे, आभागी अणत्थसत्थाण ॥३६॥
एएण कारणेणं, मज्झिमगुणसंगयं पि ठविय पए । तव्विहियगणाऽणुन्नो, गणी जएज्जुत्तिमट्ठम्मि ॥३७॥
इहरा पवयणखिंसा, धम्मब्भंसो य मग्गवुच्छेओ । अहिगरणं धम्मुम्मुह-विप्परिणामाऽऽइया दोसा ॥३८॥
इय कुगइतिमिरदिणयर-पहाए संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥३९॥
आराहणाए पडिदार-दसगजुत्तस्स बीयदारस्स । गणसंकमस्स भणियं, दिस त्ति पढमं पडिद्दारं ॥४०॥

1. सुहगहाभोगिए पाठां०। 2. दुक्कहयाए = अरुचिमत्वेन ।

"क्षामणाद्वारम्" —

एवं नियपयठाविय-सीसनिवेइयदिसस्स वि गणिस्स । एगंतनिज्जरापे-हिणो वि जीए विणा सम्मं ॥४१॥
उल्लासं न लहइ अइ-महल्लकल्लाणवल्लरी कहवि । सा खामणा इयाणिं, कित्तिज्जइ कुगइनिम्महणी ॥४२॥

"क्षमापनाद्वारम्" —

अह सो पसंतचित्तो, सबालवुड्ढाऽऽउलं गणं णियगं । तक्कालणिवेसियगण-वइं च वाहरिय महुरगिरा ॥४३॥
इय वागरेज्ज हंभो!, महाऽणुभावा! सहाऽऽयसंताणं । सुहुमं व बायरं वा, अचियत्तं किंपि होज्ज धुवं ॥४४॥
ता जं कया वि असणं, पाणं वत्थं व पत्तमऽह पीढं । धम्मोवयारजणयं, अन्नं पि तहाविहं किंपि ॥४५॥
लद्धं पि विज्जमाणं पि, कप्पणिज्जं पि नो मए दिन्नं । दिज्जंतं वा अवरेण, कहवि होज्जा य पडिसिद्धं ॥४६॥
जं वा पुच्छंताण वि, अक्खरपयगाहअज्झयणमाऽऽई । सुत्तं नेवुवइट्ठं, सम्मं वक्खाणियं नो वा ॥४७॥
जं वा किंपि कहं पि हु, इड्ढीरससायगारववसेण । खरफरुसगिराहि चिरं च, चोइया तज्जिया वा वि ॥४८॥
अच्चंतविणयपणया वि, गाढपडिबंधबंधुरा वि दढं । जं पि य रागाऽऽइवसा, पलोइया विसमदिट्ठीए ॥४९॥
जं च न संमं सुगुणऽ-ज्जणे वि उववूहिया जहाऽवसरं । तं भे खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाओ य ॥५०॥
तह भो देवाऽणुपिया!, पियस्स वि अपियमन्नणाए जं । अपए वि दूमिया काल-मेत्तियं तं पि खामेमि ॥५१॥
किं केणाऽवि पियं चिय, अणिसं कस्साऽवि तीरए काउं । ता जमऽपियं कयं किंपि, तुम्ह तं मे खमेज्जाह ॥५२॥
किं बहुणा—
दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च अणुचियं जमिह । किंपि कयं तुम्ह मए, तं सव्वं पि हु खमावेमि ॥५३॥
अह ते वि तिव्वगुरुभत्ति-चित्तजुत्तऽप्पवित्तिणो एयं । गुरुवयणमऽसुयपुव्वं, सोऊण ससज्झसं सव्वे ॥५४॥
उप्पन्नमन्नुमंथर-गग्गरगलनालिणो सुविउणो वि । अणवरयफुरंतोदार-बाहसलिलोल्लनयणिल्ला ॥५५॥
जंपंति पहुं अप्पा-णयं पि सव्वप्पणा किलेसेउं । अम्हे च्चिय परिपुट्ठा, सामिय! तुब्भेहिं जेहिं सया ॥५६॥
ते वि कहं तुम्हे हं, खामेमि इमेरिसं भणह वयणं । अवि य सुगुणेसु ठविया, अणुमोएमो त्ति वत्तव्वं ॥५७॥
अप्पत्तगुणाणं पावग त्ति, पत्ताण वुड्ढिजणग त्ति । कल्लाणवल्लरीका-रिणो त्ति एगंतहियय त्ति ॥५८॥
इय वच्छल त्ति निव्वाण-गमणसुपसत्थसत्थवाह त्ति । निक्कारणेक्कपियबंध-व त्ति संजमसहाय त्ति ॥५९॥
सयलजयजीवपरिता-इणो त्ति भवजलहिकन्नधार त्ति । सव्वंऽगिवग्गपरमत्थ-जणणिजणग त्ति काऊण ॥६०॥
जे तुम्हे सव्वेसिं, परमवियड्ढाण भव्वलोयाणं । जणणिजणगे वि चइउं, [1]आसयणिज्जा महासत्ता ॥६१॥
ते कह कस्स वि तुब्भे, भयत्तभयमूयणा हियपरा य । होऊण अणुचियं भे-ऽवसा वि चिंतिस्सह वि लोए ॥६२॥
दव्वं खेत्तं कालं, पडुच्च पियमेव सव्वसत्ताण । निच्चं चेट्ठंताणं, तुम्ह वि किं खामणिज्जपयं ॥६३॥
एवं खु गुणो होहि त्ति, जं पि जंपेह किंपि फरुसाइं । तं पि परिणतिसुहऽट्ठा, सुवेज्जकडुओसहकमेण ॥६४॥
तम्हा अम्हेहिं चिय, तुम्हे उ पडुच्च अणुचियं किंपि । जमिह कयं कारियमऽणु-मयं च तं होइ खमणिज्जं ॥६५॥
तं पुण रागाउ दो-सओ य मोहेण वा अणाभोगा । मणसा वयसा काएण, जमिह भंते कयं तत्थ ॥६६॥
रागेण अप्पबहुमाणओ उ, दोसेण पहुपओसाओ । मोहेणं अन्नाणा, विणोवओगं अणाऽऽभोगा ॥६७॥
सम्ममऽणुग्गहबुद्धीए, अम्हं विहियं हियं पि तुम्हेहिं । संभावियं च वितहं, अम्हेहिं किंपि जं मणसा ॥६८॥
अन्तरभासाविप्पिय-पयंपणं पट्ठिमंसभक्खित्तं । पेसुन्नं तह जच्चाऽऽइ-खिंसणं जं च वायाए ॥६९॥
करचरणोऽवहिसंघट्टणाऽऽइ, काएण अणुचियं जमिह । विहियं तं खामेमो, तिविहं तिविहेण सव्वं पि ॥७०॥
तहा—
पाणाऽसणाइ सुत्तऽत्थ-तदुभयं वत्थपत्तदंडाऽऽई । सारणवारणचोयण-पडिचोयणपमुहमऽह जं च ॥७१॥
तुम्हेहिं चियत्तेहिं, दिन्नं अम्हेहिं अविणएणं जं । भंते! पडिच्छियं कहवि, तं समग्गं पि खामेमो ॥७२॥
दव्वे खेत्ते काले, भावे य कहिं पि का वि हु कया जं । आसायणा य तं पि हु, तिविहंतिविहेण खामेमो ॥७३॥
कयमेत्थ पसंगेणं, एवं ते गुणगुरुं गुरुं णिययं । धम्माऽऽयरियं धम्मो-वएसयं धम्मधुरधवलं ॥७४॥

1. आसयणिज्जा = आश्रयणीयाः ।

भत्तिब्भरनिब्भरंऽगा, सम्मं कमकमलमिलियभालयला । पुणरुत्तमऽत्तविहियं, अहम्मकम्मं खमावेंति ॥७५॥
आदिक्खाकालाओ, अन्नाणपमायदोसवसगेहिं । पडिलोमिया जमाऽऽणा, हिओवएसं पि दिंताण ॥७६॥
तुम्हाणं अम्हेहिं, संजमभरधरणधवलगुणनिलय! । मणवायाकाएहिं, सव्वं पि हु तं खमावेमो ॥७७॥
आणंदंऽसुनिवायं, कुणमाणा इय मही[1]निमियसीसा । खामेंति ते जहऽरिहं, जहारिहं खामिया गुरुणा ॥७८॥
एवं च खामणाए, कयाए जाएज्ज अत्तणो सुद्धी । थेवं पि वेरकारण-मऽवरभवे नाणुवट्टेज्जा ॥७९॥
इहरा नाणऽब्भासो, परोवएसाऽऽइधम्मवावारो । नयसीलसूरिणो इव, भवेज्ज विहलो परभवम्मि ॥८०॥
तहाहि— "नयशीलसूरिदृष्टान्तः"
एगम्मि गरुयगच्छे, अतुच्छसुयनाणनायनायव्वो । दूरदिसाऽऽगयसुस्सूसु-सिस्ससंसयसयुम्महणो ॥८१॥
नामेणं नयसीलो, अहेसि सूरी सयं सुरगुरु व्व । बुद्धीए नवरि न तहा, सुहसीलत्तेण किरियाए ॥८२॥
सिस्सो य तस्स एगो, सम्मं नाणी य चरणजुत्तो य । तो तस्स समीवम्मि, समयऽत्थवियक्खणा लोगा ॥८३॥
निसुणंति जिणवराऽऽगम-मुवउत्तमणा तहत्ति जंपंता । पकुणंति य बहुमाणं, पवित्तचारित्तजुत्तो त्ति ॥८४॥
एवं वच्चंतम्मि, काले सो चिंतइ इमं सूरि । मोत्तूण ममं मुद्धा, किमिममिमे पज्जुवासंति ॥८५॥
अहवा कुणंतु किंपि हु, एए सच्छंदचारिणो [2]निहिणो । एसो वि कीस सिस्सो, बहुस्सुओ तह कओ वि मए ॥८६॥
तह दिक्खिओ वि तह पालिओ वि, तह गुरुगुणेसु ठवियो वि । [3]ममम‌ऽवगणिऊणेवं, वट्टइ परिसाए भेयम्मि ॥८७॥
'रायम्मि जीवमाणे, न छत्तभंगो हवेइ' एसो वि । मन्ने लोगपवाओ, न सुओ णेणं अणज्जेण ॥८८॥
जइ इण्हिं नियारिज्जइ, धम्मकहाकरणओ मए एसो । ता मच्छरि त्ति लोगो, मन्नेज्ज ममं महामुद्धो ॥८९॥
ता कुणउ किंपि एवं विहाण जुत्तं उवेहणं एक्कं । कीरंतऽवरमऽफलं तब्भत्तजणे विरुद्धं च ॥९०॥
इय संकिलेसवसगो, पओसवं तदुवरिम्मि सो सूरि । अंतसमए वि तदऽविहिय-खामणो मरणमऽणुपत्तो ॥९१॥
तो संकिलेसदोसा, तत्थेव वणम्मि पन्नगत्तेण । उववन्नो कूरऽप्पा, सन्नी ताविच्छसच्छाओ ॥९२॥
अह तेसिं चिय साहूण, कहवि सज्झायझाणभूमीए । आगंतूणं तु ठिओ, इओ तओ परिभमंतो सो ॥९३॥
तम्मि य काले सज्झाय-करणवंछाए पट्ठिए सिस्से । अवसउणो संजाओ, पडिसिद्धो सो य थेरेहिं ॥९४॥
पडियालिय खणमेक्कं, पुणो पयट्टम्मि तम्मि अवसउणो । पुणरवि तहेव जाओ, ताहे थेरा विचिंतंति ॥९५॥
होयव्वमेत्थ केणाऽवि, कारणेणं वयं पि ता जामो । इइ तेणं चिय समगं, गया उ सज्झायभूमीए ॥९६॥
अह थेरमज्झयारे, पुव्वभवाऽतुच्छमच्छरवसेण । तं पेच्छिऊण भीमो, भुयगस्स वियंभिओ कोवो ॥९७॥
तंडवियपयंडफणो, अरुणऽच्छिच्छोहपाडलियगयणो । दूरविदारियवयणो, पडुच्च तं धाविओ ताहे ॥९८॥
मोत्तूण सेसमुणिणो, महया वेगेण सिस्समऽणुसरिउं । वच्चंतो सो कहमऽवि, पडिरुद्धो झत्ति थेरेहिं ॥९९॥
नायं च तेहिं नूणं, को वि इमो साहुपच्चणीओ त्ति । विद्धंसियसामन्नो, एवं जो उव्वहइ वेरं ॥४३००॥
एगम्मि य पत्थावे, समागओ तत्थ केवली भयवं । पुट्ठो वुत्तंतमिमं च, सो य थेरेहिं जत्तेणं ॥१॥
तो केवलिणा तेसिं, पुव्वोइयसूरिवइयरो सव्वो । तदुवरि पओसगब्भो, निदेसिओ मूलओ चेव ॥२॥
एवं निसामिऊणं, वेरग्गाऽऽवडियबुद्धिणो मुणिणो । जंपंति अहो भीमं, पओसदुव्विलसियं जेण ॥३॥
तारिससुयनाणगुणाऽऽयरो वि, धीमं पि मुणियकिच्चो वि । सूरी महाऽणुभावो, भीसणभुयगत्तणं पत्तो ॥४॥
कह पुण भयवं! वेरो-वसामणं तस्स संपयं होज्जा । केवलिणा पडिभणियं, गंतूणं तस्समीवम्मि ॥५॥
उवइसह पुव्वभववेर-वइयरं कुणह खामणं बहुसो । एवं कयम्मि सो जाय-जाइसरणो विबुज्झिहिइ ॥६॥
चेच्चा मच्छरमुप्पन्न-धम्मवंछो य अणसणं काउं । आराहिही पुणो वि हु, तक्कालुचियं सुधम्मविहिं ॥७॥
तो थेरेहिं तह च्चिय, सव्वं भुयगं पडुच्च पडिविहियं । कयअणसणाऽऽइकिच्चो, मरिऊण य सो सुरो जाओ ॥८॥
इय वेरपरंपरपसम-णट्ठया उत्तिमट्ठकालम्मि । सविसेसा सिस्सगणस्स, खामणा सुहफला होइ ॥९॥
किंच—
खामिंतस्स इह गुणा, निस्सल्लया विणयदीवणा मग्गो । लाघवियं एगत्तं, अप्पडिबंधो य होइ कओ ॥१०॥

1. निमिय = न्यस्त । 2. निहिणो = तुच्छः । 3. माम् ।

इय गुणमणिरोहणगिरिथराए, संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥११॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमणे भणियं हि, खामणा बीयपडिदारं ॥१२॥

"तृतीय अनुशास्तिद्वारम्" —

समयविहिविहियमुणिखामणो वि, न समाहिमुवलभइ सम्मं । जीए विणा सा एत्तो, दंसिज्जइ किंपि अणुसट्ठी॥१३॥
अह जहविहीए एगग्गयाए, सव्वेसु धम्मजोगेसु । उज्जममाणमऽणुदिणं, वड्ढंतविसुद्धउच्छाहं ॥१४॥
अवगयसमयरहस्सं, जइजणजोग्गं समत्थमाऽऽयारं । सयमऽविकलं कुणंतं, सेसमुणीणं पि दंसेंतं ॥१५॥
नियपयपइट्ठियं पेच्छि-ऊण सूरिं गणं च नीसेसं । संजमरयं महप्पा, सो पुव्वुवदंसिओ सूरी ॥१६॥
अणुवकयपराऽणुग्गह-पसत्तचित्तो दढं महासत्तो । संवेगगब्भहियओ, अणुमोयइ उचियसमए य ॥१७॥
वियरइ गुरुगुणनिवह-प्पवुड्ढिपुट्ठीए धुयकुबुद्धिमलं । सुपसन्नमणो बुहमण-तुट्ठिपयपसमनिस्संदं ॥१८॥
सुसिणिद्धमऽसंदिद्धं, गंभीरं भवविरागसंजणणिं । अणहमऽमोहं अभिहेय-गाहिणिं कुग्गहग्गसणिं ॥१९॥
मणतुरयधम्मजट्ठिं, महुरत्तणविजियखीरमहुलट्ठिं । अणुरंजियमंसऽट्ठिं, गणिणो सगणस्स अणुसट्ठिं ॥२०॥
हंभो देवाऽणुपिया!, धण्णा तुब्भे जयम्मि जेहिं इमं । पत्तं विसेसदुलहं, आरियदेसम्मि मणुयत्तं ॥२१॥
पणइयणसंकुलम्मि, कुलम्मि जम्मो पसत्थजाई य । तह रूवं च उदग्गं, बलमाऽऽरोग्गं सुचिरमाऽऽउ ॥२२॥
विन्नाणं सद्धम्मे, बुद्धी सम्मत्तमऽविकलं सीलं । न हि इय कुसलकलावो, कह वि अउन्नाण संपडइ ॥२३॥
एवं सामन्नेणं, सव्वाणुववूहणं करेत्ताणं । तो पढमं अणुसट्ठिं, वियरइ, गणनायगस्स जहा ॥२४॥
निज्जामओ-भवऽन्नव तारणसद्धम्मजाणवत्तम्मि । मोक्खपहसत्थवाहो, अन्नाणंऽधाण चक्खू य ॥२५॥
अत्ताणाणं ताणं, नाहोऽनाहाण भव्वसत्ताणं । तेण तुमं सुपुरिस! गरुय-गच्छभारे निउत्तो सि ॥२६॥
छत्तीसगुणधुराधरण-धीरधवलेहिं पुरिससीहेहिं । गोयमपामोक्खेहिं, जं अक्खयसोक्खमोक्खकए ॥२७॥
सव्वुत्तमफलजणयं, सव्वुत्तमपयमिमं समुव्वूढं । तुमए वि तयं दढमऽसढ-बुद्धिणा धीर! धरणीयं ॥२८॥
धन्नाण निवेसिज्जइ, धन्ना गच्छंति पारमेयस्स । गंतुं इमस्स पारं, पारं दुक्खाण वच्चंति ॥२९॥
न इओ वि परं परमं, पयमऽत्थि जए, वि कालदोसाओ । वोलीणेसु जिणेसुं, जमिणं पवयणपयासकरं ॥३०॥
अओ—
नाणाविणेयवग्गाऽणु-सारिसिरिजिणवराऽऽगमाऽनुगयं । अगिलाणीएऽणुवजीवि-णा य विहिणा पइदिणं पि ॥३१॥
कायव्वं वक्खाणं जेण परत्थुज्जएहिं धीरेहिं । आरोवियं तुममिमं, नित्थरसि पयं गणहराणं ॥३२॥
जम्मजरमरणदारुण-दीहरभवगहणभमणरीणाणं । परमपयकप्पायव-सुहफलसंपत्तिमिच्छूणं ॥३३॥
एयाण भव्वसत्ताण, जं न भुवणे वि सुंदरो अन्नो । जिणभणियधम्मसत्थो-वएससरिसोऽत्थि उवयारो ॥३४॥
जं च परमत्थगोयर-संसयतमखंडणेक्कमायंडं । संवेगपसमजणगं, कुग्गहगहनिग्गहपहाणं ॥३५॥
सपरोवयारगरुयं, पसत्थतित्थयरनामनिम्मवणं । जिणभणियाऽऽगमवक्खाण-करणमिममऽणऽणुगुणजणगं ॥३६॥
अगणियपरिस्समो ता, परेसिमुवयारकरणदुल्ललिओ । सुंदर! दरिसेज्ज तुमं, सम्मं रम्मं अरिहधम्मं ॥३७॥
पडिलेहणाऽऽइदसभेय-भिन्नमुणिचक्कवालकिरियाए । खंतीमद्दवपमुहे, दसप्पयारे य जइधम्मे ॥३८॥
सत्तरसविहे तह संजमम्मि, सीले य सयलसुहफलए । किं बहुणा अन्नेसु वि, सभूमिगाउचियकिच्चेसु ॥३९॥
निच्चं पि अप्पमाओ, कायव्वो सव्वहा वि धीर! तुमे । उज्जमपरे पहुम्मि, सीसा वि समुज्जमंति जओ ॥४०॥
सत्तेसु सया मेत्ती, पसंतचित्तेण तह तुमे किच्चा । सम्माणदाणवयणाऽऽ-इएहिं पीई पुण गुणिसु ॥४१॥
करणीयं कारुण्णं, दीणाऽणाहंऽधबहिरदुहिएसु । अगुणिगुणिनिन्दगेसुं, पावपसत्तेसु य उवेहा ॥४२॥
वड्ढंतओ विहारो, कायव्वो सव्वहा तहा तुमए । हे सुंदर! दरिसणनाण-चरणगुणपयरिसनिमित्तं ॥४३॥
संखित्ता वि हु मूले, जह वड्ढइ वित्थरेण वच्चंती । उदहिंऽतेण वरनई, तह सीलगुणेहिं वड्ढाहि ॥४४॥
मज्जाररसियसरिसं, सुंदर! तं मा हु काहिसि विहारं । इहरा हारिहिसि धुवं, अप्पाणं चेव गच्छं च ॥४५॥
सीयावेइ विहारं, गिद्धो सुहसीलयाए जो मूढो । सो नवरं लिंगधारी, संजमसारेण निस्सारो ॥४६॥
जो रज्जदेसपुरगाम-गिहकुले चइय ते च्चिय [1]ममाइ । सो नवर लिंगधारी, संजमसारेण निस्सारो ॥४७॥

1. ममाइ = ममत्वं करोति ।

निवइविहूणं खेत्तं, निवई वा जत्थ दुट्ठओ होज्जा । पव्वज्जा य न लब्भइ, संजमघाओ य तं [1]वज्जं ॥४८॥
वज्जेसु वज्जणिज्जं, नियपरपक्खे तहा विरोहं च । वायं असमाहिकरं, विसऽग्गिभूए कसाए य ॥४९॥
जो नियघरं पलित्तं, नेच्छइ विज्झाविउं पयत्तेण । सो कह सद्दहियव्वो, परघरदाहं पसामेउं ॥५०॥
नाणम्मि दंसणम्मि य, चरणम्मि य तीसु समयसारेसु । चाएइ जो ठवेउं, गणमऽप्पाणं गणहरो सो ॥५१॥
पिंडं उवहिं सेज्जं, उग्गमउप्पायणेसणाऽऽईहिं । परिसुद्धं गिन्हेज्जासु, वच्छ! चारित्तसुद्धिकए ॥५२॥
एसा गणहरमेरा, आयारत्थाणवन्निया सुत्ते । आयारविरहिया जे, ते तमऽवस्सं विराहेंति ॥५३॥
अप्परिसावी सम्मं, समदंसी होज्ज सव्वकज्जेसु । संरक्खसु चक्खुं पिव, सबालवुड्ढाऽऽउलं गच्छं ॥५४॥
कणगतुला सममज्झे, धरिया भरमऽविसमं जहा धरइ । तुल्लगुणपुत्तजुगलं, माया व समं जहा वहइ ॥५५॥
नियनयणजुयलियं वा, अविसेसियमेव जह तुमं वहसि । तह होज्ज तुल्लदिट्ठी, विचित्तचिते वि सीसगणे ॥५६॥
अइनिबिडमूलगुणकलिय-मिह जहा पायवं सुपत्ताणि । परिवारिंति समंता, विविहदिसामुहसमुत्थाणि ॥५७॥
तह निबिडमूलगुणसं-गयं ति तुममऽवि इमे महामुणिणो । परिवारिहिंति नाणा-दिसासमुत्था वि सव्वत्तो ॥५८॥
अन्नं च मोक्खफलकंखि-भवियसउगाण सेवणिज्जो तं । होहिसि लद्धच्छाओ, तरु व्व मुणिपत्तजोगेण ॥५९॥
ता एए वरमुणिणो, मणयं पि हु नाऽवमाणणीया ते । उक्खित्तभरुव्वहणे, परमसहाया तुह इमे जं ॥६०॥
जह भद्द-मंद-मिग-सं-किन्नत्तणभेयभिन्नहत्थीणं । विविहाण वि विंझगिरी, आहारो निच्चकालं पि ॥६१॥
तह खत्तिय-माहण-वइस-सुद्द-कुलसंभवाण साहूण । सव्वाण वि आहारो, होज्ज तुमं संजमठियाणं ॥६२॥
तह जह सो च्चिय आसन्न-दूरवणवत्तिहत्थिजूहाणं । आधारभावमऽविसेस-मेव उव्वहइ सव्वाणं ॥६३॥
एवं तुमं पि सुंदर!, दूरं सयणेयराऽऽइसंकप्पं । मोत्तुमिमाण मुणीणं, सव्वाण वि होज्ज आहारो ॥६४॥
सयणाणमऽसयणाण य, [2]भूणप्पायाण सयणरहियाण । रोगिनिरक्खरकुक्खीण, बालजरजज्जराऽऽईण ॥६५॥
पेमड्ढपिया व पियामहोऽह-वाऽणाहमंडवो वा वि । परमोवट्ठंभकरो, सव्वेसि मुणीण होज्ज तुमं ॥६६॥
तह इह दुसमागिम्हे, साहूणं धम्ममइपिवासाणं । परमपयपुरपहाऽणुग-सुविहियचरियापवाए ठिओ ॥६७॥
संपाडेज्जऽज्जाण वि, किच्चजलं देसणापणालीए । वज्जियसंसग्गीण वि, तुममंऽतेवासिणीउ त्ति ॥६८॥
तह दुविहो आयरियो, इहलोए होइ तह य परलोए । इहलोए सारणिओ, परलोए फुडं भणंतो य ॥६९॥
जीहाए वि लिहंतो, न भद्दओ जत्थ सारणा णऽत्थि । दंडेण वि ताडेंतो, स भद्दओ सारणा जत्थ ॥७०॥
जह सरणमुवगयाणं, जीवियववरोवणं कुणइ कोई । एवं सारणियाणं, सूरी वि असारओ गच्छे ॥७१॥
ता भो देवाऽणुपिया!, परलोए होज्ज सम्ममायऽऽरिओ । मा होज्ज सपरनासी, होउं इहलोइयाऽऽयरियो ॥७२॥
जं पाविऊण परमे, नाणाऽऽई दुहियतायणसमत्थे । भवभयभीयाण दढं, ताणं जो कुणइ सो धन्नो ॥७३॥
तह मणवइकाएहिं, करिंतु विप्पियसयाइं तुह समणा । तेसु तुमं तु पियं चिय, करेज्ज मा विप्पियलवं पि ॥७४॥
निग्गहिऊण [3]अणक्खे, अकुणंतो तह य एगपक्खित्तं । साहम्मिएसु समचित्त-याए सव्वेसु वट्टेज्जा ॥७५॥
सव्वजणबंधुभावाऽरिहं पि, एक्कस्स चेव पडिबद्धं । जो अप्पाणं कुणइ, तओ वि मूढो हु को अन्नो ॥७६॥
अप्पाणं पि हु परिपीडिऊण, साहम्मियाण कज्जेसु । तह कह वि वट्टियव्वं, जहऽप्पतुल्लो भवसि तेसिं ॥७७॥
एवं च कीरमाणे, होही तुह भुवणभूसणा कित्ती । एत्तो चेव य चंदं, पडुच्च केणाऽवि जं भणियं ॥७८॥
गयणंऽगणपरिसक्कण-खंडणदुक्खाइं सहसु अणवरयं । न सुहेण हरिणलंछण!, कीरइ जयपायडो अप्पा ॥७९॥
तहा—
जे तुह अन्नाणवसा, जे वा पयइवियारदोसेण । मणसा वयसा काएण, परिभवं चेव जणयंति ॥८०॥
ते वि पहुणा वि तुमए, बहुं खमंतेण महुरवयणेहिं । खुद्दचरियाउ तत्तो, निवत्तणीया पयत्तेणं ॥८१॥
अविणीए सासिंतो, कारिमकोवे वि मा हु मुंचेज्जा । भद्द! परिणामसुद्धिं, रहस्समेसा हि सव्वत्थ ॥८२॥
उप्पाइयपीडाण वि, परिणामवसेण गतिविसेसो जं । जहा गोय-खरय-सिद्ध-त्थयाण धीरं समासज्ज ॥८३॥

---
1. वज्जं = वर्ज्यं = त्याज्यम् । 2. भ्रूण = बालतुल्यानाम् । 3. अणक्खे = रोषादीन् ।

कन्ने कीलं छोढुं, गोवो वीरस्स पावियो नरयं । तं कड्ढित्ता पत्ता, सुरलोयं खरय-सिद्धत्था ॥८४॥
तहा--
अतितिक्खो खेयकरो, होहिसि परिभवपयं अइमिऊ य । परिवारम्मि वि सुंदर!, मज्झत्थो तेण होज्ज तुमं ॥८५॥
सपराऽवायनिमित्तं, संभवइ जहा [1]असीअपरिवारो । एवं पहू वि ता तयऽणु-वत्तणाए जएज्ज तुमं ॥८६॥
अणुवत्तणाए सीसा, पायं पाविंति जोग्गयं परमं । रयणं पि गुणुक्करिसं, पावइ परिकम्मणगुणेण ॥८७॥
अन्नोन्नविरुद्धाण वि, जलजलणाऽमयविसाऽऽइयाण जहा । जोगे वि महाजलही, अवियारो चेव पयईए ॥८८॥
इय बज्झकारणवसु=च्छलंतविविहंऽतरंगभावेहिं । सुंदर! तुमं पि निच्चं, अविगियरुवो च्चिय हवेज्जा ॥८९॥
को नाम भणिइकुसलो वि, एत्थ अच्चऽब्भुयप्पभावम्मि । गणहरपए पइपयं, सव्वुवएसे खमो वोत्तुं ॥९०॥
परमेत्तियं भणामो, जायइ जेणुन्नई पवयणस्स । तं तं विचिंतिऊणं, तुमए सयमेव कायव्वं ॥९१॥
एवमऽणुसासिउणं, पढमं गणनायगं विहाणेणं । अह सेससाहुणो सो, अणुसासइ सुयविहीए जहा ॥९२॥
हंभो देवाऽणुपिया!, पियाऽपिएसुं समत्थविसएसुं । होज्जाह मा हु तुब्भे, कया वि रागप्पओसपरा ॥९३॥
होज्जाह अप्पमत्ता, सज्झायऽज्झयणझाणजोगेसु । अन्नेसु वि समणजणो-चिएसु किच्चेसु निच्चरया ॥९४॥
जहवाइणो तहाका-रिणो वि होज्जाह मा य होज्जाह । निग्गंथे पावयणे, परिसिढिलमणा मणागं पि ॥९५॥
कुणह पमायं माऽऽवस्सएसु, संजमतवोविहाणेसु । निस्सारे माणुस्से, दुलहं बोहं वियाणित्ता ॥९६॥
समिया पंचसु समिईसु, सया वि जिणवयणअणुगयमईया । तिहिं गारवेहिं रहिया, होह विणिग्गहियदंडाय ॥९७॥
सन्नाउ कसाए वि हु, अट्टं रोद्दं च परिहरह निच्चं । दुट्ठाणि इंदियाणि य, सम्मं सव्वऽप्पणा जिणह ॥९८॥
जह सन्नद्धो पग्गहिय-चावदंडो भडो पलायंतो । निंदिज्जइ तह इंदिय-कसायवसमऽणुगओ साहू ॥९९॥
धन्ना य साहुणो ते, जे विसयवसाऽणुगम्मि लोगम्मि । विहरंति विगयसंगा, अकलंका नाणचरणेसु ॥४४००॥
जे य विमुक्कविरोहा अव्वामोहा अभिन्नमुहसोहा । अगलियगुणसंदोहा, जयन्ति ते पसरियजसोहा ॥१॥
सीसाऽणुसासणे वि हु, पारद्धे अह इमं तुमं पि खणं । वन्निज्जंतं जइपहु!, पहिट्ठचित्तो निसामेहि ॥२॥

"महिलासङ्गे दोषाः" --

वज्जेह अप्पमत्ता! अज्जा-संसग्गिमऽग्गिविससरिसं । अज्जाऽणुचरो साहू, पावइ वयणिज्जमऽचिरेण ॥३॥
थेरस्स तवस्सिस्स वि, सुबहुसुयस्स वि पमाणभूयस्स । अज्जासंसग्गीए, निवडइ वयणिज्जदढवज्जं ॥४॥
किं पुण तरुणो अबहुस्सुओ य, अविगिट्ठतवपसत्तो य । सद्दाऽऽइगुणपसत्तो, न लहइ जणजंपणं लोए ॥५॥
सव्वत्तो वि विमुक्को, साहू सव्वत्थ होइ अप्पवसो । सो चेव होइ अज्जाओ, अणुचरंतो अणऽप्पवसो ॥६॥
साहुस्स नऽत्थि लोए, अज्जासरिसी हु बंधणे उवमा । लद्धपसराओ जं ताओ, भावसंमग्गखलणीओ ॥७॥
जइ वि सयं थिरचित्तो, तहा वि संसग्गिलद्धपसराए । अग्गिसमीवे घयमिव, मणं विलीएज्ज अज्जाए ॥८॥
एमेव सेसमहिला-वग्गेण वि दूरओ पयत्तेण । वज्जेज्जह संसग्गिं, इंदियदमदारुदहणऽग्गिं ॥९॥
महिला कुलं सवंसं, पइं सुयं मायरं च पियरं च । विसयंऽधा अगणंती, दुक्खसमुद्दम्मि पाडेइ ॥१०॥
माणुन्नयस्स पुरिसद्दुमस्स, नीयो वि आरुहइ सीसं । महिलानिस्सेणीए, गुणगणफलकलियसाहस्स ॥११॥
माणुन्नया वि पुरिसा, ओमंथिज्जंति दुट्ठमहिलाहिं । जह अंकुसेण करिणो, निसियाविज्जंति बलिणो वि ॥१२॥
सुव्वंति य महिलऽत्थे, लोगे जुज्झाइं बहुपयाराइं । भयजणयाइं जणाणं, भारहरामायणाऽऽईसु ॥१३॥
नीयंगमाहिं सुपओहराहिं, उप्पित्थमंथरगईहिं । महिलाहिं निन्नयाहिं व, गिरि व्व गरुया वि भिज्जंति ॥१४॥
सुट्ठु वि जियासु सुट्ठु वि पियासु, सुट्ठु वि परुढपेमासु । महिलासु भुयंगीसु य, वीसंभं नाम को कुणइ ॥१५॥
वीसंभनिब्भरं पि हु, उवयारपरं परुढपणयं पि । कयविप्पियं पियं झत्ति, निंति निहणं हयाऽऽसाओ ॥१६॥
सीमन्तिणीण सीमं, दोसाण लहंति नेय विउसा वि । जं गुरुदोसाण जए, ताओ च्चिय होंति सीमाओ ॥१७॥
रमणीयदंसणाओ, सूमालंऽगीओ गुणनिबद्धाओ । नवमालइमाला इव, हरंति हिययं महिलियाओ ॥१८॥
किंतु महिलाण तासिं, दंसणसुंदेरजणियमोहाणं । आलिंगणमऽचिरा देइ, वज्जमालाण व विणासं ॥१९॥

1. असीअ = असित = अनियन्त्रित ।

निक्कवडपेमपरवसमणो वि, सोमालियाए नरनाहो । पंगुलहेउं छूढो, नईए गंगाऽभिहाणाए ॥२०॥

तहाहि— "सुकुमारिकादृष्टान्तः"

नयरम्मि वसन्तपुरे, जियसत्तुनराऽहिवो जयपसिद्धो । सोमालियाऽभिहाणा, भज्जा निप्पडिमरुवा से ॥२१॥

दढमऽणुरागपराजिय-हियओ सो तीए सद्धिमऽणवरयं । परिचत्तरज्जकज्जो, कीलंतो बोलइ कालं ॥२२॥

रज्जं च विसीयंतं, दट्ठुं मंतीहिं तीए सह सहसा । निच्छूढो सो पुत्तो य, तस्स रज्जम्मि अहिसित्तो ॥२३॥

जियसत्तू पुण मग्गे, गच्छंतो निवडिओ अडविमज्झे । तन्हाऽऽउराए देवीए, मग्गिओ पाणियं पाउं ॥२४॥

ओसहिवस-अविणस्सिर-भुयरुहिरं पाइया य नरवइणा । मा बीहेज्ज त्ति विचिं-तिरेण अच्छीणि ठइऊण ॥२५॥

पुणरऽवि छुहाऽभिभुया, ऊरुं छेत्तुं असाविया मंसं । संरोहिणीए ऊरू, पुणन्नवो तक्खणं च कओ ॥२६॥

पत्ताणि दूरनयरे, तस्साऽऽभरणेहिं नरवई ताहे । नीसेसकलाकुसलो, वाणिज्जं काउमाऽऽढत्तो ॥२७॥

दिन्नो य तीए बीयो, पंगू णेणं सुनिव्वियारो त्ति । गीयच्छलियकहाऽऽईहिं, नवरि तेण[1]ऽज्जिया देवी ॥२८॥

जाया तदेगचित्ता, भत्तारोवरि गया पओसं च । अवरम्मि अवसरम्मि, उज्जाणगओ सुवीसत्थो ॥२९॥

जियसत्तू पाइत्ता, पभूयतरमइरमऽमरसरियाए । पक्खित्तो किर तीए, तं पंगुलमऽभिसरंतीए ॥३०॥

इय नियमंससोणिय-पणामणेणं पि पीणियंऽगीओ । विस्सुमरिओवयाराओ, निंति निहणं हयाऽऽसाओ ॥३१॥

पाउसकालनईउ व्व, जाओ निच्चं पि कलुसहिययाओ । धणहरणकयमईओ, चोरो व्व सकज्जगरुयाओ ॥३२॥

वग्घि व्व घोररुवाओ, ताओ संझ व्व चवलरागाओ । मयभिंभलाओ णिच्चं, गयाऽऽवलीओ व्व महिलाओ॥३३॥

अलिएहिं हसियभणिएहिं, अलियरुन्नेहिं अलियसवहेहिं । विवसं कुणंति चित्तं, नरस्स सुवियक्खणस्साऽवि ॥३४॥

महिला पुरिसं वयणेहिं, हरइ हियएण हणइ निक्करुणा । अमयमइया व वाया, विसमयमिव होइ हिययं से॥३५॥

[2]सोयसरि दुरियदरी, कवडकुडी महिलिया किलेसकरी । वइरविरोयणअरणी, दुक्खखणी सोक्खपडिवक्खा ॥३६॥

एत्तो च्चिय मायरमऽवि, ससं पि धूयं पि नेव एगंते भासिंति महासत्ता, मा सवियारं मणो होहि ॥३७॥

अविहियपरियम्मो सम्मं, को नाम नामिउं तरइ । वम्महसवरसरोहे, दिट्ठिच्छोहे मयच्छीणं ॥३८॥

घणमालाओ व समुन्नमंत-सुपओहराओ वड्ढंति । मोहविसं महिलाओ, गोणसगरलं व पुरिसस्स ॥३९॥

परिहरह तहा तासिं, दिट्ठिं दिट्ठिविसस्स व अहिस्स । पायं तीए निवाओ, चरित्तपाणे हणइ जम्हा ॥४०॥

महिलासंसग्गीए, अग्गीए घयं व अप्पसारस्स । मयणं व मणो मुणिणो वि, हंत सिग्घं चिय विलाइ ॥४१॥

जइ वि परिचत्तसंगो, तवतणुयंऽगो तहा वि परिवडइ । महिलासंसग्गीए, कोसाभवणुसिओ व्व रिसी ॥४२॥

"सिंहगुफावासीमुनिदृष्टान्तः" —

गुरुविहियथूलभद्दोव-वूहणुप्पन्नमच्छरुच्छाहो । किर उवकोसघरम्मि, वासावासम्मि वट्टन्तो ॥४३॥

संभूयविजयसिस्सो, दुक्करतवसत्तिसमियमयराओ । सीलोवरक्खणट्ठा, उवकोसाए, सुवेसाए ॥४४॥

सवियारहसियभासिय-चंकमणऽद्धऽच्छीपेच्छियाऽऽइहिं । तह विहिओ लीलाए, [3]साऽऽयत्तो जह लहुं जाओ॥४५॥

अप्पुव्वसाहुसयसहस-मुल्लकंबलगदाइनरवइणो । पासम्मि पेसियो रयण-कंबलस्सोवलंभट्ठा ॥४६॥

इय संजमजीवियहरण-बद्धलक्खाण विहियदुक्खाण । परमत्थचिंतणाए, अरीण नारीण न विसेसो ॥४७॥

तहा—

सिंगारतरंगाए, विलासवेलाए जोव्वणजलाए । पहसियफेणाए मुणी, नारिनईए न [4]वुब्भन्ति ॥४८॥

विसयजलं मोहकलं, विलासबिब्बोयजलयराऽऽइन्नं । मयमयरं उत्तिन्ना, तारुन्नमहऽन्नवं धीरा ॥४९॥

पासो व्व बंधिउं जे, छेत्तुं महिला असि व्व पुरिसस्स । सल्लं व सल्लिउं जे, विमोहिउं इंदजालं व ॥५०॥

फालेउं करवत्तं व, होइ सूलं व महिलिया भेत्तुं । पुरिसस्स खुप्पिउं क-द्दमो व्व मच्चु व्व मरिउं जे ॥५१॥

खेलाऽऽलीढा तुच्छ व्व, मच्छिया दुक्करं विमोएउं । इत्थीसंसग्गीओ, अप्पा णो पुरिसमेत्तेण ॥५२॥

सव्वत्थ इत्थिवग्गम्मि, अप्पमत्तो सया अवीसत्थो । नित्थरइ बंभचेरं, तव्विवरीओ न नित्थरइ ॥५३॥

महिलाणं जे दोसा, ते पुरिसाणं पि होंति नीयाणं । तत्तो अहिगतरा वा, तेसिं बलसत्तिमंताणं ॥५४॥

1. अज्जिया = वशीकृता । 2. सोयसरि = शोकसरित् । 3. साऽऽयत्तो = स्वायत्तः = स्वाधीनः । 4. वुब्भन्ति = उह्यन्ते

ता सीलरक्खगाणं, पुरिसाणं निंदियाउ महिलाउ । सीलं रक्खंताणं, महिलाणं निंदिया पुरिसा ॥५५॥
किं पुण गुणकलियाओ, महिलाओ दूरयित्थयजसाओ । तित्थयरचक्किहलहर–गणहरसप्पुरिसजणणीओ ॥५६॥
सीलवईओ सुव्वंति, महीयले पत्तपाडिहेराओ । नरलोयदेवयाओ, चरमसरीराओ पुज्जाओ ॥५७॥
ओहेण न वूढाओ, जलंतघोरऽग्गिणा न दड्ढाओ । सीहेहिं सावएहिं य, परिहरियाओ अपावाओ ॥५८॥
ता सव्वहा न एयं, वोत्तुं जुत्तं जहा महिलियाओ । अविसेसेणं हौंति, नियमेणं सीलचियलाओ ॥५९॥
किंतु भवे मोहवसा, जीवो सव्वो वि चेव दुस्सीलो । नवरं सो महिलाणं, पाएण जमुक्कडो होइ ॥६०॥
तेणेयं पन्नवणं, पडुच्च वुच्चंति थीकया दोसा । ते य परिचिंतयंतो, विसएसु विरज्जए पुरिसो ॥६१॥
ते सुकयसालिणो च्चिय, नियंविणीणं वसंति जे हियए । ताओ न जाण ते पुण, हौंति सुराणं पि नमणिज्जा॥६२॥
इय भाविऊण भावेण, सव्वहा अत्तणो हियऽत्थीहिं । एत्थऽत्थे अच्चत्थं, अपमत्तेहिं भवेयव्वं ॥६३॥
एमाऽऽइणा कमेणं, सीसे अणुसासिऊण मुणिवसभो । संपइ पवत्तिणिं पि हु, अणुसासइ समयनीईए ॥६४॥

"प्रवर्त्तिन्यैः अनुशास्तिः" —

जइ वि तुमं कुसल च्चिय, सव्वत्थ वि तहवि अम्ह अहिगारो । सिक्खादाणे तेणं, देवाऽणुपिए! पियं भणिमो॥६५॥
संपत्ता इय पयविं, समत्थगुणसाहणम्मि गरुययरीं । ता तीए उत्तरोत्तर–वुड्ढिकए कीरउ पयत्तो ॥६६॥
अविय—

"साध्वीवर्गानुशास्तिः"

सुत्तऽत्थोभयरुवे, नाणे [1]नाणुतकिच्चवग्गेसु । सत्ति अइक्कमित्ता वि, उज्जमो किर तुमे किच्चो ॥६७॥
पावाओ वि पवित्ती, सुभम्मि परिणामसुंदरा पायं । किं पुण संवेगाओ, ता संवेगे य जइयव्वं ॥६८॥
सुचिरं पि तवो तवियं, चिन्नं चरणं सुयं च बहु पढियं । संवेगरसेण विणा, विहलं जं ता तदुवएसो ॥६९॥
तहाहि—
सन्नाणाऽऽइगुणेसु, पयत्तणेणं इमाण समणीणं । सच्चं पवत्तिणि च्चिय, जह होसि तहा जएज्ज तुमं ॥७०॥
सोहग्गनट्टरुवाऽऽइ–विविहविन्नाणरागरत्ताओ । लीयंति लोयदिट्ठीओ, रंगगयनट्टियाए जहा ॥७१॥
सन्नाणपमुहबहुविह–सद्धम्मगुणाऽणुरागरत्ताओ । नाणादेससमुब्भव–विसालकुलसंपसूयाओ ॥७२॥
देवाऽणुपिए! पिइमाइणो वि, मोत्तूण तह इमाओ वि । पावियपवत्तिणिपय–रम्माए तुह समल्लीणा ॥७३॥
तम्हा जह स च्चिय नच्चणीह, संजससदिट्ठिदाणेण । भणियगुणपयडणेण य, पेच्छगदिट्ठीओ पीणेइ ॥७४॥
संजसदिट्ठिपसाएण, धम्मगुणदाणओ य तह निच्चं । सम्मं तुमं पि पीणेज्ज, अज्जियाओ धुवमिमाओ ॥७५॥
नियगुणेहिं महग्घं, सियवियासं ससिकलं जह कलाओ । कमसो समल्लियंति, पयइहिमहारधवलाओ ॥७६॥
तह तुह वि तहाविहनिय–गुणेहिं अग्घाऽरिहाए लोगम्मि । एयाउ समल्लीणा पयइसुधवलुज्जलगुणाओ ॥७७॥
जह ताहिं तीए वुड्ढी, मूलाऽऽधारो उ ताण सा जह य । न घडइ ठिइ वि जह वा, तयं विणा ताण थेवं पि॥७८॥
तह तुह इमाहिं वुड्ढी, मूलाऽऽधारो तुमं पुण इमाण । सज्जणसलाहणिज्जा, ठिई वि न विणा तुममिमासिं॥७९॥
तहा—
सा चेव चंदलेहा, कलाहिं रहिया विरायए न तहा । जह तह ताओ वि न तं, विणा तहा जह विरायंति ॥८०॥
एवं तुमं पि एत्थं, इमाहि रहिया विरायसे न तहा । एयाओ वि य न तहा, राइस्संति विणा तुमए ॥८१॥
तम्हा निव्वाणपसाहगाण, जोगाण साहणविहीए । सम्मं सहाइणीए, होयव्वं सइ इमाण तए ॥८२॥
तह वज्जसिंखला इव, मंजूसा इव सुनिबिडवाडी व । पायारो व्व हवेज्जसु, तुममऽज्जाणं पयत्तेण ॥८३॥
अन्नं च विद्दुमलया, मुत्तासुत्तीउ रयणरासीउ । अइमणहराउ धारइ, न केवलाओ जलहिवेला ॥८४॥
किंतु जलसिप्पिणीउ, भेरीओ वराडियाऽऽइयाओ वि । [2]जलजोणित्तसमत्ता, असुंदराओ वि धारेइ ॥८५॥
एवं राईसरसेट्ठि–पमुहपुत्तीओ पउरसयणाओ । बहुपढियपंडियाओ, [3]सवग्गसयणीओ जाओ य ॥८६॥
मा ताओ चेव तुमं, धारेज्जसु किंतु तदियराओ वि । संजमभरवहणगुणेण, जेण सव्वाउ तुल्लाओ ॥८७॥
अवि नाम जलहिवेला, ताओ धरिउं कयाइ उज्झइ वि । निच्चं पि तुमं तु धरेज्ज, चेव एयाओ धन्नाओ ॥८८॥

1. नाणुत्त = ज्ञानोक्त । 2. जलयोनित्वसमत्वात् । 3. स्ववर्गश्रयिण्यः ।

अन्नं च दुत्थियाणं, दीणाणमऽणक्खराण विगलाणं । ऊणहिययाण निब्बंध-याण तह लद्धिरहियाणं ।।८९।।
पयइनिराऽऽदेयाणं, विन्नाणविवज्जियाण अमुहाणं । असहायाण जरापरि-गयाण निब्बुद्धियाणं च ।।९०।।
भग्गविलुग्गंऽगीण वि, विसमाऽवत्थगय [1]खंढखरडाणं । इयरूवाण वि संजम-गुणेक्करसियाण समणीणं ।।९१।।
गुरुणी य अंगपडिचारिग व्व, धावी य पियवयंसी य । होज्ज भगिणी य जणणी य, अहव पिइमाइभाया य।।९२।।
तह दढफलियमहादुम-साह व्व तुमं पि उचियगुणसहला । समणीजणसउणिसाहा-रणा दढं होज्ज किं बहुणा।।९३।।
एवमऽणुसासिउणं, पवत्तिणिं अज्जियाउ अणुसासे । जह एसो तुम्ह गुरू, बंधू य पिया य माया य ।।९४।।
एए वि महामुणिणो, सहोयरा जेट्ठभायरो व सया । तुम्हं देवाणुपियाण, परमवच्छल्लतल्लिच्छा ।।९५।।
ता गुरुणो मुणिणो वि य, मणसा वयसा तहेव काएणं । न य पडिकूलेयव्वा, अवि य सुबहुमन्नियव्वा उ ।।९६।।
एवं पवित्तिणी वि हु, अखलियतव्वयणकरणओ चेव । सम्ममऽणुवत्तणिज्जा, न कोवणिज्जा मणागं पि ।।९७।।
कुविया वि कहवि तुम्हं, सदोसपडिवत्तिपुव्वमऽणुवेलं । खामेयव्वा एसा, मिगावईए व्व नियगुरुणी ।।९८।।
एसा सिवपुरगमणे, सुपसत्था सत्थवाहिणी जं भे । एसा पमायपरचक्क-पेल्लणे पहु (हु) यपडिसेणा ।।९९।।
सिक्खालक्खणअक्खंड-खीरधारापयाणथेणुसमा । अन्नाणंऽधाण तहा, सत्ताणंऽजणसलागाओ ।।४५००।।
मालइकलिया इव महुयरीण, नलिणी व रायहंसीण । वणराई इव सउणीण, सेवणीया इमा तुम्ह ।।१।।
तह केलिकलहविगहा-पमायपरचक्कमऽक्कमित्ताणं । परलोगकिच्चनिच्चु-ज्जमाहिं जम्मो गमेयव्वो ।।२।।
जेट्ठकणिट्ठसहोयर-भगिणिगणेण व परोप्परं सम्मं । संजमजोगपसाहण-सहाइणीहि य भवियव्वं ।।३।।
तह निहुयं चंकमणं, निहुयं हसणं पयंपियं निहुयं । सव्वं पि चेट्ठियं निहुय-मऽहव तुम्हेहिं कायव्वं ।।४।।
बाहिं उवस्सयाओ, पयं पि नेगागिणीहिं दायव्वं । वुड्ढज्जियाजुयाहिं य, जिणजइगेहेसु गंतव्वं ।।५।।
एक्केक्कवग्गमेवं, अणुसासित्ताण ताणमेव पुरो । सव्वेसिं साहारण-मऽह सूरी देइ अणुसट्ठिं ।।६।।
भत्तीइ य सत्तीइ य, वेयावच्चुज्जया सया होह । आणत्ति[2]निरय त्ति य, सबालवुड्ढाऽऽउले गच्छे ।।७।।
सज्झायतवाऽऽईणं च, जेणं तं चिय पहाणयं बेंति । सव्वं किर पडिवाई, वेयावच्चं अपडिवाई ।।८।।
भरहो बाहुबली वि य, दसारकुलनंदणो य वसुदेवो । वेयावच्चाऽऽहरणा, तम्हा [3]पडितप्पह जई णं ।।९।।
तहाहि—

"वैयावृत्तस्य माहात्म्यम्"

रणसवडम्मुहपडिभड-भिडणुब्भडरायचक्कमऽक्कमिउं । छक्खंडखोणिमंडल-साहणअप्पडिहयपयावं ।।१०।।
चउसट्ठिसहस्ससुरूव-पवररामाऽभिराममऽच्चत्थं । पउरकरितुरयपाइक्क-संकुलं नवनिहिसणाहं ।।११।।
[4]ईसि सवियासलोयण-पलोयणाओ नमंतसामंतं । नियपओयणनिरवेक्ख-जक्खकीरंतसांणिज्झं ।।१२।।
जं चक्कवट्टिरज्जं, भरहो भरहम्मि पाविओ पुव्विं । तं पुव्वजम्मजइजण-वेयावच्चस्स फलमाऽऽहु ।।१३।।
जं सो वि महप्पा पबल-भुयबलुव्वूढधरणिभारो वि । पउररणंऽगणपविढत्त-सरयससिनिम्मलजसो विं ।।१४।।
पडिवक्खसिरविदारण-निक्किवविक्कंतचक्कपाणी वि । मन्ने किमेस चक्कि त्ति, रोविओ संसयतुलाए ।।१५।।
दिट्ठीजुद्धाऽऽईहिं, निज्जिणिओ तियसलोयपच्चक्खं । लीलाए बाहुबलिणा, पयंडभूयदंडबलनिहिणा ।।१६।।
तं पि सुसाहुजणोचिय-वेयावच्चस्स विलसियमऽसेसं । पवरोत्तरोत्तरफलु-प्पायणकप्पदुमं बेंति ।।१७।।
जं च नियरूवचंगिम-निज्जियजयपयडदप्पकंदप्पा । अहमहमिगाए मिगलो-यणाहिं विज्जाहरसुयाहिं ।।१८।।
उत्तुंगथणत्थलसालिणीहिं, नवजोव्वणाऽभिरामाहिं । छणरयणीससहरवयणि-याहिं मयणाऽऽउरंऽगीहिं ।।१९।।
जह तह परिभमिरो वि हु, दसारकुलकुमुयकोमुइमयंको । वसुदेवो तह तइया, उव्वूढो गाढपणयाहिं ।।२०।।
तं पि सुतवस्सिसिक्खग-बालगिलाणाऽऽइगोयरस्स फलं । निज्जियचिंतामणिणो, वेयावच्चस्स नीसेसं ।।२१।।
इय भो महाऽणुभावा!, वेयावच्चं अचिंतमाहप्पं । जो न करेइ समत्थो, संतो तं जाण सुहविमुहं ।।२२।।
तित्थयराऽऽणाकोवो, सुयधम्मविराहणा अणाऽऽयारो । अप्पा परो पवयणं, तेणं दूरुज्झिया होंति ।।२३।।

1. खंढ = कुब्ज (अनुमानात्) खरडाणं = हीनजातीनाम् । 2. निज्जर पाठां० अथवा आज्ञप्तिनिरताः ।
3. पडितप्पह जई णं = प्रतितर्पयत यतीन् ननु। 4. ईसि = ईषत् ।

"संसर्गजन्यगुणदोषवर्णनम्" —

किं च अहुंतगुणकए, हुंतगुणाणं तु वुड्ढिकरणाय । सुयणेहिं चेव सद्धिं, सया वि संगं करेज्जाह ॥२४॥
हुंतगुणनासणभया, अहुंतगुणदूरतरगमभएणं । दोसऽल्लियणभएण य, दुज्जणसंगं विवज्जेह ॥२५॥
भाविज्जइ जइ दव्वेण, नवघडो सुरहिणेयरेणं वा । ता गुणदोसेहिं नरो, भाविज्जइ किं न परसंगा ॥२६॥
दुज्जणसंसग्गीए, पायं सुयणो वि नियगुणं चयइ । संसग्गीए अग्गिस्स, जह जलं सीयलत्तगुणं ॥२७॥
दुज्जणसंसग्गीए, संकिज्जइ सज्जणो वि दोसेहिं । चंडालगिहे दुद्धं, पिबंतओ बंभणो व्व जणे ॥२८॥
वेरग्गवं पि दुज्जण-जणसंसग्गीए भाविओ पायं । न रमइ सज्जणमज्झे, रमइ य दुज्जणजणस्संऽतो ॥२९॥
कुसुममऽगंधं पि जहा, देवयसेस त्ति कीरए सीसे । तह सुयणमज्झवासी, पूइज्जइ दुज्जणो वि जणो ॥३०॥
अन्नं पि तहा वत्थुं, जं जं चरणगुणनासणं कुणइ । तं तं परिहरह तओ, होहिह दढसंजमा तुब्भे ॥३१॥
निच्चं पासत्थाऽऽईहिं, संथवं पि य पयत्तओ चयह । पुरिसो संसग्गिवसेण, [1]तम्मओ होइ अचिरेण ॥३२॥
तहाहि—
संविग्गस्स वि तस्संगईए, पीई तत्तो वि वीसंभो । सइ वीसंभे य रई, होइ रईए य तम्मयया ॥३३॥
तत्तो लज्जाविगमो, पवत्तणं निव्विसंकमऽसुहऽत्थे । पियधम्मो वि हु एवं, परिभस्सइ संजमाओ लहु ॥३४॥
संविग्गाण उ मज्झे, अप्पियधम्मो वि कायरो वि नरो । उज्जमइ चरणकरणे, भावण-भय-माण-लज्जाहिं ॥३५॥
संविग्गो पुण तस्संगमेण, सविसेसगुणजुओ नियमा । जायइ जह कप्पूरो, सुरभितरो मिगमए मिलितो ॥३६॥
पासत्थसयसहस्साओ, हंदि एक्को वि वरमिह सुसीलो । जं संसियाण दंसण-नाणचरित्ताणि वड्ढंति ॥३७॥
वरमिह कुसीलकयपूयणाओ, संजयकओऽवमाणो वि । पढमाउ सीलविगमो, संपज्जइ न उण इयराओ ॥३८॥
कुसलेहिं पसमियं पि हु, कुसीलसंसग्गिमेहवद्दलए । वंतरविसं व कुप्पइ, पुणो वि मुणिणो पमायविसं ॥३९॥
तम्हा पियदढधम्मेहिं, [2]वज्जभीरुहिं कुणह संसग्गिं । उज्जमइ मंदधम्मो वि, तप्पभावा जओ भणियं ॥४०॥
"नवधम्मस्स पाएणं, धम्मे न रमइ मई । वहए सो वि संजुत्तो, गोरिवाऽविधुरं धुरं" ॥४१॥
संवासं सीलगुणड्ढएहिं, जो संकहं वियड्ढेहिं । पीइं अलुद्धबुद्धीहिं, कुणइ सो कुणइ अप्पहियं ॥४२॥
आसयवसेण एवं, पुरिसा दोसं गुणं च पावेंति । तम्हा पसत्थगुणमेव, आसयं अल्लिएज्जाह ॥४३॥
कन्नकडुयं पि पत्थं, परोप्परं वागरेज्ज अदुट्ठा । कडुओसहं व होही, परिणामे सुंदरं तं खु ॥४४॥
सगणे व परगणे वा, परपरिवायं च मा करेज्जाह । अच्चाऽऽसायणविरया, होह सया पावभीरू य ॥४५॥
अन्नं च सव्वहा तह, परिकम्मह अप्पयं पयत्तेण । जह तुम्ह गुणपसूया, कित्ती सव्वत्थ वित्थरइ ॥४६॥
एए निम्मलसीला, बहुसुया नयपरा अणुवतावी । करणगुणसुट्ठिय त्ति य, धन्नाणं घोसणा भमइ ॥४७॥
एसो य मए तुम्हं, मग्गमऽजाणाण मग्गदेसरओ । चक्खू य अचक्खूणं, सुवाहिविहुराण वेज्जो व्व ॥४८॥
असहायाण सहाओ, भवगत्तगयाण हत्थदाया य । दिन्नो गुरू गुणगुरू, अहं च परिमोक्कलो इन्हिं ॥४९॥
एयस्स य पयमूलं, मोत्तूण कयाइ कत्थइ तुम्ह । गंतुं जुत्तं न वरं, वयणेण इमस्स जइ कहवि ॥५०॥
एयाऽऽएसगएहि वि, कहिंचि पुन्नाऽऽगरो गुरू एस । भावेण न मोत्तव्वो, आणानिद्देसनिरएहिं ॥५१॥
सामी भडेहिं अंधेहिं, कड्ढओ पंथिएहिं सत्थाहो । जह न विमुच्चइ एसो, तह तुब्भेहि वि न मोत्तव्वो ॥५२॥
एयम्मि सारणावार-णाऽऽइदाणे वि नेव कुवियव्वं । को हि सकन्नो कोवं, करेज्ज हियकारिणि जणम्मि ॥५३॥
कडुयं पि कहवि भणियं, सप्पणयं तमऽमयं व मन्नंता । मा कुलवहु व्व तुम्हे, विणयं एयम्मि छड्डिहिह ॥५४॥
गुरुछंदाऽऽणंदरुई, गुरुदिट्ठिनिवायनियमियपयारा । गुरुरुइयविणयवेसा, कुलवहुसरिसा अओ सीसा ॥५५॥
भाविगुणाऽवेक्खाए, कयगेणियरेण वा वि कोवेणं । आबद्धभीमभिउडी-भीसणयरभालबद्धो वि ॥५६॥
होऊण कह वि तुम्हे, जइ वि इमो कज्जकारणविहून्न । निब्भच्छइ निच्छुभइ य, तह वि इमो चेव सिंगारो ॥५७॥
अम्हं ति मन्नमाणा, सुनिउणतरविणयजोगओ तुम्हे । अमुमेव पसाएज्जह, एवं हिययम्मि भावेंता ॥५८॥
सब्भावगब्भबहुविह-तहाविहप्पहुपसायणप्पवणे । पुणरुत्तमऽवंझफले, विविहोवाए नियमणम्मि ॥५९॥

1. तम्मओ = तन्मयः = तद्रूपः । 2. अवद्यभीरुभिः ।

चिंतिंताणं थी जीविएणं, [1]भव्वाण ताण जाण इहं । आकंपियपासजणं, खणं पि पहुणो न कुप्पंति ॥६०॥
तहा—
जह सागरम्मि मीणा, संखोभं सागरस्स असहंता । निंति तओ सुहकामी, निग्गयमेत्ता विणस्संति ॥६१॥
एवं गच्छसमुद्दे, तुब्भे गुरुसारणाऽऽइवीइहया । मा सुहकामी [2]नीहिह, इहरा मीण व्व नासिहिह ॥६२॥
एसो तुम्हाण पहू, पभूयगुणरयणसायरो धीरो । नेयो एस महप्पा, तुम्ह भवाऽऽविनिवडियाणं ॥६३॥
ओमो समराइणिओ, अप्पयरसुओऽहव त्ति धीरमिमं । परिभविहिह मा तुब्भे, गणि त्ति इन्हिं दढं पुज्जो ॥६४॥
एयस्स नाणनिहिणो, वयणं न कयाइ लंघणीयं भे । वायाए तं पडिच्छिय, कायव्वं कम्मुणा सम्मं ॥६५॥
जम्हा इमस्स उवमा, न विज्जए बंधुणा न पिउणा वि । न य जणणीए वि तहा, निक्कारणवच्छलस्स जए ॥६६॥
तम्हा एसो च्चिय निच्च-मेव धम्मेक्कबद्धबुद्धीहिं । आमरणंऽतं ताणं, सरणं च पवज्जियव्वो त्ति ॥६७॥
मोक्खऽत्थिणो हि तुब्भे, न य तदुवाओ गुरुं विणा अन्नो । ता गुणनिही इमो च्चिय, सेवेयव्वो हु तुम्हाणं ॥६८॥
अन्नं च इमस्स गिरा, अन्नोन्नुवगारिभावओ सम्मं । तुम्हेहिं वट्टियव्वं, विवज्जए जं गुणो नत्थि ॥६९॥
तहा—
तुम्बं विणा न अरया, न पुप्फपत्ताइं जह विणा चिंटं । बंधंति चयं तुब्भे वि, एवमेयं विणा नूणं ॥७०॥
तुंबं पि अरयरहियं, चिंटं पि य खुडियदलचयं न जहा । रेहइ न य कज्जकरो, पभू वि एवं अपरिवारो ॥७१॥
जइ पुण होज्ज परोप्पर-साऽवेक्खा अवयवा अवयवी य । तो वंछियऽत्थसिद्धी, सोहा वि हवेज्ज चेव तहा ॥७२॥
नासा मुहेण मुहमऽवि, नासाए सोहए जह तहेव । वरपरिवारेण पहू, परिवारो वि हु पवरपहुणा ॥७३॥
तह रक्खणीयरक्खग-भावं वणसीहविसयमऽन्नोन्नं । परिभाविऊण सम्मं, अन्नोन्नं वट्टियव्वं भे ॥७४॥
किं बहुणा—
भमियव्वे जिमियव्वे, भणिअव्वे सव्वचिट्ठिअव्वे य । होज्जह अईव [3]निहुया, एसो उवएससारो त्ति ॥७५॥
एवमुवइट्ठमऽम्हेहिं, तुम्ह करुणाए इट्ठयाए य । ता जह न हवइ विहलं, तह तुब्भेहिं विहेयव्वं ॥७६॥

"शिष्यस्य गुरुं प्रतिकृतज्ञता" —

अह ते धरपीढलुठंत-सीसवीसन्तगुरुपयंऽबुरुहा । आणंदंऽसुपवाहं, परिमुंचंता गुरुण पुरो ॥७७॥
तह मन्नुपुन्नमंथर-कंठसमुट्ठिंतगग्गरगिरिल्ला । गाढधरिज्जंतुण्हुण्ह-दीहनीहंतनीसासा ॥७८॥
कल्लाणं मंगलयं, देवयमऽह चेइयं ति मन्नंता । इच्छामो अणुसट्ठिं ति, जंपिउं इय पुणो बिंति ॥७९॥
भयवं! अणुग्गहो णे, जं नियदेहं व पालिया तुमए । सारणवारणपडिचो-यणाहिं संठाविया मग्गे ॥८०॥
अचक्खुणो वि सच्च-क्खुणो दढं सहियया अहियया वि । निक्कन्ना वि सकन्ना, अइदुल्लहलद्धसिद्धिपहा ॥८१॥
विहिया अम्हे तुम्हेहिं, संपयं पुण पणट्ठसन्नाणा । तुम्ह वियोए सामिय!, हा अम्हे कह भविस्सामो ॥८२॥
सव्वगज्जीवहिए, थेरे सव्वजगजीवनाहम्मि । पवसंते य मरंते, ही! देसा सुन्नया होंति ॥८३॥
सीलड्ढगुणड्ढेसुं, पहूसु अपरोपतावकारीसु । पवसन्तमरन्तेसु य, देसा ओखंडिया होंति ॥८४॥
वियलियबलेण जरजज्जरेण, गयदंतपंतिएणा वि । अज्ज वि कुलं सणाहं, जूहाऽहिव! [4]पइं चरंतेण ॥८५॥
सव्वस्सदायगाणं, समसुहदुक्खाण निप्पकंपाणं । दुक्खं खु विसहिउं जे, किर [5]प्पवासो वरगुरूणं ॥८६॥
इय कुनयकुरंगयवागुराए, संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥८७॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमणे भणियं, तइयं अणुसट्ठिपडिदारं ॥८८॥
अणुसट्ठिपयाणे वि हु, गणिणो सगणट्ठियस्स न समाही । होज्ज त्ति बेमि एत्तो, परगणसंकमणविहिदारं ॥८९॥

"परगणसङ्क्रमणाय अनुमतियाचनम्" —

अह स महप्पा पुव्व-प्पदंसिओ मुणिवई नियसूरिं । गणमऽवि पुव्वुवदिट्ठा-ऽणुसासणाऽणुगुणकिच्चपरं ॥९०॥
पुणरऽवि वाहरिऊणं, मयंकजोन्हापवाहसिसिराए । आणंदसंदिराए, गिराए एवं समुल्लवइ ॥९१॥
हंभो देवाऽणुपिया!, संपइ तुम्हे पडुच्च जाओ हं । सुत्ताऽऽइपयाणेणं, सम्मं कयसव्वकायव्वो ॥९२॥

1. मिच्चाण पाद्धां० । 2. नीहिह = निर्गच्छत । 3. निहुया = निभृताः । 4. पइं = त्वया विचरता । 5. प्रवासः = वियोगः

ता एत्तो अवरं मह, उवओगवओ वि तुम्ह विसयम्मि । विप्फुरइ किच्चमुवद-सियव्वमऽच्चंतथोवं पि ॥९३॥
ता एत्तो वि हु पुव्वं, निव्विग्घाऽऽराहणाए सिद्धिकए । सम्मऽणुमन्नह ममं, परगणसंकमणकरणाय ॥९४॥
भुज्जो भुज्जो मह संतियं च, मिच्छा मि दुक्कडमियाणिं । हवउ विणीयाण वि भे, गुरुचरिं गरुयभत्तीण ॥९५॥
अह ते वि सोगभरसं-गिलंतदढमन्नुपुन्नगलरंधा । नीरंधबाहजलबिंदु-पूररुब्भंतनयणपुडा ॥९६॥
सूरिपयपंकउच्छंग-संगिसीसा सगग्गयं सीसा । जंपंति पहू! किं सयण-सल्लतुल्लं समुल्लवह ॥९७॥
एवं तुब्भे अच्चंत-दूस्सहं जइ वि सव्वहा अम्हे । न तहा उवयारकरा, न तहा दक्खा न तह गीया ॥९८॥
न तहा जोग्गा गुरुपाय-पंकयाऽऽराहणस्स न तहा य । पज्जंतसमयसंसिय-संलेहणपमुहविहिकुसला ॥९९॥
तह वि य एगंतेणं, पराऽणुकंपापरेक्कचित्तेहिं । परऽणुग्गहप्पहाणेहिं, पत्थणाभंगभीरूहिं ॥४६००॥
तुब्भेहिं नेव भयवं!, मोत्तुं उचिया जओ इमं जूहं । मज्झट्ठिएहिं रेहइ, अज्ज वि भे चलणकमलेहिं ॥१॥
ता कालचक्कनिवडण-कप्पेणं जंपिएण पज्जत्तं । एएण चिंतिएण वि तुम्हाणऽम्हं सुहट्ठाए ॥२॥
इय तेहिं जंपियम्मि, महुरगिराए गुरु वि वागरइ । हंहो महाऽणुभावा!, परिणयअरिहंतवयणाण ॥३॥
नियमइविहवविभाविय-जुत्ताऽजुत्ताण णेव तुम्हाणं । मणसा वि चिंतिउमिमं, जुत्तं दूरे पयंपेउ ॥४॥
को नाम किर सकन्नो, करेज्ज [1]विक्खंभमुचियपक्खे वि । अहवा किमिमं अरिहंत-भणियसमयम्मि नाऽणुमयं॥५॥
चिरपुरिसेहिं किंवा, न सेवियं किं न कत्थ वि य दिट्ठं । किंच न पेच्छह पडुपवण-पहयधयवडचलं जीयं॥६॥
जेणेवं निरऽवग्गह-मऽसदग्गहमऽणुसरित्तु वागरह । ता मा पडिकूलह सव्व-हा वि मह पत्थुयं अत्थं ॥७॥
इच्चाऽऽइ गुरुगिरं निसुणि-ऊण तं विन्नविंति पुण एवं । भयवं! जइ वि हु एवं, तह वि अलं परगणगमेणं ॥८॥
सगणे च्चिय कुणह समीहि-यऽत्थमेत्थ वि जमऽत्थि गीयत्था । पत्थुयकज्जसमत्था, निव्वूढभरा महामइणो ॥९॥
उच्छाहवुड्ढिजणगा, निक्कंपा भेरवप्पडिभएसु । संविग्गा खंतिखमा, सुविणीया साहुणो णेगे ॥१०॥
एवं सुसाहुभणिओ, को वि हु तत्थेव वंछियं कुज्जा । निद्दिस्समाणगुणदोस-पक्खमऽभिविक्खिउं अवरो ॥११॥
भणियविहीए पुच्छिय, सगणं अब्भुज्जएण भावेण । आराहणाणिमित्तं परगणगमणं कुणइ जम्हा ॥१२॥
सगणे आणाकोवो[१], फरुसवई[२] कलहकरण[३] परिताव[४] । निब्भय[५] सिणेह[६] [2]कोलुणिय[७], झाणविग्घो[८] असमाही[९]॥१३॥
उड्डाहकरा थेरा, कलहकरा खुड्डया खरा सेहा । आणाकोवं गणिणो, करेज्ज तो होज्ज असमाही ॥१४॥
जं तेसु न वावारो, जुज्जइ परगणनिवासिणो गणिणो । ता कह असमाहाणं, आणाकोवम्मि वि कयम्मि ॥१५॥
खुड्डो थेरे सेहे, असंवुडे दट्ठुं भणइ सो फरुसं । पडिचोयणमऽसहंतेहिं, तेहिं सह होज्ज कलहो वि ॥१६॥
तत्तो गणिणो ताण य, होज्जा परितावणाऽऽइया दोसा । तेसु सगणम्मि गणिणो, ममत्तदोसेण असमाही ॥१७॥
रोगाऽऽयंकाऽईहि य, सगणे परियावणाऽऽइ पत्तेसु । गणिणो भवेज्ज दुक्खं, असमाहो वा सिणेहो वा ॥१८॥
तन्हाऽऽइएसु अइदुस्सहेसु, सगणम्मि निब्भओ संतो । जाएज्ज व सेवेज्ज व, अकप्पियं किंचि वीसत्थो ॥१९॥
अज्जाओ अणाहाओ, वुड्ढे य नियंऽकवड्ढिए बाले । पासंतस्स सिणेहो, भवेज्ज अच्चंतियविओए ॥२०॥
खुड्डा व खुड्डिया वा, अज्जाओ च्चिय करेज्ज [2]कोलुणियं । ता होज्ज झाणविग्घो, असमाही वा गणधरस्स ॥२१॥
तहाहि--
भत्ते वा पाणे वा, सुस्सूसाए व सीसवग्गम्मि । कुव्वंतम्मि पमायं, असमाही होज्ज गणवइणो ॥२२॥
एए दोसा गणिणो, पाएण हवंति सगणवासिस्स । भिक्खुस्स वि [3]अप्पसमा, सरेज्ज तम्हा परगणं सो ॥२३॥
संतं पि भत्तिमंतं पि, नियय़ं गच्छं पि छड्डिउं एत्थ । पत्तो एस महप्पा, अम्हे मणसीकरेमाणो ॥२४॥
इइ चिंतिऊण परमाऽऽयरेण, सव्वाए नियसत्तीए । भत्तीए परमाए, वट्टइ से परगणो वि दढं ॥२५॥
गीयत्थो चरणत्थो, पुच्छेऊणाऽऽगयस्स खमगस्स । सव्वाऽऽयरेण सूरी वि, तस्स निज्जामगो होज्जा ॥२६॥
संविग्गऽवज्जभीरुस्स, पायमूलम्मि तस्स विहरंतो । जिणवयणसव्वसारस्स, होइ आराहओ नियमा ॥२७॥
इय सुद्धबुद्धिसंजीवणीए, संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥२८॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमे चउत्थं, भणियं परगणपडिद्दारं ॥२९॥

1. विक्खंभं = विरोधम् । 2. कौलुणिय = कारुण्य । 3. अप्पसमा = अप्रशमाः ।

"सुस्थितगवेषणाद्वारम्" --

परगणसंकमणम्मि वि, जहुत्तसुट्ठियगवेसणाऽभावे । न समीहियऽत्थसिद्धी, ता तं संपई परूवेमि ॥३०॥
अह स महप्पा समय-प्पसिद्धनाएण मुक्कनियगगणो । समरपरिहत्थसंमिलिय-भूरिसेन्नं व निवरहियं ॥३१॥
दूरयरनयरपत्थिय-सत्थं पिव सत्थवाहपरिचत्तं । चरणाऽऽइगुरुणाऽऽगर-गुरुरहियं परगणं मुणिउं ॥३२॥
जोयणसयाणि छ-स्सत्त, वा वि वरिसाण जाव बारसगं । निज्जामगमाऽऽयरियं, समाहिकामो गवेसेज्जा ॥३३॥
सो पुण चरणपहाणो, सरणाऽऽगयवच्छलो थिरो सोमो । गंभीरो कयकरणो, पसिद्धिपत्तो महासत्तो ॥३४॥
आयारवं[१]माऽऽहारवं[२], ववहारो[३]वीलए[४]पकुव्वी[५]य । निज्जव[६]अवायदंसी[७], अपरिस्सावी य[८] बोधव्वो [दारगाहा]॥३५॥
आयारं पंचविहं, चरइ चरावेइ जो निरऽइयारं । उवदंसइ य जहुत्तं, एसो आयारवं नाम ॥३६॥
दसविहठियकप्पम्मि, आचेलक्काऽऽइए य जो निरओ । आयारवं स भन्नइ, पवयणमायासु उवउत्तो ॥३७॥
आयारत्थो दोसे, [1]पयहिय खमगं गुणेसु ठावेइ । आयारत्थो तम्हा, निज्जवगो होइ आयरियो ॥३८॥
चोद्दसदसनवपुव्वी, महामई सायरो व्व गंभीरो । कप्पववहारधारो, भन्नइ आहारवं नाम ॥३९॥
नासेज्ज अगीयत्थो, चउरंगं तस्स लोयसारंगं । नट्ठम्मि य चउरंगे, न य सुलहं होइ चउरंगं ॥४०॥
संसारसायरम्मि, अणंतभवतिक्खदुक्खसलिलम्मि । कह कहवि संसरंतो, लहेइ जीवो मणुस्सत्तं ॥४१॥
तम्मि हि दुल्लहलंभा, जिणवयणसुई य तीए पुण सद्धा । लद्धाए वि सद्धाए, सुदुल्लहो संजमो होइ ॥४२॥
लद्धे य संजमे सो, संवेगकरिं सुइं अपावेंतो । परिवडइ मरणकाले, अकयाऽऽहारस्स पासम्मि ॥४३॥
किंच--
आहारमओ जीवो, कहिं वि आहारविरहिओ संतो । अट्टवसट्टो न रमइ, पसत्थतवसंजमाऽऽरामे ॥४४॥
जिणवयणाऽमयसुइपाणएण, सरसाऽणुसट्ठिवयणेणं । तण्हाछुहाकिलंतो वि, होज्ज झाणम्मि आउत्तो ॥४५॥
पढमेण य दोच्चेण य, बाहिज्जंतस्स तस्स खवगस्स । न कुणइ उवएसाऽऽई, समाहिकरणं अगीयत्थो ॥४६॥
तेण पढमाऽऽइणा पुण, बाहिज्जंतो स कहवि कम्मवसा । कलुणं कालुणियं वा, जायणकिवणत्तणं कुज्जा ॥४७॥
उक्कूवेज्ज व सहसा, निग्गच्छेज्ज व करेज्ज उड्डाहं । गच्छेज्ज व मिच्छत्तं, मरेज्ज असमाहिमरणेण ॥४८॥
एवं च--
इच्छासंपाडणओ, सरीरपरिकम्मकरणओ तह य । अन्नेहिं व उवाएहिं, दव्वक्खेत्ताऽऽइअणुरूवं ॥४९॥
परिजाणइ गीयत्थो, सुयविहिणा कारणं समाहीए । पन्नवणं च तदुचियं, दिप्पइ जह से सुझाणऽग्गी ॥५०॥
मुणइ य फासुयदव्वं, उवकप्पेउं तहा [2]उदिन्नाणं । जाणइ पडियारं वाय-पित्तसिंभाण गीयत्थो ॥५१॥
सम्मं उवायपुव्वं, उस्सग्गऽववायजाणओ सो हु । खमगस्स पयलियं पि हु, चित्तं विहिणा पसामेंतो ॥५२॥
सम्मं समाहिकरणाणि, कुणइ तुट्टं च कहवि कम्मवसा । संधेइ पुण समाहिं, वारेइ असंवुडगिरं च ॥५३॥
जिणवयणसुइपभावा, पावियपसमो पणट्ठमोहतमो । गयपरितोसपओसो, विरागरोसो सुहं झाइ ॥५४॥
निम्महिय मोहजोहं, समच्छरं रागरायमुद्धरिउं । चउरंगबलेण तओ, भुंजइ निव्वाणरज्जसुहं ॥५५॥
गीयत्थपायमूले, होंति गुणा एवमाऽऽइया बहवे । न हु होइ संकिलेसो, जायइ असमा समाही य ॥५६॥
पंचविहं ववहारं, जो जाणइ तत्तओ सवित्थारं । बहुसो य दिट्ठपट्ठा-वओ य ववहारवं नाम ॥५७॥
आणासुयआगमधारणे य, जीए य होंति ववहारा । एएसिं सवित्थारा, परूवणा सुत्तनिद्दिट्ठा ॥५८॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं करणपरिणाममुच्छाहं । संघयणं परियायं, आगमपुरिसं च विन्नाय ॥५९॥
मोत्तूण रागदोसे, ववहारं पट्ठवेइ सो तस्स । ववहारकरणकुसलो, जिणवयणविसारओ धीरो ॥६०॥
ववहारमऽयाणंतो, ववहरणिज्जं च ववहरंतो य । ओसीयइ भवपंके, असुहं कम्मं च आयरइ ॥६१॥
जह रोगिणं न सज्जी-करेइ विज्जो तिगिच्छयाऽकुसलो । तह अव्ववहारविऊ, न सोहिकामं विसोहेइ ॥६२॥
तम्हा संवसियव्वं, ववहारविउस्स पायमूलम्मि । तत्थ हु विज्जा चरणं, समाहिबोहीओ नियमेण ॥६३॥
ओयंसी तेयंसी, वच्चंसी पहियकित्ती आयरिओ । सीहोवमो य भणिओ, जिणेहिं [3]ओवीलओ नाम ॥६४॥

1. पयहिय = प्रहाय = त्यक्त्वा । 2. उदिन्नाणं = उदीर्णानाम् = क्षुधानामित्यर्थः ।
3. ओवीलओ = अपव्रीडकः = लज्जा दूर कराकर प्रायश्चित्त लेने के लिए शिष्य को तैयार करनेवाला ।

निद्धमहुरेहिं हियसंगमेहि, पल्हायणिज्जवयणेहिं । परहियकरणपरायण-मणेण तेणाऽवि मुणिवइणा ॥६५॥
इह पण्णविज्जमाणो, सम्मं पि हु तिव्वगारवाऽऽईहिं । कोई णियए दोसे, सम्मं नाऽऽलोयए खवगो ॥६६॥
तो ओवीलेयव्वो, गुरुणा ओवीलएण सो अहवा । जह उयरत्थं मंसं, वमयइ सीही सियालीए ॥६७॥
तह फरुसगिराहिं अणुज्जयस्स, खवगस्स नीहरइ दोसे । आयरिओ तं कडुओ-सहं व पत्थं भवइ तस्स॥६८॥
सुलहा लोए आयट्ठ-चिंतगा परहियम्मि मुक्कधुरा । आयट्ठं च परट्ठं च, चिंतयंता जए दुलहा ॥६९॥
खवगस्स जइ न दोसे, उग्गालेइ सुहुमे व इयरे वा । ता न नियत्तइ तत्तो, खवगो न गुणे य परिणमइ ॥७०॥
तम्हा गणिणा ओवीलएण, खवगस्स दोससव्वस्सं । उग्गालेयव्वं खलु, तस्स हियं चिंतयंतेण ॥७१॥
सेज्जासंथारोवहि-संभोगाऽऽहारनिक्खमपवेसे । ठाणनिसीयतुयट्टण-विगिंचणुव्वत्तणाऽऽईसु ॥७२॥
अब्भुज्जयचरियाए, उवयारमऽणुत्तरं पकुव्वंतो । सव्वेण आयरेणं च, सव्वसत्तीए भत्तीए ॥७३॥
अप्पपरिस्सममऽगणिय, वट्टइ खवगस्स निच्चपडियरणे । जो आयरियो सो खलु, इह होइ पकुव्वओ नाम ॥७४॥
खवगो किलामियंऽगो, पडियरणगुणेण निव्वुइं लहइ । तम्हा उ निवसियव्वं, खवगेण पकुव्विणो पासे ॥७५॥
संथारभत्तपाणे, अमणुन्ने अह चिरस्स दिन्ने वा । पडिचरगपमाएण य, सेहाऽऽइअसंवुडगिराहिं ॥७६॥
सीउन्हछुहातन्हा-किलामिओ तिव्ववेयणत्तो वा । कुविओ भवेज्ज खवगो, मेरं वा भेत्तुमिच्छेज्जा ॥७७॥
निव्वावएण गणिणा, चित्तं खवगस्स निव्ववेयव्वं । अक्खोभेण खमाए, जुत्तेण पणट्ठमाणेण ॥७८॥
अंगसुए य बहुविहे, नोअंगसुए य बहुविहे चेव । रयणकरंडयभूए, अइनिउणो तह तदऽत्थस्स ॥७९॥
वत्ता कत्ता य दढं, विचित्तसुयधारओ विचित्तकहो । आओवायविहन्नू, मइसंपन्नो महाभागो ॥८०॥
निद्धं महुरं हियसंगमं च, आहरणहेउजुत्तं च । कहइ कहं निव्ववओ, समाहिकरणाय खवगस्स ॥८१॥
खुहियं परीसहुम्मीहिं, साहुपोयं भवोहवुब्भंतं । संजमरयणं निज्जा-मओ व्व निज्जावओ धरइ ॥८२॥
धीबलकरमाऽऽयहियं, महुरं कन्नाऽऽहुइं जइ न देइ । सिवसुहकरिं च तो णं, चत्ता आराहणा होइ ॥८३॥
ता निज्जामगसूरी, निव्ववओ चेव होइ खवगस्स । आराहणा वि निव्वा-वगस्स दारेण चेव धुवं ॥८४॥
तऽपत्तस्साऽवि विचित्त-कम्मपरिणइवसेण खवगस्स तण्हाछुहाऽऽइएहिं, अवि होज्ज विसोत्तियाऽऽइयं ॥८५॥
तं पुण पूयाकामो, कित्तीकामो अवन्नभीरु य । निज्जूहणाभएणं, लज्जाए गारवेणं वा ॥८६॥
को वि विवेयवियलो, जइ नाऽऽलोएइ सम्ममुवउत्तो । तं जो अवायदंसण-पुरस्सरं सासए एवं ॥८७॥
इहलोए अवियडंते, सढो त्ति संभावणा अकित्ती य । परलोए पुण माइ-त्तणेण अंतो असारस्स ॥८८॥
इहभवकयभावविहूण-कट्ठकिरिया वि कुगइहेउ त्ति । सो च्चिय वुच्चइ सूरी, अवायदंसि त्ति नामेण ॥८९॥
एवंविहगुणगणसंगओ य, एसो महुरवयणेहिं । जंपेइ भो महायस!, खवग! विभावेसु सम्ममिमं ॥९०॥
जह नाम कंटगप्पमुह-दव्वसल्लं पि धुवमऽणुद्धरियं । जणयइ जणस्स देहे, ण केवलं वेयणं चेव ॥९१॥
किंतु [1]जरडाहरप्फग-जालागद्दभदुसज्झलुयती य । तदऽवररोगसमूहं पि, जणइ ता जाव मरणं पि ॥९२॥
तह चेव भावसल्लं, भिक्खुस्स वि मोहमोहियमइस्स । सम्मं खु अणुद्धरियं, धरियं अप्पाणए चेव ॥९३॥
जणयइ ण केवलं इह-भवम्मि अजसाऽऽइ चेव किंतु परं । संजमजीवियहरणा, चारित्ताऽभावमरणं पि ॥९४॥
आसमलणं व अरिपोसणं व, निम्मवणमऽसुहकम्माणं । जणयइ भवंऽतरेसुं, अइदुल्लहबोहियत्तं च ॥९५॥
तो भट्ठबोहिलाभो, अणंतकालं भवन्नवे भीमे । जम्मणमरणाऽऽवत्ते, अणोरपारम्मि दुहसलिले ॥९६॥
उच्चाऽणुच्चासु विचित्त-भेयजोणीसु दुक्खदोणीसु । वच्चंतो पच्चंतो, सुतिक्खदुक्खऽग्गिणा चिट्ठे ॥९७॥
तहा—
लद्धूणमेत्थ जीवो, संसारमहन्नवम्मि सामन्नं । तवसंजमं च अबुहो, नासेइ ससल्लमरणेण ॥९८॥
मरिउं ससल्लमरणं, संसाराऽऽविमहाकडिल्लम्मि । सुइरं भमंति जीवा, अणोरपारम्मि ओइन्ना ॥९९॥
न वि तं सत्थं व विसं व, दुप्पउत्तो व्व कुणइ वेयालो । जंतं व दुप्पउत्तं, सप्पो व्व पमाइओ कुद्धो ॥४७००॥

1. ज्वर-दाह-रप्फग = वल्मीको = रोगविशेषः - ज्वाला-गर्दभ = रोगविशेषः - दुःसाध्य-लुयती = रोगविशेषः इत्यादयो रोगाः ।

जं कुणइ भावसल्लं, अणुद्धियं मरणदेसकालम्मि । दुल्लहबोहीयत्तं, अणंतसंसारियत्तं च ॥१॥
ता न खमं खु पमाया, मुहुत्तमऽवि चिट्ठिउं ससल्लेण । लज्जागारवरहिओ, अओ तुमं सल्लमुद्धरसु ॥२॥
उप्पाडित्ता सल्लं, मूलमऽसेसं पुणब्भवलयाए । उम्मुक्कभया धीरा, तरंति भवसायरं जेण ॥३॥
इय जइ अवायदंसी, न होज्ज निज्जामगो वि खवगस्स । ता तस्स ससल्लस्स वि, किंफलमाऽऽराहणाकरणं॥४॥
तम्हा खवगेण सया, अवायदंसिस्स पायमूलम्मि । अप्पा निवेसियव्वो, धुवा हि आराहणा तत्थ ॥५॥
आयसपत्तनिहित्तं जलं व, आलोइया अईयारा । न परिस्सवन्ति जत्तो, अपरिस्साविं तयं बिंति ॥६॥
भिदंतेण रहस्सं, सो साहू तेण होइ परिचत्तो । अप्पा गणो पवयणं, धम्मो आराहणा चेव ॥७॥
लज्जाए गारवेण य, कोई दोसे परस्स कहियम्मि । विप्परिणवेज्ज ओहा-वेज्ज व गच्छेज्ज मिच्छत्तं ॥८॥
कोई रहस्सभेए, कए [1]पउट्ठो हणेज्ज तं सूरिं । अप्पाणं वा गच्छं, भिंदेज्ज करेज्ज उड्डाहं ॥९॥
इच्चेवमाऽऽइदोसा, न होंति भणिणो रहस्सधारिस्स । अपरिस्सावी तेणं, मग्गिज्जइ निज्जवगसूरी ॥१०॥
इय अट्ठगुणोवेयस्स, सूरिणो पयपसायओ खवगो । आराहणमाऽऽराहइ, संपुण्णं हयपमायरिऊ ॥११॥
इय पावकमलहिमभर-समाए संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥१२॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमम्मि पंचम-मुवइट्ठं सुट्ठियद्दारं ॥१३॥
सुट्ठियगवेसणेवं, कया वि न फलप्पसाहणायाऽलं । जव्विरहे तं भणिमो, संपयमुवसंपयादारं ॥१४॥

'उपसंपदा द्वार स्वरूपम्'

अह सो परिमग्गित्ता, निज्जवयगुणेहिं जुत्तमाऽऽयरियं । विज्जाचरणसमग्गं, उवसंपज्जइ तओ तस्स ॥१५॥
किइकम्मं काऊणं, पणुवीसाऽऽवासएहिं परिसुद्धं । विणएण पंजलिउडो, सव्वाऽऽयरमेवमुल्लवइ ॥१६॥
भयवं! निस्सेसदुवालसंऽग-सुयजलहिपारगा तुम्हे । तुम्हेत्थ सयलसिरिसमण-संघनिज्जामगा गुरुणो ॥१७॥
तुम्हे च्चिय अज्ज इहं, जिणसासणभवणधारणक्खंभा । भवगहणभमणरीणंऽगि-वग्गनिव्वुइपयं तुब्भे ॥१८॥
तुम्हे गई मई चिय, सरणमऽसरणाण अम्ह तुम्हेत्थ । तुब्भे चेव अणाहाण, अम्ह नाहा वि ता भंते! ॥१९॥
आदिक्खादिवसाओ, काऊणाऽऽलोयणापयाणेण । दंसणनाणचरित्ते, सुविसुद्धे सम्मभावेण ॥२०॥
तुम्ह पयपउममूले, दीहरसामन्नफलमऽहमियाणिं । कयउचियसेसकिच्चो, निस्सल्लाऽऽराहणं काहं ॥२१॥
एवं वुत्ते तेणं, निज्जामगमुणिवई भणइ भद्द! । मणवंछियऽत्थमऽचिरा, साहेमि तुह अविग्घेणं ॥२२॥
धन्नो सि तुमं सुविहिय!, असेससंसारदुक्खखयजणणिं । जो आराहणमऽणहं, एवं काउं समुच्छहसि ॥२३॥
अच्छाहि ताव सुंदर!, वीसत्थो अणूसुगो य जाव खणं । पडिचरएहिं सममऽहं, इणमऽट्ठं संपधारेमि ॥२४॥
इय दुग्गइपुरपरिहो-वमाए संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥२५॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमणे भणियं, छट्ठं उवसंपयादारं ॥२६॥

'परीक्षाद्वारम्'

उवसंपन्नो वि मुणी, अन्नोन्नपरिच्छणाए विरहम्मि । न लभइ समाहिमऽणहं, परिच्छदार अओ भणिमो ॥२७॥
अह जो अणसणकामो, साहू सूरी व पुव्वनिद्दिट्ठो । तग्गणनाहो मुणिणो य, निहुयबुद्धीए पढमं पि ॥२८॥
तेणं परिक्खियव्वा, किमिमे भावियमणा व इयरे वा । तग्गणगयसाहूहिं वि, परिक्खियव्वो इमो बहुहा ॥२९॥
तप्पहुणा वि न केवल-मऽणसणकामी परिक्खियव्वो हु । किंतु नियगा वि मुणिणो, तदऽत्थनिव्वाहिणो व न वा॥३०॥
आगंतुगेण तत्थ उ, विभावणिज्जो गणाऽहिवो ताव । जइ हरिसवियसियऽच्छो, सागयमिच्चाइ जंपंतो ॥३१॥
अब्भुट्ठेज्ज सयं चिय, इंतं दट्ठुण अहव नियमुणिणो । पेसेज्जुचियं काउं, ता सो पत्थुयविहिविहाया ॥३२॥
कसिणमुहच्छाओ सुन्न-चक्खुक्खेवो य विस्सरगिरो य । एवंविहो य नेओ, इयरो पत्थुयपवित्तीए ॥३३॥
मुणिणो वि हु भणियव्वा, भिक्खाकाले अहो! मह निमित्तं । कलमोयणं सखीरं, तुब्भेहिं आणियव्वं ति ॥३४॥
जइ ते एवं वुत्ता, हसंति अन्नोन्नमऽहयमुल्लुंठं । जंपंति ता अभाविय-मइणो त्ति विभावणिज्जा ते ॥३५॥

1. पउट्ठो = प्रद्विष्टः ।

अह ते सहरिसमेवं, वयंति तुमए अणुग्गिहीयम्ह । एवं चिय काहामो, सइ लाभे सव्वजत्तेण ॥३६॥
आगंतुगेण एवं, वत्थव्वपरिक्खणा उ कायव्वा । आगंतुगं पि वत्थव्व-साहुणो इय परिक्खन्ति ॥३७॥
कलमोयणाऽऽइउत्तम-आहारमऽमग्गिया वि उवणिंति । आगंतुगस्स जइ सो, सविम्हयं एवमुल्लवइ ॥३८॥
अहह चिरधरणिभमणे वि, एरिसा पवरगंधबंधुरया । सरसत्तणं पि नेवो-यणस्स दिट्ठं कहिं पि मए ॥३९॥
न य वंजणसामग्गी वि, दीसइ अन्नत्थ एरिससरुवा । भुंजिस्सामि पकामं पि, ता अहं भोयणमिमं ति ॥४०॥
ता सो णिसेहियव्वो, न उत्तिमऽट्ठप्पसाहणायाऽलं । अजिइंदिओ त्ति पुणरवि, जहाऽऽगयं पेसियव्वो य ॥४१॥
जो पुण तारिसमऽसणं, दट्ठुं जंपेज्ज उत्तिमट्ठऽत्थी । हंहो महाऽणुभावा!, किमऽणेण ममोवणीएण ॥४२॥
एवंविहस्स पवराऽसणस्स, को भुंजिउं ममं कालो । तो णं पडिच्छियव्वो, स महासत्तो समुचिओ त्ति ॥४३॥
एवं कओवयारा, परोप्परं ठाणगमणसज्झाए । आवस्सयभिक्खग्गह-वियारमाऽऽइसु परिक्खंति ॥४४॥
अह जइया सो अब्भु-च्छहेज्ज आराहणं पकाउं जे । वत्थव्वसूरिणा वि हु, परिक्खियव्वो तया एवं ॥४५॥
सुंदर! तुमए अप्पा, संलिहिओ? जइ वएज्ज सो एवं । किं चम्मऽट्ठियमेत्तं, भयवं! नो पेच्छसि ममंऽगं ॥४६॥
असुणंतो व्व पुणो वि हु, ता पुच्छेज्जा पुणो वि स सरोसं । अइनिउणो सि न सिट्ठे वि, नेव दिट्ठे वि पत्तियसि॥४७॥
इइ जंपंतो जइ नियग-मंऽगुलिं भंजिऊण दंसेज्जा । पेच्छसु निउणं भयवं!, जह एत्थ सुथेवमेत्तं पि ॥४८॥
मंसं व सोणियं वा, मज्जं वा अत्थि एयमऽवि भंते! । किं संलिहामि? तो णं, स सूरिणा एव भणियव्वो॥४९॥
'न हु ते दव्वसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं । कीस ते अंगुली भग्गा, भावे संलिह मा तुर' ॥५०॥
'इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुरु । ण चेयं ते पसंसामि, किसं साहू! सरीरगं' ॥५१॥
सिलोयजुयलं चेयं, वुत्तं वत्थव्वसूरिणा । आराहणानिमित्तेणं, आगयप्पडिबोहणे ॥५२॥
एवं परोप्परं सइ, सुकयपरिक्खाण उभयपक्खाण । भत्तपरिन्नाकाले, थेवं पि ण होज्ज असमाही ॥५३॥
अइरभसकयाणं पुण, पाएण पओयणाण पज्जंते । धम्मऽत्थसंगयाण वि, न विवागो निव्वुइं जणइ ॥५४॥
इय धम्मतावसाऽऽसम-समाए संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥५५॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमे परिच्छ त्ति, सत्तमं दारमुवइट्ठं ॥५६॥

'प्रतिलेखना द्वारम्'

विहिओभयपक्खपरिक्खणे वि, नाऽऽराहणऽत्थिणो कज्जं । जीए विणा निव्विग्घं, संपज्जइ भाविकालम्मि ॥५७॥
तं पडिलेहं एत्तो, कित्तेमि सा पुणो भवइ एवं । किर निज्जामगसूरी, सुगुरुपरंपरयपत्तेण ॥५८॥
खवगस्सुवसंपन्नस्स, तस्स आराहणाए वक्खेवं । दिव्वेण निमित्तेणं, पडिलेहइ अप्पमत्तमणो ॥५९॥
रज्जं खेत्तं अहिवइ-गणमऽप्पाणं च पडिलिहित्ताणं । तमऽविग्घम्मि पडिच्छइ, अप्पडिलेहाए बहुदोसा ॥६०॥
परओ वा तं नाउं, पारगमिच्छंति इहरहा नेव । सिवखेमसुभिक्खेसुं, निव्वाघाएण पडिवत्ती ॥६१॥
इहरा रायाऽऽईणं, सरुवपडिलेहणाए विरहम्मि । आराहणाए विग्घो वि, होज्ज हरिदत्तमुणिणो व्व ॥६२॥

तहाहि—

'हरिदत्तमुनिदृष्टान्त'

संखपुरे नयरम्मि, पसिद्धिपत्तो नराऽहिवो आसि । सिवभद्दो नामेणं, महाबलो विजियसत्तुकुलो ॥६३॥
उवरोहिओ य वेय-प्पमोक्खनीसेससत्थकुसलमई । मतिसागराऽभिहाणो, अहेसि से सम्मओ बाढं ॥६४॥
तेण य राया अणवरय-मेव निव्विग्घरज्जसुहहेउं । दुग्गइनिबंधणेसु वि, पयट्टियो [1]जन्नकज्जेसु ॥६५॥
अह एगम्मि अवसरे, समोसढो नयरबाहिरुज्जाणे । बहुसमणसंघसहिओ, सूरी गुणसेहरो णाम ॥६६॥
तव्वंदणवडियाए, सबालवुड्ढाऽऽउलो नगरलोगो । वाहणजाणाऽऽरुढो, महाविभूईए तत्थ गओ ॥६७॥
राया वि तम्मि समए, तेणेव पुरोहिएण सह तुरए । आवाहिउं पयट्टो, पुरस्स बहियाविभागम्मि ॥६८॥
अह तं नयरीलोयं, इंतं विणियत्तमाणमऽवि दट्ठुं । कोऊहलेण रन्ना, पुट्ठं किं अज्ज को वि महो? ॥६९॥
जेणेस जणो एवं, पवराऽलंकारभूसियसरीरो! । नियविहवाऽणुसारेण, सव्वओ वियरइ जहिच्छं ॥७०॥

1. जन्नकज्जेसु = यज्ञकार्येषु ।

सिद्धो य परियणेणं, परमत्थो तो सविम्हओ राया । उज्जाणे तम्मि गओ, वंदिय सूरिं निसन्नो य ॥७१॥
तो रायपमुहपरिसं, उद्दिसिउं सूरिणा वि धम्मकहा । पारद्धा जलहरगज्जि-गहीरघोसाए वाणीए ॥७२॥
जहा—
हंभो नरवर! नीसेस-सत्थपरमत्थसंगया एत्थ । सलहिज्जइ जीवदया, एक्क च्चिय सव्वसोक्खकरी ॥७३॥
एयाए न विउत्तो, ससि व्व रयणिं विणा मणागं पि । पावइ सोहं धम्मो, तवनियमकलावकलियो वि ॥७४॥
एयाए निरयमणा, गिहिणो वि गया सुरिंदभवणेसु । एयविमुहा य मुणिणो वि, नरयमऽइदुहकरं पत्ता ॥७५॥
जो वंछइ अच्छिन्नं, सोक्खमऽतुच्छं तहाऽऽउयं दीहं । सो कप्पमहापायव-लयं व पालेइ जीवदयं ॥७६॥
सुमुणियपणीओ वि सुजुत्तिओ वि, जो नाम जीवदयारहिओ । सो भीमभुयंगो इव, धम्मो दूरेण हेयव्वो ॥७७॥
एवं भणिए गुरुणा, जागविहिपरूवगम्मि नरवइणा । उवरोहियम्मि दिट्ठी, कुवलयदलसच्छहा खित्ता ॥७८॥
उवरोहिएण तत्तो, अंतो पसरंततिव्वरोसेण । भणियं हंहो मुणिवर!, तुममऽम्हं दूससे जागं ॥७९॥
वेयऽत्थं अमुणंतो, पुराणसत्थाण किंपि परमऽत्थं । अवियाणमाणगो वि हु, अहो! सुधिट्ठत्तणं तुज्झ ॥८०॥
गुरुणा भणियं भद्दय!, किमेवमुल्लवसि रोसवसगो तं । वेयपुराणाण तुमं, परमऽत्थं नेव मुणसि त्ति ॥८१॥
किं भद्द! तुज्झ सत्थेसु, पुव्वमुणिविरइएसु सव्वत्थ । जीवदया न कहिज्जइ, तव्वयणं वा न सुयमेयं ॥८२॥
'यो ददाति सहस्राणि, गवामऽश्वशतानि च । अभयं सर्वसत्त्वेभ्य-स्तद्दानमऽतिरिच्यते ॥८३॥
समग्रावयवान् दृष्ट्वा, नरान् प्राणिवधोद्यतान् । पङ्गुभ्यश्छिन्नहस्तेभ्यः, कुष्ठिभ्यः स्पृहयाम्यहं ॥८४॥
कपिलानां सहस्रं तु, यो द्विजेभ्यः प्रयच्छति । एकस्य जीवितं दद्यात्, कलां नाऽर्हति षोडशीं ॥८५॥
नाऽतो भूयस्तमो धर्मः कश्चिदऽन्योऽस्ति भूतले । प्राणिनां भयभीतानां, अभयं यत्प्रदीयते ॥८६॥
वरमेकस्य सत्त्वस्य, दत्ता ह्यभयदक्षिणा । न तु विप्रसहस्रेभ्यो, गोसहस्रमऽलङ्कृतं ॥८७॥
अभयं सर्वसत्त्वेभ्यो, यो ददाति दयापरः तस्य देहाद्विमुक्तस्य, भयं नाऽस्ति कुतश्चन ॥८८॥
हेमधेनुधराऽऽदीनां, दातारः सुलभा भुवि । दुर्लभः पुरुषो लोके, यः प्राणिष्वभयप्रदः ॥८९॥
महतामऽपि दानानां, कालेन क्षीयते फलं । भीताऽभयप्रदानस्य, क्षय एव न विद्यते ॥९०॥
दत्तमिष्टं तपस्तप्तं, तीर्थसेवा तथा श्रुतं । सर्वाण्यभयदानस्य, कलां नाऽर्हन्ति षोडशीं ॥९१॥
यथा मे न प्रियो मृत्युः, सर्वेषां प्राणिनां तथा । तस्मान्मृत्युभयत्रस्ता-स्त्रातव्याः प्राणिनो बुधैः' ॥९२॥
'एकत्र क्रतवः सर्वे, समग्रवरदक्षिणाः । एकतो भयभीतस्य, प्राणिनः प्राणरक्षणं ॥९३॥
सर्वसत्त्वेषु यद्दानं, एकसत्त्वे च या दया । सर्वसत्त्वप्रदानाद्धि, दयैवैका प्रशस्यते ॥९४॥
सर्वे वेदा न तत् कुर्युः, सर्व्वे यज्ञा यथोदिताः । सर्वतीर्थाभिषेकाश्च, यत् कुर्यात् प्राणिनां दया' ॥९५॥
इय भो महायस! तुमं, नियसत्थऽत्थं पि किं न सुमरेसि? । परमत्थघडंतं पि हु, पडिवज्जसि जं न जीवदयं ॥९६॥
एयमऽणुसासिओ सो, समणोवरि दढपओसमाऽऽवन्नो । थेवमुवसंतचित्तो, राया पुण भद्दगो जातो ॥९७॥
सूरी वि भव्वसत्ते, ठाविय धम्मे जिणप्पणीयम्मि । तत्तो विणिक्खमित्ता, विहरिउमऽन्नत्थ आरद्धो ॥९८॥
अपुव्वखेडकब्बड-पुराऽऽगराऽऽइसु चिरं च विहरित्ता । पुणरवि तत्थे व पुरे, समोसढो उचियदेसम्मि ॥९९॥
तत्थ य ठियस्स हरिदत्त-नामगो मुणिवरो नियगच्छं । मोत्तूण उत्तिमट्ठं, काउं कयकायसंलिहणो ॥४८००॥
आगंतूण महप्पा, पयओ पयपंकयं पणमिऊणं । भालयलरइयपाणी, विन्नविउं एवमाऽऽढत्तो ॥१॥
भयवं! कुणह पसायं, संसारसमुद्दनावकप्पेणं । संलिहियस्सा अणसण-दाणेणाऽणुग्गहं मज्झ ॥२॥
तो नियगणं आपुच्छिऊण, करुणापहाणचित्तेण । पडिवन्नं तव्वयणं, मुणिवइगुणसेहरेण लहुं ॥३॥
अह सोहणे मुहुत्ते, अविभाविय पत्थुयऽत्थपच्चूहं । सहस च्चिय मुणिवइणा, सो ठविओ उत्तिमट्ठम्मि ॥४॥
जाया पुरे पसिद्धी, ताहे भत्तीए कोऊहल्लेण । अणवरयमेइ लोगो, वंदणवडियाए खवगस्स ॥५॥
तस्स य सिवभद्दनराऽहिवस्स, समयम्मि तम्मि जेट्ठसुओ । अवितक्कियाऽऽगमेणं, रोगेणं आउरो जाओ ॥६॥
वाहरिया वरवेज्जा, कया तिगिच्छा विचित्तमंताऽऽई । उवजुंजिया तहा वि य, पडियारो से न संपत्तो ॥७॥

किंकायव्वयवाउल-मणो य भूमीवई तओ बाढं । विच्छायवयणकमलो, सोगं काउं समाढत्तो ॥८॥
एत्थंतरम्मि तेणं, चिरकालच्छिद्दपेच्छणपरेण । धम्मपदुट्ठेण पुरो-हिएण लद्धाऽवगासेण ॥९॥
भणियं देव! कहं चिय, होइ सुहं तत्थ जत्थ निग्गंथा । अप्पत्थावे वि कुणंति, मरणमऽसणं परिच्चइउं ॥१०॥
कहिओ य समग्गो उत्ति-मट्ठट्ठियखमगसाहुवुत्तंतो । सुणिऊण तं च राया, अच्चंतं रोसमाऽऽवन्नो ॥११॥
आणत्ता नियपुरिसा, अरे इमे साहुणोऽम्ह विसयाओ । तह कुणह जहा सिग्घं, सव्वे वि य नीहरंति त्ति ॥१२॥
तो तेहिं सूरिणो नर-वइस्स आणा निवेइया पुरओ । अह एगेणं मुणिणा, पयंडविज्जाबलजुएण ॥१३॥
जिणसासणलहुयत्तण-मऽवलोइय जंपियं सरोसेण । हंहो मूढा! निम्मेर-मेवमुल्लवह किं तुब्भे ॥१४॥
किं न मुणह मुणिणो जत्थ, समयसत्थुत्तजुत्तिअविरुद्धं । धम्मकिरियं पवज्जंति, जंति असिवाऽऽइणो तत्तो ॥१५॥
भावे वि तेसिं कहमऽवि, सकम्मुणो चेव एस अवराहो । साहूसु कीस कुप्पइ विहलं चिय [1]कुप्पइ तुम्ह ॥१६॥
ता अम्ह गिराए निवं, मग्गे ठावेह मोयह कुतक्कं । ते किं भिच्चा सासेंति, जे पहुं न कुपहपवण्णं ॥१७॥
एवं भणिए पुरिसेहिं जंपियं समण! मा बहुं वयसु । जइ अच्छिउमिच्छसि ता, गंतुं सयमेव सिक्खवसु ॥१८॥
अह सो पुरिसेहिं समं, गओ समीवम्मि पुहइनाहस्स । आसीवायपुरस्सर-मेवं वोत्तुं पवत्तो य ॥१९॥
नरनाह! न जुत्तं तुज्झ, धम्मे विग्घं पकप्पिउं एवं । धम्मं पालेंत च्चिय, वुड्ढिं पावंति भूवइणो ॥२०॥
तं पुण समणाणं समय-वुत्तकिरियापवन्नचित्ताण । समदिट्ठीए पडणीय-लोयपडिसेहणेण भवे ॥२१॥
मा य तुमं मुणसु इमे, समणा किं कोविया वि काहिन्ति । नणु अइमहिज्जमाणं, चंदणमऽवि मुयइ [2]हव्ववहं ॥२२॥
एमाऽऽइ भूरि भणिओ वि, भूवइ जा न कुग्गहं मुयइ । ता तेण मुणिवरेणं, दुट्ठो त्ति विभाविउं विहियं ॥२३॥
चलिरथिरथोरथंभं, कंपिरमणिकुट्टिमं टलंतसिरं । विहडंतपट्टसालं, नमंतवरतोरणाऽवयवं ॥२४॥
पक्खुभियभित्तिभागं, सव्वत्तो वेयमाणपागारं । पल्हत्थसंधिबंधं, विज्जासत्तीए तब्भवणं ॥२५॥
अह तं तहाविहं पे-च्छिऊण भीओ निवो सबहुमाणं । चलणेसु निवडिऊणं, साहुं विन्नविउमाऽऽढत्तो ॥२६॥
भयवं! उवसमसारो, दयाऽऽगरो दमधरो तुमं चेव । तुममेव भयाऽवडनिवडि-याण हत्थाऽवलंबो सि ॥२७॥
ता खमसु कलुसमइणो, एक्कं दुव्विलसियं ममं एयं । न पुणो काहामि पसीय, इण्हिं नियदुव्विणेये व्व ॥२८॥
न मुणिंद! काउमेवं, मणसा वि कया वि संपहारेमि । किं तु सुयविहुरयाए, दुट्ठववसा विहियमेयं ॥२९॥
इन्हिं च तुज्झ सामत्थ-मंथमंथिज्जमाणमणजलही । इय वइयरववएसा, विवेयरयणाऽऽयरो जाओ ॥३०॥
ता पज्जत्तं पुत्तेण, तेण तेण वि य रज्जरट्ठेण । जं तुम्हं पयपंकय-पडिकूलत्तेण मे होही ॥३१॥
अह पणयवच्छलेणं, मुणिणा भीओ त्ति भाविउं भूवो । आसासिओ पसंता-ऽऽणणेण महुरेहिं वयणेहिं ॥३२॥
एत्थंतरम्मि सड्ढो, जिणदासो तप्पभावपरितुट्ठो । वागरइ नरवइं देव!, नूणमेयस्स वरमुणिणो ॥३३॥
नामग्गहणेण वि उवसमंति, गहभूयसाइणीदोसा । चलणक्खालणपयसा पसमंति उदग्गरोगा वि ॥३४॥
एवं सोच्चा रण्णा, मुणिपयपक्खालणोदगेण सुओ । अभिसित्तो तव्वेलं च, पगुणदेहत्तणं पत्तो ॥३५॥
तो तम्माहप्पुप्पेहणेण, निच्छइयधम्मसारत्तो । जिणधम्मं पडिवन्नो, राया साहुस्स वयणेण ॥३६॥
तत्तो सद्धम्मविरुद्ध-जंपिरं तं पुरोहियं अहियं । सुमुणिजणपच्चणीयं, निव्वासेऊण नयरीओ ॥३७॥
राया सव्विड्ढीए, सव्वेणं आयरेण खवगस्स । उज्झियनियकायव्वो, बहुमाणं काउमाऽऽरद्धो ॥३८॥
एवं हरिदत्तमहा-मुणिस्स लीणस्स उत्तिमट्ठम्मि । समुवट्ठिओ वि विग्घो, अइसइणा झत्ति पडिखलिओ ॥३९॥
एयंविहा य अइसय-समन्निया केत्तिया व होहिंति । ता पढमं चिय विग्घं, पडिलेहिय उज्जमेयव्वं ॥४०॥
इय समयसिंधुवेलोवमाए, संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥४१॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमणे वुत्तं, पडिलेहणदारमऽट्ठमगं ॥४२॥
पच्चूहाणं पडिलेहणे वि, नो जं विणा कुसलमऽट्टं । काउं पारइ खवगो, तं पुच्छादारमऽह भणिमो ॥४३॥

'पृच्छाद्वारम्'

अह वत्थव्वगसूरी, णियगच्छगए तवस्सिणो सव्वे । वाहरिऊणं जंपइ, एसो खवगो महासत्तो ॥४४॥

1. कुप्पइ तुम्ह = कुप्यते युष्माभिरित्यर्थः । 2. हव्ववहं = हव्यवाहम् = अग्निम् ।

निस्साए तुम्ह काउं, वंछइ आराहणाविहिं अणहं । जइ पाणगाऽऽइदव्वाणि, खवगसुसमाहिकारीणि ॥४५॥
सुलभाणि एत्थ खेत्ते, तुब्भे एयं च पडियरह सम्मं । ता साहह जेणेमं, महाऽणुभावं पडिच्छेमो ॥४६॥
तो जइ सहरिसमिय ते, भणंति सुलभाणि असणमाऽऽईणि । अणुगिण्हह खवगमिमं, सज्जा अम्हे वि एत्थऽत्थे॥४७॥
ताहे पडिच्छियव्वो, खवगो इय होज्ज तस्स निव्विग्घा । वंछियसिद्धी न परो-प्परं च थेवं पि असमाही ॥४८॥
निज्जावगाऽऽयरियाण, गणंतरादाऽऽगयस्स खवगस्स । णिज्जावगसाहूण य, पुच्छा सव्वेसि गुणजणिगा ॥४९॥
तदऽपुच्छणे परोप्पर-मऽचियत्तं भत्तपाणविरहे य । खवगस्स वि असमाही, एमाऽऽई होंति बहुदोसा ॥५०॥
इय निव्वुइपहसंदणसमाए, संवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥५१॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमणे कहियं, नवमं पुच्छापडिद्दारं ॥५२॥
जहविहिकयपुच्छस्स वि, उत्तरकायव्वसंगयं सम्मं । खवगं पडुच्च संपइ, पडिच्छदारं पवक्खामि ॥५३॥

'प्रतीच्छाद्वारम्'

पुव्वपवंचियविहिणा, खमगं समुवट्ठियं पडिच्छंति । सव्वाऽऽयरेण मुणिवइ-तवस्सिणो उज्जया नवरं ॥५४॥
जइ तत्थ गणे कहमऽवि, समकालं चिय उवट्ठिया दोन्नि । खवगा तेसिं एक्को, पढमं चिय संलिहियकाओ॥५५॥
जो सो संथारगओ, चयइ सरीरं जिणोवएसेण । बीयो संलिहइ तणुं, उग्गेहिं तवोविसेसेहिं ॥५६॥
तइयं च पुणो खवगं, वारेज्ज उवट्ठियं पि विहिपुव्वं । पडिचरगाणमऽभावे, समाहिविगमो भवे इहरा ॥५७॥
अहव पहुप्पंति कहंपि, तस्स जोग्गा वि पवरपडियरगा । तदऽणुन्नाओ संतो, ता सो वि पडिच्छियव्वो त्ति ॥५८॥
तह भत्तपच्चक्खाया, जइ सो नो पत्थुयऽत्थनित्थरणं । काउं तरेज्ज लोगेण, जाणिओ पेहिओ य भवे ॥५९॥
ता तस्स ट्ठाणम्मि, बीयो संलेहणाकरो साहू । ठवियव्वो रइयव्वा, तदंऽतरे [1]चिलिमिणी सम्मं ॥६०॥
तो जेहिं पुव्वं सो, सुओ व दिट्ठो य होज्ज तो तेसिं । वंदिउमुवागयाणं, दंसेयव्वो मणागं पि ॥६१॥
इहरा होज्जुड्डाहो, पवयणखिंसाऽऽइया महादोसा । चिलिमणिबाहिठिय च्चिय, तेणं वंदावियव्वा ते ॥६२॥
गणसंकमणं काउं, विहिणा एएण विहडियममत्ता । आणं आराहित्ता, करंति दुक्खक्खयं धीरा ॥६३॥
इय सिरिजिणचंदमुणिंद-रइयसंवेगरंगसालाए । मरणरणजयपडागो-वलंभनिव्विग्घहेऊए ॥६४॥
आराहणाए पडिदार-दसगमइयम्मि बीयदारम्मि । गणसंकमे पडिच्छत्ति, दसममुत्तं पडिद्दारं ॥६५॥
तब्भणणाओ य पुणो, परगणसंकमणनामगं एयं । मूलद्दारचउक्के, भणियं दारं दुइज्जं पि ॥६६॥

॥ परगणसंकमाऽभिहाणं बीयं मूलदारं समत्तं ॥

1. चिलिमिणी = जवनिका = पर्दा ।

"तृतीयममत्वव्युच्छेदद्वारम्"

'मंगलाचरणम्' —

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य सव्वहा थुयममत्तो । भयवं भवंडतयारी, निरंडजणो जयइ वीरजिणो ॥६७॥

'अन्तरद्वारनामानि' —

परिकम्मियडप्पणो वि हु, कयपरगणसंकमस्स वि य जम्हा । अव्वुच्छिन्नममत्तस्स, नत्थि आराहणा तम्हा ॥६८॥

भणिउं गणसंकमणं, इन्हिं वोच्छं ममत्तवोच्छेयं । तम्मि य पडिदाराइं, कमेण एयाइं नव होन्ति ॥६९॥

आलोयणाविहाणं[१], सेज्जा[२] संथारओ[३] य निज्जवया[४] । दंसण[५] हाणी[६] पच्च-क्खाणं[७] तह खामणा[८] खमणा[९] ॥७०॥

अब्भुवगओ वि खमगो, गुरुणा नाऽऽलोयणं विणा सुद्धिं । पावइ जं ताऽऽलोयण-विहाणदारं परूवेमि ॥७१॥

'आलोचनाविधानद्वारम्'

किर भणइ गुरु खवगं, विहिणा महुरऽक्खरं गणसमक्खं । हंहो देवाऽणुप्पिय!, सम्मं संलिहियकाओ सि ॥७२॥

सम्मं पवन्नसामन्न-वन्नियाऽसेसकिच्चनिरओ सि । सम्मं सीलगुणाऽऽगर-गुरुजणपयसेवणपरो सि ॥७३॥

सम्ममऽपुन्नदुलंभं, परमं पयविं तुमं पवन्नो सि । ता एत्तो सविसेसं, मुक्काऽहंकारममकारो ॥७४॥

अइदुज्जयं पि इंदिय-कसायगारवपरीसहाऽणीयं । निज्जिणिऊणं सम्मं, उवसंतविसोत्तियातावो ॥७५॥

आलोएसु विहीए, सुविहिय! हियमऽप्पणो समीहंतो । दुच्चरियमऽणुयमेत्तं पि, इह पुणाऽऽलोयणविहाणे ॥७६॥

आलोयण दायव्वा, केवइकालउ[१] कस्स[२] केणं[३] वा । के य अदाणे दोसा[४], के य गुणा होन्ति दाणम्मि[५] ॥७७॥

कह दायव्वा य तहा[६], आलोएयव्वयं च[७] किं गुरुणो । कह य दवावेयव्वा[८], पच्छित्त[९] फलं च[१०] दाराइं ॥७८॥

जइ वि हु पइदिणमऽपमत्त-माणसो जयइ सव्वकिच्चेसु । कंटकवेहं व पहे, तहा वि किंपि हु अईयारं ॥७९॥

आवज्जइ साऽवज्जविवज्जगो वि, कम्मोदयस्स दोसेण । कत्थइ किच्चविसेसे, तस्स य सुद्धिं समीहन्तो ॥८०॥

पक्खियचउमासाऽऽइसु, नियमेणाऽऽलोयणं मुणी देज्जा । गिण्हेज्जऽभिग्गहे पुण, पुव्वग्गहिए निवेइत्ता ॥८१॥

एमेव उत्तिमऽट्ठे, संवेगपरेण सीयलेणाऽवि । आलोयणा हु देया, जाणियजिणवयणसारेण ॥८२॥

इय जेत्तियकालाओ, देया आलोयण त्ति निद्दिट्ठं । एत्तो जारिसयस्सा, देया सा तं पवक्खामि ॥८३॥

पयडिज्जइ जह रोगो, कुसलस्स चिगिच्छगस्स लोगम्मि । लोगुत्तरे वि तह कुसल-सूरिणो भावरोगो वि ॥८४॥

कुसलो य सो च्चिय इहं, दोसस्स नियाणमाऽऽइ जो मुणइ । अच्चंतमऽप्पमाई, सव्वत्थ समो य सो दुविहो॥८५॥

आगमओ सुयओ वा, आगमओ छव्विहो विणिद्दिट्ठो । केवल[१] मणो-हि[२-३] चोद्दस[४]-दस[५] नव[६]-पुव्वी य नायव्वो॥८६॥

कप्पपकप्पो य सुए, आणाइत्तो य धारणाए य । एसो वि हु कारणओ, कुसल इव जिणेहऽणुन्नाओ ॥८७॥

जह किर [1]विभंगिणो रोग-कारणं ओसहं च तस्समणं । नाउं विविहाऽऽमइणं पि, दिन्ति विविहोसहसमूहं ॥८८॥

पावेंति तदुवओगेण, रोगिणो तक्खणेण रोगखयं । निव्वुइमऽणहं च सया, एसेवुवमाओ इहइं पि ॥८९॥

विब्भंगिणो इव जिणा, रोगी साहू य रोग अवराहा । सोही य ओसहाइं, सुद्धं चरणं तु आरोग्गं ॥९०॥

जह य विभंगिकएहिं, रोगं नाऊण वेज्जसत्थेहिं । भिसजा करिंति किरियं, तह पुव्वधरा वि सोहिंति ॥९१॥

कप्पपकप्पधरो चिय, आयारखमाऽऽइगुणगणोवेओ । सोहेइ भव्वसत्ते, सोहीए जिणोवइट्ठाए ॥९२॥

जंघाबलहाणीए, देसंऽतरसंठियाण दोण्हं पि । अग्गीयगूढवियडणा, सोही आणाए एस विही ॥९३॥

असइं कयं विसोहिं, अवधारियसयलतत्ततम्मत्तो । तह चेव ववहरंतो, धरणाजुत्तो मुणेयव्वो ॥९४॥

निज्जुत्तीसुत्तऽत्थे, पीढधरो विय किलेत्थ जोगो त्ति । कालं पडुच्च नेओ, जीयधरो जो वि गीयत्थो ॥९५॥

सेसा न होंति जोगा, जह कूडचिगिच्छगा उ अवियड्ढा । रोगवियुड्ढिं मरणं च, रोगिमणुयाण उवणेंति ॥९६॥

पावेंति य ते गरिहं, लोए दंडं च निवसयासाओ । लोउत्तरे वि एवं, जोएज्जा सव्वमेयं ति ॥९७॥

कूडाऽऽलोइयसोही-दाणं विवरीयदोसपरिवुड्ढी । तत्तो चरणाऽभावो, मरणं पुण एत्थ नायव्वं ॥९८॥

गरिहा भवंऽतरेसु वि, जिणवयणविराहगाण गरिहेसु । ठाणेसु समुप्पत्ती, दंडो पुण दीहसंसारो ॥९९॥

आलोयणाऽरिहेसो, उस्सग्गऽववायओ विणिद्दिट्ठो । सा जारिसेण देया, तारिसयं संपयं वोच्छं ॥४९००॥

1. विभङ्गिनः = वैद्याः (अनुमानात्) ।

जाइकुलविणयनाणे, दंसणचरणेहिं होइ संपन्नो । खंतो दंतो अमाई, अपच्छयावी य बोधव्वो ॥१॥
जाईकुलसंपन्नो, पायमऽकज्जं न सेवइ कहिंचि । आसेविउं च पच्छा, तग्गुणओ सम्ममाऽऽलोए ॥२॥
विणएण उ संपन्नो, निसेज्जकिइकम्ममाऽऽइविणएणं । आलोएइ जहुत्तं, सुद्धसहावो सयं पावं ॥३॥
नाणेण उ संपन्नो, दोसविवागं वियाणिउं घोरं । आलोएइ सुहं चिय, पायच्छित्तं च अवगच्छे ॥४॥
सुद्धो अहं ति सम्मं, सद्दहई दंसणेण संपन्नो । चरणेण उ संपन्नो, न कुणइ भुज्जो तमऽवराहं ॥५॥
अवियडिए य चरित्तं, न सुज्झइ मे त्ति सम्माऽऽलोए । खंतो आयरिएहिं, फरुसं भणिओ वि नो रूसे ॥६॥
दंतो समत्थु वोढुं, पच्छित्तं जमिह दिज्जए तस्स । न प्पलिउंचे व अमाई, अपच्छयावी न परितप्पे ॥७॥
एयारिसेण तम्हा, दायव्वाऽऽलोयणा जइजणेणं । संविग्गेणऽप्पाणं, कयत्थमिय मन्नमाणेणं ॥८॥
परलोयम्मि अवाया, एएसिं दारुण त्ति दोसाणं । धन्नो हं जस्स गुरु, इहेव ते मे विसोहिन्ति ॥९॥
सोहीए अभीएणं, अपुणक्करणुज्जएण दोसाणं । नो पडियक्खजुएणं, जमेस भणिओ अजोगो त्ति ॥१०॥

आकंपइत्ता[1] अणुमाणइत्ता[2], जं दिट्ठं[3] बायरं[4] च सुहुमं[5] वा ।
छन्नं[6] सद्दाऽऽऊलयं[7], बहुजण[8] 'अव्वत्त[9] तस्सेवी[10] [दारगाहा] ॥११॥

वेयावच्चाऽऽईहिं, पुव्वं आकंपइत्तु आयरियं । आलोएइ कहं मे, थेवं वियरेज्ज पच्छित्तं ॥१२॥
तथाहि—
भत्तेण व पाणेण व, उवगरणेणं च कीइकम्मेणं । आकंपेऊण गणिं, करेइ आलोयणं कोई ॥१३॥
आलोइयं असेसं, होही काही अणुग्गहमिमो त्ति । इय आलोइंतस्स उ, पढमो आलोयणादोसो ॥१४॥
नाऊण विसं पुरिसो, जह को वि पिवेज्ज जीवियऽत्थी उ । मन्नंतो हियमऽहियं, सल्लविसोही तहेसा वि ॥१५॥
किं एस उग्गदंडो, मिउदंडो व त्ति एवमऽणुमाणे । अहव अबलो त्ति थेवं, पच्छित्तं मज्झ देज्जाहि ॥१६॥
धन्ना ते भगवंतो, सुट्ठ [2]निसट्ठं च जे कुणंति तवं । वयइ निहीणो खु अहं, जं न समत्थो तवं काउं ॥१७॥
जाणह य मज्झ थामं, गहणीदोबल्लया अणाऽऽरोग्गं । तुम्ह पभावेण इमं, सोहिं बहु नित्थरिस्सामि ॥१८॥
अणुमाणेऊण गुरुं, एवं आलोयणं तओ पच्छा । कुणइ ससल्लो ता सो, बीयो आलोयणादोसो ॥१९॥
गुणकारओ त्ति भुंजइ, जहा सुहऽत्थी अपत्थमाऽऽहारं । पच्छा विवागकडुयं, सल्लविसोही तहेसा वि ॥२०॥
दिट्ठा उ जे परेणं, दोसा वियडेइ ते च्चिय न अन्ने । सोहिभया जाणंतु व, एसो एयाऽवराहो त्ति ॥२१॥
मोहेण मोहियमई, अदिट्ठं सव्वहा निगूहेंतो । आलोएइ जं तं, तईओ आलोयणादोसो ॥२२॥
जह वालुयाए अवडो, पूरइ उक्कीरमाणओ चेव । तह कम्माऽऽयाणकरी, सल्लविसोही इमा होइ ॥२३॥
बायरवड्डऽवराहे, जो आलोएइ सुहुमए नेय । अहवा सुहुमे वियडइ, वरमन्नंतो उ एवं तु ॥२४॥
जो सुहुमे आलोयइ, सो किह नाऽऽलोए बायरे दोसे । अहवा जो बायरए, वियडइ सो किं न सुहुमे उ ॥२५॥
बायरमाऽऽलोएइ, वयभंगो जत्थ जत्थ से जाओ । पच्छाएइ य सुहुमं, चउत्थओ वियडणादोसो ॥२६॥
जह कंसियभिंगारो, अंतो मइलो वि सुद्धओ बाहिं । अंतो ससल्लदोसा, सल्लविसोही तहेसावि ॥२७॥
[2]केयलइ च्चिय सुहुमे, आलोयइ थूलए उ गोवेइ । भयमयमायासहिओ, भवइ य सो पंचमो दोसो ॥२८॥
रसपीयलं य कडयं, जह वा जुत्तीसुवन्नकडयं च । जह य जउपूरकडयं, सल्लविसोही तहेसा वि ॥२९॥
जइ मूलगुणे उत्तर-गुणे य कस्सइ विराहणा होज्जा । पढमे बीए तइए, चउत्थए पंचमे च वए ॥३०॥
को तस्स दिज्जइ तवो, इय पच्छन्नं पपुच्छिउं कुणइ । सयमऽवि पायच्छित्तं, छट्ठो आलोयणादोसो ॥३१॥
अहवा आलोइंतो, छन्नं आलोयए जहा नवरं । निसुणेइ अप्पण च्चिय, न परो छट्ठो भवइ एवं ॥३२॥
मयतण्हाओ उदयं, इच्छइ कूरं व चंदपरिवेसे । जो सो इच्छइ सोहिं, अकहेंता अप्पणो दोसे ॥३३॥
पक्खिय-चाउम्मासिय-संवच्छरिएसु सोहिकालेसु । सद्दाऽऽउले कहेइ, दोसे सो होइ सत्तमओ ॥३४॥
अरहट्टघडीसरिसी, अहवा [4]युंदंछिओवमा होइ । भिन्नघडसरिच्छा वा, सल्लविसोही इमा तस्स ॥३५॥
एक्कस्साऽऽलोइत्ता, जो आलोए पुणो वि अन्नस्स । ते चेव उ अवराहे, तं होइ बहुजणं ना ॥३६॥
आलोइऊण गुरुणो, पायच्छित्तं पडिच्छिउं तत्तो । तमऽसद्दहओ पुच्छइ, अन्नऽन्नं अट्ठमो दोसो ॥३७॥

1. अच्चन्त पाठां० । 2. निसट्ठं = प्रचुरम् । 3. केवलइ = केवलान् । 4. बुदंछिओवमा = यथा वृन्दे क्षुतं न गण्यते तथा इति प्रतिभाति B ।

पउणो वणो ससल्लो, जह संतावेइ आउरं पच्छा । तिव्वाहिं वेयणाहिं, सल्लविसोही तहेसा वि ॥३८॥
जो सुयपरियाएहिं, अव्वत्तो तस्स नियदुच्चरियं । आलोयंतस्स फुडं, णवमो आलोयणादोसो ॥३९॥
कूडहिरन्नं जह निच्छएण, दुज्जणकया जहा मेत्ती । पच्छा होइ अपत्थं, सल्लविसोही तहेव इमा ॥४०॥
ते चेव जोऽवराहे, सेवइ सूरी स होइ तस्सेवी । तस्स समीवे एसो, मम समदोसो त्ति नो दाही ॥४१॥
अइगरुयं मह दंडं ति, मोहओ संकिलिट्ठभावस्स । आलोयंतस्स भवे, दसमो आलोयणादोसो ॥४२॥
लोहियदूसियवत्थं, धोवइ जह कोवि लोहिएणेव । सोहीकएण मूढो, सल्लविसोही तहेव इमा ॥४३॥
पवयणनिन्हवयाणं, जह दुक्करयं तवं करेंताणं । दूरं खु सिद्धिगमणं, सल्लविसोही तहेसा वि ॥४४॥
इय दस वि इमे दोसे, सो भयलज्जाओ माणमायाओ । निज्जूहित्ता, सुद्धं करेइ आलोयणं खवगो ॥४५॥
नट्ट[1]चलचलियगिहिभास-मूयढड्ढरसरं च मोत्तूण । आलोएइ स धन्नो, सम्मं गुरुणो अभिमुहत्थो ॥४६॥
इय जेणं दायव्वा, सविचक्खो सो समासओ भणिओ । जे य अदाणे दोसा, तीए ते संपयं वोच्छं ॥४७॥
लज्जाए[1] गारवेण[2] य, बहुस्सुयमएण वा वि[3] दुच्चरियं । जे न कहेंति गुरूणं, न हु ते आराहगा होंति ॥४८॥
जाए कहिंचि खलिए, लज्जा नो [2]वियडणाए कायव्वा । सा णवरं करणीया, अकिच्चपडिसेवणे णिच्चं ॥४९॥
आहरणं जुवरन्नो, सागारियरोगअकहणं वेज्जे । लज्जाए रोगवुड्ढी, न भोग मरणं उवणओ उ ॥५०॥
जुवरायसमा साहू, सागारियरोगतुल्ल अवराहा । अकहण-वेज्ज-समा पुण, एत्थमऽणाऽऽलोयणाऽऽयरिया ॥५१॥
लज्जाए होइ तुल्ला, रोगविवड्ढी उ अचरणविवुड्ढी । सुरमणुएसु न भोगा, असई मरणं तु संसारो ॥५२॥
अहवा लज्जावसओ, सम्ममऽकहणम्मि जो भवे दोसो । लज्जाचागे य गुणो, दिट्ठंतो तत्थ विप्पसुओ ॥५३॥

तथाहि— 'कपिलविप्रदृष्टान्तः'

उज्जाणभवणदीहिय-सुरगिहवावीतडागरमणिज्जे । नीसेसजयपसिद्धे, पाडलिपुत्तम्मि नयरम्मि ॥५४॥
वेयपुराणवियाणग-दियप्पहाणो पसिद्धिपत्तो य । कविलो नामेण दिओ, अहेसि धम्मुज्जयमई उ ॥५५॥
सो य मयमत्तरमणी-कडक्खमिव भंगुरं भवसरूवं । पवणाऽऽहयतूलं पिव, तरलं तारुन्नलायन्नं ॥५६॥
मुहमहुरमंऽतविरसं, किंपागफलं व विसयसोक्खं पि । निबिडतरबंधणं पिव, सव्वं पि हु सयणसम्बन्धं ॥५७॥
नियबुद्धीए परिभा-विऊण परिचत्तगेहपडिबन्धो । एगम्मि वणनिगुंजे, तावसदिक्खं पवन्नो त्ति ॥५८॥
समयनिदंसियविहिपुव्वयं च, विविहं करेइ तवचरणं । फलमूलकंदमाऽऽईहिं, समुचियं पाणवित्तिं च ॥५९॥
अह एगया गओ सो, ण्हाणणिमित्तं णईए तीरम्मि । पेच्छेइ मच्छमंसं, भक्खंते मच्छिए पावे ॥६०॥
तो पावसीलयाए, बाढं जिब्भिंदियस्स पवलत्ता । तम्मंसभक्खणम्मि, महई वंछा समुप्पन्ना ॥६१॥
तत्तो तं मग्गित्ता, आकंठं जेमिओ स तेहिंतो तब्भुंजणे य जाओ, आजिन्नदोसा जरो घोरो ॥६२॥
तस्स चिगिच्छनिमित्तं, कुसलो वेज्जो पुराओ वाहरिओ । पुट्ठो य तेण पुव्वं, तुमए किं भद्द! भुत्तं ति ॥६३॥
लज्जाए य जहट्ठिय-मऽकहिंतेणं पयंपियं तेणं । तं भुत्तं जं भुंजंति, तावसा कंदफलमाऽऽई ॥६४॥
एवं कहिए वेज्जेण, वायदोसुब्भवं जरं नाउं । तदुवसमकरी किरिया, कया गुणो को वि नो जाओ ॥६५॥
पुणरवि पुट्ठेण तहेव, तेण लज्जावसेण सिट्ठम्मि । वेज्जेणं सविसेसा, स च्चिय किरिया कया णवरं ॥६६॥
विवरीयचिगिच्छाए, अच्चंतं वेयणाए अक्कंतो । मरणभयवेविरंऽगो, एगंते वज्जिउं लज्जं ॥६७॥
सो मूलाओ वेज्जस्स, कहेइ सव्वं पि मंसवुत्ततं । तो विज्जेणं भणियं, हा मूढ! किमेत्तियदिणाणि ॥६८॥
संतावं उवणीओ, अप्पा एवं ति संपयं पि तए । लद्धं चिय भद्द! कयं, रोगनिमित्तं जमुवइट्ठं ॥६९॥
ता मा भाहिसि एत्तो, तह काहं जह निराऽऽमओ होसि । तो तदुचियं चिगिच्छं, पजुंजिउं सो कओ पगुणो ॥७०॥
इय एयनिदंसणओ, लज्जं मोत्तूण जं जहा विहियं । तं तह आलोइंतो, परमं आरोग्गयं लभइ ॥७१॥
नो गारवपडिबंधो, कायव्वो अवि य चरणपडिबंधो । गारवरहिया मुणिणो, थिरचरणा जं गया मोक्खं ॥७२॥
[3]इड्ढाऽऽइगारवेसुं, दोग्गइमूलेसु जे उ पडिबद्धा । वियडंति नाऽवराहे, मा अम्ह इमे न होहिंति ॥७३॥
ते अथिरकायमणिए, काऊण पिए जडाऽवमन्नंति । निरुवमसुहसंजणयं, निच्चं चिंतामणीरयणं ॥७४॥

1. चलवलियं = चञ्चलत्वम् । 2. वियडणाए = आलोचनायाम् । 3. ऋद्धि-आदिगौरवेषु ।

ता चत्तगारवेणं, जिइंदियेणं कसायरहिएणं । रागद्दोसविमुक्केण, वियडणा होइ कायव्वा ॥७५॥
जाणामि जहा सम्मं, पच्छित्तमऽहं तहा णु को अन्नो । को वा बहुस्सुओ मे, मएण इय जो न वियडेइ ॥७६॥
दुच्चरियं अन्नेसिं, पमायओ सम्मकिरियपरिहीणो । वेज्जो व न सो पावो, पावइ आराहणाऽऽरोग्गं ॥७७॥
जह कोई रोगिवेज्जो, अकहिय अन्नेसि नाणगव्वेण । रोगं तब्बाहाए, सयकयकिरिओ हु विणट्ठो ॥७८॥
तह चेव य गव्वाओ, नासं पावेंति आणओ चेव । जे न अवराहरोगं, सम्मं वियडेंति अन्नेसिं ॥७९॥
छत्तीसगुणजुएण वि, जम्हा एसा अवस्सकायव्वा । परसक्खिय च्चिय सया, सुट्ठु वि ववहारकुसलेणं ॥८०॥
दंसणनाणचरित्ताऽऽ-यारा अट्ठऽट्ठभेयभिन्ना तो । बारसविहतवजुत्ता, छत्तीसगुणा य इय होंति ॥८१॥
वयछक्काऽऽई अट्ठारसेव, आयारवाइ अट्ठेव । पच्छित्तदसगमेए, अहवा छत्तीससूरिगुणा ॥८२॥
तह पवयणमायासमण-धम्मवयछक्ककायछक्काऽऽई । अट्ठदसऽट्ठारसभेय-ओ गुणा होंति छत्तीसं ॥८३॥
आयारवमाऽऽइया, अट्ठ गुणा दसविहो य ठियकप्पो । बारसतव छाऽऽवासय-छत्तीसगुणा इमे अहवा ॥८४॥
इय बहुभेयछत्तीसगुण-गणाऽलंकिएण वि विसोहि । परसक्खिय च्चिय सया, कायव्वा मोक्खसोक्खकए ॥८५॥
जह कुसलो वि हु वेज्जो, अन्नस्स कहेइ अप्पणो वाहिं । सोऊण तस्स वेज्जस्स, सो वि किरियं समाऽऽरभइ॥८६॥
एवं जाणंतेण वि, पायच्छित्तविहिमऽप्पणो सम्मं । तहवि य पागडतरयं, आलोएयव्वयं गुरुणो ॥८७॥
आलोयणं अदाउं, सइ अन्नम्मि वि तहऽप्पणो दाउं । जे वि हु करेंति सोहिं, ते वि न आराहगा होंति ॥८८॥
एतो च्चिय सोहिकए, गीयस्सऽन्नेसणा उ उक्कोसा । जोयणसयाणि सत्त उ, बारस वरिसाणि कायव्वा ॥८९॥
आलोयणाअदाणे, दोसा इइ वन्निया समासेणं । वोच्छामि अओ उड्ढं, जे उ गुणा होंति दाणम्मि ॥९०॥
लहुया[1] ल्हाईजणणं[2], अप्पपरनियत्ति[3] अज्जवं[4] सोही[5] । दुक्करकरणं[6] विणयो[7], निस्सल्लत्तं[8] च सोहिगुणा ॥९१॥
इह कम्मचओ भारो भंजइ जीवे स जेण अच्चत्थं । भग्गा य तेण सिवगइ-गमणम्मि ण पच्चला होंति ॥९२॥
वियडंतस्स उ दोसे, असंकिलिट्ठस्स सुद्धभावस्स । सो परिहायइ बहुसो, पुव्वचिओ कम्मगुरुभारो ॥९३॥
तह भावओ य गुरुई, चारित्तगुणे पडुच्च जीवाणं । सिवगतिकारभूआ, जायइ परमत्थओ लहुया ॥९४॥
जह जह सुद्धसहावो, दोसे वियडेइ सम्ममुवउत्तो । तह तह पल्हाइ मुणी, नवनवसंवेगसद्धाओ ॥९५॥
पत्तो मया सुवेज्जो, दुलहो एसो य भाववाहिम्मि । लज्जाऽऽइया य तुच्छा, वाहिस्स वियड्ढया घोरा ॥९६॥
ता वियडिऊण सम्मं, इमस्स चलणंतियम्मि धन्नस्स । काहामि अप्पमत्तो, भवदुक्खनिवारणिं किरियं ॥९७॥
तह वियडिए य ल्हाई, उप्पज्जइ एव सुद्धभावस्स । धन्नो हं भवगहणे, जेण मए सोहिओ अप्पा ॥९८॥
न कुणइ अओऽवराहे, चरणाउं लज्जओ य किच्चाणं । पायच्छित्तभएण य, नियत्तिओ एवमऽप्पा उ ॥९९॥
दट्ठूण तं सुसाहुं, एव जयंतं परे वि भयभीया । न कुणंति अकिच्चाइं, सेवंति य नवरं किच्चाइं ॥५०००॥
अप्पपरनियत्तीए, एवं सपरोवयारभावो उ । न य सपरुवगाराउ, महल्लतरयं गुणट्ठाणं ॥१॥
आलोयणाए अज्जव-सोहीओ परमनेव्वुइकरीओ । भवभयनिवारणीओ, पन्नत्ता वीयरागेहिं ॥२॥
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स [1]चेट्ठइ । निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्ते व्व पावए ॥३॥
णियडीकिलिट्ठचित्तो, बंधइ कम्मं किलिट्ठमेव बहुं । जीवो पमायबहुलो, किलिट्ठकम्मस्स य नियाणं ॥४॥
अइसंकिलिट्ठकम्माऽणु-वेयणे जो उ होइ परिणामो । सो संकिलिट्ठकम्मस, कारणं जमिह पाएणं ॥५॥
तत्तो य भवविवड्ढी, तओ य दुक्खाइं णेगभेयाइं । इइ संकिलेसमूलं, नियडि च्चिय होइ नायव्वा ॥६॥
उम्मूलणेण तीसे, संजायइ अज्जवं जओ तेण । आलोयण दायव्वा, सोहिनिमित्तं च जीवस्स ॥७॥
दुक्करकरणं च इमं, जं सेविज्जइ सुहं पमाएण । दुक्खं आलोइज्जइ, जहट्ठियं कम्मदोसाओ ॥८॥
लज्जाअभिमाणाऽऽइ-महाबले णेगभवसयऽब्भत्थे । वियडंति जे अगणिउं, ते दुक्करकारया लोए ॥९॥
पाविंति वि ते चेव य, अकलंकाऽऽराहणं महासत्ता । भवसविवागमहणिं, जे आलोयंति इय सम्मं ॥१०॥
तित्थयराऽऽणापालण-गुरुजणविणओ य सेविओ होइ । आलोयणापयाणे, सम्मं नाणाऽऽइविणओ य ॥११॥
'विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे । विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो ॥१२॥

1. वट्टइ B ।

जम्हा विणयइ कम्मं, अट्ठविहं चाउरंतमोक्खाए । तम्हा उ वयंति विऊ, विणयो त्ति विलीणसंसारा ॥१३॥
जं जायइ निस्सल्लो, नियमा आलोइऊण जइमत्थो । नो अन्नहत्ति तम्हा, निस्सल्लत्तं गुणो तीए ॥१४॥
न हु सुज्झइ ससल्लो, जह भणियं सासणे धुयरयाणं । उद्धरियसव्वसल्लो, सुज्झइ जीवो धुयकिलेसो ॥१५॥
तो उद्धरंति गारव-रहिया मूलं पुणब्भवलयाणं । मिच्छादंसणसल्लं, मायासल्लं नियाणं च ॥१६॥
उद्धरियसव्वसल्लो, आलोइयनिंदिओ गुरुसयासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरियभरो व्व भारवहो ॥१७॥
आलोयणागुणा खलु, इइ एवं वन्निया समासेणं । एत्तो जह दायव्वा, तह वोच्छं तत्थिमा मेरा ॥१८॥
वक्खेवविरहिएणं[1] पसत्थदव्वाऽऽइजोग[2] सुदिसाए[3] । विणएण[4]मुज्जुणाऽऽसे-वणाऽऽइलोमेण छस्सवणा ॥१९॥
वक्खेवविरहिएणं, निच्चं चिय जइजणेण होयव्वं । मोत्तूण संजमपयं, विसेसओ वियडणाए उ ॥२०॥
विहिं तिहिं वा दिवसेहिं, दायव्वाऽऽलोयण त्ति तो सम्मं । सुत्तविउद्धो हियए, अवराहपए निवेसेज्जा ॥२१॥
तो ऋजुभायमुवगओ, सव्वे दोसे सरित्तु तिक्खुत्तो । लेसाहिं विसुज्झंतो, उवेइ सल्लं समुद्धरिउं ॥२२॥
पच्चाऽऽगयसंवेगो, सम्मं वियडेज्जे तह जहा कम्मं । परिणामविसेसेणं, छिंदेज्ज भवंतरकयं पि ॥२३॥
दव्वाऽऽइया य चउरो, एक्केक्क दुहा पसत्थमऽपसत्था । अपसत्थे वज्जेउं, पसत्थएसुं तु आलोए ॥२४॥
अमणुन्नधन्नरासी, अमणुन्नदुमा य होंति दव्वम्मि । खेत्तम्मि भग्गझामिय-घरऊसरपमुहठाणाइं ॥२५॥
काले दड्ढतिही तह, अमावसा अट्ठमी य नवमी य । छट्ठी य चउत्थी बा-रसी य दोण्हं पि पक्खाणं ॥२६॥
तह संझागयरविगय--पमोक्खनक्खत्तअसुहजोगा य । भावे य रागदोसा, पमायमोहाऽऽदओ अहवा ॥२७॥
एएसुं नाऽऽलोए, आलोएज्जासु तव्विवक्खेसु । दव्वे सुवन्नमाऽऽईसु, खीरदुमाऽऽईसु वाऽऽलोए ॥२८॥
उच्छुवणे सालिवणे, चेइहरे चेव होइ खेत्तम्मि । गंभीरसाऽणुनाए, पयाहिणाऽऽवत्तमुदए य ॥२९॥
पुव्वुत्तसेसतिहिरिक्ख-करणजोगाऽऽइए सुकालम्मि । भावे मणाऽऽइपसमे, उच्चाऽऽइठिएसु य गहेसु ॥३०॥
सोमग्गहलग्गेसु व, पुन्नेसु पसत्थभावजणगेसु । सुहदव्वाऽऽइसमुदओ, जोगो पुण एत्थ विन्नेओ ॥३१॥
सुदिसाओ पुण पुव्वुत्तराउ, अहवा चरंति जिणमाऽऽई । जा नवपुव्वी जीए, जीए जिणचेइयाइं वा ॥३२॥
तत्थ —
जइ पुव्वमुहाऽऽयरिओ, तो इयरो ठाइ उत्तराऽभिमुहो । अह उत्तरआयरिओ, तो इयरो ठाइ पुव्वमहो ॥३३॥
पाईणोदीणमुहो, चेइयहुत्तो व्व सुहनिसन्नो य । आलोयणं पडिच्छइ, परोययारेक्करसियमणो ॥३४॥
भत्तिबहुमाणपुव्वग-मुचियं दाऊणमाऽऽसणं गुरुणो । काऊण य किइकम्मं, कयंऽजली अभिमुहो य ठिओ ॥३५॥
संविग्गभवुव्विग्गो, विसयविरत्तो य सो महासत्तो । उक्कोसेणुक्कुडुओ, जइ पुण अरिसाऽऽइरोगत्तो ॥३६॥
बहुपडिसेवी य भेव, अणुन्नवेउं तओ निसेज्जगओ । भत्तिविणउत्तमंगो, वियडेज्जा अवितहं सव्वं ॥३७॥
जह बालो जंपंतो, कज्जमऽकज्जं च उज्जुओ भणइ । तं तह आलोएज्जा, मायामयविप्पमुक्को य ॥३८॥
दुविहेणऽणुलोमेणं, आसेवणवियडणाऽभिहाणेणं । आसेवणाऽणुलोमं, जं जह आसेवियं वियडे ॥३९॥
आलोयणाऽणुलोमं, गुरुगऽवराहे उ पच्छओ वियडे । पणगाऽऽइणा कमेणं, जह जह पच्छित्तवुड्ढीओ ॥४०॥
तह आउट्टियदप्प-प्पमायओ कप्पओ य जयणाए । कज्जे वा जयणाए, जहट्ठियं सव्वमाऽऽलोए ॥४१॥
चउसवणा साहूणं, छस्सवणा साहूणीण नायव्वा । सा पुण गुरुम्मि वुड्ढे, वुड्ढाए अप्पबीयाए ॥४२॥
होइ तह अट्ठसवणा, तरुणम्मि गुरुम्मि अप्पबीयस्स । अप्पबीयाए देया, तरुणीए थेरिसहियाए ॥४३॥
जह दायव्वा तह वन्निया उ, आलोयणा समासेणं । एत्तो उ अणेगविहं, आलोएयव्वयं वोच्छं ॥४४॥

'आलोचयितव्यविषयद्वारम्' —

तं पुण नाणदंसण-चरणतवोविरियभेयभिन्नस्स । पंचविहाऽऽयारस्स उ, वितहपवित्तीए नायव्वं ॥४५॥
तत्थ समत्थपयत्थ-प्पयासणे सरयसूरसरिसस्स । अइसयनिहिणो नाणस्स, भयवओ भुवणमहियस्स ॥४६॥
जो को वि हु अइयारो, कालाऽऽइसु वितहसेवणाजणिओ । सो कुसलसल्लभूओ, आलोएयव्वओ सम्मं ॥४७॥
सन्नाणलद्धिविच्छड्ड-धारगाणं च पुरिससीहाणं । तह नाणाऽऽधाराणं, पोत्थयपडपट्टियाऽऽईणं ॥४८॥
चरणाऽऽइघट्टणेणं, हीलाकरणेण अविणएणं वा । जो अइयारो विहिओ, आलोएयव्वओ सो वि ॥४९॥

एयं खु दंसणम्मि वि, संकाऽऽईण कहं पि करणेण । उववूहणाऽऽइयाण य, पमायदोसा अकरणेण ॥५०॥
तह पवयणप्पभावग-पुरिसविसेसाण जणपसिन्द्राणं । पावयणियपमुहाणं, उचियपवित्तीअकरणेण ॥५१॥
सम्मत्तनिमित्ताणं, तहेव जिणभवणबिम्बमाऽऽईण । जिणसिद्धसुरियायगा-समणाण तवस्सिणीणं च ॥५२॥
सावयसुसाविगाण य, अच्चाऽऽसायणअयन्नमाऽऽईहिं । जो विहिओ अइयारो, सो वि हु आलोयणाविसयो ॥५३॥
चरणम्मि वि मूलुत्तर-गुणरुवे समिइगुत्तिरुवे य । जो अइयारो सो वि हु, आलोएयव्वओ तत्थ ॥५४॥
छज्जीयनिकायाणं, घट्टणपरितावणाए उद्दवणे । पाणाऽइवायविरमण-विसयो संभवइ अइयारो ॥५५॥
एयं बीयवयम्मि वि, कोहेणं माणमायलोभेहिं । हासेण भएणं वा, तहाविहाऽसच्चवयणम्मि ॥५६॥
पहुणा जमऽदिन्नाणं, सच्चित्ताऽचित्तमीसदव्वाणं । हरणं तं तइयव्वय-गोयरमऽइयारमऽवगच्छ ॥५७॥
सुरतिरियनरित्थीणं, पत्थणअहिलसणसेवणाऽऽईहिं । तुरियवए अइयारं, आलोएयव्वयं जाण ॥५८॥
देसकुलगिहत्थेसुं, अइरित्तुवहिम्मि जो अईयारो । चरिमवए अइयारो, सो वि हु आलोयणाजोग्गो ॥५९॥
दियगहियाऽऽइचउहा, निसिभत्तवयम्मि जो अईयारो । सुगुरुसमीवे सो वि हु, सम्मं आलोयणाअरिहो ॥६०॥
उत्तरगुणे य पिंडग्गहम्मि, अहवा वि भिक्खुपडिमासु । भावणबारसगम्मि, दव्वाऽऽइअभिग्गहेसुं च ॥६१॥
पडिलेहणापमज्जण-पत्तुवहिनिसीयणाऽऽइविसयम्मि । जो अइयारो विहिओ, सो वि हु आलोयणिज्जो तो ॥६२॥
ईरियाए अणुयओगे, सावज्जोहारिणीए भासाए । अविसुद्धभत्तपाणाऽऽइ-गहणओ एसणाए वि ॥६३॥
अप्पडिलेहपमज्जिय-भंडगउवगरणगहणनिक्खेवे । उच्चाराईणमऽथं-डिले वि जह तह य परिट्ठवणे ॥६४॥
इय पंचसु समिईसुं, गुत्तीसु य तीसु जो अईयारो । जाओ पमायओ को वि, सो वि आलोयणाअरिहो ॥६५॥
इय रागाऽऽइवसेणं, नट्ठविवेगेण असुहलेसेणं । जं कलुसियं चरित्तं, तं सइ आलोयणिज्जं तु ॥६६॥
एवं तवम्मि अणसण-माऽऽइपयारेहिं बज्झरुवम्मि । अब्भिंतरम्मि वि तहा, पायच्छित्ताऽऽइभेएहिं ॥६७॥
सत्तीसब्भावम्मि वि, जमऽणायरणं कयं पमाएणं । सो होइ अईयारो, आलोएयव्वओ नियमा ॥६८॥
विरिए वि हु अइयारं, सपरक्कमगोवणेण किच्चेसु । सियगइनिबंधणेसुं, आलोएयव्वयं जाण ॥६९॥
रागद्दोसकसाओ-वसग्गइंदियपरिसहट्टेण । जं दुट्ठु वट्टियं तं पि, संममाऽऽलोइयव्वं ति ॥७०॥
मंदाऽवधारणत्तेण, जे य नो सुमरणापहे ठंति । असढस्स तस्स ओहेण, ते वि आलोइयव्वा उ ॥७१॥
एवं विचित्तभेयं, आलोएयव्वयं तु निद्दिट्ठं । जह सा दवावियव्वा, गुरुणा तह संपयं वोच्छं ॥७२॥
पुव्वुत्तो चेव गुरु, णवरं जो तत्थ होइ आगमिओ । पडिवज्जिहि त्ति नाउं, पम्हुट्ठे सारणं कुणइ ॥७३॥
जो पुण नो पडिवज्जइ, सुट्ठुवि जत्तेण सासिओ तं तु । नो सारेइ भयवं, जम्हा सो सारणवसेण ॥७४॥
गच्छं पि परिचएज्जा, गुणगणपरिमंडियं तु लज्जाए । अहवा होज्ज गिहत्थो, मिच्छंत्त वा वि गच्छेज्जा ॥७५॥
गुणदोसे मुणिऊणं, इच्छइ आलोयणं पुणो पच्छा । चोएइ देसकाले, सम्मं पडिवज्जिही जम्मि ॥७६॥
एगंतेण अजोगं, मुणिऊणं अहव नो पडिच्छेइ । तह जह से न वि जायइ, सुहुमं पि अपत्तियं किंपि ॥७७॥
इयरे य सुयाऽऽईया, आलोयावेंति ते पुण तिखुत्तो । सरिसऽत्थअपलिउंचिं, आगाराऽऽईहिं नाऊण ॥७८॥
आगारेहिं सरेहिं, पुव्वाऽवरवाहयाहिं य गिराहिं । पलिउंचिस्स सरुवं, कुसला पाएण जाणंति ॥७९॥
जो सम्मं नाऽऽलोए, तस्सऽणुसट्ठिं पुणो पजुंजंति । तह वि हु अठायमाणे, कारणओ नवरि पडिसेहो ॥८०॥
आह न छउमत्थेणं, पडिच्छियव्वे वि वियडणा नेय । दायव्वं पच्छित्तं, नाणस्स अभावओ सम्मं ॥८१॥
परिणामहेउकम्मं, न य नज्जइ कस्स केरिसो सो य । निच्छयओ अन्नाए, तम्मि य कम्मं पि तेण समं ॥८२॥
भन्नइ जह छउमत्थो वि, आगमे कयपरिस्समो वेज्जो । दिट्ठकिरिओ य रोगं, अवणेइ तहेव एसो वि ॥८३॥
इय जह दवावियव्वा, गुरुणा आलोयण त्ति तह भणिया । पच्छित्तदारमेत्तो, समासओ संपवक्खामि ॥८४॥
दसविहपायच्छित्तं, आलोयणमाऽऽइयं मुणेयव्वं । जो तत्थ जेण सुज्झइ, अइयारो तं तदऽरिहं तु ॥८५॥
आलोयणेण सुज्झइ, अइयारो को वि को वि पडिकमणे । मिस्सेण को वि ता जाव, को वि पारंचिएणं ति ॥८६॥
पच्छित्ताइं चरंतस्स, सुद्धचित्तस्स अप्पमायाओ । जायइ पावविसुद्धी, भुज्जो तदऽकरणसत्तस्स ॥८७॥
तम्हा बज्झऽब्भन्तर-करणसमग्गेण धम्मिएणेह । निच्चं चिय होयव्वं, न अन्नहागाहजुत्तेणं ॥८८॥

पच्छित्तदारमेवं, कमपत्तं वन्नियं समासेण । फलदारमडओ वोच्छं, चोएइ य चोयगो तत्थ ॥८९॥
आलोयणाए पुव्वं, जे चेव गुणा पवन्निया इहइं । तयडणंतरभावाओ, ते चेव फलं किमेएण? ॥९०॥
भन्नइ न एत्थ दोसो, ते चेवाडणंतरं फलं किंतु । इहइं परंपरफलं, पडुच्च दारस्सुवन्नासो ॥९१॥
तं पुण इमीए भणियं, जिणेहिं जियरागदोसमोहेहिं । मोक्खो सारीरेयर-दुक्खक्खयओ सयासोक्खो ॥९२॥
सम्मत्तनाणचरणा, तवो य जं मोक्खहेयवो भणियो । सइ चरणम्मि य नियमा, हवंति सम्मत्तनाणाइं ॥९३॥
तस्स य पमायदोसा, मालिन्नमुवागयस्स संतस्स । भवसयसहस्समहणी, कीरइ सोही इमाए उ ॥९४॥
सुद्धचरणो य साहू, जयमाणो अप्पमायवं धीरो । खविऊण कम्मसेसं, अचिरा वरकेवलमुवेइ ॥९५॥
संपत्तकेवलो पुण, तेणेव भवेण [1]नीरओ भयवं । असुरसुरमणुयमहिओ, उवेइ मोक्खं सयासोक्खं ॥९६॥
एयं पच्छित्तफलं, लेसुद्देसेण किंपि उवइट्ठं । तब्भणणा पुण भणियं, पत्थुयमाडडलोयणविहाणं ॥९७॥
एयं च सम्ममडवगम्म, खवग! परिचत्तअत्त[2]उक्कोसो । उक्कोसं आराहण-विहाणमडभिलसिउकामो सो ॥९८॥
ठाणाडडइसु अइयारं, अणुमेत्तं पि हु समुद्धरसु धीर! । अकयप्पडियारो विस-लवो वि मारेइ णियमेण ॥९९॥
थेवो वि हु अइयारो, पायं जं होइ बहुअणिट्ठफलो । एत्थं पुण आहरणं, विन्नेयं सूरतेयनिवो ॥५१००॥
तहाहि —

"सुरतेजनरसुन्दरयोः दृष्टान्तः"

पउमावईए पुरीए, विविहडच्छेरयनिवासभूयाए । राया अहेसि नामेण, विस्सुओ सूरतेओ त्ति ॥१॥
निक्कवडपेमधरणी नामेणं धारणी उ से भज्जा । तीए समं नरवइणो, विसयसुहं भुंजमाणस्स ॥२॥
उचियसमयाडणुरूवं, जणवयकज्जं च चिंतयंतस्स । धम्मडत्थं पि हु परिभा-विरस्स वच्चंति दियहाइं ॥३॥
अह एगम्मि अवसरे, सुयसागरपारगो जयपसिद्धो । पुरबहिया उज्जाणे, एगो सूरि समोसरिओ ॥४॥
तस्साडडगमणं सोउं, राया पुरिपवरलोयपरियरियो । करिकंधराडधिरूढो, सिरोवरिं धरियसियछत्तो ॥५॥
पासट्ठियतरुणीयण-करचालियचारुचामरुप्पीलो । सहरिसपुरपरिसप्पिर-मागहगिज्जंतगुणनिवहो ॥६॥
अरिहंतधम्मसवणडत्थ-माडडगओ तम्मि चेव उज्जाणे । नमिउं च सूरिचरणे, उचियपएसम्मि आसीणो ॥७॥
अह मुणिवइणा नाऊण, जोग्गयं सजलमेहगहीराए । वाणीए सुद्धसद्धम्म-देसणा काउमाडडरद्धा ॥८॥
जहा —

परियट्टिऊण जीवा, सुचिरं भवसायरे अपारम्मि । कहकहवि कम्मलहुय-त्तणेण पावेंति मणुयत्तं ॥९॥
पत्ते वि तम्मि हीण-त्तणेण खेत्तस्स होंति निद्धम्मा । पवरे वि तम्मि जाती-कुलवियला किं पकुव्वंति ॥१०॥
उत्तमजाइकुला वि हु, रूवाडडरोग्गाडडइगुणगणविउत्ता । न खमंति किंपि काउं, छायापुरिस व्व सुहमडत्थं ॥११॥
रूवाडडरोग्गाडडईहिं पि, संगया थोयआउयत्तेण । नेवाडचत्थाणं पा-उणंति जलबुब्बुय व्व चिरं ॥१२॥
सुचिराडडउणो वि बुद्धी-सवणोग्गहविरहिया हियडत्थेसु । विमुहा के वि हु मूढा, अच्चंतं विसमसरविहुरा ॥१३॥
तत्तोवएसयं सुह-गुरुं पि वेरिं व दुज्जणजणं व । मन्नंता विसएसु, अणवरयं पि हु पयट्टंति ॥१४॥
ते य तह संपयट्टा, विविहाहिं आवयाहिं परियरिया । मरणमुवेंति अवंति-निवो व्व विहलियमणुस्सभया ॥१५॥
अन्ने पुण कुसलमईए, मुणियविसयत्थसोक्खविगुणत्ता । नरसुंदरो व्व दढधम्म-बद्धलक्खा लहुं होन्ति ॥१६॥
अह सूरतेयरन्ना, विम्हियहियएण पुच्छियं भंते! । कोडयमडवंतीनाहो, को वा नरसुंदरो एसो ॥१७॥
गुरुणा भणियं नरवर!, कहेमि सम्मं तुमं निसामेसु । धरणियलमंडणाए, नयरीए तामलित्तीए ॥१८॥
कोवम्मि जमो कित्तीए, अज्जुणो भुयजुयम्मि बलभद्दो । एगो वि अणेगो इव, राया नरसुंदरो आसि ॥१९॥
अप्पडिमरूवकलिया, रइ व्व लच्छि व्व पवरलायन्ना । भइणी बंधुमई से, अहेसि दढनेहपडिबद्धा ॥२०॥
सा य विसालापुरिनायगेण, रन्ना अवंतिनाहेण । परमेण आयरेणं, परिणीया पत्थणापुव्वं ॥२१॥
ता सो तीए बाढं, अणुरत्तो मज्जपाणवसणे य । आसत्तो अणवरयं, दिवसाइं गमेउमाडडरद्धो ॥२२॥
तस्स उ पमायदोसा, रज्जे रट्ठे य सीयमाणम्मि । पयइपहाणजणेहिं, सचिवेहि य मंतिउं सम्मं ॥२३॥
तप्पुत्तो रज्जम्मि, ठविओ सो पुण निसाए पासुत्तो । पउरं पाइय मइरं, देवीए समं नियनरेहिं ॥२४॥

1. नीरजाः = कर्ममुक्तः । 2. उक्कोसो = उत्कर्षः = अहङ्कारः ।

पल्लंकठिओ संकेइएहिं, नेऊण उज्झिओ रन्ने । हरिहरिणकोलसद्दुल-भिल्लभल्लुंकिबहुलम्मि ॥२५॥
बद्धो य उत्तरिज्जे, लेहोऽ-णाऽऽगमणसूयगो तस्स । अह पच्चूसे उवलद्ध-चेयणो ववगयमओ य ॥२६॥
पासाइं जा पलोयइ, राया ता वत्थअंचलनिबद्धं । लेहं दट्ठुं तं वा-इउं च विन्नायपरमत्थो ॥२७॥
भालयलघडियभिउडी, कोववसाऽऽयंबिरऽच्छिविच्छोहो । दसणऽग्गदट्ठउट्ठो, इय भज्जं भणिउमाऽऽढत्तो ॥२८॥
ओ! पेच्छ पेच्छ पावाण, मंतिसामंतभिच्चपमुहाण । निच्चं कओवयाराण, निच्चं दिज्जंतदाणाणं ॥२९॥
निच्चमऽपुव्वाऽपुव्व-प्पसायविप्फारियऽप्पसिद्धीणं । अवराहे वि हु निच्चं, सपणयदिट्ठीए दिट्ठाण ॥३०॥
अविभिन्नरहस्साणं, संसइयऽत्थेसु पुच्छणिज्जाणं । नियकुलकमाऽणुरूवं, एवंविहचेट्ठियं सुयणु! ॥३१॥
मन्ने सयमेव मुहम्मि, मच्चुणो पविसिउं समीहंति । ते पावा कहमिहरा, सामिद्दोहे मई होज्जा ॥३२॥
ता तम्मुंडाइं खंडिऊण, महिमंडलं अहं इन्हिं । मंडेमि निसिचरे वि हु, तदीयपिसिएण पोसेमि ॥३३॥
तल्लोहिएण तण्हं, अवणेमि य पूयणासमूहस्स । कीणासस्स व कुवियस्स, मज्झ किमऽसज्झमिह सुयणु! ॥३४॥
एमाऽऽइ जंपमाणो, अविभावियनिययदेव्वपरिणामो । राया बंधुमईए, विन्नत्तो मंजुलगिराए ॥३५॥
देव! पसीयसु संपइ, मुंचसु कोवं न एस पत्थावो । समओचियं हि सव्वं, कीरंतं बहुगुणं होइ ॥३६॥
तुममऽसहाओ पब्भट्ठ-लट्ठरज्जो विरत्तपयई य । कह नाह! इन्हि सत्तूण, विप्पियं काउमुच्छहसि ॥३७॥
ता ऊसुगत्तमुज्झसु, वच्चामो तामलित्तिनयरीए । पच्छामो दढपणयं, तत्थ य नरसुंदरनरेंदं ॥३८॥
पडिवन्नमिमं रन्ना, कमेण गंतुं च संपयट्टाइं । पत्ताणि य सामंते, नयरीए तामलित्तीए ॥३९॥
अह देवीए भणियं, नरवर! तुममेत्थ ठाहि उज्जाणे । अहमऽवि कहेमि गंतूण, भाउणो तुज्झ आगमणं ॥४०॥
जेणं सो हरिकरिजोह-संदणुद्दामनिययरिद्धीए । आगंतूणाऽभिमुहो, तुमं पवेसेइ नयरीए ॥४१॥
एवं होउ त्ति निवेण, जंपिए सा गया नरेंदहरं । सीहासणे निसन्नो, दिट्ठो नरसुंदरो य तहिं ॥४२॥
अवितक्कियमाऽऽगमणं, दट्ठुं तेणाऽवि विम्हियमणेणं । उचियपडिवत्तिपुव्वं, पुट्ठा सव्वं पि वुत्तंतं ॥४३॥
सिट्ठो य तीए ता जाव, अमुगट्ठाणम्मि चिट्ठइ निवो त्ति । तो सो सव्विड्ढीए, तदऽभिमुहं पट्ठिओ झत्ति ॥४४॥
सो पुण अवंतिनाहो, तव्वेलं दढछुहाए संतत्तो । वालुंकिकच्छयम्मि, चिब्भिडिगाभक्खणनिमित्तं ॥४५॥
चोरो व्व अवद्दारेण, पविसमाणो उ कच्छगनरेण । मम्मपएसे पहओ, जट्ठीए निरऽणुकंपेण ॥४६॥
अह घोरघायवसनट्ठ-चेयणो वत्तिणी[1]विईणंऽतो । कट्ठघडिओ व्व पडिओ, निच्चेट्ठो धरणिवट्ठम्मि ॥४७॥
एत्थंऽतरम्मि नरसुं-दरो निवो विजयरहवराऽऽरूढो । तस्साऽवलोयणऽत्थं, पत्तो तम्मि पएसम्मि ॥४८॥
नवरं तरलतुरंगम-खुरप्पहारुक्खएहिं रेणूहिं । तिमिरभरऽक्कंतं पिव, तव्वेलं नहयलं जायं ॥४९॥
अवलोयणविरहेण य, निवरहतिक्खग्गचक्कधाराए । तह निवडियस्स कंठो, दुहाकओ अवंतिनाहस्स ॥५०॥
अह पुव्वुवदिट्ठे ठाणगम्मि, भइणीवइं अपेच्छंतो । राया बंधुमईए, वित्तंतमिमं कहावेइ ॥५१॥
हा हा दिव्व! किमेयं? ति, संभमुब्भंततरलतारऽच्छी । बंधुगिरं बंधुमती, सुणिऊण समागया झत्ति ॥५२॥
तो अवलोयंतीए, सुनिउणदिट्ठीए नट्ठरयणं व । तमऽवत्थं संपत्तो, कहकहवि हु तीए सो दिट्ठो ॥५३॥
दट्ठुं च नट्ठजीयं, तं मोग्गरचूरिय व्व दुक्खत्ता । मुच्छानिमीलियऽच्छी, झडत्ति धरणीयले पडिया ॥५४॥
पासपरिवत्तिपरियण-कयसिसिरुवयारविगयमुच्छा य । पम्मुक्कदीहपोक्कं, विलविउमेवं समारद्धा ॥५५॥
हा हा अवंतिनरवर!, निरुवयविक्कमनिहाण! पावेण । एयंविहं अवत्थं, केणाऽणज्जेण नीओ सि ॥५६॥
हा पाणनाह! तुमए, सग्गोवगयम्मि मह अपुन्नाए । अज्ज वि य जीवियव्वे, विज्जइ नाऽऽलंबणं किंपि ॥५७॥
हयदिव्व! किं न तुट्ठो, रज्जऽवहारेण देसचाएण । सुहिजणविओयणेण य, जमेयमऽवि ववसिओ पाव! ॥५८॥
हे हियय! हीण! निग्घिण!, अणज्ज! वज्जेण किमऽसि निम्मवियं? ।
जं न विलिज्जसि अज्ज वि, पियविरहहुयासतवियं पि ॥५९॥
सा रायसिरी सो भय-नमंतसामंतमंडलो सामी । तमऽणन्नकामिणीजण-कमणीयं तस्स मइ पेम्मं ॥६०॥
तं आणिस्सरियं सयल-लोयसाहारणं धणं धिद्धी! । नट्ठं एक्कपए च्चिय, सव्वं गंधव्वनयरं व ॥६१॥

1. वृतीनामन्तः = वाडोनी वचमां ।

आणंदसंदिसुंदर-मुहेंदुमऽवलोइउं च देवस्स । कहमिन्हिं पेच्छिस्सं, थुडुंकियाइं खलु मुहाइं ॥६२॥
कह वा देवपसाएण, विविहकीलाहिं कीलिऊणिन्हि । रुद्धपयारा रिउगे-हिणि व्व [1]वसिहं परगिहम्मि ॥६३॥
एमाऽऽइ विलवमाणी, करताडणदलियपीणथणवट्टा । विलुलियकुंतलभुयउत्त-रिज्जपरिगलियवलया य ॥६४॥
अप्पाणं सुचिरं झूरिऊणं, तं किंपि सोगसंभारं । हिययम्मि उव्वहंती, नरसुंदरराइणा बहुसो ॥६५॥
वारिज्जंती वि बहु-प्पयारवयणेहिं भत्तुणा समगं । जालाऽऽउलम्मि जलणम्मि, निवडिया सा पयंगि व्व ॥६६॥
अह संवेगोवगओ,राया नरसुंदरो विचिंतेइ । अविचिंतणीयरूवा, धिद्धी एसा भवस्स ठिई ॥६७॥
जत्थ सुही वि हु दुहिओ, निवो वि रोरो सुमित्तमऽवि सत्तू । संपत्ती वि विवत्ती, परिणमइ निमेसमित्ते वि ॥६८॥
कहमऽहुण च्चिय तीए, चिरकालाओ समागमो जाओ । कहमिन्हिं पि विओगो, धिरऽत्थुं संसारवासस्स ॥६९॥
मन्ने करिकन्नसुरिंदचाय-तडिचावलेण निम्मवियं । वत्थु समत्थं एत्थं, तेणं खणदिट्ठनट्ठं तं ॥७०॥
एवंविहे य कहमिह, खणमऽवि निवसंति मुणियपरमत्था । वीसत्था सगिहेसुं, अहह! महा धिट्ठिमा तेसिं ॥७१॥
इय संसारविरत्तो, स महासत्तो सुयं नियरज्जे । ठविऊण कयाऽणसणो, सुहम्मि भावम्मि वट्टंतो ॥७२॥
सव्वन्नुसासणम्मि, बहुमाणमऽपुव्वमुव्वहंतो य । मरिऊण बंभलोए, भासुररूवो सुरो जाओ ॥७३॥
तत्तो य उत्तरोत्तर-विसोहिवसओ स कइ वि भवगहणे । नरसुरसिरिमऽणुभविउं, परमसुहं सिवपयं पत्तो ॥७४॥
एवमऽवंतीवइणो, रन्नो नरसुंदरस्स वि य चरियं । जं पुच्छियमाऽऽसि तए, नरवर! तमऽसेसमऽवि सिट्ठं ॥७५॥
सोच्चा य इमं पडिवक्ख-पक्खनिक्खित्तअसुहकायव्वो । तह कह वि पयट्टसु सूर-तेय! जह सूरतेओ सि ॥७६॥
एवं गुरुणा कहिए, राया परमुल्लसन्तसंवेगो । देवीए धारिणीए, सह पव्वइओ गुरुसमीवे ॥७७॥
अहिगयसुत्तऽत्थाण य, पइदिणवड्ढंतसुद्धभावाण । अइआरकलंकविमुक्क-साहुकिरिआरइपराण ॥७८॥
छट्ठऽट्ठमाऽऽइणिट्ठुर-तवोविहाणेक्कबद्धलक्खाणं । दोण्हं पि तेसि अपमत्त-याए वोलेंति दियहाइं ॥७९॥
अह अण्णया कयाई, स महप्पा विविहदूरदेसेसु । विहरित्ता संपत्तो, नयरम्मि हत्थिणागपुरे ॥८०॥
थीपसुपंडगरहिए, ठिओ य एगस्स गहवइस्स घरे । ओग्गहमऽणुजाणाविय, वासावासस्स करणत्थं ॥८१॥
सा वि हु अज्जा कहमऽवि, विहरंती तत्थ चेव नयरम्मि । वासाकालं काउं, वुत्था उचियप्पएसम्मि ॥८२॥
तेसिं च समणधम्मं, पालिंताणं विसुद्धचित्ताणं । जो वित्तंतो जाओ, तत्थ पुरे तं णिसामेह ॥८३॥
नियधणवित्थरनिज्जिय-कुबेरविहवस्स विन्हुनामस्स । इब्भस्स सुओ दत्तो त्ति, विस्सुओ मयणपडिरूवो ॥८४॥
नीसेसकलाकुसलो, विविहविलासाऽऽलओ विमलसीलो । विउसवयस्साऽणुगओ, नडपेच्छणयं गओ दट्ठुं ॥८५॥
तत्थ य विसट्टकंदोट्ट-दीहरऽच्छी रइ व्व पच्चक्खा । दिट्ठा नडस्य धूया, तदुवरि रागो य से जाओ ॥८६॥
तव्वेलं चिय अविआरिऊण, आजन्मकालियकलंकं । नियकुलस्स स दूरं, उज्झियलज्जो गिहे गंतुं ॥८७॥
तं चेव सुमरमाणो, जोगि व्व निरुद्धसेसवावारो । मत्तो व्व मुच्छिओ इव, घरेगदेसे ठिओ विजणे ॥८८॥
आपुच्छिओ य पिउणा, वच्छ! किमेवं तुमं अयंडे वि । करचरणचंपिओ चंप-गो व्व नज्जसि सिरीमुक्को ॥८९॥
किं रोसवसा किं वाऽ-वमाणओ किंव कहिंवि पडिबंधा । एवं वट्टसि पुत्तय!, कहेसु जा तदुचियं कुणिमो ॥९०॥
दत्तेण जंपियं ताय!, किंपि न मुणेमि कारणं सम्मं । नवरं अन्नाणं अणु-भवामि पीलिज्जमाणं य ॥९१॥
तो आदन्नो सेट्ठी, कया य तप्पसमणे बहुउवाया । न य थेवो वि हु जाओ, पडियारो अह वयस्सेहिं ॥९२॥
पेच्छणयदिट्ठनडधूय-पेहणुप्पन्नरागवुत्तंतो । सिट्ठो सेट्ठिस्स तओ, सो चिंतेउं समाढत्तो ॥९३॥
अहह कुलीणत्तम्मि वि, पडिखलणपरम्मि सुंदरविवेगे । पभवंते वि स उल्लसइ, को वि जीवस्स उम्माओ ॥९४॥
जेण न गणेइ गुरुणो, न लोयलज्जं न धम्मविद्धंसं । नो कित्तिं नो बंधुं, नो दुग्गइपडणपडिघायं ॥९५॥
ता किं करेमि एवं, ठियस्स एयस्स मूढहिययस्स । नऽत्थि स को वि उवाओ, जो लोयदुगस्स अविरुद्धो ॥९६॥
तह वि हु सुकुलपसूयाउ, कन्नगाउ मणोहरंऽगीउ । दंसेमि इमस्स मणो, जइ पुण विरमइ कहवि तत्तो ॥९७॥
एवं विभाविऊणं, निदंसिओ कन्नगाजणो तस्स । नडधूयाहरियमणो, खिवइ न सो तत्थ चक्खुं पि ॥९८॥
तो अचिकिच्छो त्ति विभा-विऊण सो सेट्ठिणा कओ सिढिलो । उज्झियलज्जेण तओ, तेणं दाउं नडाण धणं ॥९९॥

1. वत्स्यामि = मैं रहुंगा।

परिणीया सा कन्ना, अहह! अकज्जं कयं ति नयरे य । सव्वत्थ वि वित्थरिओ, लोयऽववाओ अपडिघाओ ॥५२००॥
जणमुहपरंपराए, सोऊण इमं च ईसि रागवसा । जंपेइ सूरतेओ, सचिम्हयं नत्थि रागस्स ॥१॥
नूणमऽसज्झं किंचिवि, कहमिहरा पवरकूलपसूओ वि । एवंविहं अकज्जं, काउं ववसेज्ज स वरागो ॥२॥
तीए वि साहूणीए, वंदणवडियाए आगयाए तहिं । वित्तंतमिमं सोच्चा, भणियं ईसिं पओसवसा ॥३॥
भो! होउ हीणजणसंकहाए, नियकज्जसाहणे जयह । मयणवसाणमऽकिच्चं, सुलहं चिय किमिह वयणिज्जं ॥४॥
इय संकहाए, मुणिणो, सुहुमो रागो तवस्सिणीए वि । सुहुमपओसो आओ, पमायओ तं च गुरुमूले ॥५॥
सम्ममऽणालोइत्ता, तव्वसओ नीयगोयमुवचिणिउं । पज्जंतम्मि मयाइं, काऊणं अणसणविहाणं ॥६॥
उववन्नाणि य देवत्तणेण, सोहम्मदेवलोयम्मि । घुसिणघणसारनिब्भर-सोरभपब्भारभरियम्मि ॥७॥
उवभुंजिऊण तत्थ य, पंचपयाराइं विसयसोक्खाइं । सो सूरतेयजीवो, चविऊणं इब्भवणियगिहे ॥८॥
पुत्तत्तेणववन्नो, देवी वि हु लंखगस्स गेहम्मि । धूयत्तेणुववन्ना, कयं च दोहि वि कलागहणं ॥९॥
पत्ताणि य तारुण्णं, न य कहमऽवि तस्स जुवइवग्गम्मि । उप्पज्जइ रागमई, तीए वि हु पुरिसवग्गम्मि ॥१०॥
एवं च तेसि वच्चंतयम्मि, कालम्मि एगया कहवि । तुडिजोगा संजोगो, जाओ अच्चंतरागो य ॥११॥
दत्तेण य तेण तओ, मयणहुयासणतविज्जमाणेण । वारिज्जंतेण वि जणणि - जणगपमुहेहिं सयणेहिं ॥१२॥
नडभूरिदाणपुव्वं, उव्वूढा सा विमुक्कलज्जेण । उज्झियगिहो य अह सो, नडेहिं सह भमिउमाऽऽढत्तो ॥१३॥
सुचिरं च दूरदेसंऽतरेसु, भमिरस्स कहवि से जायं । मुणिदंसणमीहाऽपोह-भावओ जाइसरणं च ॥१४॥
अह सुमरियपुव्वभवो, स महप्पा उज्झिउं विसयसंगं । पव्वज्जं पडिवन्नो, पत्तो अंते य देवत्तं ॥१५॥

"सुरतेजनरसुन्दरयोः दृष्टान्तः समाप्तः"

इय अकप्पडिविहाणं, अइयारं थोयमऽवि मुणेऊण । कुसलपडिखलणपडुयं, परिणतिकडुयं च कुसलमई ॥१६॥
पुव्वपवंचियविहिणा, तह कहवि हु कुणइ अत्तणो सोहिं । जह सुक्कज्झाणऽग्गीए, दड्ढनीसेसकम्मवणो ॥१७॥
लोयऽग्गमत्थयमणी, सिद्धो बुद्धो निरंऽजणो । सव्वनू सव्वदरिसी य, अणंतसुहवीरिओ ॥१८॥
अक्खओ निरुजो निच्चो, कल्लाणी मंगलाऽऽलओ । अपुणब्भू सिवं ठाणं, उवेइ अपुणाऽऽगमं ॥१९॥
एवं पवयणसायर-पारगओ सो चरित्तसोहीए । पायच्छित्तविहन्नू, कुणइ विसुद्धं तयं खवगं ॥२०॥
एयारिसस्स गणिणो, असइ उवज्झायमाऽऽइपामूले । सोहेज्जा अप्पाणं, खवगो आराहणाकंखी ॥२१॥
पडिसेवणाऽइयारा, जइ वीसरिया कहिं पि होज्जाहि । सल्लुद्धरणनिमित्तं, तव्विसए इय भणेयव्वं ॥२२॥
जे मे जाणंति जिणा, अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते हं आलोएमि, उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥२३॥
एवं आलोइंतो, गारवरहिओ विसुद्धपरिणामो । विस्सुमरियाऽवराहु-त्थपावपसरं पि पडिहणइ ॥२४॥
इय पावकलिलजलविब्भमाए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥२५॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे आलो-यणाविहाणं पढमदारं ॥२६॥
पुव्वुदंसियविहिणा, कयसोही वि हु न जं विणा खवगो । पावइ समाहिमऽह तं, सेज्जादारं परूवेमि ॥२७॥

"द्वितीयशय्याद्वारम्" —

सेज्जा भन्नइ वसही, तं पुण खरकम्मियाण चोराण । वेसाण मच्छबंधाण, लोद्धयाऽऽईण पावाण ॥२८॥
हिंसग-असब्भभासग-कीवाणं कामुयाऽऽइयाणं च । लोयाण [1]पाडिवेसे, नो पडियाहेज्ज खवगकए ॥२९॥
मा असमंजससद्दाऽऽइयाण, सवणाऽऽइणा उ खवगस्स । एवंविहसेज्जाए, होज्ज समाहीए वाघाओ ॥३०॥
कुच्छियसंसग्गीए, भावियमइणो वि भावपरियत्तो । संपज्जइ एत्तो च्चिय, पडिसिद्धा पावसंसग्गी ॥३१॥
असुहसुहसंगवसओ, दीसंति य पयडमेव दोसगुणा । तेरिक्खजोणियाण वि, गिरिसुयजुगलं इहं नायं ॥३२॥

"गिरिसुयजुगलदृष्टान्तः" —

विंझमहागिरिपरिसर-सरंतसरियासहस्सरमणिज्जा । कुलडेव विडवरुद्धा, अडवी कायंबरी अत्थि ॥३३॥
निंबंऽबजंबुजंबीर-सालअंकोल्लवेणुसेलुया । सल्लइमोयइमालुय-बउलपलासा करंजा य ॥३४॥

1. पाडिवेसे = संनिधौ = पडोशमें

पुंनागनागसीवन्नि-सत्तवन्नप्पमुक्खरुक्खगणा । रेहंति जत्थ मंसल - परिमलकुसुमेहिं संछन्ना ॥३५॥
तत्थ य दीहरयडविडवि-कोडरे सुइगा सुगे दोण्णि । अविणट्ठलट्ठदेहे, समुचियसमयम्मि उ पसूया ॥३६॥
पक्खाऽनिलपइदिणचूण्णि-दाणओ वड्ढिया य ते तीए । थेवोयलद्धनहगम-सामत्था अवरदियहम्मि ॥३७॥
चावल्लयाए तत्तो, उड्डित्ता जाव गंतुमाऽऽरद्धा । दुब्बलपक्खत्तणओ, ता पडिया अद्धमग्गम्मि ॥३८॥
तद्देसमाऽऽगएहिं, अह एगो तेसि तावसेहिं सह । नीओ आयासम्मि, इयरो भिल्लेहिं पल्लीए ॥३९॥
'हण छिंद भिंद मंसं, असस लहुं लोहियं पिब इमस्स' । इच्चाऽऽइदुट्ठवयणाइं, भिल्लपल्लीठिओ कीरो ॥४०॥
पइखणमऽविरामं चिय, सुणमाणो तम्मणो दढं जाओ । इयरो य तावसाणं, करुणारसियंऽतकरणाण ॥४१॥
'मा मा मारह जीवे, कुणह दयं पंथियाऽऽइणो दुहिए । अणुकंपह' इच्चाऽऽइ-वयणेहिं भाविओ बाढं ॥४२॥
एवं वच्चंतम्मि, काले एगम्मि अवसरे राया । नामेण कणगकेऊ, वसंतपुरनयरवत्थव्वो ॥४३॥
विवरीयसिक्खतुरगेण, सिग्घवेगेण अवहडो इंतो । भिल्लसुएणं तरुसिहर-संठिएणं कहवि दिट्ठो ॥४४॥
अह पावभावणाभाविएण, तेणं पयंपियं 'रे रे । भिल्ला! धावह गेण्हह, सिग्घमिमं नरवइं जंतं ॥४५॥
एयस्स दिव्वमणिकणग-रयणाऽलंकारमऽवहरह तुरियं । इहरा पेच्छंताण वि, तुम्हाण पलायणे लग्गो' ॥४६॥
देसम्मि जत्थ विहगा वि, एरिसा दूरओ स मोत्तव्वो । इइ चिन्तिऊण राया सिग्घं तत्तो अवक्कंतो ॥४७॥
पत्तो य तावसाऽऽसम-समीवदेसम्मि कहवि तुडिजोगा । इयरसुगेणं दट्ठूण, महुरवाणीए तो भणियं ॥४८॥
हंहो तावसमुणिणो!, तुरंगहरिओ नराऽहिवो एसो । एइ चउराऽऽसमगुरू, ता कुणह इमस्स पडिवत्तिं ॥४९॥
तव्वयणेण य सव्वाऽऽ-यरेण निययाऽऽसमम्मि नरनाहो । नेऊण तावसेहिं, उवयरिओ भोयणाऽऽईहिं ॥५०॥
अह वीसत्थसरीरो, विम्हइयमणो निवो सुगं भणइ । तुल्लम्मि वि तिरियत्ते, विसरिससीलत्तणं किं भे ॥५१॥
जेणं स भिल्लपल्ली-सुगो तहा निट्ठुरं पयंपेइ । तुममऽवि एवं मंजुल-गिराए उल्लवसि हियमेव ॥५२॥
ताहे सुगेण सिट्ठं, एगा जणणी पिया वि एक्को य । मम तस्स य नवरं सो, नीओ पल्लीए भिल्लेहिं ॥५३॥
अहमऽवि मुणीहिं नियनिय-संसग्गसमुब्भवा य गुणदोसा । संजाया अम्हाणं, पयडं तुमए वि दिट्ठमिमं ॥५४॥
एवं जइ तिरियाण वि, संसग्गिवसेण दोसगुणसिद्धी । लोयम्मि वि सुपसिद्धा, ता न कहं तवेण किसियस्स ॥५५॥
दुरऽणुचरमुत्तिमट्ठं, पसाहिउं उज्जयस्स खवगस्स । दुट्ठजणपाडिवेसेण, होज्ज सज्झाणविग्घाऽऽई ॥५६॥
सुट्ठु वि समी वि सुट्ठु वि, दमी वि सुट्ठु वि पणट्ठमाणो वि । किं चोज्जं कलुसिज्जइ, कुसीलजणसन्निहाणेण ॥५७॥
कलहो बोलो झंझा, वामोहो संकरो ममत्तं च । झाणऽज्झयणविघाओ, नऽत्थि विवित्ताए वसहीए ॥५८॥
तम्हा मणखोहकरो, पंचिंदियगोयरो जहिं णऽत्थि । चिट्ठउ तत्थ तिगुत्तो, खवगो सुहझाणसंजुत्तो ॥५९॥
उग्गमउप्पायणएसणाहिं, सुद्धाए अपरिकम्माए । वसईइ असंसत्ताए, निप्पाहुडियाए सेज्जाए ॥६०॥
घणकुड्डे सकवाडे, गामबहिं बालवुड्ढगणजोगे । उज्जाणघरे ठायइ, सेलगुहाए य सुन्नघरे ॥६१॥
दो तिन्नि य वसहीओ, लेज्जा सुहनिग्गमप्पवेसाओ । कडचिलिमिणिजुत्ताओ, धम्मकहामंडवजुयाओ ॥६२॥
एगत्थ ठवे खवगं, गच्छट्ठियसाहुणो य अन्नत्थ । मा होज्ज भोयणरुई, खवगस्साऽऽहारगंधेण ॥६३॥
पाणाऽऽईणि वि तहियं, ठवेज्ज जम्मि निएज्ज नो खवगो । न य अपरिणया मुणिणो, कम्हा तणु भन्नइ निमित्तं ॥६४॥
असमाहियस्स खवगस्स, कहवि मा पेच्छिऊण दिज्जंतं । असणाऽऽई मुद्धाणं, तदुवरि अप्पच्चओ होज्जा ॥६५॥
चिरभवपरंपरापरि-चियत्तणेणाऽवि कहवि मा गिद्धी । पाउब्भवेज्ज सहसा, खवगस्स महाऽणुभावस्स ॥६६॥
आराहणामहोयहि-तडपत्तस्साऽवि खवगपोयस्स । आवडइ कहवि विग्घो वि, जेण तेणेस जत्तो त्ति ॥६७॥
इय धम्मसत्थमत्थयमणीए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥६८॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे बीयं, भणियं सेज्ज त्ति पडिदारं ॥६९॥

'तृतीयसंस्तारकद्वारम्' —

सेज्जाए जहुत्ताए वि, होज्ज संथारगं विणा न रई । आराहगस्स तम्हा, तद्दारमियाणिं कित्तेमि ॥७०॥
पुव्वं पवंचियाए, सेज्जाए जत्थ किर पएसम्मि । मूसगरयउक्केरस्स, नत्थि थेवं पि उद्दवणं ॥७१॥
ऊसतुसाराऽऽईणं, न विणासो न य पईवविज्जूणं । न य पबलप्पवणाणं, पाईणपडीणपभिईणं ॥७२॥

न य संघट्टो बीयाण, सालिपमुहाण नेव हरियाणं । नोवद्दवणं पि पिपीलि-याऽऽइयाणं तसजियाणं ॥७३॥
अमणुन्नदव्वगंधा-ऽऽइणो य असमाहिकारिणो न जहिं । तत्थ घसभिलुगरहिए, [1]हियए खवगस्स पयईए ॥७४॥
पुढवीसिलामओ वा, फलहमओ तणमओ य संथारो । कीरइ समाहिहेउं उत्तरसिर अहव पुव्वमुहो ॥७५॥
तत्थ य फासुयदेसे, समे अझुसिरे य भूमिसंथारो । अप्फुडियअसंसत्तो, समपट्टिसिलामओ होइ ॥७६॥
निच्छिड्डगनिक्कंपो, लहुओ एगंऽगिओ य फलहमओ । निस्संधी [2]अप्पोल्लो, तणसंथारो भवति मउओ ॥७७॥
एसो पुण संथारो, उभओकालपडिलेहणासुद्धो । जुत्तपमाणविरइओ, आरुहियव्वो तिगुत्तेण ॥७८॥
निस्संगयाए लिंगं, भणिया एए वि दव्वसंथारा । मुणिणो भावसमाहीए, कारणत्तेण अह तत्थ ॥७९॥
संलीणयाठियऽप्पो, संवेगगुणऽन्निओ य तक्कालं । संथारम्मि निसन्नो, विहरइ संलेहओ धीरो ॥८०॥
अह दढकढिणत्तणओ, तणसंथाराऽऽइएसु खवगस्स । चिट्ठिउमऽपारयंतस्स, होज्ज जइ कह वि असमाही ॥८१॥
ता तत्थ पत्थरिज्जंति, एगदुगमाऽऽइया वि से [कंथा] कप्पा । अववाएणं ता जा, पावारगतूलिमाऽऽई वि॥८२॥
एवमऽणेगपयारो, वुत्तो दव्वं पडुच्च संथारो । तं चिय अणेगभेयं, जाणसु भावं पुण पडुच्च ॥८३॥
रागं दोसं मोहं, कसायजालं च दूरमुज्झिंतो । संपत्तपरमपसमो, [3]आय च्चिय होइ संथारो ॥८४॥
सावज्जजोगविरओ, संजमसारो तिगुत्तिगुत्तो य । समियऽप्पा भावजई, आय च्चिय होइ संथारो ॥८५॥
निम्ममनिरऽहंकारो,समतणमणिलेट्ठुकंचणो धणियं । मुणियपरमऽत्थसारो, आय च्चिय होइ संथारो ॥८६॥
जस्स परे सयणे वा, मित्ते सत्तुम्मि अप्पपरविसए । परमसमया हु सो च्चिय, आया संथारओ नेओ ॥८७॥
जस्स पियविप्पियपरे, परे समुक्करिसमऽहव अवकरिसं । न मणो मणयं पि हु भयइ, तस्स आया हु संथारो॥८८॥
दव्वे खेत्ते काले, भावे पडिबंधवज्जणुज्जुत्तो । सत्तेसु मेत्तिसारो, आय च्चिय होइ संथारो ॥८९॥
सम्मत्तनाणचारित्त-लक्खणा मोक्खसाहगगुणा जे । एत्थे खु संथरिज्जंति, तेण आया हु संथारो ॥९०॥
अनिरुद्धाऽऽसवदारो, अप्पाणं न य धरेइ सारम्मि । आरुहइ य संथारं, अविसुद्धो तस्स संथारो ॥९१॥
जो गारवेहिं मत्तो, नेच्छइ आलोयणं गुरुसगासे । आरुहइ य संथारं, सुविसुद्धो तस्स संथारो ॥९२॥
जो पुण पत्तब्भूओ, करेइ आलोयणं गुरुसगासे । आरुहइ य संथारं, अविसुद्धो तस्स संथारो ॥९३॥
सव्वविगहाविमुक्को, सत्तभयट्ठाणविरहिओ धीमं । आरुहइ य संथारं, सुविसुद्धो तस्स संथारो ॥९४॥
नवबंभचेरगुत्तो, जुत्तो जो दसविहे समणधम्मे । आरुहइ य संथारं, सुविसुद्धो तस्स संथारो ॥९५॥
अट्ठमयट्ठाणविसंठुलस्स, निद्धंधसस्स लुद्धस्स । उवसमविउत्तचित्तस्स, काहिइ किमिह संथारो ॥९६॥
रागी दोसी मोही, कोही माणी य मायवं लोभी । जो सो संथारत्थो वि, नेय संथारफलभागी ॥९७॥
अनिरुद्धजोगपसरो, सव्वंऽगं जो असंवुडऽप्पा य । परमत्थसाररहिओ, कह सो संथारफलभागी ॥९८॥
जइ ता गुणरहिओ वि हु, संथारत्थो समीहए मोक्खं । तो पहियदमगसेवग-जणाण पढमं हवउ मोक्खो ॥९९॥
बज्झंऽतरगुणहीणो, बज्झंऽतरदोसदूसियऽप्पा य । संथारत्थो न वि थेव-मऽवि फलं लहइ स वराओ॥५३००॥
बज्झंऽतरगुणकलिओ, बज्झंऽतरदोसदूरवत्ती य । संथारगऽणुवविट्ठो वि, इट्ठफलभायणं होइ ॥१॥
गारवतिगेण रहिओ, तिदंडपरिमोडणे पहियकित्ती । जो य निराऽऽसंसमणो, सफलो खलु तस्स संथारो ॥२॥
छक्कायरक्खणऽट्ठा, निविट्ठचेट्ठो पणट्ठअट्ठमओ । विसयसुहनिप्पिवासो, जो सो संथारफलभागी ॥३॥
समणो समाहियमणो संजमतवनियम जोगजुत्तमणो । सपरकसायपसमणो, जो सो संथार फल भागी ॥४॥
सुविहियगुणवित्थारं, संथारं जे लहंति सप्पुरिसा । तेहिं जियलोगसारं, रयणाऽऽहरणं कयं होइ ॥५॥
सव्वंसहत्तसन्नाह-विहियसव्वंऽगरक्खणो खिप्पं । सम्मन्नाणाऽऽइगुणो, मोहमहापहरणवमालो ॥६॥
अइयारमलविवज्जिय-पंचमहव्वयगइंदमाऽऽरुढो । पत्थुयसंथाररणंऽ-गणाऽऽवलीलिलसमाणो य ॥७॥
उवसग्गपरीसहुसुहड-उब्भडं पबलकम्मरिउसेण्णं । निज्जिणिऊणं गेण्हइ, वीरो आराहणपडागं ॥८॥
सम्मत्तभूमिगाए, विसुद्धसद्धम्मगुणतणेसुं च । पसमफलगे व सुविसुज्झ-माणलेसासिलाए वा ॥९॥
संथारइ अप्पाणं, काउं संलेहणं परं आया । जम्हा तिगुत्तिगुत्तो, ता सो च्चिय होइ संथारो ॥१०॥

1. हितदे । 2. अप्पोलो = शुषिररहितः । 3. आय = आत्मा ।

किंच—
न वि कारणं तणमओ, संथारो न वि य फासुया भूमी । अप्पा खलु संथारो, भवति विसुद्धं मरंतस्स ॥११॥
अग्गिम्मि वि उदगम्मि वि, पाणेसु य तह य बीयहरिएसु । तस्स भवे संथारो, तिविहेण वि जो असंभंतो ॥१२॥
अग्गिउदगपाणाऽऽइसु, जहाकमेणं भवंति आहरणा । गयसकुमालऽन्नियसुय-चिलाइपुत्ताऽऽइणो धीरा ॥१३॥
तहाहि— "गजसुकुमालदृष्टान्तः"
बारवईए नयरीए, अहेसि कन्हो त्ति पच्छिमो विन्हू । जायवकुलेक्ककेऊ, भरहऽद्धवसुंधरानाहो ॥१४॥
गयसुकुमालो नामेण तस्स, आसी कणीयसो भाया । सो य अणिच्छंतो वि हु, जणणिजणद्दणपमोक्खेहिं ॥१५॥
सयणेहिं सोमसम्माऽ-भिहाणविप्पस्स संतियं धूयं । परिणाविओ वि सोउं, धम्मं जिणनेमिपासम्मि ॥१६॥
नवजोव्वणो वि कामोवमो वि, खणनस्सरं जयं नाउं । पव्वज्जं पडिवन्नो, चरिमसरीरो महासत्तो ॥१७॥
विहरइ पुराऽऽगराऽऽइसु, जिणेण सद्धिं पणट्ठभयमोहो । चिरकालाओ पुणरवि, नयरिं बारवइमऽणुपत्तो ॥१८॥
रेवयगिरिम्मि य जिणो, समोसढो तियसविरइओसरणो । गयसुकुमालमुणी पुण, पडिमाए ठिओ मसाणम्मि ॥१९॥
अह कहवि तं पएसं, पत्तेणं तेण सोमसम्मेण । सो एस मज्झ धूया, परिणित्ता उज्झिया जेणं ॥२०॥
इइ जायतिव्वकोवेण, हणिउकामेण तस्स सीसम्मि । काऊण मट्टियाए, पाली भरिया चियऽग्गीए ॥२१॥
ताहे गयसुकुमालो, डज्झंतो तेण सीसजलणेण । आपूरियसुहझाणो, अंतगडो केवली जाओ ॥२२॥
इय अग्गी संथारो, इमस्स एत्तो य सलिलसंथारो । जस्साऽऽहेसि स सीसइ, अन्नियपुत्तो मुणिवरिंदो ॥२३॥
"अर्णिकापुत्रस्य दृष्टान्तः" —
सिरिपुप्फभद्दनयरे, पयंडरिउपक्खदलणदुल्ललिओ । आसी महानरेंदो, नामेणं पुप्फकेउ त्ति ॥२४॥
देवी से पुप्फवई, तीए पुण जमलगत्तणुप्पन्नो । पुत्तोऽत्थि पुप्फचूलो, धूया पुण पुप्फचूल त्ति ॥२५॥
ताणि य परोप्परं गाढ-पणयवंताणि पेच्छिउं रन्ना । अवियोगकए परिणा-वियाणि अन्नोन्नमेव तओ ॥२६॥
पुप्फवई तेणं चिय, निव्वेएणं पवज्जिउं दिक्खं । देवत्तं संपत्ता, अह सा करुणाए सुमिणम्मि ॥२७॥
नरए नेरइए वि य, दरिसइ तह तिक्खदुक्खसंतत्ते । पडिबोहणऽट्ठया सुह-सुत्ताए पुप्फचूलाए ॥२८॥
अह ते भीसणरूवे, दट्ठुं सा झत्ति जायपडिबोहा । साहेइ नरयवित्तं, नरवइणो सो वि वाहरिउं ॥२९॥
पासंडिणो असेसे, पुच्छइ देवीए पच्चयनिमित्तं । भो! केरिसया नरया, तह तेसु दुहं? ति साहेह ॥३०॥
नियनियमयाऽणुरूवेण, तेहिं सिट्ठो य नरयवित्तंतो । नवरं नो पडिवन्नो, देवीए तयऽणु भूवइणा ॥३१॥
अन्नियपुत्ताऽऽयरियो, बहुस्सुओ विस्सुओ य थेरो य । वाहरिऊणं पुट्ठो, जहट्ठिओ तेण सिट्ठो य ॥३२॥
तो भत्तिनिब्भराए, भणियं देवीए पुप्फचूलाए । किं भयवं! तुमए वि हु, दिट्ठो सुमिणम्मि एसो त्ति ॥३३॥
गुरुणा भणियं भद्दे!, जिणिंदसमयप्पईवसामत्था । तं णऽत्थि जं न नज्जइ, केत्तियमेत्तं नरयवित्तं ॥३४॥
अवरसमए य तिस्सा, तीए जणणीए दंसियो सग्गो । सुविणम्मि विम्हयाऽऽवह-विभूइरेहंतसुरनियरो ॥३५॥
पुव्वं पिव पुणरवि पत्थिवेण, ता जाव पुच्छिओ सूरी । तेणाऽवि तस्सरूवं, निवेइयं हरिसिया देवी ॥३६॥
चलणेसु णिवडिऊणं, भत्तीए जंपिउं समाढत्ता । कह होज्ज नरयदुक्खं, कह वा सुरसोक्खसंपत्ती ॥३७॥
गुरुणा भणियं भद्दे!, विसयपसत्तिप्पमोक्खपावेहिं । पाविज्जइ नरयदुहं, तच्चागेणं च सग्गसुहं ॥३८॥
ताहे सा पडिबुद्धा वि, सम्मं मोत्तूण विसयवासंगं । पव्वज्जागहणऽत्थं, आपुच्छइ पत्थिवं तत्तो ॥३९॥
अन्नत्थ विहरियव्वं, तुमए ण कया वि इइ पइन्नाए । कहकहवि अणुन्नाया, नरवइणा विरहविहुरेण ॥४०॥
घेत्तूण य पव्वज्जं, विचित्ततवकम्मनिम्महियपावा । "ओमं" ति दूरदेसे, पेसियनीसेससीसस्स ॥४१॥
जंघाबलपरिहीणस्स, तस्स एगागिणो ठियस्स तहिं । सूरिस्स असणपाणं, नियभवणाओ पणामेइ ॥४२॥
एवं वच्चंतम्मि, काले अच्चंतसुद्धपरिणामा । निद्धुणियघाइकम्मा, सा पत्ता केवलाऽऽलोयं ॥४३॥
पुव्वपवत्तं विणयं च, केवली अमुणिओ न लंघेइ । इइ सा पुव्वकमेणं, गुरुणो असणाऽऽइ उवणेइ ॥४४॥
एगम्मि य पत्थावे, सिंभेणऽब्भाऽऽहयस्स सूरिस्स । जायाए तित्तभोयण-वंछाए उचियसमयम्मि ॥४५॥
तीए य तहच्चिय पूरियाए, विम्हइयमाणसो सूरी । भणइ कहं नायमिणं, मम माणसियं तए अज्जे! ॥४६॥

जं उवणीयं अइदुल्लहं पि, भोज्जं अकालपरिहीणं । तीए भणियं नाणेण, केण? पडियायरहिएण ||४७||
थी! थी! मए अणज्जेण, कहमिमो केवली महासत्तो । आसाइओ त्ति सोगं, तो सूरी काउमाऽऽरद्धो ||४८||
मा मुणिवर! कुण सोगं, अमुणिज्जंतो हु केवली वि जओ । पुव्वट्ठिइं न भिंदइ, एवं तीए य पडिसिद्धो ||४९||
चिरसुचरियसामन्नो वि, किं न निव्वुइमऽहं लहिस्सामि । इइ संसयं कुणंतो य, तीए सूरी पुणो भणिओ ||५०||
संदेहं कीस मुणीस!, कुणसि निव्वुइकएण जेण लहुं । सुरसरियमुत्तरंतो, काहिसि कम्मक्खयं तुमऽवि ||५१||
एवं निसामिऊणं, सूरी नावाए आरुहिय गंगं । अइलंघिउं पवत्तो, परतीरगमाऽभिलासेण ||५२||
णवरं जत्तो जत्तो, स निसीयइ कम्मदोसओ सो सो । नावादेसो मज्जइ, सुरसरिसलिलम्मि अत्थाहे ||५३||
सव्वविणासं आसंकिऊण, निज्जायगेहिं तो खित्तो । अन्नियपुत्ताऽऽयरियो, नावाहिंतो सलिलमज्झे ||५४||
अह परमपसमरसपरिणयस्स, सुपसन्नचित्तवित्तिस्स । सव्वप्पणा निरुंभिय-नीसेसाऽऽसवदुवारस्स ||५५||
दव्वेणं भावेण य, परमं निस्संगयं उवगयस्स । सुविसुज्झमाणदढसुक्क-झाणनिम्महियकम्मस्स ||५६||
जलसंथारगयस्स वि, अच्चंतनिरुद्धसव्वजोगस्स । मणवंछियऽत्थसिद्धी, जाया निव्वाणलाभेणं ||५७||
एवं जलसंथारय-माऽऽसज्जऽन्नियसुओ समऽणुसिट्ठो । तससंथारगविसए य, संसिओ च्चिय चिलाइसुओ ||५८||
अन्नत्थ वि जो जम्मि, समभावा पाउणेज्ज पज्जंते । सुसमाहिं सो सव्वो, नायव्वो तस्स संथारो ||५९||
इय संथारगओ सो, अणुत्तरं तवसमाहिमाऽऽरूढो । पप्फोडंतो विहरइ, बहुभवबाहाकरं कम्मं ||६०||
चक्कीण वि न य सुहं तं, न तं सुहं सयलसुरवराणं पि । जं दव्वभावसंथा-रगत्थमुणिणो अरागस्स ||६१||
एवं संथारगतो, गओ व्व चिररूढकम्मदुमगहणं । चूरेंतो चरणेणं, चरेज्ज निरऽवज्जतरजोगो ||६२||
इय मयणभुयगगरुलोवमाए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ||६३||
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे भणियं, तइयं संथारपडिदारं ||६४||
तह संथारगयस्स वि, निज्जामगमंऽतरेण न समाही । संपज्जइ खवगस्सा, ता तद्दारं निदंसेमि ||६५||

'चतुर्थः निर्यामकद्वारम्' —

अह सो कयसंलेहो, निहयपरीसहकसायसंताणो । छत्तीसगुणोवेए, पच्छित्तविसारए धीरे ||६६||
पंचसमिए तिगुत्ते, अणिस्सिए रागदोसमयरहिए । कडजोगी कालन्नू, नाणचरणदंसणसमिद्धे ||६७||
मरणविहिकालकुसले, इंगियपत्थियसहाववेत्तारे । ववहारविहिविहन्नू, अब्भुज्जयमरणसारहिणो ||६८||
अक्खलियाऽऽइगुणऽन्निय-दुबालसंगीसुएक्कजलनिहिणो । नियनिज्जामगगुरुणो, मग्गेज्जा निज्जवगमुणिणो ||६९||
तो तेसिं सूरीणं, पयमूले पवयणप्पईवाणं । पडिवज्जेज्ज महत्थं, धीरो अब्भुज्जयं मरणं ||७०||
अह तस्स अप्पनिद्दा, संविग्गाऽवज्जभीरुणो धीरा । पासत्थोसन्नकुसील-ठाणपरिवज्जणुज्जमिणो ||७१||
खंतिखमा मद्दविया, असढअलोला य लद्धिसंपन्ना । असदग्गाहविमुक्का, दक्खा सुसरा महासत्ता ||७२||
सुत्तऽत्थअपडिबद्धा, निज्जरपेही जिइंदिया दंता। कोऊहलविप्पमुक्का, पियदढधम्मा सउच्छाहा ||७३||
आगाढमणा गाढे, सद्दहगनिवेयगा य सट्ठाणे । छंदन्नू पच्चइया, पच्चक्खाणम्मि य विहन्नू ||७४||
कप्पाऽकप्पे कुसला, समाहिकरणुज्जया सुयरहस्सा । मुणिणो अडयालीसं, गुरुदिन्ना होंति निज्जवगा ||७५||
तहाहि—
उव्वत्त[1] दार[2] संथार[3], कहग[4] वाई[5] य अग्गदारम्मि[6] । भत्त[7] पाण[8] उच्चार[9] वियारे[10], कहग[11] दिसासुं[12] च चउ चउरो ||७६||
उव्वत्तणपरियत्तण-संचारणपमुहमंऽगपरिकम्मं । अच्चंतकोमलकरा, करेंति चत्तारि खवगस्स ||७७||
संचारिज्जति उत्थंघिओ हु, अह जइ स नाऽहियासेइ । संथारगट्ठिओ च्चिय, ता संचारिज्जए तेहिं ||७८||
अब्भंतरदारम्मि, चउरो चिट्ठंति सम्ममुवउत्ता । चत्तारि य संथारं, रइंति पडिलेहणापुव्वं ||७९||
अव्वाविद्धमऽविच्चा-मिलियमऽक्खलियमऽणहियमऽणूणं । अविलंबियमऽदुयमऽमि-लियमऽपुणरुत्तं सुघोसं च ||८०||
फुडवन्नमऽणुच्चमऽणीय-मऽणलीयं तह य साऽणुणायं च । सुद्धं सपरिच्छेयं, जह होइ तहा असंदिद्धं ||८१||
खवगस्स कहेयव्वा उ, सा कहा जं सुणित्तु सो सम्मं । चयइ विसोत्तियभावं, वच्चइ संवेगनिव्वेयं ||८२||
चत्तारि वाइमुणिणो, खलंति परिवाइणो पयंपंते । अग्गदुवारे चउरो, तवस्सिणो ठंति उवउत्ता ||८३||

मग्गंति अणुव्विग्गा, पाउग्गं भोयणं च चत्तारि । छंदियमऽवगयदोसं, अमाइणो लद्धिसंपन्ना ॥८४॥
चत्तारि जणा पाणग-मुवकप्पेंति अ गिलाणपाउग्गं । उज्झंति अ उच्चारं, चउरो खवगस्स मुणिवसभा ॥८५॥
चउरो चयंति विहिणा, पासवणं खेलमल्लगाऽऽई य । बाहिम्मि धम्मकहिणो, गीयत्था ठंति चत्तारि ॥८६॥
चउसु वि दिसासु चउरो, सहस्समल्ला तवस्सिणो ठंति । इय निज्जवंति खवगं, अडयालीसं तु निज्जवगा ॥८७॥
जो जारिसओ कालो, भरहेरवएसु होइ वासेसु । ते तारिसया तइया, अडयालीसं तु निज्जवगा ॥८८॥
कालाऽणुसारओ पुण, चउरो चउरो कमेण हावेज्जा । जा चउरो अहवा दो, होंति जहन्नेण निज्जवगा ॥८९॥
भणियं च—
"जो जारिसओ कालो, भरहेरवएसु होइ वासेसु । ते तारिसया तइया, दुवे जहन्नेण निज्जवया" ॥९०॥
एगो खवगं पडिचरइ, पासवत्ती सया वि अपमत्तो । बीओ तदप्पणोचिय-मऽसणाऽऽई मग्गइ पयओ ॥९१॥
जइ पुण एगागि च्चिय, कहं पि खवगस्स होज्ज निज्जवओ । ता सो सनिमित्तंपि हु, भिक्खब्भमणाऽऽइ अकुणंतो॥९२॥
अप्पाणं परिवेयइ, तव्विवरीयत्तणेण खवगं वा । तच्चागे य अवस्सं, दूरं चत्तो समणधम्मो ॥९३॥
जं सेवेज्ज अकप्पं, कुज्जा वा जायणाइ उड्डाहं । तन्हाछुहाऽऽइभग्गो, खवगो निज्जवगविरहम्मि ॥९४॥
असमाहिणा य कालं, करेज्ज वच्चेज्ज दुग्गईए वि । तेण जहण्णेण वि होंति, दुन्नि खवगस्स निज्जवया ॥९५॥
किंच—
संलेहगं सुणेत्ता, जुत्ताऽऽयारेहिं निज्जविज्जंतं । सव्वेहि वि गंतव्वं, जईहिं इयरत्थ भयणिज्जं ॥९६॥
संलेहगस्स मूलं, जो वच्चइ तिव्वभत्तिराएण । भोत्तूण दिव्वसोक्खं, सो पावइ उत्तमं ठाणं ॥९७॥
एक्कम्मि वि भवगहणे, समाहिमरणेण जो मओ जीवो । न हु सो हिंडइ बहुसो, सत्तऽट्ठभवे पमोत्तूणं ॥९८॥
सोऊण उत्तमऽट्ठस्स, साहगं तिव्वभत्तिसंजुत्तो । जइ नो वच्चइ का उत्त-मऽट्ठमरणम्मि से भत्ती ॥९९॥
जस्सुत्तमऽट्ठमरणम्मि, नेव भत्ती वि विज्जए तस्स । कह उत्तमऽट्ठमरणं, संपज्जइ मरणकालम्मि ॥५४००॥
न य खमगस्स समीवे, अल्लियणमऽसंवुडाण दायव्वं । तेसिं असंवुडगिराहिं, होज्ज खवगस्स असमाही ॥१॥
तेल्लकसायाऽऽईहिं, बहुसो गंडूसया य दायव्वा । इइ जिब्भाकन्नबलं, जायइ वयणं च से [1]विसयं ॥२॥
इय धम्मुवएसमणोहराए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥३॥
आराहणाए, पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे तुरियं, भणियं निज्जवगपडिदारं ॥४॥
एवं सामग्गीसंभवम्मि, आहारचायकामस्स । खवगस्स सव्ववत्थूसु, सम्मं नाउं निरीहत्तं ॥५॥
दायव्वमऽणसणं तं च, नज्जए भोयणाऽऽइदंसणओ । ता तद्दंसणदारं, एत्तो लेसेण साहेमि ॥६॥

"पञ्चमदर्शनद्वारम्" —

अह स महप्पा पइसमय-पयरवड्ढंतसुद्धपरिणामो । गिम्हाऽभिहउ व्व मरुम्मि, बहलदलकिन्नतरुणो व्व ॥७॥
अच्चंतरोगविहुरो व्व, दक्खपडिचारए व्व निज्जवए । लद्धूण गुरुं पणमित्तु, भत्तीए विन्नवेज्ज इमं ॥८॥
भयवं! दुल्लहलंभा, सामग्गी एरिसी मए पत्ता । ता एत्तो नो जुत्तो, कालविलंबो ममं काउं ॥९॥
कुणसु पसायं वियरसु, अणसणमेत्तो वि किं ममं इमिणा । असणाऽऽईणुवभोगेण, सुचिरसंलिहियकायस्स॥१०॥
तो तं निरीहभावो-वलंभहेउं गुरु पदंसेज्जा । पयइसुरसाणि पयईए, चित्तसंतोसकारीणि ॥११॥
पयईए सुरहिगंधु-द्धुराणि उक्कोसगाणि दव्वाणि । असणपभिईणि पयईए, तस्स अक्खेवजणगाणि ॥१२॥
एएसु दंसिएसु य, हिययगतो तस्स नूण संकप्पो । कुरराऽऽरवं निसामिय, मीणगणो इव भवे पयडो ॥१३॥
दव्वपयासमऽकिच्चा, जइ कीरइ तस्स तिविहवोसिरणं । ता कहिं वि भत्तभेयम्मि, उज्जुगो होज्ज सो खवगो॥१४॥
किंच—
भुत्तभोगी पुरा जो य, गीयत्थो वि सुभावियओ । सत्थो आहारधम्मेसु, सो वि खिप्पं तु खुब्भए ॥१५॥
तम्हा तिविहाऽऽहारं, पडुच्च संवरणकरणकामस्स । उक्कस्सियाणि सव्वाणि, तस्स दव्वाणि दंसेज्जा ॥१६॥
इय चउकसायभयभंजणीए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥१७॥

1. विशदम् = निर्मलम् ।

आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे पंचम-मुत्तं दंसणपडिद्दारं ॥१८॥
दव्वप्पयासणाऽणं-तरं च खवगस्स जो हु परिणामो । कमपत्तहाणिदार-प्परूवणेण तयं वोच्छं ॥१९॥

'षष्ठमहानिद्वारम्' —

अच्चंतपबलसत्तो-ऽणुण्णाओ भोयणऽट्ठया गुरुणा । पुरओ उवणीयाइं, दव्वाइं असणमाऽऽईणि ॥२०॥
पासित्ता फासित्ता, जिंघित्ता अहय ताइं गिन्हेत्ता । ववगयकोऊहल्लो, सम्मं एवं विचिंतेज्जा ॥२१॥
भवगहणम्मि अणाइम्मि, णंतसो इह मए भमंतेणं । किं नो भुत्तं किं नेव, फासियं जिंघियं किं नो ॥२२॥
किं किं संपन्नं नेव, वंछियं तह वि पावजीवस्स । तित्ती मणागमेत्तं पि, जा पुरा नेव संपन्ना ॥२३॥
सा किं अहुणा होही, ता तीरगयस्सिमेहिं किं मज्झ । इइ चिंतंतो कोई, संवेगपरायणो होइ ॥२४॥
आसाइत्ता कोई, तीरं पत्तस्सिमेहिं किं मज्झ । वेरग्गमऽणुसरंतो, संवेगपरायणो होइ ॥२५॥
देसं भोच्चा कोई, हा हा! इन्हिं इमेहिं किं मज्झ । वेरग्गमऽणुसरंतो, संवेगपरायणो होइ ॥२६॥
सव्वं भोच्चा कोई, धिद्धि! इन्हिं इमेहिं किं मज्झ । वेरग्गमऽणुसरंतो, संवेगपरायणो होइ ॥२७॥
कोई तमाऽऽयइत्ता, मणुन्नरसरसियचित्तपरिणामो । पकुणइ अणुबंधं सव्व-देसविसयं तहिं चेव ॥२८॥
तस्स य रसाऽणुबंधाऽ-वहारिपल्हायणिज्जवयणेहिं । धम्मकहं कहइ गुरु, खवगस्स पुणो वि बोहकए ॥२९॥
धम्मकहं चिय न कहेइ, केवलं किंतु तस्स भयहेउं । सुहुमस्साऽवि अवाए, इय दंसइ गिद्धिसल्लस्स ॥३०॥
हिमवंतमलयमंदर-दीवोदहिधरणिसरिसरासीतो । अहियपरो आहारो, छुहिएणाऽऽहारिओ होज्जा· ॥३१॥
संसारचक्कवाले, सव्वे वि य पोग्गला तुमे बहुसो । आहारिया य परिणा-मिया न तुमं तह वि तित्तो ॥३२॥
आहारनिमित्ता गंतुं, मंखु सव्वेसु नरयलोएसु । उववन्नो अइबहुसो, सव्वासु य मेच्छजातीसु ॥३३॥
आहारनिमित्तागं, मच्छा गच्छंत[1]ऽणुत्तरं नरयं । सव्वं आहारविहिं, ता मा मणसा वि चिंतेज्जा ॥३४॥
तणकट्ठेहिं व अग्गी, लवणजलो वा नईसहस्सेहिं । न इमो जीवो सक्को, तिप्पेउं भोयणविहीहिं ॥३५॥
जं किर जलं पि पीयं, घम्माऽऽयवजगडिएण तं पि इहं । सव्वेसु वि अगडतलाय-नईसमुद्देसु वि न होज्जा ॥३६॥
पीयं थणयच्छीरं, सागरसलिलाउ होज्ज अहिययरं । संसारम्मि अणंते, माऊणं अन्नमऽन्नाणं ॥३७॥
घयखीरुच्छुरसेसु य, साऊसु महोयहीसु बहुसो वि । उववन्नो न य तण्हा, छिन्ना ते सीयलजलेण ॥३८॥
जइ ता न गतो तित्तिं, अणंतएण वि अईयकालेण । ता किमियाणि वि एवं, ठियस्स तुह एत्थ गिद्धीए ॥३९॥
जह जह कीरइ गिद्धी, अवगासो तह तहा अविरईए । जह जह य तदऽवगासो, तप्पच्चइओ तह तहेह ॥४०॥
जीवाण कम्मबंधो, तओ भवो दुहपरंपरा य तहिं । इय सयलाऽवायाणं, रसगिद्धी कारणं तम्हा ॥४१॥
नीसेसकिलेसाऽऽयास-गरुयमाणाऽवमाणमूलपयं । संसारियसत्ताणं, विद्धि एसा हु रसगिद्धी ॥४२॥
एवं स महासत्तो, सम्मं आराहणाविहिंपसत्तो । नाणाऽऽइगुणगुरुणा, गुरुणा [2]दियदीहदुहतरुणा ॥४३॥
निउणमुवदंसिएसुं, विविहाऽवाएसु गिद्धिसल्लस्स । भवभमणदुक्खभीओ, संविग्गो चयइ रसगिद्धिं ॥४४॥
अह कोवि कम्मदोसा, न चएज्जा तं भणिज्जमाणे वि । ता तप्पयईए हियं, वियरिज्जइ भोज्जमऽणवज्जं ॥४५॥
तदऽसंपत्तीए पुण, मग्गिज्जइ तह अलब्भमाणं च । कीयाऽऽइपयारेण वि, दावेयव्वं समाहिकए ॥४६॥
नवरं गुरुणा मुणिणो, सिक्खवियव्वा रहम्मि एयपुरो । वत्तव्वं तुब्भेहिं, "पाउग्गं एत्थ दुलहं ति" ॥४७॥
ते य तहा पन्नविया, तहेव जंपंति खवगमुणिपुरओ । किच्छेण थोयथोयं, अणुदियहं देंति य सखेया ॥४८॥
उचियसमयम्मि य गुरु, सासइ भो खवग! पेच्छ तुज्झ कए । मुणिणो दुल्लहअसणाऽऽइ-जायणे कह किलिस्संति ॥४९॥
अह जायपच्छयावो, खवगो एक्केक्ककवलचागेण । पइदियहं हावेंतो, ठवेइ पोराणमाऽऽहारं ॥५०॥
अणुपुव्वेण य तं पि हु, संवट्टेतो वि सव्वमाऽऽहारं । पाणगपरिकम्मेणं, खवगो भावेइ अप्पाणं ॥५१॥
इय कुमयकमलहिमभर-समाए संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥५२॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे भणियं, छट्ठं हाणि त्ति पडिदारं ॥५३॥
अह पाणगपरिकम्मण-पुरस्सरं जह स कुणइ संवरणं । तह पच्चक्खाणदारं, लेसुद्देसेण साहेमि ॥५४॥

1. अणुत्तरं = चरमाम् = सप्तमीम् । 2. दिय = दित = छेदित ।

'सप्तमपानकपरिकर्मयुक्तप्रत्याख्यानद्वारम्' —

अच्छं बहलं लेवड-मऽलेवडं तह ससित्थयमऽसित्थं । छव्विहपाणगमेयं, भणियं परिकम्मपाओग्गं ॥५५॥
तं पुण तिलजवगोहूम-पमुहधन्नाण धोयणुप्पन्नं । गुडखंडमंडधोयण-संभूयं अंबिलाऽऽईयं ॥५६॥
एयपयारं अवरं पि, सपरसत्थेहिं जायविद्धंसं । नवकोडिपरिसुद्धं, मुहियाए जणाउ उवलद्धं ॥५७॥
साहूण होइ जोग्गं, जहोवलद्धेण तेण खवगमुणी । परिकम्मेज्जऽप्पाणं, समाहिहेउं सया णवरं ॥५८॥
आयंबिलेण सिंभो, खिज्जइ पित्तं च उवसमं जाइ । वायस्स रक्खणट्ठा, पुव्वुयइट्ठं विहिं कुज्जा ॥५९॥
तित्ताइं पाणयाइं, वज्जित्ता उदरमलविसुद्धिकए । महुरं [1]पज्जेयव्वो, मंदं च विरेयणं खवगो ॥६०॥
एलतयनागकेसर-तमालपत्तं ससक्करं दुद्धं । पाऊण कढियसीयल-समाहिपाणं इमं पच्छा ॥६१॥
महुरविरेयणमेसो, कायव्वो फोफलाऽऽइदव्वेहिं । निव्वाविओदरऽग्गी, जेण समाहिं सुहं लहइ ॥६२॥
आणाइ बत्थिमाऽऽईहिं, वा वि कायव्वमुदरसोहणयं । वेयणमुप्पाएज्जा, करीसमऽच्छंतयं उदरे ॥६३॥
तो जाजीवं तिविहं, आहारं वोसिरेहिइ खवगो । इइ निज्जवगाऽऽयरिओ, संघस्स इमं भणावेइ ॥६४॥
एस महप्पा खवगो, जाजीवियमऽणसणं गहेउमणो । सिरि रइयपाणिपउमो, तुब्भं पयवंदणं कुणइ ॥६५॥
विन्नवइ य तह कहमऽवि, सपसाएणं ममं भवेयव्वं । भयवं! तुमए जह यं-छियऽत्थनित्थारगो होमि ॥६६॥
आराहणपच्चइयं, खवगस्स य निरुवसग्गपच्चइयं । काउस्सग्गमऽणुव्विग्ग-माणसो कुणइ तो संघो ॥६७॥
पच्चक्खावेइ तओ, सूरी खवगं चउव्विहाऽऽहारं । संघसमवायमज्झे, चिइवंदणपुव्वयं विहिणा ॥६८॥
अहवा समाहिहेउं, साऽऽगारं चयइ तिविहमाऽऽहारं । तो पाणगं पि पच्छा, वोसिरियव्वं सयाकालं ॥६९॥
जं पाणगपरिकम्मम्मि, छव्विहं पाणगं समक्खायं । तं से ताहे कप्पइ, तिविहाऽऽहारस्स वोसिरणे ॥७०॥
आरुहियचरित्तभरेण, गुरुसयासे अणूसुगेण सया । दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य अपडिबद्धेण ॥७१॥
पच्चक्खाणम्मि कए, आसवदाराइं होंति पिहियाइं । आसववोच्छेयम्मि उ, तन्हावोच्छेयणं होइ ॥७२॥
तन्हावोच्छेयम्मि, जीवस्स उ पावपसमणं होइ । पावस्स पसमणेण उ, विसुद्धमाऽऽयासयं लहइ ॥७३॥
आवासयसोहीए, दंसणसोहिं तु पावए जीवो । दंसणसोहीए पुणो, चरित्तसोहिं धुवं लहइ ॥७४॥
लहइ चरित्तविसुद्धो, झाणऽज्झयणस्स सोहणं जीवो । झाणऽज्झयणविसुद्धो, परिणामविसुद्धयं लहइ ॥७५॥
परिणामविसुद्धीए, कम्मविसुद्धत्तणं लहइ जीवो । कम्मविसोहिविसुद्धो, वच्चइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥७६॥
इय दुग्गइपुरपरिहोवमाए, संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥७७॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवुच्छेए । तइए दारे पच्च-क्खाणं सत्तमपडिद्दारं ॥७८॥
कयपच्चक्खाणस्स वि, न सोग्गई खामणाए विरहेण । खवगस्स तेण एत्तो, खामणदारं निदंसेमि ॥७९॥

"अष्टमक्षामणाद्वारम्" —

अह निज्जामगसूरी, खवगं महुरऽक्खरेहिं वागरइ । हंहो देवाणुप्पिय!, पिया य बंधू य मित्तो व्व ॥८०॥
एसो बहुगुणसंघो, संघो तइलोक्कवंदणिज्जेहिं । तित्थयरेहिं नमिओ, "तित्थस्स नमो" त्ति काऊण ॥८१॥
तुममऽणुगिन्हिउमिहइं, समागओ वट्टए महाभागो । बहुभवपरंपरुब्भव-दुक्कियतमकंडमायंडो ॥८२॥
ता भत्तिनिब्भरमणो, एयं भयवंतमाऽऽयरेण तुमं । खामेसु पुव्वकालिय-आसायणनिवहचाएण ॥८३॥
अह सो भत्तिभरोणय-सीसोवरि विरइयंऽजली सम्मं । इच्छामो अणुसट्ठिं, लट्ठं अणुसासिओ हं ति ॥८४॥
गुरुगिरमुयवूहेंतो, तिकरणसुद्धीए कयपणामो य । खामेइ सव्वसंघं, संवेगं संजणेमाणो ॥८५॥
हे भंते! भट्टारग!, गुणरयणसमुद्द! सिरिसमणसंघ! । जं किंचि पडुच्च तुमं, पावं पावाऽणुबंधि मए ॥८६॥
सुहुमं य बायरं वा, एत्थ भवम्मि भवंतरे वा वि । मणसा विचिंतियं भा-सियं च वयसा कयं तणुणा ॥८७॥
अहवा मणवइकाएहिं, जं कयं कारियं अणुमयं वा । तं सव्वं तिविहेणं, संपइ सव्वं खमावेमि ॥८८॥
तुज्झ नमो तुज्झ नमो, भावेण पुणो वि तुज्झ चेव नमो । भयवडिओ च्चिय तुमं, भुज्जो भुज्जो खमावेमि ॥८९॥
खमउ य भयवं संघो वि, मज्झ दीणस्स काउमऽणुकंपं । होउ य आसीसपरो, निव्विग्घाऽऽराहणाए कए ॥९०॥
तुह खामणाए तं नत्थि, एत्थ भुवणे वि खामियं जं नो । जणणिजणगोवमाणो, तुमं खु जं जीवलोयस्स ॥९१॥

1. पज्जेयव्वो = पायितवः ।

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे य । जे मे केई कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥९२॥
मणवइकाएहिं पुरा, कए य तह कारिए अणुमए य । सव्वे तव्विसए वि हु, अहमऽवराहे खमावेमि ॥९३॥
समसत्तुमित्तचित्ता, जियाण करुणारसेक्कजलनिहिणो । भगवंतो ते वि महं, खमंतु अणुकंपणीयस्स ॥९४॥
इय खामंतो [1]संघं, सबालवुड्ढं खमावए तत्तो । सम्मं संविग्गमणो, पुव्वविरुद्धं विसेसेण ॥९५॥
जहा—
जं किंपि पमाएणं, न सुट्ठु भे वट्टियं मए पुव्विं । निस्सल्लनिक्कसाओ, सव्वं खामेमि तमियाणिं ॥९६॥
इय समओयहिअमओ-वमाए संवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥९७॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे खामण-पडिदारं भणिअमऽट्ठमयं ॥९८॥
नो खामणिज्जवग्गम्मि, खामिए वि हु सयं अखमणाए । वंछियसिद्धी होइ त्ति, खवणदारं इओ वोच्छं॥९९॥

"नवमस्वयंक्षमणाद्वारम्" —

सब्भावगब्भमिच्छा-दुक्कडदाणाऽऽइणा कसायजओ । जो एत्थं परमत्थेण, सा परं भण्णइ खमणा ॥५५००॥
एईए च्चिय जम्हा, तिव्वऽणुभागाण दीहठिइयाण । कम्माण निबिडबद्धाण, होज्ज विगमो पुरकयाणं ॥१॥
एवं सोच्चा सम्मं, निज्जामगसूरिणो सयासाउ । संवेगमुव्वहंतो, पुणरवि खवगो भणेज्ज इमं ॥२॥
सव्वे अवराहपए, खामेमि अहं खमेउ मह भयवं । अहमऽवि खमामि सुद्धो, गुणसंघायस्स संघस्स ॥३॥
विन्नायमऽविन्नायं, अवराहपयं परस्स निस्सेसं । सुविसुद्धतिगरणऽप्पा, खमामि सम्मं खु एस अहं ॥४॥
जाणंतो अजाणंतो य, खमउ मा वा परो खमउ मज्झं । तहवि अहं निस्सलो, तिविहेण खमामि चेव सयं ॥५॥
जइ ता परो वि खमई, ता लट्ठं होइ उभयवग्गे वि । अह गाढाऽणुसयपरो, परो न खमिउं तरइ तह वि ॥६॥
मुक्काऽहंकारपओ, पवियंभियपसमपयरिसाऽऽरूढो । सुविसुद्धतिगरणगणो, सामाइयपरिणयऽप्पा य ॥७॥
अक्खमणपरे वि परे, सम्मं तक्खमणकारणपरो हं । एस खमामि खलु सयं, जमेस मह खामणाकालो ॥८॥
खामेमि अहं सव्वे, जीवे ते वि य खमंतु मह सव्वे । उवरयवइरो मेत्ती-परो अहं सव्वजीवेसु ॥९॥
एवं खामेमाणो, सयं पि खमणापरो विसुद्धमणो । सिरिचंडरुद्दसूरि व्व, तक्खणा कुणइ कम्मखयं ॥१०॥
तहाहि—

"चण्डरुद्रसूरिदृष्टान्तः"

उज्जेणीनयरीए, गीयत्थो अवज्जवज्जणुज्जुत्तो । सूरी अहेसि नामेण, विस्सुओ चंडरुद्दो त्ति ॥११॥
पयईए च्चिय सो पुण, पयंडकोवत्तणेण मुणिमज्झे । ठाउं सयमऽतरं तो, साहुविवित्ताए वसहीए ॥१२॥
सज्झायज्झाणपरो, जत्तेणं पसमभावणाए दढं । अप्पाणं भावेंतो, विहरइ गच्छस्स निस्साए ॥१३॥
अह एगम्मि अवसरे, केलिप्पियपियवयस्सपरिगरिओ । एगो महिब्भपुत्तो, नवपरिणीओ कयविभूसो ॥१४॥
वियरंतो तियचच्चर-चउप्पहाऽऽईसु तेसि साहूणं । परिहासकयपणामो, आसीणो पायदेसम्मि ॥१५॥
तो तस्स वयस्सेहिं, परिहासेणं पयंपियं भंते! । एसो अम्ह वयस्सो, भववासाओ समुव्विग्गो ॥१६॥
इच्छइ घेत्तुं दिक्खं, एत्तो च्चिय विहियपवरसिंगारो । इहइं समागओ ता, पव्वज्जमिमस्स देह त्ति ॥१७॥
आगारिंगियकुसला, मुणिणो य मुणित्तु तेसि परिहासं । अमुणंता इव ठिया निय-कज्जाइं काउमाऽऽढत्ता ॥१८॥
भुज्जो भुज्जो सुइर-प्पलाविणो जाव नेव विरमंति । दुस्सिक्खिया हु सिक्खंतु, ताव इइ चिंतयंतेहिं ॥१९॥
साहूहिं विवित्तपएस-संठिओ चंडरुद्दमुणिनाहो । अम्हाण गुरू एसो, दाही दिक्खं ति निद्दिट्ठो ॥२०॥
केलीकिलत्तणेणं, तत्तो ते सूरिणो गया पासे । पुव्वठिईए य सिट्ठा य, इब्भसुयदिक्खगहणिच्छा ॥२१॥
अहह! मए वि हु सद्धिं, केलिं कुव्वंति कह महापावा । इइ चित्तऽब्भंतरजाय-तिव्वकोवेण तो तेणं ॥२२॥
भणियं जइ एवमऽहो, ता मह भूइं लहुं समप्पेह । उवणीया य लहुं चिय कत्तो वि य से वयंसेहिं ॥२३॥
तो इब्भसुयं निबिड-ग्गहेण घेत्तूण तं सहत्थेण । उच्चरियनमोक्कारो, सूरी लुंचेउमाऽऽरद्धो ॥२४॥
भवियव्वपावसेण य, जाव वयस्सा न किंपि जंपंति । न य इब्भसुओ ता तेण, सीसलोओ विणिम्मविओ ॥२५॥
तो भणियमिब्भपुत्तण, भयवमाऽऽसी य एत्तियं कालं । परिहासो संपइ पुण, सब्भावो ता कुण पसायं ॥२६॥

1. सययं पाठां० ।

वियरेसु भावसारं, संसारसमुद्दतरणतरकंडं । दिन्नसिवनयरसोक्खं, जयगुरुजिणदेसियं दिक्खं ॥२७॥
एवं वुत्ते दिण्णा, पव्वज्जा तस्स तेण मुणिवइणा । वेलक्खयं उवगया, गया सठाणेसु य वयंसा ॥२८॥
तेणं भणियं भंते!, बहुसयणो नो लहिस्समऽहमेत्थ । धम्मं काउमऽविग्घं, ता जामो अन्नगामम्मि ॥२९॥
एवं होउ त्तिऽणुमन्नि-ऊण सो पेसिओ तओ गुरुणा । मग्गपडिलेहणऽत्थं, पडिलेहिय आगए तम्मि ॥३०॥
सणियं कयपयखेवो, वेचंतो सो जराए मुणिनाहो । तक्खंधनिहियदक्खिण-करो य गंतुं समाऽऽढत्तो ॥३१॥
थेवपयक्खलणे वि हु, पहम्मि रयणीए चक्खुबलवियलो । जायपकोवो बाढं, निब्भच्छइ सिक्खगं भुज्जो ॥३२॥
ताडेइ दंडएण य, सिरम्मि एवंविहो पहो तुमए । पडिलेहिओ त्ति पुणरुत्त-मेव परुसं पयंपंतो ॥३३॥
अह सिक्खगो वि चिंतइ, अहो महापावभायणेण मए । एस महप्पा एरिस-किलेसजलहिम्मि पक्खित्तो ॥३४॥
अहमेक्को च्चिय एयस्स, धम्मरासिस्स सिस्सछउमेणं । जाओ म्हि पच्चणओ, धिद्धी! दुव्विलसियं मज्झ ॥३५॥
इय अप्पाणं निंदंतयस्स, सा का वि भावणा जाया । पाउब्भूओ जीए, से विमलो केवलाऽऽलोओ ॥३६॥
तो सो निम्मलकेवल-पईवपायडियतिहुयणाऽऽभोगो । गंतुं तहा पयट्टो, पयखलणा जह न से हवइ ॥३७॥
अह जायम्मि पभाए, दंडपहारुत्थरुहिरउल्लसिरं । दट्ठूण सिक्खगं चंड-रुद्दसूरी विचिंतेइ ॥३८॥
पढमदिणदिक्खियस्स वि, अहो! खमा सिक्खगस्स एवंविहा । एवंविहमाऽऽयरियं, मह पुण चिरदिक्खियस्साऽवि ॥३९॥
धी! धी! ममं विवेओ, धिद्धी! सुयसंपया ममं विहला । धी! धी! मम सूरित्तं, खमागुणेणं विहीणस्स ॥४०॥
इय संवेगोवगओ, तं खामेंतो पराए भत्तीए । तं झाणं पडिवन्नो, जेणं सो केवली जाओ ॥४१॥
एवं खामणखमणाहिं, दूरनिम्महियपावसंघाओ । भवइ जिओ तेणेमा, किच्च त्ति कयं पसंगेणं ॥४२॥
खमणापरो य खमगो, अणुत्तरं तवसमाहिमाऽऽरूढो । पप्फोडेंतो विहरइ, बहुभवबाहाकरं कम्मं ॥४३॥
तहाहि—
जमऽतुच्छमहामिच्छत्त-वासणापरिगएण चिरकालं । अच्चंतपावपच्चल-पावट्ठाणाऽणुचरणेण ॥४४॥
जं च पमायमहामय-मत्तेण कसायकलुसिएणं वा । दुग्गइगमेक्कसज्जं, अवज्जमाऽऽवज्जियं किंपि ॥४५॥
तं सुद्धभावणाऽणिल-संधुक्कियखमणजलणजालाहिं । खमगो खणेण निद्दहइ, सुक्कवडविडविनिवहं व ॥४६॥
इय सम्मं घाइयविग्घ-संघसंघाऽऽइखामणापरमो । सयमऽवि विरइय-निस्सेस-संघपामोक्खसत्तखमो ॥४७॥
इहलोए परलोए, अनियाणो जीविए य मरणे य । वासीचंदणकप्पो, समो य माणाऽवमाणेसु ॥४८॥
निसिरित्ता अप्पाणं, सव्वगुणसमन्नियम्मि निज्जवए । संथारगविनिविट्ठो, अणूसुगो चेव विहरेज्जा ॥४९॥
इय परिकम्मविहीए,गणंऽतरत्थो ममत्तवोच्छेयं । काऊण मोक्खकंखी, समाहिलाभत्थमुज्जमइ ॥५०॥
इय सिरिजिणचंदमुणिंद-रइयसंवेगरंगसालाए । संविग्गमणोमहुयर-कुसुमियवणराइतुल्लाए ॥५१॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए ममत्तवोच्छेए । तइए दारे भणियं, नवमं खमण त्ति पडिदारं ॥५२॥
तब्भणणाओ य पुणो, ममत्तवोच्छेयनामयं एयं । मूलद्दारचउक्के, भणियं दारं तइज्जं पि ॥५३॥
संवेगरंगसालाराहणाए, पडिदारनवगनिम्मायं । ममत्तवोच्छेयाऽभिहाणं, तइयं मूलद्दारं समत्तं ॥५४॥

॥ तइयं मूलदारं सम्मत्तं ॥

'चतुर्थसमाधिलाभद्वारप्रारम्भः'

'मङ्गलाचरणम्' —

सद्धम्मोसहदाणा, पसमियकम्माऽऽमयो तयऽणु काउं । सव्वंगनिव्वुइं लद्ध-जयपसिद्धी सुवेज्जो व्व ॥५५॥

तइलोक्कमत्थयमणी, [1]मणीहियत्थाण दाणदुल्ललिओ । सिरिवद्धमाणसामी, समाहिलाभाय भवउ ममं ॥५६॥

परिकम्मउ अप्पाणं, गच्छउ गच्छंऽतरं ममत्तं पि । छिंदउ तहवि न साहइ, विणा समाहिं अहिगयऽत्थं ॥५७॥

जम्हा खवगो तम्हा, ममत्तवोच्छेयमऽक्खिवउं वोच्छं । दारं समाहिलाभो त्ति, तत्थ पडिदारनवगमिमं ॥५८॥

[१]अणुसट्ठी [२]पडिवत्ती य, [३]सारणा [४]कवयमऽह परं [५]समया । [६]झाणं [७]लेसा [८]आराह-णाफलं [९]विजहणा चरिमं॥५९॥

इह खलु कारणविरहे, न कज्जमुप्पज्जइ त्ति कज्जं च । एत्थं पत्थुयमऽच्चत्थ-मेक्कमाऽऽराहणारूवं ॥६०॥

तक्कारणं च पडिवन्न-चउविहाऽऽहारपच्चक्खाणस्स । परमं समाहिलाभो, सो पुण अणुसट्ठिदाणम्मि ॥६१॥

होइ त्ति वित्थरेणं, वोच्छं पढममऽणुसट्ठिदारमऽहं । पडिसेहविहिपहाणऽत्थ-सत्थपयऽणपईवसमं ॥६२॥

'अनुशास्तिद्वारम्' —

किर सुप्पसंतचित्तं, सयमऽवि परिचत्तपाववावारं । महुरगिराए खवगं, भणंति निज्जामगा गुरुणो ॥६३॥

हंहो देवाणुप्पिय!, धन्नो सुहलक्खणो सुकयसीमा । ससहरसरिच्छजसलच्छि-धवलियाऽऽसो तुमं एत्थ ॥६४॥

माणुस्सजम्मजीविय-फलं तु तुमए परं समणुपत्तं । दोग्गइनिबंधणाण य, कम्माण जलंऽजली दिन्नो ॥६५॥

जेणं तुमए तणमिव, पुत्तकलत्ताऽऽइपरियणपहाणं । संतं पि गिहाऽऽवासं, मोत्तूण जिणिंदवरदिक्खा ॥६६॥

अच्चंतभावसारं, पडिवन्ना पालिया य चिरकालं । इन्हिं च सुणिज्जंतं पि, चित्तसंखोभसंजणगं ॥६७॥

अइदुक्करं च पागय-जणस्स इममुत्तिमट्ठमऽणुसरिय । एवं वट्टसि अपमत्त-चित्तयाए तुमं धीरो ॥६८॥

एवं ठियस्स य तुहं, सविसेसगुणप्पसाहणसमत्थं । दावियदुग्गइपट्ठिं, देमि अहं किंपि अणुसट्ठिं ॥६९॥

एत्थं पुण परिहरणीय-वत्थुविसयाणि पंच दाराणि । करणीयवत्थुविसयाणि, ताणि तेरस वियाणाहि ॥७०॥

ताइं पुण [१]अट्ठारस-पावट्ठाणाइं [२]अट्ठमयठाणा । [३]कोहाऽऽइणो [४]पमाया, [५]पडिबंधच्चायदारं च ॥७१॥

तह [६]संमत्तथिरत्तं, [७]अरिहाऽऽईछक्कभत्तिमत्तं च । [८]पंचनमोक्कारपरत्तं, [९]सम्मनाणोवओगो य ॥७२॥

[१०]पंचमहव्वयरक्खा, तहाऽवरं [११]खवगचउसरणगमणं । [१२]दुक्कडगरिहाकरणं [१३]तह सुकडऽणुमोयणा अण्णं ॥७३॥

[१४]बारसभावणनामं, तहाऽवरं [१५]सीलपालणं जाण । [१६]इंदियदमणं [१७]तवउज्जु-गत्त [१८]निस्सल्लयं चेव ॥७४॥

एवं अट्ठारसगं, पडिदाराणमऽणुसट्ठिदारम्मि । पडिसेहविहिमुहेणं, निद्दिट्ठं नाममेत्तेणं ॥७५॥

नियनियकमपत्ताइं, ताइं चिय वित्थरेण कित्तिस्सं । सिद्धंतसिद्धदिट्ठंत-जुत्तिपरमत्थजुत्ताइं ॥७६॥

'अट्ठारसपावठाणद्वारम्' —

इन्हिं तु तेसिं पढमं, अट्ठारसपावठाणदारमऽहं । अट्ठारसपडिदार-प्पडिबद्धं ताव वन्नेमि ॥७७॥

पंसयइ अयगुंडइ, जीवं जं तेण भन्नइ पावं । ठाणाणि पयाणि भवंति, तस्स अट्ठारस इमाणि ॥७८॥

[१]पाणिवहाऽ [२]लिय [३]मदत्त-गहण [४]मेहुण [५]परिग्गहो [६]कोहो । [७]माणो [८]माया [९]लोभो, [१०]पेज्जं [११]दोसो तहा [१२]कलहो॥७९॥

[१३]अब्भक्खाणं [१४]अरईरई य, [१५]पेसुण्ण [१६]परपरीवाओ । [१७]मायामोसं [१८]मिच्छा-दंसणसल्लं ति पढममिह ॥८०॥

'प्राणिवधत्याग स्वरूपम्' —

पाणा उस्सासाऽऽई, संति इमेसिं ति पाणिणो जीवा । तेसिं वहो विद्धंसो, पाणिवहो सो य नरयपहो ॥८१॥

धम्मज्झाणसरोरुह-संडाणमऽकंडचंडहिमवुट्ठी । निस्सूगयाऽगणीए, महल्लचुल्लीपरिक्खेवो ॥८२॥

तह रोद्दऽट्टज्झाणतणंऽकु-रेक्कपारोहपाउसाऽऽरंभो । जलकुल्ला य महल्ला, अकित्तिवल्लीवियाणस्स ॥८३॥

परचक्काऽऽगमसवणं, पसन्नजणवयणमणजणवयाणं । तह असहणयाअविरई-रइपीईणं कुसुमबाणो ॥८४॥

पज्जलियदीवपत्तं, महंतपाणिपयंगवग्गस्स । तलमुदहिणो अगाहं, अच्चुक्कडपावपंकस्स ॥८५॥

अच्चंतदुग्गदुग्गइ-सेलगुहाए महं मुहपवेसं । भयदहणतवियबहुदेहि-लोहघणघायअहिगरणी ॥८६॥

खंताऽऽइगुणकणुक्कर-पीसणकरघणघरट्टजंतं व । तह नरयभूमिहरयस्स, पउणअवयरणनिस्सेणी ॥८७॥

---

1. मनईहितार्थानाम् ।

वहबंधरोहधणहरण-जायणामारणाणि इह चेव । पाणियहम्मि पसत्तो, सत्तो पावेइ पुणरुत्तं ॥८८॥
दिक्खादेवऽच्चणदाण-झाणतववियणयपमुहकिरियाओ । जीवदयाए विहीणा, सव्वाउ निरत्थिया होंति ॥८९॥
जइ नाम परमधम्मो, गोबंभणमहिलवहनिवित्तीए । तत्तो वि कहं न परमो, सो सव्वजियाण रक्खाए ॥९०॥
सव्वे चिय संबंधा, पत्ता जीवेण सव्वजीवेहिं । तो मारेंतो जीवे, मारइ संबंधिणो सव्वे ॥९१॥
मारेइ एगमऽवि जो, जीवं सो बहूसु जम्मकोडीसु । बहुसो मारिज्जंतो, मरइ विहाणेहिं बहुएहिं ॥९२॥
जावइयाइं दुक्खाइं, होंति चउगइगयस्स जीवस्स । सव्वाइं ताइं हिंसा-फलाइं निउणं निरूवेसु ॥९३॥
जीववहो अप्पवहो, जीवदया अप्पणो दया होइ । इय सव्वजीवहिंसा, परिचत्ता अत्तकामेहिं ॥९४॥
नच्चा मच्चुदुहत्ते, नाणाजोणीसमस्सिए जीवे । न हणेज्ज बुहो केवल-मऽप्पोवम्मेण पासेज्जा ॥९५॥
विद्धस्स कंटगेण वि, जायइ जीवस्स वेयणा तिव्वा । किं पुण पहम्ममाणस्स, सेल्लकुंताऽऽइसत्थेहिं ॥९६॥
दट्ठुमुवट्ठियहत्थत्थसत्थ-वहगे थिसायभयविहुरो । कंपइ जीवो ही! णत्थि, मच्चुतुल्लं भयं लोए ॥९७॥
'मरसु' इमम्मि वि भणिए, जायइ जीवस्स दारुणं दुक्खं । किं पुण मारिज्जंतस्स, तिक्खसत्थाऽभिघाएहिं॥९८॥
जो जत्थेव य जायइ, जीवो रमे तत्थ चेव कुणइ [1]रई । दयमेव तेण संतो, निच्चं कुव्वंति जीवेसुं ॥९९॥
अभयप्पयाणसरिसं, अन्नं दाणं न विज्जइ जए वि । ता तद्दाया जो किर, सच्चं सो चेव [2]दाणवई॥५६००॥
दिज्जइ धणकोडी जीवियं च, इह जंतुणो मरंतस्स । न य धणकोडिं गेण्हइ, इच्छंतो जीवियं जीवो ॥१॥
राया वि देज्ज वसुहं, मरणे समुवट्ठिए इय महग्घं । जो देइ जीवियं अखय-दाणदाई स जियलोए ॥२॥
सो धम्मिओ विणीओ, सुविऊ दक्खो सुई विवेगी य । जीवेसु सुहदुहं जो, अप्पोवम्मेण परिमिणइ ॥३॥
दट्ठुं समुवट्ठियमरण-मऽप्पणो जायए महादुक्खं । दट्ठव्वा सव्वे वि हु, जीवा तेणाऽणुमाणेणं ॥४॥
जं अप्पणो अणिट्ठं, परेसिमऽवि तं न सव्वहा कुज्जा । जारिसयं इह किज्जइ, पेच्चा वि फलं पि तारिसयं॥५॥
पाणेहिंतो वि पियं, न किंचि जीवाण विज्जइ जए वि । ता अप्पोवम्मेणं, तेसु दया चेव कायव्वा ॥६॥
जो जह करेइ पावं, जेहिं निमित्तेहिं जेण विहिणा य । सो तप्फलं पि पावइ, बहुसो तेहिं चिय कमेहिं॥७॥
जह दाया छेत्ता वा, एत्थ फलं लहइ तव्विहं चेय । सुहदुहदाई वि तहा, पुन्नं पावं च पाउणइ ॥८॥
दुट्ठमणवयणकायाऽऽउहेहिं, जीवे उ जे विहिंसंति । दसगुणियाऽऽइअणंतं, तेहिं चिय ते विहम्मंति ॥९॥
भीमभवक्खयदक्खं, दयं न बुज्झंति जे उ हिंसिल्ला । नियडइ तेसु सगज्जा, अवज्जवज्जाऽसणी घोरा ॥१०॥
ता भो! भणामि सच्चं, विवज्जियव्वेव सव्वहा हिंसा । हिंसा वियज्जिया जइ, कुगती वि विवज्जिया चेय ॥११॥
पाणाऽइवायसंजणिय-पावपब्भारभारिया संता । जीवा पडंति नरए, जले जहा लोहमयपिंडो ॥१२॥
जे पुण इह जीवेसुं, कुणंति सम्मं विसुद्धजीवदयं । ते सग्गे मंगलगीय-तूररवसवणसुहएसु ॥१३॥
अच्छरगणाऽऽउलेसु य, रयणमयासेसु वरविमाणेसु । जहचिंतियसंपज्जंत-सयलविसया सुरा होंति ॥१४॥
तत्तो वि चुया असरिच्छ-लच्छिविच्छड्डपंडरजसेसु । सुकुलेसु चेव जायंति, सयलजयजीवसुहया य ॥१५॥
दीहाऽऽउया अरोगा, निच्चमऽणुप्पन्नसोगसंताया । कायकिलेसविमुक्का, दयाऽणुभावेण होन्ति नरा ॥१६॥
जायंति न हीणंऽगा, न पंगवो न वडहा न खुज्जा य । नो वामणा न लायन्न-वज्जिया नो विरूवा य ॥१७॥
सुंदररूवा सोहग्ग-संगया बहुधणा गुणगरिट्ठा । अप्पडिमबलपरक्कम-गुणरयणविराइयसरीरा ॥१८॥
अम्मापिइपीइपरा, अणुरत्तकलत्तपुत्तमित्ता य । हुंति य कुलवुड्ढिकरा, नरा, दयाधम्मकरणाओ ॥१९॥
न पिएहिं विप्पओगो, न याऽवि अप्पियसमागमो तेसिं । न भयं न गिलाणत्तं, न दोमणस्सं न हाणी य ॥२०॥
पुन्नाऽणुबंधिपुन्नाऽणु-भावओ बज्झमंऽतरं सव्वं । एवं अणुकूलं चिय, सया वि संपज्जए तेसिं ॥२१॥
लहिऊण य संपुन्नं, जिणमयमाऽऽराहिउं च तं विहिणा । जीवदयाए फलं पार-मत्थियं पाउणंति नरा ॥२२॥
एवं कल्लाणपरं-परं परं पाणिणो समज्जिंति । जीए पसाया पुज्जा य, होंति सा जयउ जीवदया ॥२३॥
लोइयसत्थेसुं पि हु, परिहरणिज्जत्तणेण वुत्तमिमं । पुव्वं व पाणिवहणं, किं पुण लोगुत्तरे समए ॥२४॥
एत्थेव भवे पाणिवह-निरयविरयाण होंति दोसगुणा । उभयत्थ वि दिट्ठंतो, सासुयसुन्हा तहा धूया ॥२५॥

1. रई = रतिम् । 2. दानव्रती ।

तहाहिं— "प्राणिवधेश्वश्रूस्नुषयाः दृष्टान्तः"

जणबहुले धणबहुले, अदिट्ठपरचक्कचोरमारिभए । संखउरे नयरम्मि, अहेसि राया बलो नाम ||२६||
तस्स य रन्नो पडिबंध-भायणं सयलधणियलोयमओ[1] । सेट्ठी सागरदत्तो, आसी सव्वत्थ सुपसिद्धो ||२७||
भज्जा य संपया से, पुत्तो मुणिचंदनामगो ताणं । धूया बंधुमई दास-चेडओ थावरो नाम ||२८||
तस्स पुरस्स अदूरे वडवद्दडभिहाणगोउले नियगे । सेट्ठी गंतुं चिंतं, करेइ नियगोसमूहस्स ||२९||
पइमासं आणेइ य तत्तो घयदुद्धभरियसगडाइं । वियरइ य बंधुमित्ताण, दीणदुत्थाण य जणाण ||३०||
बंधुमई वि जिणाणं, धम्मं सोऊण साविया जाया । पाणिवहपमुहपाव-ट्ठाणविरत्ता पसंता य ||३१||
अह अन्नया कयाई, हरिथणुचडुलत्तणेण जीयस्स । सागरदत्तो सेट्ठी, कमेण पंचत्तमडणुपत्तो ||३२||
ठविओ तस्स पयम्मि य, मुणिचंदो पउरसयणलोएण । पुव्वठिईए वट्टइ, सव्वेसु वि सपरकज्जेसु ||३३||
दंसेइ य बहुमाणं, पुव्वपवाहेण थावरो तस्स । घरकज्जाणि य चिंतइ, सुहि व्व पुत्तो व्व बंधु व्व ||३४||
नवरं इत्थिसहावा, विवेयवियलत्तणेण य विसीला । तं दट्ठूणं चिंतेइ, संपया मयणसरविहुरा ||३५||
केणोवाएण समं, इमेण अणिवारियं विसयसोक्खं । भुंजिस्समडहं निप्पच्च-वायमेगंतमडल्लीणा ||३६||
कह वा मुणिचंदमिमं, वावाइत्ता सयस्स भवणस्स । धणकणगसमिद्धस्स वि, नाहमिमं ठावइस्सामि ||३७||
एवं विचिंतयंती, सविसेसं ण्हाणभोयणाडईहिं । उवचरइ थावरं अहह!, दुट्ठया पावमहिलाण ||३८||
अमुणियतदडभिप्पाओ, वट्टंतिं तं च तह निएऊण । चिंतेइ थावरो इय, जणणित्तं मह करेइ इमा ||३९||
अह उज्झिऊण लज्जं, दूरे मोत्तुं च सकुलमज्जायं । तीए तस्सेगंते, सव्वाडडयरमडप्पिओ अप्पा ||४०||
भणिओ य भद्द! वावाइऊण, मुणिचंदमेत्थ गेहम्मि । सामि व्व मए सद्धिं, भोगे भुंजाहि वीसत्थो ||४१||
तेणं भणियं एसो, मुणिचंदो कह णु मारियव्वो त्ति । तीए वुत्तं गोउल-पडियरणत्थं तुमं तं च ||४२||
पेसिस्सामि अहं किर, तो तुममडसिणा वहेज्ज तं मग्गे । पडिवन्नमिमं तेणं, किमडकिच्चं चत्तलज्जाण ||४३||
बंधुमईअ एसो य, वइयरो निसुणिओ सिणेहेण । सिट्ठो य भाउणो त-क्खणेण गेहम्मि इंतस्स ||४४||
तं तुण्हिक्कं काउं, मुणिचंदो मंदिरम्मि संपत्तो । कयडेणं जणणी वि हु, रोविउमडच्चंतमाडडरद्धा ||४५||
पुट्ठा तेणं किं रुयसि, अम्म! तीए पयंपियं वच्छ! । णियकज्जाइं सीयंत-याइं दट्ठूण रोएमि ||४६||
जीवंतो तुज्झ पिया, जया तया नूण मासपज्जंते । गंतूण गोउलाओ, घयदुद्धाइं पणामेंतो ||४७||
इन्हिं तु तुमं पुत्तय!, अच्चंतपमायसंगओ संतो । गोउलतत्तिं न करेसि, किंपि भण कस्स साहेमि ||४८||
भणियं च तेण अम्मो!, मा रुयसु अहं सयं पभायम्मि । वच्चामि गोउले था-वरेण सद्धिं चयसु सोगं ||४९||
इय सोउं सा तुट्ठा, ठिया य मोणेण अह बिइज्जदिणे । आरुहिऊण तुरंगं, चलिओ सो थावरेण समं ||५०||
वच्चंतो य विचिंतइ, थावरओ जइ कहं पि मुणिचंदो । पुरओ वच्चइ ता खग्ग-जट्ठिणा लहु हणामि अहं ||५१||
मुणिचंदो वि हु भइणी-निवेइयं वइयरं विभावेंतो । जमलो से अपमत्तो, मग्गे गंतुं पवत्तो त्ति ||५२||
अह विसमगड्डदेसे, पत्ते तुरओ कसप्पहारेण । पहओ थावरएणं, पुरओ गंतुं पयट्टो य ||५३||
मुणिचंदो य ससंको, जा गच्छइ ताव तेण करवालो । पट्ठिठिएणाडडयड्ढिउ-माडडरद्धो तव्वहनिमित्तं ||५४||
पेच्छइ य पडिच्छायं, मुणिचंदो तारिसं तओ तुरओ । वेगेण वाहिओ तेण, वंचिओ खग्गघाओ य ||५५||
पत्तो य गोउलं सो, गोउलवइणा कया य पडिवत्ती । अन्नडन्नसंकहाहिं, ठिया य ता जाव दिवसंडतं ||५६||
घाओवाए पेहइ, तम्मारणकारणेण थावरओ । चिंतेइ य रयणीए, वावाइस्सामि धुवमेयं ||५७||
अह मंदिरस्स मज्झे, सयणिज्जे विरइयम्मि रयणीए । मुणिचंदेणं भणियं, चिरकाला आगओडहमिह ||५८||
ता गोवाडम्मि इमं, रएह जह तत्थ संठिओ सव्वं । गोमहिसीणं जूहं, सम्मं पेहेमि पत्तेयं ||५९||
तह चेव तं कयं परि-यणेण तो तत्थ संठिओ संतो । चिंतेइ भिच्चविलसिय-मडसेसमडहमडज्ज पेच्छामि ||६०||
पइरिक्के य ठियं तं, दट्ठुं तुट्ठो मणम्मि थावरओ । निव्वयणिज्जं अज्जं, सुहेण वज्झो त्ति काऊण ||६१||
अह सुत्तम्मि जणम्मि, मुणिचंदो निसियखग्गमाडडदाय पडपाउयं च खोडिं, णियसयणिज्जम्मि ठविऊण ||६२||

1. वणिय० पाठां० ।.

तद्दुव्विलसियअवलो-यणट्ठया बाढमऽप्पमत्तमणो । निहुओ मोणेण ठिओ, एगंते अह खणस्संऽते ॥६३॥
आगंतुं थावरओ, वीसत्थो जाव पहरए तत्थ । ता मुणिचंदेण हओ, असिणा पत्तो य पंचत्तं ॥६४॥
वित्तंतस्स य एयस्स, गोवणट्ठं समग्गगोवग्गं । वाडाओ नीणित्ता, वाहरिउमिमो समाढत्तो ॥६५॥
हंहो! धावह धावह, गावीओ तक्करेहिं हरियाओ । वहिओ य थावरो तो, सव्वत्तो धाविया पुरिसा ॥६६॥
गावीओ वालियाओ, नट्ठा चोर त्ति चिंतियं तेहिं । मयकिच्चं णिव्वत्तिय-मऽसेसमऽवि थावरस्स तओ ॥६७॥
किं होहि त्ति सचिंता, जा तम्मग्गं पलोयए जणणी । ता एगागी गेहे, मुणिचंदो झत्ति संपत्तो ॥६८॥
दिन्नाऽऽसणो निसण्णो, खग्गं गिहकीलगे विमोत्तूण । पयसोहणं च काउं, पारद्धं तस्स भज्जाए ॥६९॥
पुट्ठो य ससोगाए, जणणीए वच्छ! थावरो कत्थ । तेणं वुत्तं अम्मो, मंदगई पिट्ठओ एइ ॥७०॥
तो संखुद्धा एसा, असिहुत्तं जा पलोयए ताव । पेच्छइ पिपीलियाओ, इंतीओ रुहिरगंधेणं ॥७१॥
सम्मं पेहंतीए, दिट्ठो खग्गो वि लोहियविलित्तो । ता पबलकोहहुयवह-पलित्तगत्ताए पावाए ॥७२॥
आयड्ढिऊण तमऽदिस्स-माणदेहाए झत्ति पुत्तस्स । सीसं छिन्नं तीए, कहं पि वक्खित्तचित्तस्स ॥७३॥
तो सामिमारणुप्पन्न-तिव्वकोवाए तस्स भज्जाए । मुसलेण मारिया सा, बंधुमईए नियंतीए ॥७४॥
सा पुण पाणिवहाओ, विरत्तचित्ता महंतसंतावं । हिययम्मि उव्वहंती, ठिया घरस्सेगदेसम्मि ॥७५॥
मिलिओ य नयरलोगो, वित्तंतं मुणिय तं च सा भणिया । कीस तए नो हणिया, मायाए विणासिगा एसा ॥७६॥
पाणिवहविरइरूवो-ऽभिप्पाओ साहिओ य सो तीए । तो सलहिया जणेणं, थिसिक्किियाइं च सेसाइं ॥७७॥
गिहसारं नरवइणा, गहियं सुन्हा य चारगे धरिया । इयरी य पूइया इय, पाणिवहोऽणत्थहेउ त्ति ॥७८॥
पाणवहनामगमिमं पावट्ठाणं निदंसियं पढमं । एत्तो उ अलियवयणाऽ-भिहाणगं बीयमऽक्खेमि ॥७९॥

"अलीकवचनस्वरूपम्" —

अलियं हि रुद्दकंदो, बाढमऽविस्सासदुमसमूहस्स । यज्जाऽसणीनिवाओ, जणपच्चयसेलसिहरस्स ॥८०॥
गरिहापणतरुणीए, गहणगदाणं सुवासणासिहिणो । जलपक्खेवो संकेय-मंदिरं अजसकुलडाए ॥८१॥
उभयभवभाविआवय-कुमुयपबंधस्स सारयमयंको । सुविसुद्धधम्मगुणसस्स-संपयाए कुवाओ य ॥८२॥
पुव्वाऽवरवयणविरोह-रूवपडिबिंबस्स आयरिसो । सत्थाहमत्थयमणी, नीसेसाऽणत्थसत्थस्स ॥८३॥
सप्पुरिसत्तणकाणण-निद्दहणम्मि य सुतिव्वहव्ववहो । ता एयप्परिहारो, कायव्वो सव्वजत्तेण ॥८४॥
किंच—
जह परमऽन्नस्स विसं, विणासयं जह य जोव्वणस्स जरा । तह जाण असच्चं पि हु, विणासयं सव्वधम्मस्स ॥८५॥
होउ य जडी सिहंडी, मुंडी वा वक्कली व नग्गो वा । लोए असच्चवाई, भन्नइ पासंडिचंडालो ॥८६॥
अलियं सइं पि भणियं, विहणइ बहुयाइं सच्चवयणाइं । एवं च सच्चवयणे वि, तम्मि अप्पच्चओ चेव ॥८७॥
अलियं न भासियव्वं, गरहिज्जइ जं जणे अलियवाई । अप्पच्चयं च अप्पा-णयम्मि संजणइ जणमज्झे ॥८८॥
कारावेइ य अलिय-प्पयंपणे धिट्ठचेट्ठियं दट्ठुं । जीहाछेदाऽऽइयं, चंडं दंडं नरवई वि ॥८९॥
इहलोगम्मि अकित्ती, सव्वजहन्ना गई य परलोए । अलियपयंपणपभवेण, होइ पावेण जीवस्स ॥९०॥
तो कोहमाणमाया-लोभेहिंतो न हासओ न भया । भासेज्ज अलियवयणं, परलोयाराहणेक्कमणो ॥९१॥
ईसाकसायकलिओ, अलियगिराहिं परं उयहणंतो । मुणइ वराओ नेवं, जह अप्पाणं चिय हणेमि ॥९२॥
उक्कोडागहणरओत्ति, कुडसक्खित्ति अलियवाइत्ति । धिक्कारमोग्गरहओ, णिवडइ नरए महाघोरे ॥९३॥
नो कित्ती नो अत्थो, नयाऽवि मणनेव्वुई न धम्मो त्ति । उक्कोडागहणरयस्स, किंतु कुगईगमो चेय ॥९४॥
सीलं कुलमऽप्पाणं, लज्जं मज्जायमऽह जसो जाइं । नायं सत्थं धम्मं च, कूडसक्खी परिच्चयइ ॥९५॥
वियलिंदिया जडा मूअ-ल्ला य हीणस्सरा य पूइमुहा । मुहरोगिणो गरहिया, जायंति असच्चवाइत्ता ॥९६॥
सग्गापवग्गमग्गऽग्गलं च, कुगतीए पुण पहो पउणो । अलियप्पयंपणं अप्प-णो य माहप्पलुंपणयं ॥९७॥
लोए वि मुसावाओ, समत्थसाहुजणगरहिओ गाढं । भूयाणमऽविस्सासो, तम्हा भासेज्ज मा मोसं ॥९८॥
लोए वि जो ससूगो, अलियं सहसा न भासए किंपि । जइदिक्खियो वि अलियं, भासइ ता किं च दिक्खाए ॥९९॥

सच्चं पि न वत्तव्वं, असच्चवयणं कहिंपि सच्चं पि । जं जीवदुक्खजणयं, सच्चं पि असच्चतुल्लं तं ॥५७००॥
जं परपीडाजणगं, हासेण य तं न होइ वत्तव्वं । हासेण भक्खियं किं, कडुयविवागं विसं न भवे ॥१॥
ता भो! भणामि सच्चं, वज्जेयव्वं खु सव्वहा अलियं । तं जइ विवज्जियं तो, कुगई वि वज्जिया चेव ॥२॥
अलियपयंपणसंपत्त-पावपब्भारभारिया संता । जीवा पडंति नरए, जले जहा लोहमयपिंडो ॥३॥
ता चइऊणमऽसच्चं, सच्चं चिय निच्चमेव भासेज्ज । सग्गाऽपवग्गगमणे, मणोहरं तं विमाणं जं ॥४॥
कित्तिकरं धम्मकरं, नरयदुवारऽग्गलं सुहनिहाणं । गुणपयडणप्पईवं, इट्ठं मिट्ठं च सिट्ठाणं ॥५॥
परिहरियसपरपीडं, बुद्धीए पेहियं पयइसोमं । निरवज्जं कज्जखमं, जं वयणं तं मुणसु सच्चं ॥६॥
इय सच्चवयणमंताऽ-भिमंतियं नो विसं पि पक्कमइ। धीरेहिं सच्चवयणेण, साविओ डहइ न सिही वि ॥७॥
उम्मग्गविलग्गा गिरि-नई वि थंभिज्जइ हु सच्चेण । सच्चेण साविया कीलि-य व्व सप्पा वि चिट्ठंति ॥८॥
पभवइ न सच्चवयणेण, थंभिओ दित्तपहरणगणो वि । दिव्वट्ठाणेसु वि सच्च-सावणा झत्ति सुज्झंति ॥९॥
आकंपिज्जंति सुरा वि, सच्चवयणेण धीरपुरिसेहिं । डाइणिपिसायभूया-ऽऽइणो वि न छलंति सच्चहया ॥१०॥
एत्थ भवे सच्चेणं, निब्भिच्चं संचिऊण पुन्नचयं । होउं महिड्ढियसुरो, सुमाणुसत्तं लभइ तत्थ ॥११॥
सव्वत्थ गेज्झवक्को, आदेओ दित्तिमं पयइसोमो । दीसंतो दिट्ठिसुहो, चिंतिज्जंतो य मणहारी ॥१२॥
खीरं व महुं व सुहा-रसं व सुइमाणसं सुनिसिरेइ । इइ वयणगुणो पुरिसो, भासंतो होइ सच्चेणं ॥१३॥
न जडो न मूयलो वा, नयाऽवि हीणस्सरो न कागसरो । न य मुहरोगी न य पूइ-गंधवयणो य सच्चेण ॥१४॥
सुहिओ समाहिपत्तो, पमुइअपक्कीलिओ रइपरो य । सुहसलहणिज्जचेट्ठो, इट्ठो कंतो परियणस्स ॥१५॥
जे पढमपावठाणग-पडिवक्खगुणा उ वन्निया पुव्विं । तेहि इमेहि य कलिओ, होइ नरो सच्चभासि त्ति ॥१६॥
एवं कल्लाणपरं-परं परं पाणिणो समज्जिंति । जीए पसाया पुज्जा य, होंति सा जयइ सच्चगिरा ॥१७॥
सच्चम्मि तवो सच्चम्मि, संजमो तम्मि चेव सव्वगुणा । अइसंजओ वि मोसेण, होइ तिणलवसमो पुरिसो ॥१८॥
इय सुंदर! जाणित्ता, सच्चाऽसच्चवियाण दोसगुणे । चेच्चा असच्चवयणं, सच्चगिरं चिय समुल्लवसु ॥१९॥
बीयगपावट्ठाणे, ठाणब्भंसाऽऽइणो बहू दोसा । वसुणो व्व तन्नियत्ताण, पुण गुणा नारयस्सेव ॥२०॥
तहाहि—

"वसुनृपदृष्टान्तः"

जंबुद्दीवे दीवे, सुत्तिमईए पुरीए नरनाहो । अभिचंदनामधेओ, अहेसि पुत्तो य तस्स वसू ॥२१॥
वेयाऽवगमनिमित्तं, सो पिउणा आयरेण उवणीओ । अज्झावगस्स गुणिणो, खीरकयंबस्स विप्पस्स ॥२२॥
पव्वयगेणं उज्झाय-सूणुणा नारएण य समेओ । पढइ वसुरायपुत्तो, वेयरहस्सं अविस्सामं ॥२३॥
अन्नदियहम्मि तिन्नि वि, एए पासित्तु गयणगामीहिं । अइसयनाणीहिं महा-मुणीहिं अवरोप्परं भणियं ॥२४॥
वेयमऽहिज्जंति इमे, जे तेसिं दोन्नि अहरगइगामी । एगो य उड्ढगामि त्ति, जंपिउं ते तिरोभूया ॥२५॥
खीरकयंबो य इमं, सोच्चा धी! धी! निरत्थपाढेण । इति संवेगमुवगतो, पव्वइओ मोक्खमऽणुपत्तो ॥२६॥
अह अहिचंदेण वसू, अहिसित्तो णियपए णिवो जाओ । रज्जं च भुंजमाणस्स, तस्स एगेण पुरिसेण ॥२७॥
आगंतूणं भणियं, अडवीए गएण देव! अज्ज मए । हणणट्ठा पामुक्को, बाणो हरिणस्स सो य लहुं ॥२८॥
पच्छाहुत्तो अब्भिट्टिऊण, पडिओ सविम्हएण मए । तो फलिहसिला विमला, दिट्ठा करफरिसणवसेण ॥२९॥
जेणंऽतरिओ हरिणो, पयडो दीसइ तमऽब्भुयं रयणं । देवस्स चेव जोग्गं ति, आगओ तुम्ह कहणट्ठा ॥३०॥
एवं सोच्चा रन्ना, फलिहसिलाऽऽणाविऊण सा रहसि । सिंहासणकरणट्ठा, समप्पिया सिप्पियजणस्स ॥३१॥
निम्मायम्मि य तम्मि, अत्थाणीमंडवे य ठवियम्मि । आसीणो नरनाहो, नज्जइ गयणंऽगणठिओ व्व ॥३२॥
विम्हइओ नयरिजणो, गया पसिद्धी य सेसराईसु । सच्चेण वसू राया, जह अच्छइ नहयलाऽऽसीणो ॥३३॥
एयपवायनिमित्तं च, सिप्पिणो ते विणासिया सव्वे । दूरट्ठिओ य लोगो, लहेइ विन्नत्तियं काउं ॥३४॥
एवं वच्चति काले, ते पुण पव्वयगनारया सिस्से । वेयरहस्सं पाढंति, नियगनियगेसु गेहेसु ॥३५॥
अवरम्मि य पत्थावे, पुव्वप्पणएण पव्वयगपासे । बहुसिस्सपरियुडो ना-रओ गओ सगुरुपुत्तो त्ति ॥३६॥
विहिया से पडिवत्ती, पव्वयगेणं ठिया य गोट्ठीए । पत्थावे पव्वयगेण, अद्धवक्खायवेयपयं ॥३७॥

जन्नाऽहिगारसंतिय-मऽजेहिं जट्ठव्वमिति ससिस्साणं । वक्खाणियं अजेहिं, छयलेहिं इइ विमूढेणं ॥३८॥
तो नारएण भणियं, भण्णंति अजा तिवरिसपरिवसिया । इह वीहियाऽऽदओ तेहिं, चेव जट्ठव्वमाऽऽह गुरु ॥३९॥
नो पडिवन्नमिमं प-व्वएण जाओ महं विसंवाओ । जिब्भच्छेयपइन्ना, कया य जो जिप्पइ वाए ॥४०॥
सहपढिओ त्ति वसुनिवो, एत्थ पमाणं कया इय ववत्था । अह तज्जणणी भीया, सच्चगिरं नारयं नाउं ॥४१॥
धुवमिन्हिं मह पुत्तो, जीहच्छेएण पाविही मरणं । ता पन्नवेमि नरवइ-मिइ सा वसुमंदिरम्मि गया ॥४२॥
अब्भुट्ठिया य रन्ना, गुरुणो भज्ज त्ति तीए तो सिट्ठो । एगंते से सव्वो, नारयपव्वयगवुत्तंतो ॥४३॥
वसुणा य जंपियं अम्म!, कहसु किं एत्थ मज्झ किच्चं ति । तीए वुत्तं पुत्तो, जह जिणइ तहा करेज्जासु ॥४४॥
उवरोहसीलयाए, पडिवन्नमिमं पि वसुनरिंदेण । बीयदिवसे य दोन्नि वि, पक्खा तस्संऽतियं पत्ता ॥४५॥
काऊण सच्चसावण-मऽह भणियं नारएण भो राय! । तुममिहइं धम्मतुला, तं पढमो सच्चवाईणं ॥४६॥
ता कहसु कहं गुरुणा, अजेहिं जट्ठव्वमिइ पवक्खायं । ताहे रन्ना परिचत्त-सच्चवाइत्तवाएण ॥४७॥
जंपियमऽजेहिं छगलेहिं, भद्द! जट्ठव्वमिइ पवक्खायं । एवं भणिए कुलदेव-याए अइकुडसक्खि त्ति ॥४८॥
कुवियाए पाडिऊणं, फालियसीहासणाओ सो निहओ । अन्ने वि भूमिवइणो, तप्पयपरिचत्तिणो अट्ठ ॥४९॥
पव्वयगो वि जणेणं, थिसिक्किओ दढमऽसच्चवाइ त्ति । मरिऊण य नरयम्मि उववण्णो वसुनरेंदो वि ॥५०॥
इयरो य सच्चवाइ त्ति, नयरलोएहिं विहियसक्कारो । ससिसमदित्तिं कित्तिं, पत्तो सुरलोयलच्छिं च ॥५१॥
बीयं पावट्ठाणग-मेवं मोसाऽभिहाणमुवइट्ठं । एत्तो तइयमऽदत्ता-दाणऽभिहाणं पवक्खामि ॥५२॥

"अदत्तादानस्वरूपम्" —

पंको व्व जलं किट्टो व्व, दप्पणं चित्तभित्तिमिव धूमो । मइलेइ चित्तरयणं, परधणहरणस्स सरणं पि ॥५३॥
एयपसत्तो सत्तो, अविभावेऊण धम्मविद्धंसं । अवहत्थिऊण सप्पुरिस-सेवियं कुलववत्थं पि ॥५४॥
कित्तिकलंकं पि अपेहिऊण, अवहीरिऊण जीयं पि । गीयरवं हरिणो इव, पईवकलियं पयंगो व्व ॥५५॥
बडिसाऽऽमिसं व मीणो, भमरो कमलं व करियहूफरिसं । वणवारणो व्व पावो, परधणहरणं कुणइ सो य ॥५६॥
तज्जम्मे च्चिय पावइ, करकन्नच्छेयमऽच्छिनासं वा । करवत्तकित्तणं उत्ति-मंगपमुहंऽगभंगं वा ॥५७॥
परसंतियं हरित्ता, अत्थं हरिसिज्जइ [1]नियऽत्थे य । हरिए परेण सहसत्ति, सत्तिभिन्नो व्व होइ दुही ॥५८॥
लोओ वि कुणइ पक्खं, अवरज्झंतस्स अन्नमऽवराहं । [2]नीयल्लया वि पक्खे, न होंति चोरिक्कसीलस्स ॥५९॥
अन्नं अवरज्झंतस्स, देंति नियए घरम्मि ओगासं । माया वि हु ओगासं, न देइ परदव्वहारिस्स ॥६०॥
जस्स य घरम्मि सो लहइ, अल्लियावं कहंपि तं सहसा । पाडेइ अइमहल्ले, अयसे दुक्खे महावसणे ॥६१॥
कहकहवि किंपि सुचिरेण, विविहआसाहिं संचिणइ दव्वं । इय जो जीयसमं तं, हरेज्ज तत्तो वि को पावो ॥६२॥
संसारियसत्ताणं, पाणसमो सव्वहा इमो अत्थो । तेसिं च तं हरंतो, हरेइ तज्जीवियमऽहम्मो ॥६३॥
विहवम्मि उ अवहरिए, केवि छुहाए मरंति दीणमुहा । कियणप्पाया तप्पंति, केवि सोयऽग्गिणा अन्ने ॥६४॥
पढमपसूयंपि चउ-प्पयाऽऽइयं अवहरंति निक्करुणा । जणणिविउत्ता तव्वच्छ-गा य दुहिया मरंति तओ ॥६५॥
एवं च हणइ पाणे, भासइ मोसं अदत्तहरणपरो । तो इहभवे वि पावइ, बहुविहवसणाणि मरणं च ॥६६॥
दारिद्दं भीरुत्तं, पियपुत्तकलत्तबंधुवोच्छेयं । एमाऽऽइए य दोसे, भवंऽतरे [3]तेन्नपावाओ ॥६७॥
ता भो! भणामि सच्चं, विवज्जणीयं खु परधणं सव्वं । परधणविवज्जणाओ, कुगई वि विवज्जिया दूरं ॥६८॥
अद्दत्तगहणसंजणिय-पावपब्भारभारिया संता । नरए पडंति जीवा, जले जहा लोहमयपिंडो ॥६९॥
अद्दत्ताऽऽदाणफलं, एयं नाऊण दारुणविवागं । तव्विरई कायव्वा, अत्तहियनिहित्तचित्तेण ॥७०॥
परदव्वहरणबुद्धिं पि, जे न कुव्वंति सव्वहा जीवा । पुव्वुत्तदोसजालं, [4]मलंति ते वामपाएणं ॥७१॥
पावेंति सुदेवत्तं, तत्तो सुकुलेसु माणुसत्तं च । लद्धुं च सुद्धधम्मं, आयहियम्मि पयट्टंति ॥७२॥
मणिकणगरयणधणसंचयड्ढ-कुललद्धमणुयजम्मस्स । तेन्नवयपत्तपुन्नाऽणु-बंधिपुन्नस्स धन्नस्स ॥७३॥
गामे वा नगरे वा, खेत्ते व खले व अह अरन्ने वा । गेहे वा पंथे वा, राओ वा दिवसओ वा वि ॥७४॥

1. निजार्थे = स्वधने । 2. नीयल्लया = निजकाः = स्वजनाः B । 3. स्तैन्यपापात् । 4. मलंति =मृद्नन्ति = नाशयन्ति ।

भूमीए निहाणगयं, अहवा जहकहचि गोवियं संतं । पयडं चिय मुक्कं वा, एमेव कहिं चि पडियं वा ॥७५॥
पम्हुट्ठं वा कत्थवि, वड्ढिपउत्तं च उज्झियं जइवि । नो तस्स नस्सइ धणं, धणियं वड्ढइ अ किं बहुणा ॥७६॥
सच्चित्तं अच्चित्तं मीसं वा किंपि तं पि हू अपयं । दुपयं चउप्पयं वा, तहा जहा कहमऽवि ठियं पि ॥७७॥
देसनगराऽऽगराणं, गामाण य दारुणोवघाए वि । न कहिं पि किंपि पलयं, पावेइ तप्परिग्गहियं ॥७८॥
अकिलेसघडंताणं, जहिच्छियाणं व होइ दव्वाणं । सामी भोई य तहा, तस्स अणत्था खयं जंति ॥७९॥
भोज्जाऽऽगयहेरियहरिय-थेरिगिहसारललियगोट्ठी व । इह तइयपावठाणग-निरया पाविंति बंधाऽऽई ॥८०॥
जे पुण तओ विरत्ता, ते सुद्धसहावओ च्चिय न होंति । तम्मज्झवुत्थसावय-पुत्तो व्व कया वि दोसपयं ॥८१॥
तहाहि— "श्रावकपुत्रवसुदत्तदृष्टान्तः"
नयरम्मि वसंतपुरे, वसंतसेणाऽभिहाणथेरीए । जेमाविओ पुरजणो, एगम्मि महूसवे सव्वो ॥८२॥
अह तत्थेव पुरम्मि, वत्थव्वा अत्थि दुल्ललियगोट्ठी । तीए य थेरिगेहं, [1]हेरित्ता रयणिसमयम्मि ॥८३॥
लुंटेउं आरद्धं, नवरं सावयसुओ उ वसुदत्तो । तग्गोट्ठिमज्झवत्ती वि, नेव चोरिक्कयमऽकासी ॥८४॥
तो तं मोत्तुं थेरीए, चोरचरणा पणामववएसा । मा चोरह त्ति भणिरीए, अंकिया मोरपित्तेण ॥८५॥
मुसिऊण गेहसारं, निक्खंता ते तओ पभायम्मि । थेरीए नरवइणो, तव्वुत्तंतो लहुं कहिओ ॥८६॥
अह मोरपित्तलंछिय-पयपुरिसपलोयणं कुणंतेहिं । रायनिउत्तनरेहिं, दिट्ठा सा दुल्ललियगोट्ठी ॥८७॥
सच्छंदपाणभोयणविहीए, सव्वाऽऽयरं विलसमाणी । संजायनिच्छएहिं, तो नीया नरवइसमीवे ॥८८॥
अल्लंछियपयसावय-मेक्कं चेवुज्झिऊण ते सेसा । छिंदणभिंदणबहुजा-यणाहिं निहणं समुवणीया ॥८९॥
एवमऽदत्तादाण-प्पवित्तिविणिवित्तिमंतजंतूणं । दट्ठुणमऽसुहफल-मेत्तो विरमसु तुमं वच्छ! ॥९०॥
इय तइयपावठाणग-मऽदत्तगहणाऽभिहाणमुवइट्ठं । भूरिविसयं पि एत्तो, लेसेण चउत्थमऽक्खेमि ॥९१॥

"मैथुनस्वरुपम्" —

मेहुन्नं सुचिरकिलेस-पत्तवित्तस्स मूलविद्धंसो । दोसुप्पत्तीणमऽवंझं, कारणं ठाणमऽजसस्स ॥९२॥
गुणपयरिसकणनियरस्स, दारुणोदूहलो [2]हलग्गं च । सच्चमहीए महिया, विवेयरविकिरणपसरस्स ॥९३॥
एत्थ पडिबद्धचित्तो, सत्तो विवरम्मुहो भवे गुरुणो । पडिवक्खत्ते वट्टइ, भाउयभइणीसुयाणं पि ॥९४॥
कुणइ अकज्जं कज्जं पि, चयइ लज्जइ विसिट्ठगोट्ठीए । झाएइ बज्झवावार-विरयचित्तो सया एवं ॥९५॥
अहह! रमणीण रेहइ, अरुणाऽरुणनहमऊहविच्छुरियं । चलणजुयं कमलं पिव, नवदिणयरकिरणसंवलियं ॥९६॥
अणुपुव्ववट्टमणहर-मुरुमणिभिंगारनालरमणीयं । जंघाजुयलं वम्मह-करिकर[3]करणिं समुव्वहइ ॥९७॥
रमणफलयं पि पंच-प्पयाररुइरयणकंतिपडिबद्धं । गयणयलं पिव सोहइ, फुरंतसुररायधणुकलियं ॥९८॥
उयरम्मि मुट्ठिगेज्झे, मणोहरा वलिपरंपरा सहइ । थणगिरिसिहराऽऽरोहण-कएण सोवाणपंति व्व ॥९९॥
अंतवियसंतनवकमल-कमलनालोवमं समुव्वहइ । कोमलनंसलकररेह-माणभुयवल्लरीजुयलं ॥५८००॥
आणंदबिंदुसंदिर-सुंदेरुद्दाममिंदुबिंबं व । कामिचओराण मणो, उल्लासइ वयणसयवत्तं ॥१॥
अलिकुलकज्जलकसिणो, सुसिणिद्धो सहइ केसपब्भारो । चित्तऽब्भन्तरपज्जलिय-मयणसिहिधूमनिवहो व्व ॥२॥
एवं विलासिणीजण-सव्वंऽगाऽवयवचिंतणाऽऽसत्तो । तदुवहयमाणसो इव, तदऽट्ठिसंघायघडिओ व्व ॥३॥
तदऽहिट्ठिओ व्व सव्वऽप्प-णावि तप्परिणईपरिणओ व्व । जंपइ अहो! जयम्मि, कुवलयदलसच्छहऽच्छीणं ॥४॥
जुवईण विजियहंसं, गइविलसियमऽहह! मणहरा वाणी । अद्धऽच्छिपेच्छियाणं, अहहो! छेयत्तणमऽतुच्छं ॥५॥
अहह! दरदलियकइरव-सुहयं हसियं फुरंतदंतऽग्गं । उक्कंपिरथोरथण-त्थलं अहो कणगकंडुयणं ॥६॥
रंगंतवलीवलयं, पायडियविसट्टनाभिकंदोट्टं । फुट्टंतकंचुयमऽहो!, पेहह मोट्टाइयमरट्टं ॥७॥
एक्केक्कमवि इमेसिं, दुलहमिमाणं किमंऽग समवाओ । अहवा किं वन्निज्जइ, तासिं संसारसाराणं ॥८॥
चिंतणमऽवि सयमोल्लं, जासिं अवलोयणं सहसमुल्लं । गोट्ठी य कोडीमुल्ला, अमोल्लओ अंगसंभोगो ॥९॥
एवं च सो वराओ, तग्गयचिंताविलावचेट्ठाहिं । मत्तो व्व मुच्छिओ इव, सव्वग्गहनिहयचेट्ठो व्व ॥१०॥

1. हेरित्ता =निरीक्ष्य । 2. हलाग्रम् । 3. करणिं = सादृश्यम्

दिवसं निसं पिवासं, छुहं अरण्णं परं सुहं दुक्खं । सीयं उण्हं गम्मं, अगम्ममऽवि नो मुणइ किंतु ॥११॥
वामकरधरियवयणो, विच्छाओ दीहमुस्ससइ खलइ । वेल्लइ परिदेवइ रुयइ, सुवइ जंभायइ य बहुसो ॥१२॥
एवं अणंतचिंता-संताणुतम्ममाणकामीण । कयदुग्गइप्पयारं, वियारमऽवलोइय बुहेण ॥१३॥
सव्वं पि हु मेहुण्णं, दिव्वं माणुस्सयं तिरिच्छं च । उड्ढमऽहतिरियखेत्ते, राओ वा दिवसओ वा वि ॥१४॥
रागाओ दोसाओ वा, दोसाण समुस्सयं महापावं । सव्वाऽवायनिमित्तं ति, चिंतणिज्जं न मणसा वि ॥१५॥
चिंतिज्जंते य इमम्मि, पायसो पवरबुद्धिणो वि दढं । अविभावियपरनियजुवइ-सेवणादोसगुणपक्खो ॥१६॥
आरन्नकरिवरो इव, दुव्वारो जायए तदऽभिलासो । जीवाण जमऽइगरुई, मेहुणसण्णा सहावाओ ॥१७॥
तो पइदिणवड्ढंता-ऽभिलासपवणप्पदिप्पमाणसिहो । निरुवसमं सव्वंऽगं, पयंडमयणाऽनलो जलइ ॥१८॥
तेण य डज्झंतो असम-साहसं मणसि संपहारित्ता । जीयं पि पणं काउं, गुरुजणलज्जाऽऽइ अवगणिउं ॥१९॥
सेवेज्ज मेहुणं पि हु, तत्तो इह परभवे बहू दोसा । होंति जओ सो निच्चं, ससंकिओ भमइ सव्वत्थ ॥२०॥
अह तक्कारि त्ति कयाइ, कहवि लोगेण जइ स नज्जेज्जा । तो दीणमुहो जायइ, खणेण मरमाणलिंगो य ॥२१॥
गिहसामियनगराऽऽरक्खिएहिं, वा गहियनिहयबद्धस्स । दुट्ठखराऽऽरोवणपुव्व-गं च अह से वरायस्स ॥२२॥
उग्घोसणा पुरे तिक-चउक्कचच्चरपहेसु परिभमइ । जह हंभो पउरजणा!, अवरज्झइ नेह रायाऽऽई ॥२३॥
केवलमऽवरज्झंति, पावाइं सयं कडाइं कम्माइं । ता भो! इयरुवाइं, इमाइं अन्नो वि मा कुज्जा ॥२४॥
करचरणछेयवहबंध-रोहणुल्लंबणाऽऽइमरणंऽता । के के न होंति दोसा, इहभविया? मेहुणपरस्स ॥२५॥
परभविए पुण दोसे, केत्तियमेत्ते उ कित्तिमो तस्स । जं मेहुणपाउब्भव-पावाउ अणंतभवभमणं ॥२६॥
ता भो! भणामि सच्चं, चयाहि सव्वं पि मेहुणं सम्मं । तप्परिचागा कुगई, चत्त च्चिय होइ दुहपगई ॥२७॥
अन्नं च—
पायडियविगियरुवं, आयासकिलेससाहणिज्जं च । सव्वंऽगियगुरुवायाम-जणियसेयाऽहिउव्वेगं ॥२८॥
सज्झसरुज्झंतगिरं, विलज्जकज्जं जुगुच्छणिज्जं च । एत्तो चेव निमित्ता, पच्छन्नाऽऽसेवणीयं पि ॥२९॥
हिययुक्खइखयपामोक्ख-विविहवाहीण हेउभूयं च । अप्पत्थभोयणं पिव, बलवीरियहाणिजणगं च ॥३०॥
किंपागफलं पिव भुज्ज-माणमऽवसाणविरसमऽइतुच्छं । वामोहकरं नडनच्चि-यं व गंधव्वनयरं व ॥३१॥
सयलजणजणियनिरसण-सुणगाऽऽइनिहीणजंतुसामन्नं । सव्वाऽभिसंकणीयं, धम्मत्थपरत्तविग्घकरं ॥३२॥
आवायमेत्तसुहलेस-संभवम्मि विवेगवं को णु । तिहुयणसोक्खं कंखेज्ज, मोक्खसोक्खेक्कपरिकंखी ॥३३॥
मेहुणपसंगसंजणिय-पावपब्भारभारिया संता । निवडंति नरा नरए, जले जहा लोहमयपिंडो ॥३४॥
अक्खंडबंभचेरं, चरिउं संपुन्नपुन्नपब्भारा । समुविंति चिंतियऽत्थं, पावेंति पहाणदेवत्तं ॥३५॥
तत्तो चुया नरत्ते वि, तियसतुल्लोवभोगभोगजुया । जायंति पुन्नदेहा, विसिट्ठकुलजाइसंपन्ना ॥३६॥
होंति [1]जणगज्झवयणा, सुभगा पियभासिणो सुसंठाणा । रुवस्सिणो य सोमा, पमुइयपक्कीलिया निच्चं ॥३७॥
नीरोगा य असोगा, चिराऽऽउसो कित्तिकोमुइमयंका । अकिलेसाऽऽयासपयं, सुहोइया अतुलबलविरिया ॥३८॥
सव्वंऽगलक्खणधरा, साऽलंकारा सुकव्वगंथ व्व । सिरिमंता य वियड्ढा, विवेइणो सीलकलिया य ॥३९॥
भरियाऽवत्था थिमिया, दक्खा तेयस्सिणो बहुमया य । परितूलियविण्हुबंभा, बंभव्वयपालगा होंति ॥४०॥
इह तुरियपावठाणग-पवित्तिविणिवित्तिदोसगुणविसए । गिरिनयरनिवासिवयंसि-दारगा होइ दिट्ठंतो ॥४१॥
तहाहि—

"गिरिनयरनिवासिनीदृष्टान्तः"

रेवयगिरिविराइय-विसिट्ठसोरट्ठदेसतिलयम्मि । गिरिनयरे तिन्नि वयंसि-याओ इब्भाण धूयाओ ॥४२॥
परिणीयाओ तत्थेव, पवरसुंदेरमणहरंऽगीओ । ताओ य पसूयाओ, कालेणे-क्केक्कगं तणयं ॥४३॥
अह अन्नया कयाई, पुरपरिसरकाणणम्मि मिलियाओ । किलंतीओ ताओ, तिन्नि वि चोरेहिं घेत्तूणं ॥४४॥
पारसकूले वेसंऽगणाण, दिन्नाओ भूरिदव्वेण । सिक्खवियाओ ताहिं, वेसाचरियं निरऽवसेसं ॥४५॥
दूरदिसाऽऽगयउत्तम-वणिपुत्ताऽऽईण तयऽणु ठवियाओ । उवभोगत्तेण जणा, लद्धपसिद्धी य जायाओ ॥४६॥

1. जनग्राह्यवचनाः ।

अह तासिं पुव्वसुया, तिन्नि वि तारुन्नभावमऽणुपत्ता । जणणीनाएणं चिय, वट्टंतऽन्नोन्नपीईए ॥४७॥
णवरं एगो तेसिं, सावयपुत्तो अणुव्वयधरो य । नियदारुवभोगी चिय, अवरे पुण मिच्छदिट्ठि त्ति ॥४८॥
एगम्मि य पत्थावे, विचित्तभंडं गहाय नावाहिं । दव्वोवज्जणहेउं, पारसकूलम्मि ते य गया ॥४९॥
भवियव्वयावसेणं, वुत्था तासिं गिहेसु वेसाणं । णवरमऽणुव्वयधारिणमऽचलोइय निव्वियारमणं ॥५०॥
भणियं एगाए भद्द!, कहसु कत्तो समागओ तं सि। किं होंति तुज्झ एए, तो तेण पयंपियं भद्दे! ॥५१॥
गिरिनयराओ अम्हे, तिन्नि वि होमो परोप्परं मित्ता । अम्हं पुण जणणीओ, तिण्हं पि [1]हडाओ चोरेहिं ॥५२॥
तीए पयंपियं संप-यं पि किं भद्द! तत्थ जिणदत्तो । पियमित्तो धणदत्तो य, तिन्नि वणिणो परिवसंति ॥५३॥
तेणं भणियं किं तेहिं, तुज्झ तीए पयंपियं पइणो । ते अम्हाणं तिण्हं पि, आसि पुत्तो य एक्केक्को ॥५४॥
एमाऽई सव्वो वि हु, वुत्तंतो साहिओ तओ तेण । भणियं जिणदत्तसुओ, अहं ति एए य इयरसुया ॥५५॥
एवं वुत्ते पुत्तो त्ति, कंठमाऽऽलंबिऊण सा बाढं । रोविउमाऽऽढत्ता मुक्क-कंठमियरो वि तह चेव । ॥५६॥
सुहदुक्खं खणमेत्तं च, पुच्छिउं सो जवेण मित्ताण । अक्कज्जकरणवारण-बुद्धीए गओ समीवम्मि ॥५७॥
सिट्ठो एगंतम्मि, सव्वो तव्वइयरो तओ ते य । तव्वेलकयाऽकज्जं ति, सोगविहुरा दढं जाया ॥५८॥
अह सव्वाओ वि पभूय--दव्वदाणेण वेसहत्थाओ । मोयावित्ता वलिया, ताहिं समं नियपुराऽभिमुहं ॥५९॥
इंताणमुयहिमज्झे, तेसिं चिंता इमा समुप्पन्ना । सयणाण कयाऽकज्जा, दंसिस्सामो कहं वयणं ॥६०॥
इय संखोभवसेणं, लज्जाए गया दुवे विदेसम्मि । तम्मायरो य जलहिम्मि, चेव पडिउं विवन्नाओ ॥६१॥
सो उ अणुव्वयधारी, जणणिं घेत्तुं गओ सनयरम्मि । विन्नायवइयरेणं, पसंसियो पउरलोएण ॥६२॥
इय सोऊणं सुंदर!, दरजणणं मुणियपरमतत्ताणं । चय अब्बंभ बंभं च, भयसु आराहणेक्कमणो ॥६३॥
एवं मेहुणनामग-पावट्ठाणं चउत्थमऽक्खायं । पंचमपावट्ठाणं, परिग्गहमऽओ निदंसेमि ॥६४॥

"परिग्रह स्वरूपम्" —

एसो य सयलपाव-ट्ठाणगपासायनिच्चलपइट्ठा । भूरिसिरासंपयहो, गभीरसंसारकूवस्स ॥६५॥
महुसमओ बुहनिंदिय-कुवियप्पअणप्पपल्लवुब्भेए । एगग्गचित्तयादीहि-याए गिम्हुम्हसंभारो ॥६६॥
पाउससमओ नाणाऽऽइ-विमलगुणरायहंसवग्गस्स । सरयाऽऽगमो य गरुयाऽऽ-रंभमहासस्ससिद्धीए ॥६७॥
साऽऽयत्ताऽऽणंदविसिट्ठ-सोक्खकमलिणिवणस्स हेमंतो । सिसिराऽवसरो सुविसुद्ध-धम्मतरुपत्तसाडस्स ॥६८॥
मुच्छावल्लीए अखंड-मंडवो काणणं दुहतरूणं । संतोससरयससिणो, दाढुग्गाढं विडप्पमुहं ॥६९॥
अच्चंतमऽविस्सासस्स, भायणं मंदिरं कसायाणं । दुन्निग्गहो गहो इव, परिग्गहो कं न विनडेइ ॥७०॥
धणधन्नखेत्तवत्थूसु, रुप्पसुवन्ने चउप्पए दुपए । कुविए य करेज्ज बुहो, एत्तो च्चिय निच्चपरिमाणं ॥७१॥
ईहरा उ इमा इच्छा, दिन्नजहिच्छा अईव दुचिगिच्छा । सपरजणरुद्धदिच्छा, पूरिज्जइ कहवि जइ किच्छा ॥७२॥
जीवस्स जमिह तोसो, न सया न सहस्सओ न लक्खाओ । न य कोडिओ न रज्जा, न य देवत्ता न इंदत्ता॥७३॥
जओ—
अयराऽगो वराऽग-मऽह पत्तवराऽगो पुण वराओ । अहिलसइ रूवगं तंपि, पाविउं ईहए दम्मं ॥७४॥
पत्तो वि तं तदेगु-त्तराए वुड्ढीए जाव दम्मसयं । तं पत्तो य सहस्सं, सहस्सव कंखए लक्खं ॥७५॥
लक्खवई पुण कोडिं, कोडिवई पुण समीहए रज्जं । रज्जवई चक्कित्तं, चक्की पुण महइ देवत्तं ॥७६॥
तं पि कहंपि हु पत्तो, पावो ईहइ पुरंदरत्तं पि । तम्मि वि पत्ते इच्छा, [2]दीहट्टा वट्टए चेव ॥७७॥
उवरि पवित्थरइ दढं, अणुक्कमं मल्लगस्स घडणव्व । इच्छा जस्स स सुगइं, अयहत्थिय पत्थइ कुगइं ॥७८॥
बहुसो वि मिज्जमाणो, न आढओ कहवि मूडओ होइ । इय जो धणलवभागी, सो किं कोडीसरो होइ ॥७९॥
जं पुव्वकम्मनिम्मिय-मऽजत्तओ लभइ तत्तियं चेव । दोणघणे वि य वुट्ठे, चिट्ठइ न जलं गिरिसिरम्मि ॥८०॥
जो किर जहन्नपुन्नो, समऽहियमीहइ धणं धणियचेट्ठो । गयणंऽगणं गहेउं, सो नियहत्थेण पत्थेइ ॥८१॥
जइ लब्भइ निब्भग्गेहिं, भूयले एत्थ पत्थियपयत्थो । रज्जाऽऽई ता न दुही, दीसेज्ज कयावि कोवि कहिं ॥८२॥

1. हृताः । 2. दीर्घत्वात् ।

मणिकणगरयणपुन्नं, लोयं पि हु पाउणेज्ज जइ कह वि । तह वि य अछिन्नवंछो, ही! अकयत्थो च्चिय वराओ॥८३॥
पुन्नेहिं सुन्नो वि हु, अत्थे जो विमूढऽप्पा । एमेव सो विणस्सइ, असमत्तमणोरहो चेव ॥८४॥
पवणेणं पूरेउं, न सक्कणिज्जो जहेत्थ कोत्थलओ । इय अत्थेण न सक्को, कहिं पि अप्पा वि पूरेउं ॥८५॥
इच्छावोच्छेयकए, संतोसो चेव ता वरं विहिओ । संतोसिणो हि सोक्खं, दुक्खमऽसंतोसिणो धणियं ॥८६॥
पंचमपावट्ठाणग-पसत्तविणियत्तयाण दोसगुणा । जह लोहनंदजिणदास-सावगाणं तहा णेया ॥८७॥
तहाहि— " लोहनन्दजिनदासदृष्टांतः"
पाडलिपुत्ते नगरे, बहुसमरविढत्तविजयजसपसरो । आसि जयसेणनामो, नरनाहो भूरिगुणकलिओ ॥८८॥
तत्थ य पुरम्मि अधरिय-कुबेरधणवित्थरा परिवसंति । नंदपमोक्खा वणिणो, जिणदासाऽऽई सुसड्ढा य ॥८९॥
अह एगम्मि अवसरे, समुद्ददत्ताऽभिहाणवणिएण । चिरकालियं सरोवर-माऽऽरद्धं खाणिउं एक्कं ॥९०॥
तत्थ खणिज्जंतम्मि, उड्डेहिं पुव्वपुरिसपक्खित्ता । लद्धा सुवन्नकुसया, चिरकालियकिट्टचयमलिणा ॥९१॥
तो लोहमय त्ति वियाणिऊण, वणियाण तेहिं उवणीया । जिणदासेणं गहिया य, दोन्नि नाऊण लोहमया ॥९२॥
अह तेण नियंतेणं, सम्मं नाउं सुवन्नमइय त्ति । परिमाणाऽइक्कमभया, दिन्ना तित्थयरभवणम्मि ॥९३॥
अवरे पुणो न गहिया, नवरं नंदेण जाणमाणेण । आढत्ता ते घेत्तुं, समहियअत्थव्वएणाऽवि ॥९४॥
उड्डा य इमं भणिया, लोहकुसे मा परस्स देज्जाह । अहमिच्छियं दलिस्सामि, तुम्ह तेहिं च पडिवण्णं ॥९५॥
अवरम्मि दिणे मित्तेण, सो बला भोयणऽट्ठया नीओ । तेण य पुत्तो भणिओ, जह तह गिण्हेज्जसु कुस त्ति ॥९६॥
पडिसुयमिमं सुएणं, भोत्तुं मित्तग्गिहे गओ ताहे । अच्चंतवाउलमणो, भोत्तुं च [1]गिहंमुहो चलिओ ॥९७॥
अमुणियपरमत्थेण य, समऽहियमोल्ल त्ति नो कुसा गहिया । तेण सुएणं उड्डा य, जायकोवा परत्थ गया ॥९८॥
जत्तो तत्तो य खिवंतयाण, अह कहवि ववगए किट्टे । एगस्स उ कुसयस्स, पयडं चामीयरं जायं ॥९९॥
रायपुरिसेहिं तत्तो, उड्डा गहिउं समप्पिया रन्नो । पुट्ठा य कत्थ अन्ने, विक्कीया कहह कुसग त्ति ॥५९००॥
तेहिं कहियं नराऽहिव!, दिन्ना जिणदाससेट्ठिणो दोन्नि । अवसेसे नीसेसा, उवणीया नंदवणियस्स ॥१॥
एवं भणिए रन्ना, वाहरिउं पुच्छिओ हु जिणदासो । सिट्ठो य तेण सव्वो, जहट्ठिओ नियगवुत्तंतो ॥२॥
ताहे रन्ना सम्माणिऊण, सो पेसिओ नियगिहम्मि । नंदो य नियगहट्टं, समागओ पुच्छए पुत्तं ॥३॥
किं रे! कुसया गहिया, न व त्ति तेणं पयंपियं ताय! । बहुमुल्ल त्ति न गहिया, तो ताडिंतो उरं नंदो ॥४॥
हा! हा! मुट्ठो त्ति पयंपिरो य, जंघाउ भंजइ कुसेण । एयाणमेस दोसो, जेण गओ हं परगिहे त्ति ॥५॥
तो वज्झो आणत्तो, सो रन्ना अवहडं च सव्वस्सं । एमाऽऽई बहु दोसा, इच्छाविणिवित्तिरहियाणं ॥६॥
इय खमग! मणागं पि हु, परिग्गहे मा मणो धरिज्जासि । खणदिट्ठनट्ठरूवे, का वंछा तत्थ धीराण ॥७॥
एवं परिग्गहविसयं, पंचमगं पावठाणगं वुत्तं । कोवसरूवाऽऽवेयण-परमेत्तो भन्नइ छट्ठं ॥८॥
"क्रोधस्वरूपम्" —
कोहो विगंधिदव्वु-ब्भवो व्व कोहो न कस्स उव्वेयं । उवजणयइ एत्तो च्चिय, चत्तो दूरेण विबुहेहिं ॥९॥
किञ्च—
गुरुकोवजलणजाला-कलावसविसेसकवलियविवेगो । न वियाणइ अप्पाणं, परं च परमत्थओ पुरिसो ॥१०॥
उप्पज्जमाणओ च्चिय, कोहो पुरिसं डहेइ ता पढमं । जत्थुप्पण्णो तं चेव, इंधणं धूमकेउव्व ॥११॥
नियकत्तारं कोवो, डहइ अवस्सं परे अणेगंतो । नियपयडहणे सिहिणो वि, अहव नियमो न अन्नत्थ ॥१२॥
सो किं य कुणउ अन्नस्स, पेसिओ खीणसत्तिसंजोगो । जो नियमाऽऽसयं नि-द्दहेइ कोवो महापावो ॥१३॥
जस्स किर कोवकलिणा, कलुसीकयमाणसस्स जंति दिणा । इह परलोगे वि नरस्स, तस्स कह सोक्खसंपत्ती॥१४॥
अवयारी किर वेरी वि, होइ एक्कम्मि चेव जम्मम्मि । कोहो पुण होइ दढं, दोसु वि जम्मेसु अवयारी ॥१५॥
जं कज्जमुवसमपरो, साहइ न हु तं कया वि कोवपरो । जं कज्जकरणदक्खा, बुद्धी कुद्धस्स सा कत्तो ॥१६॥
अन्नं च—

---

1. गिहंमुहो = गृहोन्मुखः = गृहसंमुखः ।

कोहो उव्वेयणओ, पियबंधुविणासओ महापावो । कोहो संतावयरो, सोग्गइपहबंधणो कोहो ॥१७॥
बुहयणसहस्सपरिनिंदियस्स, पयईए पावसीलस्स । कोहस्स न जंति वसं, विवेइणो तेण कइया वि ॥१८॥
कोहाउ हणइ पाणे, कोहाओ भासइ मुसावायं । कोहा अदत्तगहणं, कोहाओ बंभवयभंगो ॥१९॥
कोहाउ महाऽऽरंभो, परिग्गहो वि हु पयट्टए कोहा । किं बहुणा सव्वाणि वि, पावट्ठाणाणि कोहाओ ॥२०॥
ता तिक्खखंतिखग्गेण, खंडिउं दक्खयाए निरवेक्खो । कोहमहापडिमल्लं, पडिवज्जसु पसमजयलच्छिं ॥२१॥
कोहो दुक्खणिमित्तं, तप्पसमो पुण सुहेक्कहेउ त्ति । उभए वि हु अप्पवसे, तप्पसमो च्चिय वरं जुत्तो ॥२२॥
कोहो मणसा वि कओ, नरगाय भवे सिवाय तदुवसमो । उभयत्थ वि रायरिसी, पसन्नचंदो इहं नायं ॥२३॥
तहाहि—

"प्रसन्नचन्द्रदृष्टान्तः"

उग्गविसविसहराऽऽउल-घरं व पोयणपुराऽहिवो रज्जं । मोत्तुं वीरजिणंऽते, पसन्नचंदो विणिक्खंतो ॥२४॥
विहरंतो जयगुरुणा, समं च रायगिहम्मि संपत्तो । ओलंबियभुयपरिहो, उस्सग्गेण य ठिओ सम्मं ॥२५॥
जिणवंदणऽट्ठपट्ठिय-सेणियनिवअग्गसेन्नगामीहिं । दिट्ठो दुम्मुहसुमुहाऽ-भिहाणपुरिसेहिं दोहिं तओ ॥२६॥
सुमुहेण जंपियं जयइ, एसो सहलं च जीवियमिमस्स । जो रज्जं तह वज्जिय, पव्वज्जं इय पवन्नो त्ति ॥२७॥
तो दुम्मुहेण भणियं, भद्द! अलं संकहाए एयस्स । जो असमत्थं पुत्तं, रज्जे ठविउं सयं कीवो ॥२८॥
पासंडं पडिवन्नो, वेरिभया एवमेत्थ संवसइ । रज्जं सुओ पया वि य, तह पीडिज्जंति सत्तूहिं ॥२९॥
एवं सोच्चा तक्खण-विस्सुमरियधम्मज्झाणपडिबंधो । साहू पसन्नचंदो, कुवियो चिंतेउमाऽऽढत्तो ॥३०॥
को मइ जीवंतम्मि वि, मज्झ सुयं रज्जमऽवि य विद्दवइ । मन्ने सीमालमही-वईण दुव्विलसियं एयं ॥३१॥
ता ते विद्धंसित्ता, करेमि सुत्थं ति पुव्वनाएण । उस्सग्गठियो वि रणेण, तेहिं सद्धिं समाऽऽवडिओ ॥३२॥
धम्मज्झाणठियं पिव, अह तं दट्ठूण सेणिओ राया । अहह! महप्पा कह वट्टइ त्ति, विम्हयरसाऽऽउलिओ ॥३३॥
भत्तिभरमुव्वहन्तो, सव्वाऽऽयरविहियतप्पयपणामो । चिंतइ एरिससुहझाण-संगओ जइ जियं चयइ ॥३४॥
एसो महाऽणुभावो, उप्पज्जइ ता कहिं ति जिणनाहं । पुच्छिस्सं ति विभाविय, जयगुरुपासं समल्लीणो ॥३५॥
पुट्ठो य जएक्कपहू, पसन्नचंदो तहाविहे भावे । वट्टंतो मरिऊणं, उप्पज्जइ कत्थ मे कहसु ॥३६॥
भणियं पहुणा सत्तम-नरए उप्पज्जइ त्ति तो राया । नूणं मए न सम्मं, सुयं ति चिंताऽऽउरो जाओ ॥३७॥
एत्थंतरम्मि मणसा, जुज्झंतेणं पसन्नचंदेणं । निट्ठियपहरणनिवहेण, सीसताणेण वि रिउस्स ॥३८॥
घायं काउमणेणं, सीसे हत्थो निवेसिओ सहसा । लुंचियचिहुरचयम्मि य, तम्मि छिक्कम्मि उवउत्तो ॥३९॥
समणो हं ति विसायं, कुणमाणो किं पि तं सुहं झाणं । पडिवन्नो स महप्पा, जेण लहुं केवली जाओ ॥४०॥
केवलिमहिमा य कया, संनिहियसुरेहिं दुंदुही पहया । पुट्ठं च सेणिएणं, किं तूररवो इमो भयवं! ॥४१॥
भणियं जएक्कपहुणा, केवलिमहिमं पसन्नचंदस्स । देवा कुणंति एए, विम्हइओ सेणिओ ताहे ॥४२॥
पुव्वाऽवरवयणाणं, विरोहमुब्भाविऊण पुच्छेइ । को नाह! इहं हेऊ, कहियं च जहट्ठियं पहुणा ॥४३॥
इय मुणिय खवग! तं कोह-विगमसंपत्तपसमरससिद्धी । सुपसन्नमाणसो तं, विसुद्धमाऽऽराहणं लहसु ॥४४॥
छट्ठं पावट्ठाणं, परूवियं कोहनामधेयमिमं । माणाऽभिहाणमेत्तो य, सत्तमं किंपि जंपेमि ॥४५॥

"मानस्वरूपम्" —

माणो संतावयरो, माणो पंथो अणत्थसत्थाण । माणो परिभवमूलं, पियबंधुविणासगो माणो ॥४६॥
माणमहागहगहिओ, जसं च कित्तिं च अत्तणो हणइ । थद्धत्तणदोसाओ, जायइ अवहीरणाठाणं ॥४७॥
लहुयत्तणस्स मूलं, सोग्गइपहनासणो कुगइमग्गो । सीलसिलोच्चयवज्जं, एसो माणो महापावो ॥४८॥
माणेण थद्धकाओ, अयाणमाणो हियाऽहियं अत्थं । अहमऽवि किमेत्थ कस्स वि, हीणो किं वा वि गुणवियलो ॥४९॥
इय कलुसबुद्धिवसगो, संजममूलं न कुव्वए विणयं । विणयरहिए ण नाणं, नाणाऽभावे य नो चरणं ॥५०॥
चरणगुणविप्पहीणो, पावेइ न निज्जरं जए विउलं । तयऽभावाउ न मोक्खो, मोक्खाऽभावे य किं सोक्खं ॥५१॥
किंच—
माणतमभरऽक्कंतो, कज्जाऽकज्जेसु मुज्झिउं मूढो । बहुमन्निउं अगुणिणो, गुणिणो अवमन्निउं बहुसो ॥५२॥

गयबुद्धी गोट्ठामा-हिलो व्व पावो असेससुहमूलं । सम्मत्तकप्पतरुमडवि, उम्मूलइ मूलओ चेव ॥५३॥
एवं नीयागोयं, माणंडथो कम्ममडसुहमुवचिणिउं । नीएसु वि नीयतमो, परियडइ अणंतसंसारं ॥५४॥
तहा—
चइऊण वि किर संगं, संपावित्ता वि चरणकरणगुणे । चरिऊणं पि तवाऽऽई, कट्ठाऽणुट्ठाणमऽच्चुग्गं ॥५५॥
वयमेव चत्तसंगा, वयमेव बहुस्सुया वयं गुणिणो । वयमेव उग्गकिरिया, लिंगुवजीवी किमऽन्ने उ ॥५६॥
इय विलसमाणमाणाऽ-णलेण हद्धी! दहंति संतं पि । पुव्वपवन्नियनियगुण-वणसंडं अहह! कट्ठमऽहो! ॥५७॥
अन्नं च—
विवरीयवित्तिधम्मा, आरंभपरिग्गहाउ अनियत्ता । पावा सयं विमूढा, सेसं पि जणं विमोहित्ता ॥५८॥
हिंसंति जीवनिवहं, करेंति कम्मं सयाऽऽगमविरुद्धं । तहवि य वहंति गव्वं, धम्मनिमित्तं इहं अम्हे ॥५९॥
सायरसरिद्धिगरुया, दव्वक्खेत्ताऽऽइकयममत्ता य । नियकिरियाऽणुरुवं, परुवयंता जिणमयं पि ॥६०॥
दव्वक्खेत्ताऽऽईण अणु-रूवम्मि बलवीरियपमुहे । संते वि जहासत्तिं, अजयंता चरणकरणेसु ॥६१॥
अववायपयपसत्ता, पूइज्जंता तहाविहजणेणं । अम्हे चेव इह त्ति, अतुक्करिसाऽभिमाणाओ ॥६२॥
कालाऽणुरुवकिरिया-रए य संविग्गगीयवरमुणिणो । माइट्ठाणाऽऽइपरा-यण त्ति खिंसंति जणपुरओ ॥६३॥
नियकिरियाऽणुरुवेणं, वट्टमाणं ममत्तपडिबद्धं । निक्कुडिलं ति वयंता, पासत्थजणं च सलहंति ॥६४॥
एवं च असुहचेट्ठा, कम्मं बंधंति किंपि तं बहुसो । जेण बहुतिक्खदुक्खे, भमंति संसारकंतारे ॥६५॥
जह जह करेइ माणं, पुरिसो तह तह गुणा परिगलंति । गुणपरिगलणेण पुणो, कमेण गुणविरहियत्तं से ॥६६॥
गुणसंजोगेण विवज्जिओ य, पुरिसो जयम्मि धणुहं व । साहइ न इच्छियऽत्थ उत्तमवंसुब्भवत्ते वि ॥६७॥
सपरोभयकज्जहरो, इह परलोए य तिक्खदुक्खकरो । जत्तेण परिच्चत्तो, माणो दूरं विवेईहिं ॥६८॥
ता सुंदर! चयसु तुमं पि, माणमऽणवज्जयं गवेसंतो । खविए पडिवक्खम्मि, सपक्खसिद्धी जओ भणिया ॥६९॥
एयम्मि अवगयम्मि, जरे व्व परमं सरीरसुत्थत्तं । जायइ तह एवं चिय, गुणकरमाऽऽराहणापत्थं ॥७०॥
सत्तमपावट्ठाणग-दोसेण किलेसिओ हु बाहुबली । सो च्चिय तओ नियत्तो, सहस च्चिय केवली जाओ ॥७१॥
तहाहि— "बाहुबलीदृष्टान्तः"
तक्खसिलानयरीए, इक्खागकुलुब्भवो जयक्खातो । बाहुबलि त्ति जहऽत्थो, उसभसुओ पत्थिवो आसि ॥७२॥
भरहेण चक्कवइणा, अट्ठाणवइकणिट्ठभाऊसुं । पव्वइएसुं सेवं, अपडिच्छंतो स इय भणिओ ॥७३॥
परिचयसु लहुं रज्जं, अहवा आणापरायणो होसु । अज्जेव समरसज्जो, वट्टसु सवडम्मुहो अहवा ॥७४॥
एवं सोच्चा निप्पडिम-भुयबलोहामियऽन्नसुहडेणं । संगामो पारद्धो, तेणं चक्काऽहिवेण समं ॥७५॥
अवि य—
पडंतमत्तकुंजरं, हम्मन्तजोहनिब्भरं । पलायमाणकायरं, निभिन्नसंदणुक्करं ॥७६॥
मिलंतजोगिणीकुलं, वहंतलोहियाऽऽकुलं । कयंतगेहदारुणं, महाभएक्ककारणं ॥७७॥
सराऽयरुद्धभूयलं, गइंददाणवद्दलं । पयट्टसूरमग्गणं, भमंततुट्ठमग्गणं ॥७८॥
पलोइउं रणंऽगणं, अणेगलोगमारणं । दयारसेक्कमाणसो, भणेइ सो महायसो ॥७९॥
हे भरह! किं जणेणं, निरवराहेण मारिएणिमिणा । जुज्झामो तुममऽहयं च, जेसिमऽवरोप्परं वेरं ॥८०॥
पडिवन्नमिमं भरहेण, जुज्झिउं ते तओ समाढत्ता । ता जाव बाहुबलिणा, सव्वत्थ विणिज्जिओ भरहो ॥८१॥
तो सो चिंतइ चक्की, किमऽहं न भवामि एस चक्कहरो । जं भुयबलेण सव्वत्थ, णेण जिप्पामि इयरो व्व ॥८२॥
इय चिंतिरस्स भरहस्स, दंडरयणं फुरंततडितरलं । करकमलम्मि निलीणं[1], पयंडजमदंडदुप्पेच्छं ॥८३॥
अह बाहुबली तं तह, पलोइउं विलसमाणकोहऽग्गी । दंडेण समं पि इमं, किं चूरेमि त्ति चिंतंतो ॥८४॥
खणमेगं अच्छित्ता, मणागमुवलद्धसुद्धबुद्धीए । परिभाविउं पयत्तो, धिद्धी! विसयाऽणुसंगस्स ॥८५॥
जेणऽभिभूया सत्ता, मित्तं सयणं पि बंधवजणं पि । न गणंति तिणसमं पि हु, काउमऽकिच्चं पि ववसंति ॥८६॥

1. अन्य कथाओं में देवेन्द्र द्वारा दोनों भाईयों के युद्ध की बात और बाद में चक्ररत्न को फेंकने की बात आती है।

ता विसयवासणाए, निवडउ वज्जाऽसणि त्ति चिंततो । सयमेव विहियलोओ, निस्संगो सो महासत्तो ॥८७॥
पव्वज्जं घेत्तूणं, कह लहुभाऊण वंदणं काहं । सामिसमीवम्मि गओ त्ति, माणदोसेण तत्थेव ॥८८॥
काउस्सग्गेण ठिओ, उप्पन्ने केवलम्मि वच्चिस्सं । एत्तो त्ति कयपइन्नो, आवरिसं निरऽसणो किसिओ ॥८९॥
वरिसंऽते जिणपेसिय-बंभीसुंदरीतवस्सिणीहिं च । भणिओ भाउग! ताओ, आणवइ न हत्थिचडियाण ॥९०॥
उप्पज्जइ किर नाणं ति, तयणु सो जा विभावए सम्मं । ता माणमेव हत्थिं, मुणिऊणं जायसुहभावो ॥९१॥
उज्झियमाणो जिणपाय-मूलगमणाय उक्खिवियचलणो । तिन्नपइन्नो जाओ, वरकेवलनाणलाभेणं ॥९२॥
इय माणपयित्तिनिवित्तिभाव-संपज्जमाणदोसगुणे । खमग! महासत्त! विहा-विऊण सुद्धाए बुद्धीए ॥९३॥
तुममाऽऽराहणमेयं, आराहिय चरणवरगुणोवेयं । दंसणनाणसमेयं, पावसु सिवसोक्खमऽपमेयं ॥९४॥
सत्तमयपावठाणं, उवइट्ठं माणगोयरं एयं । एत्तो मायाविसयं, अट्ठमयं किंपि साहेमि ॥९५॥

"मायास्वरूपम्" —

माया उव्वेयकरी, धम्मियसत्थेसु निंदिया माया । माया पावुप्पत्ती, धम्मक्खयकारिणी माया ॥९६॥
माया गुणहाणिकरी, दोसाण वियड्ढणी फुडं माया । माया विवेयहरिणंऽक-बिंबगसणेक्कराहुगहो ॥९७॥
पढियं नाणं चरियं च, दंसणं पावियं च चारित्तं । तवियं सुचिरं पि तवं, जइ माया ता हयं सव्वं ॥९८॥
अच्छउ ता परलोए, इहलोए च्चिय नरो उ माइल्लो । जइ वि अकयाऽवराहो, तहा वि सप्पो व्व भयहेऊ ॥९९॥
जह जह करेइ मायं, तह तह [1]अप्पच्चयं जणे जणइ । अप्पच्चयाओ पुरिसो, [2]अक्कयतूला लहू होइ ॥६०००॥
ता भाविऊण एयं, सुंदर! परिहरसु सव्वहा मायं । तव्वज्जणेण अणवज्जं, अज्जवं जायए जेण ॥१॥
अज्जवगुणेण पुरिसो, संचरई जत्थ जत्थ तत्थ तहिं । सुयणो सरलसहावो, इमो त्ति सलहिज्जइ जणेणं ॥२॥
आरूढजणपसंसस्स, पुण्णगुणा संकमंति सयराहं । गुणगणगवेसिणो ता, जुत्तो जत्तो तहिं काउं ॥३॥
महुरत्तं दंसित्ता, माई पच्छा वि दरिसियवियारो । तक्कं व जयम्मि नरो, न रोयए चत्तमहुरत्तो ॥४॥
अट्ठमयपावठाणग--दोसे नायमिह पंडरज्जाए । अहवा दोसगुणेसु वि, अहक्कमं दो वणियपुत्ता ॥५॥
तथाहि-- "द्वेवणिकपुत्रस्यदृष्टान्तः"
एगम्मि पुरे धणवंत-गरुयकुलसंभवा भवुव्विग्गा । पव्वज्जं पडियन्ना, एगा सुस्सावगाण सुया ॥६॥
सुस्समणीणं मज्झे, वसमाणी सा य गिम्हसमयम्मि । अच्चंतमलपरीसह-पराजिया देहसक्कारं ॥७॥
अंसुयसक्कारं पि हु, कुणमाणी चोयणं च समणीहिं । दिज्जंतिं असहंती, भिन्नम्मि पडिस्सयम्मि ठिया ॥८॥
पंडरपडदेहत्तेण, सा पसिद्धा य पंडरज्ज त्ति । कुणइ य पूयाहेउं, विज्जाए नयरजणखोभं ॥९॥
अह पच्छिमम्मि काले, कहं पि संजायपरमवेरग्गा । सुगुरुसमीवे पडिवन्न-पुव्वदुच्चरियपच्छित्ता ॥१०॥
संघसमक्खं घेत्तूण-मऽणसणं सा ठिया सुहज्झाणे । णवरं पूयाहेउं, मंतेणाऽऽयड्ढइ लोयं ॥११॥
तीए समीवे पुरलोय-मितमऽणिसं पलोइउं गुरुणा । भणिया महाऽणुभावे!, मंतऽभिओगो न ते जुत्तो ॥१२॥
"मिच्छा मि दुक्कडं" "नो, पुणो वि काहामि चोइया सुट्ठु" । पडिभणियमिणं तीए, नवरं अवरम्मि पुण दियहे॥१३॥
विजणे ठाउं अतरंतियाए, आयड्ढिओ पुणो लोगो । पडिसिद्धा य गुरूहिं, ता जाव चउत्थवेलाए ॥१४॥
मायासीलत्तेणं, तीए भणियं न किंपि भंते! हं । विज्जाबलं पजुंजेमि, किंतु सयमेइ एस जणो ॥१५॥
एवं सा मायावस-विहुणियआराहणाफला मरिउं । सोहम्मे एरावण-सुररमणीभावमऽणुपत्ता ॥१६॥
इय दोसे दिट्ठंतो, निद्दिट्ठो ताव पंडरज्जाए । दोसगुणेसु य पुव्वो-वइट्ठवणिए निदंसेमि ॥१७॥
अवरविदेहे दो वणि-वयंसा माइउज्जुगत्तेण । ववहरिउं चिरकालं, दो वि मया भरहवासम्मि ॥१८॥
उज्जुगभावो मिहुणत्तणेण, अवरो य हत्थिभावेण । उप्पन्ना कालेणं, परोप्परं दंसणं जायं ॥१९॥
मायावसविढवियआभि-योगकम्मोदएण अह करिणा । खंधम्मि विलइयं तं, मिहुणगमऽव्वत्तपीईए ॥२०॥
इय माइणो अणत्थं, तव्विवरीयस्स पेच्छिउं च गुणं । खमग! तुमं निम्माओ, सम्मं आराहणं लहसु ॥२१॥
पावट्ठाणगमऽट्ठम-मेयं लेसेण संसियं एत्तो । लोभसरुवाऽऽवेयण-परमं नवमं पि कित्तेमि ॥२२॥

1. अप्रत्ययम् = अविश्वासम् । 2. अर्कतूलात् ।

"लोभस्वरुपम्" —

जायइ जाओ वड्ढइ, जह पाउसजलहरो अहुंतो वि । तह पुरिसस्स वि लोभो, जायइ पसरइ य पइसमयं ॥२३॥
लोभे य पसरमाणे, कज्जाऽकज्जं अचिन्तयन्तो य । मरणं पि हु अगणेंतो, कुणइ महासाहसं पुरिसो ॥२४॥
अडइ गिरिदरिसमुद्दे, पविसइ दारुणरणंऽगणम्मि तहा । पियबंधवे नियं जी-वियं पि लोभा परिच्चयइ ॥२५॥
किंच—
अच्चंतमुत्तरोत्तर-समीहियऽत्थाऽऽगमे वि लोभवओ । तण्ह च्चिय परियड्ढइ, सुमिणे वि न जायए तित्ती ॥२६॥
लोभो अक्खयवाही, सयंभुरमणोदहि व्व दुप्पूरो । लाभिंधणेण जलणो व्व, वुड्ढिमऽच्चंतमऽणुसरइ ॥२७॥
लोभो सव्वविणासी, लोभो परियारचित्तभेयकरो । सव्वाऽऽवइकुगईणं, लोभो संचाररायपहो ॥२८॥
एयद्दारेण नरो, घोरं पावं पवंचिउं सुचिरं । अविहियतप्पडियारो, परियडइ भवकडिल्लम्मि ॥२९॥
जो पुण लोभविवागं, नाऊण विवेगओ महासत्तो । तव्विवरीयं चिट्ठइ, उभयभवसुहाऽऽवहो स भवे ॥३०॥
एत्थ य पावट्ठाणे, दिट्ठंतो होइ माहणो कविलो । जो चडियो कोडीए, कणगस्स दुमासगऽत्थी वि ॥३१॥
तप्पडिवक्खे वि हु खविय-सयलपरिथूलसुहुमलोभंऽसो । सो च्चिय दिट्ठंतपयं, संपावियकेवलाऽऽलोगो ॥३२॥
तहाहि— "कपिलदृष्टान्तः"
कोसंबीनयरीए, जसोयनामाए माहणीए सुओ । कविलो नामेणाऽऽसी, लहुयस्स वि तस्स किर जणगो ॥३३॥
पंचत्तं संपत्तो, पियसमवयसं विभूतिसंपन्नं । माहणमऽवरं दट्ठुं, से जणणी संभरियनाहा ॥३४॥
रोविउमाऽऽढत्ता पु-च्छिया य कविलेण रुयसि किं अम्मो! । तीए पयंपियं पुत्त!, पउरमिह रोवियव्वं मे ॥३५॥
तेण भणियं किमत्थं?, तीए वुत्तं तुमम्मि जायम्मि । वच्छ! विभूई निहणं, गया तहा जह य एस दिओ ॥३६॥
तह तुज्झ पिया वि पुरा, विभूइमं आसि तेण वज्जरियं । केण गुणेणं तीए, पयंपियं वेयकुसलत्ता ॥३७॥
साऽमरिसेणं कविलेण, भासियं तं अहं पि सिक्खामि । तीए भणियं एवं, करेसु गंतूण सावत्थिं ॥३८॥
पिइमित्तइंददत्ताऽ-भिहाणअज्झावगस्स पासम्मि । इह अत्थि वच्छ! सम्मं, न तुज्झ सिक्खावगो को वि ॥३९॥
एवं ति सो पवज्जिय, सावत्थिपुरीए इंददत्तस्स । पासम्मि गओ पुट्ठो य, तेण कहिए य वुत्तंते ॥४०॥
पियमित्तसुओ त्ति वियाणिऊण, अज्झावगेण अवगूढो । भणिओ य वच्छ! गिण्हसु, संऽगोवंगं पि चउवेयं ॥४१॥
किंतु समिद्धं धणसेट्ठि-मेत्थ भोयणकएण पत्थेसु । अब्भत्थिओ य कविलेण, साऽऽयरं तेण वि य भणिया ॥४२॥
एगा नियगा चेडी, भुंजावेज्जासि पाढगमिमं ति । एवं भोयणसुत्थो, वेए सो पढिउमाऽऽढत्तो ॥४३॥
नवरं साऽऽयरपइदिण-भोयणदाणेण संथवेणं च । चेडीए उवरि जाओ, अच्चंतं तस्स पडिबंधो ॥४४॥
अह तीए सो भणिओ, छणो त्ति कयविविहचारुसिंगारा । नियनियकामुयवियरिय-विसिट्ठवत्थाऽऽइरमणिज्जा ॥४५॥
पुरवेसाओ [1]नीहिंति, कल्लदियहम्मि अच्चिउं मयणं । तासिं च अहं मज्झे, जंती बीभच्छनेवत्था ॥४६॥
सहियाहिं हसिज्जिस्सं, ता पिययम! तं सि पत्थणिज्जो मे । तह कुणसु कह वि जह नो-वहासपयविं पवज्जामि ॥४७॥
एवं सोउं कविलो, कयत्थिओ अद्धिईए पारद्धो । नट्ठा निसिम्मि निद्दा, पुणो वि चेडीए सो भणिओ ॥४८॥
पिय! परिहर संतावं, वच्चसु तं राइणो समीवम्मि । सो किर पइदियहं चिय, पढमपबुद्धो पढमदिट्ठं ॥४९॥
विप्पं सुवन्नमासग-दुगदाणेणाऽभिनंदइ इमं च । आयन्निऊण कविलो, अवियाणियरयणिपरिमाणो ॥५०॥
नीहरिओ गेहाओ वच्चंतो दंडवासिएहिं तओ । चोरो त्ति गहिय बद्धो, पच्चूसे दंसिओ रण्णो ॥५१॥
आगारिंगियकुसलत्तणेण, साहु त्ति जाणिउं रन्ना । आपुच्छिओ तगो भद्द!, को तुमं? तेण वि य सव्वो ॥५२॥
मूलाओ च्चिय सिट्ठो, नियवुत्तंतो तओ सकरुणेण । रन्ना भणियं भद्दय! जं मग्गसि तं पयच्छामि ॥५३॥
कविलेण जंपियं देव!, रहसि आलोचिऊण मग्गामि । पडिवन्नमिमं रन्ना, एगंते सो तओ ठाउं ॥५४॥
आलोचिउं पयत्तो न किंपि कणगस्स मासगदुगेण । पत्थेमि दम्मदसगं, तेण वि वत्थं भवे एक्कं ॥५५॥
ता पत्थिज्जइ वीसा, अहवा तीए वि हवइ नाऽऽभरणं । ता जाएमि सयमऽहं, तेण वि किं तीए किं मज्झं ॥५६॥
मग्गेमि सहसमेक्कं, नवरं तेणाऽवि थोवनिव्वाहो । एवं दससाहस्सिं, चडिओ ता जाव कोडिं पि ॥५७॥

1. नीहिंति = गमिष्यन्ति ।

एवं च उत्तरोत्तर-वड्ढंतुद्दामदव्ववंछेण । मूलाऽभिलासमऽणुसरिय, तेण संचिंतियं एवं ॥५८॥
"जहा लाभो तहा लोभो, लाभा लोभो पवड्ढइ । दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं" ॥५९॥
"हा दुट्ठु दुट्ठु लोभस्स, चेट्ठियं" इइ विचिंतयंतो सो । सरिऊण पुव्वभवकय-पव्वज्जं जायसंवेगो ॥६०॥
संबुद्धो पव्वइओ, गओ य भूमीवइस्स पासम्मि । तेणाऽऽवि पुच्छिओ भद्द!, किमिह आलोचियं तुमए ॥६१॥
कोडीपज्जवसाणो, सिट्ठो नियवइयरो य कविलेण । रन्ना भणियं कोडिं पि, देमि मा कुणसु संदेहं ॥६२॥
अलमेत्तो मज्झ परिग्गहेण, इइ संसिउं च निक्खंतो । कविलो रायगिहाओ, संपत्तो केवलाऽऽलोयं ॥६३॥
इय एयं लोभरिउं, सुंदर! संतोसतिक्खखग्गेणं । जिणिऊण दुज्जयं पि हु, तमऽप्पणो नेव्वुइं कुणसु ॥६४॥
नवमं पावट्ठाणग-मेवं लोभाऽभिहाणमुवइट्ठं । पेज्जाऽहिहाणमेत्तो, दसमं पि हु संपवक्खामि ॥६५॥

"प्रेम(राग)स्वरुपम्" —

अच्चन्तलोभमाया-रूवमऽभिस्संगमेत्तमिह पेज्जं । आयप्परिणामं चिय, तिलोयपुज्जा परूवंति ॥६६॥
पेज्जं हि नाम पुरिसस्स, देहे दाहो निरऽग्गिओ घोरो । अविसुब्भया य मुच्छा, अमंततंतो गहाऽऽवेसो ॥६७॥
अणुवहयमऽच्छिसवणा-णमऽबलत्तं तहेव बहिरत्तं । परवसगत्तं च अणप्प-विक्कयं अहह थी! पेज्जं ॥६८॥
अवि य—
अंगुव्वत्त-किसत्तण-परितावुक्कंपियाणि अवणिद्दो । असई वियंभियाओ, दिट्ठीए अप्पसन्नत्तं ॥६९॥
मुच्छापलावकरतउ-व्वेवुण्हुण्हदीहनीससणं । इय पेज्जस्स जरस्स य, मणयं पि न लिंगभेओ त्थि ॥७०॥
चिंतइ अचिंतणीयं पि, तह य निच्चं असच्चमऽवि वयइ । पेच्छइ अपेच्छणीयं पि, फुसइ अफरिसणिज्जं पि ॥७१॥
भक्खइ अभक्खणीयं पि, पिबइ अपेयं अगम्ममऽवि जाइ । कुणइ अकज्जं पि नरो, पेज्जपसंगा कुलीणो वि ॥७२॥
अन्नं च—
जइ पेज्जं चिय न भवे, जीवाण विडंबणाकरं इह ता । असुइकलमलभरिए, रमेज्ज को माणुसीदेहे ॥७३॥
जं असुइं दुग्गंधं, बीभच्छ बुहजणेण परिहरियं । जो रमइ तेण मूढो, अव्वो! विरमेज्ज सो केण ॥७४॥
लज्जाकरं ति जं किर, मंगुलरूवं ठइज्जए लोए । तं चेव जस्स रम्मं, अहो! विसं महुरयं तस्स ॥७५॥
ऊससइ ससइ महिला, मउलइ नयणाइं नीसहा होइ । तं चिय कुणइ मरंती, रागिस्स तहा वि रमणिज्जा ॥७६॥
असुइ अदंसणिज्जं, मलाऽऽविलं पूइगंधि दुप्पेच्छं । अच्चंतलज्जणिज्जं, सुगोवणिज्जं अओ चेव ॥७७॥
तह असुइपवहमऽणिसं, बुहनिंदियमंऽगदेसमित्थीणं । जं सोंडीरा वि नरा, रमंति ही! रागचरियं तं ॥७८॥
एवं सरीररागा, अब्भंगुव्वट्टणाऽऽइणा तस्स । खिज्जइ न य चिंतइ जमिम-मऽसुइमेवोवचरियं पि ॥७९॥
एवं धणधन्नेसुं, सुवण्णरुप्पेसु खेत्तवत्थूसुं । दुपयचउप्पयविसए य, बद्धरागो कए ताण ॥८०॥
हिंडइ देसा देसं, पवणुद्धुयसुक्कपत्तसमचित्तो । सारीरमाणसाऽसंख-तिक्खदुक्खाइं अणुहवइ ॥८१॥
किं बहुणा भणिएणं?, जं जं जीवाण जायइ जयम्मि । दुक्खं सुतिक्खवियणं, तं तं रागफलं सव्वं ॥८२॥
जं देसचायवट्टण-निप्पीसणयं च कुंकुमस्साऽवि । जं वा मंजिट्ठाए, कंडुप्पाडाऽऽइकढणंऽतं ॥८३॥
जवणक्कंडणपायाऽऽइ-मद्दणं जं च किर कुसुंभस्स । तं दव्वओ वि रागस्स, चेव दुव्विलसियं जाण ॥८४॥
एवं तद्दारेणं, दुक्खं दुक्खेण अट्टरोद्दाइं । तेहिं च होइ देही, इहपरलोगे य दुहभागी ॥८५॥
सयलाऽसमंजसकरो, रागो च्चिय अत्थि जइ जियाणेक्को । ता पज्जत्तं संसार-हेउजालेण अवरेण ॥८६॥
रागाऽऽईहि य वत्थुं, इओ तओ साहिऊण य किलेसा । जह जह तमऽणुभवेइ, तह तह परिवड्ढइ रागो ॥८७॥
जइ बिंदूहिं भरिज्जइ, उदही तिप्पेज्ज [1]विंधणेहिं सिही । तो रागतिसापरिगय-पुरिसो वि लभेज्ज इह तित्तिं ॥८८॥
न य पुण केणाऽवि इमं, दिट्ठं व सुयं व एत्थ लोगम्मि । ता तव्विजए जत्तो, जुत्तो काउं सइ विवेगे ॥८९॥
जं जं जीवाण जयम्मि, जायए सुहमुयारमऽणुबंधि । तं तं दुज्जयरागाऽरि-विजयविप्फुरियमऽक्खंडं ॥९०॥
एयस्स पुरो रेहइ, न य दिव्वं माणुसं व वरसोक्खं । लेसेण वि उत्तमरयण-रासिणो कायमणिउ व्व ॥९१॥
इह पेज्जपावठाणग-दोसे अरिहन्नयस्स किर भज्जा । नायं तप्पडियक्खे, तद्दियरो चिय अरिहमित्तो ॥९२॥

1. विंधणेहिं = वा इंधणेहिं ।

तहाहि— "अर्हमित्रस्य दृष्टान्तः"

सिरिखिइपइट्ठियपुरे, अरहन्नयअरिहमित्तनामाणो । अवरोप्परदढपणया, निवसंति भाउणो दोन्नि ॥९३॥
जेट्ठस्स गेहिणीए, तिव्वऽणुरागाए एगसमयम्मि । अब्भत्थिओ कणिट्ठो, पडिसिद्धा तेण सा बहुसो ॥९४॥
तह वि हु उवसग्गंती, भणिया किं नियसि भाउगं न हु मे । तो तीए भत्तारो, विणासिओ अणत्थसीलाए ॥९५॥
पच्छा भणिओ एवं पि, कीस नो इच्छसि त्ति तो तेणं । तत्तो भाइविणासं, विणिच्छिउं गिहविरत्तेण ॥९६॥
गहिया जिणपव्वज्जा, साहूहिं समं च विहरिओ बहिया । इयरी अट्टवसट्टा, सुणिगा मरिऊण उप्पन्ना ॥९७॥
गामम्मि जत्थ सुणिगा, सा वट्टइ तत्थ चेव विहरंतो । समणगणेण समेओ, समागओ अरिहमित्तो वि ॥९८॥
तो पुव्वपेमवसगा, सा सुणिगा तस्स न मुयइ समीवं । उवसग्गो त्ति निसाए, ताहे नट्ठो अरिहमित्तो ॥९९॥
इयरी वि तव्विओगेण, मरिय अडवीए मक्कडी जाया । सो वि महप्पा कहमऽवि, तमेव अडविं समऽणुपत्तो॥६१००॥
दिट्ठो य मक्कडीए, लग्गा कंठम्मि पुव्वपेमेण । मोयाविओ य कहमऽवि, सेसमुणीहिं पलाणो सो ॥१॥
सा पुण तव्विरहम्मि, मरिऊणं जक्खिणी समुप्पन्ना । तच्छिड्डाइं विमग्गइ, विहरंतं तं च नीरागं ॥२॥
हसिऊण तरुणसमणा, भणंति धन्नोऽसि अरिहमित्त! तुमं । जं च पिओ सुणियाणं, वयंस! गिरिमक्कडीणं च॥३॥
एवं कयपरिहासो वि, निक्कसाओ स अवरसमयम्मि । जलपवहमऽइक्कमिउं, पसारिउं दीहरं जंघं ॥४॥
जा गंतुं आरद्धो, ता गतिभेएण लद्धछिड्डाए । पुव्वपरुट्ठाए ज-क्खिणीए से ऊरुओ छिन्नो ॥५॥
हा दुट्ठु दुट्ठु मा आउ-कायजीवा विराहिया होज्जा । एवं परिभावेंतो, अथिइं जा कुणइ सो झत्ति ॥६॥
ता सम्मदिट्ठिगाए उ, देवयाए पराजिणित्ता तं । सपएसो से ऊरू, संघडिय पुणन्नवो विहिओ ॥७॥
एवं पेज्जविवक्खे, वट्टंतो सो हु सुगतिमऽणुपत्तो । इयरी य पेज्जनडिया, विडंबणाभायणं जाया ॥८॥
इय भो देवाणुप्पिय! तुमं पि जिणवयणविमलसलिलेण । निव्वावसु पेज्जऽग्गिं, समीहियऽत्थस्स सिद्धिकए ॥९॥
दसमं पावट्ठाणग-मेवं संखेवओ पवक्खायं । दोसाऽभिहाणमेत्तो, एक्कारसमं परिकहेमि ॥१०॥

"द्वेषस्वरूपम्" —

अच्चंतकोहमाणु-ब्भवो इहं असुहआयपरिणामो । दोसो भन्नइ जम्हा, दूसिज्जइ तेण सपरजणो ॥११॥
दोसो अणत्थभवणं, दोसो भयकलहदुक्खभंडारो । दोसो कज्जविणासी, दोसो असमंजसाण निही ॥१२॥
दोसो अनिव्वुइकरो, दोसो पियमित्तदोहकारी य । सपरोभयतावकरो, दोसो दोसो गुणविणासो ॥१३॥
दोसेण चेव कलिओ, परगुणदोसे विकत्थइ पुरिसो । दोसकलुसियमणो च्चिय, आवहइ ऊणहिययत्तं ॥१४॥
ऊणहिययस्स उ परो, जं जं चेट्ठइ उ अप्पगयमेव । अप्पविसयं खु तं तं, मन्नइ मूढो किलिस्सइ य ॥१५॥
धम्मोवएसरूवं, रइठाणं पि हु परेण सीसंतं । महु[1]संभियपायसमिव, दूसइ पित्तऽद्दिओ व जडो ॥१६॥
ता जइ रइठाणं पि हु, अरइपयं होइ जस्स दोसेण । ता दोसस्स न जुत्तो, दाउमऽणज्जस्स अवयासो ॥१७॥
जे जेत्तिया य पुव्विं, भणिया दोसा हयाऽऽसदोसस्स । ते तेत्तिय च्चिय, गुणा, भवंति सुविसुद्धपसमस्स ॥१८॥
दोसदवाऽनलजोगा, दड्ढं दड्ढं समंऽबुवरिसेण । चित्तसमाहाणवणं, नियमेण पुण्णन्नवीहोइ ॥१९॥
इह दोसपावठाणा, चरणमऽसल्लं अकासि धम्मरुई । पच्छाऽऽगयसंवेगो, सो च्चिय सुद्धं तयमऽकासि ॥२०॥

तथाहि— "धर्मरुचिदृष्टान्तः"

गंगामहानईए, नंदो नावाऽहिवो बहुं लोगं । मोल्लेणं उत्तारइ, एगम्मि य अवसरे साहू ॥२१॥
बहुलद्धिसंपउत्तो, धम्मरुई नाम गंगमुत्तिन्नो । नावाए मोल्लकए, धरिओ नंदेण नइपुलिणे ॥२२॥
फिडिया भिक्खावेला, रविकरसंतत्तवेलुयाए दढं । गिम्हेण य अभिभूओ, तह वि हु तेणं अमुच्चंतो ॥२३॥
रुट्ठो दिट्ठिहुयासेणं, भासरासिं तयं करित्ता सो । अन्नत्थ गओ इयरो, सभाए घरकोइलो जाओ ॥२४॥
साहू वि विहरमाणो, भत्तं पाणं गहाय गामाओ । भोयणकरणनिमित्तं, तं चेव सभं अणुपविट्ठो ॥२५॥
दट्ठूण तं च दढपुव्व-वेरओ जायतिव्वकोवो सो । भोत्तुं आरद्धस्स उ, मुणिणो उवरि ठिओ संतो ॥२६॥
पाडिउमाऽऽरद्धो कयवरं ति, तो उज्झिऊण तं ठाणं । साहू अन्नत्थ ठिओ, तत्थ वि सो खिविउमाऽऽढत्तो॥२७॥

---
1. संभिय = संभृत = मिश्रित ।

अन्नत्थ वि एवं चिय, कयवरकरणम्मि जायकोवेण । को एस नंदकप्पो त्ति, जंपिओ धम्मरुइणा वि ॥२८॥
निद्दड्ढो सो ताहे, उप्पन्नो मयंगगंगतीरम्मि । हंसो मुणी वि तत्तो, विहरियगामाऽणुगामेण ॥२९॥
तेणेव पएसेणं, वच्चंतो कहवि दिव्वजोएणं । दिट्ठो तेणं कुविएण, तयऽणु जलभरियपक्खाहिं ॥३०॥
सिंचिउमाऽऽरद्धो अह, पयंडकोवेण साहुणा दड्ढो । मरिऊणं उववन्नो सीहो अंजणगिरिंदम्मि ॥३१॥
साहू वि सत्थसहिओ, तेण पएसेण कहऽवि वच्चंतो । दिट्ठो सीहेण तओ, उज्झियसत्थो मुणिं हंतुं ॥३२॥
सो इंतो निद्दड्ढो, मुणिणा वाणारसीए णयरीए । ताहे बडुगो जाओ, साहू वि य कहऽवि तुडिजोगा ॥३३॥
तं चेव पुरिं पत्तो, तो से भिक्खऽट्ठया पविट्ठस्स । बडुगेणं आरद्धा, धूलिक्खेवाऽऽइउवसग्गा ॥३४॥
तत्थ वि पुव्वठिईए, दड्ढो जाओ य तीए नयरीए । राया मुणी वि सुचिरं, विहरिउमऽन्नत्थ आरद्धो ॥३५॥
इयरो पुण रज्जसिरिं, अणुभुंजंतो सरित्तु नियजाइं । भयभीओ संचिंतइ, जइ सो मारेइ एत्ताहे ॥३६॥
ता होइ महाऽणत्थो, टालिज्जामि य विसिट्ठसोक्खाओ । जाणामि जइ तमऽहं, कहं पि ता लहु खमावेमि ॥३७॥
तो तन्नाणनिमित्तं, तेण नरेंदेण पुव्वभवचित्तं । रइउं सड्ढसिलोगेण, गेहबाहिम्मि उब्भवियं ॥३८॥
जहा—
"गंगाए नाविओ नंदो, सभाए घरकोइलो । हंसो मयंगतीराए, सीहो अंजणपव्वए ॥३९॥
वाणारसीए बडुओ, राया तत्थेव आगओ त्ति"
जो किर एयं पूरइ राया रज्जस्स देइ से अद्धं । आघोसियं च एवं, पुरीए तो सव्वपुरिलोगो ॥४०॥
निअमइविहवऽणुरूवेण, विरइऊणुत्तरद्धमऽणुसरइ । रायाणं नवरं नेव, तेण से पच्चओ होइ ॥४१॥
अह धम्मरुई सुचिरं, हिंडिय अन्नत्थ आगओ तत्थ . वुत्थो आरामम्मि, सुओ य आरामिओ तम्मि ॥४२॥
पुणरुत्तमुच्चरंतो, "गंगाए नाविगाऽऽइयपयाइं" । भणिओ कीस इमाइं, पुणो पुणो वाहरसि भद्द! ॥४३॥
कहिओ सव्वो वि हू तेण, वइयरो जाणिऊण परमऽत्थं । ताहे मुणिणा तस्संऽति-मऽद्धमाऽऽपूरियं एवं ॥४४॥
"एएसिं घायगो जो उ, सो एत्थेव समागतो त्ति"
अह पडिपुन्नसमस्सं, घेत्तूणाऽऽरामिओ गओ रन्नो । पासम्मि तयऽणु सिट्ठं, तओ नरेंदो भयवसट्टो ॥४५॥
मुच्छानिमीलियऽच्छो, झडत्ति वियलत्तणं समऽणुपत्तो । पहुणो अणिट्ठकारि त्ति, जायकोवेण लोगेण ॥४६॥
सो भणइ हम्ममाणो, कव्वं काउं अहं न याणामि । लोयस्स कलिकरंडो, एसो समणेण मह कहिओ ॥४७॥
खणलद्धचेयणेणं, पडिसिद्धो राइणा स हम्मंतो । पुट्ठो य केण रइयं ति, तेण सिट्ठं च मुणिण त्ति ॥४८॥
ताहे पहाणपुरिसे, पेसिय पुच्छाविओ नरिंदेण । साहू जइ अणुजाणह, ता वंदिउमऽहमुवेमि त्ति ॥४९॥
पडिवन्नम्मि मुणिणा, समागओ सावगो य संवुत्तो । धम्मरुई वि महप्पा, सरिऊणं पुव्वदुच्चरियं ॥५०॥
आलोइयपडिकंतो, दूरं निम्महिअसव्वकम्मंऽसो । उम्मूलियदोसतरू, सिवमऽयलमऽणुत्तरं पत्तो ॥५१॥
एयं नाउं तप्पसम-वारिवरिसेण पडिहयप्पसरं । पसरंतदोसदावाऽ-नलं तुमं कुणसु सप्पुरिस! ॥५२॥
एवं कए य सुंदर!, तुमं पि तिव्वयरजायसंवेगो । अंगीकयकज्जसमुद्द-पारगामी लहुं होसु ॥५३॥
एक्कारसमं एवं, निदंसियं पावठाणगं एत्तो । कलहाऽभिहाणपाव-ट्ठाणगमऽक्खेमि बारसगं ॥५४॥

"कलहस्वरूपम्" —

कोहाऽहिट्ठियजणवयण-जुज्झसरूवो भणिज्जए कलहो । सो य तणुमाणसुब्भव-असंखसोक्खाण पडिवक्खो ॥५५॥
कलहो कालुस्सकरो, कलहो वेराऽणुबंधफुडहेऊ । कलहो मित्तुत्तासी, कलहो कित्तीए खयकालो ॥५६॥
कलहो अत्थखयकरो, कलहो दालिद्दपढमपाओ य । कलहो अविवेयफलं, कलहो असमाहिसमवायो ॥५७॥
राउलगहो य कलहो, नासइ कलहाउ गिहगया वि सिरी । कलहाउ कुलप्फेडो, कलहाउ अणत्थपत्थारी ॥५८॥
कलहाओ दोहग्गं, संपज्जइ पइभवं पि दुव्विसहं । कलहाउ गलइ धम्मो, पावप्पसरो य कलहाओ ॥५९॥
कलहो सुगइगमहरो, कलहो कुगतीगमे पउणपयवी । कलहाउ हिययसोसो, पच्छा परितप्पणं कलहा ॥६०॥
कलहो वेयालो इव, लद्धप्पसरो सरीरमऽवि हणइ । कलहाओ गुणहाणी, समत्थदोसाऽऽगमो कलहा ॥६१॥
आयपरोभयहियउरु-पिढरपरिसंठियं सिणेहरसं । आवट्टिऊण तिव्वाऽ-नलोव्व कलहो खयं नेइ ॥६२॥

कलहो हि कीरमाणो, धम्मकलं हणइ तेण तन्नाम । "कलहं" ति सद्दलक्खण-वियक्खणा भिक्खुणो बिंति॥६३॥
अच्छउ ता किर अन्नो, नियमंऽगसमुब्भवो वि कलहपिओ । फोडो व्व दुव्विसहणं, तिक्खं दुक्खं जणे जणइ॥६४॥
जावइया किर दोसा, सत्थे कलहुब्भवा भणिज्जंति । तावइया चेव गुणा, तप्परिहारेण जायंति ॥६५॥
पसमवणभंगकलहं, कलहं परिभावियऊण ता धीर! । तव्विजए निव्वत्तिय-परमसुहे रम सुह निच्चं ॥६६॥
तह अप्पणोपरस्स य, न होइ कलहो जहा तहा किच्चं । अह कहऽवि उट्ठिओ तहऽवि, कुणसु तह जह न वड्ढइ सो॥६७॥
कलहो गयपोओ वि हु, पवड्ढमाणो उ होइ दुव्वारो । नाणाविहवहबंधण-निबंधणं जायए तत्तो ॥६८॥
इह कलहपावठाणग-दोसेणं दूसिओ उ हरिएसो । नियजणणीजणगाण वि, उव्वियणिज्जो दढं जाओ ॥६९॥
सो च्चिय अहिदुगवइयर-दंसणदारेण नायपरमत्थो । साहुत्तं पडिवण्णो जाओ पुज्जो सुराणं पि ॥७०॥
तहाहि— "हरिकेशीबलस्यदृष्टान्तः" —
महुराए नगरीए, संखो भूमिवई महाभागो । परिचत्तसव्वसंगो, सुगुरुसमीवम्मि पव्वइओ ॥७१॥
कालक्कमेण अहिगय-सुत्तऽत्थो सो महिं परियडंतो । तियचच्चराऽभिरामे, गजउरनगरम्मि संपत्तो ॥७२॥
भिक्खपविट्ठेण य तेण, गूढसिहिकलियपहसमीवत्थो । पुट्ठो पुरोहिओ सोम-देवनामो पहेणिमिणा ॥७३॥
किमऽहं वच्चामि ततो, हुयवहमग्गेण वच्चमाणमिमं । डज्झंतं पेच्छिस्सं ति, चिंतिउं तेण भणियमिमं ॥७४॥
वच्चसु भयवं! ति मुणी, इरिउवउत्तो य गंतुमाऽऽरद्धो । ओलोयणट्ठिओ अह, पुरोहिओ सणियसणियं तं ॥७५॥
वोलेंतं पेच्छित्ता, तेण पहेणं गओ तओ सिसिरं । तं उवलंभिय विम्हइय-माणसो इय विचिंतेइ ॥७६॥
धिद्धी! पाविट्ठो हं, जेणाऽणुट्ठियमिमं महापावं । दट्ठव्वो य महप्पा, सो जस्स तवप्पभावेण ॥७७॥
जलणाऽऽउलो वि मग्गो, झडति हिमसलिलसीयलो जाओ । विम्हयकरचरियाणं, महाऽणुभावाण किमऽसज्झं॥७८॥
एवं परिभावेंतो, गओ समीवे तवस्सिणो तस्स । नमिउं च भावसारं, णियदुच्चरियं निवेदेइ ॥७९॥
मुणिणा वि य जिणधम्मो, परुवियो वित्थरेण से महया । तं सोच्चा पडिबुद्धो, पव्वइओ सो समणधम्मं ॥८०॥
पालेइ जहाविहिणा, नवरं नो कहवि जाइमयमेसो । उज्झइ निसुणंतो वि हु, तस्स विवागं महाभीमं ॥८१॥
पज्जंते मरिऊणं, उववन्नो भासुरो सुरो सग्गे । तत्तो चुओ समाणो, तीरम्मि तियससरियाए ॥८२॥
जाइमयाऽवलेवा, मायंगकुले सुओ समुप्पन्नो । बलनामो गयरुवो, नियबंधूणं पि हसणिज्जो ॥८३॥
अच्चंतकलहकारी, उव्वियणिज्जो महापिसाउ व्व । दोसेहि य देहेण य, कमेण वुड्ढिं समऽणुपत्तो ॥८४॥
पत्ते य वसंतमहे, पाणपणच्चणपराण सयणाणं । मज्झाओ निच्छूढो, कुणमाणो भंडणं सो य ॥८५॥
परमविसाओवगओ, पासठिओ पवरविविहकीलाहिं । अभिरममाणो सयणे, पेच्छंतो अच्छए जाव ॥८६॥
ताव मसिमेहसामो, समागओ गयकरोवमो सप्पो । तत्थ पएसे वावा-इओ य लोगेण मिलिऊण ॥८७॥
अह खणमेत्तम्मि गए, तहेव अवरो समागओ सप्पो । नवरमऽविसो त्ति काउं, केणऽवि वावाइओ नेव ॥८८॥
एयं च पेच्छिऊणं, बलेण परिचिंतियं धुवं सव्वो । असुहसुहं लभइ फलं, नियदोसगुणोचियं तम्हा ॥८९॥
"भद्दगेणेव होयव्वं, पावइ भद्दाणि भद्दओ । सविसो हम्मइ सप्पो, निव्विसो तत्थ मुच्चइ" ॥९०॥
किं चोज्जं दोसपरा, पराभविज्जंति जं निएहिं पि । ता उज्झिऊण दोसे, इण्हिं पि गुणे पयासेमि ॥९१॥
एवं भावेमाणो, धम्मं सोऊण साहुमूलम्मि । भववासादुव्विग्गो, मायंगमहामुणी जाओ ॥९२॥
छट्ठऽट्ठमदसमदुवालसऽद्ध-मासाऽऽइविविहतवनिरओ । विहरंतो स महप्पा, पत्तो वाणारसिपुरीए ॥९३॥
गंडीतिंदुगजक्खस्स, मंदिरे तिंदुगम्मि उज्जाणे । वुत्थो य तं च जक्खो, भत्तीओ पज्जुवासेइ ॥९४॥
अन्नम्मि य पत्थावे, उज्जाणंऽतरनिवासिजक्खेण । आगंतूणं गंडी-तिंदुगजक्खो इमं वुत्तो ॥९५॥
हे भाय! किन्न दीससि, तेणं भणियं इमं मुणिवरिट्ठं । नीसेसगुणाऽऽहारं, निच्चं चिट्ठामि थुणमाणो ॥९६॥
दट्ठुं मुणिस्स चेट्ठं, परितुट्ठो सो वि तिंदुगं भणइ । तं चिय मित्त! कयत्थो, जस्स वणे वसइ एस मुणी॥९७॥
मज्झ वि वसंति मुणिणो, उज्जाणे ता खणं तुमं एहिं । गंतुं समगं ते वि हु, वंदामो तो गया दो वि ॥९८॥
दिट्ठा य तेहिं मुणिणो, कहवि पमायाउ विकहकरणरया । ताहे गाढयरागं, अणुरत्ता तम्मि ते जक्खा ॥९९॥
अह निच्चं पि य भावेण, वंदमाणस्स पूयपावस्स । तं मुणिवसहं जक्खस्स, परमसोक्खेण जंति दिणा ॥६२००॥

एगम्मि य पत्थावे, कोसलियमहीवइस्स भद्द त्ति । धूया बहुविहफलफुल्ल-पडलकरकिंकराऽणुगया ॥१॥
आगंतूणं जक्खस्स, पडिमम्मऽच्चेइ परमभत्तीए । तं अच्चिऊण देंती, पयाहिणं मलविलित्ततणुं ॥२॥
कालविगरालरूवं, लायन्नविवज्जियं तवक्किसियं । मायंगमुणिं पेच्छइ, काउस्सग्गेण वट्टंतं ॥३॥
तो निच्छूढमऽणाए, मूढत्तणओ लहुं च कुद्धेण । मुणिनिंदाकरणाओ, जक्खेण अहिट्ठिया सा य ॥४॥
असमंजसाइं बहुसो, पलवंती कहवि रायभवणम्मि । नीया नरवइणाऽवि हु, अच्चंतविसन्नचित्तेण ॥५॥
बहुमंततंतपरमत्थ-वेइणो वाहराविया पुरिसा । विज्जा वि य तेहिं कया, चउप्पयारा वि से किरिया ॥६॥
अकयप्पडियारेसु य, वेज्जाऽऽइसु उवरएसु सो जक्खो । जंपइ पत्तम्मि ठिओ, एयाए निंदिओ साहू ॥७॥
ता जइ एयं तस्सेव, देह मुंचामि नऽन्नहा मोक्खो । जह तह जियउ वराइ त्ति, राइणा पडिसुयमिमं पि ॥८॥
अह सा पगुणसरीरा, सव्वाऽलंकारभूसिया घेत्तुं । वीवाहजोग्गमुवगरण-माऽऽगया भूरिरिद्धीए ॥९॥
चलणेसु निवडिऊणं, भणइ मुणिं कुण पसायमिह भगवं! । मज्झं सयंवराए, गिण्हेसु करं करेणं ति ॥१०॥
मुणिणा वुत्तं इत्थीहिं, जे समं जंपिउं पि नेच्छंति । ते कह निययकरेहिं, रमणीण करे गहिस्संति ॥११॥
सिद्धिवहुबद्धरागा, दुग्गइमूलासु कह णु जुवईसु । रज्जंति महामुणिणो, गेवेज्जनिवासितियस व्व ॥१२॥
अह तिव्वाऽमरिसेणं, जक्खेणऽच्छाइऊण मुणिरूवं । उव्वूढा [1]वेलविया य, सव्वरयणिं पि सा तेण ॥१३॥
सुमिणं व मन्नमाणी, पभायसमयम्मि सोगविहुरंऽगी । पिउणो गया समीवं, सिट्ठो सव्वो य वुत्तंतो ॥१४॥
[2]आदन्नो नरनाहो, मुणियसरूवेण । उवरोहिएण भणियं, देव! इमा साहुणो पत्ती ॥१५॥
तेण विमुक्का कप्पइ, पणामिउं तुम्ह बंभणाणं ति । पडिवन्नमिमं रन्ना, दिन्ना तस्सेव सा तत्तो ॥१६॥
अह सो तीए सद्धिं, विसयनिसेवणपरो गमइ कालं । अन्नम्मि य पत्थावे, जन्नो तेणं समारद्धो ॥१७॥
तत्थाऽऽगया य बहवे, वेयऽत्थवियक्खणा उवज्झाया । बहुभट्टचट्टचडयर-सहिया देसंतरेहिंतो ॥१८॥
अह सो मायंगमुणी, भिक्खट्ठकए तत्थ जन्नवाडम्मि । सिद्धबहुभेयभत्ते, समागओ मासपारणए ॥१९॥
तं च तवकिसियकायं, पंतोवहियं मलीमसं लुक्खं । दट्ठूण धम्मदुट्ठा, बहुप्पयारं पहसमाणा ॥२०॥
जंपेन्ति भट्टवट्टा!, कीस तुमं एत्थ आगओ पाव! । इन्हिं चिय एयाओ, थामाओ लहुं विणिस्सरसु ॥२१॥
एत्थंतरम्मि जक्खो, रिसिणो देहम्मि पविसिकं भणइ । भिक्खात्थमागतो हं, तत्तो विप्पेहिं पडिभणियं ॥२२॥
जाव दिएहिं न भुत्तो, पढमं जलणम्मि जाव न वि छूढो । ताव न दिज्जइ एसो, सुद्दाणं वच्च तं समण! ॥२३॥
जह कालम्मि सुखेत्ते, विहिणा बीयं सुवावियं फलयं । जायइ तह पिइबंभण-जलणम्मि णिवेसियं दाणं ॥२४॥
अह मुणिणा ते भणिणा, जाइमित्तेण होंति नो विप्पा । तुम्हारिस व्व पाया, हिंसाऽलियमेहुणाऽऽसत्ता ॥२५॥
जलणो वि पावहेऊ, कह तम्मि निवेसियं सुहं कुणउ । पिउणो वि परभवगया, इह दिन्नं कह णु गिण्हंतु ॥२६॥
[3]नच्चा य पडिकुद्धो त्ति, जायकोवा तओ मुणिं हन्तुं । दंडकसालेट्ठुकरा, सव्वत्तो धाविया विप्पा ॥२७॥
छिन्नतरुणो व्व ताणं, निवाडिया केवि तत्थ जक्खेण । अन्ने पहरेहिं हया, अन्ने पुण वामिया रुहिरं ॥२८॥
एवंविहं अवत्थं, संपत्ते पेच्छिऊण ते सव्वे । भयवेवमाणहियया, भद्दा भणिउं समाढत्ता ॥२९॥
एसो सो जेण तया, सयंवरा उवणया अहं चत्ता । जो सिद्धिवहूरत्तो, नेच्छइ सुरसुंदरीओ वि ॥३०॥
अइघोरतवपरक्कम-वसीकयाऽसेसतिरियनरदेवो । तेलोक्कपणयचलणो, नाणाविहलद्धिसंपन्नो ॥३१॥
जियकोहमाणमाओ, जियलोहपरीसहो महासत्तो । सूरो व्व दूरपसरंत-पावतमनियरनिद्दलणो ॥३२॥
जलणो व्व दहइ भुवणं, कुविओ तं चेव रक्खए तुट्ठो । ता एयं तज्जिंता वच्चिस्सह मच्चुवयणम्मि ॥३३॥
चलणेसु निवडिऊणं, एयं तोसेह महरिसिं तम्हा । इय सुणिय रुद्ददेवो, सभारिओ भणिउमाऽऽढत्तो ॥३४॥
रागाऽऽइएहि जं भे अवरद्धं तं खमाहि [4]णे भयवं । पणिवइयवच्छल च्चिय, भवंति लोगम्मि वरमुणिणो ॥३५॥
अह ते मुणिणा, संसारनिबंधणस्स कोवस्स । को अवगासं देज्जा, विसेसओ मुणियजिणवयणो ॥३६॥
नवरं मम भत्तिपरायणस्स, जक्खस्स विलसियं एयं । ता तं चेव पसायह, कुसलत्तं पाउणह जेण ॥३७॥
ताहे बहुप्पयारेहिं, जक्खमुवसामिऊण भत्तीए । साहुं हरिसवसुग्गय-रोमंचा माहणा सव्वे ॥३८॥

1. वेलविया = वञ्चिता = विडम्बिता इत्यर्थः । 2. आदन्नो = व्याकुलीभूतः । 3. उज्झा पाठां० (बुद्ध्वा) । 4. अस्माकम् ।

पडिलाभिंति तेहिं, सनिमित्तोवक्खडेहिं भत्तेहिं । जक्खेण य तुट्ठेणं, खित्ता गयणाउ वसुहारा ॥३९॥
गंधोदयं च वुट्ठं, भमराऽऽउलपुप्फनियरसंवलियं । कलहच्चागेणेवं, सो जाओ देवपुज्जो त्ति ॥४०॥
कलहे तच्चागम्मि य, इय दोसगुणे विभाविउं सम्मं । तह कहवि खमग! वट्टसु, जह सिज्झइ पत्थुयऽत्थो ते॥४१॥
पावट्ठाणगमेवं, बारसमं पि हु पवन्नियं किंपि । अब्भक्खाणऽभिहाणं, एत्तो कित्तेमि तेरसमं ॥४२॥

"अभ्याख्यानस्वरूपम्" —

पाएणं पच्चक्खं, उद्दिस्स परं असंतदोसाणं । आरोवणं जमेत्थं, अब्भक्खाणं तयं बेंति ॥४३॥
एयं अब्भक्खाणं, सपरोभयदुट्ठचित्तसंजणगं । तप्परिणओ य पुरिसो, किं किं पावं न अज्जेइ ॥४४॥
तज्जंपणे य जे कोह-कलहप्पमुहेसु वन्निया केवि । इहपरभवुब्भवा ते, दोसा सव्वे वि जायंति ॥४५॥
जइवि किर परमथोयं, पावमऽभक्खाणदाणयं तहवि । देइ दसगुणविवागं, सव्वन्नूहिं जओ भणियं ॥४६॥
"वहबंधणअब्भक्खाण-दाणपरधणविलोवणाऽऽईणं । सव्वजहन्नो उदओ, दसगुणिओ एक्कसि कयाणं" ॥४७॥
"तव्वयरे उ पओसे, सयगुणितो सयसहस्सकोडिगुणो । कोडाकोडिगुणो वा, होज्ज विवागो बहुतरो वा ॥४८॥
तहा—
सव्वेसिं सोक्खाणं, निरासकरणम्मि सुपडिवक्खाणं । गणणाए असंखाणं, कुओ वि नो भाविरक्खाणं ॥४९॥
अच्चंतं तिक्खाणं, हिययदरीदारणेक्कदक्खाणं । एयं अब्भक्खाणं, निबंधणं सव्वदुक्खाणं ॥५०॥
एयविरत्ताणं पुण, इहपरभवभाविभल्लिमा सव्वा । अप्पवस च्चिय निच्चं, जहिच्छियरा जायइ जयम्मि ॥५१॥
रुद्दो व्व अजसमऽसमं, पावइ तेरसमपावठाणाओ । अंगरिसी विव तव्विरय-माणसो लभइ कल्लाणं ॥५२॥
तहाहि— "अङ्गर्षेदृष्टान्तः"
चंपाए नगरीए, अज्झावगकोसियज्जपासम्मि । अंगरिसी रुद्दो वि य, धम्मेण पढंति दो सीसा ॥५३॥
आणत्ताऽणज्झाए, ते पुण तेणं अरे उवणमेह । एक्केक[1]कट्ठहारग-मऽडवीहिंतो लहुं अज्ज ॥५४॥
पयईए च्चिय सरलो, तहत्ति पडिवज्जिऊण अंगरिसी । अडवीए कट्ठाणं, आणयणट्ठा गओ तुरियं ॥५५॥
रुद्दो य दुट्ठसीलो, गेहाउ नीहरित्तु डिंभेहिं । सह कीलिउमाऽऽरद्धो, जाए य विगालसमयम्मि ॥५६॥
चलिओ अडवीहुत्तं, दूरे दिट्ठो य गहियकट्ठभरो । इंतो सो अंगरिसी, अविहियकज्जो त्ति तो भीओ ॥५७॥
तद्देसगामिणिं कट्ठ-हारिणिं मारिऊण जोइजसं । थेरिं तक्कट्ठभरं, घेत्तूणं तं च गत्ताए ॥५८॥
पक्खिविऊणं सिग्घं, समागओ भणइ कवडसीलो सो । उज्झाय! सज्झसकरं, चरियं तुह धम्मसीसस्स ॥५९॥
अज्ज समत्थं पि दिणं, रमिउं इण्हिं च मारिउं थेरिं । तक्कट्ठभरं घेत्तुं, जवेण सो एइ अंगरिसी ॥६०॥
जइ पत्तियह न तुब्भे, आगच्छह ता जहा निदंसेमि । जमऽवत्थं उवणीया, जहिं च खित्ता य सा थेरी ॥६१॥
एवं भणमाणम्मि, कट्ठभरं घेत्तुमाऽऽगओ झत्ति । अंगरिसी कुद्धेणं, भणितो अज्झावगेण तओ ॥६२॥
आ पाव! अकिच्चमिमं, काउं अज्ज वि तुमं गिहे एसि । अवसर दिट्ठिपहाओ, पज्जत्तं तुज्झ पाढेण ॥६३॥
वज्जवडणं व दुस्सह-मऽब्भक्खाणं इमं च सुणिऊण । परमविसायमुवगतो, संचिंतिउमेवमाऽऽढत्तो ॥६४॥
आ पावजीव! पुव्वब्भवम्मि, एवंविहं कयं कम्मं । किंपि तए तेणेमं, दुव्विसहं वसणमाऽऽवडियं ॥६५॥
इय संवेगोवगतो, सरिउं चिरभवसुचिण्णसामन्नं । सुहझाणहणियकम्मो, सो केवललच्छिमऽणुपत्तो ॥६६॥
महिओ देवनरेहि य, रुद्दो पुण तेहिं चेव सव्वत्थ । पावो त्ति खिंसिओ बहु, तह अब्भक्खाणदाइ त्ति ॥६७॥
इय सोऊणं तुममऽवि, अब्भक्खाणाउ विरम भो खमग! जेणीहियगुणसाहण-हेउसमाहिं लहुं लहसि ॥६८॥
तेरसमपावठाणग-मुवइट्ठं लेसओ इमं ताव । अरइरइनामधेयं, एत्तो दंसेमि चोद्दसमं ॥६९॥

"अरइरइस्वरूपम्" —

अरइरईहिं दोहिं वि, एक्कं चिय बिंति पावठाणं जं । विसओवयारवसओ, अरई वि रई रई [2]वरई ॥७०॥
जह निप्पम्हदिसाए, पावारे पाउयम्मि जा अरई । स च्चिय पम्हदिसाए, तप्पाउरणे रई होइ ॥७१॥
तह पम्हिल्लदिसाए, पावारे पाउयम्मि जा य रई । स च्चिय इयरदिसाए, तप्पाउरणे भवे अरई ॥७२॥

1. काष्ठभारकम् । २. वरई - वि + अरई (इस प्रकार से संधि निकाले)

जह य असंपत्तीए, पत्थुयवत्थुस्स होइ जा अरई । स च्चिय रइत्तणेणं, तस्संपत्तीए परिणमइ ॥७३॥
तह जा संपत्तीए, पत्थुयवत्थुस्स होइ एत्थ रती । अरइत्तणेण स च्चिय, तस्स विवत्तीए परिणमइ ॥७४॥
अहवा बज्झनिमित्तं, विणा वि किर अरतिमोहकम्मुदया । देहे च्चिय जा जायइ, अणागयाऽणिट्ठसूयणिया ॥७५॥
सा अरई तव्वसओ, अलसो विहलंघलो विगयसन्नो । इहपरलोयपओयण-पसाहणेसुं पमायंतो ॥७६॥
उच्छाहिओ वि उच्छहइ, नेय किच्चम्मि कम्मि वि कयाइ । छगलगलत्थणसरिसं स, तारिसो जियइ जियलोए ॥७७॥
तह रइपसत्तचित्तो, कहिं वि तत्तो नियत्तिउमऽसत्तो । चिक्खल्लखुत्तजरगोण-उ व्व रतिमोहकम्मवसा ॥७८॥
कज्जमिहलोइयं पि हु, न कुणइ पारत्तियं पुण- कहं य । अच्चंतपयत्तपउत्त-चित्तनिव्वत्तणिज्जं जं ॥७९॥
एवं अरइरईऊ, भवभावनिबंधणं वियाणित्ता । मा तासिं अवगासं, खणं पि दाहिसि तुमं अहवा ॥८०॥
अरइं पि कुणसु अस्सं-जमम्मि संजमगुणेसु य रइं पि । एवं च पकुव्वंतो, लहिहिसि आराहणं पि धुवं ॥८१॥
किं बहुणा भणिएणं, अरइरइं भवनिबंधणं धुणिउं । काउमऽधम्मे अरइं, धम्माऽऽरामे रतिं कुणसु ॥८२॥
समभावपरिणईए, इट्ठाऽणिट्ठविसएसु जइ तुज्झ । धीर! न रई न अरई, ता तुममाऽऽराहणं लहसि ॥८३॥
धम्माऽहम्मे अरई-रईओ, पुरिसं करंति जणसोच्चं । खुड्डगकुमारमुणिमिव, संजमभरधरणपरितंतं ॥८४॥
सम्मं असंजमे संज-मे य अरईरईहिं पुण होज्जा । सो च्चिय पच्चागयचेय-णो जह तह जणे पुज्जो ॥८५॥
तहाहि—

"क्षुल्लककुमारमुनिदृष्टान्तः"

साकेयम्मि पुरवरे, पुंडरीओ नाम भूवई तस्स । कंडरीओ लहुभाया, जसभद्दा नाम से भज्जा ॥८६॥
अच्चं तमणहरंऽगी, चंकम्मंती घरंऽगणे सा य । दिट्ठा पुंडरीएणं, अज्झुववन्नेण अह तेणं ॥८७॥
दूई विसज्जिया लज्जि-रीए तीए य सा पडिनिसिद्धा । अच्चंतं निब्बंधे य, राइणो तीए पडिभणियं ॥८८॥
किं न लहुभाइणो वि हु, तं लज्जसि जेण उल्लवसि एवं । पच्छन्नो कंडरीओ, तयणु विणासाविओ रन्ना ॥८९॥
[1]अब्भत्थिया पुणो वि हु, ताहे सा सीलखंडणभएण । नियगाऽऽभरणाणि लहुं, गहाय गेहाओ नीहरिया ॥९०॥
सत्थेण समं एगागिणी वि, पडिवन्नजणगभावस्स । थेरवणियस्स निस्साए, नयरिं सावत्थिमऽणुपत्ता ॥९१॥
जियसेणसूरिसिस्सिणि-कित्तिमईमयहरीसमीवे य । चंदणवडियाए गया, कहिओ सव्वो य वुत्तंतो ॥९२॥
संबुद्धा पव्वइया, [2]हुंतो वि न साहिओ तीए गब्भो । मयहरियाए मज्झं, मा पव्वज्जं न दाहि त्ति ॥९३॥
कालक्कमेण वुड्ढिं, गयम्मि गब्भम्मि मयहरीए सा । पुट्ठा एगंतम्मि कारणमऽवि तीए परिकहियं ॥९४॥
पच्छा पच्छन्न च्चिय, ता धरिया जा सुयं पसूया सा । सड्ढकुलम्मि संवड्ढि-ओ य सो जाय पव्वइओ ॥९५॥
सूरिस्स समीवम्मि, कयं च से नाम खुड्डगकुमारो । सिक्खविओ य समग्गं, जईण जोग्गं समायारं ॥९६॥
अह जोव्वणमऽणुपत्तो, संजममऽणुपालिउं अचाइंतो । पडिभग्गो जणणिं सो, पुच्छइ उन्निक्खमणहेउं ॥९७॥
पडिसिद्धो जणणीए, बहुप्पयारेहिं तहवि नो ठाइ । पच्छा तीए भणिओ, पुत्तय! मज्झोवरोहेण ॥९८॥
पडिवालसु बारस वच्छराइं, एवं ति तेण पडियण्णं । तेसु य अइक्कंतेसु, पट्ठिओ तीए पुण भणिओ ॥९९॥
मह गुरुणिं आपुच्छसु, आपुट्ठाए य तीए वि य धरिओ । तेत्तियमेत्तं कालं, आयरिएणाऽवि एमेव ॥६३००॥
एवं उज्झाएण वि, अडयालीसं गयाणि वरिसाणि । तह वि हु अठायमाणो, उवेहिओ णवरि जणणीए ॥१॥
पिउनामंऽका मुद्दा, कंबलरयणं च पुव्वसंठवियं । तस्सऽप्पिऊण सिट्ठं, मा पुत्तय! तत्थ तत्थेव ॥२॥
वच्चिहिसि किंतु पुंडरीय-भूवइ होइ ते महल्लपिया । पिउणामंऽकं मुद्दं, दरिसेज्जासि य तस्स इमं ॥३॥
जेणं स तुज्झ रज्जं, परियाणित्ता पणामइ अवस्सं । एवं ति पवज्जित्ता, विणिग्गओ खुड्डगकुमारो ॥४॥
कालक्कमेण पत्तो, साकेयपुरम्मि राइणो गेहे । तव्वेलं पुण वट्टइ, पेच्छणयं अच्छरियभूयं ॥५॥
कल्ले पेच्छिस्सं भू-वइं ति संचिंतिऊण तत्थेव । आसीणो नट्टविहिं, एगग्गो दट्ठुमाऽऽरद्धो ॥६॥
तत्थ य सव्वंपि निसं, पणच्चिउं नट्टिया परिस्संता । ईसिं निद्दायंती, जणणीए पभायसमयम्मि ॥७॥
विविहकरणप्पओगाऽ-भिरामसंजायरंगभंगभया । गीईगाणमिसेणं, सहस च्चिय बोहि'या एवं ॥८॥
"सुट्ठु गाइयं सुट्ठु वाइयं, सुट्ठु नच्चियं सामसुंदरि! । अणुपालिय दीहराइयाउ, सुमिणंऽते मा पमायए" ॥९॥

1. आपुच्छिया पाठां० । 2. विज्जंतो वि हु न साहिओ गब्भो पाठां० ।

सोच्चेमं चेल्लेणं, कंबलरयणं पणामियं तीए । कुंडलरयणं नरवइ-सुएण तह सत्थवाहीए ॥१०॥
सिरिकंताए हारो, कडगो जयसंधिणा अमच्चेण । रयणंऽकुसो य मिंठेण, लक्खमुल्लाइं सव्वाइं ॥११॥
अह भावजाणणट्ठा, रन्ना पढमं पि खुड्डगो भणिओ । कीस तए दिन्नमिमं ति, तेण तो सव्ववुत्तंतो ॥१२॥
मूलाउ च्चिय कहिओ, ता जाव समागओ म्हि रज्जकए । गीइं इमं निसामिय, संबुद्धो विगयविसइच्छो ॥१३॥
पव्वज्जाथिरचित्तो, जाओ म्हि अओ इमीए गुरुणो त्ति । कंबलरयणं दिण्णं, पच्चभिजाणित्तु तं च निवो ॥१४॥
जंपेइ वच्छ! गेण्हसु, रज्जमिमं चेल्लएण पडिभाणियं । आउयसेसम्मि किं, चिरसंजमविहलणेणिण्हिं ॥१५॥
अह नियपुत्तप्पमुहा, भणिया रन्ना कहेह तुम्हाणं । दाणम्मि कारणं किं, तो वुत्तं रायपुत्तेण ॥१६॥
ताय! तुमं वावाइय, रज्जमऽहं गिण्हिउं समीहंतो । गीइयमेयं च निसा-मिऊण रज्जाउ विणियत्तो ॥१७॥
तह सत्थाहीए वि हु, भणियं पइणो ममं पउत्थस्स । वोक्कंताइं बारस, वरिसाइं अहं च चिंतेमि ॥१८॥
अवरं पइं करेमि त्ति, तस्स आसाए किं किलिस्सामि । सिट्ठमऽमच्चेण तओ, देव अहं अन्नराईहिं ॥१९॥
[1]संधिं घडामि किं वा, न य त्ति पुव्वं इमं विचिंतंतो । मिंठेणाऽवि य भणियं, अहं पि सीमालराईहिं ॥२०॥
आणेहि पट्टहत्थिं, अहवा मारेहि इइ बहुं वुत्तो । संसयदोलाचलचित्त-वित्तिओ संठिओ य चिरं ॥२१॥
अह तेसिमऽभिप्पायं, जाणिय तुट्ठेण पुंडरीयरन्ना । दिन्नाऽणुन्ना जं भे, पडिहासइ तं करेह त्ति ॥२२॥
एवंविहं अकिच्चं, काउं केवच्चिरं वयं कालं । जीविस्सामो त्ति पयं-पिऊण संजायवेरग्गा ॥२३॥
खुड्डगकुमारमूले, सव्वे वि य तक्खणेण पव्वइया । तेहिं च सह महप्पा, विहरइ सो सयलजणपुज्जो ॥२४॥
इय एयनिदंसणओ, अस्संजमसंजमे पडुच्च तुमं । अरइरईओ वि करेसु, खमग! मणवंछियऽत्थकए ॥२५॥
चोद्दसमपावठाणग-मेवं लेसेण साहिउं एत्तो । पेसुन्ननामधेयं, पन्नरसमं पि हु परिकहेमि ॥२६॥

"पैशुन्यस्वरूपम्" —

पच्छन्नं चिय जमऽसंत-संतपरदोसपयडणसरूवं । पिसुणस्स कम्ममिह तं, भन्नइ लोगम्मि पेसुन्नं ॥२७॥
एयं च मोहमूढो, कुणमाणो सुकुलसंपसूओ वि । चाई वि मुणी वि जणे, कित्तिज्जइ एस पिसुणो त्ति ॥२८॥
तहा—
ता मित्तं सुहचित्तं, ताव च्चिय इह नराण मेत्ती वि । थेवं पि अंतराले, जाव न संचरइ हयपिसुणो ॥२९॥
पेसुन्नतिक्खतरपरसु-हत्थओ अहह पिसुणलोहारो । दारेइ च्चिय निच्चं, पुरिसाणं पेमदारूणि ॥३०॥
बाढं बीहावणओ, लोयाणं दारुणो पिसुणसुणओ । जो पट्ठीए भसंतो, खणेइ कन्ने अनिव्विन्नो ॥३१॥
अहवुज्जलवेसे पाडि-वेसिए सामिए परिचिए य । दाणपरे य न सुणओ, भसइ वराओ जहा पिसुणो ॥३२॥
सज्जणसंजोगम्मि वि, गुणो न पिसुणस्स जायए अहवा । ससिमंडलमज्झपरि-ठिओ वि कलुसो च्चिय कुरंगो ॥३३॥
जइ इह पेसुन्नं चिय, ता किं अन्नेण दोसजालेण । एयं चिय एक्कं उभय-लोगविहलत्तणं काही ॥३४॥
कीरइ पडुच्च जमिमं, तदऽणत्थुप्पायणे अणेगंतो । पेसुण्णकारिणो पुण, पओसभावा धुवोऽणत्थो ॥३५॥
माइत्तमऽसच्चत्तं, निस्सूगत्तं च दुज्जणत्तं च । निद्धम्मत्ताऽऽई वि य, दोसा पेसुन्नओ विविहा ॥३६॥
वरमुत्तमंऽगछेओ, परस्स विहिओ न चेव पेसुन्नं । जं न तह दुही पढमे, मणऽग्गिदाणं तु सइ इयरे ॥३७॥
न य पेसुन्नाउ परं, पावं विहिएण जेण आजम्मं । विसदिद्धसेल्लभल्ली-सल्लियदेहो व्व जियइ परो ॥३८॥
किं सामिघायगो गुरु-विणासगो हीणचिट्ठिओ अहवा । पेसुन्नकरो न हि न हि, इमाण अन्नो अहम्मयरो ॥३९॥
पेसुन्नगदोसेणं, सुबंधुसचिवो विडंबणं पत्तो । तदऽकरणेणं तदुवरि, चाणक्को पुण गतो सुगतिं ॥४०॥
तहाहि—

"सुबन्धुसचिवचाणक्ययोःदृष्टान्तः"

पाडलिपुत्ते नयरे, मोरियकुलसंभवो अहेसि निवो । नामेण बिंदुसारो, तस्स सुमंती य चाणक्को ॥४१॥
जिणधम्मनिरयचित्तो, उप्पत्तियपमुहबुद्धिसंपन्नो । सासणपभावणऽब्भु-ज्जओ य सो गमइ दियहाइं ॥४२॥
पुव्वुच्छाइयनिवनंद-मंतिणा एगया य तच्छिद्दं । पावित्ता नरवइणो, सुबंधुनामेण भणियमिणं ॥४३॥
देव! न जइ वि हु तुब्भे, पसायसवियासचक्खुणा वि ममं । पेच्छह तहा वि तुब्भं, हियमेवऽम्हेहिं वत्तव्वं ॥४४॥

1. सद्धिं पाठां० ।

तुब्भं जणणी चाणक्क-मंतिणा फालिऊण फुडमुयरं । पंचत्तं उवणीया, ता भे एत्तो वि को वेरी ॥४५॥
एवं सोच्चा कुविएण, राइणा पुच्छिया नियगधावी । तीए वि तहा कहियं, मूलाउ न कारणं सिट्ठं ॥४६॥
पत्थावे चाणक्को, समागओ भूवई वि तं दट्ठुं । भालयलरइयभिउडी, झडिति विपरंमुहो जाओ ॥४७॥
अहह! कहं गयजीओ त्ति, परिभवं मह करेइ एस निवो । परिभाविऊण एवं, चाणक्को नियगिहम्मि गओ ॥४८॥
दाऊण गेहसारं, पुत्तपोत्ताऽऽइसयणवग्गस्स । निउणमईए विभावइ, मह पयसंपत्तिवंछाए ॥४९॥
केण वि पिसुणेण इमो, मन्ने राया पकोविओ एवं । ता तह करेमि जह सो, दुक्खाऽभिहओ चिरं जियइ॥५०॥
ता पवरगंधबंधुर-जुत्तिपओगेण साहिया वासा । खित्ता समुग्गयम्मि, लिहियं भुज्जम्मि तह एयं ॥५१॥
जो एए वरवासे, जिंघित्ता इंदियाण अणुकूले । विसए निसेवइस्सइ, सो वच्चिस्सइ जमधरम्मि ॥५२॥
वरवत्थाऽऽभरणविलेव-णाइं तूलीउ दिव्वमल्लाइं । ण्हाणं सिंगारे वि हु, जो काही सो वि लहु मरिही॥५३॥
इय वाससरूवपरूव-णापरं भुज्जयं पि वासंतो । पक्खिविऊण समुग्गो, ठविओ मंजूसमज्झम्मि ॥५४॥
सा वि हु पवरोवरए, जडिउं पउराहिं किलियाहिं दढं । पम्मुक्को तालित्ता, तस्स कवाडाइं निबिडाइं ॥५५॥
खामित्ता सयणजणं, जिणिंदधम्मे नियोजिऊणं च । रन्नेऽणाउलठाणे, इंगिणीमरणं पवन्नो सो ॥५६॥
जाणियपरमत्थाए, अह धावीए नराऽहिवो वुत्तो । पिउणो वि हु अब्भहिओ, चाणक्को कीस परिभूओ ॥५७॥
रन्ना भणियं जणणी-विणासगो एस तीए तो भणियं । जइ तं न विणासंतो, एसो ता तुमऽवि नो हुंतो ॥५८॥
जम्हा तुह पिउविसभावियऽन्न-कवलं गहाय भुंजंती । पइ गब्भठिए देवी, विसविहुरा मरणमऽणुपत्ता ॥५९॥
तम्मरणं च पलोइय, चाणक्केणं महाऽणुभावेणं उयरं वियारिऊणं, छुरियाए तुमं विणिच्छूढो ॥६०॥
तह तुह नीहरियस्स वि, विसबिंदू जो सिरम्मि संलग्गो । मसिवन्नो तेण तुमं, निव! वुच्चसि बिंदुसारो त्ति ॥६१॥
एवं सोच्चा राया, परमं संतावमुवगओ संतो । सव्वविभूईए गतो, सहसा चाणक्कपासम्मि ॥६२॥
दिट्ठो य सो महप्पा, करीसमज्झट्ठिओ विगयसंगो । सव्वाऽऽयरेण रन्ना, पणमित्ता खामिओ बहुसो ॥६३॥
भणिओ य एहि नगरं, रज्जं चिंतेहि तेण तो वुत्तं । पडिवन्नाऽणसणो हं, विमुक्कसंगो य वट्टामि ॥६४॥
न य नाऊण वि सिट्ठं, सुबंधुदुव्विलसियं तया रन्नो । चाणक्केणं पेसुन्न-कडुयविवागं मुणंतेण ॥६५॥
अह भालयलाऽऽरोविय-करेण राया सुबंधुणा भणिओ । अणुजाणह देव! ममं, जह भत्तिमिमस्स पकरेमि ॥६६॥
अणुजाणिएण य तओ, सुबंधुणा खुद्दबुद्धिणा य धुवं । दहिऊण तदंऽगारो, करीसमज्झम्मि पक्खित्तो ॥६७॥
सट्ठाणगए य नराऽ-हिवाऽऽइलोगम्मि सुद्धलेसाए । वट्टंतो चाणक्को, तेण करीसऽग्गिणा दड्ढो ॥६८॥
उववन्नो सुरलोए, भासुरबोंदी महिड्ढिओ देवो । सो पुण सुबंधुसचिवो, तम्मरणाऽऽणंदिओ संतो ॥६९॥
अवसरपत्थियपत्थिव-विदिन्नचाणक्कमंदिरम्मि गओ । पेच्छइ गंधोवरयं, घट्टियनिविडुब्भडकवाडं ॥७०॥
इह सव्वमऽत्थसारं, लहिहं ति कवाडविहडणं काउं । निच्छूढा मंजूसा, ता जावऽग्घाइया वासा ॥७१॥
दिट्ठं च भुज्जलिहियं, तस्सऽत्थो वि य वियाणिओ सम्मं । तो पच्चयत्थमेक्को, वासे अग्घाविओ पुरिसो ॥७२॥
भुंजाविओ य विसए, गओ य सो तक्खणेण पंचत्तं । एवं विसिट्ठवत्थूसु, सेसेसु वि पच्चओ विहिओ ॥७३॥
हा! तेण मएण वि मारि-ओ म्हि इइ परमदुक्खसंतत्तो । जीयऽट्ठी स वरागो, सुमुणी इव ठाउमाऽऽरद्धो ॥७४॥
इयदोसं पेसुन्नं, तप्परिहारं च इयगुणं नाउं । तुममाऽऽराहणचित्तो, चित्ते वि हु मा तयं धरसु ॥७५॥
पन्नरसमिमं भणियं, पावट्ठाणं इयाणि वन्नेमि । परपरिवायऽभिहाणं, संखेवेणेव सोलसमं ॥७६॥

"परपरिवादस्वरूपम्" —

लोयाण समक्खं चिय, परदोसविकत्थणं जमिह सो उ । परपरिवाओ मच्छर-अतुक्करिसेहिं संभवइ ॥७७॥
जम्हा मच्छरगहिओ, न गणइ पणयं न चेव पडिवन्नं । न य कयमुवयारं पि य, न परिचयं नेय दक्खिन्नं ॥७८॥
न गणेइ य सुयणत्तं, न यऽप्पपरभूमिगाविसेसं पि । न कुलक्कमं न धम्म-ट्ठिइं च नवरं स निच्चं पि ॥७९॥
चलइ ववहरइ कह सो, किं चिंतइ भासइ कुणइ किं वा । इय परछिद्दनिरिक्खण-वक्खित्तमणो मुणइ न सुहं॥८०॥
एवं कमेण एक्को वि, मच्छरो जायए परो हेऊ । परपरिवायविहीए, किं पुण अत्तुक्करिससहिओ ॥८१॥
सुरगिरिगरुयं पि परं, परमाऽणुं मुणइ अत्तउक्करिसी । अप्पाणं पुण तिणतुल्ल-मऽवि गुरुं अमरगिरिणो वि ॥८२॥

एवं परपरिवायं, अकयं कह पोढकारणत्तणओ । धरिउं सक्को सक्को वि, नामरहिओ वि वेगेण ॥८३॥
जह जह परपरिवायं, करेइ तह तह लहुत्तणमुवेइ । जह जह तमुवेइ जणे, तह तह जायइ दढमऽपुज्जो ॥८४॥
जह जह परपरिवाओ, किज्जइ तह तह गुणा पणस्संति । जह जह ताण पणासो, तह तह दोसाणं संकमणं ॥८५॥
जह जह तस्संकमणं, तह तह वयणिज्जभायणं हवइ । एयमऽकल्लाणाणं, परपरिवाओ पढमठाणं ॥८६॥
परपरिवाएणं सं-घडंति दोसा अहुंतया वि नरे । हुंता पुण बहुबहुतर-बहुतमघणनिबिडया होंति ॥८७॥
परपरिवायं मच्छर-अत्तुक्करिसेहिं जो नरो कुणइ । जम्मंऽतरेसु वि चिरं, सो भमइ निहीणजोणीसु ॥८८॥
गुणरयणहारणं दोस-कारणं जाणिऊण न करेंति । धन्ना परपरिवायं, परमगुरुहि वि जओ भणियं ॥८९॥
परपरिवायं गिण्हइ, अट्ठमयविरिल्लणे सया रमइ । डज्झइ य परसिरीए, सकसाओ दुक्खिओ निच्चं ॥९०॥
विग्गहविवायरुइणो, कुलगणसंघेण बाहिरकयस्स । नऽत्थि किर देवलोए वि, देवसमिईसु अवगासो ॥९१॥
जइ ता जणसंववहार-वज्जियमऽकज्जमाऽऽयरइ अन्नो । जो तं पुणो विकत्थइ, परस्स वसणेण सो दुहिओ ॥९२॥
सुट्ठु वि उज्जममाणं, पंचेव करेंति रित्तयं समणं । अप्पथुई परनिंदा, जिब्भोवत्था कसाया य ॥९३॥
परपरिवायमई उ, दूसइ वयणेहिं जेहिं जेहिं परं । ते ते पावइ दोसे, परपरिवाई इय अपेच्छो ॥९४॥
परपरिवायपसत्तो, सत्तो दोसे परस्स जंपंतो । ते च्चिय भवंऽतरगओ-ऽणंताणंते सयं लहइ ॥९५॥
एवं परपरिवाओ, किज्जंतो परमदारुणविवाओ । वसणसयसन्निवाओ, समत्थगुणकरिसणकुवाओ ॥९६॥
सुहगिरिवज्जनिवाओ, न देइ गंतुं कहिं पि हु भवाओ । इह सव्वदुहसमवाओ, भवंतरे दोग्गइनिवाओ ॥९७॥
परपरिवायपसत्तो, उवरि सुभद्दाए ससुरवग्गो व्व । अजसप्पवायपहओ, जणमज्झे पावए खिंसं ॥९८॥
परपरिवायपरम्मि वि, तम्मि सा पुण तयं अकुव्वंती । देवकयपाडिहेरा, कित्तिं पत्ता महासत्ता ॥९९॥

तहाहि—

"सुभद्रादृष्टांतः"

चंपाए नयरीए, [1]तच्चण्णियभत्तवणियपुत्तेण । दिट्ठा कहमऽवि जिणदत्त-सड्ढधूया सुभद्द त्ति ॥६४००॥
उप्पन्नतिव्वरागेण, मग्गिया सा य तेण परिणेउं । जणगेण य नो दिन्ना, मिच्छद्दिट्ठि त्ति काऊण ॥१॥
तप्परिणयणनिमित्तं च, तेण कवडेण साहुमूलम्मि । पडिवन्नो जिणधम्मो, भावेण य परिणओ पच्छा ॥२॥
निच्छउमधम्मनिरओ त्ति, निच्छिउं सावगेण वि सुभद्दा । दिन्ना कओ विवाहो, भणितो य विभिन्नगेहम्मि ॥३॥
धारेज्जसु मह धूयं, विसरिसधम्मम्मि ससुरगेहम्मि । कत्तो इमीए इहरा, होही नियधम्मवावारो ॥४॥
पडिवन्नमिमं तेण वि, तहेव ठविया विभिन्नगेहम्मि । जिणपूयणमुणिदाणाऽऽइ-धम्ममऽणिसं च सा कुणइ ॥५॥
जिणधम्मपच्चणीय-त्तणेण तीए परं ससुरवग्गो । छिद्दाइं पेहमाणो, निंदं काउं समाढत्तो ॥६॥
तब्भत्ता वि पउट्ठ त्ति, तग्गिरं धरइ नेव चित्तम्मि । एवं वच्चइ कालो, तेसिं सद्धम्मनिरयाणं ॥७॥
अह एगम्मि दिणम्मि, निप्पडिकम्मो महामुणी एगो । भिक्खऽट्ठाए पविट्ठो, ताण गिहे तो सुभद्दाए ॥८॥
भिक्खं देंतीए नयण-निवडियं कणुगमऽग्गजीहाए । अवणीयं मुणिणो छेय-याए पीडाकरं नाउं ॥९॥
नवरं तीसे तयऽवणय-णेण भालयलविरइओ तिलओ । लग्गो मुणिणो भाले, नणंदपमुहाहिं दिट्ठो य ॥१०॥
चिरकाललद्धछिद्दाहिं, ताहिं तप्पिययमो ततो भणिओ । पेच्छसु नियभज्जाए, एयंविहसीलमऽकलंकं ॥११॥
इण्हिं चिय एस मुणी, भोए भोत्तुं विसज्जिओ तीए । पत्तियसि जइ न ता नियसु, समणभालम्मि तत्तिलयं ॥१२॥
तह चेव तं पलोइय, विलिओ अविभाविऊण परमत्थं । सिढिलियपुव्वप्पणओ, तदुवरि मंदाऽऽदरो जाओ ॥१३॥
पायडियं ससुरकुले, सव्वत्थ वि ताहिं तं च वयणिज्जं । अच्चंतपरंमुहपइ-पलोयणाओ जणाओ य ॥१४॥
सासणखिंसासम्मिस्स-मऽप्पणो सीलमलिणमालिन्नं । नाऊण सुभद्दाए, बाढं सोगं वहंतीए ॥१५॥
जिणपूयं काऊणं, भणियं जइ को वि देवयविसेसो । सांणिज्झं मज्झ काही, ता एत्तो हं चलिस्सामि ॥१६॥
तो उस्सग्गेण ठिया, सुनिच्चला परमसत्तसंजुत्ता । तब्भावरंजिओ अह, सम्मद्दिट्ठी सुरो पत्तो ॥१७॥
भणियं च तेण भद्दे!, कहेहि जं भे करेमि करणिज्जं । उस्सग्गं पारित्ता, वुत्तं च इमं सुभद्दाए ॥१८॥
हंहो! तह कुण जह सासणस्स, जायइ पभावणा धणियं । हणिऊण दुट्ठजणजणिय-वयणमालिन्नमऽचिरेण ॥१९॥

1. तच्चणियभतः = बौद्धभक्तः ।

एवं काहं ति पवज्जिऊण, देवेण सा इमं भणिया । कल्लम्मि तह पुरीए, दारकवाडाणि सव्वाणि ॥२०॥
गाढाणि ठइस्से हं, उग्घाडेउं न को वि जह तरइ । गयणट्ठिओ भणिस्सं च, सुद्धसीला परं नारी ॥२१॥
तिक्खुत्तखित्तचालणि-निहित्तजलचुलुयताडियकवाडा । उग्घाडिस्सइ एयाइं, न उण अन्ना ततोऽणेगा ॥२२॥
नारीओ अकयपओयणाओ, विरमंति जाव ताव तुमं । पुव्वुत्तविहिसणाहा, उग्घाडेज्जासि लीलाए ॥२३॥
एवं सिक्खविऊणं, झडत्ति सो सुरवरो तिरोभूओ । इयरी वि सिद्धकज्ज त्ति, उवगया परमसंतोसं ॥२४॥
अह जायम्मि पभाए, अणुग्घडंतेसु पुरीकवाडेसु । आदन्नो नगरिजणो, जाया गयणे य सा वाणी ॥२५॥
ताहे निवसेणावइ-सुकुलपसूयाओ सीलकलियाओ । दारुग्घाडणहेउं, नारीओ उवट्ठियाओ लहुं ॥२६॥
नवरमऽठायंते चालणीए, सलिलम्मि विगयगव्वाओ । अकयप्पओयणाओ, विणियत्तंतीओ दट्ठूण ॥२७॥
अच्चंतं आदन्नो, सव्वो लोगो पुणो वि नयरीए । सव्वत्थ वि सविसेसं, सीलवईमग्गणा विहिया ॥२८॥
एत्थंऽतरे सुभद्दा, सासुयपमुहाण सविणयं पणया । भणइ अहं पि हु नयरी-दुवारमुग्घाडिउं जामि ॥२९॥
जइ अणुजाणह तुब्भे, निहुयं हसियं परोप्परं ताहिं । तो भणियं साऽसूयं, तुममेव महासई पुत्ति! ॥३०॥
सुपसिद्धा सुमिणम्मि वि, अजायमलिणा य ता लहुं वच्च । अप्पाणमऽप्पण च्चिय, विगोवसु एत्थ किमऽजुत्तं॥३१॥
एवं च ताहिं भणिया, विहियण्हाणा नियत्थसियवसणा । चालणिनिहित्तसलिला, लोगेणं अग्घविज्जंती ॥३२॥
किित्तिज्जंती बंदिण-जणेण सा तिन्नि नयरिदाराइं । उग्घाडिऊण जंपइ, चउत्थगं दारमिममिन्हिं ॥३३॥
सीलेण मह सरिच्छा, जा उग्घाडेज्ज सा परं नारी । इय तीए तं विमुक्कं, ताहे रायाऽऽइलोगेण ॥३४॥
सा पूइया समाणी, गेहम्मि गया तओ ससुरवग्गो । लोगेण खिंसिओ बहु, असच्चपरिवायकारि त्ति ॥३५॥
इय नाऊणं तुममऽवि, खमग! वराऽऽराहणेक्कतल्लिच्छो । मा मणसा वि हु काहिसि, परपरिवायं बहुअवायं॥३६॥
सोलसमपावठाणग-मुवदंसियमिय समासओ इण्हिं । मायामोसऽभिहाणं, सतरसमं पि हु पवक्खामि ॥३७॥

"मायामृषावादस्वरूपम्" —

मायाए कुडिलयाए, संवलियं मोसमऽलियमिह वयणं । मायामोसं भन्नइ, अच्चंतकिलिट्ठयापभवं ॥३८॥
एयं च बीय-अट्ठम-पावट्ठाणेसु जइवि उवइट्ठं । पत्तेयदोसवन्नण-दारेण तहावि दोहिं पि ॥३९॥
सविसेसपरपयारण-पहाणनेवत्थछेयभणिईहिं । जेण पयट्टइ पावे, तेण पुढो भण्णइ इमं च ॥४०॥
मुद्धजणमणकुरंगाण, वागुरा सीलवंसियालीए । फलसंभवो य पच्छिम-गिरिगमणं नाणसूरस्स ॥४१॥
मेत्तीए नासगं विणय-भंसगं कारणं अकित्तीए । जं ता दुग्गइविमुहो, समायरेज्जा न कहवि बुहो ॥४२॥
अवि य—
हम्मउ गिरी सिरेणं, चाविज्जउ तिक्खखग्गधारऽग्गं । पिज्जउ जलियऽग्गिसिहा, छिज्जउ अप्पा करकएणं॥४३॥
निवडिज्जउ जलहिजले, पविसिज्जउ जममुहम्मि किं बहुणा । एक्कं चिय मा किज्जउ, मायामोसं निमेसं पि॥४४॥
सिरगिरिहणणाऽऽईणि हि, कया वि साहसधणाण धीराण । अवगारीणि न होंति वि, अदिट्ठसाण्णिज्झसामत्था॥४५॥
अह अवगारीणि वि होंति, तह वि एक्कम्मि चेव जम्मम्मि । मायामोसविही पुण, अणंतभवदारुणविवागो ॥४६॥
जह अंबिलेण दुद्धं, सुरालवेण जह पंचगव्वं वा । जाइ विहलं समाया-मोसं तह धम्मकरणं पि ॥४७॥
तवउ तवं पढउ सुयं, धरउ वयं तह चिरं चरउ चरणं । जइ ता मायामोसी, गुणाय न तयं तह वि होही॥४८॥
मायामोसी अइधम्मिओ य, एयं विरुद्धनामदुगं । एक्कम्मि चेव पुरिसे, मुद्धाण वि धुवमऽसद्धेयं ॥४९॥
को नाम किर सकन्नो, करेज्ज ता अप्पणो हियगवेसी । मायामोसं पोसं, भवस्स सुव्वंतबहुदोसं ॥५०॥
अह दोग्गइगमणमणो, ताव य सेसाणि पावठाणाणि । मायामोसं एक्कं पि, चेव तन्नयणविहिपडुयं ॥५१॥
जइ ता मायामोसं, एगंतेणं न होज्ज बहुदोसं । ता न कहिंसु सुघोसं, चिरमुणिणो एवमऽपओसं ॥५२॥
जो वि य पाडेऊणं, मायामोसेहिं खाइ मुद्धजणं । तिग्गाममज्झवासी, सोयइ सो कूडखवगो व्व ॥५३॥
तहाहि— "कुटक्षपकदृष्टान्तः" —
उज्जेणीनयरीए, अच्चंतं कूडकवडपडिबद्धो । नामेण अघोरसिवो, अहेसि विप्पो महाखुद्दो ॥५४॥
माइंदजालिओ इव, वट्टंतो लोयवंचणम्मि य सो । निद्धाडिओ जणेणं, पुरीओ देसंऽतरम्मि गओ ॥५५॥

तत्थ वि विडाण मिलिओ, भणइ य तो संकिलिट्ठपरिणामो । जइ संवाहेह ममं, तुब्भे ता हं मुणी होउं ॥५६॥
सब्भावविहवछिद्दाणि, जाणिउं निच्छएण लोगाण । साहेमि तुम्ह तत्तो, सुहेण तुब्भे वि ते मुसह ॥५७॥
पडिवन्नं सव्वमिमं, विडेहिं सो वि हु तिदंडिणो वेसं । घेत्तूण गामतिगमज्झ-उववणम्मि ठिओ गंतुं ॥५८॥
तेहि य कओ पवाओ, एसो नाणी महातवस्सी य । मासाओ मासाओ, आहारं गिण्हइ महप्पा ॥५९॥
तं च बहुवसणखिन्नं, सभावओ च्चिय किसं पलोइत्ता । लोगो महातवस्सि त्ति, पूयए परमभत्तीए ॥६०॥
निययगिहेसु निमंतइ, सब्भावं कहइ पुच्छइ निमित्तं । दंसेइ विभववित्थर-मऽणुदियहं कुणइ से सेवं ॥६१॥
सो पुण बगचेट्ठाए, लोगाऽणुग्गहपरं निदंसेइ । अत्ताणं चोराण य, तच्छिद्दाइं परिकहेइ ॥६२॥
रयणीए चोराणं, मिलिओ गेहाणि मुसइ य अणज्जो । कालंऽतरेण य जणो, न स को वि न जो तहिं मुट्ठो॥६३॥
एगम्मि य पत्थावे, तेहिं खत्तं खणेउमाऽऽरद्धं । एगम्मि घरे घरना-यगेण नायं च तो तेण ॥६४॥
खत्तमुहम्मि ठवेऊण, पासियं विसहरो व्व पविसंतो । गहिओ एगो चोरो, सेसा सव्वे वि य पलाणा ॥६५॥
जाए पभायसमए, चोरो भूमिवइस्स उवणीओ । तेणं भणियं मुंचह, एयं जइ कहइ सब्भावं ॥६६॥
मुक्को तहऽवि न साहइ, पच्छा कसदंडलेट्ठुमुट्ठीहिं । हम्मंतेण तेणं, कहिओ सव्वो वि वुत्तंतो ॥६७॥
बंधेऊण य सिग्घं, सो वि तिदंडी तओ समाणीओ । ता पहओ जा तेण वि, पडिवन्नं नियदुच्चरियं ॥६८॥
पच्छा सोत्तियपुत्तो त्ति, चक्खुजुयलं समुक्खयं तस्स । निब्भच्छिऊण हत्थं, पुराउ निव्वासिओ तत्तो ॥६९॥
भिक्खं परिब्भमंतो, खिंसिज्जंतो जणेण य दुहट्टो । हा! कीस मए एयं, कयं ति सोएइ अप्पाणं ॥७०॥
एवमऽविणयपहाणं, मायामोसमऽसमंजसनिहाणं । मोत्तुं परमपहाणं, सुंदर! कुण मणसमाहाणं ॥७१॥
सत्तरसमपावठाणं, निदंसियं संपयं च दंसेमि । अट्ठारसमं मिच्छा-दंसणसल्लाऽभिहाणं पि ॥७२॥

"मिथ्यादर्शनशल्यस्वरूपम्" —

मिच्छा विवरीयं दंस-णं ति दिट्ठीविवज्जयसरुवं । ससहरदुगदरिसणमिव, जं मिच्छादंसणं तमिह ॥७३॥
एयं च दुरुद्धरणत्तणेण, दाइत्तणेण य दुहाणं । सल्लं व तेण मिच्छा-दंसणसल्लं ववइसंति ॥७४॥
नवरं सल्लं दुविहं, नायव्वं दव्वभावभेएहिं । दव्वम्मि तोमराऽऽइ, अह मिच्छादंसणं भावे ॥७५॥
मिच्छादंसणसल्लं, सल्लं व पइट्ठियं हिययमज्झे । सव्वेसिं पि अवायाण, कारणं दारुणविवागं ॥७६॥
पढममऽवायनिमित्तं पि, नूणमेक्कस्स चेव विन्नेयं । भावे जं पुण सल्लं, तं उभयस्साऽवि दुहहेउं ॥७७॥
जह राहुपहापडलं, हणइ पयासं न केवलं रविणो । तामिस्सयाए पहणइ, नूण पयासं जयस्साऽवि ॥७८॥
एवं खु भावसल्लं पि, विलसमाणं न चेव एक्कस्स । हणइ पयासं किं पुण, हणइ पयासं जगस्साऽवि ॥७९॥
जह राहुपहापडलं, किर मिच्छादंसणं तहा नेयं । जह य रवी तह पुरिसो, पयासतुल्लं च सम्मत्तं ॥८०॥
एवं च ठिए मिच्छा-दंसणराहुप्पहाकडप्पेणं । हयसम्मत्तपयासो, तहाविहो को वि पुरिसरवी ॥८१॥
भावतमनियरकारण-मिच्छादंसणविमोहिओ संतो । तं चेव परे तह अप्प-यम्मि वद्धारइ मूढो ॥८२॥
तेण य परंपरापसर-माणमाणाऽइरित्तएण दढं । गुविलगिरिकंदरे इव, विगयाऽऽलोयम्मि लोयम्मि ॥८३॥
भववासुव्विग्गाण वि, सम्मं पेच्छिउमणाण वि पयत्थे । कह सम्मत्तपयासो, सुहेण संपज्जइ जियाण ॥८४॥
किंच—
एयं सो दिसिमोहो, एयं सो अच्छिपट्टबंधो उ । तमिमं जच्चंऽधत्तं, नेत्तुद्धारो स एयं ति ॥८५॥
आसुपरिभमणभममाण-भुवणपडिहासमाणमऽहव इमं । हिमवंतगमणमिममऽहव-सायरं गंतुकामस्स ॥८६॥
केसुंडुगनाणमिमं, अहवा मइविब्भमो स एसो त्ति । सुत्तीए रययविसयं, विन्नाणं वा तमेयं ति ॥८७॥
उज्जलजलविसओ वा, एस स मायण्हियासु पडिहासो । तं च इमं जं सुव्वइ, जणम्मि विवरीयधाउत्तं ॥८८॥
तमऽकंडविड्डरमिमं, तह तमिमं पंसुवुट्ठिउव्वहणं । घोरंऽधकूवकुहरम्मि, निवडणं नणु तमेयं ति ॥८९॥
जमिमं मिच्छादंसण-सल्लं सम्मत्तखलणपडिमल्लं । [वासा]सम्मग्गम्मि महल्लं, पयट्टमाणस्स चिक्खल्लं ॥९०॥
अन्नं च—
जमऽदेवो वि हु देवो, अगुरू वि गुरू अतत्तमऽवि तत्तं । जमऽधम्मो वि हु धम्म-त्तणेण मन्निज्जइ जिएहिं ॥९१॥

जं पि जहुत्तगुणम्मि वि, देवम्मि गुरुम्मि तत्तवग्गे य । धम्मे य परमपयसा-हगम्मि अरई पओसो वा ॥९२॥
जमुदासीणत्तं पि हु, परमपयत्थेसु देवपमुहेसु । मिच्छादंसणसल्लस्स, तमिह दुव्विलसियं सव्वं ॥९३॥
तहा—
अविवेयमूलबीयं, अणुवहयं सव्वहा इमं जम्हा । मिच्छत्ता होइ नरो, मूढमणो जइ वि बुद्धिधणो ॥९४॥
मयतण्हियाउ उदयं, मग्गंति मिगा जहा गरुयतिण्हा । सब्भूयमऽसब्भूयं, तहेव मिच्छत्तमूढमणा ॥९५॥
पेच्छइ असंतमऽत्थं, भक्खियधत्तूरओ जहा पुरिसो । मिच्छत्तमोहियमणो, तह धम्माऽहम्मविसयं पि ॥९६॥
मिच्छत्तभावणाए, अणाऽऽइकालेण मोहिओ जीवो । लद्धे वि खओवसमा, सम्मत्ते दुक्करं रमइ ॥९७॥
न वि तं करेइ अग्गी, नेव विसं नेय किण्हसप्पो य । जं कुणइ महादोसं, तिव्वं जीवस्स मिच्छत्तं ॥९८॥
कडुयम्मि अनिव्वलियम्मि, दोद्धीए जह विणस्सए खीरं । तह मिच्छत्तकलुसिए, जीवे तवनाणचरणाणि ॥९९॥
संसारमहातरुणो, मिच्छत्तमऽतुच्छबीयमेयं ति । तम्हा तं मोत्तव्वं, सिवसोक्खं कंखमाणेहिं ॥६५००॥
मिच्छत्तमोहियमणा, मुणंति जीवा न अतत्ततत्तं पि । कुसमयसवणसमुब्भव-कुवासणावासिया संता ॥१॥
न हु मिच्छत्तंऽधत्तण-संछन्नविवेयचक्खुणो जीवा । सद्धम्मदेसगरविं, पेच्छंति वि तामसखग व्व ॥२॥
जइ एयं चिय एक्कं, नरेसु मिच्छत्तसल्लमऽल्लीणं । ता सयलदुहाण कए, तं चिय होही किमऽन्नेण ॥३॥
मिच्छत्तसल्लविद्धा, तिव्वाउ वेयणाउ पावेंति । विसलित्तकंडविद्धा, जह पुरिसा निप्पडीयारा ॥४॥
ता पयडिय दच्छत्तं, हत्थं उच्छादिऊण मिच्छत्तं । सुंदर! कुणसु ममत्तं, पडुच्च निच्चं पि सम्मत्तं ॥५॥
मिच्छादंसणसल्लं, वत्थुवियज्जासबोहजणगमिणं । सद्धम्मदूसगं का-रगं च भवगहणभमणस्स ॥६॥
ताव च्चिय मणभवणे, सम्मत्तपईवओ पहं देइ । जाव न मिच्छादंसण-पयंडपवणो पणोल्लेइ ॥७॥
पत्तं पि पुन्नपब्भार-लब्भसम्मत्तरयणमुत्तरइ । मिच्छाऽभिमाणमइरा-मत्तस्स जहा जमालिस्स ॥८॥
तथाहि— "जमालिदृष्टान्तः"
जयगुरुणो वीरजिणेसरस्स, पासम्मि गहियपव्वज्जो । पंचसयरायपुत्तेहिं, परिगओ चत्तरज्जसुहो ॥९॥
भयवंतभइणिपुत्तो, जमालिनामो सुधम्मसद्धाए । संवेगसारमऽणगा-रियाए किरियाए वट्टंतो ॥१०॥
एगम्मि अवसरे पबल-पित्तजरविहुरयाए पडिभग्गो । सयणत्थं णियथेरे, संथारं संथरावेइ ॥११॥
अह वयणाऽणंतरतूर-माणमुणिदीयमाणसंथारे । कालविलम्बं थेवं पि, असहमाणेण तेण पुणो ॥१२॥
संथरिओ किं व न व त्ति, पुच्छिया साहुणो तओ तेहिं । थेवमऽसंथरिए वि हु, "संथरिओ' इइ पवुत्तम्मि ॥१३॥
तं देसमाऽऽगओ संथ-रिज्जमाणं पलोइउं तं च । सहस त्ति जमाली जाय-विब्भमो भणिउमाऽऽढत्तो ॥१४॥
मुणिणो! कीस असच्चं, जंपह जं संथरिज्जमाणम्मि । संथरियं संथारं ति, वयह थेरेहिं तो भणियं ॥१५॥
जह कज्जमाणयं कड-माऽऽह पहू भुवणदिणयरो वीरो । तह संथरिज्जमाणो, संथरिओ एस किमऽजुत्तं ॥१६॥
एवं पि तेहिं भणिओ, मिच्छाऽभिनिवेसनिहयसम्मत्तो । कडमेव कडं ति कुपक्ख-तरलिओ सो चिरं कालं ॥१७॥
विप्पडियन्नो, तइलोक्क-बंधुणो विहियंदुक्करतवो वि । विहरित्था वसुहाए, वुग्गाहिंतो जणं मुद्धं ॥१८॥
किंच—
नियदुहिया नियहत्थेण, दिक्खिया सइ सयं च सिक्खविया । पियदंसणा वि अज्जा, जमालिपक्खं अणुसरंती ॥१९॥
विप्पडिवन्ना मिच्छत्त-दोसओ अहह! सा वि जयगुरुणो । पच्चक्खभुवणभक्खर-भूयस्स वि वद्धमाणस्स ॥२०॥
कयमिन्हिं पसंगेणं, विहलीकयसंजमो अह जमाली । मरिउं लंतयकप्पे, किब्बिसियसुरो समुप्पण्णो ॥२१॥
ते चरणगुणा सो नाण-पयरिसो तं च तस्स सच्चरियं । एक्कपए च्चिय णट्ठं, धिरऽत्थु मिच्छाऽभिमाणस्स ॥२२॥
दे! पेच्छ पेच्छ मिच्छत्त-पडलपच्छाइयाण जंतूण । वत्थुं पि अवत्थुत्तेण, तक्खणे चेव परिणमइ ॥२३॥
सम्मत्ताऽऽइगुणसिरी, सा तस्स तहाविहा जइ न हुंता । मिच्छत्ततमंऽतरिया, न याणिमो ता किमऽवि हुंतं ॥२४॥
इय मुणिय विवेयाऽमय-पाणपयोगेण मणसरीरगयं । मिच्छत्तगरलमेयं, वमसु तुमं सव्वहा वच्छ! ॥२५॥
मिच्छत्तगरलमुक्को, ववगयनिस्सेसतव्वियारो य । सुत्थीभूओ सम्मं, पत्थुयमाऽऽराहणं लहसु ॥२६॥
एवं मिच्छादंसण-सल्लमिमं कहियमेयकहणाओ । कहियाणि असेसाणि वि, अट्ठारस पावठाणाणि ॥२७॥

एक्केक्कमऽवि इमेसिं, पावट्ठाणाण इय [1]विवागकरं । जो उ वियागो तेसिं, समवाए तत्थ किं भणिमो ॥२८॥
अवि य—
इहलोयसुहपसत्ता, सत्ता सत्ताण हिंसभावेण । फरुसाऽऽइअलियवयणेण5-ण्णदव्वहरणेण य परेसिं ॥२९॥
विसयव्वासंगेणं, नरसुरतिरिजुवइगोयरेण दढं । निच्चविचित्ताऽपरिमिय-परिग्गहाऽऽरंभकरणेण ॥३०॥
कोहेण कयविरोहेण, तह य माणेण दुहविहाणेण । मायाए फुडअवायाए, निहयसोहेण लोहेण ॥३१॥
पेज्जेण सुमुणिजणवज्जिएण, दोसेण कुगइपोसेण । कलहेण पणयरिउणा, अब्भक्खाणेण य खलेण ॥३२॥
अरइरईहिं कयभवगईहिं, अवजसमहापवाहेणं । परपरिवाएणं नीय-लोयकयहियथतोसेणं ॥३३॥
मायामोसेणं तह, अच्चंतं संकिलेसपभवेणं । मिच्छादंसणसल्लेण, सुद्धपहसुहडमल्लेण ॥३४॥
मणसा वयसा वउसा, मूढमणा अप्पणो सुहनिमित्तं । अकयपरलोयचिंता, समज्जिउं पबलपावभरं ॥३५॥
चुलसीइजोणिलक्खाऽऽ-उलम्मि भवसायरे अणाऽऽइम्मि । पुणरुत्तजम्ममरणे, अणुभवमाणा चिरमऽडंति ॥३६॥
एयाणि य जो मूढो, उदीरए अप्पणो परस्साऽवि । सो तन्निमित्तबद्धेण, लिप्पए पावकम्मेण ॥३७॥
ता भो देवाणुप्पिय!, पयत्तजुत्तो इमं वियाणेत्ता । लहु तेहिंतो विरमिय, तप्पडिवक्खे समुज्जमसु ॥३८॥
भणियमऽणुसट्ठिदारे, अट्ठारसपावठाणदारमिणं । एत्तो बीयं भन्नइ, अट्ठमयट्ठाणपडिदारं ॥३९॥

"मदनामकद्वितियद्वारम्" —

अट्ठारसपावट्ठाण-विरयचित्तं पलक्खिऊण गुरू । सविसेसगुणाऽऽवज्जण-कएण खवगं इमं भणइ ॥४०॥
धन्नो तुमं गुणायर!, गुरुयाऽऽराहणधुराधरणधवल! । एत्थ ठिओ सव्वे वि हु, मणोवियारे निरुंभित्ता ॥४१॥
जाइमयं[1] कुलमयं[2], रूवमयं[3] बलमयं[4] सुयमयं[5] च । तवमय[6]मऽह लाभमयं[7], इस्सरियमयं[8] च अट्ठमयं ॥४२॥
परिहर परिहरणीयं, धम्मऽत्थीणं सया अकरणीयं । नीयजणाऽऽयरणीयं, गुणधणलुंटणपराऽणीयं ॥४३॥
जिणवयणभावियमई, तत्थ तुमं ताव तिव्वतावकरं । मा काहिसि जाइमयं, पढमं पढमं अणत्थपयं ॥४४॥
जं एस कीरमाणो, माणधणाणं पि माणमालिण्णं । कालेण कुणइ णियमा, पावित्तु तहाविहाऽवत्थं ॥४५॥
किं च—
अड्डवियड्डं हिंडिय, निहीणजोणीसु कहवि संपत्ते । एक्कसि उच्चागोए, बुहाण किर को मयाऽवसरो ॥४६॥
कीरेज्ज व जाइमओ, अयट्ठिओ जइ स होज्ज जाइगुणो । इहरा पुण पवणुप्फुन्न-बत्थिपाएण किं तेण ॥४७॥
कम्मवसा जाईओ, उत्तममज्झिमजहन्नियाउ भवे । दट्ठुं सुदिट्ठपरमत्थ-ओ वि को तम्मयं कुज्जा ॥४८॥
इंदियनिव्वत्तणपुव्व-गाओ पावेंति पाणिणो बहुहा । जाईउ संसारे, अवट्ठियत्तं न ताण ततो ॥४९॥
राया वि बंभणो इह, होउं जइ ता भवंऽतरे सो वि । कम्मवसा सोवागो, जायइ ता तम्मएणाऽलं ॥५०॥
सव्वुत्तमजाइस्स वि, कल्लाणनिबंधणं गुणा चेव । जाइरहिओ वि गुणवं, पूइज्जइ जेण जणमज्झे ॥५१॥
वेयाण पाढगो बंभ-सुत्तधारि त्ति लोयगउरविओ । भूदेवो हं सव्वु-त्तिमो त्ति जाइमओम्मत्तो ॥५२॥
जइ बंभणो वि सुद्दाऽहमाण, गेहेसु होज्ज कम्मकरो । ता जुत्तं काउं से, सरणं मरणं न जाइमओ ॥५३॥
कुणमाणो जाइमयं, बंधइ जाईए चेव नीयत्तं । सावत्थीवत्थव्वो, विप्पसुओ एत्थ दिट्ठंतो ॥५४॥
तहाहि—

"जातिमदेविप्रपुत्रदृष्टान्तः"

सुरभवणवाविदीहिय-पोक्खरणिकाणणोलिरम्माए । सावत्थीए पुरीए, बहुपत्थिवपणयपयपउमो ॥५५॥
आसी नरेंदसीहो, नामेण महीवई जयपसिद्धो । वेयऽत्थवियारविऊ, पुरोहिओ अमरदत्तो से ॥५६॥
पुत्तो य तस्स सुलसो, तारुण्णेणं सुएण विभवेण । नरवइसक्कारेण य, सो परमं गव्वमुव्वहइ ॥५७॥
समवयवयस्सजणपरि-गओ य तियचच्चराऽऽइसु पुरीए । सच्छंदं विहरइ वार-णो व्व अवगणियजणसंको ॥५८॥
एगम्मि य पत्थावे, सुहाऽऽसणत्थस्स तस्स उवणीया । सहयारमंजरी मालि-एण रणझणिरभमरउला ॥५९॥
तो वम्महलिहियसहत्थ-पत्तलं पिव पलोइऊणं तं । पत्तो वसंतमासो त्ति, जायहरिसो सहत्थेण ॥६०॥
वियरेऊण य से पारि-ओसियं छेयपरियणाऽणुगओ । नंदणवणाऽभिहाणे, उज्जाणे सो गओ झत्ति ॥६१॥

1. विवाहकरो पाटां० ।

तो कयअब्भुट्ठाणेण, नंदणुज्जाणपालगेण सयं । भणिओ कुमार! चक्खुं, खिवसु खणं इहपएसम्मि ॥६२॥
पसरंतबहलपरिमल-मिलंतअलियलयकलियसाहऽग्गा । रुद्दक्खमालहत्था, बउला जोगि व्व रेहंति ॥६३॥
कंकेल्लिणो वि उम्मिल्ल-पल्लवुल्लिहियनहयलाऽऽभोगा । पज्जलियजलणपुंज व्व, दिंति विरहीण संतावं ॥६४॥
कमलमुही किंसुयकुसुम-अंसुया मल्लियामउलदसणा । पाडलनयणा कोरइय-कुरवयत्थवयथोरथणी ॥६५॥
फुरियसुसिणिद्धतिलया, वणलच्छी तारपरहुयरवेण । [1]उग्गायइ व्व वम्मह-महिवइणो तिजयविजयजसं ॥६६॥
इय नंदणवणवालय-पिसुणियतरुसोहदुगुणिउच्छाहो । सो उज्जाणस्सऽब्भं-तरम्मि परिभमिउमाऽऽरद्धो ॥६७॥
परिभममाणेण य तेण, कहवि एगत्थ वणनिउंजम्मि । वट्टंतो सज्झाए, एगो दिट्ठो मुणिवरिट्ठो ॥६८॥
तो पाविट्ठत्तणओ, जाइमयं परममुव्वहन्तेण । परिहासं काउमणेणं, वंदिओ भत्तिसारं च ॥६९॥
भणितो य भदंत! ममं, भवभयभीरुस्स कहसु नियधम्मं । तुज्झ पयपउममूले, जा पडिवज्जामि पव्वज्जं ॥७०॥
उज्जुयभावत्तणओ, भणिओ मुणिणा वि जीवदयामूलो । अलियपरदव्वमेहुण-परिग्गहच्चायपडिबद्धो ॥७१॥
पिंडविसुद्धिप्पमुह-प्पहाणगुणनिवहबंधुरो सम्मं । सिवगइपज्जवसाणो, जयगुरुजिणदेसियो धम्मो ॥७२॥
अह तं सोऊणं सो, सहासमुल्लविउमेवमाऽऽरद्धो । हे समण! केण एवं, वेलविओ तं सि धुत्तेण ॥७३॥
पच्चक्खदिस्समाणं पि, जेण मोत्तूण दिव्वविसयसुहं । परमऽप्पाणं च किलेस-कप्पणाए निवाडेसि ॥७४॥
जीवदयाइविहीए, धम्मो तस्स प्फलं च मोक्खो त्ति । दट्ठूण केण सिट्ठं, कट्ठं जं एवमाऽऽयरसि ॥७५॥
ता एहि मए सद्धिं, वणलच्छिं पेच्छ मुंच पासंडं । विलससु पासायगओ, समं मयच्छीहि य जहिच्छं ॥७६॥
इय असमंजसभासिय-हासियनियपरियणेण तेण मुणी । घेत्तूण करे तत्तो, गिहहुत्तं नेउमाऽऽरद्धो ॥७७॥
एत्थंतरम्मि वणदेवयाए, मुणिहसणजायकोवाए । कट्ठं व नट्ठचेट्ठो, निवाडिओ सो महीवट्टे ॥७८॥
साहू वि मणागं पि हु, अपउस्सन्तो ठिओ सकिच्चम्मि । सुलसो वि तहाऽवत्थो, गेहे नीओ वयस्सेहिं ॥७९॥
सिट्ठो तव्वुत्तंतो, कया य तप्पसमणऽट्ठया पिउणा । देवयपूयापमुहा, विविहोवाया दुहट्टेण ॥८०॥
न मणागं पि हु जाओ, तदुवसमो तो मुणिस्स सो पासे । नेऊणं पम्मुक्को, जाओ पउणो मणागं च ॥८१॥
भणितो य मुणी पिउणा, भयवं! तुह हीलणाफलं एयं । ता कुणसु पसायं अव-हरेसु दोसं सुयस्स ममं ॥८२॥
एमाऽऽइ जा पयंपइ, पुरोहिओ देवयाए ता वुत्तं । किं रे मिलेच्छसच्छह!, सच्छंदं बहु समुल्लवसि ॥८३॥
जइ दुट्ठसुओ एसो, मुणिणो दासो व्व वट्टइ सया वि । ता पउणत्तं पाउणइ, इयरहा नऽत्थि जीयं पि ॥८४॥
तो जहतह जीयंतं, पेहिस्समऽहं ति चिंतयंतेण । पिउणा समप्पिओ सो, मुणिस्स तेणाऽवि भणियमिणं ॥८५॥
अस्संजए गिहत्थे, कुव्वन्ति परिग्गहम्मि नो समणा । पडिवज्जइ जइ दिक्खं, ता ठाउ इमो मह समीवे ॥८६॥
एवं भणिए मुणिणा, पुरोहिएणं पयंपिओ पुत्तो । वच्छ! न जइ वि हु जुत्तं, तुहहुत्तं एयमुल्लविउं ॥८७॥
तहवि हु परो उवाओ, न विज्जए तुज्झ जीवियव्वम्मि । ता एयस्स समीवे, जइस्स गिण्हाहि पव्वज्जं ॥८८॥
न य वच्छ! अकल्लाणं, होही तुह धम्ममाऽऽयरंतस्स । मणवंछियसंपाडण-पडुओ धम्मो परं जेण ॥८९॥
अह निरुवममरणभयु-ब्भवन्तसन्तावदीणवयणेण । सुलसेण अकामेण वि, वयणं जणगस्स पडिवन्नं ॥९०॥
पव्वाविओ य मुणिणा, कायव्वविही य दंसिओ सव्वो । जाणाविओ य समयऽत्थ-वित्थरं उचियसमयम्मि ॥९१॥
मच्चुभयगहियदिक्खो, विचित्तपरिवत्तमाणसुत्तऽत्थो । जाओ जिणिंदधम्मम्मि, सो थिरो विणयनिरओ य ॥९२॥
नवरं नो जाइमयं, मुयइ मुणंतो वि तस्स फलमऽसुहं । तमऽणाऽऽलोइत्तु मओ, जाओ देवो य सोहम्मे ॥९३॥
आउक्खयम्मि तत्तो, चविऊणं नंदीवद्धणपुरम्मि । जाईमयदोसेणं, मायंगसुओ समुप्पन्नो ॥९४॥
ईसिचिरसुकयवसओ, रुवी सोहग्गवं च संवुत्तो । जणमणनयणाऽऽणंदं, कमेण पत्तो य तरुणत्तं ॥९५॥
दट्ठूण य विलसंते, नायरए सो विचिंतए एवं । सिट्ठजणनिंदणिज्जं, धिद्धी! हु जीवियं मज्झ ॥९६॥
तारुन्नसिरी जस्सेरिसी वि, मायंगसंगगयसोहा । रन्ननलिणि व्व निव्वुइ-मुवजणयइ नो विसिट्ठाणं ॥९७॥
हयविहि! विहिओ जम्मो, कुलम्मि जइ निंदियम्मि मह तुमए । रुवाऽऽइणो गुणा किं, विहल व्विय ता समुवणीया ॥९८॥
अहवा किमऽणेणाऽण-त्थएण परिदेविएण वच्चामि । देसम्मि तम्मि जम्मि, जाइं नो मुणइ मज्झ जणो ॥९९॥

1. उग्गायणि पाठां० ।

एवं परिभावित्ता, अकहित्ता नियसुयणमित्ताण । केणाऽवि अनज्जंतो अयकंतो सो सनयरीओ ॥६६००॥
पत्तो य दूरतरदेस-संठिए कुंडिणम्मि नयरम्मि । ओलग्गिउं पवत्तो, तहिं च रण्णो दियाऽमच्चं ॥१॥
जाओ य नियगुणेहिं, पसायठाणं परं अमच्चस्स । निस्संकं विसयसुहं, भुंजइ पंचप्पयारं पि ॥२॥
एगम्मि य पत्थावे, सावत्थीउ वयंसया तस्स । अच्चंतगीयकुसला, भममाणा तत्थ संपत्ता ॥३॥
गायंतेहिं तेहि य, अमच्चपुरओ पलोइओ एसो । तो हरिसुक्करिसवसा, अविभावियभाविदोसेहिं ॥४॥
भणिओ वयंस! इहइं, उवेहि चिरदंसणोचियं जेण । आलिंगणाऽऽइ कुणिमो, पियाऽऽइवत्तं च साहेमो ॥५॥
अह सो ते दट्ठूणं, वयणं पच्छाइउं अवक्कंतो । तो विम्हिएण पुट्ठा, ते वुत्तंतं अमच्चेणं ॥६॥
मुद्धत्तणेण सिट्ठो, जहट्ठिओ तेहि तो अमच्चेण । कुविएणं आणत्तो, वज्झो सूलापओगेण ॥७॥
तो रासहम्मि आरोविऊण, पुरिसेहिं नयरिमज्झम्मि । सनिकारं हिंडाविय, नीओ सूलापएसम्मि ॥८॥
एत्थंतरम्मि अंजण-सिद्धेण अदिस्समाणरूवेण । जोगेसरनामेणं, उप्पन्नाऽपुव्वकरुणेण ॥९॥
कह वच्चिही वराओ, अपत्तकाले वि एस पंचत्तं । थोयवओ इन्हिं चिय, एवं परिभावयंतेणं ॥१०॥
अंजणसलाइयाए, झडत्ति से अंजियाइं नयणाइं । भणिओ य वच्च एत्तो, अबीहमाणो जमाओ वि ॥११॥
तो सो तओ पलाणो, अंजणसिद्धं नमित्तु विणएण । मरिऊण य उववन्नो, कइ वि भवे हीणजोणीसु ॥१२॥
तो पाविय माणुस्सं, केवलिकहणाउ मुणियपुव्वभवो । घेत्तूणं पव्वज्जं, महिंदकप्पे सुरो जाओ ॥१३॥
इय जाइमयसमुब्भव-दोसं दट्ठुं अणिट्ठफलजणगं । मा काहिसि जाइमयं, तुमं मणागं पि हे खमग! ॥१४॥
एवं पढमं वुत्तं, मयठाणं संपयं च वोच्छामि । कुलविसयं बीयमऽहं, मयठाणं किंचि लेसेणं ॥१५॥
एमेव कुलमयं पि हु, कुणमाणा माणवा गुणविहीणा । परमत्थमऽजाणंता, अप्पाणं चिय विडंबंति ॥१६॥
जओ—

"कुलमदेमरिचिदृष्टान्तः"

गुणसंकुलं कुलं किं, काहीह दुरऽप्पणो सयमऽगुणिणो । किं किमिणो कुसुमेसुं, गंधड्ढेसुं न जायंति ॥१७॥
हीणकुलुप्पन्ना वि हु, गुणवंतो सव्वहा जणऽग्घविया । पंकुब्भवं पि पउमं, सिरोवरिं वब्भइ जणेण ॥१८॥
सीलबलरूवमइसुय-विहवप्पमुहऽन्नपुन्नगुणसुन्नो । जइ जायइ सुकुलीणो वि, ता अलं कुलमएणाऽवि ॥१९॥
होउ कुलं सुविसालं, साऽलंकारो वि कीरउ कुसीलो चोराऽऽइदुट्ठसंभावणस्स-किं कुलमओ कुणउ ॥२०॥
हीणकुलस्स वि सुकुलु-ग्गया वि जइ इह मुहं पलोयंति । ता सेउ मरणं चिय, न कुलमओ ताण अण्णं च॥२१॥
जइ नऽत्थि गुणा ता किं, कुलेण गुणिणो कुलेण न हु कज्जं । कुलमऽकलंकं गुणव-ज्जियाण गरुयं कलंक॥२२॥
जइ ता न कुणंतो च्चिय, मिरिई कुलगोयरं मयं तइया । ता नाऽणुभवंतो च्चिय, चरमभवे कुलपरावत्तं ॥२३॥
तहाहि—

नाहिसुयरज्जकज्जुज्जमंत-नरविणयतुट्ठहियएणं । सक्केण विनिम्मविया, आसि विणीया पुरी पवरा ॥२४॥
तिहुयणपहुउसभजिणिंद-चलणतामरसफरिसपूयाए । अमराई वि जीए, न पुरो परभागमुवलभइ ॥२५॥
सुंदेरमुदारं जीए, अणिमिसऽच्छीहिं पेच्छमाणेहिं । तियसेहिं अणिमिसत्तं, तयाऽऽइ पत्तं अहं मन्ने ॥२६॥
तं पालित्था पत्थिव-मत्थयमणिकिरणविच्छुरियचरणो । लल्लक्कचक्कनिक्क-तियाऽरिचक्को भरहराया ॥२७॥
थणवीढलुढंतऽसुय-मुरुपहरयणासियंऽगरुइपसरं । मुत्ताहारपरिग्गह-मुचभुंजियसिरिफलसमूहं ॥२८॥
हरिपीलुकलियमंदिर-मऽल्लीणं पयडवालवियणं च । जस्साऽरिवहूविंदं, होत्था दुत्थं पि सुत्थं य ॥२९॥
तस्स पियपणइणीए, वम्मानामाए उचियसमयम्मि । सूरो व्व सुओ जाओ, मिरीइजालं विमुंचंतो ॥३०॥
पत्ते य बारसाऽहे, परमविभूईए तस्स नरवइणा । जम्मसमयाऽणुरूवं, मिरिइ-त्ति पइट्ठियं नामं ॥३१॥
वोक्कंतबालभावो, स महप्पा एगया जिणिंदस्स । उसभस्स समीवम्मि, धम्मं सोऊण पडिबुद्धो ॥३२॥
नलिणिदलऽग्गविलग्गंऽबु-बिंदुलोलं पलोइउं जीयं । विसरारुभवुत्थसमत्थ--वत्थुसत्थं च नाऊण ॥३३॥
परिचत्तविसयसोक्खो, अणवेक्खियबंधवाऽऽइपडिबंधो । भुवणगुरुणो समीवे, पडिवन्नो संजमुज्जोगं ॥३४॥
विहरित्था य जिणेणं, समं पढंतो पराए सद्धाए । थेराए अंतियम्मि, सामाइयमाऽऽइ अंगसुयं ॥३५॥
अह अन्नया कयाई, पयंडमायंडकरकरालम्मि । जायम्मि गिम्हयाले, संतत्ते मेइणितलम्मि ॥३६॥

वायंतेसु य पवणेसु, सक्करुक्केरफरुसफरिसेसु । अन्हाणयसकिलंतो, इमं कुलिंगं विचिंतेइ ॥३७॥
समणा तिदंडविरया, भगवंतो निहुयसंकुचियगत्ता । अजिइंदियदंडस्स य, होउ तिदंड महं चिंधं ॥३८॥
लोइंदियमुंडा संजया उ, अहयं खुरेण ससिहागो । थूलगपाणिवहाओ, वेरमणं मे सया होउ ॥३९॥
निक्किंचणा य समणा, ममं पुणो होउ किंचणं किंचि । सीलसुयंधा समणा, अहयं सीलेण दुग्गंधो ॥४०॥
ववगयमोहा समणा मोहच्छन्नस्स छत्तयं होउ । अणुवाहणा य समणा, मज्झं तु उवाहणा होंतु ॥४१॥
सुक्कंऽबरा य समणा, निरंऽबरा मज्झ धाउरत्ताइं । वत्थाइं होंतु जमऽहं, अरिहामि कसायकलुसमई ॥४२॥
वज्जेंति वज्जभीरू, बहुजीवसमाऽऽउलं जलाऽऽरंभं । होउ मम परिमिएणं, जलेण ण्हाणं च पियणं च॥४३॥
इय सच्छंदविगप्पिय-विचित्तबहुजुत्तिनियहसंजुत्तं । समणविलक्खणरुवं, पारिव्वज्जं पवत्तेइ ॥४४॥
विहरइ य जिणेण समं, भव्वे पडिबोहिउं समप्पइ य । सीसत्तेणं भुवणेक्क-भाणुणो उसभसामिस्स ॥४५॥
अह भरहेणोसरणे, निप्पडिमिस्सरियमऽरहओ दट्ठुं । होहिन्ति केत्तिया ताय!, तुज्झ सरिस त्ति पुट्ठेण ॥४६॥
सिट्ठा अजियाऽऽइजिणा, जयगुरुणा चक्किणो य पुट्ठेण । अप्पुट्ठेण वि सिट्ठा, हरिहलिणो पुण भणइ भरहो ॥४७॥
भयवं! किमेत्तियाए, सदेवमणुयाऽसुराए परिसाए । तुह संतियाइ होही, इह भरहे कोई तित्थयरो ॥४८॥
तो एगंतनिलीणं, सिरोवरिं धरियछत्तयं मिरिइं । दंसेइ जिणो भरहस्स, एस चरिमोऽरिहा होही ॥४९॥
एसो च्चिय विण्हूणं, पढमो पोयणपुरम्मि आयाही । मूयाए विदेहे चक्क-वट्टिलच्छिं लहिस्सइ य ॥५०॥
एवं सोउं भरहो, हरिसवसविसप्पिबहलरोमंचो । सामिं आपुच्छित्ता, मिरिइं अभिवंदिउं जाइ ॥५१॥
तो तिक्खुत्तो दाउं, पयाहिणं परमभत्तिसंजुत्तो । सम्ममऽभिवंदिऊणं, महुरगिरा भणिउमाऽऽढत्तो ॥५२॥
धन्नो तुमं महायस!, तुमए च्चिय पावणिज्जमिह पत्तं । जं होहिसि तित्थयरो, अपच्छिमो वीरनामो त्ति ॥५३॥
पढमो य वासुदेवाण, भरहवासऽद्धमहिवइनाहो । छक्खंडखोणीमंडल-सामी मूयाए चक्की य ॥५४॥
पारिव्वज्जं जम्मं च, तुज्झ नो मणहरं ति वंदामि । किं तु जिणो होहिसि जं, अपच्छिमो तेण पणमामि ॥५५॥
एमाऽऽइ संथुणित्ता, गयम्मि भरहे जहाऽऽगयं मिरिई । उप्पण्णगाढहरिसो, विसट्टकंदोट्टदलनयणो ॥५६॥
रंगगओ मल्लो इव, तिवइं अप्फोडिऊण तिक्खुत्तो । तं नियविवेयमऽवहाय, जंपिउं एवमाऽऽढत्तो ॥५७॥
"जइ वासुदेवपढमो, मूयविदेहाए चक्कवट्टी वि । चरिमो तित्थयराणं, अहो! अलं एत्तियं मज्झ ॥५८॥
पढमो हं विण्हूणं, पिया य मे चक्कवट्टिवंसस्स । अज्जो तित्थयराणं, अहो! कुलं उत्तमं मज्झ" ॥५९॥
एवं नियकुलचंगिम-संकित्तणकलुसभाववसगेणं । नीयागोयं कम्मं, बद्धं तप्पच्चयं च तओ ॥६०॥
स महप्पा उप्पन्नो, छ भवग्गहणाइं माहणकुलेसु । नीएसुं अन्नेसुं य, हरिचक्किसिरिं च अणुभविउं ॥६१॥
अरिहंताऽऽइवीसं, ठाणाइं फासिऊण चरिमभवे । चिरबद्धनीयकम्मस्स, दोसओ माहणकुलम्मि ॥६२॥
देवाणंदाए माहणीए, गब्भे अरिहा वि उप्पन्नो । बायासीइदिणंऽते, नवरं सक्केण नाऊण ॥६३॥
अणुचियमेयं ति विभाविउं च, हरिणेगमेसिमाऽऽइसिउं । सिद्धत्थरायगेहिणि-तिसिलाए ठाविओ गब्भे ॥६४॥
उचियसमए पसूओ, अहिसित्तो मंदरम्मि तियसेहिं । तित्थं पवत्तिऊणं, संपत्तो सो य परमपयं ॥६५॥
इय जइ सकुलपसंसण-समुवज्जियनीयकम्मदोसेण । एयंविहं अवत्थं, उवेंति सिरितित्थनाहा वि ॥६६॥
ता कह मुणियभवाणं, कुलमयविसया भवेज्ज बुद्धी वि । एवं च खमग! तुममिम-मित्तो मा काहिसि कहं पि॥६७॥
इय कुलमयपडिदारं, बीयं पन्नत्तमिन्हि तइयं पि । रूवमयगोयरमऽहं, लेसुद्देसेण कित्तेमि ॥६८॥

"रूपमदविषये काकन्दीवास्तव्य-भ्रात्रोः दृष्टान्तः" —

पढमं पि सुक्कसोणिय-संजोयवसेण जस्स उप्पत्ती । रूवस्स तं पि आसज्ज, न हु मओ होइ कायव्वो॥६९॥
रोगा पोग्गलगलणं, जरा य मरणं च जस्स नासम्मि । कारणगणो सहचरो, तम्मि वि रूवे मओ न मओ ॥७०॥
वत्थाऽऽहरणाऽऽईणं, संजोगा चेव किंचि रमणीए । निच्चं परिसंठप्पे, निच्चं च चयाऽवचयधम्मे ॥७१॥
अंतो कलुसाऽऽउण्णे, बाहिं तु तयाए वेढिए अथिरे । रूवे मयाऽवगासो वि, नऽत्थि चिंतिज्जमाणम्मि ॥७२॥
होइ विरूवो रूवी, कम्मवसा रूववं पि गयरूवो । कायंदीवत्थव्वा, इह नायं भायरो दोन्नि ॥७३॥
तहाहि—

बहुदेसपसिद्धाए, विविहऽच्छेरयनिवासभूयाए । कायंदीए पुरीए, आसी इब्भो जसो नाम ॥७४॥
कणगवई से भज्जा, पुत्तो पढमो य ताण वसुदेवो । देवकुमारोवमरूव-लच्छिविम्हइयजियलोगो ॥७५॥
बीओ य खंदओ नाम, कायरऽच्छो अईव मडहंऽगो । किं बहुणा सव्वेसिं, निदंसणं सो विरूवाणं ॥७६॥
लोगुत्तरं च तेसिं, रूवविरूवित्तणं णिंसामेत्ता । दूराओ एइ जणो, दट्ठुं कोऊहलाऽऽउलिओ ॥७७॥
एवं वच्चंतेसुं, दिणेसु एगम्मि अवसरे सूरी । विमलजसो नाम तहिं, समोसढो ओहिनाणधरो ॥७८॥
तस्साऽऽगमणं नाउं, वंदणवडियाए भूवईपमुहो । नयरिजणो संपत्तो, ते वि य इब्भस्स दो वि सुया ॥७९॥
तिक्खुत्तो विहियपया-हिणा य उव्वूढगाढभत्तिभरा । कयसूरिचलणनमणा, समुचियठाणेसु आसीणा ॥८०॥
अह धम्मकहं कुणमाणस्स, दिट्ठी कहिं मि मुणिवइणो । इब्भसुएसु य तेसुं, पडिया पीऊसवुट्ठि व्व ॥८१॥
तो ताण चक्खुपेक्खिय, तप्पुव्वभवेण ईसि हसिरेण । संलत्तं गुरुणा अहह!, कम्मदुव्विलसियं भीमं ॥८२॥
जं निरुवमरूवो वि हु, होइ विरूवो दढं विरूवो य । विसमसरोवमरूव-त्तणेण परिणमइ सो चेव ॥८३॥
अह विम्हिएण परिसाजणेण, भणियं कयप्पणामेण । परमत्थमेत्थ साहसु, अम्ह कोऊहलं भंते! ॥८४॥
तो गुरुणा संलत्तं, होऊणं अवहिया निसामेह । एए हि इब्भपुत्ता, नयरीए तामलित्तीए ॥८५॥
आसी दो वि वयंसा, धणरक्खियधम्मदेवनामाणो । एसिं रूवी पढमो, परमविरूवो बिइज्जो य ॥८६॥
कीलंति य अन्नोन्नं, नवरं धणरक्खिओ बहुपयारं । रूवमएणं परिहसइ, धम्मदेवं जणसमक्खं ॥८७॥
अह एगम्मि अवसरे, भणिओ धणरक्खिएण सो भद्द! । भज्जाए विणा विहलो, सयलो गिहवासवासंगो ॥८८॥
दारपरिग्गहविमुहो, ता किं दिणगमणियं करेसि मुहा । एवं पि जइ समीहसि, ठाउं ता होसु पव्वइओ ॥८९॥
उज्जुसभावत्तणओ य, जंपियं तेण मित्त! सच्चमिणं । णवरं इत्थीलाभे, दो चेव भवंति इह हेऊ ॥९०॥
जणमणहरणं रूवं, लच्छी वा दूरपत्तवित्थारा । एयमुभयं पि हयविहि-वसेण नो मज्झ संपन्नं ॥९१॥
अह एवं पि तहाविह-बुद्धिवसा संभवेज्ज थीलाभो । ता साहेसु तुमं चिय, कओ पणामंऽजली तुज्झ ॥९२॥
एवं तेण पवुत्ते, वुत्तं धणरक्खिएण हे मित्त! । निच्चिंतो अच्छ तुमे, एत्थऽत्थे हं भलिस्सामि ॥९३॥
अत्थेणं बुद्धीए, परक्कमेणं नएण अनएण । किं बहुणा जह तह तुज्झ, वंछियऽत्थं करिस्सामि ॥९४॥
तेणं पयंपियं कुणसु, किंपि निक्कवडपेम्मनिम्माए । तइ उवणीयसदुक्खो, संवुत्तो हं सुही एत्तो ॥९५॥
धणरक्खिएण तत्तो, कुबेरसेट्ठिस्स संतिया धूया । तत्तुल्लरूवविहवा, भणाविया दूइवयणेण ॥९६॥
कुसुमाऽऽउहसमरूवं, तुज्झ अहं पिययमं पणामेमि । जमऽहं भणेमि तं जइ, पडिवज्जसि मुक्ककुवियप्पा ॥९७॥
तीए भणावियं निव्वि-संकमाऽऽइससु तेण तो वुत्तं । अज्ज निसाए केणइ, अमुणिज्जंती मुगुंदगिहे ॥९८॥
एज्जासि जेण सम्मं, तेण समं तुह घडेमि वीवाहं । पडिवन्नं तीए तओ, अत्थमिए कमलबंधुम्मि ॥९९॥
पसरंतेसुं कलकंठ-कंठकलुसेसु तिमिरनियरेसु । होंतीसु य पइवेलं, निस्संचारासु रत्थासु ॥६७००॥
परिणयणोचियउवगरण-धारिणा परमहरिसियमणेण । सो तत्थ मुगुंदगिहे, गओ समं धम्मदेवेण ॥१॥
तक्कालोचियनेवत्थ-धारिणी सा वि तत्थ संपत्ता । विहियं संखेवेणं, पाणिग्गहणं तओ तेसिं ॥२॥
उवणेऊण पईवं, तत्तो धणरक्खिएण हसिरेणं । भणिया भद्दे! पइणो, तारामेलं करेसु त्ति ॥३॥
तो दीवुज्जोएणं, लज्जावसथिमियलोयणा जाव । ईसुन्नमंतवयणा, पलोयणं काउमाऽऽरद्धा ॥४॥
ताव अहरऽग्गलग्गोरु-दसणमऽच्चंतचिबिडनासग्गं । चिबुगेगदेसनिग्गय-कइवयबीभच्छखररोमं ॥५॥
घूयाऽणुरूवनयणं, वयणऽब्भंतरपविट्ठगंडयलं । तिरियट्ठियधूमलयाऽ-णुरूवभुमयं मसिच्छायं ॥६॥
पडियं चक्खुपहम्मि, तस्स मुहं तीए वयणमऽवि तस्स । तत्तुल्लगुणं नवरं, तत्तो भेओ अरोमत्ते ॥७॥
अह झत्ति वलियकंठं, तीए परियत्तिऊण नियवयणं । भणियं धणरक्खिय! विप्प-यारिया हं धुवं तुमए ॥८॥
मयणोवमं पयंपिय, पिसल्लतुल्लं पइं कुणंतेणं । मह तुमए आचंदं, अप्पा अजसेण उवलित्तो ॥९॥
धणरक्खिएण भणियं, मा मे कुप्पसु जओ विही चेव । सरिसं सरिसेण समं, संघडइ क एव मह दोसो ॥१०॥
अह तिव्वकोवदंतऽग्ग-दट्ठउट्ठा सभावकसिणं पि । सविसेसं कसिणंती, वयणं अफुडऽक्खरं किंपि ॥११॥
मंदं समुल्लवंती, पल्हत्थियहत्थकंकणा झत्ति । अप्परिणीय व्व तओ, मुगुंदगेहाउ निक्खंता ॥१२॥

हिययवियंभियहासेण, तयऽणु धणरक्खिएण सो वुत्तो । हंभो वयंस! एत्तो वि, उत्तरं [1]किंपि ण करेसि ॥१३॥
तो उज्जुयभावेणं, संतावं परममुव्वहंतेणं । भणियमियरेण भाउय!, एत्तो वि हु किं भणेयव्वं ॥१४॥
वच्चसु सगिहम्मि तुमं, ममं तु किं जीविएण एत्ताहे । जो रक्खसितुल्लाए, एवं तीए वि परिभूओ ॥१५॥
धणरक्खिएण वुत्तं, पज्जत्तमिमेण अलियसोगेण । इत्थीसु पुरिसगुणदोस-विसयविन्नाणविमुहासु ॥१६॥
नीओ य कहवि गेहे, नवरं रयणीए नीहरेऊण । पडिवन्नो सो दिक्खं, तावसमुणिणो समीवम्मि ॥१७॥
काऊणं बालतवं, देवत्तं पाविओ मओ रुवी । एसो सो इब्भसुओ, जाओ वसुदेवनामो त्ति ॥१८॥
धणरक्खिओ वि बाढं, रुवमउम्मत्तमाणसो मरिउं । अकयपरलोयकिच्चो, तिरियाऽऽइगईसु चिरकालं ॥१९॥
आहिंडिय रुवमउत्थ-दोसओ एस खंदनामो त्ति । उववन्नो एयंविह-विहीणसव्वंऽगलायन्नो ॥२०॥
ता जो तुब्भेहिं पुरा, परमत्थो पुच्छिओ स एसो त्ति । आयन्निऊण य इमं, जं उचियं तं समायरह ॥२१॥
एवं निसामिऊणं, पडिबुद्धा पाणिणो तहिं बहवे । इब्भसुया पुण घेत्तुं, पव्वज्जं सिवपयं पत्ता ॥२२॥
इय रुवमयसमुत्थं, दोसं तच्चागसंभवं च गुणं । मुणिऊणं खवग! तुमं, मा तं थेवं पि हु करेज्ज ॥२३॥
रुवमयट्ठाणमिमं, तइयं उवदंसियं मए किंपि । एत्तो बलमयठाणं, चउत्थमऽक्खेमि संखेवा ॥२४॥

"बलमदे मल्लदेवस्य दृष्टान्तः" —

खणउवचियम्मि खण-अवचियम्मि जंतूण सइ सरीरबले । अणिययरुवत्तणओ, को णु बुहो तम्मयं कुणइ ॥२५॥
तहा—
होऊण पुरा बलवं, पुरिसो संपुण्णगलकवोलो य । भयरोगसोगवसओ, खणेण विबलो जया होइ ॥२६॥
विबलत्तमुवगतो तह होउं परिसुसियगलकवोलो वि । उवयारवसेण पुणो, सो वि य जायइ जया बलवं ॥२७॥
तह पबलबलो वि नरो, जया कयंतं पडुच्च निच्चं पि । अच्चंतं अबलो च्चिय, कह णु तया बलमओ जुत्तो॥२८॥
सामन्नभूवईणं, बलेण भद्दा भवंति बलभद्दा । तत्तो य भद्दया चक्क-वट्टिणो होंति तत्तो वि ॥२९॥
तत्तो वि अणंतबला, तित्थयरा उत्तरोत्तरपहाणे । एवं बलम्मि नूणं, अबुहा कुव्वंति बलगव्वं ॥३०॥
खओवसमवसोवज्जिय-बललेसेणं पि जो उ मज्जेज्ज । सो तब्भवे वि निहणं, लभेज्ज निवमल्लदेवो व्व ॥३१॥
तहाहि—
सिरिपुरनगरे राया, अहेसि निप्पडिमलच्छिविच्छड्डो । नामेण विजयसेणो, सरयनिसायरसमजसोहो ॥३२॥
सो एगया सभाए, जावऽच्छइ आसणे सुहनिसन्नो । दाहिणदिसिपेसियसेन्न-नायगो ताव संपत्तो ॥३३॥
कयपंचंऽगपणामो, तयऽणु निविट्ठो समीवदेसम्मि । सुसिणिद्धचक्खुणा पेक्खि-ऊण भणितो य नरवइणा ॥३४॥
अइकुसलं तुह तेणं, पयंपियं देवपयपसाएणं । कुसलं न केवलं चिय, विजिओ दाहिणनरेंदो वि ॥३५॥
तो गाढहरिसपयरिस-विप्फारियलोयणेण नरवइणा । संलत्तं कहसु कहं, तेणं भणियं णिसामेह ॥३६॥
देवाऽऽएसेण अहं, हयगयरहजोहजूहसंजुत्तो । गंतूण ठिओ दाहिण-दिसिभूवइदेससंधीए ॥३७॥
दूयवयणेण तत्तो, भणाविओ सो मए जहा सिग्घं । सेवं मे पडिवज्जसु, संगरसज्जोऽहवा होसु ॥३८॥
आयन्निऊण एवं, तेणं रन्ना पयंडकोवेणं । निद्धाडिऊण दूयं, आइट्ठा नियपहाणनरा ॥३९॥
रे! रे! सिग्घं सन्नाह-सूइगं भेरिमिन्हि ताडेह । पगुणीकरेह चउरंऽग-सेन्नमाऽऽणेह जयहत्थिं ॥४०॥
उवणेह पहरणं मे, सिग्घं च पयाणगं दवावेह । तक्खणमेव नरेहिं, तहत्ति संपाडियं सव्वं ॥४१॥
तो मगरगरुलसद्दूल-पमुहधयभीसणाए सेणाए । कवलिउमणो व्व तइलोक्क-मेक्कहेलाए संचलिओ ॥४२॥
अहमऽवि चारनियेइय-तदाऽऽगमो विहियसेन्नसंवाहो । अणवरयपयाणेहिं, गंतुं तदऽभिमुहमाऽऽरद्धो ॥४३॥
नवरं चारेहिन्तो, तस्स समीवं गएण तस्सेणं । नाउं अपरिमियं कइ-यवेण जुज्झिउमणेण मए ॥४४॥
दरिसावं से दाउं, अइजविणतुरंगमेहिं नियसेन्नं । पच्छाहुत्तं सिग्घं, नियत्तियं ताव जा दूरं ॥४५॥
भीयं ति मं वयंतं, नाउं अच्चंतवड्ढिउच्छाहो । सो राया मुद्धमई, लग्गो सेन्नस्स पट्ठीए ॥४६॥
अह पइदिणगमणवसा, दढसुढियं संकडे य आवडियं । अभयं पमत्तचित्तं च, पेच्छिउं तस्स सेन्नमऽहं ॥४७॥

---
1. किं भण करेमि पाठां० ।

सव्वऽप्पणा पयट्टो, जुज्झेउं देव! तुह पभावेण । अइरेण निज्जियं पर-बलं च बहुसुहडकलियं पि ॥४८॥
एत्थंतरम्मि सेणाऽहिवुत्त-पुरिसेहिं तस्स भंडारो । पुत्तो य अट्ठवरिसो, उवणीओ भूमिनाहस्स ॥४९॥
भणियं सेणावइणा, देव! इमो दाहिणेसभंडारो । पुत्तो य इमो तस्सेव, जमुचियं कुणसु तं इन्हिं ॥५०॥
तो रण्णो तं सुयमऽणि-मिसाए दिट्ठीए पेहमाणस्स । केवलमऽणुभवगम्मो, जाओ पुत्ते व्व पडिबंधो ॥५१॥
पयपीढम्मि उववेसिऊण, चुंबिय सिरम्मि भणितो य । अच्छाहि वच्छ! नियमंदिरे व्व, इहइं अणुव्विग्गो ॥५२॥
सन्निहिमाऽऽसीणाए, सव्वाऽऽयरसमप्पिओ य देवीए । एसो सुओ मए तुह, दिन्नो त्ति पयंपियं रन्ना ॥५३॥
अब्भुवगओ य तीए, कलाकलावो य अहिगओ तेण । निज्जियसुरसुंदेरं, कमेण तारुण्णमऽणुपत्तो ॥५४॥
अच्चंतभुयबलेणं, महल्लमल्ला विनिज्जिया तेण । तत्तो रन्ना ठवियं, नामं से मल्लदेवो त्ति ॥५५॥
अह जोगो त्ति नियपए, निवेसिऊणं तयं महीनाहो । घेत्तूण तावसाणं, दिक्खं वणवासमऽल्लीणो ॥५६॥
इयरो य पबलभुयबल-निज्जियसीमालसयलमहीवालो । उव्वहमाणो बलमय-मऽसमं पालेइ नियरज्जं ॥५७॥
घोसावियं च तेणं, जो मम पडिमल्लमुवइसइ कोई । दीणारलक्खमेक्कं, नूणमऽहं तस्स देमि त्ति ॥५८॥
सोऊण इमं एक्को, पाउयजरकप्पडो किसियकाओ । देसंतरिओ पुरिसो, रायाणमुवट्ठिओ भणइ ॥५९॥
देव! निसामेसु मए, परिब्भमंतेण सयलदिसिचक्कं । पुव्वदिसाए दिट्ठो, राया नामेण वज्जहरो ॥६०॥
अप्पडिमपगिट्ठबलेण, तेणं निज्जियविपक्खचक्केण । गायाविज्जइ अप्पा, पयडं तेलोक्कवीरो त्ति ॥६१॥
न य संभवइ न एयं, जं लीलाए वि तेण भूवइणा । करडी चवेडपहओ, [1]उम्मिंठो वि हु पहे ठाइ ॥६२॥
एयं निसामिऊणं, दाऊणं तस्स देयमाऽऽइट्ठा । नियपुरिसा रे! गंतुं, तं भूवं एवमुल्लवह ॥६३॥
जइ कहवि मागहेहिं, तिलोगवीरो त्ति कित्तिओ तं सि । दाणऽत्थीहिं ता किं, तुमए ते नेव पडिसिद्धा? ॥६४॥
अहवा किं एएणं, इन्हिं पि विसेसेणं चयसु एयं । इहराऽहमाऽऽगओ एस, जुज्झसज्जो भवेज्जासि ॥६५॥
पुरिसेहिं तओ गंतुं, तहत्ति सव्वं निवेइयं तस्स । तो बद्धभिउडिभीमाऽऽ-णणेण तेणेवमुल्लवियं ॥६६॥
को सो रे तुम्ह निवो?, नामं पि हु इन्हि से मए नायं । को वा इय वत्तव्वे, तस्सऽहिगारोऽहवा होज्ज ॥६७॥
जइ मह समरहुयासण-सिहाए पावइ पयंगपयविं नो । स वरागो दुन्नयवाय-वलियअसमत्थपक्खबलो ॥६८॥
ता रे! वच्चह सिग्घं, पेसह तं जेण तम्मयं कुणिमो । सोऊणेवं विणिय-त्तिऊण पुरिसेहिं से सिट्ठं ॥६९॥
अह सव्वसेन्नसहिओ, वारिज्जंतो वि मंतिग्गेण । सो गंतुं आरद्धो, कमेण पत्तो य तद्देसं ॥७०॥
सोउं तस्साऽऽगमणं, वज्जहरो वि हु समागओ तुरियं । बहुसुहडक्खयजणणं, जायं च परोप्परं जुज्झं ॥७१॥
दट्ठूणं लोयक्खयं, वज्जहरेणं भणाविओ इयरो । जइ वहसि बलमयं ता, तुममऽहमऽवि दो वि जुज्झामो ॥७२॥
किं निरवराहलोयक्खएण, एएण उभयपक्खे वि । पडिवन्नं तेणेयं, लग्गा अन्नोन्नजुद्धेण ॥७३॥
मल्लाणं पिव उद्दाण-पडणपरियत्तणुव्वलणभीमो । विम्हइयदेवमणुओ, जाओ सिं समरसंमद्दो ॥७४॥
अह पबलभुयबलेणं, वज्जहरेणं स निज्जिओ झत्ति । बलमयकयंतवसगो, इय सो पंचत्तमऽणुपत्तो ॥७५॥
एवंविहदोसविसेस-कारयं बलमयं वियाणित्ता । आराहणाठिओ खमग!, मा तुमं तं करेज्जासि ॥७६॥
बलमयनामगमेयं, चउत्थयं कित्तियं मयट्ठाणं । सुयगोयरं पि एत्तो, पंचमगं किं पि साहेमि ॥७७॥

"श्रुतमदे स्थूलभद्रदृष्टान्तः" —

संपइ पसरंतनिरंतरोरु-मिच्छत्ततिमिरपब्भारे । पभवंतपबलपरमय-जोइसचक्कप्पयारम्मि ॥७८॥
परमप्पमायनिब्भर-विलसंतसुदुव्वियड्ढघूयम्मि । दंसणपयत्तपरपाणि-निवहहयदिट्ठिपसरम्मि ॥७९॥
भुवणगयणंऽगणम्मि, सन्नाणदिवायरो अहं चेव । एवं तुमं सुयमयं, मणयं पि करेज्ज मा धीर! ॥८०॥
किंच—
सुत्तत्थतदुभएहिम्वि, चोद्दसपुव्वाणि जाण होंताणि । छट्ठाणाऽऽवडियत्तं, सुव्वइ ताणं पि अन्नोन्नं ॥८१॥
जइ ता को णु सुयमओ, विसेसओ अज्जकालियजईणं, जेसिं मइतुच्छत्ता, न तहाविहसुयसमिद्धी वि ॥८२॥
तथाहि—

1. उम्मिंठो = निरङ्कुशः = मदोन्मत्तः इत्यर्थः ।

नो ता अंगाऽणंगप्पविट्ठ–सुयसुद्धपरिचयो अज्ज । नो तह निज्जुत्तीसु वि, न भासचुण्णिसु न वित्तीसु ॥८३॥
संविग्गगीयसक्किरिय–पुव्वमुणिकयपइन्नगाऽऽइसु वि । जइ न तह परिचओ ता, न हु कायव्वो सुयमओ वि ॥८४॥
संते वि सयलसुत्तऽत्थ–पारगत्ते न सुयमओ जुत्तो । काउं किमंऽग! तदऽपार–गत्तणम्मि जओ भणियं ॥८५॥
मा वहउ को वि गव्वं, एत्थ जए पंडिओ अहं चेव । आसव्वन्नुमयाओ, तरतमजोगेण मइविहवो ॥८६॥
दुस्सिक्खियकइरइए, समयविरुद्धे य अहिगए वि दढं । पगरणकहापबंधे, अवगासो च्चिय न हु मयस्स ॥८७॥
सामाइयमेत्तसुया वि, केवलाऽऽलोयमऽमलमऽणुपत्ता । सुयसिंधुपारगा पुण, वुत्थाऽणंतेसु चिरकालं ॥८८॥
ता मा सव्वमयहरं, सुयं पि संपाविऊण तव्विसयं । थेवं पि मयं काहिसि, तुममऽणसणिओ विसेसेण ॥८९॥
किं न सुयं सुयरासी, सुयमयदोसेण थूलभद्दो वि । अंतिमचउपुव्वाणं, छिन्नाऽणुन्नो कओ गुरुणा ॥९०॥
तहाहि—
पाडलिपुत्ते नगरे, रन्नो नंदस्स विस्सुयजसस्स । मंती सयडालो आसि, सयलनिरवज्जकज्जकरो ॥९१॥
पुत्तो य थूलभद्दो, पढमो से बीयओ सिरिओ त्ति । रूववईओ धूयाओ, सत्त जक्खापमोक्खाओ ॥९२॥
सेणा वेणा रेणत्ति, ताण पज्जंतिमाउ तिन्नेव । गेण्हंति एक्क–दो–तीहिं, वायणेहिं, अपुव्वसुयं ॥९३॥
जिणपयपूयणवंदण–समयऽत्थविभावणप्पमुहधम्मं । सम्मं कुणमाणाणं, तेसिं वोलेंति दियहाइं ॥९४॥
अह वत्थव्वो तत्थेव, भूवइं वररुई कई विप्पो । अप्पुव्वऽट्ठसएणं, वित्ताणं थुणइ पइदियहं ॥९५॥
तक्कव्वसत्तितुट्ठो, राया दाणं समीहए दाउं । नवरं सयडालम्मि, अपसंसंते न देइ त्ति ॥९६॥
तो वररुइणा सयडाल–भारिया कुसुमदाणमाऽऽईहिं । उवचरिया तो तीए, भणिओ सो कहसु कज्जं ति ॥९७॥
वज्जरियं तेण तए, भणियव्वो तह कहं पि हु अमच्चो । जह रायपुरो कव्वं, पढंतयं मं पसंसेइ ॥९८॥
पडिसुयमिमीए वुत्तो, मंती किं वररुइं न सलहेसि । तेणं पयंपियं कह, मिच्छदिट्ठिं पसंसामि ॥९९॥
अह पुणरुत्तं तीए, भणिरीए पडिस्सुयं अमच्चेणं । रायपुरो पढमाणो, पसंसिओ सो सुपढियं ति ॥६८००॥
तो अट्ठसयं रन्ना, दीणाराणं दवावियं तस्स । जाया पइदिवसं चिय, एत्तियमेत्ता य से वित्ती ॥१॥
अत्थक्खयं च पलोइय, भणियमऽमच्चेण देव! किमिमस्स । देहि त्ति तेण वुत्तं, सलाहिओ जं तए एस ॥२॥
भणियमऽमच्चेण मए, अविणट्ठं पढइ लोयकव्वं ति । सलहियमेयस्स ततो, रन्ना पुट्ठो कहं एवं ॥३॥
तेणं भणियं मज्झं, धूयाओ वि हु पढंति जेणेवं । उचियसमए य पत्तो, पढणत्थं वररुई तत्तो ॥४॥
जवणियअंतरियाओ, धरियाओ मंतिणा सधूयाओ । सेणाए पढमवाराए, अहिगयं से पढंतस्स ॥५॥
ता तीए नरवइणो, पुरओ अविणट्ठमुच्चरंतीए । वाराहिं दोहिं पढियं, वेणाए तीए वुत्तम्मि ॥६॥
तइयाए वाराए, रेणाए अहिगयं च वुत्तं च । चिरपढियं पिव सयमेव, विरइयं पिव नरिंदपुरो ॥७॥
तो कुविएणं, रन्ना, दुवारमऽवि वारियं वररुइस्स । पच्छा सो गंगाए, जंतपयोगेण दीणारे ॥८॥
ठविऊणं रयणीए, पभायसमयम्मि संथवं काउं । पाएण हणइ जंतं, तत्तो गिण्हेइ दीणारे ॥९॥
भणइ य लोयाण पुरो, थुइतुट्ठा मज्झ देइ गंग त्ति । कालंतरेण रन्ना, सोउं सिट्ठं अमच्चस्स ॥१०॥
तेणं भणियं जइ मह, पुरो इमा देइ देइ ता देव! । वच्चामो य पभाए, गंगाए पडिस्सुयं रन्ना ॥११॥
अह मंतिणा वियाले, पच्चइओ नियनरो समाइट्ठो । गंगाए पच्छन्नो, अच्छसु जं वररुई सलिले ॥१२॥
किं पि हु ठवेइ तं गिन्हि–ऊण मह भद्द! उवणमेज्जासि । गंतूण नरेण तओ, आणीया दम्मपोट्टलिया ॥१३॥
गोसम्मि गओ नंदो, मंती य पलोइओ थुणंतो सो । गंगं जलनिब्बुड्डो, थुइअवसाणे य तं जंतं ॥१४॥
करचरणेहिं सुचिरं पि, घट्टियं जाव वियरइ न किंपि । अच्चं तविलक्खत्तण–मऽणुपत्तो वररुई ताव ॥१५॥
पायडिया सयडालेण, राइणो सा य दम्मपोट्टलिया । वीवाहं काउमणो, सिरियस्स नरिंदजोग्गाइं ॥१६॥
आरद्धो छिद्दाइं, पलोइउं अन्नया य सयडालो । वीवाहं काउमणो, सिरियस्स नरिंदजोग्गाइं ॥१७॥
विविहाइं आउहाइं, पच्छन्नं कारवेइ एयं च । उवयरियाए कहियं, वररुइणो मंतिदासीए ॥१८॥
पावियछिड्डेण तओ, तेणं डिंभाइं मोयगे दाउं । सिंघाडगतियचच्चर–ठाणेसुं पाढियाणि इमं ॥१९॥
"एउ लोओ नवि जाणइ, जं सगडालु करेस्सइ । नंदु राउ मारेविणु, सिरियउ रज्जि ठवेस्सइ" ॥२०॥

सुणियं च इमं रण्णा, चरेहिं पेहावियं च मंतिगिहं । दट्ठूण कीरमाणं, पच्छण्णं आउहाऽऽइबहुं ॥२१॥
सिट्ठं रन्नो तेहिं, कुविओ राया ठिओ पराहुत्तो । सेवाऽऽगयस्स चलणेसु, निवडमाणस्स मंतिस्स ॥२२॥
कुविय त्ति निवं नाउं, सयडालो मंदिरम्मि गंतूण । कहइ सिरियस्स पुत्तय!, राया मारेइ सव्वाइं ॥२३॥
जइ न मरिस्सामि अहं, ता रन्नो पायनिवडियं वच्छ! । मं मारेज्जासि तुमं, ठइया सिरिएण तो सवणा ॥२४॥
सयडालेणं भणियं, तालउडे भक्खियम्मि मयपुव्वं । निवपायपडणकाले, मारेज्जसु तं गयाऽऽसंको ॥२५॥
सव्वविणासाऽऽसंकिय-मणेण पडिसुयमिमं च सिरिएण । तह चेव पायपडियस्स, सीसमेयस्स छिण्णं ति ॥२६॥
हा! हा! अहो! अकज्जं ति, जंपिरो उट्ठिओ य नंदनिवो । भणिओ सिरिएण तओ, देव! अलं वाउलत्तेण ॥२७॥
जो तुम्हं पडिकूलो, तेणं पिउणा वि नत्थि मे कज्जं । तो सो रन्ना वुत्तो, पडिवज्जसु मंतिपयविं ति ॥२८॥
तेणं भणियं भाया, जेट्ठो मे थूलभद्दनामोऽत्थि । बारसमं से वरिसं, वेसाए गिहे वसंतस्स ॥२९॥
सद्दाविओ स रण्णा, वुत्तो य भयाहि मंतिपयविं तिं । तेणं भणियं चिंतेमि, राइणा पेसियो ताहे ॥३०॥
सन्निहियअसोगवणे, तत्थ य सो चिंतिउं समारद्धो । परकज्जवावडाणं, के भोगा किं च सोक्खं ति ॥३१॥
सोक्खे वि हुं गंतव्वं, नरए अवस्सं अलं तदेतेहिं । इय चिंतिऊण वेरग्ग-मुवगओ भवविरत्तमणो ॥३२॥
काऊण पंचमुट्ठिय-लोयं सयमेव गहियमुणिवेसो । गंतूणं भणइ निवं, इमं मए चिन्तियं राय! ॥३३॥
उववूहिंओ निवेणं, नीहरिओ मंदिराओ स महप्पा । गणियाए घरे जाहि त्ति, पेहिओ राइणा जंतो ॥३४॥
दट्ठूण मयकलेवर-दुग्गंधपहेण वच्चमाणं तं । रन्ना नायं निव्विन्न-कामभोगो धुवमिमो त्ति ॥३५॥
ठविओ पयम्मि सिरिओ, इयरो संभूयविजयपामूले । पव्वइओ अच्चुग्गं, करेइ विविहं तवच्चरणं ॥३६॥
एत्थाऽवसरे वररुइ-विणासणाऽऽइ सुयाउ वत्तव्वं । ता जाव भद्दबाहुस्स, थूलभद्दो गओ पासे ॥३७॥
पढियाइं पुव्वाइं, देसूणाइं च तेण दस तत्तो । सुयगुरुणा सह पत्तो, पाडलिपुत्तम्मि विहरंतो ॥३८॥
जक्खापामोक्खाओ, सत्त वि भइणीओ गहियदिक्खाओ । भाउयवंदणहेउं, समागयाओ तओ सूरिं ॥३९॥
वंदित्ता पुच्छंति, जेट्ठज्जो कत्थ सूरिणा भणियं । सुत्तं परियत्तंतो, अच्छइ इह देवउलियाए ॥४०॥
तो पत्थियाउ तहियं, दट्ठुं इंतीउ थूलभद्दमुणी । नियरिद्धिदंसणत्थं, केसरिरूवं विउव्वेइ ॥४१॥
तं दट्ठुं नट्ठाओ, अज्जाओ सूरिणो निवेइंति । भयवं! कुरंगराएण, भक्खिओ नूण जेट्ठज्जो ॥४२॥
उवउत्ता आयरिया, भणंति सीहो न थूलभद्दो सो । वच्चह इन्हिं ताओ, गयाओ वंदंति तं तत्तो ॥४३॥
पुच्छिय विहारवत्तं, ठाऊण खणं गयाओ सट्ठाणं । बीयदिणे उद्देसण-कालम्मि उवट्ठिओ संतो ॥४४॥
पडिसिद्धो सूरीहिं, तुमं अजोगो त्ति थूलभद्दमुणी । सीहविउव्वणरूवं, तेण य मुणिऊण नियदोसं ॥४५॥
भणिओ सूरी भंते!, न पुणो काहामि खमह मह एयं । पडिवन्नं मुणिवइणा, कहंपि महया किलेसेण ॥४६॥
नवरं गुरुणा वुत्तो, अंतिमपुव्वाणि पढसु चत्तारि । अन्नेसिं मा देज्जसु, वोच्छिन्नाइं तओ ताइं ॥४७॥
एवं विहियाऽणत्थो, न सम्मओ सुयमओ वरमुणीणं । ता खमग! तं विवज्जिय, पत्थुयकज्जे समुज्जमसु ॥४८॥
इय पंचमऽक्खायं, सुयमयठाणं इओ पवक्खामि । तवविसयमयनिसेहण-परमं छट्ठं समासेण ॥४९॥

"तपमदस्वरुपम्" —

उग्गं पि तवो तवियं, चिरकालं बालिसो कुणइ विहलं । अहमेव दुक्करतवो-कारि त्ति मयं परिवहंतो ॥५०॥
वंसाउ व्व तवाउ, मओ हुयासो व्व अहह! संभूओ । सट्ठाणं डहइ न किं नु, सेसगुणतरुसमूहं पि ॥५१॥
सेसाऽणुट्ठाणाणं, सुदुक्करं वागरेंति तवमेव । तं पि मएणं हारिंति, ही! महं मोहमाहप्पं ॥५२॥
किं च जिणिंदाऽऽईणं, अगिलाए अणुवजीवणेणं च । अणिगूहियबलवीरिय-त्तणेण निरवेक्खवित्तीए ॥५३॥
तिहुयणदिण्णऽच्छेरं, तवकम्ममऽणुत्तरं निसामेत्ता । मज्जेज्ज को अणज्जो, थेवेणाऽवि हु नियतवेण ॥५४॥
अच्छंतु पुव्वपुरिसा, असरिसबलबुद्धिबंधुरा धणियं । जो न तहाविहअहिगय-सुओ वि सामन्नरुवो वि ॥५५॥
साहू दढप्पहारी, तस्स वि नाऊण घोरतवचरणं । तवविसए थेवं पि हु, को णु सयण्णो मयं कुज्जा ॥५६॥
तहाहि—

"दृढप्रहारिदृष्टान्तः"

एगम्मि महानगरे, नयवंतो माहणो वसइ एक्को । पुत्तो दुद्दंतो से, अविणयमाऽऽयरइ अविरामं ॥५७॥

संताविएण पिउणा, स नीणिओ अन्नया नियगिहाओ । हिंडंतो य कहंपि हु, तक्करपल्लिं समल्लीणो ॥५८॥
दिट्ठो सेणावइणा, अपुत्तएणं च पुत्तबुद्धीए । संगहिओ सिक्खविओ य, खग्गधणुपहरणाऽऽइकलं ॥५९॥
अच्चंतं पत्तट्ठो, जाओ सो नियबुद्धिविभवेण । पाणप्पिओ य सेणा-वइस्स सेसस्स य जणस्स ॥६०॥
निद्दयदढप्पहारित्तणेण, नामं दढप्पहारि त्ति । [1]गोत्रं पइट्ठियं से, सेणावइणा पहिट्ठेण ॥६१॥
अह हयलालाहरिथणु-विणस्सरत्तेण सव्वभावाणं । सेणावई तहाविह-रोगवसा मरणमऽणुपत्तो ॥६२॥
तम्मयकिच्चं काउं, जणेण सेणावइत्तणे ठविओ । उचिओ विभाविऊणं, दढप्पहारी पणमिओ य ॥६३॥
पुव्वठिईए पालइ, सो य महाविक्कमो नियं लोयं । लुंटेइ य विगयभओ, गामाऽऽगरनगरनिगमाणि ॥६४॥
अह अन्नया कयाई, हंतुं गामं कुसत्थलं स गओ । तहियं च देवसम्मो, अइरोरो माहणो वसइ ॥६५॥
तम्मि य दिणम्मि पायस-कएण सो पत्थिओ अवच्चेहिं । अच्चंतपयत्तेणं, घराघरिं मग्गिउं दुद्धं ॥६६॥
सह तंदुलेहिं अप्पइ, महिलाए तयणु तम्मि सिज्झंते । सरियातीरे वच्चइ, काउं देवऽच्चणाऽऽइविहिं ॥६७॥
चोरा य तस्स भवणे, पत्ता दिट्ठो य पायसो सिद्धो । गहिओ य तक्करेणं, एक्केण छुहाकिलंतेण ॥६८॥
तं हीरंतं दट्ठुं, हा! हा! मुट्ठ त्ति जंपिराइं जवा । गंतूण चेडरूवाइं, देवसम्मस्स साहिंति ॥६९॥
अह सो कोववसुग्गय-भालयलकरालभिउडिभीममुहो । पुणरुत्तचंडतंडविय-तारनयणो विमुक्कसिहो ॥७०॥
अइवेगगमणविगलिय-कडिल्लसंठवणवावडकरग्गो । करहसिसुपुच्छसच्छह-मंसूणि परामुसंतो य ॥७१॥
रे! रे! कहिं गमिस्सह, पाव! मिलेच्छ! त्ति वाहरेमाणो । परिहं घेत्तुं लग्गो, जुज्झेउं तक्करेहिं समं ॥७२॥
गुरुगब्भभरक्कन्ता, जुज्झंतं तं च वारए महिला । तहवि न सो पहरन्तो, विरमइ कुविओ कयंतो व्व ॥७३॥
तो तेणं हम्मंते, दट्ठुं सेणावई नियचोरे । अच्चंतजायकोवो, आयड्ढिय तिक्खकरवालं ॥७४॥
छिंदेइ माहणं माह-णिं च तस्संऽतरम्मि वट्टंतिं । मा पहरसु त्ति पुणरुत्त-जंपिरिं अड्ढदिन्नकरं ॥७५॥
दट्ठुं च फुरुफुरंतं, असिघाएणं दुहाकयं गब्भं । संजायपच्छयावो, दढप्पहारी विचिंतेइ ॥७६॥
हा! हा! अहो! अकज्जं, कयं भए कहमिमाउ पावाओ । मुंचिस्समऽहं एत्तो, ता किं तित्थेसु वच्चामि ॥७७॥
किं वा भेरवपडणे, पडामि जलणम्मि अहव पविसामि । किं वा खिवामि भागी-रहीए सलिलम्मि अप्पाणं ॥७८॥
एमाऽऽइ विसुद्धिकए, उव्विग्गमणो विचिंतयंतो सो । पेच्छइ मुणिणो एगत्थ, संठिए धम्मझाणपरे ॥७९॥
तप्पायपंकयं वंदि-ऊण परमाऽऽयरेण सो भणइ । एवंविहस्स पावस्स, कहह भंते! मह विसुद्धिं ॥८०॥
नीसेसपावपव्वय-निद्दलणुद्दामकुलिसपडितुल्लो । कहिओ तस्स मुणीहिं, कयसियसम्मो समणधम्मो ॥८१॥
उवलद्धकम्मविवरत्तणेण, अमयं व तस्स अभिरुइओ । तो संवेगोवगतो, ताण समीवम्मि निक्खंतो ॥८२॥
सुमरिस्सं जत्थ दिणे, तं दुच्चरियं न तत्थ भुंजिस्सं । इयऽभिग्गहं च घेत्तुं, विहरइ तत्थेव गामम्मि ॥८३॥
सो एस तहाविहगरुय-पावकारि त्ति जंपमाणेण । निंदिज्जइ लोगेणं, हम्मइ य पहम्मि हिंडंतो ॥८४॥
अहियासइ सो सम्मं, अत्ताणं निंदइ य पुणरुत्तं । न य गिन्हइ आहारं, धम्मज्झाणम्मि वट्टइ य ॥८५॥
एवं च तेण धीरेण, एक्कसिं पि हु कयाइ न हु भुत्तं । उप्पाडियं च नाणं, विहुणियनीसेसकम्मरयं ॥८६॥
सुरअसुरवाणमंतर-थुव्वंतमयंकनिम्मलगुणोहो । अकलियसुहप्पमाणं, कमेण पत्तो य निव्वाणं ॥८७॥
एयं णिसामिऊणं, सुट्ठु विगिट्ठं तवं करेंतो वि । मा तम्मयं करेज्जासि, खवग! थेवं पि सिवकामी ॥८८॥
छट्ठमयट्ठाणमिमं, निद्दिट्ठं लेसओ सदिट्ठंतं । एत्तो य लाभविसयं, सत्तमयं तं पसाहेमि ॥८९॥

"लाभमदस्वरूपम्" —

खउवसमाउ लाभंतराय-नामस्स कम्मुणो लाभो । तस्सेव उदयओ पुण, होइ अलाभो नराण तओ ॥९०॥
लाभे वि लद्धिमंतो-ऽहमेव एवं न अत्तउक्करिसो । न विसाओ य अलाभे, विवेयवंतेण कायव्वो ॥९१॥
जो लाभवं इहभवे, भिक्खं पि भवंतरे न सो लभइ । कम्मवसा दिट्ठंतो, इहं मुणी ढंढणकुमारो ॥९२॥
तहाहि—

"ढंढणकुमार दृष्टान्तः"

मगहाविसए नामेण, धण्णपूरो त्ति अत्थि वरगामो । किसिपरो पारासरनामो, तत्थ धणड्ढो वसइ विप्पो ॥९३॥

1. गोत्रं = गुणवाचकम् ।

कुणइ य जं जमुवायं, दव्वकए करिसणाऽऽइयं किंपि । लाभाय भवइ सो सो, तस्स चिरऽज्जियसुकयवसओ ॥९४॥
विलसइ य पवरभूसण-दिव्वंऽसुयकुसुममणहरसरीरो । बंधूहिं समं एयं, लच्छीए फलं ति मन्नंतो ॥९५॥
मगहाऽहिवनरवइणो, आएसा सो य गामपुरिसेहिं । करिसावेइ चरीओ, हलाण पंचहिं सएहिं सया ॥९६॥
अह अन्नया नराहिव-चरीउ करिसित्तु उवरया एए । भोयणसमयम्मि छुहा-किलामिया करिसगा [1]सुढिया ॥९७॥
वसहा य चंभमेक्केक्क-मऽप्पणो तेण दाविया छेत्ते । हत्थमऽणिच्छंता वि हु, बलाऽभियोगा अकरुणेण ॥९८॥
तप्पच्चइयं च दढं, निव्वत्तियमंऽतराइयं कम्मं । मरिऊण समुप्पन्नो, नेरइओ नरयपुढवीए ॥९९॥
तत्तो उव्वट्टित्ता, विचित्तभेयासु तिरियजोणीसु । देवेसु मणुस्सेसु य, संसरिओ कहवि सुकयवसा ॥६९००॥
जलनिहिसंगेण व पत्त-पुण्णलावण्णमणहरंऽगीहिं । रामाहिं रायमाणे, विसिट्ठसोरट्ठदेसम्मि ॥१॥
धणधन्नसमिद्धाए, पच्चक्खं देवलोगभूयाए । पयइगुणरागिसद्धाण-सूरथम्मिट्ठलोयाए ॥२॥
बारवईए पुरीए, मुसुमूरियकेसिकंसदप्पस्स । तिक्खंडभरहभूवइ-सिरमणिरुइरुइरचरणस्स ॥३॥
जायवकुलनहयलदिणयरस्स, सिरिकन्हवासुदेवस्स । पुत्तत्तेणुववन्नो, नामेणं ढंढणकुमारो ॥४॥
अहिगयकलाकलावो, कमेण सो तरुणभावमऽणुपत्तो । जुवईणं मज्झगओ, विलसइ दोगुंदुगसुरो व्व ॥५॥
अह अन्नया कयाइ, पसमियसव्वंऽगिवग्गसंतावो । देहप्पहाहिं दिसि दिसि, कुवलयपयरं व विकिरंतो ॥६॥
अट्ठारससहसेहिं, सीलंगाणं व पवरसाहूणं । सहिओ सहिओ इव धम्म-गारिजूइयखग्गस्स ॥७॥
भयवं अरिट्ठनेमी, गामाऽऽईसुं कमेण विहरंतो । संपत्तो बारवइं, समोसढो रेवउज्जाणे ॥८॥
तो जिणपउत्तिविणिउत्त-माणवेहिं कयप्पणामेहिं । आगमणेणं तित्थाऽ-हिवस्स वद्धाविओ कन्हो ॥९॥
तेसिं च पारिओसिय-मुचियं दावाविऊण महुमहणो । जायवग्गेण समं, निक्खमिओ वंदिउं नेमिं ॥१०॥
तो परमहरिसपगरिस-विप्फारियलोयणो जिणं नमिउं । गणहरपमुहे य मुणी, समुचियठाणे समासीणो ॥११॥
सुरमणुयतिरियसाहारणाए, वाणीए भुवणनाहेण । पारद्धा धम्मकहा, पडिबुद्धा पाणिणो बहवे ॥१२॥
अच्चंततहाविहकुसल-कम्मसंभारभाविकल्लाणो । पडिबुद्धो धम्मकहं, सुणिउं ढंढणकुमारो वि ॥१३॥
मुणियऽवयारं मित्तं, भुयंगभीमं गिहं व विसयसुहं । उज्झित्ता सो धन्नो, पव्वइओ जयगुरुसयासे ॥१४॥
संसाराऽसारत्तं, भावंतो सइ सुयं [2]अहिज्जेइ । कुव्वंतो विविहतवं, विहरइ सव्वन्नुणा सद्धिं ॥१५॥
विहरंतस्स य तं पुव्व-जम्मनिव्वत्तियं अणिट्ठफलं । समुदिण्णमंऽतराइय-कम्मं ढंढणकुमारस्स ॥१६॥
तो तद्दोसेणं, जेण, साहुणा सह भमेइ सो भिक्खं । उवहणइ तस्स लद्धिं पि, अहह! भीमाइं कम्माइं ॥१७॥
एगम्मि अवसरम्मि, मुणीहिं तदऽलाभवइयरे सिट्ठे । मूलाओ च्चिय सिट्ठो, तव्वुत्तंतो जिणिंदेण ॥१८॥
तं सोउं सो धीमं, अभिग्गहं गिण्हइ जिणसगासे । एत्तो परलद्धीए, भंजिस्समऽहं न कइया वि ॥१९॥
एवमऽविसण्णचित्तो, सुहडोव्व रणाऽवणिं समल्लीणो । दुक्कम्मवेरिविहियं, दुक्खं थेवं पि अगणेंतो ॥२०॥
निव्वाणविजयलच्छिं, उवलद्धुं विहियविविहवावारो उवभुत्ताऽमयवरभो-यणो व्व दिवसाइं वोलेइ ॥२१॥
अह अन्नया जिणिंदो, पुट्ठो कंसाऽरिणा भयवमेसिं । साहूणं मज्झे को, दुक्करकारि त्ति वागरसु ॥२२॥
तो भणियं जयगुरुणा, नणु दुक्करकारया इमे सव्वे । नवरं दुक्करकारी, एत्तो वि हु ढंढणकुमारो ॥२३॥
बहुकालो वोलीणो, जम्हा एयस्स धीरहिययस्स । दुसहमऽलाभपरीसह-मऽसमं सम्मं सहंतस्स ॥२४॥
धन्नो कयपुन्नो सो, जं कित्तइ इय सयं जएक्कपहू । एवं परिभावंतो, जहाऽऽगयं पट्ठिओ कन्हो ॥२५॥
पविसंतेण पुरीए, तेण य दिट्ठो कहिं पि दिव्ववसा । भिक्खं भममाणो उच्च-नीयगेहेसु स महप्पा ॥२६॥
तो दूराओ च्चिय करिवराओ, ओयरिय परमभत्तीए । धरपीढलुलंतसिरेण, वंदिओ सो सिरिहरेण ॥२७॥
तं महुमहेण वंदिज्ज-माणमऽवलोइऊण इब्भेण । गेहट्ठिएण एक्केण, चिंतियं विम्हियमणेण ॥२८॥
धण्णो एस महप्पा, जो एवं माहवेण भत्तीए । वंदिज्जइ सविसेसं, देवाण वि वंदणिज्जेण ॥२९॥
अह वंदिउं नियत्ते, हरिम्मि भिक्खं कमेण भममाणो । इब्भस्स तस्स भवणे, संपत्तो ढंढणकुमारो ॥३०॥
तो तेण सिंहकेसर-मोयगथालेण गरुयभत्तीए । पडिलाभिओ महप्पा, गओ य सव्वन्नुपामूले ॥३१॥

1. सुढिया = श्रान्ताः । 2. अहिज्जन्तो पाठां० ।

नमिऊण भणइ भगवं!, किमंऽतरायं ममेण्हि खीणं ति । जयगुरुणा वागरियं, विज्जइ अज्ज वि य तस्सेसं ॥३२॥
एसा उ कन्हलद्धी, परमत्थेणं जओ नमंतं तं । तुह पेच्छिऊण इब्भेण, वियरिया मोयगा एए ॥३३॥
एवं जिणेण भणिए, स महप्पा ते परस्स लद्धि ति । गंतूण थंडिलम्मि, सम्मं परिठविउमाऽऽरद्धो ॥३४॥
परिठवमाणस्स य कम्म-कडुयविवागं विचिंतयंतस्स । सुद्धज्झाणवसेणं, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥३५॥
तो केवलिपज्जायं, पालित्ता बोहिउं च भव्वजणं । जस्सऽट्ठा पव्वइओ, तं मोक्खपयं समणुपत्तो ॥३६॥
एवं कम्माऽऽयत्तं, लाभाऽलाभं विभाविउं धीर! । मा लाभयं पि काहिसि, तम्मयमऽच्चंतपडिसिद्धं ॥३७॥
इय लाभमयट्ठाणं, सत्तममुवइट्ठमऽट्ठमं इण्हिं । इस्सरियमयनिवारण-परमं अक्खामि संखेवा ॥३८॥

"ऐश्वर्यमदस्वरुपम्" —

गणिमं धरिमं मेज्जं, पारिच्छेज्जं धणं पभूयं मे । कोट्ठागारा खेत्तं, वत्थुं च अणेगहा मज्झ ॥३९॥
रुप्पसुवन्नाण चया, आणासंपाडगा विविहभिच्चा । दासीदासजणा विय, रहा य तुरगा करिवरा य ॥४०॥
गोमहिसिकरहपभिइय-विचित्तभेया पभूयभंडारा । गामनगराऽऽगराऽऽई, अणुरत्तकलत्तपुत्ताऽऽई ॥४१॥
एवं पसत्थसव्वत्थ-वित्थराऽवत्थमीसरत्तं मे । मन्नेऽहमेव ता इह, सक्खा जक्खो स वेसमणो ॥४२॥
इय इस्सरियं पि पडुच्च, न हु मओ सव्वहा वि कायव्वो । संसारुत्थपयत्था, सव्वे वि विणस्सरा जम्हा ॥४३॥
रायऽग्गिचोरदाइय-परिकुवियसुराऽऽइकारणगणम्मि । सइ सन्निहिए विहव-क्खयस्स न हु तम्मओ जुत्तो ॥४४॥
किंच—
न कुणंति दक्खिणुत्तर-महुरावणियाण सोउमऽक्खाणं । समयपसिद्धं धन्ना, इस्सरियत्ते मयलवं पि ॥४५॥
तहाहि— "धनसारपुत्रस्यदृष्टान्तः"
सुपसत्थतित्थजयपहु-सुपासमणिथूमसोभिया नयरी । नामेण अत्थि महुरा, मणोहरा चमरचंच व्व ॥४६॥
तुलिएलविलमहाधण-संभारो तीए लोयविक्खाओ । इब्भो परमविलासी, अहेसि नामेण धणसारो ॥४७॥
सो अन्नया तहाविह-कज्जवसा भूरिपुरिसपरियरिओ । दाहिणमहुराए गओ, तहिं च समविभवकलिएण ॥४८॥
धणमित्तेणं वणिएण, विहियपाहुन्नयाऽऽइकिच्चस्स । अच्चंतपणयसारा, जाया निक्कित्तिमा मेत्ती ॥४९॥
अन्नम्मि वासरम्मि, पसन्नचित्ताण सुहनिसन्नाण । उल्लावो संवुत्तो, तेसिं अन्नोन्नमियरुवो ॥५०॥
पुहवीए भमंताणं, केसिं समं नेव होंति उल्लावा । के वा पणयपहाणं, न मित्तभावं पवज्जंति ॥५१॥
संबंधमंऽतरेणं, किं तु सरंतेसु भूरिदियसेसु । सो पल्हत्थइ वेलुय-निम्माओ पालिबंधो व्व ॥५२॥
संबंधो य १दुरुवो, मूलभवो होइ उत्तरभवो य । पिइमाइभाइविसओ, मूलो सो इण्हि नेवऽत्थि ॥५३॥
उत्तरसंबन्धो पुण, वीवाहित्तेण संभवइ सो य । जइ णो धूया जायइ, सुओ व काउं तओ जुत्तो ॥५४॥
एवं च जावजीवं, विहडइ मेत्ती न वज्जजडिय व्व । पडिवन्नमिमं दोहि वि, जुत्तं ति विमुक्ककुवियप्पं ॥५५॥
अह धणमित्तस्स सुओ, जाओ धणसारसेट्ठिणो धूया । अण्णोण्णं ताण कयं, बालाण वि तेहिं दिज्जं ति ॥५६॥
नियनगरीए य गओ, धणसारो साहिऊण नियकज्जं । इयरो य संपउत्तो,' वट्टिउमऽभिरुइयकिच्चेसु ॥५७॥
एगम्मि य पत्थावे, सरयऽब्भचलत्तणेण जीयस्स । सो पत्तो पंचत्तं, तस्स पयम्मि य ठिओ पुत्तो ॥५८॥
सो एगया निसन्नो, मज्जणपीढम्मि ण्हाणकरणत्थं । तइया चउसु दिसासुं, चउरो कलहोयवरकलसा ॥५९॥
तत्तो दुव्वण्णमया, तंबमया तयणु मिउमया तत्तो । तेहिं च कीरमाणे, ण्हाणे महया पबंधेण ॥६०॥
इस्सरियत्तस्स सुरेंद-चावचवलत्तणेण कणयमओ । पुव्वदिसाए कलसो, नट्ठो गयणेण खयरो व्व ॥६१॥
एवं चिय सव्वे वि हु, नट्ठा तो उट्ठियस्स ण्हाणाओ । नट्ठं मज्जणपीढं पि, विविहमणिकणयचिंचइयं ॥६२॥
तो जायगाढसोगो, सो तव्विहवइयरं पलोइत्ता । गेयट्ठमुवट्ठियनाड-इज्जपुरिसे विसज्जेइ ॥६३॥
जाओ भोयणसमओ, भिच्चेहिं रसवई उवट्ठविया । कयदेवऽच्चणकिच्चो, भोयणकरणत्थमाऽऽसीणो ॥६४॥
विहियं पुरिसेहिं पुरो, तस्सिंदुसमुज्जलं रययथालं । अच्चंतजच्चकंचण-कच्चोलयरुप्पसिप्पिजुयं ॥६५॥
भुंजंतस्स य एक्केक्क-भायणं नासिउं समारद्धं । ता जाय मूलथालं पि, पत्थियं नासणकएण ॥६६॥
तो तेण विम्हिएणं, गहियं हत्थेण तं पणस्संतं । गहियं च जेत्तियं मोत्तुं, तत्तिअं सेसयं नट्ठं ॥६७॥

तो सिरिहरं पलोयइ, तं पि हु पेहेइ विगयसव्वधणं । नट्ठाइं निहाणाइं, यड्ढिपउत्तं पि नो लहइ ॥६८॥
आभरणसमूहं पि हु, नो पावइ नियहत्थठवियं पि । व्रह उययरिओ लहु दास-दासीवग्गो वि हु पलीणो ॥६९॥
सयणगणो वि समग्गो, कओवयारो वि णेगवाराओ । बाढं अपरिचिओ इव, कत्थइ किच्चे ण वट्टेइ ॥७०॥
एवं च तं समग्गं, गंधव्वपुरं व सुमिणदिट्ठं व । परिभाविऊण सो सोग-विहुरहियओ विचिंतेइ ॥७१॥
धी! मज्झ जीविएणं, जस्सेवं मंदभग्गसिरमणिणो । जम्मंतरं व पल्लट्ट-मेक्कदिवसस्स चिय अंते ॥७२॥
सयखंडं विहडियसं-पयं पुणो संघडंति सप्पुरिसा । हारिंति विज्जमाणं पि, मारिसा अहह! काउरिसा ॥७३॥
मन्ने पुव्वभवम्मि, धुवं मए किंपि नो कयं सुकयं । पडिओ इण्हिं चिय तेण, एस विसमो दसापागो ॥७४॥
ता संपयं पि सुकयऽज्जणाय, वट्टामि होउ सोगेण । इइ चिन्तिऊण सिरिधम्म-घोसमूलम्मि पव्वइओ ॥७५॥
संवेगाऽऽचडियमई, विणयपरो परमधम्मसद्धाए । सुत्तेणं अत्थेण य, पढेइ एक्कारसंऽगाइं ॥७६॥
पुव्वगहियं च तं थाल-खंडमुज्झइ न कोउहल्लेण । जइ पुण विहरंतो कहवि, पुव्वथालं निएमि त्ति ॥७७॥
अनियविहारचरियाए, विहरमाणो य सो कहिं पि गओ । उत्तरमहुरपुरीए, भिक्खट्ठाए य भममाणो ॥७८॥
तस्स धणसारइब्भस्स, मंदिरे सुंदरे कहवि पत्तो । मज्जित्ता तव्वेलं, इब्भो य उवट्ठिओ भोत्तुं ॥७९॥
दिन्नं पुरओ तं चेव, रययत्थालं सुया वि से पुरओ । नवजोव्वणाऽभिरामा, ठिया गहेऊण वीयणगं ॥८०॥
साहू वि अणिमिसऽच्छो, खंडं थालं पलोयए जाव । इब्भेण ताव भिक्खा, दवाविया तहवि नो जाइ ॥८१॥
तो इब्भेणं भणियं, भयवं! किं पेच्छसे ममं धूयं । वागरियं मुणिणा भद्द!, नत्थि धूयाए मे कज्जं ॥८२॥
किं तु कहेसु कहं ते, थालमिणं तेण जंपियं भंते! । अज्जयपज्जयपडिपज्ज-याऽऽगयं साहुणा भणियं ॥८३॥
साहेसु अवितहं तो, इब्भेणं पयंपिअं महं भयवं! । ण्हायंतस्स उवट्ठिय-मऽखिलं ण्हाणोवगरणमिणं ॥८४॥
भोयणसमए य इमं, भोयणभंडगपमोक्खमुवगरणं । सिरिघरमवि पउरेहिं, निहीहिं आऊरियं गाढं ॥८५॥
मुणिणा भणियं सव्वं, एयं मह आसि तेण तो वुत्तो । कहमेयं? तो मुणिणा, पच्चयहेउं तओ थालं ॥८६॥
आणावेत्ता तं थाल-खंडगं पुव्वकालसंगहियं । ढोइयमऽह तत्तं पिव, [1]झडत्ति लग्गं सठाणम्मि ॥८७॥
सिट्ठो य थामपिउनाम-विभवविद्धंसवइयरो सव्वो । सो एस मज्झ जामा-उओ त्ति नाऊण तो इब्भो ॥८८॥
अंतोपसरंतमहंत-सोगवसनीहरंतबाहजलो । साहुमुवगूहिऊणं, बाढं रोवेउमाऽऽरद्धो ॥८९॥
विम्हइयमणेण य परि-यणेण कहकहवि वारिओ संतो । गाढपडिबंधबंधुर-मेवं साहुं समुल्लवइ ॥९०॥
धणवित्थारो सव्वो, तदऽवत्थो एस अच्छइ तुज्झ । एसा य पुव्वदिण्णा, धूया मे तुज्झ साहीणा ॥९१॥
आणानिद्देसकरो, किंकरवग्गो य एस नीसेसो । ता पव्वज्जं मोत्तुं, विलससु सगिहे व्व सच्छंदं ॥९२॥
मुणिणा भणियं पुव्वं, पुरिसो परिचयइ कामभोगगुणे । ते वा पुव्वं पुरिसं, चयंति सुकयाऽवसाणम्मि ॥९३॥
जे उज्झिऊण वच्चंति, तेसिं गहणं न माणिणो जुत्तं । सरयऽब्भविब्भमेहिं, ता मज्झं तेहिं पज्जत्तं ॥९४॥
एवं निसामिऊणं, इब्भो पाउब्भवंतसंवेगो । चिंतेइ ममं पि इमे, पावा नियमं चइस्संति ॥९५॥
ता किं इमेहिं नियमा, विणाससीलेहिं कडुविवागेहिं । दुग्गइनिबंधणेहिं, भूयइचोराऽऽइगज्झेहिं ॥९६॥
हिययाऽऽयासकरेहिं, दुस्संठप्पेहिं दुक्खदेएहिं । सव्वासु अवत्थासुं, बाढं सम्मोहजणएहिं ॥९७॥
एवं विभाविऊणं, इब्भो मोत्तूण सव्वमऽवि संगं । सुगुरुसमीवे सम्मं, पडिवन्नो सुमुणिपव्वज्जं ॥९८॥
इय इस्सरियं नाउं, विणस्सरं तम्मयं कहं कुसलो । कुज्जा तहाविहे वि हु, विहवे पत्तम्मि कम्मवसा ॥९९॥

तहा—

सीसा सीसिणियाओ, आणापरसव्वसंघपरिसा मे । मह सपरसमयसंतिय-महत्थपोत्थयपवित्थारो ॥७०००॥
मह पउपवत्थपायाऽऽ-सणाइं अहमेव पउरजणनेयो । एवं पमुहो वि दढं, इस्सरियमओ अणिट्ठफलो ॥१॥
एवं अट्ठपयारं, मयं निरुद्धंऽगिसोग्गइप्पयारं । कयघणतमंऽधयारं, मा काहिसि बहुदुहवियारं ॥२॥

"तप-ऐश्वर्यमदस्थाने, बुद्धिबलमदप्रियतामदस्वरूपम्" —

अहवा तवइस्सरिय-ट्ठाणेसुं बुद्धिवल्लहत्ताइं । वत्तव्वाइं तेसिं, सऊवमेयं समवसेयं ॥३॥

1. चडत्ति पाठां० ।

गहणुग्गाहणनवकिइ-वियारणट्ठाऽवधारणाऽऽईसु । बुद्धीए वियप्पेसुं, अणंतपज्जायवुड्ढेसुं ॥४॥
पुव्वपुरिससीहाणं, विन्नाणाऽइसयगुणअणंतत्तं । सोउं संपयपुरिसा, कह नियबुद्धीए जंति मयं ॥५॥
चाडुसएहिं काऊण, वल्लहं अप्पयं परजणस्स । सुणहो व्व ही! वराओ, गरुयमरट्टं पयट्टेइ ॥६॥
तह तेणेव स मण्णइ, इमस्स अहमेव वल्लहो एक्को । कत्ता हत्ता च अहं, एयगिहे सव्वकज्जेसु ॥७॥
न उण वियाणइ मूढो, पुराकडेहिं सुनिउणपुन्नेहिं । एयस्स पुन्ननिहिणो, विहिओ सव्वंगकम्मयरो ॥८॥
अह अवगण्णिय कइया वि, जइ तहाभूयवल्लहत्तं से । दंसेइ विप्पियत्तं, ता तं डहइ विसायऽग्गी ॥९॥
तम्हा एवंविहव-ल्लहत्तणे पाविए वि को णु गुणो । मयकरणेणं सुंदर!, दरिसियपच्छावियारम्मि ॥१०॥
चाणक्कयसगडालाऽ-भिहाणमंतीण पुव्वकहियाइं । सोउं कहाणयाइं, मा काहिसि वल्लहत्तमयं ॥११॥
ता एयवल्लहो हं ति, वायमऽवहाय भीमभुयगं व । संपत्तवल्लहत्तो वि, तुममिमं चेव भावेज्जा ॥१२॥
अणवेक्खियनियकज्जो, वट्टामि इमस्स सयलकज्जेसु । तेण पणयप्पहाणं, पयडइ मइ वल्लहत्तमिमो ॥१३॥
जइ पुण निरवेक्खो हं, भवामि ता नूण निरुवयारि त्ति । चक्खुपहम्मि वि ठाउं, न लहामि कयाऽवराहो व्व॥१४॥
अट्ठ मयट्ठाणाइं, उवलक्खणवयणमेव जाणाहि । इहरा वाई वत्ता, पोरुसिओ नीइमंतो हं ॥१५॥
इच्चाऽऽइगुणुक्करिसा, मयठाणाइं अणेगभेयाइं । सव्वगुणगोयरं पि हु, ता मा काहिसि मयं वच्छ! ॥१६॥
जाइकुलाऽऽइमयपरे, पुरिसे न गुणोऽत्थि किं तु मयकरणे । जाइकुलाऽऽईणं चिय, भवंऽतरे लहइ हीणत्तं ॥१७॥
अन्नं नियगुणेहिं, खिंसंतो तेहिं चेव अप्पाणं । उक्करिसंतो बंधइ, नीयागोयं घणं कम्मं ॥१८॥
तप्पच्चयं च सुचिरं, सरइ अपारम्मि भवसमुद्दम्मि । अच्चंताऽहमजोणी-कल्लोलुप्पीलहीरंतो ॥१९॥
इहभवियसव्वगुणगण-गोयरगव्वं अकुव्वमाणो य । जम्मंऽतरम्मि निम्मल-समत्थगुणभायणं भवइ ॥२०॥
इय बीयं पडिदारं, अट्ठमयट्ठाणनामगं भणियं । कोहाऽऽइनिग्गहमिओ, तइयं दारं पवक्खामि ॥२१॥

"क्रोधादिनिग्रहद्वारम्" —

कोहाऽऽईण विवागो, अट्ठारसपावठाणगे वुत्तो । पत्तेयं पत्तेयं, जइ वि हु दिट्ठंतदारेण ॥२२॥
तह वि हु तव्विणिवित्ती, अच्चंतं दुक्कर त्ति एत्थं पि । भुज्जो ठाणाऽसुण्णत्थ-माऽऽह खवगं पडुच्च गुरू॥२३॥
कोहाऽऽईण विवागं, नाऊणं ताण निग्गहे य गुणं । निग्गिन्हसु तं सुपुरिस!, कसायरिउणो पयत्तेणं ॥२४॥
जं अइतिक्खं दुक्खं, जं च सुहं उत्तमं तिलोईए । तं जाण कसायाणं, वुड्ढिक्खयहेउयं सव्वं ॥२५॥
न वि तं करेंति रिउणो, न वाहिणो न य मयारिणो कुविया । कुव्वंति जमऽवयारं, मुणिणो कुविया कसायरिऊ॥२६॥
रागद्दोसवसगया, कसायवामोहिया नरा बहवे । संसारुच्छेयकरं, जिणेंदवयणं पि सिढिलेंति ॥२७॥
धण्णाणं खु कसाया, होऊणं जलहरा व्व साऽऽडोवा । परकोवपवणपहया, दूरुल्लसिया वि विहडंति ॥२८॥
धन्नाणं खु कसाया, मयणवियार व्व कुलपसूयाणं । अंतो च्चिय जंति खयं, अकयाऽकज्जा सयाकालं ॥२९॥
धन्नाणं खु कसाया, गिम्हाऽऽयवसेयसलिलबिंदु व्व । जत्थुप्पन्ना निहणं पि, नूण तत्थेव वच्चंति ॥३०॥
धन्नाणं खु कसाया, परमुहकोद्दालगरुयघाएहिं । अंतो च्चिय जंति खयं, सुरंगधूलि व्व खम्मंता ॥३१॥
धन्नाणं खु कसाया, परवयणाऽनिलवसेण संभूया । होन्ति असारफल च्चिय, तुंगा वि हु सरयमेह व्व ॥३२॥
धन्नाणं खु कसाया, अमरिसवसवड्ढिया सुभीसणया । गरुया वि जंति विलयं, जलकल्लोल व्व तडपत्ता ॥३३॥
धण्णाण वि ते धण्णा, कसायगोधूमजवकणे जे उ । निप्पिट्ठपेसणे सह-करेंति अंतोघरट्ट व्व ॥३४॥
ता भो देवाणुपिया!, तुमं पि कोहाऽऽइनिग्गहपहाणो । होऊण तहा जय जह, सम्मं आराहणं लहसि ॥३५॥
इय कोहाइविणिग्गह-दारं तइयं समासओ कहियं । तुरियमिओ सवियप्पं, पमायदारं पयंपेमि ॥३६॥

"प्रमादद्वारम्" —

धम्मे जेण पमायइ, स पमाओ सो य होइ पंचविहो । मज्जं[1] विसय[2] कसाए[3] निद्दं[4] विगहं[5] पि य पडुच्च ॥३७॥

मद्यस्वरूपम्" —

तत्थ य मज्जइ जीवो, जेणं मज्जं ति भन्नई तेण । सव्वेसिं पि वियाराण-मऽविकलं कारणं पयडं ॥३८॥
अबुहअविसिट्ठपेयं, एयं हेयं तु बुहविसिट्ठाण । जम्हा पेयमऽपेयं, विबुहविसिट्ठ च्चिय मुणंति ॥३९॥

इहपरलोयवियारे, जमऽदुट्ठं दिट्ठमिह विसिट्ठेहिं । तं उत्तमं जसकरं, पयडं पेयं पवित्तं च ॥४०॥
जं चाऽऽगमपडिकुट्ठं, विसिट्ठजणनिंदियं वियारकरं । इहलोगे च्चिय पच्चक्ख-मेव दीसन्तबहुदोसं ॥४१॥
जं पीयं पच्छायइ, विमलं पि मइं मणं च उवहणइ । सव्विंदियाण जणयइ, यत्थुविबोहे वियज्जासं ॥४२॥
अप्पा वि जओ समभाव-पत्तसव्वेंदियो वि सुत्थो वि । पोढमई वि हु फुडचेय-णो वि छेयाण वि नराण ॥४३॥
आसाइयमेत्ताओ, सहस च्चिय अन्नहा विपरिणमइ । तं किर मज्जमऽणज्जं, को णु सयण्णो पिबेज्ज फुडं ॥४४॥
इहपरभवदुहजणगा, दोसा पइसमयमेव मज्जाओ । पाउब्भवंति विविहा, बीयंऽकूरा इव जलाओ ॥४५॥
तहा—
मज्जा रागुक्करिसो, रागुक्करिसाउ वड्ढइ कामो । कामाऽऽसत्तो य दढं, गम्माऽगम्मं न चिंतेइ ॥४६॥
विगलत्तमऽविगलाणं, मज्जं जइ जणइ इहभवे चेव । ता वहउ विसं समसीसि-यं पि सह तेण किं भणिमो॥४७॥
अह मज्जं चिय जम्मंतरेवि, विगलिंदियत्तणं देइ । एक्कभवियं विसं ता, कह मज्जेणं समं तुलइ ॥४८॥
न य चिंतणीयमेयं, जह संधाणत्तओ विसिट्ठाण । पेज्जं चिय मज्जमऽहो!, जहाऽऽरनालं हि जेणेह ॥४९॥
पेयाऽपेयववत्था, सव्वा वि विसिट्ठलोयसत्थकया । संधाणसमत्ते वि हु, पेयं एक्कं परं न तहा ॥५०॥
सिट्ठं संधियदक्खाऽऽइ-पाणगं सव्वहा जहा पेयं । संधाणत्ते तुल्ले वि, न तह अत्थियकरीरजलं ॥५१॥
ता एसा लोयकया, पेयववत्था इमा उ सत्थकया । लोइयलोउत्तरियं, तं च दुहा तत्थिमं पढमं ॥५२॥
गौटी पैष्टी तथा माध्वी, विज्ञेया त्रिविधा सुरा । यथा चैका तथा सर्वा, न पातव्या द्विजोत्तमैः ॥५३॥
यस्य कायगतं ब्रह्म, मद्येन प्लाव्यते सकृत् । तस्य व्यपैति ब्राह्मण्यं, शूद्रत्वं च नियच्छति ॥५४॥
नारीपुरुषयोर्हन्ता, कन्यादूषकमद्यपौ । एते पातकिनः प्रोक्ताः पञ्चमस्तैः सहाऽऽवसन् ॥५५॥
वर्षाणि द्वादश वने, ब्रह्महा व्रतमाऽऽचरेत् । गुरुतल्पः सुरापो वा, नाऽमृतौ शुद्धिमऽर्हतः ॥५६॥
मद्येन मद्यगंधेन, स्पृष्टं भाण्डमऽपि द्विजः । न संस्पृशेदऽथ स्पृष्टं, तदा स्नानेन शुध्यति ॥५७॥
मज्जप्पमायविरओ, अमज्जमंसाऽसि एवमाऽऽइ पुण । लोउत्तरियं सत्थं, उभयनिसिद्धं तओ मज्जं ॥५८॥
जेट्ठं कारणमेयं, मन्ने पावस्स तेण किर मज्जं । विणिवेसियं विऊहिं, सव्वपमायाणमाऽऽईए ॥५९॥
अप्पीए साऽऽकंखा, पीए विहलंघला य होंति जओ । सव्वऽत्थेसुं तम्हा, निच्चमऽजोग्गा तदाऽऽसत्ता ॥६०॥
विज्जन्ती वि हु न फुरइ, मत्तस्स मइ त्ति निच्छओ मज्झ । कहमऽन्नहा उ अत्थे, गमइ अणत्थे उ आणेइ ॥६१॥
रिउगम्मत्तप्पमुहा, इहलोगे चेव ताव बहुदोसा । परलोगे पुण दुग्गइ-गमाऽऽइणो मज्जपाणस्स ॥६२॥
मत्तस्स वयणखलणं, जं तं आउक्खउव्वुवट्ठियओ । नरगं व पत्थिओ तह, अहो लुठंतो सयं जाइ ॥६३॥
नयणाऽरुणत्तमऽवि किर, आसन्नीभूयनरयतावकयं । अनिबद्धहत्थखिवणा, मन्ने जाओ निरालंबो ॥६४॥
रिसिणो य बंभणा विय, अन्ने वि हु धम्मकंखिणो जे य । मज्जम्मि जइ न विज्जइ, दोसो तो कीस न पिबंति॥६५॥
पढमम्मि पमायंऽगे, सुहचित्तविदूसगम्मि मज्जम्मि । दोसा पच्चक्खं चिय, भंडणपमुहा अणेगविहा ॥६६॥
सुव्वइ य लोइयरिसी, होऊण महातवो वि मज्जाओ । देवीहिं खित्तचित्तो, मूढो व्व विडंबणं पत्तो ॥६७॥
कोइ रिसी तवइ तवं, भीओ इंदो उ तस्स खोभकए । पेसेइ देवीओ, ताहे आगम्म ताउ तयं ॥६८॥
आराहिऊण विणया, वरदाणोवट्ठियं च अभणिंसु । मज्जं हिंसं अम्हे, पडिमाभंगं च सेवेसु ॥६९॥
एयाइं जइ न चउरो, ता एक्कं किंपि आयरसु भंते! । एवं स ताहिं भणिओ, सेसाणं नरयहेउत्तं ॥७०॥
परिभाविऊण समई-ए सुहहेउत्तणं च मज्जस्स । मज्जं पिविंसु मत्तो य, निब्भरं मंसपरिभोगं ॥७१॥
तप्पागकए दारु-प्पडिमाभंगं च तासि भोगं च । नूणमऽकासी उज्झिय-लज्जो पम्मुक्कमज्जाओ ॥७२॥
तो भग्गतवोसत्ती, मरिऊणं दोग्गइं गओ सो उ । एवं बहुसावज्जं, मज्जं पुंजं च दोसाणं ॥७३॥
मज्जाउ जायवाणं पि, दोसमऽइदारुणं निसामेत्ता । मज्जपमायं सुंदर!, सुदूरमुज्झसु य सुयतत्तो ॥७४॥
तस्स निरंतरधम्मो, तस्सेव य सव्वदाणफलमऽउलं । सो सव्वतित्थन्हाओ, मज्जनियत्ती कया जेण ॥७५॥
जह संधाणुप्पज्जंत-जंतुसंभारकारणत्तेण । मज्जं च बहुसावज्जं, तह मंसं मक्खणमहुं पि ॥७६॥
अणवरयजंतुसंभूइ-भावओ सिट्ठनिंदियत्तेण । संपाइमसत्तविणा-सओ य एएसि दुट्ठत्तं ॥७७॥

तहा—

सारो धम्मस्स दया, सा पुण भण मंसभक्खिणो कत्तो । ता सम्मं धम्मवई, वज्जेज्जा मंसमाऽऽजम्मं ॥७८॥
संतेसुं अन्नेसु वि, अपाणिपीडाकरेसु पुरिसाणं । सुस्साऊसु सिणिद्धेसु, महुरपयइपवित्तेसु ॥७९॥
वन्नरसगंधफासेहिं, पयइसव्विंदियाऽभिरामेसु । अरिहेसु विसिट्ठाणं, विसिट्ठवत्थूसु लोगम्मि ॥८०॥
किं गरहिएण मंसेण, असिएणं हा! धिरत्थु मंसस्स । सुविसत्थथिराऽतक्किय-परपाणविणासणं जत्थ ॥८१॥
जेण न रुक्खाहिंतो, जायइ मंसं न पुप्फफलओ वा । न य भूमीओ न गयणा, नवरं घोराउ पाणिवहा ॥८२॥
ता को णु निक्किवो किर, दारुणपरिणामजीववहजायं । मंसमऽसेज्जा सज्जो, जं भुंजिय पडइ पयवीओ ॥८३॥
अन्नं च पयारंतर-जायं ताऽवस्सजढरभरणस्स । एगस्स वि दड्ढसरी-रगस्स एयस्स भरणत्थं ॥८४॥
जं मुद्धो कुणइ जणो, जीववहं तुच्छसुहकए तमिह । किं तस्स पयइकुरिकन्न-पालिचलमऽवि थिरं जीयं ॥८५॥
न य चिंतणीयमेयं, जीवंऽगत्तेण नणु विसिट्ठाणं । असणीयमेव मंसं, सेसाऽऽहारो व्व इह जेण ॥८६॥
भक्खाऽभक्खववत्था, सव्वा वि विसिट्ठलोयसत्थकया । जीवंऽगसमत्ते वि य, एगं भक्खं परं न तहा ॥८७॥
सुपसिद्धमिणं गावीए, जह पयं पिज्जए न तह रुहिरं जीवंऽगत्ते तुल्ले वि, एवमऽण्णत्थ वि य नेयं ॥८८॥
गोसाणमंसपडिसेह-णं पि न कहिं पि जुज्जए एवं । हड्डाऽइ वि असणीयं, होज्जा जीवंऽगतुल्लत्ता ॥८९॥

किंच—

जइ जीवंऽगत्तसमत्त-मेत्तओ किज्जए इह पवित्ती । जणणीगिहिणीसु थीभाव-ओ य ता सा भवे तुल्ला ॥९०॥
तो एसा लोगकया, भक्खववत्था इमा उ सत्थकया । लोइयलोउत्तरियं, तं च दुहा तत्थिमं पढमं ॥९१॥
हिंसाप्रवर्त्तकं मांसं, अधर्मस्य च वर्द्धनं । दुःखस्योत्पादकं मांसं, तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥९२॥
स्वामांसं परमांसेन, यो वर्द्धयितुमिच्छति । उद्विग्नं लभते वासं, यत्र यत्रोपजायते ॥९३॥
दीक्षितो ब्रह्मचारी वा, यो हि मांसं प्रभक्षयेत् । व्यक्तं स नरकं याति, अधर्म्मः पापपुरुषः ॥९४॥
आकाशगामिनो विप्राः, पतिता मांसभक्षणात् । विप्राणां पतनं दृष्ट्वा, तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥९५॥
गच्छन्ति नरकं घोरं, तिर्यग्योनिं कुमानुषं । येऽत्र खादन्ति मांसानि, जन्तूनां मृत्युभीमतां ॥९६॥
योऽत्ति यस्य च तन्मांसं, अनयोः पश्यताऽन्तरम् । एकस्य क्षणिका तृप्ति-रन्यः प्राणैर्वियुज्यते ॥९७॥
श्रूयन्ते यानि तीर्थानि, त्रिषु लोकेषु भारत! । तेषु प्राप्नोति स स्नानं, यो मांसं नैव भक्षयेत् ॥९८॥
निर्वाणं देवलोकं वा, प्रार्थयन्ति हि ये नराः । न वर्जयन्ति मांसानि, हेतुरेषां न विद्यते ॥९९॥
किं लिङ्गवेषग्रहणैः, किं शिरस्तुण्डमुण्डनैः । यदि खादन्ति मांसानि, सर्वमेव निरर्थकं ॥७१००॥
यो दद्यात् काञ्चनं मेरुं, कृत्स्नां चैव वसुन्धरां । अभक्षणं च मांसस्य, न च तुल्यं युधिष्ठिर! ॥१॥
नाऽकृत्या प्राणिनां हिंसां, मांसमुत्पद्यते क्वचित् । न च प्राणिवधे स्वर्ग-स्तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥२॥
शुक्रशोणितसंभूतं, यो मांसं खादते नरः । जलेन कुरुते शौचं, हसन्ते तत्र देवताः ॥३॥
यथा वनगजः स्नातो, निर्म्मले सलिलाऽर्णवे । रजसा गुंडयेद् गात्रं, तद्वन्मांसस्य भक्षणं ॥४॥
कपिलानां सहस्रं तु, यो द्विजेभ्यः प्रयच्छति । एकस्य जीवितं दद्यात् कलां नाऽर्घति षोडशीं ॥५॥
अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी । संस्कर्ता चाऽन्यदाता च, खादकश्चाऽष्ट घातकाः ॥६॥
अल्पायुषो दरिद्राश्च, परकर्मोपजीविनः । दुःकुलेषु प्रजायन्ते, नरा ये मांसभक्षकाः ॥७॥
इच्चाऽऽइबहुपयारं, लोइयसत्थमऽवि अत्थि एत्थऽत्थे । लोउत्तरियं च पुणो, 'अमज्जमंसाऽसि' इच्चाइ ॥८॥
अहवा जं चिय लोइय-सत्थं इह हेट्ठओ विणिद्दिट्ठं । लोउत्तरियं तं पि हु, इहाऽवयारित्तु भणणाओ ॥९॥
मिच्छादिट्ठीसुयं पि हु, किर सम्मद्दिट्ठिणा परिग्गहियं । सम्मसुयं होइ रसोव-विद्धलोहं पिव सुवन्नं ॥१०॥
आह किर जइ बुहेहिं, जीवंऽगत्ता विवज्जियं मंसं । मुग्गाऽऽइणो वि किं नो, जीवंऽगं दूसिया जं नो ॥११॥
भन्नइ जेसि तदंऽगं, न ते जिया तुल्लरूविणो जम्हा । जह पंचेंदियजीवा, माणसविन्नाणपडिबद्धा ॥१२॥
तणुदेसछिज्जमाणासु, मंसपेसीसु निसियसत्थेहिं । अच्चंतदुक्खिया होंति, पइखणमुक्कसिक्कारा ॥१३॥
जीवत्तम्मि तुल्ले वि, नो तहा एगइंदियत्तेण । मुग्गाऽऽइणो भवंती, ता कहमेसिं मिहो समया ॥१४॥

तहाहि—

रे! रे! मारेह लहुं, भक्खामो एयमेवमाऽऽईयं । अच्चंतकक्कसगिरं, सोत्तंऽता सुणइ फुडमेव ॥१५॥

उक्खयसुतिक्खखग्गाऽऽइ-वग्गकरपुरिसओ पहारं पि । भयभमिरतरलतारा-उ हत्थमऽच्छीओ पेच्छंति ॥१६॥

चित्तं च वेयइ भयं, जायभओ पुण पकंपिरसरीरो । कप्पेइ इय वराओ, अहह! ममोवद्विियं मरणं ॥१७॥

एवं च जियत्तम्मि, तुल्ले वि पणिंदियो जहा तिक्खं । दुक्खं अणुहवइ फुडं, न तहा मुग्गाऽऽइएगिंदी ॥१८॥

किंच—

मणवइकायतिगेण वि, साऽवेक्खेणं परोप्परमऽवस्सं । अच्चंतं [1]वत्तं चिय, दुक्खं अणुहवइ पचिंदी ॥१९॥

मुग्गाऽऽइणो य एगिंदिया उ, संपज्जमाणमऽवि दुक्खं । काएणं चिय तं पि हु, अव्वत्तं किंचि वेयंति ॥२०॥

अन्नं च मरणभीओ, दट्ठूणमुवट्ठियं कहवि वहगं । नियजीयरक्खणकए, इओ तओ जह जह वराओ ॥२१॥

चलवलइ तसइ नासइ, लुक्कइ अवलोक्कई य पंचेंदी । तह तह वहगो वि दढं, जायाऽऽवेसो पिसियगिद्धो॥२२॥

तव्विस्सासणवंचण-संगिण्हणमारणाऽऽइओवाए । जह चिंतइ एगिंदिय-हणणम्मि नो तहा नियमा ॥२३॥

ता जत्थ जत्थ बहुदुक्ख-संभवो घायणिज्जविसयम्मि । घायगविसयम्मि य जत्थ, जत्थ दुट्ठाऽभिसंधित्तं ॥२४॥

तत्थेव य बहुदोसो, तं पुण संभवति तसजिएसु फुडं । तेणं तदंऽगमेव हि, मंसं तं चेव य निसिद्धं ॥२५॥

तव्विवरीयत्तणओ, जीवबहुत्ते वि मुग्गमाऽऽईया । नो मंसं न य दुट्ठा, लोगम्मि वि तह पसिद्धीउ ॥२६॥

न य जीवंऽगत्तादेव, केवलमेयमऽभक्खणीयमिमं । किं तु तदुब्भवबहुअन्न-जीवभावा जओ भणियं ॥२७॥

"आमासु य पक्कासु य, विपच्चमाणासु मंसपेसीसु । आयंतियमुववाओ[2], भणिओ य निओयजीवाणं" ॥२८॥

अन्ने उ पंचमुग्गाण, भक्खणे भक्खणं पणिंदिस्स । जंपंति मूढमइणो, तण्ण जओ मोहवयणं तं ॥२९॥

अवरोप्परसाऽवेक्खत्त-संगया तंतवो जह पडत्तं । पावेंति न उण निरवेक्ख-याए मिलिया सुबहवो वि ॥३०॥

इय साऽवेक्खाण मिहो, समवायो इंदियाण एगत्थ । पावइ पणिंदियत्तं, सगोयरग्गहणपवणाणं ॥३१॥

विन्नाणपयरिसो वि हु, सुहदुहसंवेयगो तहिं चेव । पडिभिन्नइंदिएसुं, मुग्गाऽऽइसु बहुसु वि न सो उ ॥३२॥

इय अच्चंतमऽवत्तं, फासिंदियनाणमेक्कमाऽऽसज्ज । मुग्गाऽऽइसु बहुएसु वि, पणिंदियत्तं अजुत्तं ति ॥३३॥

लोइयसत्थे मंसं, भणियकमा वारिउं पऽणुन्नायं । आवइसद्धाऽऽईसुं, तत्थेव य जेण भणियमिणं ॥३४॥

प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसं, ब्राह्मणानां च काम्यया । यथाविधिनियुक्तस्तु, प्राणानामेव वाऽत्यये ॥३५॥

यथाविधिनियुक्तस्तु, यो मांसं नात्ति वै द्विजः । स प्रेत्य पशुतां याति, संभवान्नेकविंशतिम् ॥३६॥

एवमऽणुन्नायस्स वि, इमस्स परिवज्जणं चिय पहाणं । जम्हा तस्सत्थेसु वि, पुणो वि एवं समक्खायं ॥३७॥

आपद्यपि च श्राद्धे च, यो मांसं नाऽत्ति वै द्विजः । सदायादः सगोत्रोऽसौ, सूर्यलोके महीयते ॥३८॥

ता लोइयलोउत्तर-सत्थनिरत्थं अउ च्चिय अवत्थुं । परिवज्जणिज्जमेव हि, मंसं दूरेण धीरेहिं ॥३९॥

सव्वजणाउ अवन्ना, भवंतरे दारुणं दरिद्दत्तं । जाइकुलाणमऽलाभो, सुनीयकम्मोयजीवित्तं ॥४०॥

देहे असत्तिमत्तं, भयाऽऽउरत्तं सुदीहरोगित्तं । सव्वत्थाऽणिट्ठत्तं, जायइ मंसाऽसिणो नियमा ॥४१॥

विक्किणगो धणलोभा, उवभोगविहाणओ य भक्खागो । बंधणवहेहिं हंता, तिण्ह वि मंसाउ वहगत्तं ॥४२॥

जो किर मंसं नाऽसइ नासइ सो अप्पणो अजसवायं । जो पुण तयमाऽऽसेवइ, सेवइ सो नीयठाणाणि ॥४३॥

एवं अच्चंतदुरंत-दुक्खनरएक्ककारणं मंसं । अपवित्तमऽणुचियं सव्व-हा वि हेयं ति नाऽऽदेयं ॥४४॥

जं दुट्ठं ववहारे, लोए सत्थे य दूसियं जं च । तं मंसमऽभक्खं चिय, चक्खूहि वि नो निरिक्खेज्जा ॥४५॥

करगहियमंसपेसी, चंडालाऽऽई वि कहवि मग्गम्मि । पुरओ आगच्छंतं, लज्जइ दट्ठुं विसिट्ठजणं ॥४६॥

गोहेममहीदाणाणि, तेण दिन्नाणि लक्खसंखाणि । जो बहुदोससमुस्सय-मऽसेज्ज मंसं न मणसा वि ॥४७॥

तहा—

जह परमंसं तह जइ, समंसमेवाऽऽयरेज्ज तब्भोई । ता न तहा दोसं पि हु, परपीडाऽभावओ मन्ने ॥४८॥

संभवइ न उण एयं, अट्ठारसकणयकोडिओ इहरा । मंसजवतिगकए कह, मिलिया सुव्वंति अभयस्स ॥४९॥

---

1. वत्तं = व्यक्तम् । 2. सययं चिअ उववाओ ।

तथाहि— "अभयकुमारेण मांसस्य महर्घत्वस्थापनम्" —

रायगिहम्मि नयरे, अत्थाणीमंडवे निसन्नस्स । अभयकुमारप्पमुह-प्पहाणमंतीहिं सहियस्स ॥५०॥
सेणियरन्नो पुरओ, विविहकहासुं पयट्टमाणीसुं । पत्थावयसा भणियं, एक्केण पहाणपुरिसेण ॥५१॥
देव! महग्घमऽसुलहं, धणधन्नाऽऽइ इह तुम्ह नयरम्मि । नवरमऽमहग्घमेक्कं, मंसं सुलभं च सव्वत्थ ॥५२॥
इय तव्वयणं सामंत-मंतिजुत्तेण राइणा सम्मं । पडिवन्नं केवलमऽमल-बुद्धिणा भणियमऽभएण ॥५३॥
ताय! किमेवं मुज्झह, मंसाओ वि हु महग्घमिह नत्थि । जह तह सुलहाइं कंस-दूसपमुहाणि वत्थूणि ॥५४॥
मंतीहिं जंपियं थेव-मुल्लदाणे वि भूरिलाभाओ । कहमऽच्चंतमहग्घत्त-मेवमुल्लयसि मंसस्स ॥५५॥
पच्चक्खं चिय सेसाणि, पेच्छ वत्थूणि पउरदव्वेण । लब्भंति एव भणिए, मोणं काउं ठिओ अभओ ॥५६॥
नयरमिममेव वयणं, पइट्ठिउं तेण सेणियनरेंदो । वुत्तो पंच दिणाइं, ताय! महं देहि रज्जं ति ॥५७॥
वाहरिउं सयलजणं, अभओ रज्जे पइट्ठिओ रण्णा । बाहइ सिरं ति सयमऽवि, वुत्थो अंतेउरस्संऽतो ॥५८॥
अभएण वि उस्सुंको, अकरो लोगो कओ समत्थो वि । घोसविया अमारी, नियरज्जे वट्टमाणम्मि ॥५९॥
पत्ते य पंचमदिणे, रयणीए विहियवेसपरियत्तो । सामंतमंतिगेहेसु, सो गतो सोगविहुरो व्व ॥६०॥
वुत्तो सामंताऽऽईहिं, नाह! किं एवमाऽऽगमणकज्जं । भणियमऽभएण राया, अइविहुरो सीसवियणाए ॥६१॥
विज्जेहि य कालेज्जय-मोसहमाऽऽइट्ठमुत्तमनराण । नियगस्स तस्स तुब्भे, ता सिग्घं जयतिगं देह ॥६२॥
खुद्दो एसो त्ति विचिंतिऊण, तेहिं पि अप्परक्खट्ठा । रयणीए दिन्नाओ, अट्ठारस कणयकोडीओ ॥६३॥
जाए पभायसमए, पुन्नो अवहि त्ति रज्जमुवणीयं । अभएणं नियपिउणो, अह सो तं कणयगुरुरासिं ॥६४॥
दट्ठूण आउलमणो, विचिंतए निद्धणो धुवमऽणेण । लोगो कओ कहऽन्नह, एत्तियमेत्तऽत्थसंपत्ती ॥६५॥
अह नयरवासिलोय-प्पवायमुवलंभिउं नरिंदेण । गूढनरा तियचच्चर-चउप्पहाऽऽईसु आइट्ठा ॥६६॥
आचंदसूरियं रज्ज-लच्छिमऽणुहवउ निग्गयपयावो । सुचिरं अभयकुमारो, मणहारी अमयमुत्ति व्व ॥६७॥
इय पइगेहं चिय जण-मुहाउ सोउं पुरम्मि जसवायं । गूढनरा नरवइणो, जहट्ठियं सव्वमऽकहिंसु ॥६८॥
ताहे विम्हइयमणेण, राइणा पुच्छिओऽभयकुमारो । कत्तो एत्तियमेत्ता, धणरिद्धी पुत्त! पत्त त्ति ॥६९॥
तेणाऽवि मंसजवतिग-मग्गणपमुहो उ सव्ववुत्तंतो । सिट्ठो जहट्ठिओ सेणि-यस्स विम्हइयहिययस्स ॥७०॥
अच्चंतमहग्घत्तं, सुदुल्लहत्तं च तयऽणु मंसस्स । रन्ना निव्वभिचारं, पडिवन्नं सेसएहिं ति (पि) ॥७१॥
इय सोऊणं सम्मं, मंसस्साऽऽसेवणं पुरा वि कयं । आराहणाकयमणो, मुणिवर! मा संभरेज्ज तुमं ॥७२॥
एवं पसंगपाविय-मंसाऽऽइसरूवकहणसंबद्धं । भणिऊण मज्जदारं, विसयद्दारं पवक्खामि ॥७३॥

"विषयस्वरूपम्" —

पुव्वं अणंतरं चिय, जे दोसा मज्जगोयरा भणिया । पाएणं विसएसु वि, ते चेव भवंति सविसेसा ॥७४॥
जम्हा उ विसेसेणं, सीयंति इमेसु कयमणा मणुया । एएण कारणेणं, विसयत्ति निरुत्तमेएसिं ॥७५॥
एए उ महासल्लं, इमे महासत्तुणो परे लोए । एए उ महावाही, एए उ परमदारिद्दं ॥७६॥
सल्लं हिययनिहित्तं, न सुहेल्लिं देइ दिहिणो उ जहा । अंतो विचिंतिया तह, विसया वि दुहाऽऽवहा चेव ॥७७॥
जह नाम महासत्तू, दावेइ कयत्थणाओ विविहाओ । एमेव य विसया वि हु, अहवा एए परभवे वि ॥७८॥
जह नाम महावाही विहुरत्तं कुणइ इहभवम्मि तहा । विसया वि नवरमेए, भवंतरेसु वि अणंतगुणं ॥७९॥
ठाणं पराभवाणं, सव्वाण जहेह परमदारिद्दं । विसया वि किर तह च्चिय, पराभवाणं परं ठाणं ॥८०॥
पत्ताइं पावेंति, पाविस्संति य बहूणि बहवो वि । परिभवपयाइं पुरिसा, ते जे विसयाऽऽमिसपसत्ता ॥८१॥
मन्नइ तणं पिव जगं, संदेहपए वि पविसइ विसइ । मरणस्स वि देइ उरं, अपत्थणिज्जं पि पत्थेइ ॥८२॥
लंघंति समुद्दं भीसणं पि, साहेंति घोरवेयालं । किं बहुणा विसयकए, पविसंति जमाऽऽणणे वि नरा ॥८३॥
गरुयं पि हु परिवज्जिय, कज्जं विसयाऽऽउरो मुहुत्तेण । तं कुणइ जेण हासो, जावज्जीवं जए होइ ॥८४॥
ववसइ पिउणो वि वहं, बंधुं सत्तुं य मन्नइ मूढो । होइ अणिबद्धकज्जो, विसयग्गहपरिगओ पुरिसो ॥८५॥
विसया अणत्थपंथो, विसया माहप्पलुंपगा पावा । विसया लहुत्तपयवी, अकंडविड्डरकरा विसया ॥८६॥

विसया अयमाणपयं, विसया मालिन्नकारणमऽयंझं । विसया दुहेक्कहेऊ, इहपरभवबाहगा विसया ॥८७॥
खलइ मणो गलइ मई, परिहायइ पोरिसं पि पुरिसस्स । विसयाऽऽसत्तस्स गुरु-वइट्ठमिट्ठं पि वीसरइ ॥८८॥
सा जाई तं च कुलं, सा कित्ती भुवणभूसणपयंडा । जइ ता विसयपसत्ती, ता फुसिया वामपाएणं ॥८९॥
जिणवयणदक्खचक्खू वि, पेक्खए पेक्खणिज्जभावे ता । जावऽज्जवि विसयपसत्ति-लक्खणा नीलिमा न भवे ॥९०॥
धम्माऽभिप्पायपई-वओ मणोमंदिरम्मि ता फुरइ । जावऽज्जवि विसयपसत्ति-लक्खणा नेइ वाओली ॥९१॥
सव्वन्नुवयणपोओ, ता भवजलहीउ तारणसमत्थो । विसयप्पसंगपवणो, जावऽज्जवि नाऽयकूलेइ ॥९२॥
विमलं विवेयरयणं, तावऽज्जवि दिप्पए पयासइ या । विसयप्पसंगपंसू, जावऽज्जवि नाऽयगुंडेइ ॥९३॥
विमलं पि जीवसंखे, पइट्ठियं सहइ ताव सीलजलं । विसयाऽभिनिविसेसाऽसुइ-संगा कलुसिज्जइ न जाव ॥९४॥
धम्मं काउमऽसत्ता, विसयपसत्ता निहीणतमसत्ता । [1]अत्ताणं अत्ताणं, न मुणंति हियं च न कुणंति ॥९५॥
विसया विऊण [2]विसया, दूरऽवगन्नियजिणाऽऽगमंऽकुसया । तणुरुहिरहरणमसया, भवंति दावियअणिट्ठसया ॥९६॥
सुचिरं पि तवो तवियं, चिन्नं चरणं सुयं च बहु पढियं । जइ ता विसएसु मई, ता तं ही! निप्फलं सव्वं ॥९७॥
सन्नाणमणिमहग्घं, फुरंतचारित्तरयणचिंचइयं । ओ! विसयचंडचरडा, लुंटंति जीवभंडारं ॥९८॥
सा तुंगिमा स तेओ, तं विन्नाणं गुणा वि ते चेव । सव्वं खणेण नट्ठं, धिरत्थु विसयाऽऽभिलासस्स ॥९९॥
हद्धी! अलद्धपुव्वं, जिणवयणरसायणं पि घोट्टेउं । विसयमहाहालाहल-हल्लोहलिएहिं उग्गिलियं ॥७२००॥
सुहचरिए [3]अप्पाणं, पावा पावाऽऽसवेसु सप्पाणं । अप्पाणं अप्पाणं, विसयाण कए कयत्थिंति ॥१॥
चिट्ठइ दिट्ठिविसगोयरम्मि, वग्गइ य तिक्खखग्गऽग्गे । असिपंजरम्मि कीलइ, सोयइ सत्तीए अग्गम्मि ॥२॥
बंधइ पडम्मि अग्गिं, मूढो नियमत्थएण हणइ गिरिं । आलिंगइ सुहुयहुया-सणं च विसमऽसइ जीयऽत्थी ॥३॥
छुहियं सीहं कुवियं च, पन्नगं सुबहुमच्छियं च महुं । आहणइ सो अणज्जो, जो विसएसुं कुणइ गिद्धिं ॥४॥
अहवा विसं मुहे च्चिय, खंधे च्चिय सुनिसिओ असी तस्स । गत्ता मुहपुरओ च्चिय, उच्छंगे च्चिय कसिणसप्पो॥५॥
पासट्ठिओ च्चिय जमो, हियए च्चिय तस्स जलइ पलयऽग्गी । मूलनिलीणो य कली, विसएसुं जस्स किर गिद्धी॥६॥
अहवा नियवत्थंऽचल-गंठीबद्धं खु धरइ सो मरणं । सोयइ य निस्सहंऽगो, चलंतकुड्डयलपासाए ॥७॥
उववसिइ स सूलाए, पविसइ य जलंतजउहरस्संऽतो । कुंतऽग्गम्मि य नच्चइ, करेइ विसएसुं जो गिद्धिं ॥८॥
अहवा दिट्ठिविसाऽऽई, होंति विणासाय तब्भवे चेव । एए पुण हयविसया, अणंतभवदारुणविवागा ॥९॥
अहवा ते सव्वे मंत-तंतदेवाऽऽइथंभिया संता । न भवंति तब्भवे वि हु, भयाय विसया उण दुरंता ॥१०॥
विसए सेविंति जडा, अरईदुक्खस्स पसमणनिमित्तं । तं पुण तेहिं दढयरं, उच्छलइ घएण जलणो व्व ॥११॥
सूरा वि विसयगिद्धा, मुहजोया होंति महिलियाणंपि । जे पुण ताण विरत्ता, ते देवाणं पि पणतिपयं ॥१२॥
मोहमहागहगहितो, सहितो अरईए धम्मरइरहिओ विसयवसो वायारइ, मणवइकाए अविसए वि ॥१३॥
विसयरणाऽवणिविणिवेसिया य, दुव्वारकरणकरडिघडा । मणवइतणूहिं विलसइ, पेक्खियपडियक्खरूवाऽऽई ॥१४॥
अण्णं च विसयवासंग-वज्जिएणाऽवि नियबुद्धीए । पुरिसेण धरंतेणं, तहाविहं निम्मलविवेयं ॥१५॥
सब्भावो वीसंभो, नेहो रइवइयरो य जुवइजणे । कीरंतो अचिरेणं, तवसीलवयाइं फेडेज्जा ॥१६॥
जह जह कीरइ संगो, तह तह पसरो खणे खणे होइ । थेवो वि होइ बहुओ, न य लहइ धिइं निरुंभंतो ॥१७॥
एवं च सो अणज्जो, ववगयलज्जो समीहियअकज्जो । तं चेव कुणइ सज्जो, मुक्कंऽगीकयसुकयकज्जो ॥१८॥
भीओ भीयाए समं, समंतओ विहियनिहुयरइकिरिओ । अहह! तहाऽवि स विसई, जह होज्ज सुही दुही को णु?॥१९॥
किंच—
दुलहं चरित्तरयणं, खंडिउमेक्कसि कहिंचि विसयवसो । पावइ दुगुंछियत्तं, जावज्जीवं पि सयलजणे ॥२०॥
आवायमेत्तसुहया वि, किंपि बहुभाविभयनिमित्तत्ता । विसया सप्पुरिसाणं, सेविज्जंता वि दुहजणया ॥२१॥
हा! धी! विलीणबीभच्छ-कुच्छणिज्जम्मि रमइ अंगम्मि । किमियो व्व एस जीवो, दुहं पि सोक्खं ति मन्नंतो॥२२॥
ता ताण कए दुहसय-निबंधणं भयइ बहुविहं जीवो । आरंभमहपरिग्गह-मओ उ बंधं पि पावाणं ॥२३॥

1. अत्राणम् आत्मानम् । 2. विपदाः । 3. अप्राणम् =बलरहितम् ।

ता नरयवेयणाओ, तिरियगतीओ य पाउणइ बहुसो । इय जरियजंतुणो मज्जि-याऽऽइपाणोयमा विसया ॥२४॥
जइ होज्ज गुणो विसयाण, कोई ता न हु जिणिंदचक्किबला । दुरुज्झियविसयसुहा, धम्माऽऽरामे तह रमंता॥२५॥
ता भो देवाणुपिया!, पयओ परिभावियिऊण तुममेयं । चयसु [1]मियं विसयसुहं, अपरिमियं भयसु पसमसुहं ॥२६॥
जेणमऽकिलेससाहण-मऽलज्जणीयं विवागसुंदरयं । पसमसुहमिमाहिंतो-ऽणंताणंतेहिं संगुणियं ॥२७॥
ता सुकयत्था एत्थेव, गाढपडिबद्धमाणसा धीरा । धन्ना ते च्चिय परमत्थ-साहगा साहुणो निच्चं ॥२८॥
अणवरय-मरण-रणरणय-भीसणं पेच्छिऊण संसारं । चत्तं विसं व विसमं, विसयसुहं जेहिं दूरेण ॥२९॥
विसयाऽऽसासंदाणिय-चित्ता य अपत्तविसयसोक्खा वि । हिंडंति कंडरीउ व्व, नियमओ घोरसंसारे ॥३०॥
तहाहि— "कंडरिकस्य दृष्टान्तः"
पुंडरीगिणीपुरीए, पयंडभुयदंडखंडियविपक्खो । आसी पुंडरीयनिवो, जिणिंदधम्मेक्कपडिबद्धो ॥३१॥
सो य महप्पा तडिदंड-भंगुरं जाणिऊण रज्जसिरिं । खरपवणाऽऽहयदीयय-सिहं व जीयं पि परिलोलं ॥३२॥
किंपागफलं व विराम-दिन्नदुक्खं च विसयसोक्खं पि । लक्खित्ता सविसेसं, सुगुरुसमीवाउ पडिबुद्धो ॥३३॥
पव्वज्जं काउमणो, कणिट्ठनियभायरं, दढप्पणयं । कंडरीयनामधेयं, वाहरिउं भणिउमाऽऽढत्तो ॥३४॥
हे भाय! रज्जलच्छिं, उवभुंजसु संपयं तुमं एत्थ । भववासाउ विरत्तो, अहमिन्हिं पव्वइस्सामि ॥३५॥
कंडरीएणं भणियं, दुग्गइमूलं ति जइ तुमं रज्जं । मोत्तूणं पव्वज्जं, वंछसि घेत्तुं महाभाग! ॥३६॥
ता किं मज्झ वि रज्जेण, सव्वहा हं गुरुस्स पामूले । इन्हिं चिय निस्संगो, जिणिंददिक्खं गहिस्सामि ॥३७॥
अह नरवइणा सुबहु-प्पयारहेऊहिं वारियो वि दढं । अच्चेततरलयाए, सूरिसमीवे स निक्खंतो ॥३८॥
गुरुकुलवासोवगओ य, विहरमाणो पुराऽऽगराऽऽईसु । अणुचियआहारवसा, संजायसरीरगेलन्नो ॥३९॥
चिरकालाओ पुंडरि-गिणीए नयरीए आगओ संतो । उवयरिओ वेज्जोसह-विहीए पुंडरियनरवइणा ॥४०॥
जाओ पगुणसरीरो, रसगिद्धीए तहाऽवि अन्नत्थ । विहरिउमऽणुच्छहंतो, रन्ना उच्छाहिओ एवं ॥४१॥
धन्नो तुमं महायस!, निस्संगो जो न दव्वमाऽऽईसु । थेवं पि हु पडिबंधं, करेसि तवसुसियदेहो वि ॥४२॥
तुममेव अम्ह कुलनह-यलम्मि संपुन्नपुन्निमाचंदो । सच्चरियपहापसरेण, जस्स धवलिज्जए भुवणं ॥४३॥
अप्पडिबद्धविहारो, तुमए च्चियऽणुट्ठिओ महाभाग! । जो मज्झऽणुवित्तीए वि, ठासि नो एत्थ ठाणम्मि ॥४४॥
इय उच्छाहगवयणेहिं, राइणा तह कहं पि पन्नविओ । जह सीयविहारी व हु, कंडरिओ विहरिओ बहिया ॥४५॥
संजमपडिभग्गमणो, भूसयणाऽसारभोयणाऽऽईहिं । सीलमहाभरपडियहण-भंगुरो चत्तमज्जाओ ॥४६॥
विसयाऽभिसंगगरुओ, गुरुकुलवासाउ सो विनिक्खमिउं । रज्जोवभुंजणट्ठा, समागओ पुण सनयरीए ॥४७॥
तत्तो निवउज्जाणे, तरुसालोलइयधम्मउवगरणो । हरियाऽऽउलधरणियलम्मि, संनिसन्नो य निल्लज्जो ॥४८॥
तं च तहट्ठियमाऽऽयन्निऊण, राया समागओ नमिउं । संजमथिरकरणट्ठा, एवं भणिउं समारद्धो ॥४९॥
तुममेक्को च्चिय धन्नो, कयपुन्नो लद्धजीवियफलो य । पालेसि निरइयारं, जो पव्वज्जं जिणुद्दिट्ठं ॥५०॥
दोग्गइनिबंधणेणं, रज्जेणं निबिडबंधणेण य । बद्धो हं पुण न लभामि, धम्मकज्जं किमऽवि काउं ॥५१॥
एवं वुत्तो वि हु रुक्ख-चक्खुक्खेवो न जाय सो किंपि । जंपेइ ताव रन्ना, वेरग्गं उव्वहंतेणं ॥५२॥
पुणरवि भणिओ हे मूढ!, पुव्वकाले वि वारिओ बाढं । पव्वज्जापडिवत्तिं, तुमं कुणंतो मए तइया ॥५३॥
दिंतो य रज्जमिन्हिं च, तस्स दाणे वि किं सुहं तुज्झ । उज्झियनियपइण्णस्स, तिणलवाओ वि लहुयस्स॥५४॥
एवं भणिऊण नराऽहिवेण, रज्जं पणामियं तस्स । काऊण सयं लोयं, गहिओ सव्वो वि तव्वेसो ॥५५॥
तो सयमऽवि पडिवज्जिय, पव्वज्जं अइगओ गुरुसमीवे । तत्थ पुण गहियदिक्खो, छट्ठक्खमणस्स पारणए ॥५६॥
अणुचियआहारवसा, बाढं संजायपोट्टसूलो य । मरिऊणं उववन्नो, देवो सव्वट्ठसिद्धिम्मि ॥५७॥
इयरो य मंतिसामंत-दंडनाहाऽऽइसयललोगेण । हीलिज्जंतो पव्वज्जा-चायकारि त्ति पावो त्ति ॥५८॥
अच्चंतविसयगिद्धीए, पउररसपाणभोयणाऽऽसत्तो । रुद्दज्झाणोवगओ, विसूइयादोसनिहयाऽऽऊ ॥५९॥
मरिउणं नेरइओ, उप्पन्नो सत्तमाए पुढवीए । एवमऽपावियविसया, विसइणो दुग्गइमुवेन्ति ॥६०॥

1. मितम् = अल्पम् ।

ता सुंदर! दरिसियदोस-दूसिए निरसिऊण हयविसए । आराहणाकयमणो, मणोऽणवज्जं चिय धरेज्जा ॥६१॥
एवं विसयद्दारं, निदंसियं संपयं च लेसेणं । तइयं कसायदारं, कमपत्तं चिय परूवेमि ॥६२॥

"कषायस्वरूपम्" —

जइ वि कसाया हेट्ठा, उवइट्ठा भूरिभणिइनियहेण । दुज्जेय त्ति तहावि हु, पुणो वि भण्णंति लेसेण ॥६३॥
एए दुट्ठकसाया, विडंबणाकारिणो जह पिसाया । पच्छा विहियविसाया, असुहविहाणेक्कववसाया ॥६४॥
जणियदुरज्झवसाया, अणिट्ठदाणेण दावियप्पसाया । संरुद्धसिद्धिसाया, परलोगे विहियविरसाऽऽया ॥६५॥
आणेंति परं वसणं, गालेंति य संपयं सुविउलं पि । कज्जं च हारवेंति, सेविज्जन्ता इह कसाया ॥६६॥
धम्मस्स सुयस्स जसस्स, अहवा सव्वस्स गुणकलावस्स । अव्वो! कसायकरणा, पुरिसेण जलंऽजली दिण्णो ॥६७॥
सव्वजणगरहियत्तं, कसायकरणेण एत्थ लोगम्मि । परलोए संसारो, जायइ जरमरणदुत्तारो ॥६८॥
अह पुन्नपावखेलय-चउगइसंसारवाहियालीए । गिरिउ व्व भमइ जीवो, कसायचोयाण हम्मंतो ॥६९॥
सव्वाऽवत्थासु पि हि अ-णिट्ठियाऽणिट्ठकारिणो चेव । जीयाण हयकसाया, पुव्वमुणीहि वि जओ भणियं ॥७०॥
कडुयकसायतरूणं, पुप्फं च फलं च दो वि विरसाइं । पुप्फेण झाइ कुविओ, फलेण पावं समायरइ ॥७१॥
जं किर मणुयाण सुहं, जं च सुहं सव्वसुरवराणं पि । तत्तोऽणंतगुणं तं, कसायजइणो जिणा बेंति ॥७२॥
पीडाकरं पि लोए, खलाउ अक्कोसहणणमाऽऽइयं । चंदणरसं व मण्णइ, सुतवस्सिजणो अओ चेव ॥७३॥
अक्कोसहणणमारण-धम्मब्भंसाण बालसुलभाणं । लाभं मन्नइ धीरो, जहुत्तराणं अभावम्मि ॥७४॥
अहह! बलिया कसाया, विजिया विजिया समुच्छलंति पुणो । तव्विजयकयमणाण वि, मुणीण समए वि जं भणियं॥७५॥
उवसामं पुवणीया, गुणमहया जिणचरित्तसरिसं पि । पडिवायंति कसाया, किं पुण सेसे सरागत्थे ॥७६॥
जीवो कसायकलुसो, चउगइसंसारसायरे घोरे । भिन्नं व जाणवत्तं, पूरिज्जइ पावसलिलेण ॥७७॥

किंच—

कोहो माणो माया, लोभो रागो य दोसमोहो य । कंदप्पो दप्पो मच्छ-रो य एए महारिउणो ॥७८॥
एए हि जीवसव्वस्स-हारिणो कारिणो अणत्थाणं । सम्मं विवेयपडिवूह-विरयणा कुणसु निप्पसरे ॥७९॥
दुम्महणकसायपयंड-सत्तुणा पीडियं जयं सव्वं । ता सो धन्नो जो तं, हंतूण समं समल्लियइ ॥८०॥
कामत्थरइपरद्धा, मुज्झन्ति जमेत्थ धीरपुरिसा वि । तं मन्ने हं नूणं वियंभियं हयकसायाणं ॥८१॥
ता तह कहविहु किच्चं, जह न कसाया उइंति उइया वा । अंतो चेव सुरंगाधूली-निचउ व्व निसमिंति ॥८२॥
जइ जलइ जलउ लोए, कुसत्थपवणाऽऽहओ कसायऽग्गी । तमऽजुत्तं जं जिणवयण-सलिलसित्तो वि पज्जलइ॥८३॥
उक्कडकसायरोग-प्पकोवओ जायनिविडपीडस्स । पसमाऽऽरोग्गं जायइ, जिणवयणरसायणाहिंतो ॥८४॥
अइभीमकसायविसप्पि-दप्पसप्पेहिं परिगयंऽगाणं । तणुसत्ताणं ताणं, जिणवयणमहंतमंताओ ॥८५॥

किंच—

जइ ताव कसाय च्चिय, विणिज्जिया दुज्जया महारिउणो । ता निज्जियं तुमे खलु, सव्वं जेयव्वचक्कं पि ॥८६॥
हंतुं कसायतेणे, मोहमहावग्घपेल्लणं काउं । नाणाऽऽइमग्गलग्गो, लंघसु भीमं भवाऽरण्णं ॥८७॥
एवं कसायदारं, परूवियं संपयं कमप्पत्तं । जहठियदोसाऽणुगयं, निद्दादारं निदंसेमि ॥८८॥

"निद्रास्वरूपम्" —

अद्दिस्समाणरूवो, निद्दाराहू जयम्मि कोई इमो । जो जीवससिरवीणं, करेइ गहणं निराऽऽलोयं ॥८९॥
सा खयमुवेउ निद्दा, जीवन्तो च्चिय मओ व्व जीए नरो । मत्तो व्व मुच्छिओ इव, पणट्ठसत्तो लहुं होइ ॥९०॥
जह पयइकुसलसयलिं-दियगामो वि हु नरो विसं पाउं । लहु उवहयतस्सत्ती, जायइ तह निद्दवसगो वि ॥९१॥

किंच—

निउणनिमीलियनयणं, पुणरुत्तविमुक्कघोरघुरुडुक्कं । विहडियउट्ठउडुग्घाड-दंतविगरालमुहकुहरं ॥९२॥
अस्संठवियनियसणं, इओ तओ खित्तअंगुवंगं च । गयलायन्नमऽसन्नं, नियसु पसुत्तं मरंतं व ॥९३॥

तहा—

निद्दावसेण पुरिसो असमंजससंभवंततणुचेट्ठो । सुहुमे य बायरे वि हु, उयमद्दइ पाणिणोऽणेगे ॥९४॥
निद्दा उज्जमविग्घो, निद्दा विसघारियत्तमिय परमं । निद्दा असिट्ठचेट्ठा, निद्दा भयसंभवो परमो ॥९५॥
निद्दा नाणाऽभावो, निद्दा निस्सेसगुणगणंऽतरणं । निद्दा विवेयससिणो, बहलमहामेहपडलसमा ॥९६॥
इहलोयपारलोइय-ववसायाणं निरुंभणी निद्दा । सव्वाऽवायाण परं, निबंधणं निच्छियं निद्दा ॥९७॥
तेणेव अगलदत्तो, निद्दाचागेण जीवियं पत्तो । इयरनरा पुण निद्दा-पमायओ पाविया निहणं ॥९८॥
तथाहि— "अगडदत्तस्यदृष्टान्तः"
उज्जेणीए जियसत्तु-राइणो सम्मओ अमोहरहो । नामेण आसि रहिओ, जसोवई पणइणी तस्स ॥९९॥
पुत्तो य अगलदत्तो, तम्मि य बाले मओ अमोहरहो । तं जीयणं च दिन्नं, रन्ना अन्नस्स रहियस्स ॥७३००॥
अह तं जसोमई पेच्छि-ऊण विलसंतमऽत्तणो य सुयं । अकलाकुसलं बाढं, सोगेण अभिक्खणं रुयइ ॥१॥
पुट्ठा पुत्तेणं सा, अम्मो! तं कीस रुयसि निच्चं । निब्बंधे [1]सिट्ठं तीए, कारणं तेण तो वुत्तं ॥२॥
अम्मो! किमऽत्थि इह कोवि, सो ममं जो कलाउ सिक्खवइ । तीए वुत्तं पुत्तय! नत्थि इहं किं तु पिउमित्तो॥३॥
कोसंबीए पुरीए, दढप्पहारित्ति अत्थि तो सिग्घं । सो तत्थ गओ तस्संऽ-तियम्मि तेणाऽवि पुत्तो व्व ॥४॥
[2]ईसत्थाऽऽइकलासु, परमं कोसल्लयं समुवणीओ । नीओ य रायपासे, नियविज्जादंसणकएण ॥५॥
दंसियमऽसेसमीसत्थ-पमुहकोसल्लमऽगलदत्तेण । तुट्ठो सव्वो लोगो, नयरि न एक्को महीनाहो ॥६॥
तह वि य तेणं वुत्तो, भण किं ते जीयणं दवावेमि । दूरोणामियसीसेणं, भणियमऽह अगलदत्तेण ॥७॥
साहुक्कारं जइ मे, न देसि ता किं परेण दाणेण । एत्थंतरम्मि राया, विन्नत्तो नगरिलोएणं ॥८॥
देव! समग्गा नयरी, लुंटिज्जइ तक्करेण केणाऽवि । गूढपयारेणं तस्स, वारणं कुणउ ता देवो ॥९॥
तो वुत्तो नरवइणा, नयराऽऽरक्खो जहा तुमं भद्द! । सत्तदिवसाण अब्भं-तरम्मि चोरं लहेसु त्ति ॥१०॥
अह जा नयराऽऽरक्खो, सुरुक्खचक्खू न किंपि जंपेइ । ता अवसरो त्ति कलिऊण, जंपियं अगलदत्तेण ॥११॥
देव! पसीयह वियरह, आएसमिमं महं जहा तुम्ह । उवणेमि तक्करं सत्त-रत्तमज्झम्मि कत्तो वि ॥१२॥
दिन्नो रन्नाऽऽएसो, तत्तो सो राउलाओ नहिरिओ । चिंतेइ विविहणेवत्थ-धारिणो लिंगिवेसा य ॥१३॥
सुन्नसभाऽऽसमदेउल-पमोक्खठाणेसु तक्करा पायं । नियसंति चारपुरिसेहिं, ताणि ता पेहयामि अहं ॥१४॥
एवं विचिंतिऊणं, सव्वट्ठाणाणि मग्गिओ सम्मं । नीहरिओ नयरीओ, पत्तो एगम्मि उज्जाणे ॥१५॥
अह सहयारतरुतले, नियसियमलिणंऽसुओ समाऽऽसीणो । चोरग्गहणोवायं, चिंतंतो अच्छए जाव ॥१६॥
ता आगओ कुओ वि हु, तत्थ परिव्वायगो रुणुझुणंतो । भंजिय तरुसाहं विर-इयाऽऽसणे सन्निसन्नो य ॥१७॥
दट्ठूण तं च उब्बद्ध-पिंडियं तालदीहयरजंघं । कूरच्छमेस चोरो त्ति, चिंतियं अगलदत्तेण ॥१८॥
एवं विचिंतयंतो, तेण परिव्वायगेण सो भणिओ । आओ सि वच्छ! कत्तो, हिंडसि केण व निमित्तेणं ॥१९॥
तेणं भणियं भयवं!, उज्जेणीओ पहीणविभवो हं । एवं भमामि नेवऽत्थि, कोई मे जीवणोवाओ ॥२०॥
मुणिणा वुत्तं पुत्तय!, जइ एवं देमि ता अहं दव्वं । संलत्तमऽगलदत्तेण, सामि! दढमऽणुगिहीओ हं ॥२१॥
एत्थंऽतरम्मि अत्थवण-मुवगयं चंडभाणुणो बिम्बं । तदऽकज्जकरणवंछ व्व, पसरिया सव्वओ संझा ॥२२॥
तीए य अइगयाए, समुच्छलंतेसु तिमिरनियरेसु । आयड्ढिऊण खग्गं, तिदंडमज्झाउ निसियऽग्गं ॥२३॥
आबद्धपरियरो सो, समगं चिय झत्ति अगलदत्तेण । नगरीए गओ खत्तं, च, पाडियं धणवइगिहम्मि ॥२४॥
आयड्ढियाउ तत्तो, पेडाउ भूरिभंडभरियाउ । मोत्तूण अगलदत्तं, तहिं च सुरभवणसुत्तनरा ॥२५॥
उट्ठविऊणं उवलोभिउं च, परियायगेण आणीया । गिन्हावियाओ ताओ, तत्तो तेहिं सह पुरीओ ॥२६॥
सिग्घं चिय निक्खंतो, पत्तो एगम्मि जिन्नउज्जाणे । भणिया य तेण पुरिसा, सप्पणयं अगलदत्तो य ॥२७॥
रे पुत्ता! सुयह खणं, इहेव जा सव्वरी गलइ किंपि । पडिवन्नं सव्वेहिं, सुत्ता य सुनिब्भरं सव्वे ॥२८॥
नवरं संकियचित्तो, निद्दाकवडेण ठाउं खणमेक्कं । तरुगहणम्मि निलुक्को, नीहरिऊणं अगलदत्तो ॥२९॥
निद्दावसगा य परे, पुरिसा णाउं तिदंडिणा निहया । सत्थरए हणणत्थं, निरिक्खिओ अगलदत्तो वि ॥३०॥

1. जहट्ठियं पाठां ० । 2. इष्वस्त्रादिकलासु ।

तं च अपेच्छंतो सो, वणगहणे पेहिउं समाऽऽरद्धो । अभिमुहमिंतो य हओ, खग्गेणं अगलदत्तेणं ॥३१॥
अह गाढघायवियणा- घुम्मिरदेहेण तेण संलत्तं । विगयप्पायं हे वच्छ!, जीवियव्वं मह इयाणिं ॥३२॥
ता गिन्हसु मम खग्गं, वच्चसु य मसाणपच्छिमविभागे । तहियं च चंडियाऽऽययण-भित्तिपासम्मि ठाऊणं ॥३३॥
सद्दं करेज्ज जेणं, तब्भूमिहराउ नीइ मम भइणी । दंसेज्जसु तीए असिं, जेणं सा भयइ तुह भज्जा ॥३४॥
दंसइ य गेहसारं, एवं वुत्तम्मि अगलदत्तेण । तह चेय कयं ता जाव, भूमिभवणम्मि वि पइट्ठो ॥३५॥
दिट्ठा य तत्थ पायाल-कन्नगा विव मणोहरसरीरा । एगा जुवई पुट्ठो, तीए कत्तो तुमं सि त्ति ॥३६॥
आयड्ढिऊण खग्गं, निदंसियं तीए अगलदत्तेण । मुणियं च णाए नियभाउ-मरणमऽह रुंभिउं सोगं ॥३७॥
संभमभरियऽच्छीए, सुहय! तुहं सागयं ति भणिरीए । उवणीयमाऽऽसणं से, आसीणो सो य साऽऽसंको ॥३८॥
तीए य पुव्वविरइय-गरुयसिलाजंतसंगया सेज्जा । दिव्वोयहाणकलिया, पगुणा सव्वाऽऽयरेण कया ॥३९॥
भणिओ य अगलदत्तो, वीसमसु खगं इहं महाभाग! । वीसंतो सो य तहिं, नयरं एवं विचिंतेइ ॥४०॥
नूणं न सुंदरमिहाऽ-वत्थाणं मा भवेज्ज कूडमिमं । ता निद्दं अकुणंतो, ठामि इमा वच्चए जाव ॥४१॥
अह ठाऊण खणं सा, जंतनियाऽणकएण नीहरिया । इयरो वि पएसन्तर-मऽल्लीणो उज्झिउं सेज्जं ॥४२॥
तीए य कीलियं फे-डिऊण सा पाडिया सिला सहसा । भग्गा य तीए सेज्जा, सव्वत्तो निवडमाणीए ॥४३॥
तो परमहरिसपसरिय-वियसियहिययाए तीए संलत्तं । हा! सुट्ठु हओ दुट्ठो, मह भाउविणासकारि त्ति ॥४४॥
तो धाविऊण धरिया, केसकलावम्मि अगलदत्तेण । हा! हा! दासीधीए!, को मं हणइ त्ति भणिरेण ॥४५॥
पाएसु निवडिऊण य, संलत्तं तीए रक्ख रक्ख त्ति । चत्ता तत्तो नीया य, राइणो पायमूलम्मि ॥४६॥
सयलो से वुत्तंतो, सिट्ठो तुट्ठेण तो महीवइणा । दिन्ना महई भुत्ती, लोगेण य पूइओ बाढं ॥४७॥
सव्वत्थ जायकित्ती, गओ य कालक्कमेण नियनगरिं । दिन्ना पिउणा भुत्ती, रन्ना सक्कारिऊणं से ॥४८॥
निद्दाचागाऽचागे, एवं संपेहिऊण गुणदोसे । इहपरभवसुहकामी, को बहुमन्नेज्ज निद्दं ति ॥४९॥
किंच—
नरवइसेवापमुहे, ववसाए बहुविहे वि इहभविए । सज्झायज्झाणाऽऽई, परभविए वि हु हणइ निद्दा ॥५०॥
रिउणो लहंति छिड्डं, डसंति सप्पा पसुत्तमऽह कहवि । अग्गीए होइ गम्मो, सुविरो त्ति हसंति मित्ताऽऽई ॥५१॥
दोसकरोवरिसंठिय-जियमुत्ताऽऽई मुहेऽहवा पडइ । अह खुद्ददेवया वा, छलइ पसुत्तं पमत्तं ति ॥५२॥
तं दक्खत्तं सो बुद्धि-पयरिसो तं च किर सुविन्नाणं । पुरिसस्स अन्तरिज्जइ, एक्कपए चेव निद्दाए ॥५३॥
अन्नं च—
निद्दातमस्स सरिसो, सव्वाऽऽवारी परं तमो णऽत्थि । ता निज्जिणेज्ज सम्मं, निद्दं झाणस्स विग्घकरिं ॥५४॥
जओ—
जागरिया धम्मीणं, आहम्मीणं तु सुत्तया सेया । वच्छाऽहिवभगिणीए, अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥५५॥
सुयइ सुयंतस्स सुयं, संकियखलियं भवे पमत्तस्स । जागरमाणस्स सुयं, थिरपरिचियमऽप्पमत्तस्स ॥५६॥
सुयइ य अयगरभूओ, सुयं च से नासए अमयभूयं । होही! गोणब्भूओ, नट्ठम्मि सुए अमयभूए ॥५७॥
ता भो देवाऽणुपिया!, जिणिउं निद्दापमायपरचक्कं । अप्पडिहयप्पबोहो, विहरसु थिरपरिचियसुयऽत्थो ॥५८॥
एवं चउत्थमुवइट्ठ-मेत्थ निद्दाऽभिहाणपडिदारं । एत्तो विगहादारं, पंचमगं पि हु पवंचेमि ॥५९॥

"विकथास्वरुपम्" —

विविहा विरुविगा वा, अहवा संजमविबाहगत्तेण । संभवइ जा विरुद्धा, कहा वि विगह त्ति सा भणिया ॥६०॥
विसयं पडुच्च सा पुण, चउप्पायारा परूविया समए । इत्थिकहा भत्तकहा, देसकहा तह य रायकहा ॥६१॥
इत्थीणं इत्थीसु व, कह त्ति इत्थीकहा मुणेयव्वा । तद्दारेणं संजम-विरोहिगा जा उ सा विकहा ॥६२॥
जाइकुलरुवनेवत्थ-गोयरा थीकहा भवे चउहा । तत्थवि खत्तिणिबंभणि-वेसिणिसुद्दीण मज्झाओ ॥६३॥
अन्नयरजाइयाए, पसंसणा निंदणा य कीरइ जा । सा जाइकहा भन्नइ, तीए सरुवं इमं तु जहा ॥६४॥
जाइकहा —

थी! जीवियेण खत्तिणि-बंभणियेसीण बालयिहयाणं । जीयन्तमयाए सव्व-ओ वि तह संकणिज्जाणं ॥६५॥
सुद्दीओ च्चिय मण्णे, धण्णाउ जयम्मि नवरमेक्काउ । नो जाण नयनवऽन्नऽन्न-पुरिसकरणे वि दोसोऽत्थि ॥६६॥
कुलकहा —
उग्गाऽऽइ-कुलुप्पन्नाण-मऽन्नतरगाण जा पुण पसंसा । निंदा वा किर कीरइ, भणंति तं कुलकहं ति जहा ॥६७॥
चोलुक्कसुयाणं चिय, तहाविहं साहसं न अन्नाणं । निप्पेमा यि हु पयिसंति, जाउ जलणं पइम्मि मए ॥६८॥
रूयकहा —
जा पुण रूयपसंसा, अंधिप्पभिईण अन्नतरगाए । निंदा या तव्विउणो, तं रूयकहं भणंति जहा ॥६९॥
लीलाललंतलोयमुहीसु, लायन्नसलिलजलहीसु । रइरमणो वि हु अंधीसु, चेव सव्वंगमऽल्लीणो ॥७०॥
अहवा—
धूलिपंगुरियतणू, जउमयमणिया वि नो गले बहुया । जट्टीए कारविया, उट्ठबइस्सं तहवि पहिया ॥७१॥
नेयत्थकहा —
तासिं चिय अन्नयरीए, जा उ नेयत्थसंसणाऽऽइया । सा पुण नेयत्थकहेह, देसिया तव्विऊहिं जहा ॥७२॥
अतुच्छाऽणच्छेणं, नवत्थेणं सुछाइयंऽगीए । वियसंतनयणनीलु-प्पलाए सोहग्गवावीए ॥७३॥
नारीए उ दिव्वाए, धिरऽत्थु तारुण्णयस्स तरुणेहिं । लायन्नजलं नयणंऽ-जलीहिं नाऽऽपिज्जए जीए ॥७४॥
इच्चाइनेयत्थकहा । गया इत्थिकहा ॥
भत्तकहा वि चउद्धा, आवायकहा तहेव निव्वावे । आरंभकहा तइया, निट्ठाणकहा चउत्थी उ ॥७५॥
आवायकहा इह रसयतीए, एवइयगाउ सागाऽऽई । एत्तियमेत्ता य घयाऽऽ-इणो रसा पुण पउत्ति त्ति ॥७६॥
इच्चाऽऽइ आवायकहा ।
निव्वावकहा भन्नइ, एत्तियमेत्ता उ वंजणपयारा । तह पक्कन्नविसेसा, एवइया तत्थ भोज्जे ति ॥७७॥
इच्चाऽऽइ निव्वावकहा ।
अह आरंभकहा पुण, जलथलखहयरजियाण उवओगो । एत्तियमेत्ताण फुडं, संजायइ तत्थ भोज्जे त्ति ॥७८॥
इच्चाऽऽइ आरंभकहा ।
निट्ठाणकहा एसा, सयं व पंच व सया सहस्सं वा । किं बहुणा लक्खाऽऽइ वि, उतजुज्जइ तत्थ भोज्जे त्ति॥७९॥
इच्चाऽऽइ निट्ठाणकहा । भणिया भत्तकहा ॥
देसकहा वि चउद्धा, छंदकहा विहिकहा वियप्पकहा । नेयत्थकहा य तहा, तत्थ य देसो उ मगहाऽऽई ॥८०॥
छंदो गम्माऽगम्मं, जह किर लाडाण माउलगधूया । गम्मा गोल्लाऽऽईणं, भगिणि च्चिय सा अगम्मेव ॥८१॥
अहवा उ उइच्चाणं, माउसवत्ती जहा भवे गम्मा । अन्नेसिं नेय कहा, जणणि व्व इमा उ छंदकहा ॥८२॥
इच्चाऽऽइ छंदकहा ।
तप्पढमयाए जं जत्थ, भुज्जए सा भवे उ देसविही । तीए कहा पुण जा सा, देसविहिकहा मुणेयव्वा ॥८३॥
अहवा विवाहभायण-भोयण[1]भणिव्वए पसाहणाऽऽईणं । जा विरयणा विहीए, कहेह सा विहिकहा होइ ॥८४॥
इच्चाऽऽइ विहिकहा ।
अह होइ विगप्पकहा, तत्थ विगप्पो हु सासनिप्फत्ती । तह वप्पकूवसारणि-नइरेल्लगसालिरोप्पाऽऽई ॥८५॥
घरदेवउलविभागो, तहा निवेसो य गामनगराऽऽई । एमाऽऽईओ तस्स उ, कहा भवे इह वियप्पकहा ॥८६॥
नेयत्थं इह भन्नइ, इत्थीपुरिसाण संतिओ येसो । सो य दुहा साहायिय-भूसापच्चइयभेएणं ॥८७॥
तस्संसा निंदा वा, नेयत्थकहा भवे मुणेयव्वा । इइ चउहा देसकहा, रायकहा भन्नए अहुणा ॥८८॥
सा वि चउद्धा भणिया, निज्जाणकहा तहेय अइयाणे । होइ बलवाहणकहा, तह कोट्ठाऽगारकोसकहा ॥८९॥
गामनगराऽऽगराओ, निग्गमणं नरवइस्स निज्जाणं । एएसुं चिय जं पवि-सणं तु तं बेंति अइजाणं ॥९०॥
निज्जाणं अइयाणं, पडुच्च जं वण्णणं णरेंदस्स । सा किर निज्जाणकहा, अइयाणकहा य होइ तहा ॥९१॥

1. ०मणिच्चपसाहणाईणं पाठां० ।

तहा— उद्दामसद्ददुंदुहि-झंकारमिलंतमंतिसामंतो । करितुरयचक्किपाइक्क-चक्कअक्कंतमहियीढो ॥९२॥
करिपट्ठिसंनिविट्ठो, ससिसच्छहछत्तचामराऽऽडोयो । नयराउ नीइ राया, राया य सुराण रिद्धीए ॥९३॥
[1]वियरित्तु चित्तकीलं, कीलागिरिकाणणाऽऽइसु जहिच्छं । तुरयखुरुक्खयखोणी-रयधूसरसयलसेन्नजणो ॥९४॥
भूभंगमोक्कलिज्जंत-जंतसामंतकप्पियपणामो । अणवज्जवज्जिराऽऽउज्ज-मेस राया पुरमऽईइ ॥९५॥
बलवाहणं तु भण्णइ, गयहयवेगसरकरहपभिईयं । तव्वण्णस्सरूवा, वुच्चइ बलवाहणकह त्ति ॥९६॥
हयगयरहजोहसमूह-दुम्महुम्महियभूरिरिउवग्गं । एयंविहं न सेण्णं, मन्ने अन्नस्स नरवइणो ॥९७॥
कोट्ठाऽगारा धन्नाऽऽलया उ कोसो य होइ भंडारो । तव्वण्णणं तु जं सा, कहा वि तन्नामपुव्वा उ ॥९८॥
नियभुयपरक्कमक्कन्त-रायकोसेहिं निच्चवड्ढंतो । नियवंसजपुरिसपरं-पराऽऽगओ जयइ से कोसो ॥९९॥
इच्चेयाओ चउरो, विगहाओ इमीसु कीरमाणीसु । जे दोसा ते भणिमो, तत्थित्थिकहाए ता पढमं ॥७४००॥
दढमऽप्पणो परस्स य मोहस्सुदीरणं थिइकहाओ । उद्दीरियमोहो पुण, दुरुज्झियलज्जमज्जाओ ॥१॥
किं किं न चिंतइ मणे, असुहं किं किं न जंपइ गिराए । काएण किं व न कुणइ, कुए य तह पवयणुड्डाहो॥२॥
इत्थीकहं कहंतं, सोउं दट्ठुं च जेण छेयजणो । उग्गाराऽऽगारेहिं, इयमित्तो एस इइ कलइ ॥३॥
जओ—
वंकभणियाइं कत्तो, कत्तो अद्धऽच्छिपेच्छियव्वाइं । ऊससियं पि मुणिज्जइ, वियड्ढजणसंकुले गामे ॥४॥
एवं परेहिं परिकलिय-मज्झसारस्स तस्स तुच्छस्स । बंभव्वए वि कीरइ, नूणमऽसंभावणा न कहं ॥५॥
संभावणाचुत्तो पुण, चिंतइ एवं पि णऽत्थि साहुत्तं । ता तं कयं वरं जं, अप्पाऽभिमयं ति तो मूढो ॥६॥
इय चिंतिउं पमायइ, न अट्ठदसठाणगाइं पेहेइ । हंभो! ऽत्थ दूसमाए, दुप्पज्जीवीपभीईणि ॥७॥
इय इत्थिकहादोसा, अहया कमसो कहाचउक्के वि । दोसे भणामि ठाणंऽत-रुत्तगाहाचउक्केण ॥८॥
आयपरमोहुदीरण-उड्डाहो सुत्तमाऽऽइपरिहाणी । बंभव्वए अगुत्ती, पसंगदोसा उ गमणाऽऽई ॥९॥
आहारमंऽतरेण वि, गेहीओ जायए सइंगालं । अजिइंदियओ परिया-याओ य अणुण्णदोसा य ॥१०॥
रागद्दोसुप्पत्ती, सपक्खपरपक्खओ उ अहिगरणं । बहुगुण इमो त्ति देसो, सोउं गमणं च अन्नेसिं ॥११॥
चारियचोराऽभिमरे-हि य मारियसंककाउकामा या । भुत्ताऽभुत्तोहाणे, करेज्ज वा आससपओगं ॥१२॥
तहा—
जो जं किर कहइ कहं, सो तप्परिणामपरिणओ संतो । तं कहइ सउक्करिसं, काउं तरलिज्जइ य पायं ॥१३॥
तरलियचित्तो य नरो, संतमऽसंतं पि पत्थुयऽत्थगयं । गुणदोसं आरोवइ, ता तस्स असच्चवाइत्तं ॥१४॥
रुइयऽत्थपयरिसाऽऽरो-वणं च रागाउ होंति तह दोसा । तप्पडिवक्खनिरसणं, एवं पुण रागिदोसित्तं ॥१५॥
तम्हा असच्चवाइत्त १-रागि २-दोसित्त ३-कारणं विकहा । सव्वा वि वज्जणिज्जा, अवज्जहेउ त्ति साहूणं ॥१६॥
विगहा परो पमाओ, विगहा सद्धम्मझाणविग्घयरी । विगहा अबोहिबीयं, विगहा सज्झाय-पलिमंथो ॥१७॥
विगहा अणत्थजणणी, परममऽसंभावणापयं विगहा । विगहा असिद्धियवी, लहुयत्तणकारिया विगहा ॥१८॥
विगहा य समिइमहणी, विगहा संजमगुणाण हाणिकरी । विगहा गुत्तिवियत्ती, कुयासणाकारणं विगहा ॥१९॥
तम्हा विगहाउ विवज्जिऊण, हे अज्ज! होज्ज तं निच्चं । निव्वाणंऽगमऽवंझं, सज्झायं पइ पयत्तपरो ॥२०॥
तप्परिसंतो संतो, संतोसं चिय मणे परिवहंतो । संजमगुणाऽविरुद्धा, ता चेव कहा कहेज्ज जहा ॥२१॥

"गुणकरस्त्रियादिकथास्वरूपम्" —

तेलोक्कतिलयकप्पं, पसवित्ता पुत्तरयणमंऽतम्मि । अन्तगडकेवलित्तं, पत्ता मुत्तिं च मरुदेवी ॥२२॥
पासंडिवयणपवणु-च्छलंतमिच्छत्तपंसुपडलेण । पिहियपहं पि न विहियं, दंसणरयणं च सुलसाए ॥२३॥
इय धन्ना इय पुन्ना, अन्ना मन्ने जयम्मि नत्थित्थी । भुवणगुरुग्गिन्नगुणा, सुग वि सा चेव जं भणिया ॥२४॥
रागद्दोसवियुत्तं, संतं बायालदोसपरिचत्तं । संजमपोसपवित्तं, निच्चमुवट्ठंभियचरित्तं ॥२५॥
सुतुत्तविहिनिउत्तं, सुमुहाजीवित्तमेत्तसंपन्नं । जुत्तं भत्तं भोत्तुं, उत्तमसाहुत्तणनिमित्तं ॥२६॥

1. विरइत्तू B ।

आणंदसंदिराइं, जिणिंदचंदाण मंदिराइं जहिं । अन्नयवइरेगगया, गुणा य तेरस इमे जत्थ ॥२७॥
चिक्खल्लपाणथंडिल–वसहीगोरसजलाऽऽउले वेज्जे । ओसहनिचयाऽहिवइ–पासंडा भिक्खसज्झाए ॥२८॥
साहम्मियजणपउरो, अणुड्डओ आरिओ अपच्चन्तो । संजमगुणेक्कहेऊ, साहुविहाराऽरिहो देसो ॥२९॥
चंडभुयदंडमंडय–निवेसियाऽसेसचक्कवट्टिसिरी । नमिरनरनाहसिरमणि–मऊहविच्छुरियपयवीढो ॥३०॥
भरहो राया रयणंऽ–गुलीयगलणुब्भवन्तसंवेगो । अंतेउरमज्झगओ वि, केवलं झत्ति संपत्तो ॥३१॥
एवंविहाउ थीभत्त–देसनरनाहगोयराओ वि । धम्मगुणहेउयाओ, कहाओ ताओ न विकहाओ ॥३२॥
इय जइ विगहागहगसिय–धम्मसारस्स परिगलंति गुणा । संजमगुणोवउत्तस्स, ता वरं चिट्ठिउं जुत्तं ॥३३॥
एस विकहापमाओ, भणिओ न्नब्भणणओ य पुण भणिओ । मज्जाऽऽइलक्खणो खलु, पंचपयारो पमाओ वि॥३४॥
अन्नं पि समयविउणो, जूयपमायं भणंति किर छट्ठं । सो पुण लोगदुगस्साऽवि, बाहगो चेव निद्दिट्ठो ॥३५॥
इहलोगे ताव नरो दुज्जयजूयप्पमायसत्तुजिओ । चउरंगबलसमेयं, सज्जो रज्जं पि हारेइ ॥३६॥
हारेइ धणं धन्नं, खेत्तं वत्थुं सुवन्नयं रुप्पं । दुपयं चउप्पयं पि हु, निस्सेसं कुवियजायं च ॥३७॥
किं बहुणा अंगगयं पि, जाव कच्छोटयं पि हारित्ता । पहपडियपत्तकप्पड–पच्छाइयकडियलविभागो ॥३८॥
हारियसव्वसो वि हु, देहाऽवयवं पि हत्थपायाऽऽई । उड्डिय जूयाराणं, जूयं चिय रमइ मूढमणो ॥३९॥

"द्युतस्वरूपम्" —

[1]ढिंढो रणाऽवणीए, अगणियअत्थव्वओ सह परेहिं । जयबद्धमणो विलसइ, जूयारो रायपुत्तो व्व ॥४०॥
अहवा—
अगणियछुहापिवासो, अगणियसीउण्हदंसमसगो य । अगणियअत्तसुहदुहो, अगणियसयणाऽऽइपडिबंधो ॥४१॥
अगणियपरोवहासो, निप्पडिकम्मो निराऽऽवरणदेहो । जियनिद्दो थिरएगग्ग–धारणो पत्थुयत्थम्मि ॥४२॥
अन्नत्तो विणियत्तिय, तुरंगतरतरलइंदियप्पसरो । ओ! नज्जइ जूयारो, झाणोवगओ महरिसि व्व ॥४३॥
जरचीरियानिवसणो, लीहालयखडियखरडियसरीरो । कंडूयणुट्ठियरेहो, समंतओ लुलियकेसो य ॥४४॥
खरफरुससरीरच्छवि–कडित्तघसणुत्थहत्थकिणजालो । अयणिद्दयरत्तऽच्छो, उयमिज्जइ केण जूयारो ॥४५॥
सो तारिसो वराओ, पइदिणवड्ढंतजूयदढराओ । पइखणअवरोप्परविहिय–संपराओ अगाराओ ॥४६॥
किंपि हु अपावमाणो, हारइ भज्जं पि तं च मोएउं । चिंतेइ चोरियं पि हु, तप्परिणयमाणसो य तओ ॥४७॥
तत्थेय संपयट्टइ, तहा पयट्टो य पावइ पायो । सो तइयपावठाणग–वन्नियदोसे असेसे वि ॥४८॥
ओवाइयाइं इच्छइ, कुलदेवयजक्खसक्कमाऽऽईणं । नियडंतसमत्थाऽणत्थ–सत्थनित्थरणकज्जकए ॥४९॥
जहा—
अहियं सऽहिओ खिज्जउ, जूययरा खयमुवेंतु सव्वे वि । पसमंतु अणत्था पुण, होउ य अत्थो महं विउलो ॥५०॥
एवं च चिंतयंतो, अपुन्नवंछो वहं च बंधं च । रोहं अंगच्छेयं, तेहिंतो लहइ मरणं पि ॥५१॥
एवं च कुलं सीलं, कित्तिं मित्तिं परक्कमं सकम्मं । सत्थं अत्थं कामं, जूयप्पसत्तो पणासेइ ॥५२॥
इय इहलोइयगुणव–ज्जिओ कहं सुगइहेउणो सम्मं । सक्को समऽज्जिणेउं, गुणे जणे लद्धधिक्कारो ॥५३॥
पामाकंडुयणसुहेल्लि–तुल्लमऽवि वासणाजणियमऽणुयं । किर किंपि कामकीलाए, कामुओ कलयइ सुहं पि ॥५४॥
नीरसचिरकालियहड्ड–खंडकवलणसमेण साणो व्व । जूयरमणेण किर किं, जूयारो पुण मुणइ सोक्खं ॥५५॥
गेहसिरी देहसिरी, सिट्ठत्तसिरी य सुहसिरी अहवा । इहपरलोयगुणसिरी, सज्जो जूयाओ जाइ खयं ॥५६॥
सुव्वंति य एत्थऽत्थे, सत्थेसु अणेगहा कहाणाइं । हारियरज्जाऽऽईणं, नलपंडवपमुहराईणं ॥५७॥

"प्रमादस्य अष्टस्थानानि" —

अन्ने पुण अन्नाणं[1], मिच्छानाणं[2] च संसयं[3] रागं[4] । दोसं[5] सुईए[6] भंसं, अणाऽऽयरं तह य धम्मम्मि[7] ॥५८॥
मणवयणकायजोगाण, दुप्पणिहाणाणमऽह[8] परं काउं । पत्थुयपमायमेयं, अट्ठपयारं परूवेंति ॥५९॥
तत्थ य नाणाऽभावं, अन्नाणं नाणरासिणो बेंति । तं पुण सव्वाणं पि हु, जीवाणं दारुणो सत्तू ॥६०॥

1. ढिंढो = पतितः ।

कट्ठाण परमकट्ठं, अहिट्ठिओ जेण एस जंतुगणो । अप्पगयं पि हियाहिय-मऽट्ठं न मुणइ मणागं पि ॥६१॥
नवरं नाणाऽभावो, थोयत्तवियक्खया इहं नेयो । नो पुण स सव्वह च्चिय, जहा इमा अणुदरी कण्णा ॥६२॥
थेवत्तणे वि नाणस्स, मासतुसयाऽऽइयाण जइ वि सुए । सुव्वंति केवलाइं, बहुनाणत्तं खु तहवि वरं ॥६३॥
जओ—
जह जह सुयमऽवगाहइ, अइसयरसपसरनिब्भरमऽपुव्वं । तह तह पल्हाइ मुणी, नवनवसंवेगसद्धाओ ॥६४॥
सुगुरुपरतंतयाए, सिद्धे वि हु मासतुसपमोक्खाणं । नाणित्ते अन्नाणं, बहुनाणाऽभावओ नेयं ॥६५॥
पायं पमायदोसा, जम्हा जायइ जियाणमऽन्नाणं । कारणकज्जुवयारा, ता अन्नाणं च्चिय पमाओ ॥६६॥
नाणं पुण थेवं पि हु, भवंतमिह किंपि जायए सम्मं । अन्नं न तहा तं पुण, मिच्छानाणं मुणेयव्वं ॥६७॥
मिच्छत्तभणणओ च्चिय, हेट्ठा खलु तं निदंसियमिहेय । अह संसओ त्ति सो पुण, मिच्छानाणस्स चेवंऽसो ॥६८॥
दोलायमाणमाणस-करणाओ देससव्वगो एस । उपज्जंतो जीयाऽऽ-इएसु जिणदेसियऽत्थेसु ॥६९॥
सम्मत्तमहारयणं, निम्मलमऽवि जेण कुणइ अइमलिणं । जिणऽपच्चयादऽकिच्चो, जीवाऽऽइसु संसओ तम्हा ॥७०॥
रागद्दोसपमाया वि, हेट्ठओ पेज्जदोसभणणेण । भणिय च्चिय ता ते वि हु, खमग! तुमं परिच्चयसु जेण ॥७१॥
जं न लहइ सम्मत्तं, लद्धूण य जं न एइ संवेगं । विसयसुहेसु य रज्जइ, सो दोसो रागदोसाणं ॥७२॥
न वि तं कुणइ अमित्तो, सुट्ठु वि सुविराहिओ समत्थो वि । जं दो वि अणिग्गहिया, करेइ रागो य दोसो य ॥७३॥
इहलोए आयासं, अयसं च करेंति गुणविणासं च । पसवंति य परलोए, सारीरमणोगए दुक्खे ॥७४॥
धी! धी! अहो अकज्जं, जं जाणंतो वि रागदोसेहिं । फलमऽउलं कडुयरसं, तं चेव निसेवए जीवो ॥७५॥
को दुक्खं पावेज्जा, कस्स य सोक्खेहिं विम्हओ होज्जा । को य न लभेज्ज मोक्खं, रागद्दोसा जइ न होंता ॥७६॥
तो बहुगुणनासाणं, सम्मत्तचरित्तगुणविणासाणं । न हु यसमाऽऽगंतव्वं, रागद्दोसाण पावाणं ॥७७॥
सुइभंसो पुण नेओ, जिणिंदवयणस्स सवणविद्धंसो । सपरोभयाण विग्गहा-कलहाऽऽइविग्घकरणेणं ॥७८॥
एसो य महापावो, पयासिओ परमसमयकेऊहिं । निविड्डक्कडनाणाऽऽवरण-कम्मबंधेक्कहेउ त्ति ॥७९॥
धम्मे अणाऽऽयरो पुण, पमायभेओ सुदारुणो चेव । धम्माऽऽयराउ जम्हा, समत्थकल्लाणनिप्फत्ती ॥८०॥
को नाम किर सकन्नो, कहिं पि चिंतामणिं पि पावित्ता । कल्लाणेक्कनिहाणे, होज्जाऽणाऽऽयरपरो तत्थ ॥८१॥
दुप्पणिहाणंतिगं पि हु, निस्सेसाऽणट्ठदंडमूलपयं । सम्ममऽवगम्म सुप्पणि-हाणतिगे चेव जइयव्वं ॥८२॥
एवं एस पमाओ, मज्जाऽऽइबहुप्पयारनिम्माओ । सद्धम्मगुणाऽवाओ, भणिओ कयकुगइविणिवाओ ॥८३॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च भयकडिल्लम्मि । कट्ठाऽवत्था जायइ, जीवाणं एत्थ जा का वि ॥८४॥
तं सव्वं पि वियाणसु, इमस्स अच्चन्तकडुवियागस्स । जम्मंऽतरनिव्वत्तिय-पावपमायस्स विप्फुरियं ॥८५॥
सुबहुं पि सुयमऽहिज्जिय, सुदीहमऽवि पालिऊण परियायं । पावपमायपरवसा, मूढा हारंति सव्वं पि ॥८६॥
तं सामग्गिं संजमगुणाण, तं तारिसं महापयविं । ओहारेइ पमाई, धिरत्थु ही! ही! पमायस्स ॥८७॥
देवा वि दिणभावं, पच्छायावं परव्वसत्ताऽऽई । जमऽणुभवंति फलं तं, जम्मंऽतरकयपमायस्स ॥८८॥
तिरियत्तमऽणेगविहं, हीणनरत्तं च नारगत्तं च । जं जीयाणं तं पि हु, जम्मऽन्तरकयपमायफलं ॥८९॥
एसो परमत्थरिऊ, एसो परमत्थदारुणो नरओ । एसो परमत्थवाही, एसो परमत्थदारिद्दं ॥९०॥
एसो परमत्थखओ, एसो परमत्थदुक्खसमवाओ । एसो परमत्थरिणं, जीवाणमिमो पमाओ जो ॥९१॥
सुयकेवली वि आहारगो वि, उवसमियसव्वमोहो वि । जइ पडइ पमायवसा, कहा वि ता का परेसिं तु ॥९२॥
धम्मो अत्थो कामो, मोक्खो य पमायओ परिगलंति । विरलतरंऽगुलिकरयल-निलीणसलिलं व पुरिसस्स ॥९३॥
इमिणा विडंबिओ एक्क-सिं पि जो होज्ज इह भवे जीवो । भवकोडिसयसहस्से, अडेज्ज स विडंबणानडिओ ॥९४॥
एयम्मि अणिग्गहिए, समग्गकल्लाणनिग्गहो विहिओ । अह निग्गहो पमायस्स, सयलकल्लाणपभवो ता ॥९५॥
इय भो देवाणुप्पिय!, पिया व इह निग्गहो पमायस्स । विहिओ हियावहो होही, तुह ता [1]तत्थेव कुण जत्तं ॥९६॥
एवमऽणुसट्ठिदारे, सवित्थरऽत्थं सभेयपडिभेयं । भणियं पमायनिग्गह-नामं तुरियं पडिद्दारं ॥९७॥

1. तत्ते व पाठां० ।

एत्तो पमायनिग्गह–निमित्तभूयं भणामि संखेवा । सव्वपडिबंधवज्जण–नामं पंचमपडिद्दारं ॥९८॥

"सर्वप्रतिबन्धत्यागद्वारम्" —

अभिसंगलक्खणं खलु, पडिबंधं बेंति बुद्धवयणविऊ । दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च सो चउहा ॥९९॥
तत्थ सचित्तमऽचित्तं, मीसं च तिभेयमिह भवे दव्वं । दुपयं चउप्पयं अपय–मिय पुणो तं तिहेक्केक्कं ॥७५००॥
एवं च विसयभेया, तब्भेयन्नूहिं समयकेऊहिं । संखेवेणऽक्खाओ, नवभेओ दव्वपरिबंधो ॥१॥
पढमो पुरिसित्थिसुगाऽऽइएसु, बीओ य हयगयाऽऽईसु । तइओ पुप्फफलाऽऽइसु, इय ता सच्चित्तदव्वगओ ॥२॥
सगडरहाऽऽइसु तुरिओ उ, पट्टखट्टाऽऽइएसु पंचमओ । कणगाऽऽइएसु छट्ठो, इमो उ अच्चित्तदव्वगओ ॥३॥
सत्तऽट्ठमा उ कमसो, साऽऽहरणाऽऽयरणनरगयाऽऽईसु । नयमो य कुसुममालाऽऽ–इएसु इय मीसदव्वगओ ॥४॥
अह गामनगरगेहाऽऽ–वणाऽऽइविसएसु खेत्तपडिबंधो । काले वसंतसरयाऽऽ–इएसु राओ दियाओ वा ॥५॥
भावे पुण पडिबंधो, सुंदरसद्दाऽऽइगोयरा गिद्धी । अहवा उ कोहमाणाऽऽ–इयाण निच्चं अचाओ जो ॥६॥
एसो य कीरमाणो, सव्वो वि दुरंतदीहदुहदाई । दिट्ठो विसिट्ठदिट्ठीहिं, देसिए सासणे जइणे ॥७॥

किंच—

जत्तियमेत्तो एसो, पडिबंधो तत्तिओ दुहो होइ । जायइ जीवाण जओ, ता वरमेसो परिच्चत्तो ॥८॥
एयम्मि अपरिचत्ते, न होइ चत्ता अणत्थरिंछोली । अह सो परिचत्तो ता, सा वि हु दूरं परिच्चत्ता ॥९॥
पडिबंधो वि हु कीरइ, जइ ता तव्विसयवत्थुजायम्मि । सारत्तं किंपि भवे, अह नो ता किं च एएण ॥१०॥
पयइखणभंगुरेसु वि, पयइअसारेसु पयइतुच्छेसु । का भल्लिमा भणिज्जइ, संसारसमुत्थवत्थूसु ॥११॥

तहाहि—

काओ करिकन्नचलो, रूवं पुण खणलिणस्सरसरूवं । तारुण्णं पि परिमियं, लायन्नं दिन्नवेयन्नं ॥१२॥
सोहग्गं पि हु विहडइ, विगलत्तमुवेंति इंदियाइं पि । सरिसयमेत्तं पि सुहं, सुरगिरिगुरुदुहभरऽक्कंतं ॥१३॥
चवलत्तमुवेइ बलं, जीयं पि य जलतरंगतरलमिणं । सुमिणसमाणं पेम्मं, छायसरिच्छाओ लच्छीओ ॥१४॥
भोगा सुरचायचवला, संजोगा सिहिसिहोवमा सव्वे । तं नऽत्थि सेसवत्थुं पि, किं पि जं सासयसहावं ॥१५॥
एवं च समत्थेसु वि, भवुत्थवत्थूसु सोक्खकज्जेण । कीरंतो पडिबंधो, सुंदर! दुक्खेण परिणमिही ॥१६॥
जाओ न समं बंधूहिं, किर तुमं न य मओ वि सह तेहिं । ताऽलं तेहिं पि समं, सुंदर! पडिबंधकरणेणं ॥१७॥
जं भवजलहिम्मि जिया, कम्ममहालहरिवेगवुब्भंता । संघडणविहडणाओ, लहन्ति ता कस्स को बंधू ॥१८॥
पुणरुत्तजम्ममरणे, चिरं भमंतो भवम्मि न हु कोई । अत्थि स जीवो जाओ, जो न मिहोऽणेगहा बंधू ॥१९॥
जं चेच्चा गंतव्वं, तम[1]ऽप्पणिज्जं कहं भवे नाम । इय चिंतिउं चएज्जा, बुहो सरीरे वि पडिबंधं ॥२०॥
चिरमुवयरियं विविहो–वयारकरणेहिं जइ सरीरं पि । दरिसइ वियारमंऽते, ता सेसऽत्थेसु का आसा ॥२१॥
पडिबंधो बुद्धिहरो, पडिबंधो बंधणं धणियमुग्गं । पडिबंधो भवसंघो, पडिबंधं धीर! ता चयसु ॥२२॥
जइ पुण तुमं महायस!, सक्को न हु सव्वहा इमं चइउं । पडिबंधं ता सुपसत्थ–वत्थुविसयं करेसु जओ ॥२३॥
तित्थयरे पडिबंधो, पडिबंधो सुविहिए जइजणे य । एसो पसत्थगो च्चिय, सरागसंजमजईणऽज्ज ॥२४॥
अहवा सिवसुहसाहग–गुणसाहणहेउगम्मि दव्वे वि । तह सिवसाहगगुणसा–हणाऽणुकूलम्मि खेत्ते वि ॥२५॥
तह सिवसाहगगुणसा–हणाऽवसरलक्खणम्मि काले वि । सिवसाहगगुणरूवे, भावम्मि वि कुणसु पडिबंधं ॥२६॥
एयं पि पसत्थपयत्थ–विसयपडिबंधकरणमऽच्चंतं । केवलनाणदियायर–पयासविक्खंभगं भणियं ॥२७॥
एत्तो च्चिय जयगुरुवीर–नाहविसए वि बद्धपडिबंधो । सुचरियचरणो वि चिरं, न गोयमो केवलं पत्तो ॥२८॥
हंभो देवाणुप्पिय!, इह जइ सुहवत्थुगोयरो वि इमो । एयंविहपरिणामो, पडिबंधो ता अलं तेण ॥२९॥
किं च सुहऽत्थी जीवो, सुहं च संजोगओ इहं पायं । ता संजोगं इच्छइ, सो दव्वाऽऽईहिं सुहहेउं ॥३०॥
दव्वाण य निच्चवओ, खेत्ताणि वि निच्चमेव न रइकए । कालो वि परावत्तइ, एगसहावो न भावो वि ॥३१॥
संजोगो वि इमेहिं, जो होत्था अत्थि होहिइ कोवि । कस्स वि सो सव्वो वि हु, नियमेण वियोगपज्जंतो ॥३२॥

1. अप्पणिज्जं = आत्मीयम् ।

एवं च वियोगऽन्ते, नियमा दव्वाऽऽइएहिं संजोगे । दव्वाऽऽइसु पडिबंधो, कीरन्तो कं गुणं लहइ ॥३३॥
अन्नं च जीयदव्वाऽऽइयाण-मऽवरोप्परेण अन्नत्तं । अन्नाऽऽयत्तं असुहं च, सुहं चिय परवसत्तेण ॥३४॥
जइ पढमं पि न काहिसि, अन्नाऽऽयत्तम्मिचित्त! पडिबंधं । ता तव्वियोगजणियं, दुक्खं पि हु नेय पाविहिसि॥३५॥
जह जह किर पडिबंधं, संसारपयत्थवित्थरे कुणइ । तह तह बंधइ कम्मं, इह मूढो गाढगाढयरं ॥३६॥
एवं पि नो विभावइ, पडिबंधो जत्थ कीरइ पयत्थे । स खलु विणासी तुच्छो, विचित्तभवहेउओ य तओ ॥३७॥
बीहसु भीमभवाओ, उव्वियसु य पुव्वविहियपावाओ । कुणसु पडिबंधचायं, जइ इच्छसि अप्पणो पत्थं ॥३८॥
जह जह संगच्चाओ, तह तह कम्माण अवचओ होइ । जह जह सो पुण तह तह आसन्नं होइ परमपयं ॥३९॥
आराहणाकयमणो, मुणिवर! सव्वं पि पावपडिबंधं । ता दूरमुज्झिऊणं, आयाऽऽरामो भवसु निच्चं ॥४०॥
पंचममेयं भणियं, पडिबंधच्चायनामपडिदारं । सम्मत्तविसयमेत्तो, छट्ठं पडिदारमऽक्खेमि ॥४१॥

"सम्यक्त्वद्वारम्" —

जमऽणंतम्मि वि न कयाइ, पत्तपुव्वं अईयकालम्मि । लंघिज्जइ गोपयमिव, जस्सामत्थेण भवजलही ॥४२॥
अल्लियइ पाणिकमले, जस्स पभावेण मोक्खसोक्खसिरी । जं च पवेसदुवारं, महल्लकल्लाणकोसस्स ॥४३॥
मिच्छत्तपबलहुयवह-तावियजीयाण जं च अमयं व । पडियारपयं पत्तं, सम्मत्तं खवग! तं तुमए ॥४४॥
एत्थ य संपत्तम्मि, मा भाहिसि भीमभवभयाहिंतो । एयाऽणुगएहिं जओ, भवस्स सलिलंऽजली दिन्नो ॥४५॥
किंच—
नरयम्मि वरं अइदीहरं पि, कालं ठिओ समं इमिणा । मा पुण एयविउत्तस्स, देवलोगे वि उववाओ ॥४६॥
जम्हा नरयाउ इहाऽऽगयाण, सुद्धस्स तस्स अणुभावा । सुव्वंति केसु वि सुए, तित्थयरत्ताऽऽइलद्धीओ ॥४७॥
सम्मत्तगुणविहीणस्स, देवलोगाओ पुण चुयस्सेह । पुढवाऽऽईसु वि गमणं, सुव्वइ दीहट्ठिई य तहिं ॥४८॥
अंतोमुहुत्तमेत्तं पि, फासियं जइ भवेज्ज कहवि इमं । ता एस अणाऽऽई वि हु, भवोयही गोपयं मण्णे ॥४९॥
धणवमऽधणो वि पुरिसो, सम्मत्तमहाधणं हि जस्सऽत्थि । इहभवसुही जइ धणी, सुही सुदिट्ठी पइभवंपि ॥५०॥
सम्मत्तरयणमऽइयार-पंसुपरिवज्जियं मणोभवणे । जस्स वियंभइ मिच्छत्त-तिमिरविहुरो कहं स भवे ॥५१॥
सव्वाऽऽइसयनिमित्तं, मणम्मि सम्मत्तलक्खणो मंतो । जस्सऽत्थि न तं पुरिसं, मोहपिसाओ छलेउमऽलं ॥५२॥
जस्स मणोगयणयले, सम्मत्तदियायरो परिप्फुरइ । न कुमयजोइसचक्कं, तम्मि पयासं पि पाउणइ ॥५३॥
पासंडिदिट्ठिविस-विसयगो वि, सम्मत्तदिव्वमणिधारी । जो न हु कुवासणाविस-संकन्ती तस्स संभवइ ॥५४॥
तो मा कासि पमायं, सम्मत्ते सव्वदुक्खखयजणगे । जेणेयपइट्ठाणाइं, नाणतववीरियचरणाइं ॥५५॥
नगरस्स जह दुवारं, मुहस्स चक्खुं तरुस्स जह मूलं । तह जाणसु सम्मत्तं, वीरियतवनाणचरणाणं ॥५६॥
भायाऽणुरायपेमाऽणुराय-सुगुणाऽणुरायरत्तो य । धम्माऽणुरायरत्तो य, होसु जिणसासणे निच्चं ॥५७॥
अन्नो को वि पभावो, इमस्स निस्सेसगुणपहाणस्स । सम्मत्तमहारयणस्स, पावियस्सेह जं भणियं ॥५८॥
जस्स दिवसं पि एक्कं, समत्तं निच्चलं जहा मेरु । संकाऽऽइदोसरहियं, न पडइ सो नरयतिरिएसु ॥५९॥
दंसणभट्ठो भट्ठो, न हु भट्ठो होइ चरणपब्भट्ठो । दंसणमऽमुयंतस्स हु, परियडणं नऽत्थि संसारे ॥६०॥
सुद्धे सम्मत्ते अविरओ वि, अज्जिणइ तित्थयरनामं । जं आगमेसिभद्दा, हरिकुलपहु-सेणिया जाया ॥६१॥
कल्लाणपरंपरयं, लभंति जीवा विसुद्धसम्मत्ता । सम्मत्तमहारयणं, नऽग्घइ ससुराऽसुरो लोगो ॥६२॥
सो च्चिय जयम्मि जाओ, पत्तं सम्मत्तरयणमिह जेण । अरहट्टजंतसरिसे, संसारे को किर न जाओ ॥६३॥
निज्जियचिंतामणिकप्प-पायवं ता लहित्तु सम्मत्तं । तुमए एत्थं सुंदर!, खणं पि जत्तो न मोत्तव्वो ॥६४॥
सम्मत्तजाणवत्तं, अप्पत्ता दुत्तरे भवसमुद्दे । एत्थ निमज्जिस्संति, तहा निमग्गा निमज्जंति ॥६५॥
सम्मत्तजाणवत्तं, पावित्ता दुत्तरंपि भवजलहिं । तिन्ना तरंति भविया, अचिरेण तहा तरिस्संति ॥६६॥
आराहणाकयमणो, मणोरहाणं पि दुल्लहं तम्हा । पावित्ता सम्मत्तं, धीर! तुमं मा पमाएज्ज ॥६७॥
इहरा उ पमायपरस्स, पत्थुयाऽऽराहणा इमा तुज्झ । नाव व्व भट्ठिपत्ता, तडत्ति विहडिस्सइ नूणं ॥६८॥
सम्मत्तणामधेयं, छट्ठं पडिदारमेवमऽक्खायं । अरिहाऽऽइछक्कभत्ती-विसयं अह सत्तमं भणिमो ॥६९॥

"अरिहंतादिभक्तिद्वारम्" —

अरिहंत[१] सिद्ध[२] चेइय[३]-आयरि[४] उज्झाय[५] साहुणो[६] त्ति इमं । छक्कं सिवपुरपयवी-सत्थाहसमं मुणेऊण ॥७०॥
हे खवग! हरिसपयरिस-वसवियसियहिययसररुहस्संतो । भत्तीए धरसु सम्मं, निव्विग्घं पत्थुयऽत्थकए ॥७१॥
एगा वि किर समत्था, जिणभत्ती दुग्गइं णिवारेउं । दुलहाइं लहावेउं, आसिद्धिपरंपरसुहाइं ॥७२॥
किं पुण परमेसरसिद्ध-चेइयाऽऽयरियवायगाऽऽईसु । भत्ती न होज्ज संसार-कंदनिक्कंदणसमत्था ॥७३॥
विज्जा वि ताण भत्तीए, सिद्धिमुवयाइ होइ फलदा य । किं पुण निव्वुइविज्जा, सिज्झिहिइ अभत्तिमंतस्स ॥७४॥
तेसिं आराहणनाय-गाण न करेज्ज जो नरो भत्तिं । विहलेइ संजमं सो, ऊसरमहिवियिसालिं व ॥७५॥
बीएण विणा सस्सं, इच्छइ सो वासमऽब्भएण विणा । आराहणमीहइ जो, आराहगभत्तिविरहेण ॥७६॥
विहिवयियस्स वि सस्सस्स, जह य निप्फावगं भवइ वासं । तह आराहगभत्ती, तवदंसणनाणचरणाणं ॥७७॥
एक्केक्कगोयरा वि हु, अरिहाऽऽइसु सुहपरंपरं जणइ । भत्ती उ कीरमाणा, कणगरहनिवो इहं नायं ॥७८॥
तहाहि— "कनकरथनृपदृष्टान्तः"
सुंदरपइकयरक्खा, सुदीहरऽच्छा सुवच्छकलिया य । जा महिल व्व विरायइ, तीसे मिहिलाए नयरीए ॥७९॥
आसी कणगरहनिवो, जस्स रविस्स व पयावपसरेण । हयमऽरिकुलमऽसिरीयं, संकुइयं कुमुयसंडं व ॥८०॥
पणइजणजणियतोसं, अवरोप्परदूरवज्जियपओसं । तस्स य नीइपहाणं, रज्जसुहं भुंजमाणस्स ॥८१॥
एगम्मि अवसरे रयण-रुइरसिंहासणे निसन्नस्स । दूरोणामियसिरसा, विण्णत्तं संधिपालेण ॥८२॥
देव! महऽच्छरियमिमं, जं जिप्पइ दिणयरो वि तिमिरेण । केसरिकिसोरकेसर-सडा वि तोडिज्जइ मिगेण ॥८३॥
चिरकालपेसियं तुम्ह, संतियं तित्तियं पि चउरंऽगं । सेन्नं भज्जइ उत्तर-दिसिनाहमहिंदसीहेण ॥८४॥
किर तप्पउत्तिविणिउत्त-गूढपुरिसेहिं सिग्घमाऽऽगंतुं । इन्हिं चिय मह कहिओ, जहट्ठिओ समरवुत्तंतो ॥८५॥
तत्थ य जो तुम्ह पसाय-ठाणमाऽऽसि कलिंगनरनाहो । सो पडियक्खेण समं, पडिवन्नो भेयमऽविलज्जो ॥८६॥
कुरुदेसाऽहिवई वि हु, तुह सेणाऽहिवपओसदोसेण । तव्वेलमऽवक्कंतो, रणंऽगणाओ अदक्खिन्नो ॥८७॥
अन्ने य कालकुंजर-सिरिसेहरसंकराऽऽइसामंता । ओसरिया समराओ, दट्ठूण विसंहयं सेन्नं ॥८८॥
एवं च मत्तकरिकर-चूरिज्जंतप्पहाणरहनियहं । रहनिवहचूरणत्तट्ठ-तुरयहम्मंतनरनियरं ॥८९॥
नरनियरपडणदुग्गम-मग्गाऽऽउलसंचरंतवरसुहडं । वरसुहडपरोप्परभिडण-वाउलिज्जंतसेन्नजणं ॥९०॥
सेन्नजणमुक्कपोक्कार-बोलनासंतकायरनरोहं । हयजोहं जमगेहं, तुह सेन्नं पावियं रिउणा ॥९१॥
एवं सोच्चा भालयल-घडियविगरालभिउडिणा रन्ना । ताडाविया गरुरवा, पयाणयाऽऽवेइया भेरी ॥९२॥
अह मेहसंघनिग्घोस-निब्भरेणं रवेण लहु तीए । मुणियपयाणपओयण-मुवट्ठियं चाउरंगबलं ॥९३॥
ताहे तेणाऽणुगओ, कणगरहमहीवई दढं कुविओ । अविलंबियप्पयाणेहिं, सत्तुणो भूमिमऽणुपत्तो ॥९४॥
अह तं आगयमुवलक्खिऊण, उव्वूढगाढरहसेण । पडिरिउणा पारद्धो, सुमहंतो समरसंरंभो ॥९५॥
अह मुक्कचक्कनारायवग्ग, उत्थरिय सुहड तेइण उदग्ग । कंकणमणिकंतिकयाऽवरोह, नं कुवियकयंतह दिट्ठिछोह॥९६॥
मणपवणवेगतुरयाण थट्ट, रिउसेन्निण सह जुज्झिण पयट्ट । हयदंड सहहिं पुंडरीयजाल, भुंजेवि चत्त नं जमिण थाल॥९७॥
पडियक्खखग्गनिल्लुणियकंठ, रणकम्मणतोसियतियसवंठ । णियसामिकज्जपरिचत्तदेह, कयकिच्च नाइ नच्चिय सुजोह॥९८॥
रुहिरद्दमुंडमंडियधरित्ति, रत्तुप्पलेहिं नं रइय भित्ति । दोहंडियकुंजर भूमिवडिय, नं रेहहि अंजणकूड खुडिय ॥९९॥
इय एयंविहसंगरि बहुजणखयकरि, वट्टंतइ मिहिलाऽहिवेण ।
नियकुंजरु चोयावेिउ रणपहे ठाविउ, रिउसवडम्मुहु दुद्धरिण ॥७६००॥
एत्थंतरम्मि मंतीहिं, जंपियं देव! विरमह रणाओ । मा पूरह सत्तूणं, मणोरहे नियह नियसत्तिं ॥१॥
एसो हि उत्तरदिसा-नराऽहिवो समरकम्मपरिहत्थो । तियसकयपाडिहेरो, पयंडपक्खो महासत्तो ॥२॥
एयं गूढचरेहिं, णिवेइयं अम्ह संपयं चेव । ता न खमं खणमेत्तं पि, अच्छिउं एत्थ थाणम्मि ॥३॥
अजहाबलमाऽऽरंभो य, देव! मूलं वयंति मच्चुस्स । ता सव्वपयारेहिं वि, अप्पा च्चिय रक्खियव्वो त्ति ॥४॥
अविदलियबलो इण्हिं पि, जइ तुमं देव! विरमसि रणाओ । ता अकलियमज्झो निय-पुरिं पि पावेसि निव्विग्घं॥५॥

इहरा विहियसविहडिय-विजयस्स परेहिं भग्गपसरस्स । असहायस्स य एत्तो, पलायणं पि हु न तुह सुलहं ॥६॥
इय मंतिवयणगाढो-वरोहओ निब्भओ वि कणगरहो । ओसरिओ समराओ, फुडमऽवसरवेइणो गरुया ॥७॥
पडिभग्गं पडियक्खं, पलायमाणं महेंदसीहो वि । अवलोइऊण चलिओ, करुणाए अकयतप्पहरो ॥८॥
अह जायमाणभंगो, हियय‌ऽब्भंतरफुरंतदढसोगो । अप्पाणं निहयं पिव, मन्नंतो कणगरहराया ॥९॥
पेच्छइ विणियत्तंतो, तियसाऽहिवनियहविहियपयसेवं । सिरिमुणिसुव्वयसामिं, समोसढं सुंसुमारपुरे ॥१०॥
ताहे दुरुज्झियराय-चिंघउवसंतधरियनेवत्थो । तिक्खुत्तो दाऊणं, पयाहिणं गाढभत्तीए ॥११॥
जयनाहं वंदित्ता, गणधरमुणिकेवलीहिं परियरियं । सुद्धमहीए निसण्णो, नरनाहो धम्मसवणत्थं ॥१२॥
खणमेत्तं च निसामिय, सामिगिरं समरवइयरं सरिउं । परिचिंतिउं पयत्तो, धिरऽत्थु मह जीवियव्वस्स ॥१३॥
जस्स तह सत्तुपडिहय-परक्कमस्स पणट्ठसारस्स । अवहरियपुव्वसुकया, वित्थरिया धणियमऽपसिद्धी ॥१४॥
एवमऽणुचिंतयंतो, विच्छायमुहो महीवई सामिं । नमिऊण निक्खमंतो, ओसरणाओ सकरुणेण ॥१५॥
विज्जुप्पभनामेणाऽ-सुरेंदसामाणिएण देवेण । भणिओ भद्द! किमेवं, पहरिसठाणे वि तुममेत्थ ॥१६॥
हियय‌ऽब्भंतरनिक्खित्त-तिक्खसल्लो व वहसि संतावं । करमलियनलिणतुल्ले, गयसोहे धरसि नयणुल्ले ॥१७॥
सायरकयप्पणामेण, तयणु मिहिलाऽहिवेण पडिभणियं । सयमेव मुणह तुब्भे, जहट्ठियं किमिह साहेमि ॥१८॥
चिरकालवोलियाणि वि, अच्चंतं दूरकालभावीणि । जे किर मुणंति कज्जाणि, तेसिं नणु केत्तियं एयं ॥१९॥
एवं रन्ना भणिए, ओहिन्नाणेण नायपरमत्थो । विज्जुप्पभो सुरवरो, पयंपिउं एवमाऽऽढत्तो ॥२०॥
रिउपरिभवलक्खणतिक्ख-दुक्खमुव्वहसि तुममऽहो! हियए । दुक्खविमोक्खणमूला य, गिज्जए जिणवरे भत्ती ॥२१॥
ता नरवर! जयगुरुपाय-पउमवंदणविहीए तुज्झ अहं । तुट्ठो अह सत्तुजयं, ममाऽणुभावेण कुणसु लहुं ॥२२॥
इय तियसवयणमाऽऽयन्निऊण, राया वियासिमुहकमलो । सेन्नाऽणुगओ सहसा, पडिपडियक्खं पडिनियत्तो ॥२३॥
अह भूरिसमरसंपन्न-विजयगव्वो पुणो वि तं इंतं । सोच्चा महेंदसीहो, सज्जीहोउं ठिओऽभिमुहो ॥२४॥
जुज्झं च समावडियं, नवरं विज्जुप्पभप्पभावेण । मिहिलाऽहिवेण विजिओ, महिंदसीहो पढममेव ॥२५॥
अवहरिय पुव्वपग्गहिय-हत्थितुरगाऽऽइविविहरज्जंऽगे । सेवं च गाहिऊणं, मुक्को तत्थेव रज्जम्मि ॥२६॥
अह निज्जियजेयव्वो, कणगरहो आगओ निययनयरिं । सरयनिसायरकरगोर-लद्धकित्ती जए जाओ ॥२७॥
अवरम्मि य पत्थावे, विसुद्धलेसाए वट्टमाणो सो । परिचिंतिउं पवत्तो, अहो जिणिंदस्स माहप्पं ॥२८॥
जमऽहं तइया वंदण-मेत्तेण वि वंछियऽत्थमऽच्चत्थं । पत्तो मणोरहाण वि, अगोयरं नूण लीलाए ॥२९॥
एवं च सो च्चिय परं, परमप्पा कप्पपायवप्पडिमो । इहपरभवभाविरभद्द-करणसीलो जएक्कपहु ॥३०॥
अणुसरणिज्जो भवइ त्ति, चिंतिउं सुव्वयस्स पामूले । पडिवन्नो पव्वज्जं, राया काउं च तं विहिणा ॥३१॥
गुणगणहरगणहरनाम-गोयकम्मं च बंधिऊणंऽते । मरिउं देवो जाओ, महिड्ढिओ भासुरसरीरो ॥३२॥
तत्तो चुओ य सुकुले, माणुस्सं पाविऊण भोगे य । तित्थयरपायमूले निक्खमिउं गणहरो होउं ॥३३॥
निम्मूलुम्मूलियभव-महद्दुमो पत्तकेवलाऽऽभोगो । जरजम्ममरणरहियं, निव्वाणं पाविही परमं ॥३४॥
एवंविहोत्तरोत्तर-कल्लाणनिबंधणं मुणेऊणं । अरिहाऽऽईसुं भत्तिं, खवग! तुमं सम्ममाऽऽयरसु ॥३५॥
अरिहाऽऽइछक्कभत्ति त्ति, सत्तमं दारमिय मए वुत्तं । अट्ठममिओ भणिस्सं, पंचनमोक्कारपडिदारं ॥३६॥

"पंचणमोक्कारद्धारम्" —

हंभो खवगमहामुणि! पारद्धविसुद्धधम्मअणुबंधं । बंधयभूयाण जिणाण-मिण्हि तह सव्वसिद्धाणं ॥३७॥
आयारपालयाणं, आयरियाणं च सुत्तदाईणं । उज्झायाणं सिवसा-हगाण तह सव्वसाहूणं ॥३८॥
निच्चं भव उज्जुत्तो, समाहियऽप्पा पहीणकुवियप्पो । सिद्धिसुहसाहणम्मि, नूण नमोक्कारकरणम्मि ॥३९॥
जेणेस नमोक्कारो, सरणं संसारसमरपडियाण । कारणमऽसंखदुक्ख-क्खयस्स हेऊ सिवपयस्स ॥४०॥
कल्लाणकप्पतरुणो, अबंझबीयं पयंडमायंडो । भवहिमगिरिसिहराणं, [1]पक्खिपहू पावभुयगाणं ॥४१॥
आमूलुक्खणणम्मि, वराहदाढा दरिद्दकंदस्स । राहणधरणी पढमु-ब्भवंतसम्मत्तरयणस्स ॥४२॥

1. पक्षिप्रभुः = गरुडः ।

कुसुमोग्गमो य सोग्गइ-आउयबंधदद्दुमस्स निव्विग्घं । उवलंभचिंघमऽमलं, विसुद्धसद्धम्मसिद्धीए ॥४३॥
अन्नं च—
एयस्स जहाविहिविहिय-सव्वआराहणापयारस्स । कामियफलसंपायण-पहाणमंतस्य य पभावा ॥४४॥
सत्तू वि होइ मित्तो, तालउडविसं पि जायए अमयं । भीमाऽडवी वि वियरइ, चित्तरइं वासभवणं व ॥४५॥
चोरा वि रक्खगत्तं, उवेंति साऽणुग्गहा भवंति गहा । अवसउणा वि हु सुहसउण-साहणिज्जं जणंति फलं ॥४६॥
जणणीओ इव न कुणंति, डाइणीओ वि थोवमऽवि पीडं । पभवंति न रुद्दा मंत-तंतजंतप्पयारा वि ॥४७॥
पंकयपुंजो व्व सिही, सीहो गोमाउओ व्व वणहत्थी । मिगसावो व्व विहावइ, पंचनमोक्कारसामत्था ॥४८॥
एत्तो च्चिअ सुमरिज्जइ, निसियणउट्ठाणखलणपडणेसु । सुरखेयरपभिईहिं वि, एसो परमाए भत्तीए ॥४९॥
धण्णाण मणोभवणे, सद्धाबहुमाणवड्ढिनेहिल्लो । मिच्छत्ततिमिरहरणो, वियरइ नवकारवरदीवो ॥५०॥
जाण मणवणणिगुंजे, रमइ णमोक्कारकेसरिकिसोरो । ताणं अणिट्ठदोघट्ट-घट्टघडणा न नियडे वि ॥५१॥
ता निविडनिगडघडणा-गुत्ती ता वज्जपंजरनिरोहो । नो जावऽज्जवि जविओ, एस नमोक्कारवरमंतो ॥५२॥
दप्पिट्ठदट्ठनिट्टुर-सुरुट्ठदिट्ठी वि होइ ताव परो । नवकारमंतचिंतण-पुव्वं न पलोइओ जाव ॥५३॥
मरणरणंऽगणगणसं-गमे गमे गामनगरमाऽऽईणं । एयं सुमरंताणं, ताणं संमाणणं च भवे ॥५४॥
तहा—
जलमाणमणिपहुफुन्न-प्फारफणिवइफणागणाहिंतो । पसरंतकिरणभरभग्ग-भीमतिमिरम्मि पायाले ॥५५॥
चिन्ताऽणंतरघडमाण-माणसाऽऽणंदिइंदियऽत्था जं । विलसंति दाणया किर, तं पि नमोक्कारफुरियलवो ॥५६॥
जं पि य विसिट्ठपयवी-विज्जाविन्नाणविणयनयनिउणं । अक्खलियपसरपसरंत-कंतजसभरियभुवणयलं ॥५७॥
अच्चंतऽणुरत्तकलत्त-पुत्तपामोक्खसयलसुहिसयणं । आणापडिच्छणुच्छाहि-दच्छगिहकम्मकारिजणं ॥५८॥
अच्छिन्नलच्छिविच्छड्ड-सामिभोइत्तवियरणपहाणं । रायाऽमच्चाऽऽइविसिट्ठ-लोयपयईबहुमयं च ॥५९॥
जहचिंतियकलसंपत्ति-सुंदरं दिण्णदुक्कहचमक्कं । पाविज्जइ मणुयत्तं, तं पि नमोक्कारफललेसो ॥६०॥
जं पि य सव्वंगपहाण-लडहचउसट्ठिसहसविलयालं । बत्तीससहस्समहप्प भाव भासंतसामन्तं ॥६१॥
पवरपुरसरिसछन्नवइ-गामकोडीकडप्पदुप्पसरं । सुरनयरसरिसपुरवर-बिसत्तरीसहससंखालं ॥६२॥
बहुसंखखेडकब्बड-मडंबदोणमुहपमुहबहुयसिमं । दीसंतकंतसुंदर-संदणसंदोहदिण्णदिहिं ॥६३॥
परचक्ककप्पणाऽणप्प-दप्पपाइक्कचक्कसंकिन्नं । पगलंतगंडमंडल-पयंडदोघट्टथट्टिल्लं ॥६४॥
मणपवणजवणचंचल-खुरुक्खयखोणितलतुरंगालं । सोलससहस्सपरिसंख-जक्खरक्खापरिकिन्नं ॥६५॥
नवनिहिचोद्दसरयण-प्पभावपाउब्भवंतसयलऽत्थं । छक्खंडभरहखेत्ताऽ-हिवत्तणं लब्भए भुवणे ॥६६॥
तं पि हु किर सद्धासलिल-सेयपरिवुड्ढियस्स तस्सेव । पंचनमोक्कारतरुस्स, को वि फलविलसियविसेसो ॥६७॥
जं पि य सियदेवंऽसुय-संवुयसुरसयणसुंदरुच्छंगे । सिप्पिपुडंऽतो मुत्ता-हलं व उववज्जई तत्तो ॥६८॥
आजम्मं रम्मतणू, आजम्ममुदग्गजोव्वणाऽवत्थो । आजम्मं रोगजरा-रयसेयविवज्जियसरीरो ॥६९॥
आजम्मं ण्हारुवसऽट्ठि-मंसरुहिराऽऽइतणुमलविमुक्को । आजम्मं अमिलायन्त-मल्लवरदेवदूसधरो ॥७०॥
उत्ततजच्चकंचण-तरुणदिवायरसमप्पहसरीरो । पंचप्पहरयणाऽऽहरण-किरणकब्बुरियदिसियक्को ॥७१॥
अक्खंडगंडमंडल-लुलंतकुंडलपहापहासिल्लो । रमणीयरसणअमरण-रमणीगणमणहरो किं च ॥७२॥
गहचक्कमेक्कहेलं, पाडेउं भूयलं भमाडेउं । सयलकुलाऽचलचक्कं, चूरेउं तह य लीलाए ॥७३॥
माणसपमुहमहासर-सरियादहसायराण सलिलाइं । पलयपवणो व्व समकाल-मेव सत्तो विसोसेउं ॥७४॥
तेलोक्कपूरणत्थं झत्ति विउव्वियमहलबहुरूवो । परमाणुमेत्तरूवो वि, तह य होउं लहु समत्थो ॥७५॥
तह एक्ककरंऽगुलिपंचगस्स, पत्तेयमऽग्गभागेसु । मेरुप्पणगाउ एक्केक्क-मेक्ककालं धरणसत्तो ॥७६॥
किं बहुणा सन्तं पि हु, असंतयं तह असंतमऽवि संतं । वत्थुं एक्कखणे च्चिय, दंसेउमऽलं करेउं च ॥७७॥
नमिरसुरविसरसिरमणि-मऊहरिंछोलिविच्छुरियपाओ । भूभंगाऽऽइट्ठपहिट्ठ-संभमुट्ठिंतपरिवारो ॥७८॥
चिंताऽणंतरसहसत्ति-संघडंताऽणुकूलविसयगणो । अणवरयरइरसाऽऽविल-विलासकरणेक्कदुल्ललिओ ॥७९॥

निम्मलओहिन्नाणा-ऽनिमेसदिट्ठीए दिव्वदव्वो । समकालोदयसमुयिंत-सयलसुहकम्मपयई य ॥८०॥
रिद्धिप्पबंधबंधुर-विमाणमालाऽहिवत्तणं सुइरं । पालइ अखलियपसरं, सुरलोए किर सुरेंदो वि ॥८१॥
तं पि असेसं जाणसु, सम्मं सब्भावगब्भविहियस्स । पंचनमोक्काराऽऽरा-हणस्स लीलाइयलवोत्ति ॥८२॥
उड्ढाऽहोतिरियतिलोग-रंगमज्झम्मि अइसयविसेसो । दव्व खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च चोज्जकरो ॥८३॥
दीसइ सुणिज्जए वा, जो को वि हु कहवि कस्स वि जियस्स । सव्वो वि सो नमोक्कार-सरणमाहप्पनिप्फन्नो॥८४॥
जलदुग्गे थलदुग्गे, पव्वयदुग्गे मसाणदुग्गे वा । अन्नत्थ वि दुत्थपए, ताणं सरणं नमोक्कारो ॥८५॥
वसियरणुच्चाडणथोभ-णेसु पुरखोभथंभणाऽऽइसु य । एसो च्चिय पच्चलओ, तहा पउत्तो नमोक्कारो ॥८६॥
मंतंऽतरपारद्धाइं, जाइं कज्जाइं ताइं वि समेइ । ताणं चिय नियसुमरण-पुव्वाऽऽरद्धाण सिद्धिकरो ॥८७॥
ता सयलाओ सिद्धीओ, मंगलाइं च अहिलसंतेण । सव्वत्थ सया सम्मं, चिंतेयव्वो नमोक्कारो ॥८८॥
जागरण-सुयण-छीयण-चिट्ठण-चंकमण-खलण-पडणेसु । एस किर परममंतो, अणुसरियव्वो पयत्तेणं ॥८९॥
जेणेस नमोक्कारो, पत्तो पुन्नाऽणुबंधिपुण्णेणं । नारयतिरियगईओ, तस्साऽवस्सं निरुद्धाओ ॥९०॥
न स पुणरुत्तं पावइ, कया वि किर अयसनीयगोत्ताइं । जम्मंऽतरे वि दुलहो, तस्स न एसो नमोक्कारो ॥९१॥
जो पुण सम्मं गुणिउं, नरो नमोक्कारलक्खमऽक्खंडं । पूएइ जिणं संघं, बंधइ तित्थयरनामं सो ॥९२॥
होन्ति नमोक्कारपभा-वओ य जम्मंऽतरे वि किर तस्स । जाईकुलरूवाऽऽरोग्ग-संपयाओ पहाणाओ ॥९३॥
ताव न जायइ चित्तेण, चिंतियं पत्थियं च वायाए । काएण य पारद्धं, जाव न सरिओ नमोक्कारो ॥९४॥
अन्नं च इमाउ च्चिय, न होइ मणुओ कयाइ संसारे । दासो पेसो दुहगो, नीओ विगलिंदिओ चेव ॥९५॥
इहपरलोयसुहयरो, इहपरलोयदुहदलणपच्चलओ । एस परमेट्ठिविसओ, भत्तिपउत्तो नमुक्कारो ॥९६॥
किं वन्निएण बहुणा, तं नत्थि जयम्मि जं किर न सक्को । काउं एस जियाणं, भत्तिपउत्तो नमुक्कारो ॥९७॥
जइ ताव परमदुलहं, संपाडइ परमपयसुहं पि इमो । तायदऽ[1]णुसंगसज्झे, तदऽन्नसोक्खम्मि का गणणा ॥९८॥
पत्ता पाविस्संति, पाविन्ति य परमपयपुरं जं ते । पंचनमोक्कारमहा-रहस्ससामत्थजोगेण ॥९९॥
सुचिरं पि तवो तवियं, चिन्नं चरणं सुयं च बहु पढियं । जइ ता न नमोक्कारे, रई तओ तं गयं विहलं ॥७७००॥
चउरंऽगाए वि सेणाए, नायगो दीवगो जहा होइ । तह भावनमोक्कारो, दंसणतवनाणचरणाणं ॥१॥
भावनमोक्कारविवज्जियाइं, जीवेण अकयकज्जाइं । गहियाणि य मुक्काणि य, अणंतसो दव्वलिंगाइं ॥२॥
तम्हा नाऊणेवं, जत्तेण तुमं पि भावणासारं । आराहणाकयमणो, मणम्मि सुंदर! तयं धरसु ॥३॥
हंभो देवाणुप्पिय!, पुणरुत्तं पत्थिओ सि एत्थ तुमं । संसारजलहिसेउं, सिढिलेज्जसु मा नमोक्कारं ॥४॥
जं एस नमोक्कारो, जम्मजरामरणदारुणसरूवे । संसाराऽरन्नम्मि, न मंदपुन्नाण संपडइ ॥५॥
विज्झइ राहा वि फुडं, उम्मूलिज्जइ गिरी वि मूलाउ । गम्मइ गयणयलेणं, दुलहो य इमो नमोक्कारो ॥६॥
सव्वत्थऽन्नत्थ वि धीधणेण, सरणं ति एस सरियव्वो । सविसेसं पुण एत्थे, समहिगयाऽऽराहणाकाले ॥७॥
आराहणापडागा-गहणे हत्थो इमो नमोक्कारो । सग्गाऽपवग्गमग्गो, दोग्गइदारऽग्गला गरुई ॥८॥
पढियव्वो गुणियव्वो, सुणियव्वो समऽणुपेहियव्वो य । एसऽन्नया वि निच्चं, किमंऽग पुण मरणकालम्मि ॥९॥
गेहे जहा पलित्ते, सेसं मोत्तूण लेइ तस्सामी । एगं पि महारयणं, आवइनित्थारणसमत्थं ॥१०॥
आउरभए भडो वा, अमोहमेक्कं पि लेइ जह सत्थं । आबद्धभिउडिभडसं-कडे रणे कज्जकरणखमं ॥११॥
एवं न आउरत्ते, सक्को बारसविहं सुयक्खंधं । सव्वं पि विचिंतेउं, सम्मं तग्गयमणो वि तओ ॥१२॥
मोत्तुं पि बारसंऽगं, स एव मरणम्मि कीरए सम्मं । पंचनमोक्कारो खलु, जम्हा सो बारसंगऽत्थो ॥१३॥
सव्वं पि बारसंऽगं, परिणामविसुद्धिहेउमेत्तागं । तक्कारणभावाओ, कह न तदऽत्थो नमोक्कारो ॥१४॥
तग्गयचित्तो तम्हा, समऽणुसरेज्जा विसुद्धसुहलेसो । तं चेय नमोक्कारं, कयत्थयं मन्नमाणो उ ॥१५॥
को नाम किर सकन्नो, कन्नाऽमयसच्छहं नमोक्कारं । नो आयरेज्ज मरणे, रणे व्व सुहडो जयपडागं ॥१६॥

1. अणुसंगसज्झे = प्रसङ्गसाध्ये = प्रासङ्गिके इत्यर्थः ।

एक्को वि नमोक्कारो, परमेट्ठीणं पगिट्ठभावाओ । सयलं किलेसजालं, जलं व पयणो पणोल्लेइ ॥१७॥
संविग्गेणं मणसा, अक्खलियफुडमणहरेण य सरेण । पउमाऽऽसणिओ करबद्ध-जोगमुद्दो य काएणं ॥१८॥
सम्मं संपुन्नं चिय, समुच्चरेज्जा सयं णमोक्कारं । उस्सग्गेणेस विही, अह बलगलणे तहा न पहू ॥१९॥
तन्नामाऽणुग असिया-उस त्ति, पंचक्खरे तहवि सम्मं । निहुयं पि परावत्तेज्ज, कह वि अह तत्थऽवि असत्तो॥२०॥
ता झाएज्जा ओमिति संगहिया जं इमेण अरहंता । असरीरा आयरिया, उवज्झाया, उवज्झाया मुणिवरा सव्वे ॥२१॥
एयन्नामाऽऽइनिसन्न-वन्नसंधिप्पयोगओ जम्हा । सद्दन्नुएहिं एसो, ओंकारो किर विणिद्दिट्ठो ॥२२॥
एयज्झाणा परमे-ट्ठिणो फुडं झाइया भवे पंच । अहवा जो एयं पि हु, झाएउं होज्ज असमत्थो ॥२३॥
सो पासट्ठियकल्लाण-मित्तवग्गेज पंचनवकारं । निसुणेज्ज पढिज्जंतं, हिययम्मि इमं च भावेज्जा ॥२४॥
एसो स सारगंठी, एस स को वि हु दुलंभलंभो त्ति । एसो स इट्ठसंगो, एयं तं परमतत्तं ति ॥२५॥
अहह! तडत्थो जाओ, नूणं भवजलहिणो अहं अज्ज । अन्नह कहिं अहं कह व, एस एवं समाओगो ॥२६॥
धन्नो हं जेण मए, अणोरपारम्मि भवसमुद्दम्मि । पंचण्ह नमोक्कारो, अचिंतचिंतामणी पत्तो ॥२७॥
किं नाम अज्ज अमय-त्तणेण सव्वंऽगियं परिणओ हं । किं वा सयलसुहमओ, कओ अकंडे वि केणाऽवि ॥२८॥
इय परमसमरसापत्ति-पुव्वमाऽऽयन्निओ नमोक्कारो । निहणइ किलिट्ठकम्मं, विसं व सियधारणाजोगो ॥२९॥
जेणेस नमोक्कारो, सरिओ भावेण अंतकालम्मि । तेणाऽऽहूयं सोक्खं, दुक्खस्स जलंजली दिन्नो ॥३०॥
एसो जणओ जणणी य, एस एसो अकारणो बंधू । एसो मित्तं एसो, परमुवयारी नमोक्कारो ॥३१॥
सेयाण परमसेयं, मंगल्लाणं च परममंगल्लं । पुन्नाण परमपुन्नं, फलं फलाणं नमोक्कारो ॥३२॥
तह एस नमोक्कारो, इहलोगगिहाओ जीयपहियाण । परलोयपहपयट्टाण, परम[1]पच्छयणसारिच्छो ॥३३॥
जह जह तस्सवणरसो, परिणमइ मणम्मि तह तह कमेण । खयमेइ कम्मगंठी, नीरनिहित्ताऽऽमकुंभो व्व ॥३४॥
तवनियमसंजमरहो, पंचनमोक्कारसारहिपउत्तो । नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ नरं नेव्वुइनगरं ॥३५॥
जलणो वि होज्ज सीओ, पडिपहहुत्तं वहेज्ज सुरसरिया । न य नाम न नेज्ज इमो, परमपयपुरं नमोक्कारो ॥३६॥
आराहणापुरस्सर-मऽणन्नहियओ विसुद्धलेसागो । संसारुच्छेयकरं, ता मा सिढिलसु नमोक्कारं ॥३७॥
एसो हि नमोक्कारो, कीरइ नियमेण मरणकालम्मि । जं जिणवरेहिं दिट्ठो, संसारुच्छेयणसमत्थो ॥३८॥
अक्खेवेणं कम्म-क्खओ तहा मंगलाऽऽगमो नियमा । तक्काले च्चिय सम्मं, पंचनमोक्कारकरणफलं ॥३९॥
कालन्तरभाविफलं तु, दुविहमिहभवियमऽण्णभवियं च । इहभवियमऽत्थकामा, उभयभवसुहावहा सम्मं ॥४०॥
इहभवसुहावहा तत्थ, ताव अकिलेसभवणओ ताण । आरोग्गपुव्वगं तह, निव्विग्घं ताण माणणओ ॥४१॥
परभवसुहावहा पुण, सुत्तविहीए सुठाणविणियोगा । पंचनमोक्कारफलं, अह भन्नइ अन्नभवियं पि ॥४२॥
जइ वि न तज्जम्मे च्चिय, सिद्धिगमो कह वि जायए तह वि पत्तनमोक्कारा एक्क-सिं पि किर तमऽविराहिंता॥४३॥
उत्तमदेवेसु तहा, कुलेसु विउलेसु अतुलसुभकलिया । हिंडित्ता पज्जंते, सिज्झंति चेव विहुयरया ॥४४॥
इह पुण परमत्थेणं, नाणावरणाऽऽइयाण कम्माणं । पइक्खणमऽणंतपोग्गल-विगमम्मि जायमाणम्मि ॥४५॥
पाउणइ नमोक्कारस्स, पढमं वण्णं नकारमऽह सेसे । वन्ने पत्तेयं चिय, तदऽणंतविसुद्धिसब्भावो ॥४६॥
एवं एक्केक्कं पि हु, अक्खरमऽच्चन्तकम्मखयलब्भं । जस्स स कहं न वंछिय-फलदाई होइ नवकारो ॥४७॥
किंच-
इहभवियमऽत्थकामा, जं भणियं तत्थ अत्थविसए ता । सावगपुत्तो नायं, जायऽत्थो मऽगयइयरओ ॥४८॥
तहाहि-

"श्रावकपुत्रदृष्टान्तः"

एगम्मि महानगरे, सावगपुत्तो उ जोव्वणुम्मत्तो । वेसाजूयपसंगी, अच्चंतपमायपडिबद्धो ॥४९॥
सुचिरं बहुप्पयारेहिं, भन्नमाणो वि धम्मपडिवत्तिं । न कुणइ निरंऽकुसो करि-वरो व्व विस्संथुलं ललइ ॥५०॥
अह सो पिउणा करुणाए, वाहरेऊण मरणसमयम्मि । भणिओ पुत्तय! जइ वि हु, दढं पमत्तो तहावि तुमं ॥५१॥

1. पच्छयणं = पथ्यदनं = शम्बलम् ।

पंचनमोक्कारमिमं, समत्थयत्थूण साहणसमत्थं । पढसु सया य सरेज्जसु, दुत्थाऽवत्थासु वरमंतं ॥५२॥
एयस्स पभावेणं, न विद्दवंतीह भूयवेयाला । खुद्दोवद्दववग्गो, सेसो वि पणस्सइ अवस्सं ॥५३॥
एयं पिउणो वयणो-वरोहओ सो तहत्ति पडियन्नो । कालं गए य जणए, खीणम्मि य अत्थसारम्मि ॥५४॥
सच्छंदभमणसीलो, घडेइ मेत्तिं तिदंडिणा सद्धिं । उज्झियकुलक्कमाणं, केत्तियमिममऽहव पुरिसाणं ॥५५॥
एगम्मि अवसरे सो, भणिओ य तिदंडिणा सविस्संभं । कसिणचउद्दसिरयणीए, मडयमऽविणट्ठलट्ठंऽगं ॥५६॥
आणेसि जइ तुमं भद्द!, ता तुहं विद्दवेमि दारिद्दं । तं साहिऊण अहयं, दिव्वए मंतसत्तीए ॥५७॥
पडिवन्नमिमं सावयसुएण, पत्ते य भणियसमयम्मि । विजणमसाणपएसे, तहेव तेणोवणीयं से ॥५८॥
पाणिपइट्ठियखग्गं, ठवियं च तयं तु मंडलगउवरिं । सावयसुओ य पुरओ, तस्सेव निवेसियो तत्थ ॥५९॥
सो य तिदंडी बाढं, विज्जं उच्चारिउं समाऽऽरद्धो । विज्जाऽऽवेसवसेण य, मडगं उट्ठेउमाऽऽरद्धं ॥६०॥
भीओ सावयपुत्तो, सरिओ य झडत्ति पंचनवकारो । तप्पडिहयसामत्थं, पडियं च महीयले मडयं ॥६१॥
पुणरवि तिदंडिदढविज्ज-जावओ उट्ठिऊण पडियम्मि । मडए भणियमऽणेणं, सावयसुय! मुणसि किंपि तुमं ॥६२॥
तेणं पयंपियं नेव, किंपि अह झाणपयरिसाऽऽरूढो । जविउं पुणो तिदंडी, पारद्धो नियपवरविज्जं ॥६३॥
सड्ढसुयमऽक्खमेणं, पंचनमोक्काररक्खियं हंतुं । [1]दोहंडिओ तिदंडी, मडएण झडत्ति खग्गेण ॥६४॥
अह मडयखग्गघायप्पभाव-संजायजायरूवंऽगो । सावयसुएण दिट्ठो, झत्ति तिदंडी पहिट्ठेण ॥६५॥
ताहे तदंऽगुवंगाइं, खंडिउं णियगिहे निहित्ताइं । पंचपरमेट्ठिमंत-प्पभावओ ईसरो जाओ ॥६६॥
कामविसयम्मि नायं तु, साविगा मिच्छदिट्ठिणो भज्जा । जीए नमोक्काराओ, जाओ सप्पो वि [2]कुसुमसरी ॥६७॥
तथाहि—

"श्रीमतीदृष्टान्तः"

एगम्मि सन्निवेसे, मिच्छद्दिट्ठी गिहाऽहिवो एक्को । भज्जा य साविया से, अच्चन्तं धम्मपडिबद्धा ॥६८॥
तीसे उवरिं अवरं, भज्जं परिणेउमीहमाणो सो । ससवत्तिगो त्ति तं पुण, अलहंतो खुद्दपरिणामो ॥६९॥
चिन्तेइ पुव्वभज्जं, कहं हणिस्सं ति अन्नया कसिणं । सप्पं घडे [3]निहित्ता, भवणस्सऽब्भन्तरे ठवइ ॥७०॥
कयभोयणो य तं भणइ, सावियं अमुगठाणणिहियाउ । घडयाओ कुसुममालं, भद्दे! मज्झं पणामेहि ॥७१॥
अह सा गिहे पविट्ठा, अचक्खुविसओ त्ति पंचनवकारं । सरमाणी तम्मि घडे, कुसुमत्थं पक्खिवइ हत्थं ॥७२॥
एत्थंतरम्मि सप्पो, अवहरितो देवयाए गंधड्ढा । ठविया य तम्मि ठाणे, वियसियसियकुसुमवरमाला ॥७३॥
घेत्तुं सा तीए सम-प्पिया य पइणो तओ ससंभंतो । गंतूण तं णिहालइ, घडयं नो पेच्छइ प्पं ॥७४॥
ताहे महप्पभाव त्ति, पायवडिओ कहेइ नियवत्तं । खामेऊण य ठावइ, तं नियघरसामिणिपयम्मि ॥७५॥
इय इहलोगे धणकाम-साहगो एस ताव नवकारो । परलोगे च्चिय सुहओ, हुंडियजक्खस्स व इमो त्ति ॥७६॥
तथाहि—

"हुण्डिकयक्षादिदृष्टान्तः"

महुराए नगरीए, हुंडिज्जनामो उ तक्करो लोयं । मुसमाणो अणवरयं, पत्तो आरक्खपुरिसेहिं ॥७७॥
आरोवेऊणं रास-भम्मि नगरीए भामिओ पच्छा । पक्खित्तो सूलाए, भिण्णसरीरो य तीए दढं ॥७८॥
तन्हाकिलामियंऽगो, तेण पएसेण पेच्छिउं जंतं । जिणदत्तणामधेयं, सुसावगं भणइ सुदुहट्टो ॥७९॥
हंभो! महायस! तुमं, सुसावगो दुक्खिएसु करुणपरो । ता मम तिसियस्स लहुं, कत्तो वि जलं पणामेहि ॥८०॥
अह सावएण भणियं, इमं नमोक्कारमऽणुविचिंतेहि । जा ते आणेमि जलं, जइ पुण विस्सारिहिसि एयं ॥८१॥
ता आणीयं पि न तुज्झ, भद्द! दाहामि एव भणिओ सो । तल्लोलुययाए दढं, नवकारं सरिउमाऽऽरद्धो ॥८२॥
जिणदत्तो पुण सलिलं, गहाय गेहाओ आगओ जाव । नवकारमुच्चरंतस्स, ताव से अइगयं जीयं ॥८३॥
तो तप्पभावओ सो, मरिउं जक्खत्तणं समऽणुपत्तो । अह चोरभत्तदाइत्ति, रायपुरिसेहिं जिणदत्तो ॥८४॥
घेत्तूण अप्पिओ नरवइस्स तेणाऽवि जंपियमिमं पि । सूलाए आरोवह, तक्करपडितुल्लदोसं ति ॥८५॥
एवं वुत्ते नीओ, जिणदत्तो तेहिं आघयणठाणे । एत्थंतरम्मि हुंडिय-जक्खेण पउंजिओ ओही ॥८६॥

1. दोहंडिओ = द्विखण्डितः । 2. कुसुमसरी = कुसुममाला । 3. छुहित्ता पाठां० ।

सूलाए निब्भिन्नं, नियदेहं सावयं च तह दट्ठुं । रुट्ठो सो नयरोवरि, पव्वयमुप्पाडिउं भणइ ॥८७॥
रे! रे! देवयभूयं, सावयमेयं खमाविउं मुयह । इहरा इमेण गिरिणा, तुब्भे सव्वे वि चूरिस्सं ॥८८॥
अह भीएणं रन्ना, जिणदत्तो खामिऊण पम्मुक्को । इय हु डियचोरस्स व, परलोगसुहो नमुक्कारो ॥८९॥
एवं च उभयलोगे वि, सोक्खमूलं इमं मुणेऊणं । आराहणाऽभिलासी, खवग! तुमं सइ सरेज्ज जओ ॥९०॥
"पंचण्ह णमोक्कारो, जीवं मोएइ भवसहस्साओ । भावेण कीरमाणो, होइ पुणो बोहिलाभाय ॥९१॥
पंचण्ह णमोक्कारो, धन्नाण भवक्खयं करेन्ताणं । हियय अणुम्मुयंतो, विसोत्तियावारओ होइ ॥९२॥
पंचण्ह नमोक्कारो, एवं खलु वन्निओ महऽत्थो त्ति । जो मरणम्मि उवग्गे अभिक्खणं कीरए बहुसो ॥९३॥
पंचण्ह नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं भवइ मंगलं" ॥९४॥
इय ताव भणियमेयं, पंचनमोक्कारनामपडिदारं । सम्मन्नाणुवओगाऽभि-हाणमऽक्खेमि अह नवमं ॥९५॥

"सम्यग्ज्ञानोपयोगद्वारम्" —

खमग! पमायं उम्मूलिऊण, नाणोवओगवं होसु । जम्हा सव्वाऽऽबाहा-विवज्जियं जीवलोगस्स ॥९६॥
नाणं चक्खू नाणं, पईवओ नाणमेव दिणणाहो । तिहुयणतिमिसगुहाए, पगासरयणं परं नाणं ॥९७॥
जइ ताव नाणचक्खू, न होज्ज जीवाण जीवलोगम्मि । ता मोक्खमग्गविसया, सम्मपवित्ती न जाएज्जा ॥९८॥
कह वा कुबोहसलहाऽ-वहारिनाणप्पईववविरहेण । होज्जा जयं वरायं, मिच्छत्ततमोभरऽक्कंतं ॥९९॥
तह फुरइ फुडं हयतम-सन्नाणदियायरप्पभावेण । संसारसरे सुंदर-विवेयकमलाऽऽयरवियासो ॥७८००॥
तिहुयणतिमिसगुहाए, अन्नाणतमंऽधयारघोराए । जइ नो हुंतो सन्नाण-कागणीरयणवावारो ॥१॥
ता कह इमं वरायं, मूढं जिणचक्किमग्गमऽणुलग्गं । अप्पडिहयप्पयारं, इह [1]नीहंतं भवियसेण्णं ॥२॥
सक्का सुएण णाउं, उड्ढं च अहं च तिरियलोगं च । ससुराऽसुरं समणुयं, सगरुलभुयगं सगंधव्वं ॥३॥
बंधं मोक्खं गइमाऽऽगइं च, जीवाण जीवलोगम्मि । जाणंति सुयसमिद्धा, जिणसासणभावियमईया ॥४॥
सूई जहा ससुत्ता, न नासइ कयवरम्मि पडिया वि । जीवो वि तह ससुत्तो, न नासइ गओ वि संसारे ॥५॥
सूई जहा असुत्ता, नासइ पडिया कयारमज्झम्मि । पुरिसो वि तह असुत्तो, नासइ संसारगहणम्मि ॥६॥
जह आगमेण वेज्जो, जाणइ वाहिं चिगिच्छिउं निउणो । तह आगमेण नाणी, जाणइ सोहिं चरित्तस्स ॥७॥
जह आगमपरिहीणो, वेज्जो, वाहिस्स न मुणइ तिगिच्छं । तह आगमपरिहीणो, चरित्तसोहिं न याणाइ ॥८॥
तम्हा पुव्वं पुव्वरिसि-परूवियम्मि अप्पमत्तेहिं । उज्जोओ कायव्वो, नरेहिं मोक्खाऽभिकंखीहिं ॥९॥
मेहा होज्ज न होज्ज व, जं सा कम्मक्खओवसमसज्झा । उज्जोओ कायव्वो, नाणं अभिकंखमाणेहिं ॥१०॥
जइ वि य दिवसेण पयं, पढेइ पक्खेण वा सिलोगद्धं । नाणं सिक्खेउमणो, तह वि हु मा मुंच उज्जोगं ॥११॥
पेच्छह ता अच्छेरं, अणऽच्छमाणीए अच्छमाणस्स । पासाणस्स बलवओ, खओ कओ वारिधाराए ॥१२॥
तह सीयएण मउयएण, जोगं अमुंचमाणेण । उदएण गिरी भिन्नो, थेवं थेवं वहंतेण ॥१३॥
[2]अपरिजिएण मणूसो, बहूणा वि सुएण अपरिसुद्धेण । खलिएण संकिएण य, जाणुयजणहासओ होइ ॥१४॥
थेवेण वि अखलियसुद्धएण, थिरपरिचिएण गहियत्थो । सज्झाएण मणूसो, अलज्जियाऽणाउलो होइ ॥१५॥
गंगाए वालुयं जो मिणेज्ज, उस्सिंचिऊण य समत्थो । हत्थउडेहिं समुद्दं, सो नाणगुणे अणुमिणेज्जा ॥१६॥
पावाउ विणिवित्ती, तहा पवित्ती य कुसलधम्मस्स । विणयस्स य पडिवत्ती, तिन्नि वि नाणस्स कज्जाइं ॥१७॥
संजमजोगे आराहणा य, आणा य वद्धमाणस्स । सक्का नाउं नाणेण, तेण नाणं अहिज्जेज्जा ॥१८॥
नाणे आउत्ताणं, नाणीणं नाणजोगजुत्ताणं । को निज्जरं तुलेज्जा, पयडियसिवपउणपययीणं ॥१९॥
छट्ठऽट्ठमदसमदुवालसेहिं, अबहुस्सुयस्स जा सोही । तत्तो बहुतरगुणिया, हवेज्ज जिमियस्स नाणिस्स ॥२०॥
एक्काऽहेण तवस्सी, भवेज्ज नऽत्थेत्थ संसओ को वि । एक्काऽहेण सुयधरो, न होइ धंतं पि तूरंतो ॥२१॥
जं नेरइओ कम्मं, खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ ऊसासमेत्तेणं ॥२२॥
नाणेण सव्वभावा, नज्जंति चराऽचरा तिहुयणत्था । तम्हा नाणं कुसलेण, सिक्खियव्वं पयत्तेणं ॥२३॥

1. नीहंतं = निरसरिष्यत् B । 2. अपरिचितेन ।

नाणं गिण्हइ नाणं गुणेज्ज, नाणेण कुणइ किच्चाइं । इय संसारसमुद्दं, नाणी नाणट्ठिओ तरइ ॥२४॥
नाणं खु सिक्खियव्वं, नरेण लद्धूण दुल्लहं बोहिं । जइ इच्छा नाउं जे, जीवस्स विसोहणं परमं ॥२५॥
सव्वत्थामेण सुयं, घेत्तव्वं जहबलं तवो किच्चं । उस्सुत्तं कीरंतो, तवो वि न जओ गुणाय भवे ॥२६॥
किंच—
न हु मरणम्मि उवग्गे, सक्को बारसविहो सुयक्खंधो । सव्वो अणुचिंतेउं, धणियं पि समत्थचित्तेणं ॥२७॥
ता जो एक्कपयम्मि वि, संजोगं कुणइ वीयरागमए । सो तेण मोहजालं, छिंदइ अज्झप्पजोगेणं ॥२८॥
एक्कम्मि वि मोक्खनिबंधणम्मि, जो होइ निच्चमाऽऽउत्तो । तं तस्स होइ नाणं, जेण विरागत्तणमुवेइ ॥२९॥
जे पयणुभत्तपाणा, सुयहेउं ते तवस्सिणो नेया । सुत्तविउत्ताण तवो, जरयिहुराण व छुहामारो ॥३०॥
नाणेण वज्जणिज्जं, वज्जिज्जइ किज्जइ य करणिज्जं । नाणी जाणइ काउं, कज्जमऽकज्जं च वज्जेउं ॥३१॥
नाणसहियं चरित्तं, नूणं संपायगं गुणसयाणं । एसा जिणाणमाऽऽणा, नऽत्थि चरित्तं विणाऽऽणाए ॥३२॥
जं नाणं तं करणं, जं करणं पवयणस्स सो सारो । जो पवयणस्स सारो, सो परमत्थो त्ति नायव्वो ॥३३॥
परमत्थगहियसारो, बंधं मोक्खं मुणेइ जीवाणं । नाऊण बंधमोक्खं, खवेइ भवसंचियं कम्मं ॥३४॥
नाऽदंसणिस्स नाणं, न य अन्नाणिस्स होंति चरणगुणा । अगुणस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि असुत्तस्स निव्वाणं ॥३५॥
भद्दं बहुस्सुयाणं, सव्वत्थेसु परिपुच्छणिज्जाणं । नाणेणुज्जोयकरा, जे सिद्धिगएसु वि जिणेसु ॥३६॥
किं एत्तो लट्ठयरं, अच्छेरयरं व सुंदरतरं वा । चंदमिव जमिह लोया, बहुस्सुयमुहं पलोयंति ॥३७॥
चंदाउ नीइ जोन्हा, बहुस्सुयमुहाउ नीइ जिणवयणं । जं सोऊण मणूसा, तरंति संसारकंतारं ॥३८॥
चोद्दसपुव्वधरा जे, ओहिन्नाणी य केवली चेव । लोगुत्तमपुरिसाणं, तेसिं नाणं अभिन्नाणं ॥३९॥
[1]दढमूढमहाणम्मि वि, वरमेगो वि सुयसीलसंपन्नो । मा हु सुयसीलविगलं, काहिसि माणं पवयणम्मि ॥४०॥
तम्हा सुयम्मि जत्तो, कायव्वो होइ अप्पमत्तेणं । जेणऽप्पाणं परमऽवि, दुक्खसमुद्दाउ तारेइ ॥४१॥
नाणोवयोगरहितो, न तरइ नियचित्तनिग्गहं काउं । नाणं अकुसभूयं, चित्तस्सुम्मत्तकरिणो व्व ॥४२॥
विज्जा जहा पिसायं, सुट्ठु पउत्ता करेइ पुरिसवसं । नाणं हिययपिसायं, सुट्ठु पउत्तं तह करेइ ॥४३॥
उवसमइ किन्हसप्पो, जह मंतेण विहिणा पउत्तेण । तह हिययकिन्हसप्पो, सुट्ठुवउत्तेण नाणेण ॥४४॥
आरन्नओ वि हत्थी, मत्तो नियमिज्जए वरत्ताए । जह तह इह नियमिज्जइ, नाणवरत्ताए मणहत्थी ॥४५॥
जह मक्कडओ खणमऽवि, रज्जूए विणा न ठाइ एगत्थ । तह खणमऽवि मज्झत्थो, नाणेण विणा न होइ मणो ॥४६॥
तम्हा सो अइचवलो, मणमक्कडओ जिणोवएसेणं । काउं सुत्तनिबद्धो, रामेयव्वो सुहज्झाणे ॥४७॥
नाणुवओगो तम्हा, खमगस्स विसेसओ सया भणिओ । जह [2]चक्कऽट्ठुवओगो, चंदगवेज्झं करेंतस्स ॥४८॥
नाणपईवो पज्जलइ, जस्स हियए विसुद्धलेसस्स । जिणदिट्ठमोक्खमग्गे, न पणासभयं भवे तस्स ॥४९॥
नाणुज्जोएण विणा, जो इच्छइ मोक्खमग्गमुवगंतुं । गंतुं कडिल्लमिच्छइ, जम्मंऽधो इव वरागो सो ॥५०॥
जइ खंडसिलोगेहिं वि, मरणाउ रक्खिओ जवो साहू । ता कह नो रक्खिज्जइ, जिणुत्तसुत्तेण भवभयओ ॥५१॥
तहाहि— "यवमुनिदृष्टान्तः"
उज्जेणीनगरीए, अनिलसुओ नरवई जवो आसि । पुत्तो य गद्दभो से, जुवराओ परमपणयपयं ॥५२॥
नीसेसरज्जकज्जाण, चिंतगो दिग्घपिट्ठनामो य । मंती अहेसि विस्सास-भायणं सव्वकज्जेसु ॥५३॥
अच्चंतरुवकलिया, जवस्स धूया अडोल्लिया आसि । भइणी जुवरन्नो गद्द-भस्स नवजोव्वणसुहऽगी ॥५४॥
तं एगया पलोइय, जुवराया मयणविहुरिओ संतो । तदऽसंपत्तीए किसो, पइदियहं होउमाऽऽरद्धो ॥५५॥
पुट्ठो य अमच्चेणं, कीस किसो होसि गाढनिब्बंधे । तेणेगंते सिट्ठं, ताहे वुत्तं अमच्चेण ॥५६॥
जह कोवि नेव जाणइ, तह भूमिहरे इमं छुहेऊण । भुंजेसु विसयसोक्खं, संतप्पसि कीस तं कुमर! ॥५७॥
एवं कयम्मि लोगो वि, जाणिही नूण केणई हडत्ति । पडिवन्नं कुमरेणं, कयं च तह चेय मूढेणं ॥५८॥

1. दढमूढपहाणम्मि B । 2. चक्राष्टकोपयोगः ।

वइयरमिमं च नाउं, जवराया जायगाढनिव्वेओ । पुत्तं रज्जे ठविउं, सुगुरुसमीवम्मि पव्वइओ ॥५९॥
अणुसासिज्जंतो वि हु, न तहा पाढम्मि सो समुज्जमइ । पुत्तप्पडिबंधेण य, पुणो पुणो एइ उज्जेणिं ॥६०॥
अह अन्नया कयाई, उज्जेणिपुरिं पडुच्च वच्चंतो । जवखेत्तरक्खणुज्जय-मडइनिहुयमिओतओ हुंतं ॥६१॥
अणुसरिय रासहं खेत्त-सामिणा फुडगिराए भण्णंतं । पायडियभावमेयं, खंडसिलोगं निसामेत्था ॥६२॥
"आधावसि पधावसि, ममं चेव निरिक्खसि । लक्खितो ते मए भावो, जवं पत्थेसि गद्दहा!" ॥६३॥
एयं च सिलोगं कोउगेण, अवधारिऊण सो साहू । गंतुं पहे पयट्टो, नवरं एगत्थ ठाणम्मि ॥६४॥
रममाणेहिं डिंभेहिं, खिप्पमाणा कहिं पि बिलमज्झे । पडिया अमुणिज्जंती, अडोल्लिया तं च सव्वत्थ ॥६५॥
मग्गंति डिंभाइं, निउणं जा नेव कहवि पेच्छंति । ता तं बिलं पलोइय, डिंभेणेक्कण पढियमिमं ॥६६॥
"इओ गया इओ गया, मग्गिज्जंती न दीसइ । अहमेयं वियाणामि, बिले पडिया अडोल्लिया" ॥६७॥
सोच्चा इमो वि मुणिणा, कोऊहलओऽवधारिओ सम्मं । पत्तो य स उज्जेणिं, ठिओ गिहे कुंभयारस्स ॥६८॥
तत्थ वि य कुंभयारो, भयभीयमिओतओ पलायंतं । मूसगमाऽऽसज्ज इमं, खंडसिलोगं पढेइ जहा ॥६९॥
"सुकुमालया भद्दलया, रत्तिं हिंडणसीलया । दीहपिट्ठस्स बीहेहि, नत्थि ते ममओ भयं" ॥७०॥
एसो वि रायरिसिणा, जवेण अवधारिओ सिलोयतियं । एयं च विभावेंतो, अच्छइ सो धम्मकिच्चपरो ॥७१॥
नवरं पुव्वाऽणुसयं, किंपि वहंतेण दिग्घपिट्ठेण । तव्वसहीए विविहाऽऽ-उहाणि ठविउं णिवो भणिओ ॥७२॥
सामन्नपराभग्गो, रज्जत्थमिहाऽऽगओ तुहं जणगो । पतियसि जइ न मज्झं, ता तव्वसहीए पेहेसु ॥७३॥
विविहाइं आउहाइं, विविहपयारेहिं तूमियाइं तओ । पेहावियाइं रन्ना, दिट्ठाणि य ताइं तह चेव ॥७४॥
रज्जाऽवहारभीओ, तयऽणु णिवो दिग्घपिट्ठपरियरिओ । लोयाऽववायरक्खण-कएण रयणीए घेत्तूण ॥७५॥
[1]नीलपहोलिकरालं, करवालं कुंभयारभवणम्मि । केणइ अमुणिज्जंतो, गतो लहुं साहुहणणट्ठा ॥७६॥
एत्थंतरम्मि मुणिणा, कहंपि पढिओ स पढमसिलोगो । रन्ना नायं नूणं, अइसेसी एस नाओम्हि ॥७७॥
अह बीओ, वि हु पढिओ, मुणिणा तं पुण निसामिउं राया । विम्हइओ अहह! कहं, भइणीवित्तं पि नायंति॥७८॥
अह तइओ वि हु पढिओ, तत्तो राया पवड्ढियाऽमरिसो । चिन्तइ उज्झियरज्जो, कह मज्झ पिया पुणो रज्जं॥७९॥
वंछेइ नवरमेसो, पावाऽमच्चो ममं विणासेउं । एवं कुणइ पयत्तं, ता दुट्ठमिमं हणेमि त्ति ॥८०॥
सीसं से छिंदित्ता, कहेइ साहुस्स नियययुत्तंतं । तो सो सुयपढणे जाय-उज्जमो इय विचिंतेइ ॥८१॥
सिक्खियव्वं मणूसेण, अवि जारिसतारिसं । पेच्छ खंडसिलोगेहिं, जीवियं परिरक्खियं ॥८२॥
एत्तो च्चिय पढणत्थं, पुरा ममं गुरुजणोऽणुसासिंतो । मुक्खत्तणेण य अहं, तइया थेवं पि न पढंतो ॥८३॥
जइ मूढलोयरइयं पि, पढियमेवंफलं सुयं होइ । ता जिणवरप्पणीयं, कहं न होही महाफलयं ॥८४॥
एवं विभाविउं सो, गओ समीवे गुरुस्स दुव्विणयं । खामेत्ता जत्तेणं, पढिउं सुत्तं समारद्धो ॥८५॥
जीयं संजमपरिपालणं च, एवं जवो समणुपत्तो । इयरो य जणगअविणा-सणेण कित्तिं च सुगतिं च ॥८६॥
इय सामन्नसुयस्स वि, पहावमुवलक्खिऊण खवग! तुमं । तेल्लोक्कपहुपणीए, सुयम्मि सव्वाऽऽयरं कुणसु ॥८७॥
एयं सम्मंनाणोवयोग-पडिदारमऽक्खियं एत्तो । पंचमहव्वयरक्खा-दारं दसमं पवक्खामि ॥८८॥

"पञ्चमहाव्रतरक्षाद्वारम्" —

सम्मन्नाणोवओगस्स, होइ वयरक्खणं फलं । वरनिव्वाणनयरपहसं-दणाण ताणं पुण वयाण ॥८९॥
पढमं वहचाओ बीय-मऽलीयविरई तइज्जगमऽतेणं । मेहुणनिवित्ती तुरियं, पंचममऽपरिग्गहो तत्थ ॥९०॥
परिहर छज्जीववहं, सम्मं मणवयणकायजोगेहिं । जीवविसेसे नाउं, जाजीवमिमे य ते जीवा ॥९१॥
पुढविदगाऽगणिवाया, एक्केक्का सुहुमबायरा होंति । साहारणपत्तेओ, दुविहो य वणस्सई होइ ॥९२॥
साहारणो य दुविहो, सुहुमो तह बायरो य नायव्वो । पज्जत्ताऽपज्जत्तग-भेया सव्वे वि बावीसं ॥९३॥
दुतिचउरिंदियविगला, पणिंदि सण्णी असन्निणो दुविहा । पज्जत्ताऽपज्जत्तग-भेएण तसा दसवियप्पा ॥९४॥
एमाऽऽइयवियप्पेसुं, जीवेसु सया वि नायपरमत्थो । सव्वाऽऽयरमुवउत्तो, अप्पोवम्मेण कुणसु दयं ॥९५॥

1. नीलपहोलि० = नील = श्यामप्रभावलिकरालम् ।

तहाहि— "अहिंसामहाव्रतस्वरुपम्"

सव्वे वि हु जीवा जीवियं खु, इच्छंति नेय मरिउं जे । ता पाणवहं घोरं, धीरा परिवज्जयंति सया ॥९६॥
तन्हाछुहाऽऽइपरितावियओ वि, जीवाण घायणं काउं । पडियारं सुमिणम्मि वि, कइयावि हु मा करेज्जासि ॥९७॥
रइअरइहरिसभयऊसु-गत्तदीणत्तणाऽऽइजुत्तो वि । भोगपरिभोगहेउं, मा तं चिंतेसु जीववहं ॥९८॥
तेलोक्कजीवियाणं, वरेहि एगयरयं ति देवेहिं । भणिए तेलोक्कं को, वरेज्ज नियजीवियं मोत्तुं ॥९९॥
जं एवं तेल्लोकं, णऽग्घइ जीवस्स जीवियं तम्हा । भुवणत्तयलाभाओ वि, दुल्लहं वल्लहं च सया ॥७९००॥
थोवत्थोवेण बहुं, संजममऽज्जिणिय महुयरो व्व महुं । तिहुयणसारं हिंसा-महंतकलसेहिं मा चयसु ॥१॥
नत्थि अणूओ अप्पं, आयासाओ महल्लयं नत्थि । जह तह जियरक्खाओ, अवरं पवरं न वयमऽत्थि ॥२॥

तहा—

जह पव्वएसु मेरु, उच्चागो होइ सव्वलोगम्मि । तह जाणसु अइगरुयं, सीलेसु वएसु य अहिंसं ॥३॥
जह आयासे लोगो, दीवसमुद्दा जहा य भूमीए । तह जाण अहिंसाए, ठियाणि तवदाणसीलाणि ॥४॥
जं जीववहेण विणा, विसयसुहं नत्थि जीवलोगम्मि । ता जीवदया जायइ, महव्वयं विसयविमुहस्स ॥५॥
परिचत्तविसयसंगे, फासुयआहारपाणभोइम्मि । मणवयणकायगुत्ते, होइ अहिंसावयं सुद्धं ॥६॥
कुव्वंतस्स वि जत्तं, तुंबेण विणा न ठंति जह अरया । अरएहिं विणा य जहा, तुंबं पि न साहइ सकज्जं ॥७॥
तह जाण अहिंसाए, विणा उ न पयं लहंति सेसगुणा । न य तेहिं च विउत्ता, कुणइ सकज्जं अहिंसा वि ॥८॥
सच्चऽमचोरिक्कं बंभ-चेरमऽपरिग्गहो अनिसिभत्तं । एयाइं अहिंसाए, रक्खा दिक्खाए गहणं च ॥९॥
जम्हा असंच्चवयणाऽऽइएहिं, दुक्खं परस्स होइ दढं । तप्परिहारो तम्हा, परं अहिंसा गुणाऽऽहाणं ॥१०॥
मारणसीलो कुणइ, जीवाणं रक्खसो व्व उव्वेयं । संबंधिणो वि मारंत-यंमि नो जंति विस्सासं ॥११॥
जीवगयाऽजीवगया, दुविहा हिंसा उ तत्थ जीवगया । अट्ठुत्तरसयभेया, इयरा एक्कारसविहा उ ॥१२॥
जोगेहिं कसाएहिं, कयकारियअणुमईहिं तह गुणिया । संरंभसमारंभा-ऽऽरंभाउ भवंति अट्ठसयं ॥१३॥

तत्थ—

संरंभो संकप्पो, परितावकरो भवे समारंभो । आरंभा उद्दवओ, सव्वनयाणं विसुद्धाणं ॥१४॥
निक्खेवो निव्वत्ती, तहेव संजोयणा निसग्गो य । कमसो चउ-दुग-दुगतिग-भेयादेक्कारस भवंति ॥१५॥
अपमज्जियदुपमज्जिय-सहसाऽणाभोगओ य णिक्खेवो । कोउयदुप्पउत्तो, तहोवगरणं च निव्वत्ती ॥१६॥
संजोयणमुवगरणाण, पढममियरं च भत्तपाणाणं । दुट्ठनिसिट्ठा मणवइ-काया भेया निसग्गस्स ॥१७॥
हिंसाओ अविरमणं, वहपरिणामो य होइ हिंसा जं । तम्हा पमत्तजोगो, पाणव्ववरोवओ निच्चं ॥१८॥
जीवो कसायबहुलो, संतो जीवाण घायणं कुणइ । जो पुण विजियकसायो, सो जीववहं परिच्चयइ ॥१९॥
आयाणे निक्खेवे, वोसिरणे ठाणगमणसयणे य । सव्वत्थ अप्पमत्ते, दयावरे होइ हु अहिंसा ॥२०॥
काएसु निरारंभे, सन्नाणे रइपरायणमणम्मि । सव्वत्थुवओगपरे, संपुन्ना होइ हु अहिंसा ॥२१॥
तेणेवाऽऽरंभरया-णाऽणेसणीयाऽऽइपिंडभोईण । घरसरणप्पडिबद्धाण, सायरसगिद्धिगिद्धाणं ॥२२॥
सच्छंदपयाराणं, गामकुलाऽऽईसु कयममत्ताण । अन्नाणीणमऽहिंसा, न घडइ खरसिरविसाणं व ॥२३॥
ता नाणदाणदिक्खा-दुक्करतवजागसुगुरुसेयाणं । जोगऽब्भासाणं पि हु, सारो एक्को च्चिय अहिंसा ॥२४॥
अप्पाउमऽणारोग्गं, दोहग्ग-दुरुवया य दोगच्चं । दुव्वन्नगंधरसया य, होंति वहगस्स परलोए ॥२५॥
तम्हा इह परलोए, दुक्खाणि सया अणिच्छमाणेणं । उवओगो कायव्वो, जीवदयाए सया मुणिणा ॥२६॥
जं किंचि सुहमुयारं, पहुत्तणं पयइसुंदरं जं च । आरोग्गं सोहग्गं, तं तमऽहिंसाफलं सव्वं ॥२७॥

"मृषावादविरमणस्वरुपम्" —

परिहर असच्चवयणं, खमग! चउब्भेयमऽवि पयत्तेण । संजमवंता वि जओ, भासादोसेण लिप्पंति ॥२८॥
सब्भूयऽत्थनिसेहो, पढममऽसच्चं न सन्ति जह जीवा । बीयमऽसब्भूयकहा, संति जहा भूयकत्तारा ॥२९॥
अन्नह वयणं तइयं, निच्चो जीवो भवे अणिच्चो वा । साऽवज्जमऽणेगविहं, वयणमऽसच्चं चउत्थं तु ॥३०॥

जत्तो पाणिवहाऽऽई, दोसा जायंति तमिह साऽवज्जं । अप्पियवयणं च तहा, कक्कसपेसुण्णमाऽऽइयं ॥३१॥
हासेण य कोहेण य, लोभेण भएण वा वि तमऽसच्चं । मा भणसु भणसु सच्चं, जीवहियत्थं पसत्थमिणं ॥३२॥
मियमहुरमऽक्खरमऽफरुस-मऽच्छलकज्जोवगं असावज्जं । धम्माऽहम्मियसुहयं, भणाहि तं चेव य सुणाहि ॥३३॥
सच्चं वयंति रिसिणो, रिसीहिं विहियाउ सव्वविज्जाउ । मेच्छस्स वि सिज्झंती, नियमेणं सच्चवाइस्स ॥३४॥
विस्ससणिज्जो माय व्व, होइ पुज्जो गुरुव्व लोगस्स । सयणो व्व सच्चावाई, पुरिसो सव्वस्स होइ पिओ ॥३५॥
सच्चम्मि तवो सच्चम्मि, संजमो तम्मि चेव सव्वगुणा । इह संजओ वि मोसेण, होइ तणतुच्छओ पुरिसो ॥३६॥
न डहइ अग्गी न जलं पि, बोलए सच्चवाइणं पुरिसं । सच्चबलियं सुपुरिसं, न नेइ तिक्खा गिरिनई वि ॥३७॥
सच्चेण देवयाओ, नमंति पुरिसस्स ठंति य वसम्मि । सच्चेण गहग्गहियं, मोइंति करेंति रक्खं च ॥३८॥
सच्चं ववगयदोसं, वोत्तूण जणस्स मज्झयारम्मि । पावइ परमं पीइं, जसं च जयविस्सुयं लहइ ॥३९॥
मायाए वि हु वेसो, पुरिसो अलिएण होइ एक्केण । किं पुण सेसाण भुयं-गमो व्व नो होज्ज अइवेसो ॥४०॥
अप्पच्चओ अकित्ती, धिक्कारो कलहवेरभयसोगा । धणनासो वहबंधो, असच्चवाइम्मि संनिहिया ॥४१॥

"अदत्तादानविरमणस्वरूपम्" —

परलोगम्मि वि दोसा, ते चेव हवंति अलियवाइस्स । चोरिक्काऽऽई सेसे, जत्तेण वि परिहरंतस्स ॥४२॥
इहलोगपारलोइय-दोसा जे होंति अलियवयणस्स । कक्कसवयणाऽऽईण वि, दोसो ते चेव नायव्वा ॥४३॥
अलियं पयंपमाणो, एमाऽऽई पावए बहू दोसे । परिहरमाणो तं पुण, तव्विवरीए य लहइ गुणे ॥४४॥
मा कुणसु धीर! बुद्धिं, अप्पं च बहुं च परधणं घेत्तुं । दंतंतरसोहणयं, किलिंचमेत्तं पि अविइण्णं ॥४५॥
जह मक्कडओ पक्कफ्फलाइं, दट्ठूण धाइ [1]धाओ वि । इय जीवो परविहवं, विविहं दट्ठूण अहिलसइ ॥४६॥
न य तं लहइ न भुंजइ, भुत्तं पि न कुणइ निव्वुइं तस्स । सव्वजएण वि जीवो, लोभाऽऽविट्ठो न तिप्पइ य ॥४७॥
तह जो अत्थं अवहरइ, जस्स सो जीवियं पि से हरइ । जं सो अत्थकएणं, उज्झइ जीयं न उण अत्थं ॥४८॥
हुंते य तम्मि जीवइ, सुहं च सकलत्तओ तओ लहइ । तं पुण तस्स हरंतेण, तेण सव्वं पि हडमेव ॥४९॥
ता जीवदयं परमं, धम्मं गहिऊण गेण्ह माऽदिण्णं । जिणगणहरपडिसिद्धं, लोयविरुद्धं च अहमं च ॥५०॥
चरिउं पि चिरं चरणं, किलिंचमेत्तं पि घेत्तुमऽविदिण्णं । तणलहुओ होइ नरो, अप्पच्चइओ य चोरो व्व ॥५१॥
वहबंधजायणाओ, छायाभंसं पराभवं सोगं । पावइ चोरो सयमऽवि, मरणं सव्वस्सहरणं च ॥५२॥
निच्चं दिया य रत्तिं च, संकेमाणो न निद्दमुवलभइ । भयतरलं पेच्छंतो, अच्छइ गच्छइ य हरिणो व्व ॥५३॥
उंदुरकयं पि सद्दं, सोच्चा परिवेवमाणसव्वंऽगो । सहसा समंतओ तह, उव्विग्गो धावइ खलंतो ॥५४॥
परलोगम्मि वि चोरो, करेइ नरयम्मि अप्पणो वसहिं । तिव्वाओ वेयणाओ, अणुभवइ तत्थ सुचिरं पि ॥५५॥
तिरियगईए वि तहा, चोरो पाउणइ तिक्खदुक्खाइं । किं बहुणा दुत्तारे, संसारसरे सरइ बहुसो ॥५६॥
हरिया च अहरिया वा, नस्संति नरभवेवि तस्सऽत्था । न हु से धणमुवचीयइ, सयं च ओलोट्टइ धणाओ ॥५७॥
[2]परदव्वहरणबुद्धी, सिरिभूई दुक्खदारुणे नरए । पडिओ तत्तोऽणंतं, भमिओ संसारकंतारे ॥५८॥
एए सव्वे दोसा, न होंति परदव्वहरणविरयस्स । होंति समग्गा य गुणा, एत्तो च्चिय निच्चमुवउत्तो ॥५९॥
देवेंदरायगहवइ-सागरिसाहम्मिओग्गहम्मि तुमं । समुचियविहिणा दिण्णं, गेण्हसु सामण्णहेउं ति ॥६०॥

"मैथुनविरमणस्वरूपम्" —

रक्खाहि बंभचेरं च, बंभगुत्तीहिं नवहिं परिसुद्धं । निच्चं पि अप्पमत्तो, पंचविहे इत्थिवेरग्गे ॥६१॥
जीवो बंभा जीवम्मि, चेव चरिया भवेज्ज जा जइणो । तं जाण बंभचेरं, विमुक्कपरदेहतत्तिस्स ॥६२॥
"वसहिकहनिसेज्जेंदिय-कुड्डंतरपुव्वकीलियपणीए । अइमायाऽऽहारविभूसणा य, नव बंभगुत्तीओ" ॥६३॥
कामकया[1] इत्थिकया[2], दोसा असुइत्त[3] वुड्ढसेवा[4] य । संसग्गीदोसा[5] वि य, करेंति इत्थीसु वेरग्गं ॥६४॥
जावइया किर दोसा, इह परलोगे दुहाऽऽवहा होंति । आवहइ ते उ सव्वे, मेहुणसन्ना मणूसस्स ॥६५॥
सोयइ वेवइ तप्पइ जंपइ कामाऽऽउरो असंबद्धं । रत्तिं दिया वि निद्दं, न लहइ पज्झाइ विमणो य ॥६६॥

1. ध्रातः = तृप्तः । २. इयं गाथा ताडपत्रीयप्रत्यां नास्ति ।

सयणे जणे य सयणाऽऽसणे वि, गामे घरे अरन्ने वा । कामपिसायग्गहिओ, न रमइ तह भोयणाऽऽईसु ॥६७॥
कामाऽऽउरस्स गच्छइ, खणो वि संवच्छरो व्व पुरिसस्स । सीयंति य अंगाइं, वहइ मणे इट्ठउक्कंठं ॥६८॥
करयलकलियकवोलं, बहुसो चिंतेइ किंपि दीणमुहो । कामुम्मत्तो अंतो, अंतो डज्झइ य चिंताए ॥६९॥
विवरीयविहिवसेण य, कामिज्जंते जणे अलब्भंते । पाडइ निरत्थयं सो, गिरिजलजलणेसु अप्पाणं ॥७०॥
अरइरइतरलजीहाजुएण, संकप्पउब्भडफडेण । विसयबिलवासिणा मय-सुहेण बिब्बोयरोसेण ॥७१॥
कामभुयगेण दट्ठा, विलासनिम्मोयदप्पदाढेण । नासंति नरा अवसा, दुसहदुक्खुक्कडविसेण ॥७२॥
आसीविसेण दट्ठस्स, होंति वेया नरस्स सत्तेव । कामभुयंगमदट्ठस्स, होंति वेया दस दुरंता ॥७३॥
पढमे चिंतइ वेगे, दट्ठुं तं इच्छए बिइयवेगे । नीससइ तइयवेगे, आरुहइ जरो चउत्थम्मि ॥७४॥
डज्झइ पंचमवेगे, अंगं छट्ठे न रोयए भत्तं । मुच्छिज्जइ सत्तमए, उम्मत्तो होइ अट्ठमए ॥७५॥
नवमे किंपि न याणइ, दसमे पाणेहिं मुच्चइ अवस्सं । संकप्पवसेण पुणो, वेगा तिव्वा य मंदा य ॥७६॥
सूरऽग्गी दहइ दिया, रत्तिं च दिवा य दहइ कामऽग्गी । सूरग्गिणोऽत्थि उच्छा-यणं पि कामग्गिणो नत्थि ॥७७॥
विज्झायइ सूरग्गा, जलोवयाराऽऽइणा न कामग्गी । सूरग्गी दहइ तयं, सबाहिरऽब्भंतरं इयरो ॥७८॥
कामपिसायग्गहिओ, हियमऽहियं वा न अप्पणो मुणइ । पेच्छइ कामग्घत्थो, हियं भणंतं पि सत्तुं व ॥७९॥
कामग्घत्थो पुरिसो, तिलोयसारं पि चयइ सुयरयणं । तेलोक्कपूइयं न य, माहप्पं पि हु गणइ मूढो ॥८०॥
तेलोक्कपूयणिज्जे, जिणेहिं भणिए सयं च विन्नेये । मन्नइ तणं व तवनाण-चरणदंसणवरगुणे वि ॥८१॥
अरहंतसिद्धआयरिय-वायगाणं च साहुवग्गस्स । कुणइ अवन्नमऽधन्नो, अविभावेंतो भवुत्थभयं ॥८२॥
अयसमऽणत्थं दुक्खं, इहलोए दुग्गइं च परलोए । संसारं च अणंतं, न गणइ विसयाऽऽमिसे गिद्धो ॥८३॥
लल्लक्कनरयवियणाउ, घोरसंसारसायरुव्वहणं । संगच्छइ न य पेच्छइ, तुच्छत्तं कामियसुहस्स ॥८४॥
गायइ नच्चइ धोवइ, चलणजुयं पि हु मलेइ अंगाइं । सोहइ मुत्तपुरीसं, कुलम्मि जाओ वि विसयवसो ॥८५॥
वम्महसरसयविद्धो गिद्धो वणिओ व्व रायपत्तीए । पाउक्खालयगेहे, दुग्गंधे णेगसो वसिओ ॥८६॥
कामुम्मत्तो न मुणइ, गम्माऽगम्मं च वेसियाणो व्व । सेट्ठी कुबेरदत्तो व्व, नियसुयासुरयरइसत्तो ॥८७॥
इहलोगे वि महल्लं, दुक्खं कामस्स वसगओ पत्तो । मरिउं च पावबद्धो, कडारपिंगो गओ नरयं ॥८८॥
एए सव्वे दोसा, न होंति पुरिसस्स बंभयारिस्स । तव्विवरीया य गुणा, भवंति विविहा विरागिस्स ॥८९॥
महिला इहपरभविए, हणिऊण गुणे नरस्स सवसस्स । उभयभवदुक्खजणगे, दोसे नियमेण आणेइ ॥९०॥
महिला सहावकुडिला, [1]अडणिव्व बहुं पि अणुसरिज्जंती । पुरिसं सभूमिगाउ, चालिय विविहं भमाडेइ ॥९१॥
महिला पहधूलिसमा, सहावकलुसा अकलुसपयइं पि । लद्धप्पसरा पुरिसं, सव्वंगं चेव कलुसेइ ॥९२॥
महिला वंसकुडंगी व, गहणभूया सहावओ चेव । संपन्नफला वि हु कुणइ, निययवंसक्खयं दुट्ठा ॥९३॥
महिलासु नत्थि वीसंभएण, पणयपरिचयकयन्नुयाऽऽइगुणा । उज्झंति नियकुलाइं, जमऽन्नचित्ताओ ताओ लहुं॥९४॥
पुरिसे वीसंभेइ, महिला हेलाए चेव पुरिसा उ । महिलं वीसंभेउं, बहुप्पयारेहिं वि न सक्का ॥९५॥
अइलहुगे वि अविणए, कयम्मि सुकयाण लक्खमऽगणेंती । पइमऽप्पाणं सयणं, कुलं धणं नासए महिला ॥९६॥
अहवा—
अकए वि हु अवराहे, नारीओ नरऽन्तरे कयमणाओ । कुव्वंति वहं पइणो, सुयस्स ससुरस्स पिउणो वि ॥९७॥
सक्कारं उवयारं, गुणं च सुहलालणं च नेहं च । महुरवयणं च महिला, परप्पसत्ता परिप्फुसइ ॥९८॥
चोरऽग्गिवग्घविसजलहि-मत्तगयकसिणसप्पसत्तूसु । सो वीसंभं गच्छइ, वीसंभइ जो महिलियासु ॥९९॥
वग्घाऽऽइया य अहवा, दोसं न नरस्स तमिह कुव्वंति । जं कुणइ महादोसं, दुट्ठा महिला मणूसस्स ॥८०००॥
रोगो दारिद्दं वा, जरा य न उवेइ जाव पुरिसस्स । ताव पिओ हवइ नरो, कुलजायाए वि महिलाए ॥१॥
जुन्नो य दरिद्दो वा, रोगी व पिओ व होइ से विस्से । निप्पीलिओ व्व उच्छू, माला व मिलाणगयगंधी ॥२॥
महिला पुरिसमऽवन्नाए, चेव वंचेइ कूडकवडेहिं । पुरिसो समुज्जओ वि हु, महिलं न चएइ वंचेउं ॥३॥

1. अडणी = मार्गः ।

वाओलीउ व्व रयाऽऽउलाउ, मइलिंति महिलियाउ नरं । संझाउ व्व अवस्सं, भवंति खणमेत्तरागाओ ॥४॥
जावइयाइं जलाइं, वीईओ वालुगा य जलहीसु । नइसु य हवंति तत्तो, महिलाचित्ताइं बहुयाइं ॥५॥
आगासभूमिजलनिहि-सुरगिरिपवणाऽऽइणो वि पुरिसेहिं । नाउं सक्का न पुणो, कहमऽवि इत्थीण चित्ताइं ॥६॥
चिट्ठंति जहा न चिरं, विज्जू जलबुब्बुया य उक्का वा । तह न चिरं महिलाणं, एक्कम्मि नरे रमइ चित्तं ॥७॥
परमाणू वि कहंचि वि, आगच्छेज्ज गहणं मणूसस्स । न य सक्का घेत्तुं जे, चित्तं महिलाण अइसुहुमं ॥८॥
कुविओ वि कन्हसप्पो, दुट्ठो सीहो वि मत्तहत्थी वि । घेप्पइ कह वि नरेणं, न य चित्तं दुट्ठमहिलाए ॥९॥
उदगम्मि वि तरइ सिला, सिही वि न दहेइ होइ हिमसिसिरो । न उण महिलाण कइय वि, उज्जुभावो भवइ पुरिसे॥१०॥
उज्जुगभावम्मि असंतयम्मि, कह होइ तासु वीसंभो । वीसंभे य असंते, का होज्ज रई महिलियासु ॥११॥
गच्छेज्ज समुद्दस्स वि, पारं पुरिसो भुयाहिं तरिऊण । मायाजलमहिलोयहि-पारं न य सक्कए गंतुं ॥१२॥
रयणसहिया सवग्घा, गुहा व सीयलजला सगाहा य । सरिय व्व जणमणहरा (विहु), उव्वियणिज्जा य ही! महिला॥१३॥
दिट्ठं पि न सब्भावं, पडिवज्जइ नियडिमेव उड्डेइ । गोहानिलुक्कमित्थी, करेइ पुरिसम्मि कुलजा वि ॥१४॥
तारिसओ णत्थि अरी, नरस्स अन्नो त्ति वुच्चए नारी । पुरिसं सया पमत्तं, कुणइ त्ति य वुच्चए पमया॥१५॥
पुरिसम्मि अणत्थसए, विलायइ जेण तेण विलया सा । जोजेइ नरं दुक्खे य, तेण जुवई य जोसा य॥१६॥
अबल त्ति होइ जं से, न दढं हिययम्मि धिइबलं अत्थि । इय महिलानामाणि वि, चिंतिज्जंताणि असुहाणि ॥१७॥
निलओ कलीए अलियाण, आलओ कुलहरं अविणयाणं । आयासस्स य वसही, महिला मूलं तु कलहस्स ॥१८॥
धम्मस्स परमविग्घो, पाउब्भावो य धुवमऽधम्मस्स । संदेहो देहस्स वि, हेऊ माणाऽवमाणाणं ॥१९॥
बीयं पराभवाणं, महिलाओ कारणं अकित्तीए । अत्थाणं सव्वगमो, समागमो तह अणत्थाणं ॥२०॥
दोग्गइमग्गो सग्गाऽप-वग्गमग्गे य अग्गला उग्गा । दोसाण नियाऽऽवासो, सव्व-गुणाणं पवासो य ॥२१॥
चंदो वि होज्ज उण्हो, सीओ सूरो वि निबिडमाऽऽयासं । न य होज्ज अदोसा भ-द्दिया य महिला सुकुलजा वि॥२२॥
इच्चाऽऽई बहुदोसे, महिलाविसए विचिंतयंतस्स । पायं विरज्जइ मणो, महिलाहिंतो विवेइस्स ॥२३॥
जह जाणिऊण दोसे, वग्घाऽऽई एत्थ परिहरिज्जंति । तह दट्ठूणं दोसे, महिलाहिंतो वि विरमेज्ज ॥२४॥
किं बहुणा भणिएणं, दोसा महिलाकया इहं चेव । हेट्ठाऽणुसट्ठिदारे, गणवइणा देसिया चेव ॥२५॥
जं सुद्धकारणकयं, कारणसुद्धीए सुज्झइ तयं तु । कत्तो अमेज्झघडियस्स, होज्ज सुद्धी सरीरस्स ॥२६॥
देहस्स सुक्कसोणिय-मऽसुई उप्पत्तिकारणं जम्हा । ता देहो च्चिय असुई, अमेज्झघडिओ जहा घडओ ॥२७॥
तहाहि—

''गर्भावस्थास्वरुपम्''

अम्मापिउसंजोगे, सोणियसुक्काण मीलणे कलुसं । जं होइ तत्थ जीवो, उप्पज्जइ पढममेव तओ ॥२८॥
तं कलुसं सत्ताहं, कललं होऊण अब्बुयं होइ । सत्ताहं चिय तत्तो, घणरुवं पढममासम्मि ॥२९॥
करिसूणं पलमेत्तं, जायइ बीयम्मि तं च मासम्मि । घणरुवमंसपेसी, संपज्जइ तइयमासे य ॥३०॥
जणणीए जणइ डोहल-मंऽगाणि य पीणइ चउत्थम्मि । निव्वत्तइ पंचमगे, सिरकरचरणंऽकुरमऽवत्तं ॥३१॥
उवचिणइ छट्ठमासे, सोणियपित्ताइं सत्तमम्मि पुणो । सत्तसयाइं सिराणं, पंच सयाइं च पेसीणं ॥३२॥
धमणीओ नव सव्वंऽग-भाविअद्धुट्ठरोमकोडीओ । निव्वत्तइ अट्ठमए, वित्तीकप्पो भवइ पच्छा ॥३३॥
नवमे वा दसमे वा, जणणिं अप्पाणयं च पीडंतो । नीसरइ जोणिकुहराओ, विरससद्दं रसेमाणो ॥३४॥
अणुपुव्वीए वुड्ढीगए य, देहम्मि मुत्तरुहिराणं । पत्तेयमाऽऽढयं कुल-वओ य तह सिंभपित्ताणं ॥३५॥
सुक्कस्स अद्धकुलवो, हवेइ पत्थो य मत्थुलिंगस्स । अद्धाऽऽढओ वसाए, एक्को पत्थो पुरीसस्स ॥३६॥
अट्ठीणं तिन्नि सया, भरिया बीभच्छकुणिममज्जाए । संधीणं सव्वग्गं, सट्ठीअहियं सयं होइ ॥३७॥
नव ण्हारुण सयाइं, सिरासयाइं च होंति सत्तेव । होंति य पंच सयाइं, देहम्मि मंसपेसीणं ॥३८॥
इय सुक्कसोणियप्पमह-कलुसपोग्गलचएण निम्माओ । नवमाससमाओ असुई-रसपाणुवलद्धपरिवुड्ढी ॥३९॥
जोणिमुहनीहरिओ वि, जणणीथणछीरपीणिओ बाढं । पगइअमेज्झमइओ, सुइत्तमाऽऽवहइ कहं देहो ॥४०॥

एवंविहे य इहइं, बहिरंऽत्तो वा वि कयलिथंबे(भे) व्व । सम्मं पेहिज्जंते, न विज्जए सारलेसो वि ॥४१॥
सप्पेसु मणी दंता, गएसु चमरीसु केसपब्भारो । दिट्ठो सारो न उणऽत्थि, को वि सारो मणुयदेहे ॥४२॥
छगणे मुत्ते दुद्धे, गोणीए दीविणो य चम्मम्मि । सुचिया दिट्ठा न उणऽत्थि, का वि सुचिया मणुयदेहे ॥४३॥
वाइयपित्तियसिंभिय-रोगा तन्हाछुहाऽऽइया य तहा । निच्चं तवंति देहं, [1]अद्दहियजलं व जलियऽग्गी ॥४४॥
एवंविहदेहो वि हु, बालो जोव्वणमएण वामूढो । ससरीरतुल्लकारण-निम्मायम्मि वि जुवइदेहे ॥४५॥
उवमेइ केसहत्थं, बरहिकलावेण भालवट्टं पि । अट्ठमिमयंकबिंबेण, नयणमंऽभोरुहदलेण ॥४६॥
अहरं पि पोमराएण, गीवमुवमेइ पंचयन्नेण । कणयकलसेहिं थणए, भुयजुयलं नलिणिनालेण ॥४७॥
पाणिं पि पल्लवेणं, नियंबफलयं पि कंचणसिलाए । रंभाहिं ऊरुजुयं, चलणे रत्तुप्पलेहिं च ॥४८॥
न विभावेइ अणज्जो, कत्तिच्छण्णं अमेज्झनिम्मायं । कलमलयमंससोणिय-पुन्नमिमं अप्पदेहं व ॥४९॥
सुरहिविलेवणतंबोल-कुसुमनिम्मलदुगूलभूसाहिं । खणमेत्तपत्तबाहिर-सोहं रम्मं ति काऊण ॥५०॥
केवलमऽबलादेहं, परिभुज्जइ काममोहियमणेहिं । जह कुड्डहड्डाऽऽइजुयं, मंसमऽसिज्जइ सपूइं पि ॥५१॥
तहा—
बालो अमेज्झलित्तो, अमेज्झमज्झम्मि चेव जह रमइ । तह रमइ नरो मूढो, महिलअमेज्झे सयमऽमेज्झा ॥५२॥
कुणिमरसकुणिमगंधं, सेवंता महिलियातणुकुडीरं । सायाऽभिमाणिणो जे, ते लोए होंति हसणिज्जा ॥५३॥
एवं एए अत्थे, देहे चिन्तन्तयस्स पुरिसस्स । परदेहं परिभोत्तुं, इच्छा कह होज्ज सघिणस्स ॥५४॥
एए अत्थे सम्मं, देहे पेच्छंतओ नरो सघिणो । ससरीरे वि विरज्जइ, किं पुण अण्णस्स देहम्मि ॥५५॥
थेरा वा तरुणा वा, वुड्ढा सीलेहिं हुंति वुड्ढेहिं । थेरा वा तरुणा वा, तरुणा सीलेहिं तरुणेहिं ॥५६॥
खोभेइ पत्थरो जह, दहे पडंतो पसंतमऽवि पंकं । खोभेइ तहा मोहं, पसंतमऽवि तरुणसंसग्गी ॥५७॥
कलुसीकयं पि उदयं, विमलं जह होइ कयगफलजोगा । तह मोहकलुसियमणो, जीवो वि हु वुड्ढसेवाए ॥५८॥
तरुणो वि वुड्ढसीलो, होइ नरो वुड्ढसंसिओ अइरा । लज्जाऽवरोहसंका-गउरवभयधम्मबुद्धीहिं ॥५९॥
वुड्ढो वि तरुणसीलो, होइ नरो तरुणसंसिओ अइरा । वीसंभनिव्विसंको, समोहणिज्जा य पयईए ॥६०॥
लीणो वि मट्टियाए, जायइ जलजोगओ जहा गंधो । तह लीणो वि वियंभइ, मोहो तरुणाण सेवाओ ॥६१॥
तरुणेहिं सह वसंतो, संतो वि चलिंदिओ चलमणो य । अचिरेण सइरचारी, पावइ महिलागयं दोसं ॥६२॥
पुरिसस्स य अपसत्थो, भावो तिहिं कारणेहिं संभवइ । विरहम्मि अंधयारे, कुसीलसेवाए सयराहं ॥६३॥
जह चेव चारुदत्तो, गोट्ठीदोसेण आवइं पत्तो । पत्तो य उन्नइं सो, पुणो वि तह वुड्ढसेवाए ॥६४॥
तहाहि—

"चारुदत्तदृष्टान्तः"

चंपाए नयरीए अहेसि भाणू त्ति सावगो इब्भो । भज्जा य से सुभद्दा, पुत्तो पुण चारुदत्तो त्ति ॥६५॥
जोव्वणमऽणुपत्तो वि हु, सो पुण साहु व्व निव्वियारमणो । वंछइ न विसयनामं पि, गेण्हिउं किं पुणाऽऽयरिउं ॥६६॥
तो जणणीजणगेहिं खित्तो दुल्ललियगोट्ठिमज्झम्मि । भावपरियत्तणकए, तो तीए सह स वट्टंतो ॥६७॥
जातो विसयाऽभिमुहो, ठितो य गेहे वसंतसेणाए । वेसाए समा बारस, नीयं निहणं च सव्वधणं ॥६८॥
निव्वासिओ य भवणाहि, [2]वाइयाए गओ स गेहम्मि । अम्मापिऊण मरणं, सोऊण य गाढदुक्खत्तो ॥६९॥
भज्जाऽलंकारं गेण्हिऊण, वाणिज्जकरणवंछाए । माउलगेणं सद्धिं, उसीरवत्ते पुरम्मि गओ ॥७०॥
कप्पासं गेण्हेता, तत्तो वलितो य तामलित्तीए । दावऽग्गिणा य दड्ढो, कप्पासो अद्धमग्गम्मि ॥७१॥
अह संभमम्मि मोत्तुं, माउलगं तुरगमाऽऽरुहिय तुरियं । पुव्वदिसाए पलाणो, पत्तो य पियंगुनयरम्मि ॥७२॥
दिट्ठो य तहिं पिउणो, मित्तेण सुरेंददत्तनामेण । पुत्तो व्व गोरवेणं, धरिओ य चिरं नियगिहम्मि ॥७३॥
अह तस्स जाणवत्तेण, दव्वुवज्जणकएण परतीरे । गंतूण चारुदत्तेण, अज्जिया अट्ठ धणकोडी ॥७४॥
चलमाणस्स य सहसा, मज्झे उदहिस्स विहडियं वहणं । लद्धं च फलगखंडं, कहकहवि य चारुदत्तेणं ॥७५॥

1. अद्दहियजलं = आहितजलम् । 2. वेश्याजनन्या ।

ता उत्तिन्नो जलहिं, पत्तो य कहिंपि रायउरनयरे । दिट्ठो य तहिं एक्को, रवि व्व रुइरो तिदंडिमुणी ॥७६॥
पुट्ठो य तेण कत्तो, तुमं ति सिट्ठा य चारुदत्तेणं । सव्व च्चिय नियवत्ता, भणियं च तिदंडिणा वच्छ! ॥७७॥
एहि करेमि धणड्ढं, वच्चामो पव्वयं रसं तत्तो । आणित्ता चिरदिट्ठं, पच्चइयं कोडिवेहं ति ॥७८॥
पडिवन्नं इयरेणं, गया य ते दो वि पव्वयनिगुंजे । कीणासवयणभीमा, दिट्ठा रसकूविया य तहिं ॥७९॥
वुत्तो तिदंडिणा सो, भद्द! इहं पविस तुंबयं घेत्तुं । रज्जुमऽवलंबिऊणं, पुणो वि लहु नीहरिज्जासि ॥८०॥
तो रज्जुबलेणं सो, तीए पविट्ठो अईव उंडाए । ठाऊण मेहलाए, जाव रसं गेण्हिउं लग्गो ॥८१॥
ताव निसिद्धो केणइ, मा मा भो भद्द! गेन्हसु रसं ति । भणियं च चारुदत्तेणं, को तुमं मं निवारेसि ॥८२॥
तेणं पयंपियं उयहि-भिन्नपोओ अहं इहं वणिओ । धणलुद्धो रसहेउं, तिदंडिणा रज्जुणा खित्तो ॥८३॥
रसभरियतुम्बए अप्पि-यम्मि पावेण उज्झिओ एवं । रसविवरपूयणत्थं, छगलो व्व सकज्जसिद्धिकए ॥८४॥
रसखद्धऽद्धसरीरो, वट्टामि य इण्हि कंठगयजीवो । जइ अप्पिहिसि रसं से, ता तुममऽवि इय विणस्सिहिसि ॥८५॥
ढोएसु मे अलाबुं, जेणं भरिऊण ते समप्पेमि । एवं तेणं वुत्ते, तमऽप्पियं चारुदत्तेण ॥८६॥
अह रसभरिए तेणं, उवणीए तम्मि चारुदत्तेण । तत्तो उत्तरणत्थं, करेण संचालिया रज्जू ॥८७॥
आयड्ढिउमाऽऽरद्धो, तं च तिदंडी रसं समीहंतो । नवरं न चारुदत्तं, उत्तारइ जाव कहमऽवि य ॥८८॥
ताव रसो परिचत्तो, कूवे च्चिय झत्ति चारुदत्तेण । तो सो सरज्जुओ च्चिय, रुसिएण तिदंडिणा मुक्को ॥८९॥
पडिओ य मेहलाए, एत्तो नो जीवियं ति चिंततो । कयसाऽऽगारअणसणो, परमेट्ठिं सरिउमाऽऽरद्धो ॥९०॥
भणिओ य तेण वणिणा, अईयदिणे इह रसं गया पाउं । गोहा जइ एज्ज पुणो, ता तुज्झ हवेज्ज नीहरणं ॥९१॥
एवं सोऊणं सो, ईसिं उवलद्धजीवियव्वाऽऽसो । पंचनमोक्कारपरो, जावऽच्छइ ताव अन्नदिणे ॥९२॥
गोहा समागया तं, रसं च पाऊण निक्खमंती सा । पुच्छम्मि दढं गहिया, जीयत्थं चारुदत्तेण ॥९३॥
उत्तारिओ य तीए, तत्तो अच्चंतजायपरितोसो । गंतुं पुणो पयट्टो, उत्तिण्णो कहवि कंतारं ॥९४॥
एगम्मि य कुग्गामे, मिलिओ रुद्दो त्ति माउलगमित्तो । तेणेव तओ सद्धिं, टंकणदेसम्मि संपत्तो ॥९५॥
तत्थ य सुवन्नभूमी-गमणकए दो अजे दढे घेत्तुं । चलिया पत्ता दूरे, वुत्तो रुद्देण तो इयरो ॥९६॥
भाय! न एत्तो गंतुं, तीरिज्जइ ता इमे अजे हणिउं । कीरंति भत्थाओ, अब्भंतरनिहियरोमाउ ॥९७॥
तासु य सत्थं गेण्हिय, पविसिज्जइ जेण आमिसाऽऽसाए । घेत्तूणं भारुंडा, सुवन्नभूमीए मेल्लंति ॥९८॥
तत्थ य संपत्ताणं, होही विउला सुवन्नसंपत्ती । उप्पण्णघिणेण तओ, पयंपियं चारुदत्तेणं ॥९९॥
मा मा एवं उल्लवसु, भद्द! को पावमेरिसं काही । जं जीववहेण धणं, तं मज्झ कुले वि मा होउ ॥८१००॥
रुद्देण जंपियमऽहं, नियअजे निच्छियं हणिस्सामि । किं तुज्झ एत्थ तत्तो, उव्विग्गमणो ठिओ इयरो ॥१॥
अह हणिउं पारद्धो, रुद्देण अजो सुनिग्घिणमणेण । ठाऊण कन्नमूले, अजस्स अह चारुदत्तेणं ॥२॥
भणिओ पंचाऽणुव्वय-सारो परमेट्ठिपंचनवकारो । तस्सुइसुहभावेण य, मरिऊण अजो सुरो जाओ ॥३॥
तक्खल्लाए तत्तो, पक्खिविउं चारुदत्तमियराए । अजखल्लाए य सयं, सो रुद्दो लहु पविट्ठो त्ति ॥४॥
तो आमिसलोलेहिं, भारुंडेहिं दुवे वि उक्खित्ता । णवरं वच्चंताणं, पक्खीणं परोप्परं जुज्झे ॥५॥
पडिओ चंचुपुडाओ, सलिलोवरि कहऽवि चारुदत्तो तं । सत्थेण भिंदिऊणं, गब्भाओ इव विणिक्खंतो ॥६॥
एवंविहवसणाइं, अणिट्ठसंगेण पाविओ इण्हिं । जह सिट्ठसंगतो सिरि-मऽणुपत्तो सो तहा सुणसु ॥७॥
तं जलमुल्लंघित्ता, संनिहिए सो गतो रयणदीवे । तं च पलोएमाणो, आरुढो सेलकूडम्मि ॥८॥
काउस्सग्गेण ठियं, अमियगइं नाम चारणं समणं । तत्थ य दट्ठुं वंदइ, पहरिसपुलयंचियसरीरो ॥९॥
मुणिणा वि काउसग्गं, पाराविय दिन्नधम्मलाभेण । भणियं कह दुग्गे इह, समागओ चारुदत्त! तुमं ॥१०॥
सुमरसि किं न महायस!, जं तुमए हं पुरीए चंपाए । सत्तुब्बद्धो काणण-गएण परिमोइओ पुव्वं ॥११॥
विज्जाहररज्जसिरिं, भुंजित्ता केत्तियाणि वि दिणाणि । पडिवन्नो पव्वज्जं, आयाविंतो इह वसामि ॥१२॥
एमाऽऽइ जा पयंपइ, अमियगती ताव मयणपडिरूवा । ओयरिया गयणाउ, दोण्णि विज्जाहरकुमारा ॥१३॥

साहुं नमंसिऊणं, अभिवंदेऊण चारुदत्तं च । आसीणा धरणीए, भालोवरि रइयकरकमला ॥१४॥
एत्थंतरम्मि मणिमय-मउडोणामियसिरो सुरो एइ । वंदइ य चारुदत्तं, पढमं पच्छा तवस्सिं पि ॥१५॥
अह विम्हिएहिं विज्जाहरेहिं, पुट्ठो सुरो अहो! कम्हा । साहुं मोत्तुण तुमं, पडिओ गिहिणो पएसुं ति ॥१६॥
भणियं सुरेण एसो, धम्मगुरु मज्झ चारुदत्तो त्ति । पावाविओ इमेणं, दिंतेणं जिणणमोक्कारं ॥१७॥
मरणम्मि अजो हुंतो, देवसिरिं एरिसं सुदुल्लंभं । एत्तो च्चिय जाणामि, मुणिणो सव्वन्नुणो य जओ ॥१८॥
वुत्तो य चारुदत्तो, सुरेण भो! वरसु संपइ वरं ति । एज्जासि सुमरणम्मि, इय भणिओ चारुदत्तेण ॥१९॥
देवो गओ सथामं, तत्तो विज्जाहरेहिं गुणवं ति । पउरमणिकणयसंभार-भरियगुरुए विमाणम्मि ॥२०॥
आरोविऊण चंपा-पुरीए नेऊण नियभवणम्मि । मुक्को य चारुदत्तो, पत्तो य समुन्नइं परमं ॥२१॥
इय दुट्ठसिट्ठगोट्ठी-फलाइं आलोइउं इहभवे वि । निम्मलगुणड्ढसुवियड्ढ-वुड्ढसेवाए जइयव्वं ॥२२॥

किंच— "महिलासंसर्गेदोषाः त्यागे गुणाः तद्विषये उपदेशः च"

निच्चं वुड्ढसहावे, तरुणे वुड्ढे य सुट्ठु सेवंता । तह गुरुकुलमऽमुयंता, चरंति बंभव्वयं धीरा ॥२३॥
कामाऽणिलेण हिययं, पचलइ पुरिसस्स अप्पस्सारस्स । पेच्छंतस्स य बहुसो, इत्थीयणवयणरमणाणि ॥२४॥
मंथरगइठाणविलास-हासबिब्बोयहावभावेहिं । सोहग्गरुवलावन्न-लट्ठसंठाणचेट्ठाहिं ॥२५॥
अद्धऽच्छिपेच्छिएहिं वि, विसेसदरहसियजंपियव्वेहिं । सरसपइक्खणसंलाव-ललियलीलाइयव्वेहिं ॥२६॥
पयईए सिणिद्धेहिं, पयईए मणोहरेहिं पाएणं । थीसंतिएहिं पुरिसो, रहमिलणेहिं च खुभइ तओ ॥२७॥
कमवड्ढियपीइरइ-पावियवीसंभपणयपसरो य । लज्जालुओ वि पुरिसो, किं किं तं जं न वि करेइ ॥२८॥

तथाहि—

पिइमाइमित्तगुरुसिट्ठ-लोयरायाऽऽइसंतियं लज्जं । गउरवमऽवरोहं परि-चयं च दूरेण परिहरइ ॥२९॥
कित्तिं अत्थविणासं, कुलक्कमं पाविए य धम्मगुणे । करचरणकन्ननासाऽऽइ-लुंपणं पि हु न पेहेज्जा ॥३०॥
संसग्गीमूढमणो, मेहुणरमिओ विमुक्कमज्जाओ । पुव्वावरमऽगणेंतो, किमऽकिच्चं जं न आयरइ ॥३१॥
इंदियकसायसन्ना-गारवपमुहा सहावओ सव्वे । संसग्गिलद्धपसरे, पुरिसे अचिरा वियंभंति ॥३२॥
थेरो बहुस्सुओ वि हु, पमाणभूओ मुणी तवस्सी वि । अचिरेण लहइ दोसं, महिलावग्गस्स संसग्गा ॥३३॥
किं पुण तरुणा अबहु-स्सुयाऽऽइणो सरुइचारिणो मंदा । तस्संसग्गीए, मूलओ, (ते) विनट्ठ च्चिय भवंति ॥३४॥
महिलासंसग्गीए, अमाणुसाऽडविकडिल्लवासी वि । नइकूलवालगमुणी, विडंबणं पाविओ परमं ॥३५॥
जो महिलासंसग्गिं, विसं य दूराउ चेव परिहरइ । नित्थरइ बंभचेरं, जावज्जीवं अकंपं सो ॥३६॥
अवलोयणमेत्तेण वि, जं मुच्छं ताओ देंति पुरिसस्स । तेण हयमहिलियाणं, नयणाइं विसाऽऽलयाइं फुडं ॥३७॥
मारेइ एक्कसिं चिय, तिव्वविसभुयंगवग्गसंसग्गी । इत्थीसंसग्गी पुण, अणंतखुत्तो नरं हणइ ॥३८॥
इय वयवणमूलऽग्गिं, थीसंसग्गिं सया वि जो चयइ । स सुहेण बंभचेरं, नित्थरइ जसं च वित्थरइ ॥३९॥
ता खयग! विसयवंछा, जइ होज्ज कयाइ मोहदोसेण । तह वि हु होसु उवउत्तो, पंचविहे इत्थिवेरग्गे ॥४०॥
जायं पंकम्मि जलम्मि, वड्ढियं पंकयं जह न तेहिं । लिप्पइ मुणी वि एवं, विसयसलिलइत्थिपंकेहिं ॥४१॥
बहुदोससावयगणे, मायामाइण्हियासणाहम्मि । कुमइगहणे वि मुणी, न मुज्झइ इत्थिरन्नम्मि ॥४२॥
सव्वम्मि इत्थिवग्गम्मि, अप्पमत्तो सया सुवीसत्थो । बंभवयं णित्थरइ, चरित्तमूलं सुगइहेउं ॥४३॥
मज्झन्हतिक्खसूरं व, इत्थिरूवं न पासइ चिरं जो । खिप्पं पडिसाहरइ य, दिट्ठिं सो नित्थरइ बंभं ॥४४॥
किं जंपइ कह पासइ, परो ममं कहमऽहं च वट्टामि । इइ जो सयाऽणुवेहइ, सो दढबंभव्वओ होइ ॥४५॥
जोव्वणजलहिं दरहसिय-[1]जंपिउम्मीचियं विसयसलिलं । धण्णा समुत्तरंती, महिलामगरेहिं अच्छिक्का ॥४६॥

"अभ्यन्तरबाह्यग्रन्थयोः स्वरुपम्" —

अब्भिन्तरबाहिरिए, सव्वे गंथे तुमं विवज्जाहि । कयकारियअणुमईहिं, मणवइकाएहिं तत्थ इहं ॥४७॥
मिच्छत्तं वेयतिगं, जाणसु हासाऽऽइयाण छक्कं च । कोहाऽऽईण चउक्कं, चोद्दस अब्भिन्तरा गंथा ॥४८॥

1. जंपिउम्मीचियं = जल्पितोर्मिचितम्।

बाहिरगंथं खेत्तं, वत्थुं धणधन्नकुप्परुप्पाणि । दुपयचउप्पयमऽपयं, सयणाऽऽसणमाऽऽइ जाणाहि ॥४९॥
जह कुंडओ न सक्का, सोहेउं तंदुलस्स सतुसस्स । तह जीवस्स न सक्का, कम्ममलं संगसहियस्स ॥५०॥
जइया रागा दोसा, गारवसन्नाउ तह उदयमेंति । तइया गंथं घेत्तुं, लुद्धो बुद्धिं कुणइ तत्तो ॥५१॥
तस्स निमित्तं मारइ, भणेइ अलियं करेइ चोरिक्कं । सेवइ मेहुणमऽत्थं च, अपरिमाणं कुणइ जीवो ॥५२॥
सन्नागारवपेसुण्ण-कलहफरुसाणि भंडणविवाया । के के न होंति अच्चत्थ-मऽत्थवामोहमूढस्स ॥५३॥
गंथो भयं नराणं, सहोयरा एलगच्छया जं ते । अन्नोऽन्नं मारेउं, अत्थनिमित्तं मइमऽकासी ॥५४॥
अत्थनिमित्तमऽइभयं, जायं चोराणमेक्कमेक्केहिं । मज्जे मंसे य विसं, संजोइय मारिया जं ते ॥५५॥
संगो महाभयं जं, विहेडिओ सायएण संतेण । पुत्तेण हिए अत्थम्मि, मुणिवई कुंचिएणाऽवि ॥५६॥
अत्थनिमित्तं सीयं, उण्हं तण्हं छुहं च वासं च । दुस्सेज्जं दुब्भत्तं च, सहइ वहई य गुरुभारं ॥५७॥
गायइ नच्चइ धावइ, कंपइ विलवेइ मलइ असुइंपि । नीयं च कुणइ कम्मं, कुलम्मि जाओ वि गंथऽत्थी ॥५८॥
एवं चिट्ठंतस्स वि, संसइओ होइ अत्थलाभो से । न य संचीयइ अत्थो, सुचिरेण वि मंदभग्गस्स ॥५९॥
जइ पुण कहिंचि संचय-मुवेइ अत्थो तहाऽवि से नत्थि । तित्ती पउरऽत्थेण वि, लाभे लोभो पवड्ढइ जं ॥६०॥
जह इंधणेण अग्गी, न तिप्पइ जलनिही जलनईहिं । तह जीवस्स न तित्ती, अत्थि तिलोए वि लद्धम्मि ॥६१॥
आक्कम्मइ मारिज्जइ, रुब्भइ भिज्जइ य निरवराहो वि । धणवं आमिसहत्थो, तत्थो पक्खीहिं जह पक्खी ॥६२॥
मायापिइपुत्तेसु वि, दारेसु वि नेय जाय वीसंभं । गंथनिमित्तं जग्गइ, रक्खंतो सव्वरत्तिं पि ॥६३॥
अंतोहुत्तं डज्झइ, पुरिसो नट्ठे सयम्मि अत्थम्मि । उम्मत्तो इव विलवइ, परिदेवइ कुणइ उक्कंठं ॥६४॥
गंथस्स गहणरक्खण-सारवणाइं सयं करेमाणो । वक्खित्तमणो झाणं, उवेइ कह मुक्कमज्जाओ ॥६५॥
किंच—
गंथेसु [1]गढियहियओ, होइ दरिद्दो भवेसु बहुएसु । गंथनिमित्तं कम्मं, किलिट्ठहियओ समाइयइ ॥६६॥
एएहिं दोसेहिं, मुच्चइ मुंचंतओ मुणी अत्थं । परमऽब्भुदयपहाणं, पावेइ गुणाण पब्भारं ॥६७॥
सप्पबहुले अरण्णे, अमंतविज्जोसहो जहा पुरिसो । पावइ अणत्थमऽत्थं, धरंतओ तह मुणी वि परं ॥६८॥
रागो होइ मणुण्णे, गंथे दोसो य होइ अमणुण्णे । गंथच्चाएण पुणो, रागद्दोसा दुवे चत्ता ॥६९॥
सीउण्हदंसमसगाऽऽइयाण, दिन्नो परीसहाण उरो । तव्विणिवारणहेउं, अत्थं दूरे चयंतेण ॥७०॥
निस्संगो चेव सया, कसायसंलेहणं कुणइ साहू । संगो कसायहेऊ, अग्गिस्स व होंति कट्ठाणि ॥७१॥
सव्वत्थ होइ लहुओ, रुवं वेसासियं भवइ तस्स । गरुओ य संगसत्तो, संकिज्जइ चेव सव्वत्थ ॥७२॥
तम्हा सव्वे संगे, अणागए वट्टमाणएऽतीए । परिहरसु तुमं सुविहिय!, कयकारियअणुमईहिं सया ॥७३॥
इय चत्तसव्वसंगो, सीईभूओ पसंतचित्तो य । जीवंतो च्चिय पावइ, साहू निव्वाणसुहमऽणहं ॥७४॥
साहेंति जं महऽत्थं, आयरियाइं च जं महल्लेहिं । जं च महल्लाइं तओ, महव्वयाइं ति भण्णंति ॥७५॥
एसिं च रक्खणट्ठा, करेसु सइ रयणिभोयणनिवित्तिं । पत्तेयं भावेज्जसु, सम्मं तब्भावणाओ य ॥७६॥
तत्थ— "महाव्रतस्य भावना स्वरुपम्"
जुगमित्तनिमियनयणं, अखलियलक्खं पए पए [2]अदुयं । जायइ जयं चरंतस्स, पढमवयभावणा पढमा ॥७७॥
आराहिएसणस्स वि, अवलोयणपुव्वयं असणपाणे । जायइ जयं कुणंतस्स, पढमवयभावणा बीया ॥७८॥
सपमज्जसपडिलेहं, भंडुवगरणस्स गहणनिक्खेवं । जायइ जयं कुणंतस्स, पढमवयभावणा तइया ॥७९॥
असुहविसयं निरुंभिय, सम्मं सुहविसयमाऽऽगमविहीए । जायइ मणं कुणंतस्स, पढमवयभावणा तुरिया ॥८०॥
रुद्धपसरं अकज्जे, कज्जे वि हु सुयविहीए निउणवइं । निसिरंते पढमवयस्स, भावणा पंचमी होइ ॥८१॥
भणियक्कमविवरीयं, चिट्ठंतो पुण विहिंसए जीवे । पढमवयदढत्तकए, भावणपणगे जएज्ज तओ ॥८२॥
हासं विणा वयंतस्स, बीयवयभावणा भवे पढमा । अणुवीइभासिणो पुण, बीयव्वयभावणा बीया ॥८३॥

1. गढिय = आसक्त। 2. अदुयं = अद्रुतम्।

कोहाओ लोभाओ, भयाओ अस्सच्चसंभवो पायं । तो ताण चायओ चेव, बीयवयभावणा तिन्नि ॥८४॥
पहुमऽह पहुसंदिट्ठं, अणुजाणावेज्ज ओग्गहं विहिणा । इहरा भावअदत्तं ति, तइयवयभावणा पढमा ॥८५॥
अह दव्वाऽऽईचउहा-ऽणुन्नवणं कारवेज्ज सागरियं । तस्सीमाऽवगमकए, तइयव्वयभावणा बीया ॥८६॥
कयसीमं चिय विहिणा, सेवेज्जाऽवग्गहं सया इहरा । होज्ज अदत्तं एवं च, तइयवयभावणा तइया ॥८७॥
साहम्मियसामण्णं, अण्णं पाणं च तेहिं गुरुणा य । अणुजाणियं असंतस्स, तइयवयभावणा तुरिया ॥८८॥
मासाऽऽइकालमाणं, पंचकोसाऽऽइखेत्तरुवं च । गीयत्थसमंतुज्जय-विहारिसाहम्मियगुणाण ॥८९॥
ओग्गहमऽह तव्वसहिं, तदऽणुण्णापुव्वगं निसेवेज्जा इहरा होज्ज अदत्तं ति, तइयवयभावणा चरिमा ॥९०॥
सुसिणिद्धमऽइपमाणं, आहारं परिहरेज्ज बंभवई । एवं चिय संजायइ, चउत्थवयभावणा पढमा ॥९१॥
सिंगारदव्वजोगं, सरीरनहदन्तकेससंठप्पं । भूसाकए न कुज्जा, चउत्थवयभावणा बीया ॥९२॥
इत्थीगइंदियाइं, सरागचेट्ठाउ नो मणे कुज्जा । जोएज्जा वि न एयं, चउत्थवयभावणा तइया ॥९३॥
पसुपंडगइत्थीहिं, संसत्तं वसहिमऽऽसणं सयणं । परिहरमाणस्स भवे, चउत्थवयभावणा तुरिया ॥९४॥
इत्थीण केवलाणं, तव्विसयं वा कहं अकहमाणो । पुव्वरयं असरंते, चउत्थवयभावणा चरिमा ॥९५॥
अमणुन्नेयरसद्दाइ-विसयपणगे पओसगेहीओ । अकुणंतस्स उ जायइ, पंचमवयभावणापणगं ॥९६॥
इय पंचमहव्वयभावणाण, पणुवीसइं पि भावेसु । सुंदर! इच्छंतो अप्प-यम्मि परमं वयदढत्तं ॥९७॥
इहरा पडुपवणपणोल्लमाण-नववणलयासमाणमणो । तेसु अणवट्ठियप्पा, पाविहिसि न तप्फलं खवग! ॥९८॥
ता भो देवाणुपिया!, पंचसु वि महव्वएसु वि महव्वएसु होज्ज दढो । एएसु वंचिओ जो, स वंचिओ सयलठाणेसु॥९९॥

"महाव्रतानामरक्षणे दोषाः" —

जह तुंबस्स दढत्तं, विणा न अरया सकज्जकरणखमा । एवं महव्वएसु वि, अदढस्स असेसधम्मगुणा ॥८२००॥
जह तरुणो साहपसाह-पुप्फफलकारणं भवे मूलं । एयं धम्मगुणाण वि, मूलं सुमहव्वयदढत्तं ॥१॥
घुणखद्धमज्झसारो, नाऽलं खंभो जहा घरं धरिउं । एवं वएसु अदढो, पोढो वोढुं न धम्मधुरं ॥२॥
अदढा छिड्डजुया वि य, भंडं नावा जहा न वोढुमऽलं । एवं वएसु अदढो, अइयारजुओ य धम्मगुणे ॥३॥
अदढो छिड्डजुओ वि य, नाऽलं कुंभो जहा जलं धरिउं । एवं वएसु अदढो अइयारजुओ य धम्मगुणे ॥४॥
अन्नं च—
भमिया भमंति भमिहिंति, एत्थ वित्थिण्णभवसमुद्दम्मि । एयाणमऽणत्थित्ते अदढत्ते साऽइयारत्ते ॥५॥
अन्नं च तुमं सुंदर!, सम्मं संविग्गमाणसो होउं । पुव्वरिसिभासियाइं, परिभावेज्जसु इमाइं जहा ॥६॥
संसारो य अणंतो, भट्ठचरित्तस्स लिंगजीविस्स । पंचमहव्वयतुंगो, पागारो भेल्लिओ जेण ॥७॥
महव्वयअणुव्वयाइं, छड्डेउं जो तवं चरइ अन्नं । सो अन्नाणी मूढो, नावबुद्दो[1] मुणेयव्वो ॥८॥
सीलव्वयाइं जो बहुफलाइं, हंतूण सोक्खमऽहिलसइ । धीदुब्बलो तवस्सी, कोडीए कागणी किणइ ॥९॥
अन्नं च चउव्विहमिलिय-सयलसिरिसंघरंगमज्झम्मि । भीमभववाहिविहुरो, अन्नत्तो ताणमऽलभंतो ॥१०॥
एसो महाऽणुभावो, वेज्जाण व अम्ह सरणमऽल्लीणो । ता अणुकंपेयव्वो, इय बुद्धीए सुहगुरुहिं ॥११॥
एयाइं तुज्झ सुंदर!, निवेसियाइं अणुग्गहपरेहिं । ता होसु इमेसु दढो, होउं कुवियप्पविप्पजढो ॥१२॥
जह नाम सारगब्भो, खंभो भारं गिहस्स वोढुमऽलं । एवं वएसु सुदढो, पोढो वोढुं सुधम्मधुरं ॥१३॥
सव्वंऽगेसुं पि दढो, गोणो जह होइ भरमऽलं वोढुं । एवं वएसु सुदढो, पोढो वोढुं सुधम्मधुरं ॥१४॥
सुदिढंगी निच्छिड्डा, भंडं वोढुं जहा अलं नावा । एवं वएसु वि दढो, निरईयारो य धम्मगुणे ॥१५॥
कुंभो वि जह दढंगो, अखंडछिड्डो अलं जलं धरिउं । एवं वएसु वि दढो, निरईयारो य धम्मगुणे ॥१६॥
तिन्ना तरंति तरिहिंति, एत्थ वित्थिण्णभवसमुद्दम्मि । एयाणं सब्भावे, सुदढत्ते निरइयारत्ते ॥१७॥
धण्णाणमेयलाभो, धण्णाणं चिय इमेसु सुदढत्तं । धन्नाणं चिय एएसु, निरइयारत्तणं परमं ॥१८॥
पंचमहव्वयरयणाइं, ता तुमं पाविउं सुदुलहाइं । मा उज्झेज्जसु एओ-वजीवणं मा [2]करेज्जसु य ॥१९॥

1. (बुड्डो) B । 2. कुणेज्जसु पाठां० ।

इहरा तुमं पि उज्झिय-भोगवतीओ जहा तहा एत्थ । लद्धुं जहन्नपयविं, अजसमऽसोक्खं च पाविहिसि ॥२०॥
तो होसु दढचित्तो, पंचमहव्वयधुराधरणधवलो । पालेज्ज इमाइं सयं, अण्णेसिं पि य पयासेज्ज ॥२१॥
पत्तो उत्तमपयविं, कित्तिं च सया वि होहिसि सुहीओ । धणनामसेट्ठिसुण्हाउ, रक्खिया रोहिणीउ जहा ॥२२॥
तहाहि—

"उज्झिकादिदृष्टान्तः"

रायगिहे धणसेट्ठी, धणपालाऽऽई सुया उ चत्तारि । उज्झियभोगवतीरक्खि-या य तह रोहिणी वहुया ॥२३॥
वयपरिणामे चिंता, गिहं समप्पेमि तासि पारिच्छा । भोयणसयणनिमंतण-भुत्ते तब्बंधुपच्चक्खं ॥२४॥
पत्तेयं अप्पिणणं, पालेज्जह मग्गिया य देज्जाह । इय भणिउमाऽऽयरेणं, पंचण्हं सालिकणयाणं ॥२५॥
पढमाए उज्झिया ते, बीयाए छोल्लिया य तइयाए । बंधण करंडिरक्खण, चरिमाए रोविया विहिणा ॥२६॥
कालेणं बहुएणं, भोयणपुव्वं तहेव जायणया । पढमा सरणविलक्खा, तह बीया तइय अप्पिणणं ॥२७॥
चरिमाए कुंचिगाओ, खित्ताओ तुम्ह वयणपालणया । सा एवं चिय इहरा, सत्तिविणासा न सम्मं ति ॥२८॥
तब्बंधूणऽभिहाणं, तुज्झे कल्लाणसाहगा मे त्ति । किं जुत्तमेत्थ मज्झं, ते आहु तुमं मुणेसि त्ति ॥२९॥
तत्तो य कज्जउज्झण-कोट्ठगभंडारगिहसमप्पणया । जाहासंखमिमीणं, नियकज्जं साहुवाओ य ॥३०॥
जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइजणो तहा समणसंघो । जह वहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ॥३१॥
जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थअभिहाणा । पेसणगारित्तेणं, असंखदुक्खक्खणी जाया ॥३२॥
तह भव्वो जो कोई, संघसमक्खं गुरुहिं दिन्नाइं । पडिवज्जिउं समुज्झइ, महव्वयाइं महामोहा ॥३३॥
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कारभायणं होइ । परलोए उ दुहत्तो, नाणाजोणीसु संचरइ ॥३४॥
जह वा सा भोगवई, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा । पेसणविसेसकारि-त्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥३५॥
तह जो महव्वयाइं, उवभुंजइ जीविय त्ति पालेंतो । आहाराऽऽइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥३६॥
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाऽऽई लिंगि त्ति । विउसाण नाऽऽइपुज्जो, परलोगम्मि दुही चेव ॥३७॥
जह वा रक्खियवहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा । परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइं च संपत्ता ॥३८॥
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पंच । पालेइ निरइयारे, पमायलेसं पि वज्जिंतो ॥३९॥
सो अप्पहिएक्करई, इहलोगम्मि वि विऊहिं पणयपओ । एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खं पि पावेइ ॥४०॥
जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थनामा उ । वड्ढित्ता सालिकणे, पत्ता सव्वस्ससामित्तं ॥४१॥
तह जो भव्वो पाविय, वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं । अन्नेसिं वि भव्वाणं, देइ अणेगेसिं सुहहेउं ॥४२॥
सो इह संघपहाणो, जुगप्पहाणो त्ति लहइ संसद्दं । अप्पपरेसिं कल्लाण-कारओ गणहरपहु व्व ॥४३॥
तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाऽऽईणं । विउसनरसेवियकमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥४४॥
एयमऽणुसट्ठिदारे, सवित्थरत्थं मए समक्खायं । पंचमहव्वयरक्खा-नामं दसमं पडिद्दारं ॥४५॥
एत्तो कमाऽणुपत्तं, परमपवित्तत्तजणणसुनिमित्तं । चउसरणगमणनामे-गारसमऽक्खेमि पडिदारं ॥४६॥
अरहन्तसिद्धसाहू-जिणधम्मचउक्कमिममऽहो खवग! । सरणत्तेण पवज्जसु, कयवयरक्खाविहाणो वि ॥४७॥
तत्थ—

"चतुःशरणस्वीकारवर्णनम्"

निट्ठियनाणाऽऽवरणे, अप्पडिहयनाणदंसणपयारे । भीमभवभमणकारण-विद्धंसणपत्तअरुहन्ते ॥४८॥
सव्वुत्तमचारित्ते, सव्वुत्तमलक्खणंऽकियसरीरे । सव्वुत्तमगुणकलिए, सव्वुत्तमपुन्नपब्भारे ॥४९॥
सव्वजगज्जीवहिए, सव्वजगज्जीवपरमबंधुजणे । अरिहंते भगवंते, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥५०॥
सव्वंगनिक्कलंके, समत्थतेलोक्कनहयलमयंके । परिगलियपावपंके, दुहत्तजयजीवजणयंके ॥५१॥
परमगरुयाऽणुभावे, परमपयपसाहगे परमपुरिसे । परमप्पाणे परमे-सरे य तह परमकल्लाणे ॥५२॥
सब्भूयभावपरमत्थ-देसगे भूसगे य भुवणस्स । अरिहंते भगवंते, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥५३॥
भवियजणकुमुयचंदे, तइलोक्कपयासणेक्कदिणनाहे । संसारसरणरीणंऽगि-वग्गवीसामथामे य ॥५४॥
परमाऽइसयसमिद्धे, अणंतबलविरियसत्तसंजुत्ते । भीमभवजलहिमज्जंत-जंतुगणजाणवत्ते य ॥५५॥

हरिहरबंभपुरंदर-दुम्महयम्महमहाऽरिदप्पहरे । अरिहंते भगवंते, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥५६॥
तेलोक्कसिरीतिलए, मिच्छत्ततमोविणासदिवसयरे । तेलोक्करंगमज्झे, अतुल्लमल्ले महासत्ते ॥५७॥
तेलोक्कपणयपाए, समत्थतेलोक्कपसरियपयावे । पसरियपयावखंडिय-पयंडपासंडियपभावे ॥५८॥
पसरंतकित्तिकमलिणि-वित्थरसंघडसमत्थभुवणसरे । भुवणसररायहंसे, धम्मधुराधरणवरधवले ॥५९॥
सव्वाऽवत्थपसत्थे, अप्पडिहयसासणे अमियतेए । संपुण्णपुण्णपब्भार-लब्भदंसणविसेसे य ॥६०॥
सिरिमंते भगवंते, करुणावंते पगिट्ठजयवंते । सव्वे वि हु अरिहंते, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥६१॥
परिपालिय इह चरणं, काउं पावाऽऽसवाण संवरणं । मरिउं पंडियमरणं, निरसिय संसारपरिसरणं ॥६२॥
सिद्धे कयकिच्चत्ता, बुद्धे उण विमलकेवलगुणेण । मुक्के भयहेऊहिं, परिनिव्वुडए सुहसिरीए ॥६३॥
कयसयलदुक्खअंते, सन्नाणाऽऽइगुणेहिं य अणंते । विरियसिरीए अणंते, अणंतसुहरासिसंकंते ॥६४॥
सव्वोवलेवरहिए, अहेउणो सपरकम्मबंधस्स । अह भगवंते सिद्धे, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥६५॥
ववगयकम्माऽऽवरणे, नित्थरियसमत्थजम्मजरमरणे । तेलोक्कसिराऽऽभरणे, सव्वजगज्जीववरसरणे ॥६६॥
खाइयगुणप्पभूए, समत्थतेलोक्ककयपरमपूए । सासयसोक्खसरूवे, दूरुज्झियवन्नरसरूवे ॥६७॥
मंगलनिलए मंगल-निबंधणे परमनाणमयतणुणो । अह भगवंते सिद्धे, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥६८॥
लोयऽग्गसंनिविट्ठे, साहियदुस्सज्झसव्वपरमट्ठे । पत्तपगिट्ठपइट्ठे, एत्तो च्चिय निट्ठियट्ठे वि ॥६९॥
सद्दाऽऽईणमऽगम्मे, अमुत्तिमंते अणिंदियजनाणे । परमाऽऽइसयसमिद्धे, सिद्धे सरणं पवज्जाहि ॥७०॥
अच्छिज्जे धाराणं, अभिंदणिज्जे य सव्वअणियाणं । अपलावणिज्जरूवे, जलाणमऽग्गीण य अडज्झे ॥७१॥
पलयपबलाऽनिलाण वि, अहीरणिज्जे न वज्जदलणिज्जे । सुहुमे निरंजणे अक्ख-ए य अच्चिन्तमाहप्पे ॥७२॥
अच्चन्तपरमजोगीहिं, चेव जाणियजहट्ठियसरूवे । कयकिच्चे निच्चे वि य, अजे य अजरे अमरणे य ॥७३॥
हणिउमणो नियकम्मं, सम्मं आराहणाणिविट्ठो य । सुंदर! तुमं विसप्पंत-तिव्वसंवेगरसपुण्णो ॥७४॥
सिरिमंते भगवंते, अरुहंते सव्वहा विजयवंते । परमेसरे सरण्णे, सिद्धे सरणं पवज्जाहि ॥७५॥
सइ अहिगयजीवाऽजीव-पमुहपरमत्थवित्थरे सम्मं । समवगयपयइनिग्गुण-संसाराऽऽवाससब्भावे ॥७६॥
संवेगगरुयगीयत्थ-सुद्धकिरियापराण धीराणं । सारणवारणचोयण-पडिचोयणदायगाणं च ॥७७॥
सुगुरुण पायमूले, सम्मं पडिवन्नपुन्नसामण्णो । अह समणे निग्गंथे, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥७८॥
मोक्खम्मि बद्धलक्खे, संसारियसुहविरत्तचित्ते य । गुरुसंवेगा संसार-वाससव्वंगनिव्विन्ने ॥७९॥
एत्तो च्चिय चत्तकलत्त-पुत्तमित्ताऽऽइचित्तपडिबंधे । पडिबंधमेत्तपरिचत्त-सयलंगिहवासवासंगे ॥८०॥
सव्वजियअप्पभूए, निब्भरपसमरसथिमियसव्वंगे । अह समणे निग्गंथे, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥८१॥
इच्छामिच्छाऽऽईयं, पडिलेहपमज्जणापमुहमऽहवा । दसभेयचक्कवालय-सामायारिं पइ सुलग्गे ॥८२॥
छट्ठऽट्ठमदसमदुवालसऽद्ध-मासाऽऽइतवविसेसेसु । जहसत्तिमुज्जमंते, [1]पउमाऽऽतीहिं उवमिणिज्जे ॥८३॥
पंचसमिइप्पहाणे, पंचविहाऽऽयारधारए धीरे । सुंदर! पावपसमणे, समणे सरणं पवज्जाहि ॥८४॥
गुणरयणमहानिहिणो, समत्थसावज्जजोगपडिविरए । विहडियसिणेहनियडे, संजमभरवहणधुरधवले ॥८५॥
जियकोहे [2]हियमाणे, जियमाए विजियलोहजोहे य । जियरागदोसमोहे, जिइंदिए विजियनिद्दे य ॥८६॥
जियमच्छरे जियमए, जियकामे जियपरीसहाऽणीए । अह समणे भगवंते, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥८७॥
वासीचंदणकप्पे, तुल्ले संमाणणाऽवमाणेसु । सुहदुहसमाणचित्ते, समचित्ते सत्तुमित्तेसु ॥८८॥
सज्झायऽज्झयणपरे, परोवयारेक्ककरणदुल्ललिए । सुविसुज्झमाणभावे, सम्मं पिहियाऽऽसवदुवारे ॥८९॥
मणगुत्ते वइगुत्ते य, कायगुत्ते [3]पसत्थलेसे य । अह भगवंते समणे, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥९०॥
नवकोडीपरिसुद्धं, मियमऽपणीयं अरागदोसं च । कारणछक्काऽणुगयं, महुयरवित्तीपवित्तं च ॥९१॥
निरवज्जमेगवेलिय-मरसं विरसं च समणजणजोग्गं । भत्तं भुंजिउकामे, भोच्चा संजमगुणरए य ॥९२॥

1. पउमातीहिं = पद्मादिभिः । 2. हियमाणे = हृतमानान् । 3. पसन्तलेसे पाठां० ।

उग्गतवसा किसंऽगे, सुक्के लुक्खे य अपडिकम्मंऽगे । अहिगयदुवालसंऽगे, समणे सरणं पवज्जाहि ॥९३॥
संविग्गे गीयत्थे, धुवमुस्सप्पंतचरणकरणगुणे । संसारसरणकारण-पमायपयवज्जणुज्जुत्ते ॥९४॥
वोक्कंताऽणुत्तरदेव-तेओलेसेऽवहत्थियकिलेसे । सफलीकयचउरंऽगे, दूरसमुज्झियसयलसंगे ॥९५॥
धीमंते गुणवंते, सिरिमंते सीलवन्तभगवंते । सुंदर! सुहभावेणं, समणे सरणं पवज्जाहि ॥९६॥
सव्वाऽइसयनिहाणं, समत्थपरतित्थिसासणपहाणं । सुविचित्तसंविहाणं, निबंधणं निरुवमसुहाणं ॥९७॥
असमंजससुइदुक्खऽद्दियाण, आणंददुंदुंभिनिनायं । रागाऽऽइयज्झपडहं, मग्गं सग्गाऽपवग्गाणं ॥९८॥
भीमभयाऽगडनिवडिय-भुवणसमुद्धरणसज्जरज्जुं व । अह जिणधम्मं सम्मं, सुंदर! सरणं पवज्जाहि ॥९९॥
जोयमहामइमुणिजण-पणमियचलणेहिं तित्थनाहेहिं । झेयत्तेणुवइट्ठो, मुणीण तं मोहनिम्महणं ॥८३००॥
सुनिउणमऽणाइनिहणं, भूयहियं भूयभावणमऽणग्घं । अमियमऽजियं महत्थं, महाणुभावं महाविसयं ॥१॥
सुविचित्तजुत्तिजुत्तं, अप्पुणरुत्तं सुहाऽऽसयणिमित्तं । अनिउणजणदुन्नेयं, नयभंगपमाणगमगहणं ॥२॥
नीसेसकिलेसहरं, हरिणंकवलक्खगुणगणोवेयं । अह सुंदर! जिणधम्मं, सम्मं सरणं पवज्जाहि ॥३॥
सग्गाऽपवग्गमग्गाऽणु-लग्गसंविग्गसव्वभव्वाणं । अप्पडिहयप्पमेयं, परमपमाणं जमऽच्चत्थं ॥४॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च सयललोयगयं । जम्मजरमरणवेयाल-वारणे सिद्धवरमंतं ॥५॥
पयडियपयत्थगोयर-हेओवाएयसम्मपविभागं । तं सुंदर! जिणधम्मं, सम्मं सरणं पवज्जाहि ॥६॥
सयलसरियालुयासयल-जलहिजलमेलसमुदयाहिंतो । पइसुत्तमऽणंतगुणं, अत्थं अणहं परिवहंतं ॥७॥
मिच्छत्ततमंऽधाणं, निव्वाघायप्पयासवरदीवं । आसं दीणासासग, दीवं च भवोयहिगयाणं ॥८॥
चिंताऽइक्कन्तपयाणओ य, चिन्तामणीओ अब्भहियं । हे खवग! जिणपणीयं, धम्मं सरणं पवज्जाहि ॥९॥
जणगं व हियं जणणिं व, वच्छलं बंधवं व गुणजणगं । मित्तं व अदोहकरं, समत्थजयजीवरासिस्स ॥१०॥
सोयव्वाण पयरिसं, दुलहाणं परमदुल्लहं लोए । भावाऽमयं च परमं, देसगमऽसमं सिवपहस्स ॥११॥
नाहं अपत्तपावणगुणेण, पत्तस्स पालणेणं च । सुंदर! जिणेंदधम्मं, सम्मं सरणं पवज्जाहि ॥१२॥
वत्थुगयबोहसाहग-मंऽगाऽणंगप्पविट्ठसुयरूवं । विहिपडिसेहाऽणुगकिरिय-रूवं चारित्तरूवं च ॥१३॥
निव्विवरवेरिवारोव-रुद्धकायरनरो व्व तायारं । नावं व जलहिपडिओ, धम्मं सरणं पवज्जाहि ॥१४॥
अट्ठविहकम्मचयरित्ति-कारगं वारगं च कुगतीए । परिचिंतेउं सोउं पि, दुक्करं कायरजणाणं ॥१५॥
सुपसत्थमहात्थाणं, सव्वाण वि दव्वभावरूवाणं । साइसयविचित्ताणं, निबंधणं लद्धिरिद्धीणं ॥१६॥
असुरसुररायकिंनर-नरवरयिंदाण वंदणिज्जगुणं । सुंदर! जिणिंदधम्मं, सम्मं सरणं पवज्जाहि ॥१७॥
सब्भाववज्जियं पि हु, बाहिरकिरियाकलावरूवं पि । अक्खंडं कीरंतं, गेवेज्जगसुरसमिद्धिफलं ॥१८॥
तेणेव भवेणं पुण, उक्कोसाऽऽराहगाण सिवफलयं । सत्तऽट्ठभवंते उण, जहन्नआराहगाणं पि ॥१९॥
लोगुत्तमगुणमइयं, लोगुत्तमगुणहरेहिं निम्मवियं । लोगुत्तमसेवियमवि, फलं पि लोगुत्तमं देति (देंतं B) ॥२०॥
सिरिकेवलिपन्नत्तं, सिद्धंतनिबंधणं च भगवंतं । सम्मं रम्मं धम्मं पि, धीर! सरणं पवज्जाहि ॥२१॥
इय कयचउसरणगमो, खमग! महाकम्मसत्तुसंभूयं । भयमऽविगणयंतो तुम-मिच्छियमऽत्थं लहुं लहसु ॥२२॥
चउसरणगमणनामं, भणियं एक्कारसं पडिद्दारं । दुक्कडगरिहानामं, एत्तो कित्तेमि बारसमं ॥२३॥

"दुष्कृतगर्हाद्वारम्" —

अरिहंतप्पमुहाणं, चउण्हमिण्हिं च उवगओ सरणं । गरिहाहि दुक्कडं कडु-विवागनिग्गहकए धीर! ॥२४॥
तत्थ जमऽरिहंतेसुं, जं वा तच्चेइएसुं सिद्धेसुं । सूरीसु ओज्झाएसु, साहूसुं साहुणीसुं च ॥२५॥
एमाऽऽइसु अण्णेसु वि, सव्वेसु विसुद्धधम्मठाणेसु । वंदणपूयणसक्कार-करणसम्माणविसएसुं ॥२६॥
जं च तहा माईसु य, पिईसु य बंधवेसु मित्तेसु । उवगारीसुं कइया वि, कहवि मणवयणकाएहिं ॥२७॥
किंचि वि कयं अणुचियं, उचियं च न चेव जं व किंपि कयं । तं सम्मं सव्वं पि हु, तिविहं तिविहेण गरिहाहि ॥२८॥
अट्ठमयट्ठाणेसुं, अट्ठारसपावठाणगेसुं वा । जं कहवि किंपि कइया वि, वट्टियं तं पि गरिहाहि ॥२९॥
जं पि कयं कारियमऽणु-मयं च पावं परिग्गहमियरं वा । कोहा माणा मायाए, लोभओ तं पि गरिहाहि ॥३०॥

रागा वा दोसा वा, मोहा वा गयविवेयरयणेण । इहपरलोयविरुद्धं, जं पि कयं तं पि गरिहाहि ॥३१॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, मिच्छादिट्ठित्तमऽणुसरंतेणं । जिणभवणबिम्बसंघाऽऽइ-याण मणवयणकाएहिं ॥३२॥
जो किर कओ पओसो, अवन्नवाओ तहोवघायाऽऽई । तं तिविहं तिविहेणं, सुंदर! सव्वं पि गरिहाहि ॥३३॥
अच्चन्तपावमइणा, मोहमहागहगसिज्जमाणेणं । जिणबिम्बभंगगालण-फोडणकयविक्कया जे य ॥३४॥
लोभाऽऽलिंगियमणसा, कया य कारावियाय सपरेहिं । गरिहाहि ते वि सम्मं, स एस तुह गरिहणाकालो ॥३५॥
तह एत्थ भवे अन्नत्थ, वा वि मिच्छत्तवुड्ढिसंजणगं । सुहुमाण बायराण य, तसाण तह थावराणं च ॥३६॥
जीवाणं एगंतेण, चेव उवघायकारणमऽवंझं । उक्खलअरहट्टघरट्ट-मुसलहलकुलिससत्थाऽऽइ ॥३७॥
[1]धम्मऽग्गिट्ठियवावी-कूवतलायाऽऽइजागपमुहं च । जमऽहिगरणं पवत्तिय-मऽसेसमऽवि तं पि गरिहाहि ॥३८॥
सम्मत्तं पि हु लद्धूण, तव्विरुद्धं कयं जमिह किंचि । तं पि तुमं संविग्गो, सम्मं सव्वं पि गरिहाहि ॥३९॥
इह अन्नत्थ व जम्मे, जइणा सड्ढेण वा वि संतेण । जिणभवणबिम्बसंघाऽऽ-इएसु रागाऽऽइवसगेण ॥४०॥
जं सपरबुद्धिकप्पण-पुरस्सरं थेवमऽवि उदासत्तं । विहियं जा य अवण्णा, कया विघाओ पओसो वा ॥४१॥
खवग! मणवयणकाएहिं, करणकारावणाऽणुमोयणओ । सम्मं तिविहंतिविहेण, तं पि सव्वं पि पडिकमसु ॥४२॥
संपत्तसावगत्तेण, जं पि अणुव्वयगुणव्वयाऽऽईसु । अइयारपयं किंपि हु, पकप्पियं तं पि पडिहणसु ॥४३॥
इंगालकम्ममऽह जं, वणकम्मं जं च सागडीकम्मं । जं वा भाडीकम्मं, फोडीकम्मं च जं किंचि ॥४४॥
जं वा दंतवाणिज्जं, रसवाणिज्जं च लक्खवाणिज्जं । विसवाणिज्जं जं वा, केसवाणिज्जं च जं किंचि ॥४५॥
जंतप्पीलणनेलंछणाण, कम्मं दवग्गिदाणं जं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च जं किंपि ॥४६॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, कयं तहा करियं अणुमयं च । तं पि दुगंछसु सम्मं, तिविहं तिविहेण सव्वं पि ॥४७॥
जं किंचि कयं पावं, पमायओ दप्पओ उवेच्चाए । सहसाऽणाभोगेण व, तं पि हु तिविहेण गरिहाहि ॥४८॥
परपरिभवकरणाओ, परवसणसुहित्तणाउ जं अहवा । जं परहसणाओ वा, जं परविस्सासघाइत्ता ॥४९॥
जं परदक्खिन्नाओ, सुतिव्वविसयाऽभिलसओ जं च । जं वा कीलाकेली-कुऊहलाऽऽसत्तचित्तत्ता ॥५०॥
रोद्दट्टेहिं जं वा, अत्थाओ अणत्थदंडओ अहवा । पावं समज्जियं किंपि, तं पि सव्वं पि गरिहाहि ॥५१॥
तह धम्मसामायारी-भंगो जो जो य नियमवयभंगो । मोहंऽधेणं विहिओ, तं पि पयत्तेण निंदाहि ॥५२॥
देवे अदेवबुद्धी, जमऽदेवे चेव देवबुद्धी य । सुगुरुम्मि अगुरुबुद्धी, अगुरुम्मि वि.जं च गुरुबुद्धी ॥५३॥
तत्ते अतत्तबुद्धी, जं च अतत्ते वि तत्तबुद्धी उ । धम्मे अधम्मबुद्धी, जमऽधम्मे धम्मबुद्धी उ ॥५४॥
एत्थ परत्थ व जम्मे, कया तहा कारिया अणुमया य । मिच्छत्ततमंऽधेणं, तं च विसेसेण निंदाहि ॥५५॥
सत्तेसु जं न मेत्ती, कया पमोओ न जं गुणड्ढेसु । जं च न कयं कया वि हु, किलिस्समाणेसु कारुण्णं ॥५६॥
तह पावपसत्तेसुं, सत्तेसुं नो कया उवेहा जं । जं च न सुस्सूसा तह, कया पसत्थेसु सत्थेसु ॥५७॥
जं च जिणपहुपणीए, चरित्तधम्मे कओ न अणुरागो । वेयावच्चं गुरुदेव-गोयरं जं च नो विहियं ॥५८॥
विहियं च हीलणं ताण, जं च मिच्छत्तमोहमूढेण । तं पि य सव्वं सुंदर! दूरं निंदाहि गरिहाहि ॥५९॥
जिणवयणमऽमयभूयं, पत्थमऽतुच्छं च भव्वसत्ताणं । निसुयं पि जं न सम्मं, नो सद्दहियं च सोऊणं ॥६०॥
संतम्मि बले संतम्मि, वीरिए तह परक्कमे संते । संते य पुरिसयारे, सोऊणं सद्दहेउं वा ॥६१॥
अंगीकयं न सम्मं, अंगीकयमऽवि न पालियं जं च । तप्पालणापरेसु य, जं च पओसो समुव्वूढो ॥६२॥
भंगो य पओसाओ, विहिओ तक्करणगोयरो जं च । तं तं गरिहाहि तुमं, स एस तुह गरिहणाकालो ॥६३॥
तह नाणे जो को वि हु, अइयारो दंसणे य चरणे वा । विहिओ तवे य विरिए, तं पि हु तिविहेण गरिहाहि ॥६४॥
नाणे तत्थ अकाले, विणएण विणा य अबहुमाणेण । अविहियजहोवहाणं, सुत्तत्थे गिन्हमाणेणं ॥६५॥
तद्दायगनिण्हवणा, सुयाऽऽइअसुयाऽऽइजंपणाउ तहा । सुत्तस्स व अत्थस्स व, उभयस्स व अन्नहाकरणा ॥६६॥
वोलीणाऽणागयवट्टमाण-कालेसु जो कओ कह वि । अइयारो तमऽसेसं, तिविहं तिविहेण गरिहाहि ॥६७॥

1. धम्मग्गिट्ठिय = कर्षणार्थं क्षेत्रे जीर्णतृणानि दह्यन्ते सा धर्माग्निष्ठिका उच्यते ।

अह दंसणम्मि जीवाऽऽइ-गोयरं देससव्वगं संकं । अवराऽवरदंसणगाह-गोयरं दुविहमऽवि कंखं ॥६८॥
तह दाणसीलतवभावणाऽऽइ-फलगोयरं च वितिगिच्छं । जल्लमललित्तगत्ते, मुणिणो य पडुच्च वि दुगुच्छं ॥६९॥
दिट्ठीमोहं च कुणंतएण, अकुणंतएण धम्मीणं । उववूहथिरीकरणे, वच्छल्लपभावणाओ य ॥७०॥
कालम्मि अईयम्मि, पडुपण्णेऽणागए य जो विहिओ । अइयारो तमऽसेसं, तिविहं तिविहेण गरिहाहि ॥७१॥
तह चरणपहाणासुं, पंचसु समिईसु तीसु गुत्तीसु । पढमाए तत्थ जो अणु-वउत्तगमणं कुणंतेणं ॥७२॥
तह वयणमऽणुवउत्तं, जो भासंतेण बीयसमिईए । तइयाए अणुवउत्तं, भत्तग्गहणं कुणंतेण ॥७३॥
उवगरणगहणनिक्खिवण-मऽणुवउत्तं चउत्थसमितीए । चरिमाए चयणीय-च्चायमऽजयणं कुणंतेणं ॥७४॥
तह पढमगुत्तिविसए, माणसमऽसमंजसं धरंतेण । बीयाए कज्जवज्जं, कज्जे वा जयणवज्जं पि ॥७५॥
वयणं भासंतेणं, एवं काएण तइयगुत्तीए । चेट्ठंतेण अकज्जे, जयणावज्जं च कज्जे वा ॥७६॥
जो को वि हु अइयारो, विहिओ कालत्तए वि चरणम्मि । तं तिविहं तिविहेणं, सम्मं सव्वं पि गरिहाहि ॥७७॥
रागद्दोसकसायाऽऽ-इएसु पसरेण कलुसियं जं च । चारित्तमहारयणं, तं पि विसेसेण निंदाहि ॥७८॥
एत्तो दुवालसविहे, तवम्मि कइया वि कहवि जो विहिओ । सव्वंपि तंपि सम्मं, अइयारं धीर! गरिहाहि ॥७९॥
तह नाणाऽऽइगुणेसुं, बलविरियपरक्कमाण भावे वि । न परक्कमियं जं तं, विरियऽइयारं पि गरिहाहि ॥८०॥
जो दसविहजइधम्मे, जो वा किर चरणकरणगुणविसए । तिविहंतिविहेण तयं पि, धीर! गरिहाहि अइयारं ॥८१॥
जे पाणवहाऽऽईणं, मूलगुणाणं पि के वि अइयारा । सुहुमा व बायरा वा, सम्मं गरिहाहि ते सव्वे ॥८२॥
पिंडविसुद्धाऽऽईणं, अइयारा जे य उत्तरगुणाणं । सुहुमा व बायरा वा, ते वि हु गरिहाहि भावेणं ॥८३॥
मिच्छत्तुच्छाइयसुद्ध-बुद्धिणा धम्मिए जणे जं च । पावमऽवन्नारूवं, रइयं गरिहाहि तं सव्वं ॥८४॥
आहारभयपरिग्गह-मेहुणसन्नानिसन्नचित्तेणं । पावं जं पि पवत्तिय-मेत्ताहे तं पि निंदाहि ॥८५॥
इय दुक्कडगरिहं कारिऊण, खवगं गुरु जहाजोगं । दुक्कडगरिहाकज्जं, खामणमऽवि इय करावेइ ॥८६॥
चउगइगएण हे खमग! पाणिणो ठावियां तुमे दुक्खे । जे के वि ते खमावेसु, एस तुह खामणाकालो ॥८७॥
तथाहि—
नेरइयत्ते जं नारयाण, नरयम्मि कम्मवसगाणं । भवधारणिज्जउत्तर-वेउव्वियरुवदेहेहिं ॥८८॥
विउलुज्जलकक्कसदुस्सहाउ, वियणाउ निम्मियाउ दढं । खामेसु तं समग्गं, स एस तुह खामणाकालो ॥८९॥
तह वन्नगंधरसफास-भेयभिन्नाण पुढविपभिईण । एगिंदियजीवाणं, तिरियत्ते संसरंतेण ॥९०॥
एगिंदियत्तपत्तेण, चेव अन्नोन्नसंगसत्थाओ । जा का वि कहिं पि कया, विराहणा तं पि खामेसु ॥९१॥
बेइंदियाऽऽइपंचें-दियाऽवसाणाण जा वि जीवाणं । एगिंदियत्तणे च्चिय, विराहणा तं पि खामेसु ॥९२॥
तत्थ पुढवित्तणाओ, विराहणा किर बिइंदियाऽऽइणं । उवरिम्मि सिलालेट्ठुग-[1]भिउडीपडणाऽऽइदारेण ॥९३॥
आउक्कायत्तणओ, तब्बाहा तप्पलावणा अहवा । हिमकरगवरिसधारा-जलच्छडच्छोडणाऽऽईहिं ॥९४॥
विज्जुविणिवायजलियग्गि-पडणवणदवपलीवणाऽऽईसु । तेउक्कायत्ताओ, बिइंदियाऽऽईण विद्दवणं ॥९५॥
वाउक्कायत्तणओ वि, होइ तेसिं विराहणा नूणं । सोसणछणणुप्पाडण-भंजणपरिमोडणाऽऽईहिं ॥९६॥
अहवा वणस्सइत्ता, तरुसाहानिवडणादुवरि तेसिं । पयइविरुद्धविसरुव-वणस्सईभक्खणाओ य ॥९७॥
बेइंदियाऽऽइभावं, गएण एगिंदियाऽऽइजीवाणं । विहिया विराहणा जा, तं पि हु तिविहेण खामेसु ॥९८॥
तब्भावणा फुड च्चिय, अलसाऽऽइदद्दुराऽवसाणा जं । संवड्ढित्ता पुढविं, पढमं बोंदिं पि गिण्हंति ॥९९॥
आउक्काउप्पण्णा, अणवरउप्फिडणफंदणाऽऽईहिं । परिचमढणपियणाऽऽइ, कुणमाणा तं विराहेंति ॥८४००॥
खारकडुतिक्खकक्कस-रसफासबिइंदियाऽऽइदेहाओ । संभवइ तेउवाउ-क्कायाण वि किर विराहणया ॥१॥
वणसइकायंतोबहि-जायंतेहिं बिइंदियाऽऽईहिं । वणसतिकायस्स वि सा, किज्जइ तक्खामणा तेण ॥२॥
बेइंदियाऽऽइभावं, गएण बेइंदियाऽऽइणो चेव । सपरोभयजातीया, विराहिया के वि जे जीवा ॥३॥

1. भिउडी = भूभङ्गः ।

एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेणं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥४॥
जलचरथलचरखहचर-जाइत्तमुवागएण जा का वि । सपरोभयजाईणं, जलथलखयराण चेव मिहो ॥५॥
आहारभयाऽऽलयऽवच्च-रक्खणाऽऽइकए नराणं च । विहिया विराहणा जा, तं पि य तिविहेण खामेसु ॥६॥
इय तिरियत्ते तिरिनर-जीवाण विराहणं खमावेत्ता । खामेसु पुण नरत्ते, तिरिनरसुरगोयरं पि तयं ॥७॥
तत्थ नरत्ते सुहुमा, इयरा वा जे विराहिया जीवा । खामेसु ते वि सव्वे, स एस तुह खामणाकालो ॥८॥
दंतालहलक्खडणेसु, कूपवावीतलायखणणेसु । घरहट्टाऽऽरंभाऽऽईसु, विराहिया पुढविजीवा जं ॥९॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेणं च तं पि गरिहेसु । तिविहं तिविहेणं, पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥१०॥
करचरणमुहक्खालण-अंगोहलिण्हाणसोयपाणेसु । जलकीलणाऽऽइएसु य, विराहिया आउजीवा जं ॥११॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं व तं पि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥१२॥
सेयणविसीयणाऽऽहार-पागडहणंऽकणप्पईवेसु । सेसतदाऽऽरंभेसु य, विराहिया तेउजीवा जे ॥१३॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं व ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि य, स एस तुह खामणाकालो ॥१४॥
तालोट्टवियणगोफण-निस्ससणुस्सासधवणफुक्कासु । संखाऽऽइवायणेसु य, विराहिया वाउजीवा जे ॥१५॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं व ते वि खामेहि । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥१६॥
तच्छणछेयणमोडण-तोडणउक्खणणभक्खणाऽऽईहिं । खेत्तखलाऽऽरामाईसु, विराहिया जे वणस्सइणो ॥१७॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि य, स एस तुह खामणाकालो ॥१८॥
गंडोलयअलसजलूय-किमियसंखाणअसंखसंखा य । सिप्पिकवड्डाऽऽईया, बिइंदिया जे वि कहवि हया ॥१९॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥२०॥
मंकुणमंकोडगकुंथु-कीडिया कत्तरा य घेइल्ला । उद्देहियजूयाऽऽई, तिइंदिया जे वि कहवि हया ॥२१॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥२२॥
कंडरतिड्डपयंगा, दंसा मसगा य मच्छिया भमरा । विच्चुयपमुहा उ विरा-हिया उ चउरिंदिया जे य ॥२३॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥२४॥
अहिनउलसरडगोहा, कुड्डगिरोलगतदंऽडगाऽऽईया । मूसगकागसियाला,सुणगा मज्जारपमुहा य ॥२५॥
हासेण पओसेण च, अत्थाओ अणत्थओ य कीलणओ । आभोगअणाभोगा, वहिया पंचेंदिया जे य ॥२६॥
एत्थ भवे अन्नत्थ य, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥२७॥

अहवा—,

मंडुक्कमच्छकच्छभ-मगराऽऽईया य जलचरा जे य । थलचारिणो य हरिहरिण-रोझसूयरससाऽऽईया ॥२८॥
खेचरा य हंससारस-पारावयकुंचतित्तिराऽऽईया । संकप्पाऽऽरंभेहिं, विराहिया विविहजीवा जे ॥२९॥
जे वा संघट्टियअभिहया य, परितावियाय तासियया । ठाणाउ ठाणंतर-मऽहवा संकामिया जे य ॥३०॥
जे वा किलामिया दूमिया य, संघाइया य अन्नोन्नं । इय विविहदुहे ठविया, पाणे छड्डाविया जाव ॥३१॥
एत्थ भवे अन्नत्थ य, सयं परेहिं व ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि य, स एस तुह खामणाकालो ॥३२॥
जे वि मणुयत्तणे च्चिय, वट्टंतेण मणुया तए कहवि । रायाऽवत्थाऽऽइगएण, पीडिया ते वि खामेसु ॥३३॥
जे तत्थ दुट्ठचित्तेण, चिंतिया जे य दुट्ठवायाए । भणिया तह जे तणुणा, पलोइया दुट्ठदिट्ठीए ॥३४॥
नायं पि हु अन्नायं, नायमऽनायं पि ठावमाणेण । कलुसत्तणओ दिव्वे, दहाविया सोहिया जे य ॥३५॥
सच्चमऽलियं व दोसं, आरोवित्ता गहाविया जे य । खोडगअड्डिल्लासुं, गोत्तिसुं व खिवाविया जे य ॥३६॥
बंधाविया य निगडाविया य, ताडाविया व तह जे य । कुट्टाविया य सेहा-विया य विविहप्पयारेहिं ॥३७॥
दंडाविया य मुंडाविया य, छिंदावियाइं तह जाण । जाणुकरचरणनासोट्ठ-कन्नपमुहंऽगुवंगाइं ॥३८॥
गहिऊण य सत्थाइं, तच्छिय उक्कत्तिऊण वा देहं । पच्छा वि य सव्वंगं, खारेहि दहाविया जे य ॥३९॥
पीलाविया य जंतेहिं, जे य पउलाविया य अग्गीए । निहणाविया य गत्तासु, जे उ उल्लंबिया रुक्खे ॥४०॥

[1]गालियवसणा उक्खणिय-चक्खुणो जे विलुत्तदसणा य । विहिया तह तिक्खाए, सूलाए रोविया जे य ॥४१॥
आहेडगेसु अहवा, रणंऽगणेसुं च तिरियमणुया जे । छिन्ना भिन्ना य [2]विलुं-पिया य घुम्माविया जे य ॥४२॥
पहरंतअपहरंता, जे वि य मुक्काऽऽउहा पलायंता । अइतिव्वरागदोसा, ववगयजीवा कया जे य ॥४३॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥४४॥
पुरिसत्ते इत्थित्ते, जं परदाराऽऽइगोयरमऽणज्जं । रागंऽथेणं पावं, समज्जियं तं पि निंदाहि ॥४५॥
जं च कयाइ कत्थई, एत्थ भमंतेण भवकडिल्लम्मि । विहवाऽऽइपंसुलित्ते, पावसमुब्भुयगब्भाणं ॥४६॥
तिण्हुण्हदव्वभक्खण-कट्ठतुवरसुतिक्खखारपाणेहिं । तह पोट्टमलणखीलग-पक्खेयाऽऽइपओगेहिं ॥४७॥
अवराणमऽप्पणो वा, पगिट्ठरागाऽऽइगाढमूढेण । गालणसाडणपाडण-विणासणाऽऽइ कयं पावं ॥४८॥
पच्चागयसंवेगो, तिविहं तिविहेण सव्वहा सव्वं । गरिहाहि खवग! वंछिय-निव्विग्घाऽऽराहणकएण ॥४९॥
जं च जुवइत्तणम्मि, सवक्कियेहाऽऽइणा कयं पावं । तग्गब्भथंभणाऽऽइय-मऽहवा पइघायणाऽऽईयं ॥५०॥
जं च वसियरणकारण-कयकम्मणविहडणाऽऽइ णो विहियं । विहियं जीवंतमय-त्तणं तुमं तं पि निंदाहि ॥५१॥
जं पि किर पंसुलित्ते, विहियं जीवंतडिंभछड्डणयं । वेसत्ते पुण परबा-लियाण हरणं अदत्ताणं ॥५२॥
जं च मणुयत्तणे च्चिय, रागद्दोसाऽभिभूयचित्तेणं । सुपउत्तमंततंत-प्पओगओ निबिडपीडकरं ॥५३॥
थंभणथोभुच्चाडण-विदेसीकरणवसियरणमाऽऽई । जेसिं कहंपि विहियं, जीवाणं मोहमूढेणं ॥५४॥
एत्थ भवे अण्णत्थ य, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥५५॥
तह जे भूयाऽऽईया, सुरा वि मंताऽऽदिसत्तिजोगेण । कत्थइ कयाइ कहवि हु, आगरिसित्ता बला चेव ॥५६॥
कारावणेण आणाऽऽई, पीडिया अहव पत्तमोइन्ना । जे के वि किलीया ता-डिया व मोयाविया पत्तं ॥५७॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, सयं परेहिं च ते वि खामेसु । तिविहं तिविहेणं पि हु, स एस तुह खामणाकालो ॥५८॥
इय तिरियमणुयदेवे, मणुयत्तविराहिए खमावेत्ता । खामेसु खवग! संपइ, देवत्तविराहिए सम्मं ॥५९॥
भवणवइवाणमंतर-जोइसवेमाणियत्तपत्तेणं । नेरइयतिरियमणुया, दूहविया जे य देवा य ॥६०॥
मज्झत्थमणो होउं, तिविहं तिविहेण भावओ खवग! । खामेसु संपयं ते, स एस तुह खामणाकालो ॥६१॥
तत्थ—
परमाहम्मियभावं, गएण दुक्खाइं बहुपयारेहिं । नेरइयाणं रइयाइं, जाइं ताइं पि खामेसु ॥६२॥
उवभोगपरीभोगाऽऽइ-कारणपुढविकायपभिईणं । तन्निस्सियाण बेइं-दियाऽऽइजीवाण तह जं च ॥६३॥
देवत्तणम्मि विहियं, विराहणं रागदोसमोहेहिं । खामेसु तं पि सम्मं, स एस तुह खामणाकालो ॥६४॥
जं च किर माणुसाणं पि, वइरनिज्जायणाऽऽइकज्जेण । अवहरणं बंधवहछेय-भेयधणहरणमरणाऽऽई ॥६५॥
देवत्तणे च्चिय कयं, तिक्खं दुक्खं कसायकलुसेणं । खामेसु तं पि सम्मं, स एस तुह खामणाकालो ॥६६॥
जं च तियसत्तणे च्चिय, महिड्ढियत्तेण इयरदेवाणं । आएसदाणवाहण-ताडणपरिभवकरणपमुहं ॥६७॥
विहियं महंतमऽसुहं, चित्ताऽचलचुन्नणेक्कवज्जसमं । खामेसु तं पि सम्मं, स एस तुह खामणाकालो ॥६८॥
इय नारयतिरियनराऽमरंऽगि-कयखामणो वि पत्तेयं । पंचमहव्वयविसयं, अइयारं इण्हि परिहरिउं ॥६९॥
सव्वजगज्जीवेसुं, सुहुमेसु य बायरेसु जं दुक्खं । इह परभवे य मणयं पि, कप्पियं तं पि निंदाहि ॥७०॥
संजणियपाणिपीडं, पओसहासाऽऽइणा अलियवयणं । अन्नाणंऽथेणं जं पि, जंपियं तं पि निंदाहि ॥७१॥
परसंतमऽदत्तं कहवि, किंपि लोभाऽऽइगहियमऽवलवियं । जं तं पि पावपंसुं, पसरन्तं भद्द! रुंभाहि ॥७२॥
नरतिरियाऽमरगोयर-मणवायाकायमेहुणसमुत्थं । जं पि य पावं तं पि हु, तिविहं तिविहेण निंदाहि ॥७३॥
सच्चित्ताऽच्चित्ताऽऽईसु, दव्वेसु परिग्गहं कुणंतेणं । जं पावं खवग! कयं, तं णिंदसु तिविहंतिविहेण ॥७४॥
रसगिद्धीए कारणवसेण, अन्नाणओ य किंपि कहिं । जं रत्तीए भुत्तं, तं पि हु सव्वं पि निंदाहि ॥७५॥
वोलीणाऽणागयवट्टमाण-कालेसु जाइं वइराइं । जीवेहि सह कयाइं, ताणि वि निंदाहि सव्वाणि ॥७६॥

1. गालितवृषणाः । 2. विलुंगिया पाठां० ।

जे य मणोवइकाया, असुहा उ सुहाऽसुहेसु वत्थूसु । वावारिया उ तीसु वि, कालेसुं ते वि निंदाहि ॥७७॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च जं च सक्कं पि । न कयं किच्चमऽकिच्चं पि, विहियमऽह तं पि गरिहाहि॥७८॥
लोयम्मि कुतित्थपवत्तणाउ, मिच्छत्तसत्थदिसणाउ । मग्गविणिगूहणाओ, उम्मग्गपरूवणाओ य ॥७९॥
कम्मप्पबंधबंधण-निबंधणं अप्पणो परेसिं च । जाओ सि खवग! जं तं, तिविहं तिविहेण गरिहाहि ॥८०॥
पावाऽऽरंभपसत्ताइं, जाइं एत्थं अणाइनिहणम्मि । पइजम्मं कम्मवसा, भवचक्के चंकमंतेणं ॥८१॥
गहियाणि य मुक्काणि य, हे खमग! सरीरगाणि विविहाणि । सुसिणिद्धकुडुंबाणि य, ताई सव्वाणि वोसिरसु॥८२॥
लोहवसट्टेण समज्जिऊण, जो पावठाणपडिबद्धो । विहिओ अत्थो तं पि हु, सम्मं सव्वं पि वोसिरसु ॥८३॥
वोलीणाऽणागयवट्टमाण-काले पवत्तिया जे य । पावाऽऽरंभा ते वि हु, सम्मं सव्वे वि वोसिरसु ॥८४॥
वितहं परूवियं जं, जिणवयणं वितहमेव सद्दहियं । अणुमण्णियं य वितहं, तं तं सव्वं पि गरिहाहि ॥८५॥
खेत्तऽद्धाऽऽइदोसा, जइवि न सम्मं अणुट्ठिउं तरियं । जिणवयणं तह वि हु जं, पडिबंधो असदऽणुट्ठाणे ॥८६॥
विहिओ मणोरहा वि हु, सम्माऽणुट्ठाणगोयरा न कया । तं सविसेसं सुंदर!, निंदाहि पुणो पुणो सम्मं ॥८७॥
किं बहुणा भणिएणं, समतणमणिलेट्ठुकंचणो होउं । समसत्तुमित्तचित्तो य, गरुयसंवेगसारो य ॥८८॥
सच्चित्तमऽचित्तं मीसं-गं च दव्वं पडुच्च जं पावं । विहियं तं पि हु गरिहाहि, तिविहंतिविहेण खवग! तुमं॥८९॥
नगनगराऽऽगरगामाऽऽ-रामविमाणाऽऽइभवणखलगाऽऽइ । आसज्ज जं पि किंचि वि, उड्ढाऽहोतिरियलोएसु॥९०॥
वोलीणाऽणागयवट्टमाण-सीउण्हवासकालेसु । जं पि य कहं पि राओ, दियाओ दीहऽप्पठिइयं वा ॥९१॥
ओदइयाऽऽइयभावट्ठिएण, गुरुरागदोसमोहेहिं । सुवणे जागरणे वा, तिव्वाऽऽइभेयभिन्नं च ॥९२॥
पावाऽणुबंधिपावं, सुहुमं वा बायरं व मणसा वा । वायाए काएण व, कयं व कारियमऽणुमयं वा ॥९३॥
एत्थ व जम्मे जम्मन्तरे व, सव्वन्नुवयणओ निउणं । नाऊण दुक्कडं गरह-णीयमिणमुज्झणीयं च ॥९४॥
अरहन्तसिद्धगुरुसंघ-सक्खियं दुक्खसंखयनिमित्तं । निंदसु गरिहसु पडिकमसु, सव्वहा सव्वमवि सम्मं ॥९५॥
इय खवग! भावसारं, सारऽगं सयलपावसुद्धीए । आराहणाकयमणो, मणे विसप्पंतसंवेगो ॥९६॥
मिच्छा मि दुक्कडं भण, पुणो वि मिच्छा मि दुक्कडं चेव । मिच्छा मि दुक्कडं ती, तदऽपुणकरणं च पडिवज्ज॥९७॥
दुक्कडगरिहानामं, बारसमं वन्नियं पडिद्दारं । सुकयाऽणुमोयणादार-मिण्हि साहेमि तेरसमं ॥९८॥

"सुकृत-अनुमोदनाद्वारम्" —

भावाऽऽरोग्गणिमित्तं, खवग! महारोगवग्गविहुरंऽगो । सत्थऽत्थकुसलवेज्जो-वइट्ठकिरियाकलावं व ॥९९॥
सुहधम्मसमाऽऽसेवण-भावियभावत्तणं बहुभवेसु । अणुमोएज्जसु सम्मं, सव्वेसिं जिणवरिंदाणं ॥८५००॥
तह तित्थयरभवाओ, आरेणं ऊसरित्तु तइयभवे । तित्थयरत्तनिबंधण-वीसट्ठाणाऽणुसेवित्तं ॥१॥
सुरलोगभवाउ च्चिय, सरिसाऽऽगयमइसुओहिरूवेणं । निम्मलनाणतिगेणं, सहियं गब्भाऽवयारित्तं ॥२॥
सहसा निरंतरोवित-सयलसुरपूरियंऽबरत्तणओ । नियकल्लाणदिणेसुं, दावियलोगत्तिगेगत्तं ॥३॥
सव्वजगजीववच्छल-तित्थपवत्तणपरायणत्तं च । सव्वगुणपयरिसत्तं, सव्वुत्तमपुण्णरासित्तं ॥४॥
सव्वाऽइसयनिहित्तं, तह ववगयरागदोसमोहत्तं । लोयाऽलोयपगासग-केवलसिरिसंगयत्तं च ॥५॥
अमरविणिम्मियलट्ठऽट्ठ-पयडपहपाडिहेरसोहित्तं । सुरविरइयचामीयर-पउमोवरिपयनिवेसित्तं ॥६॥
अगिलाणीएऽणुवजीवणेण, भव्वाण धम्मदेसित्तं । अणुवकयपराऽणुग्गह-संपायणलंपडत्तं च ॥७॥
समकालोदयमाऽऽगच्छमाण-निस्सेसपुन्नपयडित्तं । तेलोक्कचक्ककीरंत-पायपउमोवसेवित्तं ॥८॥
अप्पडिहयपसरफुरंतनाण-दंसणगुणाण धारित्तं । अहक्खायचरणलक्खण-सिरीसमिद्धासियत्तं च ॥९॥
अप्पडिहयप्पयावं, विहरित्तु अणुत्तराए चरियाए । जम्मजरमरणवज्जिय-सासयसुहपयगमित्तं च ॥१०॥
सव्वेसिं सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण जिणवरिंदाणं । तिविहंतिविहेण सया, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ॥११॥
एवं सिद्धाणं पि हु, पहीणपुणरुत्तभवनिवासित्तं । ववगयनाणाऽऽवरणाऽऽइ-सयलकम्मोवलेवत्तं ॥१२॥
तह राहुगहपहापडल-विगमओ सूरससहराणं व । अणुमोएज्जसु सम्मं, जहट्ठियप्पाऽवभासित्तं ॥१३॥
अमरत्तं अजरत्तं, अजम्मणत्तं अमुत्तिमत्तं वा । निरुजत्तमऽसामित्तं, सिद्धिपुरीए णिवासित्तं ॥१४॥

अपरायत्तेगंतिय-अच्चंतियऽणंतसुहसमिद्धत्तं । वितिमिरअणंतकेवल-नाणद्दंसणसरूवत्तं ।।१५।।
समकालसंयललोयाऽ-लोयगसब्भूयभावदरिसित्तं । एत्तो च्चिय अच्चंतिय-अणंतवीरियपरिगयत्तं ।।१६।।
सद्दाऽऽइअगम्मत्तं, अच्छेज्जत्तं अभिंदणीयत्तं । निच्चं कयकिच्चत्तं, अणिंदियत्तं अणुवमत्तं ।।१७।।
सव्वाऽसुहवियलत्तं, अणवज्जत्तं निरंजणत्तं च । निद्दंदत्तमऽकिरियत्त-मऽच्चुयत्तं सुथिमियत्तं ।।१८।।
सव्वाऽवेक्खारहियत्तणं च, खाइगसमत्थगुणवत्तं । ववगयपरतंतत्तं, तिलोयचूडामणित्तं च ।।१९।।
सव्वेसिं सिद्धाणं, समत्थतेलोक्कवंदणिज्जाणं । तिविहंतिविहेण सया, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ।।२०।।
तह पंचपयारस्स वि, सम्मं सुविहियजणाऽणुचिन्नस्स । आयारस्स भगवओ, पहुपायपसायपत्तस्स ।।२१।।
अगिलाणीएऽणुवजीवणेण, परिपालगत्तणं सम्मं । सम्मं परूवगत्तं, सव्वेसिं भव्वसत्ताणं ।।२२।।
अहिणवपुरस्सरं तेसि-मेव कारावणं च तस्सेव । सव्वेसिं सूरीणं, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ।।२३।।
एव उवज्झायाणं, पंचविहायारपालणरयाणं । पयईए चेव परो-वयारकरणेक्करसियाणं ।।२४।।
सुत्तऽत्थतदुभएहिं, अंगोवंगपाइन्नगप्पमुहं । सुत्तं जिणप्पणीयं, अहिज्जमाणेण ताव सयं ।।२५।।
तह अन्नेसिं पि दुवालसंऽग-गणिपिडगसुत्तदाइत्तं । तिविहंतिविहेण सया, अणुमोएज्जसु तुमं सव्वं ।।२६।।
एवं कयउन्नाणं, चरित्तचूडामणीण धीराणं । सुगिहीयणामधेयाण, विविहगुणरयणरासीणं ।।२७।।
समणाण सुविहियाणं, अकलंकविसालसीलसालित्तं । जावज्जीवं निरऽवज्ज-वित्तिवत्तित्तणं तह य ।।२८।।
जयजीववच्छलत्तं, ससरीरे वि हु ममत्तरहियत्तं । सयणजणेसु समत्तं, सुनिरुद्धपमायपसरत्तं ।।२९।।
पसमरसनिब्भरत्तं, सज्झायज्झाणपरमरसियत्तं । आणापरतंतत्तं, संजमगुणवद्धलक्खत्तं ।।३०।।
परमत्थगवेसित्तं, भवट्ठिइनिग्गुणत्तभावित्तं । तत्तो य तव्विरागि-त्तणं परं परमसंवेगा ।।३१।।
भवसंकडिल्लपडियक्ख-भूयकिरियाकलावकारित्तं । तिविहंतिविहेण सया, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ।।३२।।
तह सव्वेसिं पि हु सावगाण, पयईए पियसुधम्मत्तं । जिणवयणधम्मरागा-ऽणुरत्तदेहऽट्ठिमिंजत्तं ।।३३।।
जीवाऽजीवाऽऽइसमत्थ-वत्थुविसयम्मि परमकुसलत्तं । निग्गंथा पावयणा, देवाऽऽईहि वि अखोभित्तं ।।३४।।
सम्मद्दंसणपामोक्ख-मोक्खसाहगगुणेसु गाढत्तं । तिविहंतिविहेण सया, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ।।३५।।
अन्नेसिं पि हु आसण्ण-भाविभद्दाण भवियउकामाणं । कल्लाणाऽऽसयवित्तीण, पयणुकम्माऽणुभावाणं ।।३६।।
देवाण दाणवाण य, नरतिरियाणं पि सव्वसत्ताणं । सम्मग्गाऽणुगयत्तं, अणुमोएज्जसु तुमं सम्मं ।।३७।।
एवं अरिहंताऽऽईसु, सुकडऽणुमोयणमऽणुक्खणं सम्मं । भालयलाऽरोवियपाणि-पल्लवो भद्द! कुणमाणो ।।३८।।
सिढिलेसि तेसि हाणिं, खवेसि चिरसंचियं पि कम्ममलं । निहणियकम्मा सम्मं, सुंदर! आराहओ होसि ।।३९।।
सुकडाऽणुमोयणादार-मेवमऽक्खायमिण्हि साहेमि । चउदसमं पडिदारं, भावणपडलाऽभिहाणं ति ।।४०।।

"भावनापटलद्वारम्" —

पाएणं सव्वरसाण, लवणवेहेण जह पहाणत्तं । जह वा पारयरससं-गमेण लोहाण कणगत्तं ।।४१।।
एवं दाणाऽऽईण वि, धम्मंऽगाणं न भावणाए विणा । वंछियफलदाइत्तं, ता तीए खवग! कुण जत्तं ।।४२।।
तथाहि—
दिन्नं बहुं पि दाणं, सीलं पि हु पालियं चिरं कालं । सुट्ठु तवियं तवो वि हु, भावणवियलं न किं पि तयं ।।४३।।
दाणे अहिणवसेट्ठी, दिट्ठंतो होइ भावसुन्नम्मि । सीलतवेसुं पुण विर-हिएसु भावेण कंडरिओ ।।४४।।
हलिपारावणकयमण-हरिणस्स किमाऽऽसि दाणमऽह तह वि । तब्भावणापयरिसा, दायगतुल्लं फलं जायं ।।४५।।
अह वा उ जुन्नसेट्ठी, दिट्ठंतो सो वि दाणविरहे वि । तप्परिणामपरिणओ, पत्तो तह पुन्नपब्भारं ।।४६।।
तह सीलतवाऽभावे वि, पयइपसरंततिव्वसंवेगा । तप्परिणामपरिणया, मरुदेवीसामिणी सिद्धा ।।४७।।
तह परिमियसीलतवाऽ-वही वि भयवं अवंतिसुकुमालो । सुहभावणागुणा भो! जाओ देवो महिड्ढिओ ।।४८।।
अन्नं च दाणधम्मो, अवेक्खई नूणमऽत्थसब्भावं । सीलतवा वि जहुत्ता, संहणणविसेससाऽवेक्खा ।।४९।।
एसा हि भावणा पुण, न पयत्थंतरमऽवेक्खए किं पि । किं तु सुहचित्तपभवा, ता जइयव्वं चिय इमीए ।।५०।।
नणु अंतरद्दिहीए, बज्झं कारणमऽवेक्खइ इमा वि । न सुहं झाउमऽलं जं, उव्विग्गमणो मणागं पि ।।५१।।

एत्तो च्चिय कित्तिज्जइ, मणुन्नभोयणमणुण्णगेहेसु । संतेसु झायइ मुणी, मणोन्नमऽविसन्नमणजोगो ॥५२॥
तन्न अवेक्खाकारण-विरहेणं भावणा वि सच्चमिणं । नवरं मणोनिरोहा-ऽसमत्थमुणिणो पडुच्च इमा ॥५३॥
जे पुण अणप्पतरविरिय-जोगसामत्थनिहयमणपसरा । पसरंततिव्वपरकय-वियणावाउलियतणुणो वि ॥५४॥
भिंदंति थेवमेत्तं पि, नो सुहज्झाणमुज्झियकसाया । खंदगसिस्साणं पिव, किं तेसिं बज्झहेऊहिं ॥५५॥
तह सवसे चेव सुहाऽसुहम्मि, भावे वरं सुहो स कओ । साहीणाऽमयमुज्झिय, को नाम विसं गहेज्ज बुहो॥५६॥
ता भो देवाऽणुप्पिय!, पियं ममेयं ति निच्छयं काउं । मोक्खेक्कबद्धलक्खो, होसु सया भावणासारो ॥५७॥
भीमभवुब्भंतेहिं, भाविज्जंतीह भव्वभविएहिं । जं तेहिं इमासिं भाव-णत्ति विहियं निरुत्तं पि ॥५८॥
जा किर एगंतसुहो, भावो सो चेव भावणाउ वि । जाउ वि भावणाउ, ता एवेगंतसुहभावो ॥५९॥
सो भावो बारसहा, अहवा ताउ भवंति बारसहा । सो ताउ य सुहा पुण, संवेगरसाऽइरेगाओ ॥६०॥
तो तस्स कए कमसो, भावेज्ज अणिच्चयं[१] असरणत्तं[२] । संसारं[३] एगत्तं[४] अन्नत्तं[५] तह य असुइत्तं[६] ॥६१॥
भावेज्ज आसवं[७] संव-रं[८] च कम्माण निज्जरं[९] तह य । लोगसहावं[१०] बोहीए[११], धम्मगुरुणो य दुलहत्तं[१२]॥६२॥

"अनित्यभावनास्वरूपम्" —

संसारसमुत्थसमत्थवत्थु-सत्थस्स एत्थ बारसगे । भावेज्जा पढमं चिय, निच्चमऽणिच्चत्तणं एवं ॥६३॥
विज्जु व्व जोव्वणं संप-या वि संझऽब्भरागरेह व्व । जलबुब्बुओ व्व जीविय-मऽच्चंतमऽणिच्चमेवमऽहो! ॥६४॥
मायापिइपुत्तेहिं, मित्तेहि य परमपेमपत्तेहिं । जो संवासो सो वि हु, अणिच्चयाकवलिओ सव्वो ॥६५॥
देहो सुभगत्तमऽहीण-पुन्नपंचेंदियत्तणं रूवं । बलमाऽऽरोग्गं लायन्नसंपया सयलमऽवि अथिरं ॥६६॥
भवणवइवाणमंतर-जोइसकप्पाऽऽइपभवदेवाणं । सव्वाणं पि हु सव्वं पि, देहरूवाऽऽइ वि अणिच्चं ॥६७॥
भवणेहिं उववणेहि य, सयणाऽऽसणजाणवाहणाऽऽईहिं । जो संजोगो सो वि हु, इहपरलोगेसु वि अणिच्चो ॥६८॥
एगपयत्थऽणुमाणेण-ऽणिच्चयं निच्छिऊण सव्वगयं । धन्ना धम्मम्मि समुज्ज-मंति नग्गइनरेंदो व्व ॥६९॥

तथाहि— "नग्गइनृपदृष्टान्तः"

गंधारजणवयवई, नग्गइनामो निवो सनयरीओ । बहुहयगयरहसंठिय-सामंतसमूहपरियरिओ ॥७०॥
महुसमयसमागमसोह-माणवणराइपेच्छणट्ठाए । नीहरिओ महया रिद्धि-समुदएणं विरायंतो ॥७१॥
अह पेच्छइ अद्धपहे, उम्मिल्लमहल्लपल्लवसिरिल्लं । मयरंदबिंदुपिंजरिय-मंजरीपुंजरमणिज्जं ॥७२॥
उग्गायंतं व भमंत-भमरनिउरुंबगुंजियमिसेण । पवणपणोल्लिरसाहा-भुयाहिं पारद्धनट्टं व ॥७३॥
मयमत्तपरहुयारव-मिसेण मीणज्झयं थुणंतं व । नीरंधपत्तपरियर-परिकिण्णं तरुणचूयतरुं ॥७४॥
अह तस्स रम्मयागुण-रंजियहियएण राइणा तेणं । कोऊहलेण गहिया, जंतेणं मंजरी एक्का ॥७५॥
तो नियसामिमग्गाऽ-णुगामिसेवगजणाण मज्झाओ । केणाऽवि मंजरीपत्त-गुच्छमऽवरेण साहऽग्गं ॥७६॥
केणाऽवि हु पल्लवचय-मऽन्नेणमऽपिक्कफलभरं पि दढं । गिण्हंतेणं विहिओ, खणेण खाणु व्व सो रुक्खो ॥७७॥
राया वि पयट्टऽरहट्ट-जंतचिक्कारबहिरियदिसेसु । उप्पित्थपउत्थ व तीसे, वियसिरसिसिरप्पएसेसु ॥७८॥
पसरंतपरिमलुप्पील-मिलियभसलाऽऽवलीमणहरेसु । उज्जाणेसुं विहरिय, खणमेक्कं पडिनियत्तंतो ॥७९॥
तेण पहेणं चूयं, अपेच्छमाणो य पुच्छती(इ) लोयं । सो कत्थ चूयसाहि त्ति, दंसियो तयऽणु लोगेण ॥८०॥
सो खाणुसरिसरूवो, ताहे विम्हियमणेण भणियमिणं । किं एरिसो त्ति सिट्ठो, लोगेण वि पुव्ववुत्तंतो ॥८१॥
आयन्निऊण तं नर-वई वि संजायपरमसंवेगो । परिचिंतिउं पवत्तो, अच्चंतं सुहुमबुद्धीए ॥८२॥
धी! धी! भवदुव्विलसिय-मऽहो न जत्थऽत्थि वत्थु किंपि तयं । सव्वंगीणं घत्थं, जं नेवाऽणिच्चयाए सया ॥८३॥
चूयाऽणुमाणओ च्चिय, अणिच्चयऽक्कंतसव्वयत्थूसु । किं पडिबंधट्ठाणं, ससरीराऽऽइसु वि विउसाण ॥८४॥
इय सो विचिंतिऊणं, रज्जं अंतेउरं पुरं चेच्चा । पत्तेयबद्धलिंगो, जाओ समणो महासत्तो ॥८५॥
एवं सोच्चा सुंदर!, विजणम्मि गीयसाहुसहिएण । भावेयव्वा तुमए, अणिच्चया सव्वभावाणं ॥८६॥

"अशरणभावनास्वरूपम्" —

जेणेव समत्थाण वि, भवुत्थवत्थूण दढमऽणिच्चत्तं । तेणं चिय तेहिंतो, सरणं पि न किंपि पाणीणं ॥८७॥

नीसेससत्तसंताण-ताणकरणेक्कवच्छलमऽतुच्छं । एक्कं चिय करुणारस-पहाणजिणवयणमऽवहाय ॥८८॥
जम्मजरमरणरणरणय-सोगसंतावबाहिविहुरम्मि । नत्थेत्थ कत्थइ भीम-भववणे सरणमंऽगीण ॥८९॥
तहा—
साऽऽवरणमत्तकरितरल-तुरयरहजोहजूहवूहेहिं । बुद्धीए नीइबलेण, या वि फुडपोरिसेणं वा ॥९०॥
पुरिसाणं तह देवाण, या वि मज्झाओ दिव्वसत्तीए । जिणवयणठिए मोत्तुं, जियपुव्वो केण वि न मच्चू ॥९१॥
मायापिइपुत्तकलत्त-मित्तसुसिणिद्धबंधुधणनिचया । वाहिविहुरे वि पुरिसे, थेवं पि न होंति सरणाय ॥९२॥
मंगलकोउयजोगेहिं, मंतवेज्जोसहीहिं विविहाहिं । नो हवइ परित्ताणं, मोत्तुं जिणवयणमेवेक्कं ॥९३॥
जेणं चिय चिंतिज्जंत-मेत्थ नो वत्थु किंपि सरणाय । तेणं चिय दुस्सहचक्खु-वेयणावाउलियगत्तो ॥९४॥
कोसम्बिइब्भपुत्तो, वट्टंतो दिव्वजोव्वणे पढमे । संगमऽवहाय धीमं, पडिवण्णो संजमुज्जोगं ॥९५॥
तहाहि— "अनाथीमुनिदृष्टान्तः
रायगिहनगरनाहो, सेणियराया विहारजत्ताए । नीहरिओ पेच्छइ मंडि-कुच्छिउज्जाणमज्झम्मि ॥९६॥
तरुमूलम्मि निसण्णं, ससिरीयं वम्महं व रइरहियं । सरइंदुकलाकोमल-सरीरमेगं मुणिप्पवरं ॥९७॥
तं पेच्छिऊण राया, रूवाऽऽइगुणे पसंसिउं बाढं । साऽऽयरकयप्पणामो, तिपयाहिणपुव्वयमऽदूरे ॥९८॥
ठाऊण पंजलिउडो, सविम्हयं भणिउमेवमाऽऽढत्तो । तरुणत्तणे वि भन्ते!, उवट्ठिओ कीस? सामण्णे ॥९९॥
समणेण जंपियं पुहइ-नाह! सरणं न को वि मह हुंतो । तेणेसा पडिवण्णा, दिक्खा दुक्खाण खयजणणी ॥८६००॥
अह हासवसविसप्पंत-दंतकंतीए धवलयंतेण । पढमुग्गमंतदिणयर-रुइरोट्ठं जंपियं रन्ना ॥१॥
अप्पडिमरूवलक्खण-पिसुणियबहुविहवविथ्थरस्स कहं । तुह भयवमऽसरणत्तं, कहिज्जमाणं पि सद्दहिमो ॥२॥
अहवा किमऽणेणं, होमि, तुज्झं सरणं अहं भयसु गेहं । भुंजसु य विसयसोक्खं, दुलहं खु पुणो वि माणुस्सं ॥३॥
मुणिणा भणियं नरवर!, सयमऽवि सरणेण विरहियस्स तुहं । कहमिव परेसि सरण-प्पयाणसामत्थउवलंभो ॥४॥
एवं वुत्तो संतो, संभंतो नरवई पयंपेइ । पउरकरितुरयरहसुहड-लक्खसामग्गिकलिओ हं ॥५॥
कहमिव सरणाय परेसि, नेव होमि त्ति मा मुसं वयसु । भयवं! कह या सयमऽवि, निस्सरणो हं तए वुत्तो ॥६॥
मुणिणा संलत्तं भूमि-नाह! एयस्स मुणसि नेवऽत्थं । नेव य उत्थाणं ता, सुणेहि एगग्गचित्तो तं ॥७॥
कोसंबीनयरीए, उवहसियकुबेरविहवविथ्थारो । आसि बहुसयणवग्गो, मज्झ पिया पायडो भुवणे ॥८॥
होत्था य ममं तइया, पढमवए च्चिय सुदुस्सहा धणियं । अच्छिवियणा महंती, तव्वसओ देहदाहो य ॥९॥
देहंऽतो भमिरमहंत-निसियकुंतो व्व असणिनिहओ व्व । उक्कुवियनयणपीडा-भरेण विवसो म्हि संवुत्तो ॥१०॥
बहुमंततंतविज्जा-चिगिच्छसत्थऽत्थवेइणो य जणा । कासी मज्झ चिगिच्छं, नाऽऽसी थेवो वि पडियारो ॥११॥
पिउणा वि य पडिवन्नं, सव्वस्ससमप्पणं पि किर तस्स । जो मज्झ थेवमेत्तं पि, वेयणं अवहरेज्ज लहुं ॥१२॥
पम्मुक्कपाणभोयण विलेवणाऽऽहरणपमुहवावारो । मायाभाउगभगिणी-कलत्तमेत्ताऽऽइसयणगणो ॥१३॥
अच्चन्तचित्तपीडा-विणिन्तबाहप्पवाहधोयमुहो । किं कायव्वयमूढो, ठिओ समीवम्मि मे सव्वो ॥१४॥
तह वि हु अणियत्तंतीए, अच्छिवियणाए थेवमेत्तं पि । अहह! न को वि हु सरणं, ममं ति परिचिन्तयन्तेणं ॥१५॥
विहिया मए पइन्ना, जइ मुंचेज्जा इमाइ वियणाए । तो चत्तसव्वसंगो, काहं अणगारियं धम्मं ॥१६॥
एवं विहियपइन्नस्स, मज्झ रयणीए आगया निद्दा । खयमुवगया य वियणा, जाओम्हि पुणण्णवसरीरो ॥१७॥
जाए पभायसमए, तत्तो आपुच्छिउं सयणवग्गं । सव्वन्नुणा पणीयं, दिक्खं सरणं पवन्नोम्हि ॥१८॥
ता नरवर! एवंविह-दुहनियहग्घत्थपाणिसत्थस्स । मोत्तुं जिणिंदधम्मं, सरणं ताणं न अन्नत्तो ॥१९॥
एवं सोउं राया, तहत्ति पडिवज्जिउं कयपणामो । निययट्ठाणमुवगओ, साहू वि तओ विणिक्खंतो ॥२०॥
इय खवग! समत्थभवुत्थ-वत्थुपडिबंधबुद्धिमऽवहाय । भावेसु निहुयचित्तो, निस्सरणयभावणं सम्मं ॥२१॥
जेणं चिय पइवत्थुं पि, एत्थ चिंतिज्जमाणमंऽगीणं । सरणं न किंपि तेणेव, नियसु संसारमऽइविसमं ॥२२॥
"संसारभावनास्वरूपम्" —
जिणवयणविरहिओ इह, मोहमहातिमिरपडलपडिहणिओ । जीवो वियारवोक्कंत-वेयणाविवससव्वंऽगो ॥२३॥

इगिविगलिंदियजलथल-खयराऽऽदिविचित्ततिरियजोणीसु । सव्वसुरमणुयजोणीसु, नरएसु य भमडिओ बहुसो॥२४॥
वहबंधणथणहरणाऽऽ-वमाणगुरुरोगसोगसंतावा । पत्ता विचित्तरूवा, बहुसो एक्केक्कजातीसु ॥२५॥
उड्ढं तिरियमऽहे वा, लोयपएसो वि नत्थि सो को वि । पत्ताइं जत्थ बहुसो, न जम्मजरमरणपभिईणि ॥२६॥
भोगोवक्खरदेहत्त-बंधवहणाऽऽइकारणत्तेण । बहुसो वि रुविदव्वाणि, पत्तपुव्वाणि सव्वाणि ॥२७॥
सयणसुहिसामिदासत्त-सत्तुभावेहिं परिणया सव्वे । जीवा अणेगसो च्चिय, संसारे संसरंतस्स ॥२८॥
हद्धी! उव्वियणिज्जो, संसारो जत्थ णिययजणणी वि । मरिऊण होइ दुहिया, पिया य मरिऊण पुण पुत्तो ॥२९॥
सोहग्गरूवगव्वं, समुव्वहंतो जुवा वि मरिऊण । तत्थेव नियसरीरे, जायइ जम्मि किमित्तेण ॥३०॥
जणणी वि भवंऽतरपत्त-पुत्तपिसियं पि भक्खए जं च । ही! एत्तो वि किमऽन्नं, कट्ठं दुट्ठम्मि संसारे ॥३१॥
सामी भिच्चो भिच्चो वि, नायगो नियसुओ वि हवइ पिया । जणगो वि वेरिबुद्धीए, हम्मए धी! भवसरूवं ॥३२॥
केत्तियमेत्तं भण्णइ, विविहऽच्छेरयनिहिम्मि संसारे । तावससेट्ठिव्व चिरं, विणडिज्जइ जत्थ जंतुगणो ॥३३॥

तथाहि--

"तापसश्रेष्ठिनःदृष्टान्तः"

कोसंबीनयरीए, तावससेट्ठि त्ति आसि सुपसिद्धो । सद्धम्मबाहिरमई, महयरआरंभकरणपरो ॥३४॥
अच्चन्तगेहमुच्छा-गढिओ मरिउं सए च्चिय गिहम्मि । कोलत्तेणुववन्नो, जाईसरणं च से जायं ॥३५॥
अन्नम्मि अवसरे तस्स, सूणुणा तस्स चेव कज्जेण । संवच्छरियविहाणं, पारद्धं गुरुपबंधेणं ॥३६॥
सयणा माहणसमणा, निमंतिया तन्निमित्तमोक्खडियं । मंसं सूयारीए, मज्जाराऽऽईहिं तं च हडं ॥३७॥
अह गिहवइभीयाए, परमंसंऽतरमपाउणंतीए । सो च्चिय कोलो हणिओ, झडत्ति तीए उवक्खडिओ ॥३८॥
तत्तो मओ य सो पुण, तत्थेव घरम्मि पन्नगो जाओ । सूयारिदंसणेण य, मरणमहाभयवसट्टेण ॥३९॥
सरिया जाई तेणं, तीए वि हु सूययाररमणीए । पकओ बोलो मिलिओ, जणो वि निहओ भुयंगो सो ॥४०॥
कयपाणच्चागो पुण, नियपुत्तस्सेव पुत्तभावेणं । संवुत्तो सरिऊण य, जाइं एवं विचिंतेइ ॥४१॥
कह नियपुत्तं पियरं, वहुं च जणणिं उदाहरिस्सामि । इइ कयसंकप्पो सो, मोणेणं ठाउमाऽऽरद्धो ॥४२॥
पत्तो कुमारभावं, कालेण समागओ तहिं नाणी । धम्मरहो नाम गणी, समोसढो बाहिरुज्जाणे ॥४३॥
नाणाऽऽलोएण पलोइयं च, को बुज्झिहि त्ति तेण परं । मुणिओ मोणव्वइओ, सो च्चिय तो साहुणो दोण्णि॥४४॥
पुव्वभवप्पडिबद्धं, गाहं सिक्खविय पेसिया तस्स । पासम्मि बोहणत्थं, तेहिं गंतूण पढिया य ॥४५॥
"तावस! किमिणा मोणव्वएण, पडिवज्ज जाणिउं धम्मं । मरिऊण सूयरोरग, जाओ पुत्तस्स पुत्तो त्ति" ॥४६॥
अह सो नियभववित्तं, सोऊणं तक्खणेण पडिबुद्धो । सूरिसमीवे गंतुं, पडिवन्नो तित्थयरधम्मं ॥४७॥
अलमेत्थ पसंगेणं,संसारे तिक्खदुक्खलक्खाइं । पत्ताइं पाविही तह, जीवो धम्मं जइ न काही ॥४८॥
इय खवग! महादुहहेउ-भूयभवभावणुज्जुत्तो । भवसु तहा जह पत्थुय-मऽत्थं लीलाए साहेसि [संसारो] ॥४९॥

"एकत्वभावनास्वरूपम्" —

जेणं चिय संसारो, एस अणिच्चत्तणेण वत्थूण । अणुवलभणिज्जसरणो, तेणेव जियाण एगत्तं ॥५०॥
एगत्तभावणं ता, पइसमयपवड्ढमाणसंवेगो । भावसु छिन्नममत्तो, तत्तं हिययम्मि काऊण ॥५१॥
एगो आया संजोगियं तु, सेसं इमस्स पाएण । दुक्खनिमित्तं सव्वं, मोत्तुं, मज्झत्थभावं तु ॥५२॥
जं एक्को च्चिय जीवो, सुहं दुहं वा भवम्मि अणुभवइ । न हु तस्स को वि बीओ, सो वि न अन्नस्स कस्साऽवि॥५३॥
एगो एक्को च्चिय सोयंताण, चेव मज्झओ जाइ बंधूणं । न य तं अणुगच्छंती, पियपुत्तकलत्तमित्तजणा ॥५४॥
एक्को करेइ कम्मं, एक्को च्चिय तप्फलं पि भुंजेइ । जायइ मरइ य एक्को, एक्को हु भवंऽतरं सरइ ॥५५॥
को केण समं जायइ, को केण समं च परभवं जाइ । को कस्स किं करेइ, कस्स वि को किं च फेडेइ ॥५६॥
अणुसोयइ अण्णजणं, अन्नभवऽन्तरगयं तु बालजणो । न य सोयइ अप्पाणं, किलिस्समाणं भवे एक्कं ॥५७॥
संतं पि समत्थपयत्थ-वित्थरं बज्झमुज्झिउं झत्ति । परलोगा इहलोगे, आगच्छइ गच्छइ एक्को ॥५८॥
एक्को नरयम्मि दुहं, सहइ न भिच्चा न बंधुणो तत्थ । एगो सग्गे वि सुहं, भुंजइ न य से परे सयणा ॥५९॥
एक्को च्चिय भवपंके, किलिस्सइ नेव से वरायस्स । इट्ठो दिट्ठिपहे वि हु, निवडइ समसोक्खदुक्खसहो ॥६०॥

एत्तो च्चिय तिव्वुवसग्ग-वग्गदुक्खे वि नो अवेक्खंति । परसाहेज्जं मुणिणो, वीरो व्व सहंति किं तु सयं ॥६१॥
तहाहि— "परसहायानिच्छोपरी वीरविभुदृष्टान्तः"
कुंडग्गामपुरप्पहु-पसिद्धसिद्धत्थपत्थिवंऽगरुहो । नियजम्मजणियतिहुयण-परममहो सिरिमहावीरो ॥६२॥
भत्तिभरनमिरसामंत-मंतिमणिमउडलीढपयवीढं । आणापडिच्छकिंकर-नरनियरं रज्जमऽवहाय ॥६३॥
जयजयरवमुहरमिलंत-तियसकीरंतपूयपब्भारो । परिचत्तपेमबंधुर-बंधुजणो गहियसामण्णो ॥६४॥
पढमे च्चिय दिक्खदिणे, कुम्मारग्गामबाहिरुद्देसे । वट्टंतो गोवेणं, भणिओऽणज्जेण किर एवं ॥६५॥
देवऽज्जय! जाव अहं, गेहे गंतूण पडिनियत्तेमि । ताव तुमं मम वसभे, सम्मं एए निएज्जासु ॥६६॥
एवं भणिउं तम्मि, गयम्मि वसभा जहिच्छमऽडमाणा । अडविं अणुप्पविट्ठा, उस्सग्गठियस्स जयगुरुणो ॥६७॥
खणमेत्तेणं च समागओ य, वसहे अपेच्छमाणो सो । ते कत्थ गय त्ति जिणं, पुच्छइ संजायसंतावो ॥६८॥
पडिवयणमऽलभमाणो, सव्वत्तो पेहिउं समारद्धो । ते वि य वसभा सुचिरं, चरिउं जिणपासमऽल्लीणा ॥६९॥
इयरो वि सयलरयणिं, परियडिउं तं पएसमऽणुपत्तो । पेहेइ नियवसभे, रोमंथंते जिणसमीवे ॥७०॥
नूणं नूमिय देवऽज्जएण, हरणऽट्ठया इमे धरिया । कहमऽन्नहा न कहिया, मए बहुं पुच्छिएणाऽवि ॥७१॥
इय कुवियप्पवसुप्पन्न-तिव्वकोवो जवेण सो गोवो । आकोसिंतो निट्ठुर-मुवट्ठिओ जयगुरुं हणिउं ॥७२॥
एत्थंतरम्मि ओहीए, सुरवई पेच्छिऊण जयपहुणो । तारिसमऽवत्थमुप्पित्थ-माणसो झत्ति ओइन्नो ॥७३॥
निब्भच्छिऊण गोवं, तिपयाहिणपुव्वगं जिणं नमिउं । भालयलविरइयंऽजली, भत्तीए भणिउमाऽऽढत्तो ॥७४॥
संवच्छराइं बारस, एत्तो होहिंति तुम्ह उवसग्गा । ता देह ममाऽऽएसं, जेणुज्झियसेसकायव्वो ॥७५॥
नरतिरियतियसविहिए, उवसग्गे पडिखलेमि पासठिओ । जयपहुणा संलत्तं, सुरिंद! तं कुणसि सव्वमिमं ॥७६॥
नवरं इमं न होही, नो हूयं भवइ नेव कइया वि । जं पुव्वविहियदुव्विलसि-उत्थकम्माण निज्जरणं ॥७७॥
साणिज्झेणं कस्स वि, भवेज्ज मोत्तुं सयं समणुभवणं । दुक्करतवचरणं वा, जीवाण भवे भमंताणं ॥७८॥
एक्को च्चिय सुहदुक्खे, जीवो अणुभवइ कम्मपरतंतो । उवयारऽवयारकरा, तदऽवेक्खच्चिय परे होंति ॥७९॥
एवं जिणेण भणिए, सक्को नमिउं गओ जहाऽभिमयं । दुस्सहपरीसहे सहइ, एगगो भुवणनाहो वि ॥८०॥
इय जइ चरमजिणो वि हु, एक्को च्चिय सहइ दुक्खसोक्खाइं । ता कह न खवग! एगत्त-भावणाभावगो होसि॥८१॥
जेणं चिय संतेसु वि, सयणाऽऽइविचित्तबज्झवत्थूसु । एगत्तमंऽगिणो तेण, ताणमऽन्नोन्नमऽन्नत्तं ॥८२॥

"अन्यत्वभावनास्वरूपम्" —

भुंजंताण सयंकड-कम्मफलं भिन्नभिन्नमंऽगीणं । को कस्स एत्थ सयणो, भवेज्ज को वा परजणो वि ॥८३॥
अन्नो देहाउ जिओ, अन्नो य इमाउ सयलविभवाउ । अन्नो च्चिय पियपिइपुत्त-मित्तसयणाऽऽइवग्गाओ ॥८४॥
एए वि जियादऽन्ने, सच्चित्ताऽचित्तवित्थरा सव्वे । ता काउ खमं से अप्प-णो हियं अप्पणो चेव ॥८५॥
एत्तो च्चिय नरयसमुत्थ-तिक्खदुक्खोवहम्ममाणंऽगो । अणुसासिओ सिवेणं, जेट्ठो भाया सुलसनामो ॥८६॥
तथाहि— "सुलसपरिहासवचनेन शिवस्य वैराग्यम्"
नगरम्मि दसन्नपुरे, सुलसो य सिवो य भायरो दोन्नि । निवसंति परोप्परपउर-पणयपडिबद्धदढचित्ता ॥८७॥
नवरं पढमो अइनिबिड-कम्मगंठित्तणेण जिणधम्मं । सद्दहइ न मन्नंतं पि, हेउदिट्ठंतजुत्तीहिं ॥८८॥
बीओ पुण अइलहुकम्मयाए, पडिवन्नतित्थयरधम्मो । जइपज्जुवासणाऽऽइसु, पयट्टइ सिट्ठचेट्ठासु ॥८९॥
अच्चंतपावपडिबद्ध-माणसं जेट्ठभाउगं च सया । अणुसासइ कीस करेसि, भाय! असमंजसाइं तुमं ॥९०॥
किं नो पेच्छसि आउं, सछिड्डकरकमलकलियसलिलं व । गलमाणमऽणुक्खणमंऽग-चंगिमं पि हु पणस्संतिं ॥९१॥
किं वा न पेच्छसि सिरिं, हायंतिं सरयमेहसोहं व । विहडंतं पियजणसंग-मं पि सरियातरंगं व ॥९२॥
किं वा न पेक्खसि सयं, पइदिणमरमाणमाणवसमूहं । विविहाऽऽवयाऽवगाढं, महासमुद्दं व. जियलोयं ॥९३॥
जेणेयं नरयनिवास-कारणं घोरपावमाऽऽयरसि । उज्जमसि न थेवं पि हु, तवदाणदयाऽऽइधम्मम्मि ॥९४॥
सुलसेण जंपियं मुद्ध!, धुत्तलोगेण विनडिओ तं सि । सोसेसि जो नियतणुं, तवसा दुहहेउभूएण ॥९५॥
वियरसि य किलेसऽज्जिय-मऽत्थं तित्थाऽऽइएसु णिच्चं पि । जीवदयारसियमणो, ठवसि न चरणं पि धरणीए॥९६॥

एवंविहस्स य तुहं, सिक्खादाणेण नऽत्थि मे कज्जं । को पीडइ अप्पाणं, पच्चक्खसुहं विमोत्तूणं ॥९७॥
इय सपरिहासभाउग-वयणाइं णिसामिउं सिवो विलिओ । इममेव य वेरग्गं, समुव्वहंतो सुगुरुमूले ॥९८॥
पव्वइउं उग्गतवं च, सुचिरकालं चरित्तु कालगतो उववन्नो कयपुण्णो, देवत्तेणऽच्चुए कप्पे ॥९९॥
सुलसो वि विहियपाव-प्पबन्धमऽच्चन्तमऽज्जिऊण मओ । उववण्णो नेरइओ, तइयाए नरयपुढवीए ॥८७००॥
अणवरयदहणताडण-बंधणपामोक्खभूरिदुक्खाइं । विसहइ तहिं च कलुणं, विलवंतो गुत्तिखित्तो व्व ॥१॥
अह तं तहाविहं पेच्छिऊण, ओहीए पुव्वपणएण । सो देवो तस्संऽतिय-मोयरिउं भणिउमाऽऽढत्तो ॥२॥
किं पच्चभिजाणसि भद्द!, नेव तो सो ससंभमं भणइ । को मणहररूवधरं, देवं न तुमं वियाणाइ ॥३॥
ताहे तियसेणं पुव्व-जम्मरूवं जहट्ठियं तस्स । उवदंसियं तओ सो, पच्चभिजाणित्तु तं सम्मं ॥४॥
ईसि सवियासचक्खू, भणइ कहं दिव्वदेवरिद्धीयं । उवलद्धा तुमए भाय!, कहसु तियसेण तो वुत्तं ॥५॥
भद्द! मए दुक्करतव-विसेससज्झायझाणजोगेहिं । देहो कयत्थिओ तह, जह रिद्धिमिमं समणुपत्तो ॥६॥
तुमए पुण बहुविहलालणाहिं, पुट्ठिं तणुं नयंतेणं । धणसयणाऽऽइनिमित्तं, पावाणि सया कुणंतेणं ॥७॥
सासिज्जंतेण वि धम्मकम्म-विसए पमायवसगेण । तह कहवि वट्टियं जह, एवंविहवसणमाऽऽवडियं ॥८॥
एयं पि नेव नायं, जीवाओ जहा इमं सरीरं पि । अन्नं धणसयणा वि हु, विहुरे ताणाय न हवंति ॥९॥
एत्तो च्चिय भद्दय! सीय-तावछुहवेयणाओ विसहंति । देहे दुक्खं हि महा-फलं ति मुणिणो विचिंतिंता ॥१०॥
सुलसेण जंपियं संपयं पि, तं मज्झ संतियं देहं । जइ एवं ता भाउय!, जाएहि जहा सुही होमि ॥११॥
देवेण जंपियं भाय!, जीयरहिएण जाइएण गुणो । को? तेण संपयं ता, विसहसु पुव्वं कयं कम्मं ॥१२॥
इय तमऽणुसासिऊणं, असक्कपडियारवसणमुवलब्भ । देवो गओ सुराऽऽलय-मियरो नरए चिरं वुत्थो ॥१३॥
एवं सरीरधणसयण-भिन्नमुवलक्खिऊण खवग! तुमं । जीवदयापडिबद्धो, धम्मे च्चिय उज्जओ होज्जा ॥१४॥

"अशुचिभावनास्वरूपम्" —

जेणं चिय देहाओ, अण्णत्तं तत्तओ य जीवस्स । तेणं चिय सो सिद्धाऽ-वत्थो च्चिय दव्वभावसुई ॥१५॥
इहरा तदऽण्णत्ता, न सव्वहा दव्वभावसुइभावो । जीवस्स धुवं जायइ, देहस्स सया वि असुइत्ता ॥१६॥
तस्साऽसुइत्तणं पुण, पढमं चिय सुक्कसोणिउट्ठाणा । अणवरयमऽमेज्झरसाऽऽ-सायणनिप्फत्तिओ य तहा ॥१७॥
जंबालपडलगाढाऽऽ-वेढणओ जोणिनिग्गमाओ य । पूइथणछीरपाणाओ, पबलदुग्गंधभावाओ ॥१८॥
रोगसयवाउलत्ता, निच्चं पि पुरीसमुत्तधरणाओ । नवछिड्डगलंतुब्भड-बीभच्छमलत्तणाओ य ॥१९॥
असुइप्फुन्नधडस्स च, समत्थतित्थुत्थसुरहिसलिलेहिं । आजम्मं धोयाण वि हु, थेवं पि अलद्धसुद्धिस्स ॥२०॥
जो पुण असुइसरूवे, एत्थं सुइवायवाउलो भमइ । सुइवोद्दमाहणो इव, सोऽणत्थपरंपरं लभइ ॥२१॥

तथाहि— "शुचिवोद्रस्यदृष्टान्तः"

एगम्मि महानगरे, वेयपुराणाऽऽइसत्थकुसलमई । एगो विप्पो सुइवाय-हसियनीसेसपुरलोगो ॥२२॥
करधरियकुसऽक्खयमिस्स-वारिजुयतम्बभायणो भमइ । असुइयमिमं ति सव्वं, अब्भोक्खिंतो पुरपहेसु ॥२३॥
सो अन्नया विचिंतइ, वसिमे वसिउं न जुज्जए मज्झ । असुइजणसंगदुट्ठे, एत्थं हि सुइत्तणं कत्तो ॥२४॥
ता जलनिहिणो दीवे, कम्मि वि जणविरहियम्मि गंतूण । अच्छामि उच्छुमाऽऽईहिं, पाणवित्तिं पकप्पिंतो ॥२५॥
एवं कयसंकप्पो, परतीरपयट्टजाणवत्तेण । उयहिं विलंघिऊणं, थक्को सो उच्छुदीवम्मि ॥२६॥
उच्छुमऽतुच्छं छुहिओ, जहिच्छमऽणुवासरं च भुंजंतो । पडिभग्गो उच्छुच्छल्लि-छणियवणो परं भोज्जं ॥२७॥
अवलोयंतो पेच्छइ, एगत्थ समुद्दभिन्ननावस्स । वणिणो उच्छुरसेणं, उप्पाइयदढविरेयस्स ॥२८॥
उच्चारं उच्छूणं, हेट्ठा निस्संकमाणसो तं च । पिंडीभूयं उच्छुप्फलं ति, भक्खेउमाऽऽरद्धो ॥२९॥
कालेण तस्स वणिएण, दंसणं तेण कहवि संपन्नं । सह संवासाउ च्चिय, जाया य परोप्परं पीई ॥३०॥
भोयणकाले पुच्छा, किं भक्खसि तेण जंपियं इक्खुं । विप्पेण भणियमिक्खु-प्फलाइं किं लहसि नो एत्थ ॥३१॥
वणिएणं संलत्तं, इक्खूण फलाइं नेव जायंति । इयरेण भणियमाऽऽगच्छ, जेण दंसेमि इण्हिं पि ॥३२॥
ताहे कढिणीभूया, विट्ठा हेट्ठट्ठिया य इक्खूण । सा तेण दंसिया से, भणियं वणिएण तो एवं ॥३३॥

हा! हा! महायस! विमो-हिओ सि एसो उ मज्झ उच्चारो । एवं सोउं विप्पो, विचिगिच्छं परममाऽऽवन्नो ॥३४॥
भणइ कहं भद्द! एवं, वणिएणं पच्चओ तओ विहिओ । तदऽवरवोसिरिउच्चार-कढिणसमरूवहेऊहिं ॥३५॥
परमं सोगमुवगओ, विप्पो तद्देसगामिनावाए । आरुहिऊणं पुणरवि, नियमं ठाणं समणुपत्तो ॥३६॥
इय इहलोए वि भवंति, पाणिणो गाढसोयगहगहिया । एवंविहाणऽणत्थाण, भायणं अमुणियसरूवा ॥३७॥
परलोए पुण असुई-जुगंछणुब्भूयपावपसरेण । पावेंति हीणजोणीसु, णेगसो जम्ममाईणि ॥३८॥
ता खवग! देहविसयं, असुइत्तं सव्वहा वि मुणिऊणं । परमसुइत्तनिमित्ते, धम्मे च्चिय उज्जमं कुणसु ॥३९॥
अन्ने उ पत्थुयम्मि, एत्थं असुइत्तभावणाठाणे । असुहत्तभावणं उव-इसंति तो तं पि पयडेमि ॥४०॥

"अर्थकामानांअशुभत्वम्" —

वज्जिय जिणिंदधम्मं, न सुहं भुवणे वि विज्जए अन्नं । कज्जं वा ठाणं वा, कहिंचि मच्चे व सग्गे वा ॥४१॥
धम्मऽत्थकामभेया, तिविहं कज्जं मणिच्छियं तत्थ । धम्मो च्चिय सुहकज्जं, असुहा पुण अत्थकामा उ ॥४२॥
वइराण रायहाणी, आयासकिलेससोगदुहखाणी । सावज्जाऽऽरंभपयं, पावाण परा य सूईया ॥४३॥
कुलसीलठिइविडंबी, सयणेहिं वि सह विरोहकारी य । कुगईकारणमऽत्थो, अणत्थसत्थाण पंथो य ॥४४॥
लज्जाकरा विलीणा, तुच्छा आयाससाहणिज्जा य किंचि मुहे महुरा वि हु, दुहाऽवसाणा सुबीभच्छा ॥४५॥
धम्मगुणहाणिजणगा, भयबहुला अप्पकालिया घोरा । संसारवुड्ढिजणगा, कामा कामिज्जमाणा वि ॥४६॥
संनरयतिरियगणम्मि, समाणुसाऽमरजणम्मि संसारे । निरुवद्दवं न किंचिवि, विज्जइ ठाणं पि जीवाणं ॥४७॥
बहुविहदुहाऽऽउलत्ता, परव्वसत्ता महंतमोहत्ता । तिरिएसु वि न सुहत्तं, नरए पुण तं कुओ चेव ॥४८॥
तह गब्भजम्मदारिद्द-रोगजरमरणविप्पओगेहिं । अभिभूएसु मणुएसु, नऽत्थि थेवं पि हु सुहत्तं ॥४९॥
मंसवसण्हारुरुहिरऽट्ठि-विट्ठमुत्तंऽतपयइकलुसम्मि । नवछिड्डपज्झरंते, तद्देहे वि हु सुहत्तं किं? ॥५०॥
पियविप्पओगसंताव-चवणभयगब्भभवणचिंताहिं । विहिएहिं दुक्खेहिं, अभिक्खणं खिज्जामाणाणं ॥५१॥
ईसाविसायमयलोह-पमुहदढभाववेरिएहिं पि । देवा वि निच्चं नडिया, ता कत्तो ताण वि सुहत्तं ॥५२॥
सव्वाऽवत्थासुं पि हु, असुहसरूवे भवम्मि जं किंचि । जीवो इमो किलिस्सइ, पावाऽऽसवविलसियं तं से ॥५३॥

"आश्रवसंवरनिर्जराभावनानां स्वरूपम्" —

पावस्स आसवो सो, पाणवहाऽऽईहिं तह कसाएहिं । अनिरुद्धिंदियमणवइ-काएहिं अविरईए य ॥५४॥
मिच्छत्तवासणाए य, पाणिणो आइयंति जं पावं । अच्चंतभूरिसलिलं, भूरिदुवारो तडागो व्व ॥५५॥
तथाहि—
जह सव्वओ असंवुड-वियडदुवारेहिं कलुससलिलभरो । पविसइ सरोवरम्मि, कत्तो वि अपत्तपडिखलणो ॥५६॥
तह इहइं पि हु जीवे, पाणवहाऽऽईहिं गरुयदारेहिं । निच्चं असंवुडेहिं, संगलइ पभूयपावभरो ॥५७॥
तो तेणं पडहत्थो, मच्छाऽऽईण व अणेगदुक्खाण । आभागी होइ जिओ, ता वज्जसु आसवं खवग! ॥५८॥
आसववसगो सत्तो, संतावं तिव्वमुव्वहइ जम्हा । ता पाणवहाऽऽइविरम-णेण तस्संवरं कुणसु ॥५९॥
सव्वजियअप्पतुल्लो, संवरियाऽसेसआसवदुवारो । जीवो न तलागो इव, पूरिज्जइ पावसलिलेहिं ॥६०॥
तथाहि—
जह संवरियदुवारे, न पविस्सइ पाणियं वरतलागे । तह ठवियाऽऽसवदारे, जीवम्मि पावनिवहो वि ॥६१॥
ते धण्णा ताण नमो, तेहिं समं निच्च होज्ज संवासो । जे पिहियाऽऽसवदारा, दूरं पावस्स विहरंति ॥६२॥
संवरियसव्वआसव-दुवारपसरो य संपयं सम्मं । नवमं विणिज्जराभाव-णं पि भावेसु खवग! जहा ॥६३॥
पुव्वं सयं कडाणं, सुदुप्परक्कंतदुट्ठचिन्नाणं । कम्माणं वेयणाओ, भणिओ मोक्खो जिणेहिं तहा ॥६४॥
तिव्वसुहऽज्झवसाया, सव्वासिं चेव कम्मपगडीणं । अनिकाइयाण पायं, जायइ सज्जो विनिज्जरणं ॥६५॥
छट्ठऽट्ठमदसमदुवालसऽद्ध-मासाऽऽइणा विचित्तेण । तवसा पुण कम्माणं, निकाइयाणं पि निज्जरणं ॥६६॥
तावेइ तयारुहिराऽऽइ-धाउणो तह य सव्वकम्माणि । तेण तवो त्ति निरुत्तं, तवस्स समयन्नुणो बिंति ॥६७॥
तत्थ किर वेयणेणं, नेरइयाऽऽईण कम्मनिज्जरणं । सुहभावा भरहाऽऽईण, संबपमुहाण पुण तवसा ॥६८॥

तथाहि—

नेरइयाऽऽईणं किर, अणवरयविचित्तदुक्खतवियाणं । कम्माण विणिज्जरणं ति, कित्तिज्जइ देसओ नवरं ॥६९॥

भरहाऽऽईणं पि दढं, विसुज्झमाणप्पहाणभावाणं । सिट्ठं सिद्धंते वि हु, तहाविहं कम्मनिज्जरणं ॥७०॥

संबपमुहा य कुमरा, हरिपुच्छियनेमिनाहकहियम्मि । बारसवरिसाणंऽते, बारवइपुरीविणासम्मि ॥७१॥

संवेगसमाऽऽवण्णा, नेमिसमीवम्मि गिण्हिउं दिक्खं । दुक्करतवचरणरया, कम्मविणिज्जरणमऽकरिंसु ॥७२॥

किंच—

जह सीयतावपवणाऽ–वथूयमुवसुसइ वारि पोराणं । पडिरुद्धाऽवरसलिल–प्पवेससलिलासयल्लीणं ॥७३॥

तह पिहियाऽऽसवजीवत्थ–पुव्वपावं पि निज्जरमुवेइ । तवनाणझाणऽज्झयण–पमुहसुविसुद्धकिरियाए ॥७४॥

एवं च तुमं सुंदर!, विणिज्जराभावणासुनावाए । कम्मजले दुत्तारे, तारेज्जसु खिप्पमऽप्पाणं ॥७५॥

"लोकस्वरूपभावनास्वरूपम्" —

अह सव्वसंगचागी, सम्मं होऊण निज्जराभागी । भावणनयगाऽऽसंगी, लोगठिइं पि हु तुममऽरागी ॥७६॥

भावेज्ज जहसरूवं, उड्ढं तिरियं अहो य उवउत्तो । तग्गयसच्चित्ताऽचित्त–सव्वदव्वस्सरूवं च ॥७७॥

उड्ढं तियसविमाणाऽऽदी, दीवोयहिणो असंखया तिरियं । हेट्ठा य सत्त पुढवी, लोगसभावो इय समासा ॥७८॥

अजहट्ठिइलोगट्ठिइ–नाया न सकज्जसाहगो होइ । तस्सम्मपरिन्नाणा, होइ च्चिय तावससिवो व्व ॥७९॥

तथाहि— "शिवराजर्षेः दृष्टान्तः"

गयउरनगरे राया, नामेण सिवो विहाय रज्जसिरिं । घेत्तुं तावसदिक्खं, वणवासविहारमऽल्लीणो ॥८०॥

सूरुम्मुहनिम्मियनिमेस–रहियनयणो तवेइ गाढतवं । कुणइ य नियसमयऽणुरूव–सेसकिरियाकलावं च ॥८१॥

एवं तवं तवितस्स, तस्स पयईए भद्दयत्तेण । विब्भंगं संजायं, कम्मखओवसमओ य तहा ॥८२॥

अह सत्तदीवसायर–मेत्तं लोयं वियाणिउं तेणं । सिवरायरिसी तुट्ठो, विसिट्ठनियनाणपसरेण ॥८३॥

तो आगंतूणं गय–पुरम्मि तियचच्चरेसु लोयाणं । साहेइ इहं लोए, दीवोदहिणो परं सत्त ॥८४॥

तत्तो परेण लोगो, वोच्छिन्नो एवमऽमलनाणेण । जाणामि पासामि य, करयलठियकुवलयफलं व ॥८५॥

तम्मि य समए सामी, समोसढो तत्थ चेव वीरजिणो । भिक्खऽट्ठं च पविट्ठो, गोयमसामी वि नयरम्मि ॥८६॥

अह सत्तोयहिदीव–प्पवायमाऽऽयन्निऊण लोगाओ । विम्हियमणो नियत्तिय, समुचियसमयम्मि जयनाहं ॥८७॥

पुच्छेइ गोयमो नाह!, केत्तिया एत्थ दीवजलनिहिणो । जयगुरुणा संलत्तं, अस्संखा सिंधुदीव त्ति ॥८८॥

एवं जिणप्पणीयं, लोगाओ निसामिउं सिवो सहसा । संकाकंखो–वहओ, जावऽच्छइ ताव विब्भंगं ॥८९॥

परिवडियं से खिप्पं, ताहे अच्चन्तभत्तिभरभरिओ । सम्मन्नाणनिमित्तं, आगंतुं वंदए वीरं ॥९०॥

सिरविरइयकरकमलो, ठाउं सन्निहियभूमिभागे य । जिणवयणणिहियचक्खू, उज्जुत्तो पज्जुवासेइ ॥९१॥

अह तियसतिरियनरसंकुलाए, परिसाए तस्स य जिणिंदो । लोगसरूवं सासइ, सवित्थरं धम्मसारं च ॥९२॥

तं च निसामिय सम्मं, पडिबुद्धो जिणवरस्स पासम्मि । पव्वज्जं पडिवज्जइ, स महप्पा कयतवच्चरणो ॥९३॥

कम्मट्ठगंठिमऽइनिट्ठुरं पि, लीलाए निट्ठवेऊण । अरुयमऽजम्ममऽमरणं, सिवमऽक्खयसोक्खमऽणुपत्तो ॥९४॥

इय मुणियजगसरूवो, निस्संगो पत्थुयऽत्थसिद्धिकए । खवग! मणागं पि मणो–ऽणिजंतियं मा धरेज्जासु ॥९५॥

जहठियलोगसरूवं, वियाणमाणो य पयहिय पमायं । बोहीए दुल्लहत्तं, परमं भावेसु खवग! जहा ॥९६॥

"बोधिदुर्लभभावनास्वरूपम्" —

कम्मपरतंतयाए, इओ तओ भववणे भमंताणं । जीवाण जंगमत्तं पि, दुल्लभं जं सुए भणियं ॥९७॥

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसत्तपरिणामो । उप्पज्जंति चयंति य, पुणो वि तत्थेव तत्थेव ॥९८॥

कहकहवि जंगमत्ते, पत्ते पंचिंदियत्तमऽइदुलहं । जलथलखहयरजोणी–चक्के चिरसंचरणओ य ॥९९॥

तम्मि वि अगाहजलजलहि–खित्तजुगसमिलजोगनाएणं । दुलहं चिय मणुयत्तं, तम्मि वि अइदुल्लहा बोही ॥८८००॥

जमऽकम्मभूमिअंतर–दीवेसु मुणिविहारविरहेण । कत्तो पायं बोही, कम्मगभूमीए अंतो वि ॥१॥

छण्हं खंडाणं खंड–पंचगं सव्वहा वि हु अणज्जं । मज्झिमखंडस्स बहिं, धम्माऽणरिहं ति काऊण ॥२॥

जं पि भरहम्मि लद्धं, छट्ठं खंडं अउज्झमज्झेणं । सड्ढपणुवीसजणवय-वज्जमऽणज्जं तयं पि दढं ॥३॥
सड्ढपणुवीसजणवय-मेत्तं चिय खित्तमाऽऽरियं जं च । तत्थ वि साहुविहारो, कहिंपि कइया वि जं भणियं ॥४॥
रायगिह मगह[१] चंपा, अंगा[२] तह तामलित्ति वंगा य[३] । कंचणपुरं कलिंगा[४], वाणारसि चेव कासी य[५] ॥५॥
साएय कोसला[६] गय-पुरं च कुरु[७] सोरियं कुसट्टा य[८] । कंपिल्लं पंचाला[९], अहिछत्ता जंगला चेव[१०] ॥६॥
बारवती य सुरट्ठा[११], मिहिल विदेहा[१२] य वच्छ कोसंबी[१३] । नंदिपुरं संडिब्भा(ल्ला)[१४], भद्दिलपुरमेव मलया य[१५] ॥७॥
वइराड वच्छ[१६] वरणा, अच्छा[१७] तह मत्तियावइ दसन्ना[१८] । सोत्तीमइ य चेई[१९], वीइभयं सिंधुसोवीरा[२०] ॥८॥
महुरा य सूरसेणा[२१], पावा भंगी[२२] य मासपुरि वट्टा(च्छा)?[२३] । सावत्थी य कुणाला[२४], कोडीवरिसं च लाढा य[२५] ॥९॥
सेयविया वि य णयरी, केइयअद्धं च आरियं[२६] भणियं । एत्थुप्पत्ती जिणाणं, चक्कीणं रामकण्हाणं ॥१०॥
पुव्वेण अंगमागह-विसयं अह दाहिणेण कोसंबी । अवरेण (घू)थूणविसओ, कुणालविसयं च उत्तरओ ॥११॥
एयं आरियखेत्तं, एत्थ विहारो उ कप्पइ जईणं । बाहिं पुण नो कप्पइ, जत्थ च नाणाऽऽइ नोसप्पे ॥१२॥
जत्थ उण नेय मुणिणो, सम्मन्नाणाऽऽइगुणरयणनिहिणो । विहरंति वयणकिरणेहिं, हणियमिच्छत्ततमपसरा ॥१३॥
तम्मि पयंडपासंडि-मंडलीचंडवयणपवणेहिं । निरु रूयपूणिया इव, पणोल्लिया दुल्लहा बोही ॥१४॥
इय भो देवाणुपिया!, नाउं बोहीए परमदुलहत्तं । चिरकालभीमभवभमण-ओ तयं पाविऊणं च ॥१५॥
तह कहविं तए किच्चं, निच्चं, अच्चाऽऽयरेण जह तीए । लद्धाए तुडिवसेणं, साफल्लं जायए जम्हा ॥१६॥
लद्धेल्लियं च बोहिं, अकरेंतोऽणागयं च पत्थिंतो । अन्नं [1]दाइं बोहिं, लब्भिसि कयरेण मोल्लेण ॥१७॥
किंच—
कत्थइ सुहं सुरसमं, कत्थई निरओवमं महादुक्खं । कत्थइ तिरियाऽऽईणं, दहणंऽकणपमुहमऽवि असुहं ॥१८॥
दट्ठूण वि नियदिट्ठीए, किंचि किंचि वि परोवएसेणं । नाऊणं पि हु मूढा, न बोहिमऽणहं पवज्जंति ॥१९॥
जह नाम पट्टणगया, मोल्ले सन्ते वि मूढभावेण । न लहंति नरा लाभं, नरभवपत्ता वि तह बोहिं ॥२०॥
तहा—
चिंतामणिं व मूढा, सब्भावपरिक्खणं अयाणंता । कहमऽवि लद्धं पि हु बोहि-मुत्तमं झत्ति उज्झंति ॥२१॥
गयबोहिणो य पुणरवि, गवेसमाणा वि तं ण पावेंति । वणियंऽतरदिन्नाइं, रयणाइं वणियपुत्त व्व ॥२२॥
तथाहि—

"वणिकपुत्रदृष्टान्तः"

एगम्मि महानगरे, महिब्भजणसंकुले कलाकुसलो । वसइ सिवदत्तनामो, सेट्ठी सुपसंतनेवत्थो ॥२३॥
तस्स य जरभूयपिसाय-साइणीपमुहदोसहरणाणि । पायडपहावकलियाणि, संति विविहाणि रयणाणि ॥२४॥
ताणि य सो जीवियमिव, महानिहाणं व रक्खइ सया वि । दंसइ जहा तहा नेव, नियपुत्ताऽऽइयाणं पि ॥२५॥
अह तत्थ पुरे एगत्थ ऊसवे जत्तियाउ कोडीउ । अत्थस्स जस्स तेणं, इब्भेणं तेत्तियथयाओ ॥२६॥
उब्भवियाओ नियनिय-धवलहरऽग्गेसु ससहरसियाओ । ताओ य पलोइत्ता, भणिओ पुत्तेहिं सो सेट्ठी ॥२७॥
विक्किणसु ताय! रयणाइं, कुणेसु अत्थं इमेहिं किं कज्जं । कोडिज्झएहि गेहं, अम्हं पि हु सोहमुव्वहउ ॥२८॥
रुट्ठेण सेट्ठिणा जं-पियं तओ रे! पुणो वि मा एवं । भासेज्जह मह पुरओ, इमाइं न कहं पि विक्केमि ॥२९॥
एवमुवलद्धतन्नि-च्छएहिं पुत्तेहिं मोणमऽह विहियं । सेट्ठी वि कज्जवसओ, वीसत्थमणो गओ गामं ॥३०॥
पुत्तेहि वि विजणं जाणिऊण, अविमरिसियऽन्नकज्जेहिं । दूरदिसाऽऽगयवणियाण, ताणि रयणाणि दिन्नाणि ॥३१॥
तव्विक्कयपत्तपभूयदव्व-कोडिअणुरूवसंखाए । संखधवलाउ गेहे, उब्भविया उ धयवडा तो ॥३२॥
केवइकालाउ आगयो य, सेट्ठी पलोइउं गेहं । विम्हइयमणो सहसा, पुच्छइ पुत्ते किमेयं ति ॥३३॥
सिट्ठो य तेहिं सव्वो, वुत्तंतो तो दढं परुट्ठेणं । निट्ठुरगिराहि सुचिरं, निब्भच्छित्ता अतुच्छाहिं ॥३४॥
ताणि रयणाणि घेत्तुं, एज्जह मे मंदिरम्मि इइ भणिउं । कंठे हठेण धरिउं, निच्छूढा नियगेहाओ ॥३५॥
कह ते पुणो वरागा, दूरदिसोवगयवणियपासाओ । नियरयणाणि पावेंति, नूणं सुचिरं भमंता वि ॥३६॥
अहवा लभंति ते वि हु, कहिं पि रयणाइं देवयाऽऽइवसा । बोही उ न पब्भट्ठा, लब्भइ अच्चंतदुल्लंभा ॥३७॥

1. दाइं = दायिनम्, बोधिदातारम् इत्यर्थः ।

किंच—
जाहे य पावियव्वं, इहपरलोए य होइ कल्लाणं । ताहे च्चिय जिणभणियं, पडिवज्जइ भावओ धम्मं ॥३८॥
जह जह दोसोवरमो, जह जह विसएसु होइ वेरग्गं । तह तह विन्नायव्वं, आसण्णो बोहिलाभो त्ति ॥३९॥
दुग्गे भवकंतारे, भममाणेहिं सुइरं पि नट्ठेहिं । इट्ठो जिणोवइट्ठो, सोग्गइमग्गो दढं दुलहो ॥४०॥
पत्ते वि हु मणुयत्ते, मोहस्सुदएण दुल्लहो सुपहो । कुपहबहुयत्तणेण य, विसयसुहाणं च लोभेण ॥४१॥
बहुमोल्लरयणनिहिलाभ-सन्निहं पाविऊण तं तम्हा । मा तुच्छसुहाण कए, एमेव य निप्फलं नेसु ॥४२॥
लद्धाए दुल्लहाए वि, कहवि बोहीए एत्थ संसारे । दुल्लहो धम्माऽऽयरिओ, पयडं चिय जेण पेच्छ इमं ॥४३॥
रयणऽत्थिणो य थोवा, तद्दायारो य जह य लोगम्मि । इय सुद्धधम्मरयणऽत्थि-दायगा दढयरं नेया ॥४४॥
एत्थ य [1]सत्थुत्तकसाऽऽइ-सुद्धधम्मस्स दायगा गुरुणो । साहुत्तणे जहुत्ते, ते पुण पावेंति सुगुरुत्तं ॥४५॥
एत्तो च्चिय णिद्दिट्ठो, विसिट्ठदिट्ठीहिं भावसाहु त्ति । हंदि पमाणठियत्थो, तं च पमाणं इमं होइ ॥४६॥
सत्थुत्तगुणो साहू, न सेस इइ णे पइन्न इह हेऊ । अगुणत्ता इति नेओ, दिट्ठंतो पुण सुवण्णं व ॥४७॥

"सुवर्णस्याष्टगुणैः धर्मगुरुः परीक्षा-सद्गुरोःस्वरूपम्" —

विसघाइ[1] रसायण[2] मंगलत्थ[3]-विणिए[4] पयाहिणाऽऽवत्ते[5] । गरुए[6] अडज्झ[7]ऽकुच्छे[8], अट्ठ सुवन्ने गुणा होंति ॥४८॥
इय मोहविसं घायइ, सिवोवएसा रसायणं होइ । गुणओ य मंगलत्थं, कुणइ विणीओ य जोगो त्ति ॥४९॥
मग्गाऽणुसारिपयाहिण-गंभीरो गरुयओ तहा होइ । कोहऽग्गिणा अडज्झो, अकुच्छ सइ सीलभावेणं ॥५०॥
एवं दिट्ठन्तगुणा, सज्झम्मि वि एत्थ होंति नायव्वा । न हि साहम्माऽभावे, पायं जं होइ दिट्ठंतो ॥५१॥
चउकारणपरिसुद्धं, कसछेयत्तावतालणाए य । जं तं विसघाइरसा-यणाऽऽइगुणसंजुयं होइ ॥५२॥
इयरम्मि कसाऽऽईया, विसिट्ठलेसा तहेगसारत्तं । अवगारिणि अणुकंपा, वसणे अइनिच्चलं चित्तं ॥५३॥
तं कसिणगुणोवेयं, होइ सुवण्णं न सेसयं जुत्ती । न वि नामरुवमेत्तेण, एवमऽगुणो भवइ साहू ॥५४॥
जुत्तीसुवन्नगं पुण, सुवन्नवन्नं पि जइ वि कीरेज्जा । न हु होइ तं सुवण्णं, सेसेहिं गुणेहिं असंतेहिं ॥५५॥
जे इह सत्थे भणिया, साहुगुणा तेहिं होइ सो साहू । वन्नेणं जच्चसुवन्न-गं व संते गुणनिहिम्मि ॥५६॥
जो साहुगुणरहिओ, भिक्खं हिंडइ न होइ सो साहू । वन्नेणं जुत्तिसुवन्न-गं वऽसंते गुणनिहिम्मि ॥५७॥
उद्दिट्ठकडं भुंजइ, छक्कायपमद्दणो घरं कुणइ । पच्चक्खं च जलगए, जो पियइ कहं नु सो साहू ॥५८॥
अन्ने उ कसाऽऽईया, किल एए एत्थ होंति नायव्वा । एयाहि परिक्खाहिं, साहुपरिक्खेह कायव्वा ॥५९॥
तम्हा जे इह सत्थे, साहुगुणा तेहिं होइ सो साहू । अच्चन्तसुपरिसुद्धेहिं, मोक्खसिद्धित्ति काऊणं ॥६०॥
इय मोक्खसाहगगुणाण, साहणा देसिओ य जो साहू । धम्मोवएसगिरणा, सो चेव गुरू वि ता एत्तो ॥६१॥
नीसेससाहुगुणरयणाऽ-लंकियतणुस्स वि गुरुस्स । सविसेसमऽसेसजणं, विबोहिउं भण्णइ परिक्खा ॥६२॥
सा पुण परलोयपरंमुहस्स, इहलोगबद्धबुद्धिस्स । सद्धम्मवासणाविर-हियस्स विसओ न होइ तहा ॥६३॥
लोइयठिईए जो वि य, जणणीजणए वि देवयब्भूए । दुपरिच्चए चइत्ता, निस्सीकाऊण कं पि नरं ॥६४॥
सुयविमुहो गड्डरिया-पवाहमेत्ताऽणुसारिचरिओ य । धम्मऽत्थी वि सबुद्धीए, कट्ठाऽणुट्ठाणविहियरुई ॥६५॥
मग्गं पि चरिउकामो, चरमाणो वा मुणी तहारुवो । तस्स वि न चेव जायइ, विसओ एसा गुरुपरिक्खा ॥६६॥
भावियभवनेगुन्नस्स, जंतुणो जायभवविरागस्स । सद्धम्मपरुवगगुरु-गवेसिणो तणु इमा विसओ ॥६७॥
ता भवभयभीएणं, भविणा सद्धम्मबद्धलक्खेणं । धणवं व दरिद्देणं, तरंडमिव जलहिपडिएण ॥६८॥
इह परमपयपुरप्पह-पयट्टपाणीण परमसत्थाहो । सन्नाणाऽऽइगुणगुरू, परिक्खियव्वो गुरू णिउणं ॥६९॥
तुच्छप्फलो वि एक्को वि, रुवगो जइ परिक्खिउं गज्झो । परमफलओ गुरू ता, परिक्खियव्वो पयत्तेणं ॥७०॥
करितुरयाऽऽइ जह जए, सुगुणं ति मुणिज्जए सुचिंधेहिं । तह सुहगुरू वि नेओ, धम्मुज्जमणाऽऽइलक्खणओ॥७१॥
धम्मऽत्थकाममोक्खा, चत्तारि भवंति एत्थ पुरिसत्था । ते सुहगुरुवएसा, लब्भंति विणा किलेसेणं ॥७२॥
इह जोगिणो कयत्था, विसिट्ठनाणाऽवलोइयपयत्था । दक्खा सावाऽणुग्गह-करणे गुरुसंगमा होंति ॥७३॥
तिहुयणभवणऽब्भंतर-पसरंतऽन्नाणतिमिरभरहरणे । सज्जोइदित्तरुवो, पावपयंगक्खए दक्खो ॥७४॥

1. शास्त्रोक्तकषादिशुद्धधर्मस्य ।

वंछियपयत्थपयडण-परो य न भवेज्ज जइ गुरुपईवो । अंधबहिरं इमं तो, जगं वरायं कहं हुन्तं ॥७५॥
गच्छइ य समुच्छेयं, जह नाम सुवेज्जवयणओ वाही । तह सुहगुरुवएसाउ, कम्मवाही वि विन्नेयो ॥७६॥
कलिकालकयलियजए, वंछियविविहफलदाणदुल्ललिओ । अक्खंडगुणो सक्खा, होइ गुरु कप्परुक्खो व्व ॥७७॥
सम्मत्तनाणचरणाऽऽ-इएहिं भवजलहितारणसहेहिं । निव्वाणकारणेहि य, गुणेहिं गरुओ गुरु होइ ॥७८॥
देसकुलजाइरुवाऽऽइ-गुणजुओ चत्तसव्वसावज्जो । सुहगुरुदिन्नगुरुपओ, पसममहप्पा गुरु भणिओ ॥७९॥
सयलाऽणत्थनिहाणं, मज्जं वज्जेइ जो सयाकालं । मंसं च असुइमूलं, गुरुत्तणं तस्स होइ फुडं ॥८०॥
हलखेत्तगाविमहिसी-घरघरिणीपुत्तभंडववहारो । सीसस्स य गुरुणो वि हु, जइ ता सरियं गुरुत्तेण ॥८१॥
पावाऽऽरंभा सीसस्स, जे उ ते चेव होंति गुरुणो वि । जइ ता लीलाए च्चिय, भवंऽबुरासी अहो! तिण्णो॥८२॥
पाणऽच्चए वि पीडं, परस्स न हु सव्वहा विचिंतेइ । जीवाण जणणिसरिसो, करुणेक्करसो गुरु कहियो ॥८३॥
विसयामिसे पसत्तो, पुरिसो परवंचणे मणं कुणइ । ता जो विसयविरत्तो, परमत्थेणं स चेव गुरु ॥८४॥
निच्चं अकयमऽकारिय-मऽणणुमयं सयलदोसपरिहीणं । बालगिलाणाऽऽइए, संभोइत्ता जहाजोगं ॥८५॥
वेयावच्चाऽऽइकारणेहिं, इंगालधूमपरिहीणं । जो उवभुंजइ उंछं, सो च्चिय सच्चं गुरु भणिओ ॥८६॥
दव्वं खेत्तं कालं, भावं च पडुच्च णिच्चकालं पि । जो पडिबंधच्चाई, सो च्चिय सच्चं गुरु भणिआ ॥८७॥
वासांइ महामुणिणो, तवसुसियतणू वि जत्थ पडिभग्गा । तं घोरबंभचेरं, चरंतओ चेव भावगुरु ॥८८॥
निच्चसमुच्छलणपरं, सपरोभयविसयमऽवि कसायऽग्गिं । पसमोवएससलिलेण, जो य उवसामणसमत्थो ॥८९॥
खंतिप्पमोक्खदसविह-निम्मलमुणिधम्मगुणमणिगणस्स । रोहणगिरिभूमिसमो, जिणनिद्दिट्ठो स इट्ठगुरु ॥९०॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, जमनियमपरायणो महासत्तो । समयाऽमयरसतित्तो, जो सो भणिओ उ भावगुरु ॥९१॥
सक्कयपाययअवहट्ठ-देसीभासाविसेसवयणेहिं । सीसाऽवबोहकुसलो, पियंवओ होइ भावगुरु ॥९२॥
जह रन्नो रंकस्स वि, तहेव समसरिसचित्तवित्तीए । अक्खंतो सद्धम्मं, भावपहाणो गुरु होइ ॥९३॥
समसुहदुक्खो समतिण-मणी य समकणयकयवरो धीरो । समपरिभवसम्माणो, समसुहिसत्तू य होइ गुरु ॥९४॥
सारीरमाणसाऽणेग-दुक्खसंतावतावियजणाण । तुहिणाऽऽयरो व्व सिसिरो, जो होइ गुरुत्तणं तस्स ॥९५॥
संवेगगब्भहियओ, सम्मं संवेगगब्भवयणो य । संवेगगब्भकिरियो, जो सो परमत्थओ सुगुरु ॥९६॥
सावज्जऽणवज्जगिरं, जाणइ जो वज्जई य सावज्जं । निरवज्जं कज्जे च्चिय, वज्जरइ य तं गुरुं [1]सयउ ॥९७॥
सावज्जऽणवज्जाणं, वयणाणं जो न जाणइ विसेसं । वोत्तुं पि तस्स न खमं, किमंऽग! पुण देसणं काउं ॥९८॥
ता हेउवायपक्खम्मि, हेऊओ आगमे य आगमिओ । जो स गुरु इयरो पुण, जिणवयणविराहगो जम्हा ॥९९॥
नियमइअवराहेणं, असंगयऽत्थाण पोसगो मूढो । जणयइ परस्स बुद्धिं, सव्वन्नू अलियवाई त्ति ॥८९००॥
दुरऽहीयकुनयलवमय-विमोहिओ जिणमयं अयाणंतो । [2]वोत्तुं तमऽन्नहा वि हु, कुगईए गमेइ सपरुभयं ॥१॥
तम्हा—
ससमयपरसमयविऊ[१], संविग्गो[२] सेसयाण संवेगं । जणयंतो[३] मज्झत्थो[४], कयकरणो[५] गाहणाकुसलो[६] ॥२॥
सत्तुवयारम्मि रओ[७], दढप्पइन्नो[८] ऽणुवत्तओ[९] मइमं[१०] । अरिहइ जिणिंदभणियं, धम्मं परिसाए परिकहिउं ॥३॥
ससमयपरसमयविऊ, तित्थियसमयाउ दंसइ विसेसं । जिणधम्मस्स अओ सो, उच्छाहं कुणइ जिणधम्मे ॥४॥
सुत्तत्थं च पयासइ, निस्सेसनएहिं जिणमयन्नू य । उस्सग्गऽववायाणं, जहट्ठियं दंसइ विसेसं ॥५॥
संविग्गो सब्भावं, कहेइ इइ पच्चओ न इयरम्मि । चरणकरणं चयंतो, चएज्ज सव्वंपि ववहारं ॥६॥
गुणसुट्ठियस्स वयणं, घयमहुसित्तो व्व पावओ भाइ । गुणहीणस्स न सोहइ, नेहविहीणो जहा दीवो ॥७॥
आयारे वट्टंतो, आयारपरुवणे असंकेओ । आयारपरिब्भट्ठो, सुद्धचरणदेसणे भइओ ॥८॥
भवसयसहस्सलद्धं, जिणवयणं भावओ चयंतस्स । जस्स न जायं दुक्खं, न तस्स दुक्खं परे दुहिए ॥९॥
जहथाममुज्जमंतो, संवेगं कुणइ तह य मज्झत्थो । अब्भुट्ठिएऽणुगिण्हइ, कयकरणो गाहणाकुसलो ॥१०॥
सत्तुवयारम्मि रओ, थिरपरिचियमऽत्थसुत्तमऽगिलाए । पुणरुत्तवाणिदाणाऽऽइ-णाउ सेहे करावेइ ॥११॥

1. श्रयतु । 2. उक्त्वा ।

सेवेइ नाऽववायं, मियाण पुरओ दढपइन्नो त्ति [दारं] । अणुवत्तगो अणुवत्तइ, जहजोग्गं बहुविहविणेए ॥१२॥
मइमं जाणइ नियमा, उस्सग्गऽववायगोयरमऽसेसं । परिणामगाऽऽइसीसे य, विविहमयदेसणाजोग्गे ॥१३॥
पुढविं पिव सव्वसहं, मेरुं व अकंपियं ठियं धम्मे । चंदमिव सोमलेसं, तं धम्मगुरुं पसंसंति ॥१४॥
कालन्नुं देसन्नुं, नाणाविहहेउकारणविहन्नुं । संगहुवग्गहकुसलं, तं धम्मगुरुं पसंसंति ॥१५॥
लोइयवेइयलोउत्तरेसु, नाणाविहेसु सत्थेसु । लद्धट्ठं गहियट्ठं, तं धम्मगुरुं पसंसंति ॥१६॥
धम्मगुरुसहस्साइं, लहइ य जीवो भवेसु बहुएसु । कम्मेसु सिप्पेसु य, अन्नेसु य धम्मचरणेसु ॥१७॥
जो पुण जिणप्पणीए, निग्गंथे पवयणम्मि धम्मगुरु । संसारमोक्खमग्गस्स, देसओ स इह दुल्लंभो ॥१८॥
जह दीवा दीवसयं, पइप्पएसो य दिप्पए दीवो । दीवसमो धम्मगुरू, अप्पं च परं च दीवेइ ॥१९॥
धम्मन्नू धम्मपरायणो य, सम्मं च धम्मकत्ता य । सत्ताण धम्मसत्थऽत्थ-देसगो भण्णए सुगुरू ॥२०॥
चाणक्कपंचतंतय-कामंदकमाऽऽइरायनीईउ । वक्खाणंतो जीवाण, ण खलु अणुकंपओ होइ ॥२१॥
तह जोइसऽग्घकंडाऽऽइ, वेज्जयं मणुयतुरयहत्थीणं । धणुवेयधाउवायं च, परिकहंतो हणइ जीवे ॥२२॥
वावीकूवतडागाइ-गोयरं न खलु देइ उवएसं । जमऽसंखविणासेणं, न होइ थोवाणमऽणुकंपा ॥२३॥
एत्तो च्चिय सो हलसगड-पोयसंगामगोहणाऽऽईसु । उवएसं पि हु कहं देइ, सत्तअणुकंपसंजुत्तो ॥२४॥
ता कसछेयाऽऽइविसुद्ध-धम्मगुणकणगदायगस्सेव । गुरुणो इह पत्थुयभाव-णाए दुलहत्तणं भणियं ॥२५॥
इय भावणाउ बारस, भद्दय! संवेगसारचित्तेण । भावेसु भीमभवभित्ति-भंजणे करिघडाउ व्व ॥२६॥
जह जह दढप्पइण्णो, समणो वेरग्गभावणं कुणइ । तह तह असुहं सूराऽऽ-हयं व तिमिरं खयमुवेइ ॥२७॥
पइसमयभावणाभाव-णेण सब्भावनिब्भरं भविणो । मयणं व तिव्वतरजलण-संगमा गलइ चिरकम्मं ॥२८॥
एइ न बंधं नवकम्मं, अवितहा भावणापहाणस्स । छिज्जंति चिब्भडुब्भड-गंधा सुकुमारियाउ व्व ॥२९॥
अक्खंडचंडमायंड-किरणकवलियहिमोवलो व्व खयं । वच्चइ कम्मपबंधो, असुहो सुहभावणाहिंतो ॥३०॥
ता सुंदर! दरमउलंत-लोयणो झाणजोगनिद्दाए । बारसगमऽसंगो भाव-णाण भावेसु भवभीओ ॥३१॥
इय बारसविहभावण-पडलपडिद्दारमेयमऽक्खायं । कित्तेमि सीलपालण-पडिदारं पन्नरसमेत्तो ॥३२॥

"शीलपालनद्वारम्" --

सीलं पुरिससहावो, सीलं चारित्तपालणं भणियं । आसवदारनिरोहा, अहवा सीलं मणसमाही ॥३३॥
पुरिससहावो य दुहा, पसत्थओ तह य अप्पसत्थो य । रागद्दोसाऽऽईहिं, कलुसो जो अप्पसत्थो सो ॥३४॥
होइ पसत्थो चित्तस्स, सरलया पयणुरागदोसित्तं । धम्माऽभिप्पाइत्तं च, एत्थ पगयं पसत्थेणं ॥३५॥
एयं सुपसत्थसहाव-लक्खणं सीलमऽविगलं जस्स । सो मूलगुणाऽऽधारो, धरिही सेसं पि गुणनियरं ॥३६॥
चयरित्तीकरणाओ, चारित्तं पुण भवे अणुट्ठाणं । विहिपडिसेहाऽणुगयं, आसवविरईए तं च भवे ॥३७॥
जम्हा चरित्तपालण-लक्खणसीलस्स चेव वुड्ढिकए । आसवनिरुंभणपरं, इममुवएसं दिसंति जहा ॥३८॥
इंदियदमणं काउं, कसायसेन्नं पि निम्महिय सव्वं । आसवदारनिरोहे, जइज्ज सइ निज्जरापेही ॥३९॥
इंदियकसायहणणा, हणिय च्चिय आसवा जओ होइ । अहियाऽऽहारे मुक्के, रोगा इव आउरजणस्स ॥४०॥
एत्तो च्चिय सव्वेसु वि, जिएसु वट्टंति अप्पए व्व मुणी । न य एत्तो वि उवाओ, अन्नो विज्जइ सुगइलाभे ॥४१॥
ता नाणज्झाणेहिं, तवोबलेण य बला निरुंभित्ता । सव्वाऽऽसवदाराइं, धारेज्जा अविगलं सीलं ॥४२॥
तह मणसमाहिलक्खण-मऽवि सीलं मोक्खसाहणगुणाणं । जाणाहि मूलकारण-भूयं जम्हा सुए भणियं ॥४३॥
जस्स धिई तस्स तवो, जस्स तवो तस्स सोग्गइ सुलहा । जे अधिइमंतपुरिसा, तवो वि खलु दुल्लहो तेसिं ॥४४॥
किंच मणवयणकाया, जे भणिया करणसन्निया तिन्नि । ते धितिमंतस्स गुणाय, होंति दोसाय इयरस्स ॥४५॥
तम्हा पुरंधिपडिबंध-बंधणं दुहनिबंधणं धुणिउं । सामन्नं पडिवन्ना, धण्णा भवभवणनिव्विण्णा ॥४६॥
धण्णा सत्तहियाइं, सुणंति धण्णा करेंति निसुयाइं । धन्ना सोग्गइमग्गे, रमंति सीले गुणुप्पीले ॥४७॥
सन्नाणवायसहितो, सीलुज्जलिओ विगिट्ठतवजलणो । संसारमूलबीयं, दहइ दवऽग्गी व तणरासिं ॥४८॥
निम्मलसीलधराणं, इहलोए चेव तह य परलोए । गउरवमुवेइ अप्पा, परमप्पा एस चेव त्ति ॥४९॥

अच्चंतमहाघोरा वि, आवया सच्चसंथणपरेहिं । लीलाए नित्थरिज्जइ, सोच्छाहं सीलबलिएहिं ॥५०॥
सीलसमलंकियाणं, मरणं पि वरं खु तक्खणा चेव । चिरजीवियं पि मा पुण, सीलाऽलंकारचुक्काणं ॥५१॥
वरमऽरिघरेसु भिक्खा, अभिक्खणं भमडिया सुसीलेणं । चक्कित्तणं पि मा पुण, परिमलियविसालसीलस्स ॥५२॥
गरुयगिरितुंगसिंगा, वरं खु विसमे कहिं पि पडिऊण । दढकढिणपत्थरंऽतो, अप्पा सयसिक्करं नीओ ॥५३॥
परिकुवियफारफुंकार-घोररुहिराऽरुणऽच्छिदुप्पेच्छे । वरमऽहिमुहम्मि हत्थो, पक्खित्तो तिक्खदसणम्मि ॥५४॥
गयणविसप्पणदुप्पेच्छ-पचुरजालाकलावकलियम्मि । वरमऽप्पा पक्खित्तो, खयऽग्गिकुंडे पयंडम्मि ॥५५॥
मत्तकरिकरडपुडपाडणेक्क-दप्पिट्ठदुट्ठकेसरिणो । वरमाऽऽणणे पवेसो, सुतिक्खदढदाढकढिणम्मि ॥५६॥
मा पुण सुदीहकालं, परिवालियविमलसीलरयणस्स । हे वच्छ! तए भवसुह-कएण विहिओ परिच्चाओ ॥५७॥
सीलाऽलंकाराऽलं-किओ हु अधणो वि होइ जणपुज्जो । दुस्सीलो पुण धणवं-तओ वि सयणेसु वि न पुज्जो॥५८॥
विमलं सीलं पालिंतगाण, चिरकालजीवियं होउ । पावाऽऽसत्ताणं पुण, न किंचि चिरजीवियव्वेण ॥५९॥
ता भो धम्मगुणाऽऽगर!, गरलं व वमित्तु दुट्ठसीलत्तं । आराहणाकयमणो, मणहरहरिणंऽककरविमलं ॥६०॥
हयभववंसकरीलं, चित्तचमक्कियसुराऽसुरुप्पीलं । सिवपुरनिवेसकीलं, परिवज्जियजीवपरिपीलं ॥६१॥
कुगइपहविहियहीलं पावपवित्तीए कयगयनिमीलं । परमपयललणलीलं, परिपालसु निम्मलं सीलं ॥६२॥
सीलपरिपालणादार-मेवमऽक्खायमिण्हि सोलसमं । इंदियदमाऽभिहाणं, पडिदारं किंपि दंसेमि ॥६३॥

"इन्द्रियदमनद्वारस्वरूपम्" —

इंदो जीवो तस्स उ, इमाणि तेणिंदियाणि भन्नंति । नाणाऽऽइगुणसिरीए, स पुण जिओ ललणपासादो॥६४॥
तस्स गवक्खाऽऽइपभूय-दारकप्पाणि इंदियाणि धुवं । नियनिययविसयविरमण-कवाडविरहेण पुण तेसु ॥६५॥
पविसन्तपउरकुवियप्प-कप्पणापावपंसुपूरेण । ओमइलिज्जइ जोण्हु-ज्जला वि नाणाऽऽइगुणलच्छी ॥६६॥
अहवा अनिरुद्धिंदिय-दारे पविसित्तु जीवपासाए । हयविसयचंडचरडा, नाणाऽऽइसिरिं अवहरंति ॥६७॥
एवमऽवगम्म सम्मं, तस्संरक्खणकए कयपयत्तो । सव्वेंदियदाराइं, सुनिरुद्धाइं धरसु धीर! ॥६८॥
ससमयपरसमयमया-ऽवगाहगरुयं पि पंडियं पि नरं । बलवं इंदियगामो, गंजइ अनिरुद्धपडिपसरो ॥६९॥
धरउ वयं चरउ तवं, सरउ गुरुं झरउ सुत्तअत्थे वि । इंदियदमपरिहीणस्स, तस्स तुसकंडणं सव्वं ॥७०॥
मयचंडगंडमंडल-करडिघडाविहडणेक्कपडुओ वि । जइ नेव इंदियजई, ता सो च्चिय कायरो पढमो ॥७१॥
ताव च्चिय गरुयत्तं, ताव च्चिय भुवणभूसणा कित्ती । संभावणा वि पुरिसस्स, ताव जाविंदियाणि वसे ॥७२॥
अह सो च्चिय ताण वसे, जायइ जइ ता कुले जसे धम्मे । संघे गुरुसुहिवग्गे, देइ मसीकुच्चयमऽवस्सं ॥७३॥
दीणत्तमणादेयत्तणं च, सव्वाऽभिसंकणीयत्तं । किं किं तमऽणिट्ठं जं, इंदियवसगा न पावेंति ॥७४॥
भिज्जइ गिरि वि सिरसा, पिज्जइ जालाकरालजलणो वि । खग्गऽग्गे वि चरिज्जइ, दुदमा पुण इंदियतुरंगा ॥७५॥
विसयाऽरन्नपयन्नो, अणवरयमऽणंकुसं व दुद्दन्तो । भंजंतो सीलवणं, ओ वियरइ इंदियगइंदो ॥७६॥
तत्तं दिसंति तवमऽवि, तवन्ति पालिंति संजमगुणे वि । इंदियनिरोहकरणे, रणे व्व कीवा विसीयंति ॥७७॥
सक्को जमऽच्छिबहुलो, जं च हरी [1]वयवहूविहियहासो । भट्टारओ विरिंची वि, जं च जाओ चउव्वयणो ॥७८॥
निद्दड्ढाऽणंगो वि हु, जमऽद्धनारीसरो किर हरो वि । तं दुज्जयस्स विलसिय-मऽसेसमिंदियनरिंदस्स ॥७९॥
पंचण्ह वसे होउं, होइ वसे सयलजीवलोगस्स । पंचण्ह जयं काउं, जयइ समत्थं तिहुयणं पि ॥८०॥
जइ नेव इंदियदमो, विहिओ ता किमिह सेसधम्मेहिं । अह सो वि कओ सम्मं, तहा वि किं सेसधम्मेहिं ॥८१॥
अहह! बलवत्तमिंदिय-गामस्स जमऽत्थिणो वि तं दमिउं । सक्कंति नेव समय-प्पसिद्धतदुवायविउणो वि ॥८२॥
मोत्तूण जिणे जिणमयठिए य, पहवंतइंदियबलाइं । न जिणिंसु जिणइ जेस्सइ, मन्ने अन्नो तिहुयणे वि ॥८३॥
सो च्चिय सूरो सो चेव, पंडिओ नणु गुणी वि सो चेव । सो चेव कुलपईवो, इंदियविजई जए जो उ ॥८४॥
तस्स गुणा तस्स जसो, तस्स सुहं पाणिपल्लवऽल्लीणं । तस्स थिई सो मइमं, जयम्मि जो इंदियदमत्थो ॥८५॥
जं सग्गे सुरराया, विलसइ सुरसेणिपणयपयकमलो । फणिमणिपहपहयतमो, जं च फणिंदो वि पायाले ॥८६॥
जं च निहयाऽरिचक्कं, चक्कं चक्किस्स करयले ललइ । तं दिंतिंदियदमलव-लीलाए विलसियं सव्वं ॥८७॥

1. व्रजवधूविहितहासः ।

तं नमह तं पसंससह, तं सेवह तं विहेह य सहायं । जेण य वसं नीओ, दुद्दंतो इंदियगइंदो ॥८८॥
सुगुरू स चेव देवो, तस्स नमो तेण भूसियं भवणं । न विसयपवणहओ वि हु, इंदियअग्गी जलइ जस्स ॥८९॥
तेण सुलद्धो· जम्मो, जीवियमऽवि तस्स चेय इह सहलं । जेण णिरुद्धो पसरो, इमस्स दुट्ठिंदियबलस्स ॥९०॥
ता भो देवाणुप्पिय!, पियं भणामो तुमं पि तह कह वि । चेट्ठसु जहिंदियाइं, आयारामाइं जायंति ॥९१॥
इंदियपभवं सोक्खं, सोक्खाऽऽभासो स न उण तं सोक्खं । तं पि हु कम्मोवचयाय, सो वि दुक्खेक्कहेउ त्ति॥९२॥
इंदियविसयपसत्ता, पडंति संसारकंदरे घोरे । पक्खि व्व छिन्नपक्खा, सुसीलगुणपेहुणविहीणा ॥९३॥
महुलित्तं असिधारं, जहा लिहंतो सुहं मुणइ पुरिसो । इंदियविसयसुहं तह, भयावहं पि हु अणुभवंतो ॥९४॥
सुट्ठु वि मग्गिज्जंतो, कत्थइ पयलीए नत्थि जह सारो । इंदियविसएसु तहा, नत्थि सुहं सुट्ठु वि गविट्ठं ॥९५॥
गिम्हुम्हहयस्स दुहं, जह धावंतस्स विरलतरुहेट्ठा । छायासुहमऽप्पं चिय, इंदियसोक्खं पि तह जाण ॥९६॥
अहह! कहमऽप्पणिज्जो, चिरमुवयरिओ वि इंदियग्गामो । विसयपसत्तो संतो, सत्तुजणं पि हु विसेसेइ ॥९७॥
जो इंदियाण छंदे, वट्टइ मोहेण मोहिओ संतो । सत्तू तस्सऽप्पा चेव, अप्पणो, तिक्खदुक्खकरो ॥९८॥

"इन्द्रिय-अविजये भद्रादीनां दृष्टान्तः" —

सोइंदिएण भद्दा, चक्खूराएण समरधीरनिवो । घाणेण रायपुत्तो, निहओ रसणाए सोयासो ॥९९॥
फासिंदिएण दिट्ठो, नट्ठो सयवारनयरवत्थव्वो । एक्केक्केण वि निहया, किं पुण जो पंचसु पसत्तो ॥९०००॥
एयाण य भावत्थं, जहक्कमं साहिमो समासेणं । तत्थेमं अवसेयं, सोइंदियगोयरं नायं ॥१॥
नयरम्मि वसंतपुरे, अच्चन्तं सुस्सरो विरूवी य । नामेण पुप्फसालो त्ति, गायणो आसि सुपसिद्धो ॥२॥
तत्थेव पुरे एगो, सत्थाहो सो गओ परं देसं । भद्द त्ति तस्स भज्जा, घरवावारं विचिंतेइ ॥३॥
तीए य एगया कार-णेण केणाऽवि निययचेडीओ । हट्टम्मि पेसियाओ, ताओ पुण पुप्फसालस्स ॥४॥
किन्नरपडिरूवसरेण, गायमाणस्स भूरिजणपुरओ । गीयरवं सोऊणं, ठियाउ भित्तीए लिहिय व्व ॥५॥
चिरवेलं अच्छित्ता, नियमंदिरमाऽऽगयाउ कुवियाए । तत्तो भद्दाए व्वज्जि-याओ फरुसेहिं वयणेहिं ॥६॥
भणियं च ताहिं सामिणि!, मा रूससु सुणसु तत्थ अम्हेहिं । तं किर सुयं पसूण वि, जं हरइ मणं किमऽण्णेसिं॥७॥
भणियं भद्दाए कहं ति, तयऽणु ताहिं निवेइयं सव्वं । तो तीए चिंतियं कह, सो दट्ठव्वो महाभागो ॥८॥
एगम्मि य पत्थावे, जत्ता पारंभिया सुरगिहम्मि । लोगो य तहिं सव्वो, वच्चइ दट्ठुं नियत्तइ य ॥९॥
भद्दा वि दासचेडीहिं, परिवुडा उग्गयम्मि सूरम्मि । तत्थ गया गाइत्ता, परिसंतो पुप्फसालो वि ॥१०॥
तम्मि सुरमंदिरपरि-सरम्मि सुत्तो कहं पि चेडीहिं । दिट्ठो सिट्ठो य स एस, पुप्फसालो त्ति भद्दाए ॥११॥
अह तं चिविडियनासं, बीभच्छुट्ठं दंतुरं मडहवच्छं । पेच्छित्ता हुं दिट्ठं, रूवेण वि गेयमेयस्स ॥१२॥
इय जंपिरीए तीए, निच्छूढं दूरवलियवयणाए । सुत्तुट्ठियस्स एयं, कुसीलवेहिं च सिट्ठं से ॥१३॥
सोऊण इ॰ं सो कोव-दावनिद्दज्झमाणसव्वंऽगो । हद्धी! सा वि हयाऽऽसा, वणिणो गिहिणी ममं हसइ ॥१४॥
इय असरिसअमरिसवस-विस्सुमरियनिययसव्ववावारो । अवयारं काउमणो, तीए गेहम्मि संपत्तो ॥१५॥
पारद्धो य कलगिरं, पउत्थवइयानिबद्धवित्तंतं । अच्चन्तमाऽऽयरेणं, गाइउमेवं जहा तुज्झ ॥१६॥
पुच्छइ वत्तं सत्थाऽ-हिवो दढं पेसइ सया लेहं । तुह नामग्गहणेणं, परं पमोयं समुव्वहइ ॥१७॥
तुह दंसणूसुओ एस, एइ इण्हिं गिहम्मि पविसइ य । एमाऽऽइ तह कहं पि हु, तेणं गीयं पुरो तीसे ॥१८॥
जह सा सव्वं सच्चं, इमं ति एइ य पई त्ति मण्णंती । अब्भुट्ठिउं विमुंचइ, आगासतलाओ अप्पाणं ॥१९॥
अइउच्चभूमिगावडण-घायसंजायजीयनीहरणी । जिणमज्जणसमए हरि-तणु व्व पंचत्तमऽणुपत्ता ॥२०॥
कालक्कमेण तीसे, समागओ निसुणिउं पई वत्तं । मुणिउं च [1]पईवत्तं, अच्चन्तं पुप्फसालस्स ॥२१॥
सो वाहराविऊणं, विसिट्ठतरभोयणेण आकंठं । भुंजाविऊण वुत्तो, गायंतो भद्द! पासायं ॥२२॥
आरोहसु त्ति तो सो, अच्चन्तं गाढगेयदप्पेण । गायंतो आरूढो, भवणोवरि सव्वसत्तीए ॥२३॥
अह गेयपरिस्समवड्ढमाण-वेगुड्ढसासफुट्टसिरो । निहणं गओ वरागो, सोइंदियमिय महादोसं ॥२४॥

1. पईवत्तं = प्रतीपत्वम् = प्रतिकूलत्वम् ।

"समरधीरदृष्टान्तः" —

चक्खिंदियदोसे पुण, आहरणं पउमसंडनगरम्मि । अणुभवइ रज्जच्छिं, नामेण निवो समरधीरो ॥२५॥
जणणि व्व परकलत्तं, परकीयथणं तणं व जस्स सया । परकज्जं णियकज्जं व, आसि नीसेसनयनिहिणो ॥२६॥
सरणाऽऽगयरक्खणदुक्खि-यऽगिउद्धरणधम्मकिच्चेसु । वट्टंतं चिय नियजीवि-यं पि बहुमन्नियं जेण ॥२७॥
तस्सेगम्मि अवसरे, सुहाऽऽसणत्थस्स सणियमाऽऽगंतुं । विन्नत्तं पडिहारेण, सायरं कयपणामेण ॥२८॥
देव! तुह पायपंकय-पलोयणत्थं समागओ बाहिं । चिट्ठइ सिवसत्थाहो, आगच्छउ एत्थ गच्छउ या ॥२९॥
रन्ना वुत्तं एउ त्ति, तो पविट्ठो कयप्पणामो य । उचियाऽऽसणमाऽऽसीणो, सो भणिउमिमं समाढत्तो ॥३०॥
देव! मह अत्थि धूया, उम्माइणिणामिया विसालऽच्छी । रूवोहामियरंभा, सुजोव्वणा पव्वणिंदुमुही ॥३१॥
सा य विलयाण मज्झे, रयणब्भूया तुमं च रयणाण । नाहो सि ता तुममिमं, गिण्हसु जइ देव! पडिहाइ ॥३२॥
तुज्झ अनिवेइऊणं, कण्णारयणे परस्स दिज्जंते । का होइ सामिभत्ति त्ति, देव! साहिज्जए तुम्ह ॥३३॥
अम्मापिउणो सलहिंति, सच्चमऽच्चन्तनिग्गुणाइं पि । निययाऽवच्चाइं परं, अन्न व्विय चंगिमा तीए ॥३४॥
तथाहि—
जम्मणभवणऽब्भन्तर-मिमीए देहेण जम्मसमए वि । विज्जुज्जोएणं पिव, सज्जो उज्जोइयमऽसेसं ॥३५॥
एयमऽवलोइउं पिव, उच्चट्ठाणं ठिया गहा वि फुडं । एवं च देव! तीए, न तुमाहिन्तो पई होइ ॥३६॥
एवं मुणिऊण नराऽहिवेण, अच्चन्तविम्हियमणेण । तीसे पलोयणट्ठा, पच्चइया पेसिया पुरिसा ॥३७॥
सत्थाहेणेव समं, गया य ते मंदिरम्मि दिट्ठा सा । अच्छरियब्भूएण य, रूवेणं तीए अक्खित्ता ॥३८॥
मत्त व्व मुच्छिया इव, अवहडहियय व्व गमिय खणमेक्कं । एगंते ठाऊण य, मंतिउमेवं समाढत्ता ॥३९॥
विजियऽच्छरमऽच्छरियं, किंपि इमीए सुरूवनेवत्थं । परिणयवया वि जीए, वयमेवं मोहमुवणीया ॥४०॥
अम्हारिसा वि परिणयवया वि, जइ दंसणे वि एईए । एयंविहं अवत्थं, पत्ता ता वसुमइनाहो ॥४१॥
नवजोव्वणाऽभिरामो, निरंऽकुसो सयलसंपयाऽऽवासो । अजिइंदिओ कहं नो, एईए वसा भवे विवसो ॥४२॥
विवसत्ते एयस्स य, कहं न रज्जं दढं विसीएज्ज । तत्थ य विसीयमाणे, अजहत्थं भूमिनाहत्तं ॥४३॥
इय नाऊण वि रण्णो, वयंसहत्थेणिमं उवणमिंता । कह नो समत्थभाविर-दोसाणं कारणं होमो ॥४४॥
ता किंपि कहिय दोसं, इमीए वावत्तिमो महीनाहं । पडिवन्नं सव्वेहिं वि, गया य रन्नो समीवम्मि ॥४५॥
धरणियलचुंबिणा मत्थ-एण सव्वाऽऽयरं कयपणामा । ओणमियसीसवीसंत-पाणिणो भणिउमाऽऽढत्ता ॥४६॥
देव! समग्गगुणेहिं, रूवाऽऽईहिं विराइया कन्ना । सा केवलं अलक्खण-मेक्कं गुरु धरइ पइवहगं ॥४७॥
तो रन्ना परिचत्ता, तत्तो तस्सेव भूमिनाहस्स । सेणावइणो दिन्ना, पिउणा सा परिणीया तेण ॥४८॥
रूवेण जोव्वणेण य, सोहग्गेणं च अवहरियहियओ । जाओ तदेगचित्तो, दूरं सेणावई तीए ॥४९॥
वच्चंतेसु दिणेसुं, एगम्मि अवसरम्मि नरनाहो । भडचडयरपरियरिओ, तेणं सेणाऽहिवेण समं ॥५०॥
करिकंधराऽधिरूढो, धुव्वंतुद्दामचामरुप्पीलो । ऊसियसियाऽऽयवत्तो, नीहरियो रायवाडीए ॥५१॥
अह सेणावइभज्जा, सा चिंतइ कहमऽहं महीवइणा । अवलक्खण त्ति चत्ता, दट्ठव्वो सो मए इन्तो ॥५२॥
एवं परिभावित्ता, नियंसियाऽमलमहग्घदोगुल्ला । रन्नोऽवलोयणट्ठा, पासाए आरुहितु ठिया ॥५३॥
राया वि तुरगकरिरहवरेहिं, काउं परिस्समं बहिया । खणमेक्कं नियभवणं, पडुच्च आगंतुमाऽऽरद्धो ॥५४॥
इंतस्स य कहवि नराऽहिवस्स, वियसंतकमलदलदीहा । तीए तहट्ठियाए, निस्सट्ठं निवडिया दिट्ठी ॥५५॥
किं नु रई किं रंभा, किं वा पायालकन्नगा किं वा । तेयसिरी इय राया, संचिंतंतो तदेगमणो ॥५६॥
ठाऊण खणं चक्खुं, लज्जारज्जूहिं संजमिय बाढं । दुट्ठतुरगं व कहकहवि, पडिगओ निययभवणम्मि ॥५७॥
सट्ठाणपेसियाऽसेस-मंतिसामंतसुहडवग्गो य । वावारंऽतरविरओ, कहमऽवि सेज्जाए आसीणो ॥५८॥
अह तीए अंगपच्चंगं, चंगिमाऽऽलोयणाऽऽउलमणस्स । अंगमऽणंगो रण्णो, बाढं पीडेउमाऽऽरद्धो ॥५९॥
तो तं चिय कुवलयलोय-णं निवो सव्वहिं पलोयंतो । जाओ तम्मयचित्तो, चित्ताऽऽलिहिओ व्व निप्फंदो ॥६०॥
निययाऽवसरम्मि समागतो य, सेणावई महीवइणा । पुट्ठो का तुज्झ तया, भवणोवरि देवया आसि ॥६१॥

तेणं पयंपियं देव!, सा इमा जा तए परिच्चत्ता । सत्थाहसुया मह महिलि-य त्ति संपइ परं जाया ॥६२॥
अहह! कहं छलिओ हं, कारणियनरेहिं तं कुरंगऽच्छिं । निद्दोसं पि सदोसं ति, वाहरंतेहिं पावेहिं ॥६३॥
एवं संचिंतंतो, राया पम्मुक्कदीहरुस्सासो । दुस्सहविसमसिलीमुह-सिहिसंतावं परं पत्तो ॥६४॥
जाणियपरमत्थेणं, सेणावइणा लहित्तु पत्थावं । सामी! कुणसु पसायं, गिण्हसु तं मज्झ भज्जं ति ॥६५॥
भिच्चाण संतियं जीवि-यं पि नूणं पहूण साहीणं । किं पुण धणपरियणभवण-वित्थरो बज्झरूवो त्ति ॥६६॥
एवं सोउं राया, हिययम्मि विभाविउं समाढत्तो । दुसहो मयणहुयासो, बाढं कुलगंजणा गरुई ॥६७॥
आचंदकालिअअजस-फंसणा नीइनिहणमऽच्चन्तं । परजुवइसेवणं मारि-साण मरणे वि नो जुत्तं ॥६८॥
इय निच्छिऊण राया, सेणाहिवइं पयंपए भद्दा! । एवंविहं अकिच्चं, भुज्जो मा मे कहेज्जासि ॥६९॥
नरयपुरेक्कदुवारं, निम्मलगुणभवणबहलमसिकुच्चो । नीईथरेहिं कीरइ, कहमिय परदारपरिभोगो ॥७०॥
सेणावइणा वुत्तं, जइ परदारं ति गिण्हसि न देव! । देवाऽऽययणेसु इमं, विलासिणित्तेण ता देमि ॥७१॥
तत्तो तुब्भे वेस त्ति, सेवमाणा परित्थिदोसस्स । न भविस्सह नाह! पयं, ता मह इह देह आएसं ॥७२॥
रन्ना पयंपियं होउ, किंपि मरणे वि एरिसमऽकिच्चं । नो काहमऽहं विरमसु, सेणाऽहिव! भूरिभणणाओ ॥७३॥
तो पणमित्ता सेणाऽ-हिवो गओ नियगिहम्मि राया वि । तद्दंसणाऽणुरागऽ-ग्गिणा दढं डज्झमाणंऽगो ॥७४॥
परिचत्तरायकज्जो, तं किंपि हु हिययगाढसंघट्टं । संपत्तो जेण मओ, जाओ तिरिओ य अट्टवसा ॥७५॥
चक्खूरागो एवं-विहाण दोसाण कारणं भणिओ । घाणम्मि इन्हि दोसं, संखेवेणं निदंसेमो ॥७६॥

"गन्धप्रियकुमारः" —

किर एगो रायसुओ, गाढं गंधप्पिओ सुरहिवत्थुं । जं पेच्छइ अग्घायइ, तमऽसेसं सो य कइया वि ॥७७॥
नावाहिं कीलइ नई-सलिलम्मि बहुवयस्सपरियरिओ । तं च तहा कीलंतं, नाऊण सवत्तिजणणीए ॥७८॥
निययसुयरज्जवंछाए, तस्स गंधप्पियत्तणं मुणिउं । मारणहेउं उग्गं, महाविसं भूरिभत्तीहिं ॥७९॥
ठवियं मंजूसाए, सा नइसलिले पवाहिया तत्तो । रममाणेणं तेणं, दिट्ठा व कहिं पि किर इंती ॥८०॥
तो तं उत्तारित्ता, उग्घाडइ तीए मज्झ संठवियं । एगं समुग्गयं नियइ, तं पि विहडेइ तस्संऽतो ॥८१॥
पाउणइ गंठिमेक्कं, तं पुण उब्भिंदिऊण गंधपिओ । तं विसमुज्जिंघंतो, झडत्ति पंचत्तमऽणुपत्तो ॥८२॥
एवंविहवसणकरं, घाणिंदियमऽक्खियं सदिट्ठंतं । रसणादोसोदाहरण-मिन्हिं लेसेण कित्तेमि ॥८३॥

"सोदासदृष्टान्तः" —

भूमिपइट्ठियनगरे, सोदासो नाम भूवई आसि । अच्चंतं मंसपिओ, तेण य एगम्मि पत्थावे ॥८४॥
घोसाविया अमारी, सव्वत्थ पुरम्मि नवरि सूयस्स । रायनिमित्तं मंसं, उवक्खडिंतस्स जत्तेण ॥८५॥
लद्धंऽतरेण हरियं, कहवि विरालेण तो स भयभीओ । अन्नं पलमऽलहंतो, सोयरियाऽऽईण गेहेसु ॥८६॥
अन्नायमेगडिंभं, रहम्मि वावाइउं नरिंदस्स । भोयणसमए दलयइ, अच्चंतसुसंभियं किच्चा ॥८७॥
तं भुंजिऊण राया, तुट्ठो वागरइ कहसु हे सूव! । कत्तो इमस्स लाभो त्ति, तेण सिट्ठं च जहवित्तं ॥८८॥
सोऊणं तं च राया, रसणादोसेण वाउलिज्जंतो । माणुसमंसनिमित्तं, सूवस्स सहाइणो देइ ॥८९॥
तो सो रायनरेहिं, परियरिओ मारिउं जणं मंसं । उवखडइ निवनिमित्तं, एवं जंतेसु दियहेसु ॥९०॥
कारणियनरेहिं सो, लक्खित्ता रक्खसो त्ति रयणीए । पाइत्ता पउरसुरं, परिचत्तो अडविमज्झम्मि ॥९१॥
तत्थ य करगहियगदो, तप्पहपरिवत्तिणं जणं हणिउं । भुंजइ परिब्भमेइ य, विगयाऽऽसंको कयंतो व्व ॥९२॥
अवरम्मि अवसरम्मि, तेण पएसेण निसि गओ सत्थो । सुत्तेण वेइओ नेव, तेण णवरं कहवि मुणिणो ॥९३॥
सत्थब्भट्ठा दिट्ठा, कुणमाणाऽऽवस्सयं तओ पावो । सो तेसिं हणणट्ठा, पासे ठाउं समारद्धो ॥९४॥
पबलतवतेयपहओ, साहुसमीवे य ठाउमऽचइंतो । चिंतेइ धम्मसवणं, पडिबुद्धो संजओ जाओ ॥९५॥
जइ वि हु सो पज्जंते, पत्तो बोहिं तहा वि पुव्वं पि । रज्जुद्दालणपमुहं, दोसं रसणाइ उवणीओ ॥९६॥

"विप्रसुतदृष्टान्तः" —

फासिंदियदोसे पुण, आहरणं किर पुरे सयदुवारे । नामेण सोमदेवो, विप्पस्स सुओ परिव्वसइ ॥९७॥
संपत्तजोव्वणो सो, सद्धिं रइसुंदरीए वेसाए । रूवेणं फासेण य, गढिओ वुत्थो चिरं कालं ॥९८॥

पुव्वपुरिसऽज्जियं आसि, किंपि जं दव्वमऽप्पणो भवणे । तं सव्वं निट्ठवियं, तत्तो अत्थस्स विरहम्मि ॥९९॥
निच्छूढो अत्ताए, गेहाउ विमणदुम्मणो तत्तो । चिंतेइ सो अणेगे, अत्थस्स उवज्जणोवाए ॥९१००॥
अलभंतो य उवायं, तहाविहं अत्थवंतगेहेसु । जीवं काऊण पणं, पाडइ खत्ताइं रयणीए ॥१॥
विलसइ य जहच्छंदं, तीए समं तदुचलद्धदव्वेणं । दोगुंदुगो व्व अत्ता वि, अत्थलुद्धा वसे जाया ॥२॥
नवरं अतिगूढाए, तक्करकिरियाए तस्स नयरजणो । अच्चंतपीडिओ चोरु-वद्दयं कहइ नरवइणो ॥३॥
तो नरवइणाऽऽरक्खिय-पुरिसा निब्भच्छिया खरगिराहिं । वुत्ता य जइ न चोरे, लहिहि ता मे हणिस्सं ति ॥४॥
अह तियचच्चरचउपह-पवासभाऽऽईसु विविहठाणेसु । भयभीया ते तक्कर-पलोयणे उज्जया जाया ॥५॥
कत्थइ य अपावेंता, चोरपउत्तिं गिहाणि गणियाणं । अवलोइउमाऽऽरद्धा, दिट्ठो य कहिं पि सो विप्पो ॥६॥
चंदणरसचच्चिक्किय-देहो सुविसुद्धपरिहियदुकूलो । तीए वेसाए समं, विलसंतो इब्भपुत्तो व्व ॥७॥
तो तेहिं चिंतियं कह-मिमस्स एवंविहा वरविलासा । पइदियहं चिय, वित्ती-करणपरभवणभमिरस्स ॥८॥
ता निच्छियं इमेणं, होयव्वमऽसुंदरेण इइ नाउं । कवडकयकोवतिवली-तरंगरंगन्तभालेहिं ॥९॥
रे रड्डोड्ड! वच्चिहसि, कत्थ निवसन्त! एत्थ वीसत्थं । लुंटित्ता सयलपुरं, किं रे ! न वयं तुमं मुणिमो ॥१०॥
एवं तेहिं भणिए, सकम्मदोसेण सा भउब्भंतो । मुणिओ त्ति पलायंतो, गहिओ रन्नो य उवणीओ ॥११॥
रइसुंदरीए गेहं, उक्कड्ढित्ता पलोइयं सम्मं । दिट्ठं विविहपयारं, मोसं लोएण नायं च ॥१२॥
तो कुविएणं रन्ना, वेसा निव्वासिया सनगराओ । विप्पसुओ पुण वज्झो, आणत्तो कुंभिपाएणं ॥१३॥
एवंविहदोससमुस्सयस्स, फासेंदियस्स वसगाणं । इहपरभवेसु दुक्खं, होइ असंखं च तिक्खं च ॥१४॥
ता विसयकुपहपत्थिय-इंदियतुरगे निरुंभिउं भद्द! । संमग्गम्मि निजुंजसु, कड्ढिय वेरग्गवग्गाए ॥१५॥
अप्पऽप्पविसयपरिधावमाण-मिंदियकुरंगवग्गमिमं । सन्नाणभावणावागु-राए बद्धं धरेज्जासु ॥१६॥
तह धीर! धिइबलेणं, दुद्दंते दमसु इंदियतुरंगे । जह उक्खयपडिवक्खो, हरेसि आराहणपडागं ॥१७॥
इंदियदमाऽभिहाणं, पडिदारं किंपि दंसियं एवं । एत्तो तवाऽभिहाणं, तमऽहं सत्तरसमं वोच्छं ॥१८॥
अब्भिन्तरबाहिरयं, कुणसु तवं वीरियं अगूहेंतो । वीरियनिग्गही बंधइ, मायं विरियंतरायं च ॥१९॥
सुहसीलयाए अलस-त्तणेण देहपडिबद्धयाए य । सत्तीए तवमऽकुव्वं, निव्वत्तइ मायमोहणियं ॥२०॥
सुहसीलयाए जीवा, तिव्वं बंधंतऽसायवेयणियं । अलसत्तणेण बंधइ, चरित्तमोहं च मूढमई ॥२१॥
देहपडिबंधओ पुण, परिग्गहो होइ ता विवज्जित्ता । सुहसीलयाऽऽइदोसे, तवम्मि निच्चं पि उज्जमसु ॥२२॥
तवमऽकुणंतस्सेए, जहसत्ति साहुणो भवे दोसा । तं कुणमाणस्स पुणो, इह परलोगे य होंति गुणा ॥२३॥
कल्लाणिड्ढिसुहाइं, जावइयाइं भवे सुरनराणं । परमं च निव्वुइसुहं, [1]एयातिं तवेण लब्भंति ॥२४॥
तथा—
दुरियगिरिकुलिसदंडं, रोगुब्भडकुमुयसंडमायंडं । कामकरिहरिपयंडं, भवसागरतरणतरकंडं ॥२५॥
ढक्कियकुगइदुवारं, दावियमणवंछियऽत्थसंभारं । कयजयजसप्पसारं सारं एक्कं तवं बेंति ॥२६॥
एयं नाऊण तुमं, महागुणं संजमित्तु मणपसरं । सरहसमऽणुदिवसं चिय, तवसा भावेसु अप्पाणं ॥२७॥
नवरं जह न तणुपीडा, न याऽवि चियमंससोणियत्तं च । जह धम्मझाणवुड्ढी, तह खवग! इमं करेज्जासु ॥२८॥
तवनामप्पडिदारं, परूवियं संपयं समासेण । निस्सल्लयपडिदारं, अट्ठारसमं पि साहेमि ॥२९॥

"शल्यानांस्वरूपम्" —

निस्सल्लस्सेव गुणा, भवंति हे खवग! सल्लमऽवि तिविहं । जाणसु नियाणमाया-मिच्छादंसणवियप्पेहिं ॥३०॥
तत्थ नियाणं तिविहं, रागद्दोसेहिं मोहओ चेव । रागेण रूवसोहग्ग-भोगसुहपत्थणारूवं ॥३१॥
दोसेण पइभवं पि हु, परमारणऽणिट्ठकरणरूवं तु । धम्मऽत्थं हीणकुलाऽऽइ-पत्थणं मोहओ होइ ॥३२॥
अहव नियाणं तिविहं, होइ पसत्थाऽपसत्थभोगकयं । तिविहं पि तं नियाणं, वज्जेयव्वं तए तत्थ ॥३३॥
संजमहेउं पुरिसत्त-सत्तबलविरियसंघयणबुद्धी । सावयबंधुकुलाऽऽइसु, होइ नियाणं पसत्थमिणं ॥३४॥

1. एयातिं - एतानि ।

सोहग्गजाइकुलरूव-माऽऽइआयरियगणहरजिणत्तं । पत्थंते अपसत्थं, माणेणं नंदिसेणे व्व ॥३५॥
कोहेण परवहं जो, मरिउं पत्थेइ तस्स अपसत्थं । बारवईविणासनिबद्ध-बुद्धिदीवायणस्सेव ॥३६॥
देवियमाणुसभोए, राईसरसेट्ठिसत्थवाहत्तं । हलधरचक्कधरत्तं च, पत्थमाणस्स भोगकयं ॥३७॥
पुरिसत्ताऽऽइनियाणं, पसत्थमऽवि जं निवारियं एत्थ । तं निरऽभिसंगमुणिणो, पडुच्च णेयं न उण इयरे ॥३८॥
दुक्खक्खयकम्मक्खय-समाहिमरणं च बोहिलाभो य । एमाऽऽइपत्थणं पि हु, साऽभिस्संगाण संभवइ ॥३९॥
संजमसिहराऽऽरूढो य, विहियदुक्करतवो तिगुत्तो वि । अवगन्निउण सिवसुह-मऽसमं पि परीसहाऽभिहओ ॥४०॥
एवं नियाणबंधं, जो कुणइ सुतुच्छविसयसुहहेउं । सो कायमणिकएणं, वेरुलियमणिं पणासेइ ॥४१॥
मुहमहुरमंऽतविरसं, भोत्तुं च सुहं नियाणवसलद्धं । नरयाऽवडम्मि निवडइ, बहुदुक्खे बंभदत्तो व्व ॥४२॥
तथाहि— "ब्रह्मदत्तचक्रीदृष्टान्तः"
साकेयम्मि पुरवरे, आसि चंडावडेंसओ राया । मुणिचंदो से पुत्तो, सो पुण संजायवेरग्गो ॥४३॥
सायरचंदमुणिंदस्स, अंतिए गेण्हिऊण पव्वज्जं । सुत्तत्थेऽहिज्जंतो, दुक्करतवकम्ममाऽऽयरइ ॥४४॥
वच्चंतो य कहं पि हु, गुरुणा सह दूरदेसमऽभिसरिउं । भिक्खट्ठाइ पविट्ठो, गामे मुक्को य सत्थेण ॥४५॥
एगागी वि पयट्टो, गंतुं पडिओ य कह वि अडवीए । तन्हाछुहापरिस्सम-वसेण बाढं किलंतो य ॥४६॥
गोवालदारगेहिं, चउहिं परिपालियो पयत्तेण । जाओ पगुणसरीरो, सिट्ठो धम्मो य तेणेसिं ॥४७॥
पडिबुद्धा ते सव्वे, जाया सिस्सा य तस्स साहुस्स । कुव्वंति समणधम्मं, नवरं काउं दुगुंछं दो ॥४८॥
मरिऊण देवलोए, पत्ता देवत्तणं तवपहावा । कालक्कमेण तत्तो, चइऊणं दसपुरे नगरे ॥४९॥
संडिलदिएण जइमइ-दासीए जमलगा सुया जाया । बुद्धिबलजोव्वणेहिं, कमेण समलंकिया ते य ॥५०॥
छेत्तस्स रक्खणट्ठा, अडवीए गया णिसिम्मि य पसुत्ता । वडविडविणो तलम्मि, डक्का य तहिं भुयंगेण ॥५१॥
पडियरणाऽभावम्मि य, मरिउं जमलत्तणेण दो वि मिगा । कालिंजरम्मि जाया, नेहेण समं चिय चरंता ॥५२॥
पारद्धिमुवगएणं, लोद्धेणं एक्ककंडघाएणं । हणिऊण दो वि कीणास-मंदिरं पेसिया विवसा ॥५३॥
तत्तो गंगातीरे, हंसा जमलत्तणेण संवुत्ता । तत्थ वि य धीवरेणं, बद्धा एक्केण पासेण ॥५४॥
विणिवाइया य वलिऊण, कंधरं तेण निद्दयमणेण । तत्तो पुरीए वाणा-रसीए मायंगअहिवइणो ॥५५॥
बहुधणधण्णसमिद्धस्स, भूयदिण्णस्स दो वि ते पुत्ता । उववन्ना दढपणया, नामेणं चित्तसंभूया ॥५६॥
अह अन्नया कयाई, तीए पुरीए निवेण संखेण । नमुई नाम अमच्चो, पत्ते गरुयाऽवराहम्मि ॥५७॥
लोगाऽववायगोवण-कएण पच्छन्नवज्झयाऽऽएसो । कुविएणं उवणीओ, पाणाऽहिवभूयदिन्नस्स ॥५८॥
वज्झट्ठाणं नीओ, तेणं वुत्तो य जइ सुए मज्झ । पाढसि भूमिहरठिओ, ता तं मुंचामि अहयं ति ॥५९॥
जीवियमिच्छंतेणं, पडिवन्नमिमं च तेण तो पुत्ते । पाढेउं आढत्तो, नवरं पम्मुक्कमज्जाओ ॥६०॥
तज्जणणीए सद्धिं, अच्छंतो इंगियाऽऽइकुसलेण । जारो त्ति मुणिय पाणाऽ-हिवेण मारेउमाऽऽरद्धो ॥६१॥
उवयारि त्ति वियाणिय, परमत्थेहिं व तस्स एगंते । नियपिउणो अभिप्पाओ, सिट्ठो संभूयचित्तेहिं ॥६२॥
तत्तो निसाए नट्ठो, गओ य नगरम्मि हत्थिणागपुरे । जातो य तहिं मंती, चक्किस्स सणंकुमारस्स ॥६३॥
तेहिं पुण पाणपुत्तेहिं, गीयनट्टाऽऽइएसु कुसलेहिं । अच्चंतं हयहियओ, विहिओ वाणारसीलोगो ॥६४॥
अह अन्नया पयट्टे, पुरीए तियचच्चरेसु मयणमहे । गिज्जंतीसुं विविहासु, चच्चरीसु पुरंधीहिं ॥६५॥
नच्चंतेसुं तरुणी-यणेसु ते तत्थ चित्तसंभूया । नियचच्चरिमज्झगया, गाइउमऽच्चंतमाऽऽरद्धा ॥६६॥
गेएणं नट्टेण य, अक्खित्तमणो जणो गओ तेसिं । सव्वो वि समीवम्मि, विसेसओ पउरतरुणीजणो ॥६७॥
तत्तो ईसावसओ, चाउव्वेज्जाऽऽइपउरलोगेण । विन्नतो महिनाहो, देव! पुरीए जणो सव्वो ॥६८॥
एएहिं पाणपुत्तेहिं, संचरंतेहिं मुक्कपरिसंकं । एगाऽगारो विहितो त्ति, तो नरेंदेण नगरीए ॥६९॥
तेसिं पवेसो पडिसे-हिओ त्ति अवरम्मि नवरि पत्थावे । जायम्मि कोमुइमहे, अवगन्निय सासणं रण्णो ॥७०॥
लोलिंदियत्तणेणं, कोऊहलओ य विहियसिंगारा । ते नगरीए पविट्ठा, ठाऊण य एगदेसम्मि ॥७१॥
अंसुयकयमुहकोसा, हरिसेणं गाइउं समाढत्ता । परिवारिया य लोगेण, गेयअवहरियहियएण ॥७२॥

अच्चंतसुस्सरा के, इमे त्ति वत्थे मुहाओ अवणीए । विन्नाया ते एए, मायंगसुय त्ति कुविएण ॥७३॥
लोगेण तओ हण, हण त्ति परिजंपिरेण निस्सट्टं । सव्वत्तो पारद्धा, हंतुं जट्ठिट्टगाऽऽइहिं ॥७४॥
कहकहवि हम्ममाणा, विणिग्गया ते य नयरिमज्झाओ । संचिंतिउं पवत्ता, अच्चंतं जायसंतावा ॥७५॥
धी! अम्ह जीवियएणं, रूवाऽऽइसमग्गगुणगणेणं पि । जे निंदियजाइवसा, एवं हीलापयं जाया ॥७६॥
तो वेरग्गोवगया, अकहित्ता सयणबंधवाऽऽईणं । मरणकयनिच्छया ते, दाहिणहुत्तं लहु पयट्टा ॥७७॥
वच्चंतेहि य तेहिं, दिट्ठो एगत्थ गिरिवरो तुंगो । मरणत्थमाऽऽरुहंतेहिं, तत्थ एगत्थ सिहरम्मि ॥७८॥
घोरतवकिसियकाओ, धम्मज्झाणे परम्मि वट्टन्तो । उस्सग्गगओ साहू, पलोइओ हरिसियंऽगेहिं ॥७९॥
भत्तीए वंदिओ सो, मुणिणा वि हु जोग्गयं णिएऊण । झाणस्स समत्तीए, पुट्ठा कत्तो भवंतो त्ति ॥८०॥
तेहिं पि पुव्ववुत्तंत-कहणपुव्वो सचित्तसंकप्पो । गिरिपडणमरणरूवो, निवेइओ तस्स साहुस्स ॥८१॥
तत्तो मुणिणा भणियं, महाऽणुभावा! अजुत्ततरमेयं । जइ सच्चं उव्विग्गा, ता जइधम्मं समायरह ॥८२॥
पडिवन्नं तेहिं तओ, दिन्ना दिक्खा तवस्सिणा तेसिं । जोग त्ति मुणिय अवितह-अइसयनाणोवलंभेण ॥८३॥
कालक्कमेण जाया, गीयत्था अह कहं पि विहरंता । दुक्करतवकरणपरा, संपत्ता हत्थिनागपुरे ॥८४॥
एगत्थ काणणम्मि, वुत्था मासस्स पारणगदिवसे संभूयमुणी नगरे, भिक्खट्ठाए अह पविट्ठो ॥८५॥
दिट्ठो य नमुइणा सो, नाओ य तओ महं इमो कहिही । दुव्विलसियं जणाणं ति, गाढकुवियप्पवसगेण ॥८६॥
नियपुरिसे पेसित्ता, जट्ठीमुट्ठीहिं हणिय णिस्सट्टं । निद्धाडिओ पुराओ, तो मुणिणो निरऽवराहस्स ॥८७॥
उग्गयपयंडकोवस्स, पुरिसदहणट्ठया मुहाहिंतो । नीहरिउं आरद्धा, तेउलेसा महाभीमा ॥८८॥
अंधारियं च नगरं, कसिणऽब्भसमाहिं धूमवत्तीहिं । ताहे चक्की लोगो य, तोसिउं तं पवत्तो त्ति ॥८९॥
जा न पसीयइ थेवं पि, ताव लोगाउ सुणिय वुत्तंतं । चित्तो समागओ झत्ति, महुरवाणीए तं भणइ ॥९०॥
भो भो महायस! कहं, जिणवयणं मुणिय कुणसि तं कोवं । न वियाणसि तप्पभवं, भवभमणमऽणंतभयभवणं॥९१॥
को वा तस्सऽवराहो, अवयारकरस्स नणु वरायस्स । दुक्खे सुहे य कम्माणि, जेण पभवंति जंतूण ॥९२॥
एमाऽऽइपसमपीऊस-सारवाणीए पसमियकसायो । उवसंतो संभूतो, गया य ते दो वि उज्जाणं ॥९३॥
पडिवज्जिऊणमऽणसण-माऽऽसीणा दो वि एगदेसम्मि । तत्तो सणंकुमारो, चक्की अंतेउरेण समं ॥९४॥
आगंतुं भत्तीए, तेसिं चलणुप्पले नमंसेइ । एवं थीरयणं पि हु, नवरं तव्विहुरसुहफासं ॥९५॥
अणुभवमाणो संभूय-मुणिवरो भणइ जइ इमस्स फलं । अत्थि तवस्स तया हं, भवंतरे होज्ज चक्कि त्ति ॥९६॥
एवं नियाणबंधो, तेण कओ चित्तसाहुणा बहुसो । वारिज्जंतेण वि भव-विवागसंसूयगगिराहिं ॥९७॥
आउक्खएण मरिउं, सोहम्मे भासुरा सुरा जाया । तत्तो चविउं चित्तो, उववन्नो पुरिमतालम्मि ॥९८॥
इब्भस्स सुयत्तेणं, संभूओ पुण पुरम्मि कंपिल्ले । बंभस्स भूमिवइणो, चुलणीए सुओ समुप्पन्नो ॥९९॥
विहियं च बंभदत्तो त्ति, तत्थ नामं पसत्थदियसम्मि । एत्थ य ता वत्तव्वं, जा सो चक्कित्तणं पत्तो ॥६२००॥
साहियसमग्गभरहो, भरहो इव भुंजए विसयसोक्खं । अह जायजाइसरणो, कहमऽवि एगत्थ पत्थावे ॥१॥
पुव्वभवभाउजाणण-कएण दासाऽऽइपंचभवगब्भं । लोगाणं दंसणत्थं, विरएइ इमं सिलोगद्धं ॥२॥
"आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरौ तथा ।" इति
एयं च रायवारे, ओलंबावेतु इय भणावेइ । जो एयपच्छिमद्धं, पूरइ से देमि रज्जद्धं ॥३॥
अह सो पुव्वुवइट्ठो, जीवो चित्तस्स मोत्तु गिहवासं । संजायजाइसरणो सम्मं घेत्तूण पव्वज्जं ॥४॥
अप्पडिबद्धविहारं, विहरंतो आगओ तहिं नयरे । एगत्थुज्जाणम्मि, ठिओ य सद्धम्मझाणेणं ॥५॥
एत्थंतरम्मि अरहट्टिएण, पढियं तयं सिलोगद्धं । उवउत्तेणं मुणिणा वि, पच्छिमद्धं भणियमेवं ॥६॥
"एषा नौ षष्ठिका जाति-रन्योन्याभ्यां वियुक्तयोः ॥" इति ॥७॥
अह आरहट्टिएणं, एयं गंतुं णिवेइयं रन्नो । राया वि तं णिसामिय, भाइसिणेहाऽइरेगेण ॥८॥
मुच्छावसेण वियलत्त-मुवगओ तो अणिट्ठकारि त्ति । ताडिउमाऽऽरद्धो आर-हट्टिओ रायपुरिसेहिं ॥९॥

हम्मंतेण य तेणं, भणियं मा हणह कयमिणं मुणिणा । खणलद्धचेयणो निसुणि-ऊण एयं च नरनाहो ॥१०॥
सव्वाइ विभूईए, गतो समीवम्मि तस्स साहुस्स । चलणे य वंदिऊणं, आसीणो दढसिणेहेण ॥११॥
विहिया मुणिणा सद्धम्म-देसणा तं च अवगणेंतेण । साहू भणिओ चक्काऽ-हिवेण भयवं कुण पसायं ॥१२॥
अंगीकरेसु रज्जं, भुंजसु भोए चयाहि पव्वज्जं । पुव्वं पिव समगं चिय, कालं अइवाहयामो त्ति ॥१३॥
मुणिणा भणियं नरवर!, रज्जं भोगा य दुग्गइमग्गो । ता मुणियजिणमयऽत्थो, एए तुममुज्झिउण लहुं ॥१४॥
पडिवज्जसु पव्वज्जं, जेण समं चिय तवं अणुचरामो । किं तुच्छकालिएणं, रज्जाऽऽइमुत्थसोक्खेण ॥१५॥
भणियं रन्ना भयवं!, दिट्ठं मोत्तूण किं अदिट्ठकए । तम्मसि मुहाए जेणं, वयणं मे इय विकूलेसि ॥१६॥
अह साहू नरवइणो, नियाणदुव्विलसियस्स सामत्था । मुणिऊण असज्झत्तं, उवसंतो धम्मकहणाओ ॥१७॥
कालक्कमेण विहुणिय-कम्ममलो सासयं पयं पत्तो । चक्की वि अंतसमए, रुद्दज्झाणम्मि वट्टंतो ॥१८॥
मरिऊण तमतमाए, उक्कोसठिई उ नारगो जाओ । एवंविहदोसकरं,खवग! नियाणं विवज्जेसु ॥१९॥
भणियं नियाणसल्लं, मायासल्लं तु तं वियाणेहि । जं काऊणऽइयारं, थोवं पि चरित्तविसयम्मि ॥२०॥
गोरवलज्जाऽऽईहिं, नेवाऽऽलोएइ अंतिए गुरुणो । अहवा उवरोहेणं, आलोयइ नवरि नो सम्मं ॥२१॥
एवंविहं च माया-सल्लमऽणुल्लूरिऊण तवनिरया । न सुहं पावंति फलं, चिरकालं पि हु किलिस्संता ॥२२॥
तेणं चिय तव्वसगा, सुचरियचिरकालदुक्करतवा वि । इत्थीभावं पत्ता, तवस्सिणो पीढमहपीढा ॥२३॥
तथाहि — "पीठमहापीठदृष्टान्तः"

किर पुव्वमाऽऽसि जिणउसभजीवु, वेज्जस्स पुत्तु नियकुलपईवु । निवमंतिसेट्ठिसत्थाहपुत्त, संजाय तस्स चत्तारि मित्त॥२४॥

सो [1]नियवि साहु किमिकोढखीणु, सुहधम्मझाणि निच्चल निलीणु ।
जायाऽणुकंपु तसु कयतिगिच्छु, अज्जिणिवि पुण्णसंचउ अतुच्छ ॥२५॥

आउक्खयम्मि कयपाणचाउ, सव्वन्नुधम्मरसभिन्नधाउ । चउहिं पि वयस्सिहि सहुं [2]सुरत्तु, अच्चुत्तमु अच्चुयकप्पि पत्तु॥२६॥
अह जंबुदीवतिलओवमाए, वेसमणनयरिसमविब्भमाए । सिरिपुव्वविदेहसिरोमणीए, नामिं पुरीए पुंडरीगिणीए ॥२७॥
सुररायपणयपयपंकयस्स, सिरिवइरसेणभूमिवइस्स । देवीए विमलगुणधारणीए, जयविस्सुयाए किर धारिणीए ॥२८॥
ते सग्गह पंच वि चविवि पुत्त, उप्पन्न अणोवमरूवजुत्त । अप्पडिमपरमगुणलच्छिसार, वुड्ढिं च पत्त ते वरकुमार॥२९॥
तह पढमु चक्किसिरिवइरनाहु, पुरपरिहदीहथिरथोरबाहु । तो बाहुसुबाहु तउ वि पीढु, पंचमु महपीढु गुणाऽवलीढु॥३०॥
अह पुव्वबद्धतित्थयरनामु, सिरिवइरसेणु सुरकयपणामु । आरोविवि नियपइ वइरनाहु, वरचक्कवट्टिलच्छीसणाहु ॥३१॥

बहुनिवसयसहिउ सुसमणु जाउ, परिचइवि रज्जु निद्धुणियपावु ।
थुव्वंतु देवदाणवगणेहिं, आणंदजलाऽऽउललोयणेहिं ॥३२॥
अह जियमोहमहाबलु पाविय केवलु, बोहिंतउ सो भव्वजणु ।
महिमंडलमंडणु तमभरखंडणु, विहरिउ तह जह खरकिरणु ॥३३॥
विहरेविणु पुरगामाऽऽगरेसु, कब्बडमडंबआसमधरेसु ।
पुंडरीगिणीए नयरीए पत्तु, ओसरणु रइउ तियसिहिं विचित्तु ॥३४॥
उवविट्ठु तेत्थु तो तित्थनाहु, अह आगउ तक्खणि वइरनाहु ।
नियभाउजुत्तु जिणवरु थुणंतु, आसीणु महीयलि भत्तिमंतु ॥३५॥
पारद्ध जिणिंदिण धम्मकहा, संसारमहाभयहणणसहा ।
तं निसुणिऊण सिरिवइरनाहु, सहुं चउहिं वि भाउहिं जाउ साहु ॥३६॥
अहिगयसमत्थसुत्तऽत्थसत्थु, दावेंतउ भव्वहं मोक्खपंथु ।
सज्झायझाणपडिबद्धचित्तु, वोलइ दिणाइं समसत्तुमित्तु ॥३७॥

ति वि बाहुसुबाहु तवस्सि दो वि, एक्कारसंऽग सम्मं पढेवि । असणाऽऽइदाणविस्सामणाउ, कुव्वंति तवस्सिहिं सुहमणाउ॥३८॥

1. नियवि = दृष्ट्वा । 2. सुरत्तु = सुरत्वम् ।

इयरे वि दो वि सज्झायझाणि, वट्टंति उक्कुडुयाऽऽइठाणि । पढमउ पुण वीसं ठाणगाइं, फासइ जिणत्तनिव्वत्तगाइं ॥३९॥
अह बाहुसुबाहुहुं विणयवित्ति, अणवरउ पसंसइ जा(उ) भत्ति ।
मुणिवइरनाहु किर जिणमयम्मि, उववूहजुत्तवुत्ति य गुणम्मि ॥४०॥
तं निसुणिऊण महपीढपीढ, चिंतेति किंपि माणोवगूढ । सलहिज्जहिं ते जे विणयवंत, नो अम्हे नियसज्झायजुत्त ॥४१॥
एवंविहु य कुवियप्पु तेहिं, नवि सुट्ठु सिट्ठु वियडंतएहिं ।
इत्थित्तजणगु तो बद्धु कम्मु, काऊण वि सुचिरु जिणिंदधम्मु ॥४२॥
अह आउगविगमि सव्वट्ठसिद्धि, पंच वि लहेवि तियसत्तरिद्धि ।
तो एत्थ भरहि नाभिस्स पुत्तु, हुउ वइरनाहु रिसहो त्ति वुत्तु ॥४३॥
ति वि बाहुसुबाहू चविवि पुत्त, रिसहस्स जाय रुवाऽऽइजुत्त ।
पढमउ चक्कीसरु भरहनामु, बीयओ पुण बाहुबली सुथामु ॥४४॥
इयरे पुण दोन्नि वि धूय जाय, तसु बंभीसुंदरीनामधेय ।
पुव्वज्जियमायासल्लदोसु, इय एरिसु असुहहं विहियपोसु ॥४५॥
एवं मायासल्लं, वज्जिता खवग! सम्ममुज्जुत्तो । दुग्गइगमणनिमित्तं , चयाहि मिच्छत्तसल्लं पि ॥४६॥

"मिथ्यात्वशल्योपरीनन्दमणियारदृष्टान्तः" —

मिच्छादंसणसल्लं, मिच्छत्तं चेव सल्लमऽक्खायं । मिच्छत्तमोहकम्मस्स, उदयभावम्मि तं च तिहा ॥४७॥
उप्पज्जइ मइभेएण, संथवेणं कुतित्थियाऽऽणंदा । अहवाऽभिनिवेसेणं, जीवाणमऽपुण्णवन्ताणं ॥४८॥
एयं च अमुंचंतो, दाणाऽऽइरओ वि दुग्गइं जाइ । नंदमणियारसेट्ठिव्व, कलुसबुद्धीए हयसम्मो ॥४९॥
तहाहि—
एत्थेव जंबुद्दीवे, भरहे वासम्मि रायगिहनयरे । अतुलियबलसिरिसेणिय-भूवइभुयपरिहकयरक्खो ॥५०॥
वेसमणसमाणधणो, लोयाऽऽणंदो अहेसि नंदो त्ति । मणियारवणिपहाणो, सेट्ठी रन्नो वि महणिज्जो ॥५१॥
सो एगया निसामिय, सामिं जयबंधवं जिणं वीरं । पुरपरिसरे सुराऽसुर-थुणिज्जमाणं समोसरियं ॥५२॥
वंदणवडियाए लहुं, समागतो जायभत्तिपब्भारो । पयचारेणं चिय पउर-पुरिसपरियालपरिखित्तो ॥५३॥
तिपयाहिणापुरस्सर-मऽह महया गउरवेण जिणनाहं । वंदित्ता चिय पउर-पुरिसपरियालपरिखित्तो ॥५४॥
अह तिहुयणेक्कतिलएण, धम्मनिलएण वीरनाहेण । पाणिवहविरइसारो, असच्चचोरेक्कपम्मुक्को ॥५५॥
मेहुणचायपहाणो, परिग्गहग्गहविणिग्गहुग्गाढो । साहुगिहीण समुचिओ, रम्मो धम्मो समुवइट्ठो ॥५६॥
नंदमणियारसेट्ठी, सोउण इमं च जायसुहबोहो । बारसवयसंपुन्नं, गिहत्थधम्मं पवज्जेइ ॥५७॥
संसारुत्तिन्नं पिव, मन्नंता अप्पयं ततो सामिं । गुरुभत्तीए भुज्जो, वंदित्ता थोउमाऽऽरद्धो ॥५८॥
जय देव! भीमभवसंभ-वोरुभयभंगविमलबाहुबल! । कलिकलिलहरणजलभर!, भूरिमहागुणगणाऽगार! ॥५९॥
परसमयबहलतमतिमिर-हरणखरकिरण! मारतरुदाव! । जय तरलतरतुरंगम-समकरणोदारदामसम! ॥६०॥
जय मोहमहाकुंजर-कंठीरव! लोभकमलहिमकिरण! । संसारसरणिसंचरण-रीणबहुदेहिदाहहर! ॥६१॥
जय रोगजरामरणाऽरि-वारभयविरहिदेह! परमदम! । अदयापरागखरतर-समीर! मायाऽहिविहगवर! ॥६२॥
जय करुणारससागर!, गरलसमाऽमय! महीमहासीर! । रंभाऽभिरामरामा-रमणरसाऽबद्धसंबंध! ॥६३॥
जय जंतुविसरबंधुर-बंधो! संबंधबुद्धिविलयकर! । करणवरचरणसंगिरण-सार! नयनियहमयसमय! ॥६४॥
जय वंदारुसुराऽसुर-चूडामणिकिरणपिंगचरणतल! । कंकेल्लिपल्लवाऽरुण-पाणिसरोरुह! महाभाग! ॥६५॥
भववारिनिलयपारग!, गरिमाऽऽकर! वीर! धरणिधरधीर! । भवविच्छित्तिनिमित्तं, भवंतमऽहमऽरुहमऽभिवंदे ॥६६॥
इय समसक्कयगाहाहिं, थुणिउं वीरं पवन्नजिणधम्मो । नंदमणियारसेट्ठी, पहट्ठचित्तो गओ सगिहं ॥६७॥
परियालेइ जहुत्तं, बारसवयसुंदरं पि जिणधम्मं । विहरिउमाऽऽरद्धो जय-गुरु वि अन्नऽन्नट्ठाणेसु ॥६८॥
अह अन्नया कयाइ, विरहम्मि सुविहियाण साहूण । पुणरुत्तदंसणेण य, अच्चन्तमऽसंजयजणस्स ॥६९॥
हीयंतेसु य सम्मत्तपज्ज-वेसुं पइक्खणं चेव । वच्चंतेसु य वुड्ढिं, बाढं मिच्छत्तदलिएसुं ॥७०॥

सो सम्मत्तविउत्तो, पोसहसालाए जेट्ठमासम्मि । एगम्मि अवसरम्मि, सअट्ठमं पोसहं कुणइ ॥७१॥
अह अट्ठमतवकम्मे, परिणममाणम्मि नंदसेट्ठिस्स । तन्हाछुहाकिलन्तस्स, एरिसी वासणा जाया ॥७२॥
ते धन्ना कयपुन्ना, जेहिं पुरीपरिसरम्मि रम्माओ । पुक्खरिणीओ कारा-वियाओ सुइसलिलभरियाओ ॥७३॥
जासु नयरस्स लोगो, पियइ जलं वहइ मज्जइ य निच्चं । ता जायम्मि पभाए, अहं पि आपुच्छिऊण निवं ॥७४॥
कारावेमि महंतिं, पोक्खरणिं इय विभाविऊणं सो । सूरे समुग्गयम्मि, पारित्ता पोसहं ण्हाओ ॥७५॥
परिहियविसुद्धवत्थो, पाहुडहत्थो गओ निवसमीवं । साऽऽयरकयप्पणामो, रायं विन्नविउमाऽऽरद्धो ॥७६॥
देव! तुहाऽणुन्नाओ, पोक्खरणिं नयरपरिसरम्मि अहं । काउं इच्छामि तओ, रन्ना सो अब्भणुन्नाओ ॥७७॥
तत्तो तेण समीहिय-देसे तरुसंडमंडियाऽऽभोगे । आरोग्गपहियभोयण-विसालसालोवगूढन्ता ॥७८॥
कल्हारकुमुयकुवलय-वलयविरायन्तसलिलपडिहत्था । हत्थं चिय कारविया, नंदानामेण पोक्खरिणी ॥७९॥
मज्जन्तो कीलंतो, जलं पिबन्तो य तत्थ अन्नोन्नं । वाहरइ जणो एवं, धन्नो सो नंदमणियारो ॥८०॥
जेण इमा पोक्खरिणी, कारविया विमलसलिलपडिपुन्ना । भममाणमच्छकच्छव-विहंगमिहुणोहरमणिज्जा ॥८१॥
एवंविहप्पवायं च, निसुणिउं जायगाढपरितोसो । मन्नइ स नंदसेट्ठी, अत्ताणं अमयसित्तं व ॥८२॥
वच्चंतेसु य दिवसेसु, पुव्वभवअसुहकम्मदोसेण । तस्साऽहिट्ठियमंऽगं, सत्तूहि व दुक्खकारीहिं ॥८३॥
जर[1] सार[2] कास[3] दाह[4] ऽच्छि[5], कुच्छि[6] सिरसूल[7] कोढ[8] कंडूहिं[9] ।
अरिस[10] दगोदर[11] कन्नच्छि[12]-वेयणा[13] अजीर[14] अरुईहिं[15] ॥८४॥
अइउग्गभगंदर[16] दारुणेहिं, वाहीहिं सोलसहिं जुगवं । तव्वेयणपारद्धेण, तेण घोसावियं च पुरे ॥८५॥
एएसिं रोगाणं, एक्कं पि हु जो ममं पणासेइ । दोगच्चविच्चुइकरं, तस्स बहुं देमि दव्वमऽहं ॥८६॥
सोऊणेवं बहवे, चिगिच्छसज्जा समागया वेज्जा । पारंभंति तिगिच्छं, हत्थमऽणेगप्पगारेहिं ॥८७॥
थोवो वि नो विसेसो, उप्पज्जइ तस्स तो परिस्संता । लज्जावसविच्छाया, जहागयं पडिगया वेज्जा ॥८८॥
नंदो पुण रोगाऽऽवेग-वेयणाविहुरिओ मरेऊण । नियपोक्खरिणीए सन्नि-दद्दुरत्तेण उववन्नो ॥८९॥
धन्नो णंदो सेट्ठी, जेणेसा कारिय त्ति जणवायं । निसुणंतेण य तेणं, नियजाई सुमरिया सहसा ॥९०॥
तो संवेगोवगतो, मिच्छत्तफलं इमं ति मन्नंतो । देसविरइप्पहाणं, पुणो वि अणुसरइ जिणधम्मं ॥९१॥
गेण्हइ य इममऽभिग्गह-मेत्तो छट्ठं सया वि काहऽमहं । पारणगे भुंजिस्सं, [1]फासुगमुव्वलणिगाइ परं ॥९२॥
एवं विणिच्छिऊणं, स महप्पा अच्छिउं समारद्धो । अवरम्मि अवसरम्मि, समोसढो तत्थ वीरजिणो ॥९३॥
तो पोक्खरिणीए जणो, मज्जंतो तीए एवमऽन्नोन्नं । जंपइ चलह लहुं चिय, वंदामो जेण जिणवीरं ॥९४॥
गुणसिलए उज्जाणे, समोसढं तियसविहियपयपूयं । सोउं च दद्दुरो इय, संजायाऽतुच्छभत्तिभरो ॥९५॥
जिणनाहवंदणट्ठं, उक्किट्ठाए गईए निययाए । गुणसिलउज्जाणं पइ, झडत्ति संपट्ठियो गंतुं ॥९६॥
अह गुडियकरिघडाऽऽरूढ-सुहडदढघडियनिबिडपरिवेढो । तरलतरतुरयपहकर-खरखुरखंडियधरावट्ठो ॥९७॥
सामंतमंतिसत्थाह-सेट्ठिसेणाहिवेहिं परियरियो । करिकंधराऽधिरूढो, सिरोवरिं धरियसियछत्तो ॥९८॥
सुमहग्घाऽलंकारेहिं, भूसिओ सेणिओ महाराया । भत्तीए जिणवरवीर-वंदणत्थं लहु पयट्टो ॥९९॥
तस्स य एगेण तुरंगमेण, सो दद्दुरो खुरऽग्गेण । पहओ पहम्मि जंतो, भत्तीए वंदिउं नाहं ॥६३००॥
तो घायपीडिओ सो, घेत्तूणं अणसणं जिणं सम्मं । सुमरंतो मरिऊणं, सोहम्मे देवलोगम्मि ॥१॥
दद्दुरवडेंसयम्मि, पवरविमाणम्मि दद्दुरंकोत्ति । देवो जातो तत्तो य, सिज्झिही सो विदेहम्मि ॥२॥
लहुसिद्धिओ वि एवं, जइ नंदो निंदियं तिरियजोणिं । मिच्छत्तसल्लवसओ, पत्तो ता तं चयसु खवग! ॥३॥
ता उज्झियसल्लतिगो, पंचहिं समिईहिं तिहि य गुत्तीहिं । सम्मत्ताऽऽइगुणगणं, कयसिवसोक्खं पसाहेसु ॥४॥
इय उवएसामयपाणएण, पल्हाइयम्मि चित्तम्मि । निव्वुइमुवेइ खवगो, पाऊण य पाणियं तिसिओ ॥५॥
इय संसारमहोयहि-तरीए संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥६॥
आराहणाए पडिदार-नवगनिम्मियसमाहिलाभस्स । तुरियद्दारऽट्ठारस-पडिदारेहिं विरइयम्मि ॥७॥

1. फासुगमुव्वलणिगाइ = प्रासुकशेवालादि B ।

पढमेऽणुसट्ठिदारे, चरिमं निस्सल्लयापडिद्दारं । भणियं तब्भणणाओ, समत्तमऽणुसट्ठिदारमिणं ॥८॥
एयमऽणुसट्ठिसवणे वि, जं विणा विणयणं न कम्माणं । संपज्जइ तमियाणिं, भणामि पडिवत्तिपडिदारं ॥९॥

"द्वितीय प्रतिपत्तिद्वारप्रारम्भः" —

बहुवत्तव्वयवित्थर-निम्मियअणुसट्ठिसवणपरितुट्ठो । मन्नंतो उत्तिन्नं व, अप्पयं भवसमुद्दाओ ॥१०॥
सिरधरियपाणिपउमो, हरिसुक्करिसुच्छलंतरोमंचो । अंतोविसप्पिसुहसाहि-अंकुरुप्पीलकलिओ व्व ॥११॥
खवगमुणी पुणरुत्तं, सम्मं अणुसासिओ त्ति जंपंतो । भत्तिब्भरनिब्भराए, गिराए भासेज्ज गुरुमेवं ॥१२॥
भयवं! परमत्थेणं, न तुमाहिंतो वि विज्जए वेज्जो । जो तुममिय मूलाओ, कम्ममहावाहिमुवहणसि ॥१३॥
तुममेव य अंतरपबल-सत्तुहम्मंतजंतुनिवहस्स । करणरणरंगभूमीए, सरणमेक्को असरणस्स ॥१४॥
तुममेव य तिहुयणवित्थरंत-मिच्छत्ततिमिरपूरस्स । विद्धंसणम्मि विप्फुरिय-नाणकिरणुक्करो सूरो ॥१५॥
ता तुमए जं सिट्ठं, विवज्जणीयत्तणेण णिच्चं पि । अच्चन्तदीहसंसार-साहिमूलप्परोहसमं ॥१६॥
निस्सट्ठकयाऽणिट्ठं, अट्ठारसपावठाणपडलं मे । कालतियगोयरं पि हु, तमऽहं तिविहेण उज्झामि ॥१७॥
सुमुणीणमऽकरणीयं, अलियवियद्धाण चेव सरणीयं । निंदामि निंदणीयं, [1]अट्ठमयट्ठाणअग्गणीयं ॥१८॥
दुहनिवहहेउदुग्गइ-परिभमणसहाइणो कयाऽवरइणो । कोहाऽऽइणो वि तिविहं-तिविहेण इयाणि उज्झामि ॥१९॥
छट्ठावियपसमाऽऽयं, पइसमयविसप्पमाणउम्मायं । सव्वं चेव पमायं, तिविहं तिविहेण वज्जामि ॥२०॥
अच्चंतपावसंधं, पायडिअपयंडदुग्गइरंधं । पडिबंधं बंधं पिव, तिविहं तिविहेण वि धुणामि ॥२१॥
संकाऽऽइपंकपम्मुक्क-मेक्कमुक्किट्ठसिट्ठचेट्ठाणं । सम्मत्तमुत्तमं पुण, तुम्ह समक्खं पवज्जामि ॥२२॥
हरिसुक्करिसुब्भिज्जंत-रोमकूवो पइक्खणं पि अहं । अरिहाऽऽइछक्कविसयं, करेमि भत्तिं पयत्तेणं ॥२३॥
पुणरुत्तभवपरंपर-करडिघडाविहडणेक्कपंचमुहं । पंचनमोक्कारमऽहं, सरामि सव्वं पयत्तेणं ॥२४॥
पडिवज्जामि य वज्जं व, सव्वसावज्जसेलदलणम्मि । भव्वजणदावियमहं, सम्मन्नाणोवयोगमऽहं ॥२५॥
भवभयभंजणदक्खं, विद्धंसियसव्वपावपडिवक्खं । पंचमहव्वयरक्खं, करेमि तुम्हाण पच्चक्खं ॥२६॥
तह तिजगजगडणुब्भड-रागाऽरिभयप्पणासणसमत्थं । मूढाणं दुरहिगमं, चउसरणगमं पवज्जामि ॥२७॥
पुव्वभयप्पडिबद्धं, पडुपन्नगयं भविस्सविसयं पि । भुज्जो भुज्जो दुक्कड-मऽइउक्कडमऽवि दुगुंछामि ॥२८॥
भुवणजणपणयपयपउम-जुयलसिरिवीयरायवज्जरियं । जमऽणुसरंतेण कयं, तं अणुमोएमि अहमऽहुणा ॥२९॥
बहुविहगुणनिम्मायं, सुहमीणगहे पगिट्ठजालं व । भावणजालं विलसंत-सुद्धभावो सरामि दढं ॥३०॥
सुहुमं पि हु अइयारं, विवज्जयंतो भयंत! सविसेसं । फलिहं व निम्मलं सील-मिन्हि पालेमि अक्खलियं ॥३१॥
सुकयतरुसंडखंडण-पडिबद्धं गंधसिंधुरकुलं व । इंदियवग्गं पि हु संज-मेमि सन्नाणरज्जूए ॥३२॥
अब्भिंतरबाहिरभेय-भिन्नं बारसविगप्पतवकम्मं । समओवइट्ठविहिणा, काउं ववसेमि सम्ममऽहं ॥३३॥
जं पि य तिविहं सल्लं, तुमए पहु! संसियं महंतं पि । इन्हिं सविसेसतरं, तिविहं तिविहेण वज्जामि ॥३४॥
इय उज्झियव्वकायव्व-वत्थुविसयम्मि विहियपडिवत्ती । आराहणुत्तरोत्तर-पयविं खवगो! समारुहइ ॥३५॥
तिसियस्स य अकसायं, अणंऽविलं अकडुयं अतित्तं च । पत्थब्भूयं तस्संऽ-तरंऽतरा पाणगं देज्जा ॥३६॥
अह वोच्छिन्नतदिच्छो, स महप्पा होज्ज पाणगं पि तओ । पच्चक्खावेइ गुरु, निज्जवगो जाणिउं समयं ॥३७॥
अह वा भवविगुणत्ताऽ-वधारणा थरियधम्मपडिबंधो । सुस्सावगो वि को वि हु, भवेज्ज आराहगो तो सो ॥३८॥
पुव्वुवदंसियविहिणा, काउं सयणाऽऽइखामणाकिच्चं । संथारगपव्वज्जं, पवज्जिउं उज्जमेज्ज इहं ॥३९॥
तयऽभावे गिहिधम्मं, पुव्वपवन्नं दुवालसविहं पि । सुविसुद्धतरं भुज्जो, सुविसुद्धतमं च कुणमाणो ॥४०॥
नाणस्स दंसणस्स य, अणुव्वयाणं गुणव्वयाणं च । सिक्खावयाण य तहा, परिवज्जंतो अईयारे ॥४१॥
सिरधरियपाणिपउमो, पइसमयपवड्ढमाणसंवेगो । दुच्चरियसुद्धिहेउं, उवउत्तो इय पयंपेज्जा ॥४२॥

"श्रीसङ्घमाहात्म्यं क्षमापना च" —

मणवइकाएहि कयं, जमऽणुचियं किंचि इह मए मोहा । सिरिसंघस्स भवगओ,तमऽहं तिविहेण खामेमि ॥४३॥

1. अट्ठमयट्ठाणगाणीयं पाठां० ।

असहायाण सहायो, सत्थाहो मोक्खपहपवन्नाणं । नाणाऽऽइगुणपयरिसो, भयवं संघो वि खमउ महं ॥४४॥
संघो हि गुरु मज्झं, माया य पिया य मज्झ सिरिसंघो । संघो परमं मित्तं, निक्कारणबंधवो संघो ॥४५॥
ता तीयाऽणागयवट्ट-माणकालेसु रागदोसेहिं । मोहेण वा कया का-रिया व अणुमन्निया जा य ॥४६॥
सिरिसंघस्स भगवओ, मए उ आसायणा मणागं पि । तं सम्मं आलोए, पायच्छित्तं च पडिवज्जे ॥४७॥
तह सुविहियाण साहूण, सुविहियाणं तवस्सिणीणं च । संविग्गसावगाणं, तह सुविहियसाविगाणं च ॥४८॥
मणवइकाएहिं कयं, जमऽणुचियं किंचि कहवि कइया वि । सहसाऽणाभोगेण व, तमऽहं तिविहेण खामेमि ॥४९॥
कारुन्नाऽऽउन्नमणा, इमे वि सव्वे पउत्तविणयस्स । संवेगपरायणमाण-सस्स सम्मं खमंतु महं ॥५०॥
एएसिं पि हु जा का वि, कहवि आसायणा मए विहिया । तं सम्मं आलोए, पायच्छित्तं च पडिवज्जे ॥५१॥
तह जा विहिया जिणभवण-बिम्बसमणाऽऽइएसु य उवेहा । हीला पओसबुद्धी य, तं पि सम्मं समालोए ॥५२॥
चेइयदव्वं साहा-रणं तहा रागदोसमोहेहिं । भक्खियमुवेक्खियं वा, जं तं सम्मं समालोए ॥५३॥
जं सरवंजणमत्ता-बिंदुपयाऽऽईहिं ऊणमऽहियं वा । पढियं जिणवयणं उचिय-कालविणयाऽऽइरहियं च ॥५४॥
तह रागदोसमोह-प्पसत्तचित्तेण मंदपुन्नेण । मणुयत्ताऽऽइसुदुल्लह-समग्गसामग्गिजोगे वि ॥५५॥
सव्वन्नुपणीयाऽऽगम-वयणं परमत्थअमयभूयं पि । जं न सुयं सुयमऽहवा, अविहीए सुयमऽवि वा जं ॥५६॥
जं न मए सद्दहियं, जं वा सद्दहियमऽन्नहा कह वि । बहुमन्नियं न जं वा, वितहं व परूवियं जं च ॥५७॥
तह संतेसु वि बलविरिय-पुरिसकाराऽऽइएसु न तदुत्तं । नियभूमिगाऽणुरूवं, कयं मए वितहमऽहव कयं ॥५८॥
जो वा तत्थुवहासो, जो य पओसो मए कओ कहवि । तं सव्वं आलोए, पायच्छित्तं च पडिवज्जे ॥५९॥
तह भीमभवाऽरन्ने, परिभममाणेण विविहजम्मेसु । जस्स जयं अवरद्धं, पत्तेयं तं पि खामेमि ॥६०॥
खामेमि माइवग्गं, पिइवग्गमऽसेसबंधुवग्गं च । खामेमि मित्तवग्गं, सविसेसमऽमित्तवग्गं च ॥६१॥
उवगारिवग्गमित्तो, खामेमि अणुवगारिवग्गं च । खामेमि दिट्ठवग्गं, अदिट्ठवग्गं पि खामेमि ॥६२॥
सुयमऽसुयं वा नायं, अनायमुवयरियमऽणुवयरियं च । आभासियं अणाऽऽभा-सियं च परिचियमऽपरिचिययं॥६३॥
दीणाऽणाहप्पमुहं च, अंगिवग्गं समग्गमऽवि सम्मं । खामेमि अहं पयओ, स एस मह खामणाकालो ॥६४॥
सम्मं धम्मियवग्गं, खामेमि अधम्मियाण वग्गं पि । तह साहम्मियवग्गं तदियरवग्गं च खामेमि ॥६५॥
सम्मग्गट्ठियवग्गं, वग्गमऽमग्गट्ठियाण खामेमि । समुवट्ठिओ जमिण्हिं, स एस मह खामणाकालो ॥६६॥
परमाहम्मियभावं, गएण अवरोप्परं च नरगम्मि । नेरइयाणं जा जा-यणा कया तं च खामेमि ॥६७॥
एगिंदियाऽऽइभावं, गएण एगिंदियाऽऽइजीवाणं । तह जलयरथलयरखह-यरत्तणं कह वि पत्तेणं ॥६८॥
जं किंचि जलयराऽऽईण, चेव मणवयणकायजोगेहिं । तिरिएसु कयं मणयं पि, मंगुलं तं पि निंदामि ॥६९॥
तह मणुएसु वि रागा, दोसा मोहा भया व हासा वा । सोगाओ कोहमाणेहिं, मायाउ लोभतो वा वि ॥७०॥
एत्थ भवे अन्नत्थ व, भवम्मि जं दोमणस्समऽवहसणं । तज्जणतालणबंधण-निब्भच्छणमारणं तं च ॥७१॥
सारीरमाणसाऽणेग-पीडसंपाडणं कयं कह वि । कारियमऽणुमयमऽवि तं, तिविहेणं चेव निंदामि ॥७२॥
तह मंताऽऽइसामत्थओ य, देवेसु जं पि अवरद्धं । पत्ताऽवयारचावण-थंभणकीलणपयोगेहिं ॥७३॥
अहव तिरियत्तपत्तेण, चेव किर तिरियनरसुराणं जं । तह पत्तनरत्तेण य, तिरिनरसुरगोयरं जं च ॥७४॥
पत्तसुरत्तेणं पुण, नेरइयतिरिक्खनरसुराणं जं । सारीरमाणसं वा, विप्पियमुप्पाइयं किं पि ॥७५॥
सम्मं तं पि समत्थं, तिविहं तिविहेण ते वि सयमऽवि य । खामेमि तह खमामि य, स एस मह खामणाकालो॥७६॥
चिट्ठउ ता पावमईए, पावमाऽऽहेडगाऽऽइ जं विहियं । धम्ममईए वि कयं, पावं पावाऽणुबंधकरं ॥७७॥
सुरहिसुयवीवाहण-जागऽग्गिट्ठियपवापयाणं जं । जुत्तहलगोमहीलोह-हेमतिलधेणुदाणं जं ॥७८॥
जं च इह कुंडकूवाऽ-रघट्टवावीतलायखायाऽऽई । गोतरुपूयणचंदण-कप्पासाऽऽइपयाणाऽऽई ॥७९॥
देवे अदेवबुद्धी, जा य अदेवम्मि देवबुद्धी य । अगुरुम्मि वि गुरुबुद्धी, गुरुम्मि पुण अगुरुबुद्धी य ॥८०॥
तत्ते अतत्तबुद्धी, जा य अतत्ते वि तत्तबुद्धी य । काराविया कया अणु-मया य जइ कह वि कइया वि ॥८१॥
तं तं सव्वं मिच्छत्त-कारणं परिकलित्तु जत्तेण । आलोएमि सम्मं, पायच्छित्तं च पडिवज्जे ॥८२॥

मिच्छत्तमूढमतिणा, जं च कुतित्थं पवत्तियं लोए । अवलविऊण सुमग्गं पि, देसिओ जं कुमग्गो य ॥८३॥
कुग्गहनिबंधणाइं, मिच्छत्तपवट्टगाणि य जणाणं । रइयाइं कुसत्थाइं, अह व अहीयाणि तं निंदे ॥८४॥
पावपसत्तिपराइं, जम्मणगहियाइं मरणमुक्काइं । जाणि सरीराणिण्हिं, ताइं भावेण वोसिरिमो ॥८५॥
तह जं पि पासपहरण-हलमुसलुक्खलघरट्टजंताऽऽई । कयमऽहव कारियं अणु-मयं च जीवोवघायकरं ॥८६॥
एत्थ व जम्मे जम्मंऽतरम्मि, वा सव्वमऽहिगरणजायं । तं पि सपरिग्गहाओ, तिविहं तिविहेण वोसिरियं ॥८७॥
आवज्जिऊण किच्छेण, लोभओ मोहओ य रक्खियओ । मूढेण पावठाणेसु, चेव वावारिओ जो य ॥८८॥
तं अत्थमऽणत्थपयं खु, संपयं भावओ समत्थं पि । सपरिग्गहाओ तिविहं, तिविहेण वासिरामि अहं ॥८९॥
जा का वि केण वि समं, मह वइरपरंपरा अभू अत्थि । तं पि पसमट्ठिओ हं, संपइ खामेमि निस्सेसं ॥९०॥
जो गेहकुडुंबाऽऽइसु य, सुंदरेसु ममाऽऽसि पडिबंधो । इन्हिं च अत्थि जो वा, सो वि मए संपयं चत्तो ॥९१॥
किं बहुणा भणिएणं, इत्थेव भवे भवंऽतरेसुं वा । इत्थीपुरिसनपुंसग-भावेसुं वट्टमाणेणं ॥९२॥
गब्भपरिसाडणाइं, परदाराऽभिगमणाऽऽइयमऽणज्जं । विसयाऽभिलासवसगेणं, जं कयं दारुणं पावं ॥९३॥
सपरहणणाऽऽइ कोहेण, जं च परनिरसणाऽऽइ माणेणं । परवंचणाऽऽइरूवं, जं पि कयं किंपि मायाए ॥९४॥
जं च महाऽऽरंभपरिग्गहाऽऽइ-लोभाऽणुबंधओ विहियं । अट्टदुहट्टवसेणं, विविहमऽसमंजसं जं च ॥९५॥
रागेण मंसभक्खण-पामोक्खं अभक्खभक्खणाऽऽईयं । महुमज्जलावगरस-प्पमुहं पाणं च जं किंचि ॥९६॥
दोसेण परगुणाऽसहण-निंदणखिंसणाऽऽइ जं किंचि । मोहमहागहगहिएण, बहुविहं बहुविहाणेहिं ॥९७॥
हेओवाएयवियार-सुन्नचित्तेण जं च किर किंचि । पावाऽणुबंधिपावं, पमायओ वा कयं जं च ॥९८॥
कयमिममिमं च काहं, करेमि इमगं तु इयवियप्पेहिं । वोलीणाऽणागयवट्ट-माणकालत्तिगाऽणुगयं ॥९९॥
तं संविग्गमणो हं, तिविहं तिविहेण गरहणविसुद्धो । आलोयणनिंदणगरि-हणाहिं सव्वं विसोहेमि ॥६४००॥
एवं दुच्चरियगणं, गुणाऽऽगरो गरहिऊण जहसरियं । पडिबंधनिरोहकए, अप्पाणं पन्नवेज्ज जहा ॥१॥
अच्चंतपरमरमणीययाए, एत्तो अणंततमगुणिए । सुरलोयरइजणए, सिंगारपए य सद्दाऽऽई ॥२॥
विसए अणुहविय पुणो, इमे वि इहभवियतुच्छबीभच्छे । तयऽणंतगुणविहिणे, मा चिंतेज्जासि जीव! तुमं ॥३॥
तहऽसंखतिक्खलक्खत्तणेण, एत्तो अणंततमगुणियं । दीहरनिरंतरं दुक्ख-मेव नरएसु सहिऊण ॥४॥
नाणाविहसारीरिय बाहाजोगे वि मा इयाणिं पि । आराहणाकयमणो, मणा वि कोवेज्ज जीव! तुमं ॥५॥
पेहेसु निउणबुद्धीए, नत्थि थेवं पि तुज्झ साहारो । दुक्खाण सम्मसहणं, मोत्तुं सयणाओ जेण सया ॥६॥
एक्को च्चिय भद्द! तुमं, ण विज्जए तिहुयणे वि तुह बीओ । तुममऽवि न चेव बीओ, कस्स वि अन्नस्स भुवणंतो ॥७॥
अक्खंडनाणदंसण-चरित्तपरिणामपरिणओ थणियं । अप्प च्चिय तुह बीयो, सम्मं धम्माऽणुगो एक्को ॥८॥
संजोगकारणो खलु, जीवाणं दुक्खसमुदयो सव्वो । ता सव्वं संजोगं, जावज्जीवं पि वज्जिंतो ॥९॥
सव्वं पि हु आहारं, सव्वं पि तहाविहं उवहिजायं । सव्वं खेत्तगयं पि हु, पडिबंधं निद्धुणाहि लहुं ॥१०॥
जं पि य इट्ठं कन्तं, पियं मणुण्णं इमं हयसरीरं । जीवस्स दुक्खछड्डं, तिणतुल्लं तं पि मन्नेसु ॥११॥
इय कयसुहपणिहाणो, सम्मं वड्ढियविसेससंवेगो । सम्मं उद्धियसल्लो, सम्मं आराहणाकंखी ॥१२॥
सम्मं समाहियमणो, मणोरहाणं पि परमदुल्लंभं । अभिलसमाणो य मणे, पंडियमरणं रणं व भडो ॥१३॥
बद्धपउमाऽऽसणो च्चिय, जहासमाहीए धरियदेहो वा । संथारत्थाऽवत्थो वि, दंसमसगाऽऽइ अगणेंतो ॥१४॥
नियभालयलनिलीणं, काऊणं पाणिपंकयं धीरो । भत्तिभरनिब्भरमणो, भुज्जो भुज्जो भणेज्ज इमं ॥१५॥
एस करेमि पणामं, अरिहंताणं तिलोयमहियाणं । परमत्थबंधवाणं, सम्मं देवाहिदेवाणं ॥१६॥
एस करेमि पणामं, सिद्धाणं परमसुहसमिद्धाणं । निक्कलरूवधराणं, सिवपयसररायहंसाणं ॥१७॥
एस करेमि पणामं, आयरियाणं पि पसमरासीणं । परमत्थजाणगाणं, ससमयपरसमयकुसलाणं ॥१८॥
एस करेमि पणामं, उज्झायाणं सुझाणझाईणं । भवियजणवच्छलाणं, सुत्तपयाणप्पसत्ताणं ॥१९॥
एस करेमि पणामं, साहूणं सिद्धिपहसहायाणं । संजमसिरिनिलयाणं, परमत्थणिबद्धलक्खाणं ॥२०॥
एस करेमि पणामं, सव्वन्नुपणीयपवयणस्साऽवि । संसारसरणरीणंऽगि-वग्गविस्सामथामस्स ॥२१॥

एस करेमि पणामं, समत्थतित्थयरकयपणामस्स । सुहकम्मोदयणिद्दलिय-विग्घसंघस्स संघस्स ॥२२॥
वंदामि ते पएसे, जम्मणनिक्खमणनाणनिव्वाणं । पत्तं जेसु जिणेहिं, कल्लाणनिहाणभूएहिं ॥२३॥
वंदामि सीलसोरभभरविजियवरगुरुण सुगुरुण । भवभीयजंतुसरणे, चरणे कल्लाणकुलभवणे ॥२४॥
पुव्विं पि पणयजणवच्छलाण, संविग्गणाणरासीणं । कालाऽणुरुवकिरि...-कलावजुत्ताण थेराणं ॥२५॥
पामूलम्मि सम्मं, रम्मं धम्मं पवज्जमाणेणं । सव्वं पच्चक्खेयं पच्चक्खायं मए आसि ॥२६॥
पडिवज्जियव्वयं पुण, पडिवन्नं अह विसेससंविग्गो । तं चेव संपयं पुण, सविसेसतमं करेमि अहं ॥२७॥
तत्थ पढमं पि सम्मं, मिच्छत्ताओ पडिक्कमित्ताणं । तह सविसेसतममऽहं, काउं सम्मत्तपडिवत्तिं ॥२८॥
तत्तो पडिक्कमित्ता, अट्ठारसपावठाणगेहिंतो । विहियकसायनिरोहो, अट्ठमयट्ठाणपरिवज्जी ॥२९॥
परिचत्तपमायपओ, दव्वाऽऽइचउक्कमुक्कपडिबंधो । जहसंभवंतसुहुमा-ऽइयारपइसमयसोहिपरो ॥३०॥
पुणरुत्तुच्चरियअणुव्वओ य, कयसत्तखामणो धणियं । पुव्वुत्ताऽणसणक्कम-कयसव्वाऽऽहारपरिहारो ॥३१॥
नाणोवयोगपुव्वं, पइकिच्चं निच्चमेव वड्ढं(ट्टं)तो । पंचाऽणुव्वयरक्खा-परायणो सीलसाली य ॥३२॥
इंदियदमप्पहाणो, निच्चमऽणिच्चाऽऽइभावणापरमो । साहेमि उत्तिमट्ठं, एवं कयकिच्चपडिवत्ती ॥३३॥
जीवियमरणाऽऽसंसप्पयोग-पडिवज्जणुज्जु(ज्ज)ओ मइमं । इहपरलोगाऽऽसंस-प्पओगमऽवि परिहरंतो य ॥३४॥
कयकामभोगविसयाऽऽ-संसापरिचज्जणो पसमरासी । पंडियमरणरणाऽवणि-विजयपडागागहणसुहडो ॥३५॥
पच्चक्खायतहाविह-पच्चक्खाणाऽरिहऽत्थसत्थो सो । तह कायव्वमिणं, ती पडिवन्नपवज्जियव्वो य ॥३६॥
नवनवतक्कालसमुच्छलंत-संवेगपयरिसगुणेण । अप्पुव्वमिवऽप्पाणं, पए पए परिकलंतो य ॥३७॥
समसत्तुमित्तचित्तो, समतणमणिलेट्ठुकंचणो धीमं । पइखणविलसंतमणो-समाहिरसपयरिसमुवेंतो ॥३८॥
सोच्चा दट्ठूणं भुंजिऊण, परिजिंघिऊण फासित्ता । अच्चंताऽसुंदरसुंद-रे वि सद्दाऽऽइणो विसए ॥३९॥
अरइरईणमऽकरणा, वत्थुसहावाऽवबोहजोगेण । सारयसरियाजलसुप्प-सन्नचित्तो महासत्तो ॥४०॥
गुरुदेवयापणामं, काउं उचियाऽऽसणट्ठिओ चेव । एसो स चंदवेज्झग-समओ त्ति मणे विचिंतेंतो ॥४१॥
निस्सेसकम्मदुमवण-विसेसपज्जलदवानलुत्थाणं । सम्मं धम्मज्झाणं, झाएज्जा तत्थ सो अहवा ॥४२॥
संपुन्नचंदवयणं, उयमाऽइक्कंतरुवलायण्णं । परमाऽऽणंदनिबंधण-मऽइसयसयसमुदयमयं च ॥४३॥
चक्कंऽकुसकुलिसज्झय-पामोक्खऽक्खंडलक्खणधरंऽगं । सव्वुत्तमगुणकलियं, सव्वुत्तमपुण्णरासिमयं ॥४४॥
सरयससिकरवलच्छ-छत्ततिगाऽसोगतरुतलनिलीणं । सिंहासणोवविट्ठं, दुंदुहिघणथणियनिग्घोसं ॥४५॥
धम्ममऽणहं सदेवासुराए, परिसाए वागरेमाणं । सव्वजगजीववच्छल-मऽचिंततमसत्तिमाहप्पं ॥४६॥
सत्तुवयारपवित्तं, समत्थकल्लाणकारणमऽवंझं । सिववुद्धबंभपमुहाऽ-भिहाणधेयं परेसिं पि ॥४७॥
जुगवं सव्वं नेयं, निउणं नाणा मुणंतपासंतं । किर मुत्तिमंतधम्मं, झाएज्ज जिणं जगपईवं ॥४८॥
अहवा तस्सेव जिणस्स, भगवओ तिहुयणस्स वि पमाणं । झाएज्ज सुयं दुहतावि-यंगिपीऊसवरिसं व ॥४९॥
जइ पुण गेलण्णसा, न हु [1]सक्का एत्तियं भणेउं सो । 'असियाउस' त्ति वंजण-पणगं पि मणम्मि झाएज्जा ॥५०॥
परमेट्ठिपंचगाओ, जायइ एक्केक्कयं पि दुरियहरं । जइ त किमंग [2]समगं, समगं पणगं न पावाणं ॥५१॥
परमेट्ठिपणगमेयं, कुणउ पयं मह मणे खणं जेण । साहेमि सकज्जमऽहं, इत्थं पत्थेज्ज य तयाणिं ॥५२॥
भवजलहितरणपोओ, सुगइपहे रहवरो कुगइपिहणं । सग्गगमणे विमाणं, सिवपासाए य निस्सेणी ॥५३॥
परलोयपहे पाहेय-मेस कल्लाणवल्लरीकंदो । दुक्खहरो सोक्खकरो, परमेट्ठीणं नमोक्कारो ॥५४॥
पंचनमोक्कारसमा, अंते वच्चंतु नूण मह पाणा । जेण भवसंभवाणं, दुहाण सलिलंजलिं देमि ॥५५॥
इय पंचनमोक्कारे, पणिहाणपरेण सव्वकालंपि । भवियव्वं बुद्धिमया, किं पुण पज्जंतकालम्मि ॥५६॥
पासट्ठिएहिं अहवा, पढिज्जमाणं इमं नमोक्कारं । अवधारेज्जा एगग्ग-माणसो सबहुमाणं सो ॥५७॥
चंदावेज्झयआराहणाऽऽइ, संवेगजणगगंथे य । सम्मं अवधारेज्जा, निज्जामगजइपढिज्जंते ॥५८॥
वायाऽऽइउवहयगिरो, अच्चंतं आउरत्तपत्तो वा । भासिउमऽसहो अंगुलि-माऽऽईहिं करेज्ज सण्णं ति ॥५९॥

1. सक्का = शक्नुयात् । 2. शामकम् ।

निज्जामणापरा ते वि, साहुणो तस्स उत्तिमट्ठस्स । आसन्नाऽऽसन्नतमं, होउं सुइसुहयसद्देणं ॥६०॥
जावऽज्जवि लक्खिज्जइ, अंगोवंगाऽऽइसंगया उम्हा । उवउत्तमाणसा ताव, अप्पणो खेयमऽगणेंता ॥६१॥
अइनिज्झुणं करेंता, गंथे संवेगभावणाजणगे । पंचनमोक्कारं वा, पढंति अणवरयमऽक्खलियं ॥६२॥
इट्ठमऽसणं व छुहिओ, सुसाउसीयलजलं व अइतिसिओ । परमोसहं व रोगी, गेण्हइ बहुमन्नइ य सो तं ॥६३॥
इय अक्खंडविहीए, सारीरबलक्खए वि भावबलं । अवलंबिऊण धीरो, करेज्ज कालं पुरिससीहो ॥६४॥
आसण्णभाविभद्दो हु, जइ परं कोइ किर महासत्तो । इत्थं कहियकमेणं, पुरिसो पाणे परिच्चयइ ॥६५॥
इय पावजलणजलहर-समाए संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥६६॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, बीयं पडिवत्तिदारमिणं ॥६७॥
पडिवत्तिवओ वि कुओ वि, हेऊओ कहवि होज्ज से खोहो । इय तप्पसमनिमित्तं, सारणदारं णिदंसेमि ॥६८॥

"तृतीय सारणाद्वारम्" —

संथारगट्ठियस्स वि, कहं पि आराहणुज्जयस्साऽवि । दढधीसंघयणस्स वि, अभिलसियसुदुक्करस्साऽवि ॥६९॥
पयईए च्चिय परमं, संसारुव्वेयमुव्वहंतस्स । अच्चंतमुत्तरोत्तर-वड्ढंतसुहाऽऽसयस्साऽवि ॥७०॥
खमगस्स महामुणिणो, चिरभवदुच्चिन्नकम्मदोसेण । वायाऽऽइखोभओ वा, निसियणउव्वत्तणाऽऽइसु वा ॥७१॥
ऊरुदरसिरकरसवण-वयणदसणऽच्छिपट्ठिपामोक्खे । अंगे कत्थ वि उट्ठेज्ज, वेयणा झाणविग्घकरी ॥७२॥
तो गुणमणिपडहत्थो, हत्थं पोउ व्व भिज्जए खमगो । भिन्नो य भीमभवसा-यरम्मि सुइरं परिब्भमइ ॥७३॥
तं च तहा दट्ठूण वि, निज्जामगसद्दमुव्वहंतो वि । कुणइ उवेक्खं जो किर, निद्धम्मो को तओ अन्नो ॥७४॥
निज्जावगसाहुगुणा, जे पुव्विं वन्निया इहं आसि । तेसिं स होइ दूरे, खवगमुवेक्खेज्ज जो मूढो ॥७५॥
तो तस्स चिगिच्छाजाण-एहिं साहूहिं अप्पणा चेव । वेज्जाऽऽएसेणऽहवा, परिकम्मं होइ कायव्वं ॥७६॥
वायकफपित्तपमुहं, कारणमुवलक्खिऊण वियणाए । फासुयदव्वेहि करेज्ज, झत्ति विज्झवणमुवउत्तो ॥७७॥
बत्थिअणुवासणतावणेहिं, आलेवसीयकिरियाहिं । अब्भंगणपरिमद्दण-पमुहेहिं चिगिच्छए खवगं ॥७८॥
जह तहवि असुहकम्मोदएण, वियणा न से उवसमेज्जा । अहवा तण्हाऽऽईया, परीसहा से उदिज्जेज्जा ॥७९॥
तो वेयणाऽभिभूओ, परिसहाऽऽईहिं वा वहिज्जंतो । खवगो अणप्पवसगो, ओहासेज्जा व पलवेज्जा ॥८०॥
संमुज्झंतो तो सो, तह कायव्वो जहाऽऽगमं गणिणा । जह सम्मं संवेगा, पच्चाऽऽगयचेयणो होइ ॥८१॥
'को सि तुमं? किंनामो, कत्थ वससि को व संपयं कालो । किं कुणसि कह व अच्छसि, को वा हं' इय विचिंतेसु॥८२॥
एवं सारेयव्वो, निज्जामगसूरिणा सयं खवगो । साहम्मियवच्छल्लं, बहुलाभं मन्नमाणेणं ॥८३॥
इय कुगइतिमिरदिणयर-पहाए संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥८४॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, तइयमिणं सारणादारं ॥८५॥
अह सारियो वि खवगो, न जं विणा धीरिमं धरेउमऽलं । धम्मुवएससरूवं, तं कवयद्दारमऽक्खेमि ॥८६॥

"चतुर्थःकवचद्वारम्" —

दुस्सहपरीसहोहामियस्स, मज्जायमुज्झिउमणस्स । आगारिंगियकुसलो, खवगस्स वियाणिऊण गुरू ॥८७॥
विसरिसचेट्ठं णिज्जामणेक्क-निउणो विमुक्कनियकिच्चो । निद्धाहिं महुराहिं, गिराहिं अणुसासणं कुज्जा ॥८८॥
रोगाऽऽयंके सुविहिय!, निज्जिणसु परीसहे य धीबलिओ । तो निव्वूढपइन्नो, मरणे आराहओ होसि ॥८९॥
तहा—
हत्थि व्व तुमं अवहत्थिऊण, आलाणखंभमिव मेरं । हत्थिवयत्थाणीए, गुरुणो वि य अवगणेऊण ॥९०॥
अंकुससरिसं अवधीरिऊण, तेसिं च सदुपदेसं पि । अंगपडिचारगे वि हु, नियगे वि परंमुहे ठविउं ॥९१॥
अच्चंतभत्तिकोऊ-हलाऽऽगयं पेच्छगं पि बहुलोगं । विपरंमुहिउं निरवज्ज-लज्जरज्जुं च तोडित्ता ॥९२॥
पडिबद्धरिद्धिकुसुमं, पत्तपरिग्गहपसोहियच्छायं । भममाणो सीलवणं, भंजिहिसि लहुं महाभाग! ॥९३॥
खंडिहिसि समिइगिहभित्ति-संचयं लूरइस्ससि असेसं । गुत्तिवईवग्गं पि हु, दलिहिसि सुगुणाऽऽवणस्सेणिं॥९४॥
नूणं न भद्द! कुलसंभवो त्ति, इय जणपवायरेणूहिं । अवगुंडिज्जिहिसि चिरं, स(ग)रिहिज्जसि बालगजणेण ॥९५॥

पुव्वाऽणुभूयरायाऽऽइ-विहियसम्माणणाऽऽइयगुणाणं । चुक्किहिसि कुगइगड्डा-वडणेणं अह विणस्सिहिसि ॥९६॥
ता भद्द! समीहियकज्ज-सिद्धिविग्घाउ विरमसु इमाउ । कंटगवेहुवमाउ, असमाहिपयाउ इण्हिं पि ॥९७॥
तह खुड्डकुमारो इय, तुमं पि अणुसरसु सम्मबुद्धीए । इण्हिं पि सुट्ठु गाइय-मिच्चाइगीइयाअत्थं ॥९८॥
निव्वाहिया हु तुमए, कोडी वयणिज्जवज्जिएणेव । अहुणा कागणिनिव्वा-हणे वि कीबत्तमुव्वहसि ॥९९॥
तिण्णो महासमुद्दो, तरियव्वं गोपयं तुहेयाणिं । समइक्कंतो मेरू, परमाणू चिट्ठइ एत्तो ॥६५००॥
ता धीर! धरसु•अच्चन्त-धीरिम्मं चयसु कीवपयइत्तं । हरिणंकनिम्मलं निय-कुलं पि सम्मं विभावेसु ॥१॥
मल्लो व्व पेल्लिऊणं, पमायपरचक्कमेक्कहेलाए । एत्थेव पत्थुयत्थे, जहसत्तीए परक्कमसु ॥२॥
परिभावेसु य पयईए, सुंदरत्तं तहाऽणुगामित्तं । भुज्जो य दुल्लहत्तं, धम्मगुणाणं अणग्घाणं ॥३॥
तह सरसु खवग! जं तं, मज्झम्मि चउव्विहस्स संघस्स । वूढा महापइन्ना, अहयं आराहइस्सं ति ॥४॥
को नाम भडो कुलजो, माणी थूलाइऊण जणमज्झे । जुज्झे पलाइआवडिय-मेत्तओ चेव अरिभीओ ॥५॥
थूलाइऊण पुव्वं, माणी संतो परीसहाऽरीहिं । आवडियमेत्तगो चेव, को विसन्नो भयइ साहू ॥६॥
थूलाइयस्स कुलयस्स, माणिणो रणमुहे वरं मरणं । न य लज्जणयं काउं, जावज्जीवं पि जणमज्झे ॥७॥
समणस्स माणिणो उज्जयस्स, निहणगमणं पि होउ वरं । न य नियपइन्नभंगेण, इयरजणजंपणं सहियं ॥८॥
एक्कस्स कए नियजीवियस्स, को जंपणं करेज्ज नरो । पुत्तयपोत्ताऽऽईणं, समरम्मि पलायमाणो व्व ॥९॥
तह अप्पणो कुलस्स य, संघस्स य मा हु जीवियत्थी उ । कुणसु जणे जंपणयं, जाणियजिणवयणसारो वि ॥१०॥
जइ नाम तह्ऽन्नाणी, संसारपवड्ढणाए लेसाए । तिव्वाए वेयणाए, समाउला तह करिंति धिरिं ॥११॥
किं पुण जइणा संसार-सव्वदुक्खक्खयं करेंतेण । बहुतिव्वदुक्खरसजाण-एण न थिई करेयव्वा ॥१२॥
तिरिया वि तोडपीडा-विहुरियदेहा वि गोणपोयलया । किं अणसणं पवन्ना, कंबलसंबला सुया न तए ॥१३॥
तुच्छतणू तुच्छबलो, पयईए चेव तुच्छतिरिओ य । अणसणविहिं पवन्नो, वेयरणी-वानरो य तहा ॥१४॥
खुद्दो वि विपीलियविहिय-तिव्ववियणो वि जायपडिबोहो । मासद्धमऽणसणविहिं, पडिवन्नो कोसियो सप्पो ॥१५॥
जम्मन्तरजणणी को-सलस्स वग्घीभवम्मि लद्धसुई । तिरिया वि छुहावेयण-मऽगणिय तह संठियाऽणसणे ॥१६॥
जइ ता पसुणो वि इमे, अणसणमऽकरिंसु थिरसमाहिपरा । ता नरसीहो वि तुमं, सुंदर! तं कीस न करेसि ॥१७॥
देवीदारेण तहो-वसग्गजोगे सुदंसणगिही वि । अवि मरणमऽज्झवसिओ, पडिवन्नवया न उण चलिओ ॥१८॥
तह सव्वराइउस्सग्ग-जणियवियणं सुतिव्वमऽगणंतो । चंडावडिंसयनिवो, सुगइं पत्तो अचलसत्तो ॥१९॥
गोट्ठे पायोवगओ, सुबंधुणा गोमए पलिवियम्मि । डज्झंतो चाणक्को, पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥२०॥
इय जइ गिहिणो वि तहा, अक्खलियसमाहिणो अहिगयत्थे । जाया तुमं पि ता समण-सीह! तं कुणसु सविसेसं ॥२१॥
मेरु व्व निप्पकंपा, अक्खोभा सायरो व्व गंभीरा । धीमंतो सप्पुरिसा, होंति महल्लावऽऽवईसुं पि ॥२२॥
धीरा विमुक्कसंगा, आयाऽऽरोवियभरा अपरिकम्मा । गिरिपब्भारमऽइगया, बहुसावयसंकडं भीमं ॥२३॥
धीधणियबद्धकच्छा, समयुत्तविहारिणो सुहसहाया । साहिंति उत्तिमट्ठं, सावयदाढंऽतरगया वि ॥२४॥
भालुंकीए अकरुणं, खज्जंतो घोरवेयणड्ढो वि । आराहणं पवन्नो, झाणेण अवंतिसुकुमालो ॥२५॥
मुग्गिल्लगिरिम्मि सुकोसलो वि, सिद्धत्थदइयओ भयवं । वग्घीए खज्जंतो, पडिवन्नो उत्तिमं अट्ठं ॥२६॥
पडिमाए ठिओ सीसे, दिएण पज्जालियम्मि जलणम्मि । भयवं गयसुकुमालो, पडिवन्नो उत्तिमं अट्ठं ॥२७॥
एवं चिय भयवं पि हु, कुरुदत्तसुओ ठिओ य पडिमाए । साएयनयरबाहिं, गोहरणे कुढियदिन्नग्गी ॥२८॥
उद्दायणरायरिसी, उक्कडविसवेयणापरद्धो वि । अविगणियदेहपीडो, पडिवन्नो उत्तिमं अट्ठं ॥२९॥
नावाओ पक्खित्तो, गंगामज्झे अमुज्झमाणमणो । आराहणं पवन्नो, अंतगडो अन्नियापुत्तो ॥३०॥
चंपाए मासखमणं, करित्तु गंगातडम्मि तण्हाए । घोराए धम्मघोसो, पडिवन्नो उत्तिमं अट्ठं ॥३१॥
रोहीडयम्मि सत्ती, हओ वि कुंचेण खंदगकुमारो । तं वेयणमऽहियासिय, पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥३२॥
हत्थिणपुर कुरुदत्तो, सिंबलीफाली व दोणीमंतम्मि । डज्झंतो अहियासिय, पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥३३॥
वसहीए पलिवियाए, रिट्ठाऽमच्चेण उसभसेणो वि । आराहणं पवन्नो, सह परिसाए कुणालाए ॥३४॥

तह वइरखुड्डगो वि हु, पाओवगओ सिलायले तत्ते । आराहणं पवन्नो, मयणं व विलीयमाणो वि ॥३५॥
छिन्नऽद्धाणे सरिया-जलम्मि सवसे वि तण्हकयदाहो । धणसम्मु खुड्डगो वि हु, अहयसमाही दिवं पत्तो ॥३६॥
समकालमसयपिज्जंत-देहरुहिरो वि सुमणभद्दमुणी । तदवारणेण सम्मं, अहियासिंतो दिवं पत्तो ॥३७॥
मेयज्जो वि महरिसी, सीसाऽऽवेढेण निग्गयऽच्छी वि । तह कह वि समाहिमऽकासि, झत्ति जाओ जहंऽतगडो ॥३८॥
भगवं पि महावीरो, बारसवासाइं विसहए सम्मं । विविहोवसग्गवग्गं, तेलोक्केक्कल्लमल्लो वि ॥३९॥
कच्छुजरसाससोसाऽ-भत्तच्छंदऽच्छिकुच्छिवियणाओ । भयवं सणंकुमारो, अहियासइ सत्त वाससए ॥४०॥
अरिहन्नओ वि भयवं, पच्चाऽऽगयचेयणो जणणिवयणा । सुकुमालयाए तणुणो, अखमो चरिउं चिरं चरणं ॥४१॥
पायोवगओ धीरो, तत्तसिलाए मुहुत्तमेत्तेणं । सहसा विलीणदेहो, कालगओ गुरुसमाहीए ॥४२॥
हेमंते रत्तीए, अपाउयंऽगा तवस्सिणो लूहा । पुरपव्वयंऽतरपहे, आगासे संठिया पडिमं ॥४३॥
किं न सुया ते सुंदर!, चउरो सिरिभद्दबाहुणो सीसा । सीएण विचेट्ठंगा, समाहिणा तह गया सुगइं ॥४४॥
किं न सुया ते तइया, भगवंतो कुंभकारकडनयरे । खंदगसूरिविणेया, समाहिपत्ता महासत्ता ॥४५॥
दंडगिरन्नो उवरोहिएण, पावेण पालगदिएण । आराहणं पवन्ना, पीलिज्जंता वि जंतेण ॥४६॥
तह कालवेसियमुणी, अरिसारोगेण तिव्ववियणो वि । तेगिच्छमऽणिच्छंतो, विहरंतो मुग्गसेलपुरं ॥४७॥
पत्तो तत्थद्वियभगिणि-दिन्नअरिसोसहेऽहिगरणं ति । भत्तं पच्चक्खित्ता, विवित्तदेसे ठिओ पडिमं ॥४८॥
तिव्वसडिंभसियालीए, खिक्खियंतीए खज्जमाणो वि । आराहणं पवन्नो, देवाणुपिया तह महप्पा ॥४९॥
तह सावत्थिपुरीए, जियसत्तुसुओ कुमारभावम्मि । पव्वइयो भद्दमुणी, विहरंतो कहवि वेरज्जे ॥५०॥
रायपुरिसेहिं पणिहित्ते, गेण्हिउं आहणित्तु तच्छित्ता । खयखित्ततिक्खखारो, डब्भेहि य वेढिउं मुक्को ॥५१॥
सुक्कंतरुहिरखयखुत्त-डब्भतणजणियतिक्खदुक्खो वि । सम्ममऽहियासमाणो, समाहिणा चेव कालगतो ॥५२॥
तिक्खुग्गतुंडलग्गिर-समकालपिवीलियापरद्धो वि । भयवं चिलाइपुत्तो, पडिवन्नो उत्तिमं अट्ठं ॥५३॥
गुरुपक्खवायविहियाऽ-णुसासणासवणजणियकोवेण । गोसालएण सहसा, मुक्काए तेउलेसाए ॥५४॥
पलयाऽनलतुल्लाए, डज्झन्तो वि हु मुणी सुनक्खत्तो । आराहणं पवन्नो, एवं सव्वाणुभूई वि ॥५५॥
तह सुंदर! किं तुमए, न सुओ सो दंडनामअणगारो । उग्गतवो गुणरासी, खंतिखमो जो किर महप्पा ॥५६॥
जउणावंकुज्जाणे, बाहिं महुरापुरीए निंतेणं । आयावितो दट्ठुं, दुट्ठेणं जउणनरवइणा ॥५७॥
अकुसलकम्मुदउब्भव-कोवेण सिरम्मि निट्ठुरफलेण । पहओ तब्भिच्चेहिं, पत्थररासीकओ सहसा ॥५८॥
अह तह वि तेण मुणिणा, समाहिणा अहह! कहवि तह सहियं । जह खवियकम्मकवओ, अंतगडो केवली जाओ ॥५९॥
किं वा कोसंबिनिवासि-[1]जण्णदत्तस्स माहणस्स सुओ । सुणिओ न सोमदेवो, तब्भाया सोमदत्तो य ॥६०॥
सिरिसोमभूइमुणिणो, पासे सम्मं पवन्नसामन्ना । संविग्गा गीयत्था, जाया ते अह विहरमाणा ॥६१॥
उज्जेणीसंकंताण, जणणिजणयाण बोहणणिमित्तं । पासम्मि गया तत्थ य, दिया वि वियडं किर पिबंति ॥६२॥
तो दव्वंऽतरजुत्तं, मुणीण सन्नायगेहिं किर वियडं । दिन्नं अन्ने अन्ना-णओ य वियडं चिय भणंति ॥६३॥
पीयं च तं विसेसं, अयाणमाणेहिं तेहिं साहूहिं । जाया य वियडविहुरा, तदऽवगमे मुणियपरमत्था ॥६४॥
चिंतेंति ही! अकज्जं, कयं ति एयं महापमायपयं । इय वेरग्गा भत्तं, पच्चक्खिय ते महाधीरा ॥६५॥
एगम्मि नईतीरे, सुविसंठुलकट्ठकूडउवरिम्मि । पाओवगया य अकाल-वरिससरिपूरहीरंता ॥६६॥
जलहिगया जलचरभक्ख-णे वि उच्छल्लणाऽऽइदुत्थे वि । सम्मं समाहिपत्ता, अचलियसत्ता दिवं पत्ता ॥६७॥
जइ ता एए एवं, असहाया तिव्ववेयणड्ढा वि । अच्चंतमऽपडिकम्मा, पडिवण्णा उत्तिमं अट्ठं ॥६८॥
किं पुण अणगारसहायएण, कीरंतयम्मि परिकम्मे । संघे य समीवत्थे, आराहेउं न सक्केज्जा ॥६९॥
जिणवयणमऽमयभूयं, महुरं कन्नसुहयं सुणंतेण । सक्को हु संघमज्झे, साहेउं उत्तिमो अट्ठो ॥७०॥
तह नारयतिरिएसुं, माणुसदेवत्तणेसु य ठिएणं । जं पत्तं सुहदुक्खं, तं तह चिन्तेसु तच्चित्तो ॥७१॥
नरएसु वेयणाओ, सीउण्हकयाओ बहुवियप्पाओ । कायनिमित्तं पत्तो, अणंतखुत्तो सुतिक्खाओ ॥७२॥

1. जण्णदंड पाठां० ।

जइ दगवारगमाणं, अयपिंडं कोइ पक्खिवे नरए । उन्हे भूमिमऽपत्तो, निमिसेण तओ विलीएज्जा ॥७३॥
तह चेव तप्पमाणो, पज्जलियो सीयनरयपक्खित्तो । सो च्चिय भूमिमऽपत्तो, निमिसेण सडेज्ज अयपिंडो ॥७४॥
जं सूलकूडसामलि-वेयरणिकलंबवालुयाऽसिवणे । नरए लोहंऽगारे, खाविज्जंतो दुहं पत्तो ॥७५॥
भज्जियय पिव जं भज्जि-ओ सि जं गालिओ सि रसियं व । जं कप्पियो सि [1]वल्लुर-यं च चुन्नं व चुन्निकओ॥७६॥
तलिओ तत्तकवल्लीहिं, जं च कुंभीहिं पक्कओ जं वा । भिन्नो भल्लीहिं फलेहिं, फालिओ तं विचिंतेसु ॥७७॥
तिरिएसु य छुहतन्हुन्ह-सीयसूलंऽकुसंऽकदमणकयं । वहबंधमरणजणियं, धणियं चिंतेसु तं दुक्खं ॥७८॥
पियविरहे अप्पियसंग-मे य मणुयत्तणम्मि जं दुक्खं । धणहरणदारधरिसण-दारिद्दोवद्दवकयं च ॥७९॥
खंडणमुंडणताडण-जररोगवियोगसोगसंतावं । सारीरमाणसं तदुभ-यं च सम्मं विचिंतेसु ॥८०॥
आणाऽभियोगपरिभव-ईसाऽमरिसाऽऽइ माणसं दुक्खं । देवेसु चवणचिंता-वियोगविहुरेसु चिंतेसु ॥८१॥
किंच—
सहसा परियाणिय चवण-चिंधं विहुरो सुरो विचिंतेइ । विरहाऽऽउरतरलच्छो, तमऽमरलच्छिं नियच्छंतो ॥८२॥
वसिउं निच्चुज्जोए, सुरलोए सुरहिपरिमलग्घविए । निवसिस्सं गब्भहरे, दुग्गंधमहंऽधयारम्मि ॥८३॥
वसिऊण य पूइपुरीस-रुहिररसअसुइनिब्भरे गब्भे । संकोडियंऽगमंऽगो, [2]नीहं कह कडिकुडिच्छाओ ॥८४॥
तह नयणाऽमयवुट्ठिं, दट्ठुं सुरसुंदरीण मुहचंदं । हा! हत्थं नारीणं, मयनियडिघुडुक्कियं वयणं ॥८५॥
रमिउं सुररमणीओ, सोमालसुयं व बंधुरंगीओ । नारिं पगलंताऽसुइ-घट्टीसरिच्छं कह रमिस्सं ॥८६॥
दुग्गंधमणुयतणुपरि-मलाउ दूरं पुरा पलायंतो । तं नरदेहं पूइं, पत्तो कत्तो पलाइस्सं ॥८७॥
न कयं दीणुद्धरणं, न कयं धम्मियजणम्मि वच्छल्लं । हिययम्मि वीयराओ, न धारिओ हारिओ जम्मो ॥८८॥
न कया य मए महिमा, जिणकल्लाणेसु सुकयकल्लाणा । मंदरगिरिनंदीसर-माऽऽईसु न सिद्धकूडेसु ॥८९॥
विसयविसमुच्छिएणं, मोहतमंऽधेण वीयरागाणं । वयणाऽमयं न पीयं, सुरजम्मं हा! मुहा नीयं ॥९०॥
दलइ व जलइ व चलइ व, हिययं पीलिज्जइ व भिज्जइ व । चिंतिय सुरविहवसिरिं, घट्टइ व तडत्ति फुट्टइ व॥९१॥
भवणं भवणाउ वणं, वणाउ सयणाउ सयणमऽल्लियइ । तत्तसिलायलघोलिर-मच्छो व्व रइं न पावेइ ॥९२॥
तं भमियं तं रमियं, तं हसियं तं पियाहिं सह वसियं । हा! कत्थ पुणो दच्छं, इय [3]पलवं झति विज्झाइ ॥९३॥
इय चवणसमयभयविहुर-विबुहविसमं दसं नियंताणं । मोत्तुं धम्मं धीराणं, किं व हिययम्मि संठाउ ॥९४॥
एयमऽणंतं दुक्खं, चउगइगहणे परव्वसं सोढुं । तत्तो अणंतभागं, सहसु इमं सम्ममऽप्पवसो ॥९५॥
किं च तुहऽणंतखुत्तो, आसी तन्हा भवम्मि तारिसिया । जं पसमेउं सव्वे, नइजलनिहिणो वि न तरेज्जा ॥९६॥
आसी अणंतखुत्तो, संसारे ते छुहा य तारिसिया । जं पसमेउं सव्वो, पोग्गलकाओ वि न तरेज्जा ॥९७॥
जइ तारिसिया तन्हा, छुहा य अवसेण ते तया सोढा । धम्मो त्ति इण्हि सवसो, कहमेयाओ न सहसि तुमं ॥९८॥
[4]सुइपाणएण अणुसट्ठि-भोयणेण य सया उवग्गहियो । झाणोसहेण तिव्वं पि, वेयणं अरिहसे सोढुं ॥९९॥
तथा—
अरिहंतसिद्धकेवलि-पच्चक्खं सव्वसंघसक्खिस्स । पच्चक्खाणस्स कयस्स, भंजणाउ वरं मरणं ॥६६००॥
जइ ता कया पमाणं, अरिहंताऽऽई भवेज्ज खवग! तए । ता तस्सक्खियमऽरिहसि, पच्चक्खाणं न भंजेउं ॥१॥
सक्खिकयरायहीलण-माऽऽवहइ नरस्स जह महादोसं । तह जिणवराऽऽइआसा-यणा वि महदोसमाऽऽवहइ ॥२॥
न तहा दोसं पावइ, पच्चक्खाणमऽकरित्तु कालगओ । जह भंजणाउ पावइ, तस्सेव अबोहिबीयकयं ॥३॥
संलेहणापरिस्सम-मिमं कयं दुक्करं च सामण्णं । मा अप्पसोक्खहेउं, तिलोगसारं विणासेहि ॥४॥
धीरपुरिसपण्णत्तं, सप्पुरिसनिसेविअं इमं घेत्तुं । धन्ना निरवेयक्खा, संथारगया विवज्जंति ॥५॥
इय पन्नविज्जमाणो, सो पुव्वं जायसंकिलेसो वि । विणियत्तो तं दुक्खं, पासिइ परदेहदुक्खं च ॥६॥
इय माणधणस्स महिड्ढियस्स, उस्सग्गियं भवे कवयं । अववाइयं पि कवयं, आगाढे होइ कायव्वं ॥७॥
इय गुणमणिरोहणगिरि-धराए संवेगरंगसालाए । चउमूलदाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥८॥

1. वल्लूरयं = मांसखण्डम् । 2. नीहं = निःसरिष्यामि । 3. पलवं = प्रलपन् = विलपन् इत्यर्थः । 4. श्रुतिपानकेन = धर्मश्रवणरूपपानीयेन ।

आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, कवयं ति चउत्थपडिदारं ॥९॥
अह परकज्जऽब्भुज्जय-निज्जामयगुरुगिराए कयकवओ । जं कुणइ तं इयाणिं, समयादारेण दंसेमि ॥१०॥

"पञ्चमम् समताद्वारस्वरुपम्" —

अतिनिबिडकवयजुत्तो, सुहडो व्व झडत्ति आरुहेऊण । नियपइन्नाकुंजर-माऽऽराहणरणमुहम्मि ठिओ ॥११॥
उच्छालियउच्छाहो, पासत्थपढंतसाहुबंदीहिं । वेरग्गगंथवायण-रणतूररवेण कयहरिसो ॥१२॥
संवेगपसमनिव्वेय-पमुहदिव्वाऽऽउहप्पभावेण । निद्धाडिंतो उब्भड अट्ठमयट्ठाणसुहडोलिं ॥१३॥
हासाऽऽइछक्कदुक्कंत-करिघडं उब्भडं पि विहडंतो । पडिखलमाणो इंदिय-तुरंगथट्टं पयट्टंतं ॥१४॥
दुस्सहपरिसहपाइक्क-चक्कमऽच्चुक्कडं पि विजयंतो । मोहमहारायं पि हु, निहणंतो तिजयदुज्जेयं ॥१५॥
खवगो पडिचक्कजया, पावियनिरवज्जजयजसपडागो । सव्वत्थ अपडिबद्धो, उवेइ सव्वत्थ समभावं ॥१६॥
तथाहि—
सव्वेसु दव्वपज्जव-विहीसु निच्चं ममत्तदोसजढो । विप्पणयदोसमोहो, उवेइ सव्वत्थ समभावं ॥१७॥
संजोगविप्पओगेसु, चयइ इट्ठेसु वा अणिट्ठेसु । रइअरइऊसुगत्तं, हरिसं दीणत्तणं च तहा ॥१८॥
मित्तेसु य नाईसु य, सीसे साहम्मिए कुले वा वि । रागं वा दोसं वा, पुव्वुप्पन्नं पि सो चयइ ॥१९॥
भोएसु देवमाणुस्स-एसु न करेइ पत्थणं खवओ । मग्गो विराहणाए, भणिओ विसयाऽभिलासो जं ॥२०॥
इट्ठेसु अणिट्ठेसु य, सद्दप्फरिसरसरूवगंधेसु । इहपरलोए जीविय-मरणे माणाऽवमाणेसु ॥२१॥
सव्वत्थ निव्विसेसो, होइ तगो रागदोसरहियप्पा । खवगस्स रागदोसा, जमुत्तमट्ठं विराहेंति ॥२२॥
एवं सव्वऽत्थेसु वि, समभावं उवगओ विसुद्धप्पा । मेत्तिं करुणं मुइयं, उवेइ खवगो उवेहं च ॥२३॥
तत्थ समत्थजिएसुं, मित्तिं करुणं किलिस्समाणेसु । मुइयं गुणाऽहिएसुं, अविणेयजणेसु य उवेहं ॥२४॥
दंसणनाणचरित्तं, तवं च विरियं समाहिजोगं च । तिविहेणुवसंपज्जिय, सव्वुवरिल्लं कमं कुणइ ॥२५॥
इय कुनयकुरंगयवग्गुराए, संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोगइगमपउणपयवीए ॥२६॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, समया पंचमपडिद्दारं ॥२७॥

"षष्टम्ध्यानद्धारम्" —

समयापरायणेण वि, असुहज्झाणं विहाय सज्झाणे । जइयव्वं खवगेणं ति, झाणदारं निदंसेमि ॥२८॥
जियरागो जियदोसो, जिइंदिओ जियभओ जियकसाओ । अरइरइमोहमहणो, कयभवदुममूलनिद्दहणो ॥२९॥
अट्टं रोद्दं च दुवे, झाणाइं दुहमहानिहाणाइं । निउणमईए समयाउ, बुज्झिऊणुज्झिऊणं च ॥३०॥
धम्मं चउप्पयारं, सुक्कं पि चउव्विहं किलेसहरं । संसारभमणभीओ, झायइ झाणाइं सो दोण्णि ॥३१॥
न परीसहेहिं संतावियओ वि, झाएज्ज अट्टरोद्दाइं । सुट्ठुवहाणविसुद्धं पि, जेण एयाइं नासिंति ॥३२॥
अमणुन्नसंपयोगे, मणुन्नविगमम्मि वाहिविहुरत्ते । परइड्ढिपत्थणम्मि य, अट्टं चउहा जिणा बेंति ॥३३॥
हिंसाऽलियचोरिक्काऽणु-बंधिं सारक्खणाऽणुबंधिं च । तिव्वकसायरउद्दं, रुद्दं पि चउव्विहं अहवा ॥३४॥
'कामाऽणुरंजियं अट्टं, रोद्दं हिंसाऽणुरंजियं । धम्माऽणुरंजियं धम्मं, सुक्कं झाणं निरंजणं' ॥३५॥
अट्टे चउप्पयारे, रुद्दम्मि चउव्विहम्मि जे भेया । ते सव्वे परिजाणइ, संथारगओ खवगसाहू ॥३६॥
तो भावणाहिं भाविय-चित्तो झाएइ धम्मवरझाणं । चउहा वि नाणदंसण-चरित्तवेरग्गरूवाहिं ॥३७॥
पढमं आणाविचयं, विपाकविचयं अवायविचयं च । संठाणविचयमेवं, धम्मज्झाणे झियाइ मुणी ॥३८॥
पउणमऽणवज्जमऽणुवम-मऽणाऽऽइनिहणं महत्थमऽवहत्थं । हियमऽजियमऽवितह-मऽविरोहमऽमोहमोहहरं ॥३९॥
गंभीरजुत्तिगरुयं, सुइसुहयमऽवाहयं महाविसयं । निउणं जिणाणऽऽमाणं, चिंतेइ अचिंतमाहप्पं [दारं] ॥४०॥
इंदियविसयकसायाऽऽसवाऽऽइ-किरियासु वट्टमाणाणं । नरयाऽऽइभवाऽऽवासे, विविहाऽवाए विचिंतेज्जा [दारं]॥४१॥
मिच्छत्ताऽऽइनिमित्तं, सुहाऽसुहं पयइठिइपएसाइं । कम्मविवागं चिंतेइ, तिव्वमंदाऽणुभावं सो [दारं] ॥४२॥
पंचऽत्थिकायमइयं, लोगमऽणाऽऽइनिहणं जिणऽक्खायं । तिविहमऽहोलोगाऽऽई, दीवसमुद्दाऽऽइ चिंतेइ ॥४३॥
होइ य झाणविरमे, निच्चमऽणिच्चाऽऽइभावणाऽणुगओ । ताओ य सुविहियाणं, पवयणविहिणा पसिद्धाओ॥४४॥

एयं समइक्कंतो, धम्मज्झाणं जया भवइ खवओ । तत्तो झायइ सुक्कं, चउभेयं सुद्धलेसागो ॥४५॥
बिंति पुहत्तवियक्कं, सवियारं जिणवरा पढमसुक्कं । बीयं सुक्कज्झाणं, एगत्तवियक्कमवियारं ॥४६॥
सुहुमकिरियानियट्टिं, सुक्कज्झाणं भणंति तइयं तु । वोच्छिन्नकिरियमऽप्पडिं-वाइक्कं खु चउत्थं पि ॥४७॥
पिहु वित्थरो त्ति भण्णइ, वित्थयभावो भवे पुहत्तं ति । वित्थरओ तक्कयई, चिंतयइ तो वियक्कं ति ॥४८॥
किह वित्थरओ भण्णइ, परमाणुजियाऽऽइएगदव्वम्मि । उप्पायट्ठिइभंगा, मुत्ताऽमुत्ताऽऽइपज्जाया ॥४९॥
तेसिं जं अणुसरणं, नयभेएहिं बहुप्पयारेहिं । होइ वियक्को त्ति सुयं, तो पुव्वसुयाऽणुसारेणं ॥५०॥
विचरण होइ विचारो, गमणं अन्नोन्नपज्जवेसुं तु । संकमणं अत्थवंजण, को अत्थो वंजणं किं वा ॥५१॥
दव्वं तु होइ अत्थो, वंजण होअक्खरं तु नामं च । जोगो य मणाऽऽईओ, अंतरभेएसु एएसु ॥५२॥
जं संचरणऽन्नोन्ने, सो नियमा भण्णए वियारो त्ति । सह तेण वियारेणं, तो सवियारं पढमसुक्कं ॥५३॥
अहुणेगत्तवियक्कं, एगत्तं नाम एगपज्जाये । उप्पायठिईभंगाऽऽइ-याणं जं होइ एगयरे ॥५४॥
होइ वियक्कं ति सुयं, पुव्वगयं तेण तं वियक्कं ति । न वि धरइ जमऽण्णन्ने, वंजणअत्थे व जोगे वा ॥५५॥
तो भन्नइ अवियारं, निक्कंपं तं निवायदीवो व्व । बियसुक्कमेव भणियं, एगत्तवियक्कमऽवियारं ॥५६॥
सुहुमम्मि कायजोगे, केवलिणो होइ सुहुमकिरियं तु । अकिरियमऽप्पडिवाई, सेलेसीए चउत्थमिणं ॥५७॥
एयं कसायजुज्झम्मि, होइ खवगस्स आउहं झाणं । झाणविहुणो ण जिणइ, जुज्झं व निराऽऽउहो सुहडो ॥५८॥
इय झायंतो खवओ, जइया वोत्तुमऽसमत्थओ होइ । तइया निज्जवगाणं, साऽभिप्पायप्पयडणत्थं ॥५९॥
हुंकारंऽजलिभमुहंऽगुलीहिं, अच्छीविकूणणेणं वा । सिरचालणपमुहेहि य, लिंगेहि निदंसइ सण्णं ॥६०॥
तो पडियरगा खवगस्स, देंति आराहणाए उवयोगं । जाणंति सुयरहस्सा, कयसन्ना तस्स माणसियं ॥६१॥
इय समभावमुवगओ, तह झायंतो पसत्थयं झाणं । लेसाहिं विसुज्झंतो, गुणसेढिं सो समारुहइ ॥६२॥
इय धम्मसत्थमत्थयमणीए, संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥६३॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, छट्ठं झाणं ति पडिदारं ॥६४॥
लेसाविसेसउ च्चिय, सुहअसुहगईओ झाणजोगे वि । जायंति जेण तम्हा, लेसादारं निदंसेमि ॥६५॥

"सप्तमलेश्याद्वारम्" —

किन्हाऽऽइकम्मदव्वाण, विविहरुवाण सन्निहाणेण । पयईए निम्मलस्स वि, फालिहमणिणो व्व जीवस्स ॥६६॥
जंबूफलभक्खगपुरिस-छक्कपरिणामभेयसंसिद्धो । हिंसाऽऽइभावभेओ, भण्णइ लेस त्ति परिणामो ॥६७॥

तथाहि— "जम्बूफलभक्षकदृष्टान्तः"

एगम्मि वणनिगुंजे, परिब्भमंतेहिं छहिं उ पुरिसेहिं । गयणंऽगणऽग्गगविसण-कए व्व उड्ढं पयड्ढंतो ॥६८॥
चक्कलविसालमूलो, सुपक्कफलभरनमंतसाहग्गो । पसरियबहुप्पसाहो, समंतओ गुच्छसंछइओ ॥६९॥
तह पइगुच्छं पेच्छिज्जं-माणपरिपिक्कसुरसफारफलो । पवणछडच्छोडणझडिय-पडियफलफुल्लतलभूमी ॥७०॥
एक्को जंबूरुक्खो भुक्खाए खामकुक्खिकुहरेहिं । दिट्ठो अदिट्ठपुव्वो, पच्चक्खं कप्परुक्खो व्व ॥७१॥
तो जंपिउं पयत्ता, परोप्परं ते जहा अहो! एसो । संपाविओ सुपुन्नेहिं, पायवो कह वि अम्हेहिं ॥७२॥
ता एह महातरुणो, इमस्स अमओवमाणि एयाणिं । खामो खणं फलाइं, एयं होउ त्ति किन्तु कहं ॥७३॥
अह तत्थेक्को जंपइ, आरुहमाणाण जीवसंदेहो । तो छिंदिऊण मूले, पाडेउं ताहे भक्खामो ॥७४॥
बीओ बेइ किमिमिणा, तरुणा सव्वंगिएण छिन्नेण । छिंदह महल्लसाहं, एक्कं तइओ पुण पसाहं ॥७५॥
गोच्छे बेइ चउत्थो, पंचमओ भणइ भुंजह फलाइं । छट्ठो भणइ सयं चिय, पडिए भूमीए भक्खामो ॥७६॥
दिट्ठंतस्सोवणओ, जो भणइ तत्थ छिंदिमो मूला । सो वट्टइ कण्हाए, साहाछिंदावगो य नरो ॥७७॥
नीलाए लेसाए, पसाहछिंदावगो कवोयाए । गोच्छच्छेदुवएसी, वट्टइ पुण तेउलेसाए ॥७८॥
तग्गयफलगाही पुण, पम्हाए वट्टइ य सुक्काए । सयमेव धरणिणिवडिय-फलगहणुवएसदाणपरो ॥७९॥
अह वा गामविलुंपग-छच्चोरा ताण जंपए एगो । दुपयं चउप्पयं वा, जं पासह हणह तं सव्वं ॥८०॥
बीओ य माणुसाइं, पुरिसे च्चिय तइयओ हणावेइ । सत्थकरे उ चउत्थो, पंचमगो पहरमाणे उ ॥८१॥

छट्ठो भणेइ तुम्हे, एक्कं ता हरह निद्दया दविणं । अन्नं मारेह जणं, अहह! महापावमेयं ति ॥८२॥
ता मा करेह एवं, दविणं चिय लेह जं [1]चए पत्ते । तुम्ह पुण हवइ एयं, उवसंहारो इमो तेसिं ॥८३॥
वट्टइ सो कण्हाए, जो जंपइ हणह सव्वगामं ति । एवं कमेण सेसा, जा चरिमो सुक्कलेसाए ॥८४॥
किण्हा नीला काऊ, लेसाओ तिन्नि अप्पसत्थाओ । चयसु सुविसुद्धकरणो, संवेगमऽणुत्तरं पत्तो ॥८५॥
तेऊ पम्हा सुक्का, लेसाओ तिन्नि सुप्पसत्थाओ । उवसंपज्जसु कमसो, संवेगमऽणुत्तरं पत्तो ॥८६॥
परिणामविसुद्धीए, लेसासुद्धी उ होइ जीवस्स । परिणामविसुद्धी पुण, मंदकसायस्स नायव्वा ॥८७॥
मंदा होंति कसाया, बाहिरदव्वेसु संगरहियस्स । पावइ लेसासुद्धिं, तम्हा देहाऽऽइसु असंगो ॥८८॥
जह तंदुलस्स कुंडय-सोही सतुसस्स तीरइ न काउं । तह जीवस्स न सक्का, लेसासोही ससंगस्स ॥८९॥
उक्कोसाऽऽइठाणेसु, सुद्धलेसाण वट्टमाणो सो । कालं करेज्ज जइ ता, तारिसमाऽऽराहणं लहइ ॥९०॥
ता लेसासुद्धीए, जत्तो नियमेण होइ कायव्वो । जल्लेसो मरइ जिओ, तल्लेसेसुं तु उववज्जे ॥९१॥
लेसाऽईयं तु गतो, परिणामं नाणदंसणसमग्गो । अक्खयसोक्खसमिद्धिं, पावइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥९२॥
इय समयसिंधुवेलोवमाए, संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥९३॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, लेसा सत्तमपडिद्दारं ॥९४॥
लेसाविसुद्धिमाऽऽरोहिऊण, आराहणं खमगसाहू । जं पाउणइ तमेत्तो, फलदारेणं निदंसेमि ॥९५॥

"अष्टमफलद्वारम्" —

आराहगो य तिविहो, उक्कोसो मज्झिमो जहन्नो य । लेसादारेण फुडं, वोच्छामि विसेसमेयस्स ॥९६॥
सुक्काए लेसाए, उक्कोसगमंऽसगं परिणमेत्ता । जो मरइ सो हु नियमा, उक्कोसाऽऽराहगो होइ ॥९७॥
जे सेसा सुक्काए, अंसा जे आवि पम्हलेसाए । ते पुण जो सो भणिओ, मज्झिमओ वीयरागेहिं ॥९८॥
तेउलेस्साए जे, अंसा अह ते उ जो परिणमित्ता । मरइ तओ विं हु नेओ, जहन्नआराहगो एत्थ ॥९९॥
एसो पुण सम्मत्ताइ-संगओ चेव होइ विन्नेओ । न हु लेसामित्तेणं, तं जमऽभव्वाण वि सुराणं ॥९७००॥
एवं च केइ उक्कोस-गाए आराहणाए नीसेसे । खविऊणं कम्मंसे, सिद्धिं गच्छंति विहुयरया ॥१॥
अह मज्झिममाऽऽराहण-माऽऽराहिय साऽवसेसकम्मंसा । सुविसुद्धसुक्कलेसा, भवंति लवसत्तमा देवा ॥२॥
कप्पोवगा सुरा जं, अच्छरसहिया सुहं अणुभवंति । तत्तो अणंतगुणियं, सोक्खं लवसत्तमसुराणं ॥३॥
केइ वि मज्झिमलेसा, चरित्ततवनाणदंसणगुणा य । वेमाणियदेविंदा, भवंति सामाणियसुरा वि ॥४॥
सुयभत्तीए समग्गा, उग्गतवा नियमजोगसंसुद्धा । लोगंतिया सुरवरा, हवंति आराहया धीरा ॥५॥
जावइयाउ रिद्धीओ, होंति इंदियगपाणि य सुहाणि । फुडमाऽऽगमेसिभद्दा, लभंति आराहया ताइं ॥६॥
जे वि हु जहन्नियं तेओ-लेसियाऽऽराहणं पवज्जंति । ते वि जहन्नेणं चिय, लभंति सोहम्मदेविड्ढिं ॥७॥
भोए अणुत्तरे भुंजि-ऊण तत्तो चुया सुमाणुस्से । इड्ढिमऽउलं चइत्ता, चरंति जिणदेसियं धम्मं ॥८॥
सइमंता धीमंता, सद्धासंवेगवीरिओवगया । जित्ता परीसहचमुं, उवसग्गरिउं अभिभवित्ता ॥९॥
सुक्कं लेसमुवगया, सुक्कज्झाणेण खवियसंसारा । उम्मुक्ककम्मकवया, उवेंति सिद्धिं धुयकिलेसा ॥१०॥
जेण जहन्नेणाऽवि हु, काऊणाऽऽराहणं धुयकिलेसा । सत्तट्ठभवाणऽब्भं-तरम्मि पाविंति परमपयं ॥११॥
सव्वन्नू सव्वदरिसी, निरुवमसुहसंगया य ते तत्थ । जम्माऽऽइदोसरहिया, चिट्ठंति सया वि भगवंतो ॥१२॥
नारयतिरिएसु दुहं, किंचि सुहं होइ तह य मणुएसु । देवेसु किंचि दुक्खं, मोक्खे पुण सव्वहा सोक्खं ॥१३॥
तथा—
रागाऽऽईणमऽभावा, जम्माऽऽईणं असंभवाओ य । अव्वाबाहाओ खलु, सासयसोक्खं खु सिद्धाणं ॥१४॥
रागो दोसो मोहो, दोसाऽभिस्संगमाऽऽइलिंग त्ति । अइसंकिलेसत्तं वा, हेऊ चिय संकिलेसस्स ॥१५॥
एएहऽभिभूयाणं, संसारीणं कओ सुहं किंचि । जाइजरामरणजलं, भवजलहिं परियडंताणं ॥१६॥
रागाऽऽइविरहओ जं, सोक्खं जीवस्स तं जिणो मुणइ । न हि सन्निवायगहिओ, जाणइ तदऽभावजं सोक्खं ॥१७॥

1. चए = च्यवे = जन्मान्तरे इत्यर्थः ।

डड्ढम्मि जहा बीए, न होइ पुण अंकुरस्स उप्पत्ती । तह चेव कम्मबीए, दड्ढम्मि भवंऽकुरस्साऽवि ॥१८॥
जम्माऽभावे न जरा, न य मरणं न य भयं न संसारो । एएसिमऽभावाओ, कहं न मोक्खे परं सोक्खं ॥१९॥
अव्वाबाहाउ च्चिय, सयलिंदियविसयभोगपज्जंते । उच्छुक्कनियत्तीओ, संसारसुहं य सद्धेयं ॥२०॥
एसा सयलिन्दियविसय-भोगपज्जन्तवत्तिणी नवरं । उच्छुक्कनियत्ती थेव-कालिया पुण तदिच्छाओ ॥२१॥
पुणरऽभिलासाऽभावा, सिद्धाणं सव्वकालिगी पुण सा । एगंतिगा य अच्चंति-गा य ता तेसि परमसुहं ॥२२॥
इय अणुहवजुत्तीहेउ-संगयं नूण निट्ठियऽट्ठाणं । अत्थि सुहं सद्धेयं, तह जिणचंदाऽऽगमाओ य ॥२३॥
आराहणविहिमेयं, आराहित्ता जहाऽऽगम्मं सम्मं । तीयऽद्धाए अणंता, सिद्धा जीवा धुयकिलेसा ॥२४॥
आराहणविहिमेयं, आराहित्ता जहाऽऽगम्मं सम्मं । इण्हिं पि हु संखेज्जा, सिज्झंति विदेहखित्तए काले ॥२५॥
आराहणविहिमेयं, आराहित्ता जहाऽऽगमं सम्मं । एसऽद्धाए अणंता, सिज्झिस्संति धुवं जीवा ॥२६॥
आराहणविहिमेयं, एमेव विराहिउं तिकालं पि । एत्थु अणेगे जीवा, संसारपवड्ढगा भणिता ॥२७॥
नाऊण एवमेयं, इमीए आराहणाए जइयव्वं । न हु अण्णो पडियारो, को वि इहं भवसमुद्दम्मि ॥२८॥
मूलमिमीए वि नेयं, एगंतेणेव भव्वसत्तेहिं । सद्धाऽऽइभावओ खलु, आगमपरतंतया गरुई ॥२९॥
जम्हा न मोक्खमग्गे, मोत्तूणं आगमं इह पमाणं । विज्जइ छउमत्थाणं, तम्हा तत्थेव जइयव्वं ॥३०॥
आगमपरतंतेहिं, तम्हा निच्चं पि सोक्खकंखीहिं । सव्वमऽणुट्ठाणं खलु, कायव्वं अप्पमत्तेहिं ॥३१॥
मरणविभत्तिद्दारे, पुव्विं जं सूइयं इहाऽऽसि जहा । भणियं आराहणफल-दारे मरणप्फलं पि फुडं ॥३२॥
अह अणुकमेण संपइ, संपत्ते तम्मि अहिगयद्दारे । मरणाणं पि फलमऽहं, केत्तियमित्तं पि कित्तेमि ॥३३॥
तत्थ य अविसेसेणं, वेहाणसगद्धपट्ठजुत्ताइं । पढममरणाणि अट्ठ वि, भण्णंति दुग्गइफलाइं ॥३४॥
तह सामण्णेणं चिय, पुव्वुत्तविहीए कित्तियकमाणि । सत्त उण उवरिमाइं, मरणाइं सोग्गइफलाइं ॥३५॥
नवरं अंतिममरण-तिगस्स सविसेसमऽवि फलं वोच्छं । सेसचउक्कस्स उ त-प्पवेसओ तुल्लमेव फलं ॥३६॥
तत्थ वि भत्तपरिन्ना-पवन्नियं चिय फलं णियट्ठाणे । एत्तो उ इंगिणीमरण-गोयरं फलमिमं भणिमो ॥३७॥
भणियविहीए सम्मं, साहेत्ता इंगिणिं धुयकिलेसा । सिज्झंति केइ केई, भवंति देवा विमाणेसु ॥३८॥
इय इंगिणिमरणफलं पि, पयडियं सुत्तसाहियविहीए । अह पायवोवगमणाऽ-भिहाणमरणप्फलं भणिमो ॥३९॥
सम्मं पाओवगओ, धम्मं सुक्कं च सुट्ठु झायंतो । उज्झियदेहो जायइ, को वि वेमाणियसुरेसु ॥४०॥
को वि य पहीणकम्मो, कमेण पाउणइ सिद्धिसोक्खं पि । तस्स य भणामि लाभ-क्कमं सरूवं च ओहेण ॥४१॥
आराहगो जहुत्तर-चरणविसुद्धीए धम्मसुक्काइं । झायंतो सुहलेसो, अपुव्वकरणाऽऽइगकमेण ॥४२॥
महिऊण मोहजोहं, साऽऽवरणं खवगसेढिमाऽऽरूढो सुहडो इव रणसीसं, केवलरज्जं समज्जिणइ ॥४३॥
तत्तो देसूणं पुव्वकोडि-मंऽतोमुहुत्तमेत्तं वा । विहरइ अह वेयणिज्जं, अइबहुयं थोवमाऽऽउं च ॥४४॥
होज्ज तओ स महप्पा, अंतमुहुत्तम्मि आउगे सेसे । कुणइ समुग्घायं तुल्ल-ठिइकए सेसकम्माणं ॥४५॥
उल्लं संतं वत्थं, विरिल्लियं जह विसुक्कइ खणेणं । संवेल्लियं तु न तहा, तह वेयणियाऽऽइकम्माइं ॥४६॥
बहुकालक्खवणिज्जाइं-ऽणुक्कमं वेयणेण किर जाइं । खिज्जंति ताइं णियमा, समयहयस्स क्खणेणं पि ॥४७॥
इय नीसेसाऽऽवरणाऽ-वगमवियंभंतवीरिउल्लासो । आरभइ समुग्घायं, लहुकम्मखयट्ठया तत्थ ॥४८॥
चउहिं समएहिं दंडग-कवाडमंथजयपूरणाणि तओ । कुणइ कमेण णियत्तइ, तहेव सो चउहिं समएहिं ॥४९॥
काऊणाऽऽउसमं सो, वेयणियं तह य नामगोत्ताति(इं) । सेलेसिमुवागंतुं, जोगनिरोहं तओ कुणइ ॥५०॥
बायरमणप्पओगं, बायरकाएण बायरवइं च । बायरकायं पि तहा, रुंभइ सुहुमेण काएण ॥५१॥
तत्तो सुहुमं मणवइ-जोगं रुंभेत्तु सुहुमकाएण । काइयजोगे सुहुमम्मि, सुहुमकिरियं जिणो झाइ ॥५२॥
सुहुमकिरिएण झाणेण, सुनिरुद्धे सुहुमकायजोगे वि । सेलेसी होइ तओ, अबंधगो निच्चलपएसो ॥५३॥
अवसेसकम्मअंस-क्खयाय पंचक्खरुग्गिरणकालं । वोच्छिन्नकिरियमऽप्पडि-वाइ झाणं झियाइ तओ ॥५४॥
सो तेण पंचमत्ता-कालेण खवेइ चरिमझाणेण । अणुइन्नाओ उवरिम-समए सव्वाउ पयडीउ ॥५५॥
चरिमसमयम्मि तो सो, खवेइ वेइज्जमाणपयडीओ । बारस तित्थयरजिणो, एक्कारस सेससव्वन्नू ॥५६॥

तत्तो अविग्गहाए, गईए समए अणंतरे चेव । पावइ जगस्स सिहरं, खेत्तं कालं च अफुसंतो ॥५७॥
तथाहि—
पज्जत्तमेत्तसन्निस्स, जेत्तियाइं जहन्नजोगिस्स । होंति मणोदव्वाइं, तव्वावारो य जम्मत्तो ॥५८॥
तयऽसंखगुणविहीणे, समए समए निरुंभमाणो सो । मणसो सव्वनिरोहं, कुणइ असंखेज्जसमएहिं ॥५९॥
पज्जत्तमेत्तबिंदिय-जहन्नवइजोगपज्जया जे उ । तदऽसंखगुणविहीणे, समए समए निरुंभंतो ॥६०॥
सव्ववइजोगरोहं, संखाऽईएहिं कुणइ समएहिं । तत्तो उ सुहुमपणगस्स, पढमसमओववन्नस्स ॥६१॥
जो किर जहन्नजोगो, तदऽसंखेज्जगुणहीणमेक्कसमएण । समए निरुंभमाणो, देहतिभागं च मुंचंतो ॥६२॥
रुंभइ स कायजोगं, संखाऽईएहिं चेव समएहिं । तो कयजोगनिरोहो, सेलेसीभावणामेइ ॥६३॥
सेलेसो किर मेरु, सेलेसी होइ जा तहाऽचलया । होउं व असेलेसो, सेलेसी होइ थिरयाए ॥६४॥
अहवा सेलु व्व इसी, सेलेसी होइ सो उ थिरयाए । सेव अलेसी होइ, सेलेसी होअलोवाओ ॥६५॥
सीलं व समाहाणं, निच्छयओ सव्वसंवरो सो य । तस्सेसो सीलेसो, सेलेसी होइ तदऽवत्था ॥६६॥
हस्सऽक्खराइं मज्झेण, जेण कालेण पंच भण्णंति । अच्छइ सेलेसिगओ, तत्तियमेत्तं तओ कालं ॥६७॥
तणुरोहाऽऽरंभाओ, झायइ सुहुमकिरियाऽनियट्टिं सो । वोच्छिन्नकिरियमऽप्पडि-वाइं सेलेसिकालम्मि ॥६८॥
[1]तदऽसंखेज्जगुणासेढीए, विरइयं आसि जं पुरा कम्मं । समए समए खवयं, कमसो सेलेसिकालेण ॥६९॥
सव्वं खवेइ तं पुण, निल्लेवं किंचि दुचरिमए समए । किंचि व्व होइ चरिमे, सेलेसीए तयं वोच्छं ॥७०॥
मणुयगइजाइतसबाय-रं च पज्जत्तसुभगमाऽऽएज्जं । अन्नयरवेयणिज्जं, नराउमुच्चं जसो नामं ॥७१॥
संभवओ जिणनामं, नराऽणुपुव्वी य चरिमसमयम्मि । सेसा जिणसंताओ, दुचरिमसमयम्मि निट्ठिंति ॥७२॥
ओरालियाऽऽइसव्वाहिं, चयइ विप्पजहणाहिं जं भणियं । निस्सेसतया न जहा, देसच्चाएण सो पुव्विं ॥७३॥
तस्सोदइया भावा, भव्वत्तं च विणियत्तए समयं । सम्मत्तनाणदंसण-सुहसिद्धत्ताणि मोत्तूणं ॥७४॥
रिजुसेढिं पडिवन्नो, समयपएसंऽतरं अफुसमाणो । एगसमएण सिज्झइ, अह सागारोवउत्तो सो ॥७५॥
उड्ढं बंधणमुक्को, तहा सहावत्तओ य सो जाइ । जह एरंडस्स फलं, बंधणमुक्कं समुप्फिडइ ॥७६॥
परओ धम्माऽभावा, तस्स गई नत्थि कम्ममुक्कस्स । होइ अधम्मेण ठिई, साइअणंतं च से कालं ॥७७॥
इह देहतिगं मोत्तुं, सिज्झइ गंतुं तहिं सहावत्थो । चरिमतणुतिभागूणं, अवगाहमुवेइ जीवघणं ॥७८॥
ईसीपब्भाराए, सीयाए जोयणेण लोगंऽतो । सिद्धाणोगाहणया, उक्कोसं कोसछब्भाओ ॥७९॥
तेलोक्कमत्थयत्थो, सो सिद्धो दव्वपज्जवसमेयं । जाणइ पासइ, भगवं, तिकालजुत्तं जयमऽसेसं ॥८०॥
भावे समविसमत्थे, सूरो जुगवं जहा पयासेइ । लोगमऽलोगं च तहा, निव्वाणगओ पयासेइ ॥८१॥
जं नत्थि सव्वबाहाओ, तस्स सव्वं पि जाणइ जयं जं । जं च निरुस्सुगभावो, परमसुही तेण सुपसिद्धो ॥८२॥
परमिड्ढीपत्ताणं, मणुआणं नत्थि तं सुहं लोगे । अव्वाबाहमऽणुवमं, जं सोक्खं तस्स सिद्धस्स ॥८३॥
देविंदचक्कवट्टी, इंदियसोक्खं च जं अणुहवंति । तत्तो अणंतगुणियं, अव्वाबाहं सुहं तस्स ॥८४॥
तीसु वि कालेसु सुहाणि, जाणि पवराणि नरसुरिंदाणं । ताणेगसिद्धसोक्खस्स, एगसमयं पि नऽग्घंति ॥८५॥
विसएहिं से न कज्जं, जं नत्थि छुहाऽऽइयाओ बाहाओ । रागाइआ य उवभोग-हेउणो तस्स जं नत्थि ॥८६॥
एत्तो च्चिय निच्चं पि हु, भासणचंकमणचिंतणाऽऽईणं । चेट्ठाण नत्थि भावो, निट्ठियअट्ठम्मि सिद्धम्मि ॥८७॥
अणुवममऽमेयमऽक्खय-मऽमलं सियमऽजरमऽरुजऽमभयं धुवं । एगंतियमऽच्चंतिय-मऽव्वाबाहं सुहं तस्स ॥८८॥
इय पायवोवगमणाऽभिहाण-जिणजोग्गचरममरणस्स । आगमजुत्तीए फलं, संखेवेणं समक्खायं ॥८९॥
आराहणाफलमिणं, सोउं संवेगवड्ढिउच्छाहा । काऊण तइं सव्वे, भव्वा निव्वुइसुहमुवेंतु ॥९०॥
इय करणसउणिपंजरसमाए, संवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥९१॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारे, फलं ति अट्ठमपडिद्दारं ॥९२॥

1. तदऽसंखेज्जगुणाए, गुणसेढीए रइयं पुरा कम्मं पाठां० ।

"नवमम् विजहनाद्वारम्" —

जीवं पडुच्च पुव्वं, फलाऽवसाणाणि अरिहमाऽऽईणि । दाराणि दंसियाइं, एत्तो पुण जीवचियलस्स ॥९३॥
खमगसरीरस्स भवे, जो किर कायव्वयित्थरो कोई । सो विजहणदारेणं, जिणमयनिद्दिट्ठनाएणं ॥९४॥
भन्नइ साहूण अणु-ग्गहट्ठया होंति विजहणाए य । परिठवणा परिचाओ, उज्झणमिच्चाइ एगट्ठा ॥९५॥
सा पुण पुव्वपवण्णिय-कमेण खमगम्मि मरणमऽणुपत्ते । निज्जामगेहिं सम्मं, तदीयदेहस्स कायव्वा ॥९६॥
न य कायव्वो सोगो, जहा अहो! सो तहा महाभागो । चिरमुवचरिओ चिरपज्जु-वासिओ चिरमऽहावसिओ ॥९७॥
सिक्खाविओ य सुचिरं, समाहिकरणेण चिरमऽणुग्गहिओ । नाणाऽऽईहिं गुणेहिं, बंधु व्व सुओ व्व मित्तो व्व॥९८॥
अम्हं इट्ठो आसी, निक्कित्तिमपेमभायणं च परं । इन्हिं च मत्तुणा कह-मऽवहरिओ निक्किवेणं सो ॥९९॥
हा! हा! मुट्ठा मुट्ठ त्ति, एयमऽक्कंदसद्दमाऽऽईओ । जम्हा इह कीरंते, सरीरयं सि(झि)ज्जई अचिरा ॥९८००॥
परिगलइ बलमऽसेसं, सई पणस्सइ वियज्जए बुद्धी । उप्पज्जइ गहिलत्तं, संभवइ हिययरोगो वि ॥१॥
हायंति इंदियाइं, छलंति खुद्दा य देवया कहवि । झिज्जइ समयाऽऽयन्नण-समुब्भवो सुहविवेगो वि ॥२॥
संजायइ लहुयत्तं, संभाविज्जइ दढं विमूढत्तं । किं बहुणाऽणत्थाणं, सोगो सव्वेसि समवायो ॥३॥
ता तं दूरम्मि समुज्झिऊण, निज्जामगा महामुणिणो । दढमऽप्पमत्तचित्ता, भवठिइमेवं विभावेंति ॥४॥
हे जीव! कीस सोयसि, किं न तुमं मुणसि जो इहं जाओ । तस्साऽवस्संभावी, मच्चू जम्मो पुणो मरणं ॥५॥
अप्पडियारं च इमं, कहमिहरा भासरासिणो उदए । कूरग्गहस्स वि तहा, विन्नवणम्मि वि सुरिंदस्स ॥६॥
अतुलियबलसारेणं ति-जयपहुपरमेसरेण वीरेण । पडिवालियं न थेवं पि, सिद्धिगमणं जिणवरेणं ॥७॥
न य तस्स सुचिरसंचिय-सुकयस्स गुणोलिनिलयभूयस्स । अइघोरपंकपम्मुक्क-संजमुज्जोगजुत्तस्स ॥८॥
आराहणमाऽऽराहिय, पंचत्तं पावियस्स खमगस्स । विज्जइ मणागमेत्तं पि, नूण संसोयणिज्जं ति ॥९॥
अलमेत्थ पसंगेणं, एवं सम्मं विभाविउं धीरा । तग्गयविहिं समग्गं, कुव्वंति लहुं णिरुव्विग्गा ॥१०॥
नवरं कालगयस्स हु, सरीरमंऽतो व्व होज्ज बाहिम्वा । जइ अंतो निज्जवगा, इमेण विहिणा विगिंचन्ति ॥११॥
जत्थेव मासकप्पं, वासावासं य साहुणो ठंति । पढमं चिय गीयत्था, तत्थ महाथंडिले पेहे ॥१२॥
दिसि अवरदक्खिणा[1] दक्खिणा[2] य, अवरा[3] य दक्खिणापुव्वा[4] । अवरुत्तरा[5] य पुव्वा[6], उत्तर[7] पुव्वुत्तरा चेव[8]॥१३॥
पढमाए अन्नपाणं, सुलहं बीयाए दुल्लहं होइ । उवही पुण तइयाए, नत्थि चउत्थीए सज्झाओ ॥१४॥
पंचमियाए कलहो, गणभेओ ताण होइ छट्ठीए । सत्तमदिसि गेलन्नं, मरणं पुण अट्ठमीए उ ॥१५॥
पढमदिसावाघाए, बीयाऽऽईणं पि सो गुणो होइ । कमसो सव्वासु तओ, दिसासु महथंडिले पेहे ॥१६॥
जं वेलं कालगओ,तव्वेलंगुट्ठमाऽऽइ बंधेज्जा । छेयणजग्गण वसभा, कुणंति धीरा सुयरहस्सा ॥१७॥
यन्तरमाऽऽई वि तयं, देहमऽहिट्ठेज्ज तेण उट्ठेज्जा । आगमविहिणा धीरेहिं, उवसमो तस्स कायव्वो ॥१८॥
दोन्नि य दिवड्ढभोगे, दब्भमया पुत्तला य कायव्वा । समभोगे पुण एगो, अवड्ढभोगे न कायव्वो ॥१९॥
तिन्नेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य । एए छन्नक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसंभोगा ॥२०॥
सयभिसया-भरणीओ, अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य । छ इमे अवड्ढभोगा, समभोगा सेसनक्खत्ता ॥२१॥
जत्तोहुत्तो गामो, तत्तो सीसं ठवेत्तु तं घेत्तुं । गच्छंति थंडिलं पति, अपच्छओ ते नियच्छंता ॥२२॥
सुत्तत्थतदुभयविऊ, पुरओ घेत्तूण पाणगकुसे य । गच्छइ य तणाइं सो, समाइं सव्वत्थ संथरइ ॥२३॥
विसमा जइ होज्ज तणा, उवरिं मज्झे व हेट्ठओ वा वि । मरणं गेलन्नं वा, ता गणधरवसभभिक्खूण ॥२४॥
जत्थ य नत्थि तणाइं, चुन्नेहिं तत्थ केसरेहिं व । कायव्वोऽत्थ ककारो, हेट्ठि तकारं च बंधेज्जा ॥२५॥
जाए दिसाए गामो, तत्तो सीसं तु होइ कायव्वं । उट्ठिंतरक्खणट्ठा, न नियत्तेज्जा पयक्खिणिउं ॥२६॥
चिंधट्ठा रयहरणं, दोसा उ भवे अचिंधकरणम्मि । गच्छेज्ज व सो मिच्छं, राया व करेज्ज गामवहं ॥२७॥
जो जहियं सो तत्तो, नियत्तइ अविहिकाउसग्गं च । आगम्म गुरुसयासे, कुणंति तत्थेव न कुणंति ॥२८॥
खमणमऽस(सम)ज्झायं वा, रायणियमहानिनायनियगेसु । कायव्वं नियमेणं, असिवाऽऽइमए न कायव्वं ॥२९॥
बीयदियहम्मि थेरा, सुत्तत्थविसारया पलोएंति । खमगसरीरं तत्तो, सुहाऽसुहगई विजाणंति ॥३०॥

तरुसिहरगए सीसे, निव्वाण[1] विमाणवासि[2] थलकरणे । जोइसियवाणमंतर, समम्मि[3] खड्डाइ भवणवई ॥३१॥
जइ दिवसे संचिक्खइ, तमऽणालिद्धं च अक्खयं मडयं । तइ वरिसाणि सुभिक्खं, खेमसिवं तम्मि रज्जम्मि ॥३२॥
जं वा दिसमुवणीयं, सरीरयं सावएहिं खवगस्स । ताए दिसाए सुभिक्खं, विहारजोग्गं सुविहियाणं ॥३३॥
इय सिरिजिणचंदमुणिंद-रइयसंवेगरंगसालाए । चउमूलद्दाराए, सोग्गइगमपउणपयवीए ॥३४॥
आराहणाए पडिदार-नवगमइए समाहिलाभम्मि । भणियं चउत्थदारम्मि, विजहणा नवमपडिदारं ॥३५॥
तब्भणणा पुण वुत्तं, समाहिलाभो त्ति तुरियदारं पि । तब्भणणे य समत्थिय-मित्थं आराहणासत्थं ॥३६॥
इय महसेणस्स महा-मुणिस्स जह गोयमेण सिट्ठमिमं । तह सव्वं निद्दिट्ठं, एत्तो जं वुत्तमाऽऽसि पुरा ॥३७॥
जह तं आराहित्ता, सिद्धिं सो पाविहित्ति तमियाणिं । साहेमि समासेणं, गोयमकहियाऽणुसारेणं ॥३८॥
तेलोक्कतिलयकप्पस्स, कप्पपहुवंदियस्स वीरस्स । सीसो गोयमसामी, सवित्थराऽऽराहणविहाणं ॥३९॥
पडिपुन्नमेवमऽणगार-वग्गगिहिगोयरं सदिट्ठंतं । पन्नविउं महसेणं, पुव्वुद्दिट्ठं मुणिं भणइ ॥४०॥
भो भो महायस! तए, जं पुट्ठं आसि तं मए सिट्ठं । ता एत्तो अपमत्तो, एत्थुज्जमसु तुमं जम्हा ॥४१॥
ते धन्ना सप्पुरिसा, तेहि सुलद्धं च माणुसं जम्मं । आराहणा हु एसा, पडिवण्णा जेहिं संपुन्ना ॥४२॥
ते सूरा ते धीरा, पडिवज्जिय जेहिं संघमज्झम्मि । आराहणापडागा, सुहेण गहिया चउक्खंधा ॥४३॥
किं नाम तेहिं लोए, महाणुभावेहिं होज्ज नो लद्धं । जेहिं इमं संपत्तं, अणग्घमाऽऽराहणारयणं ॥४४॥
आराहणाठियाणं, कुणंति साहिज्जमुज्जुया जे य । जम्मे जम्मे पावंति, ते वि आराहणं परमं ॥४५॥
आराहयं मुणिं जे, सेविंति नमंति भत्तिसंजुत्ता । आराहणाफलं सुगइ-सोक्खरूवं लहंति ते ॥४६॥
इय गोयमेण भणिए, हरिसवसुच्छलियबहलरोमंचो । महसेणो रायरिसी, तिपयाहिणिऊण गणनाहं ॥४७॥
धरणियलचुंबिणा मत्थ-एण पणमित्तु अपुणरुत्ताहिं । अच्चन्तमहत्थाहिं, गिराहिं इय थोउमाऽऽरद्धो ॥४८॥
जय मोहतिमिरपूरिय-तिहुयणभवणप्पयासणपईव! । जय निव्वुइपुरसंमुह-पत्थियभव्वोहसत्थाह! ॥४९॥
जय विमलकेवलाऽऽलोय-लोयणाऽऽलोइयऽत्थवित्थार! । जय निरुवमरूवाऽऽइ-सयविजियससुराऽसुरतिलोय! ॥५०॥
जय सुक्कज्झाणाऽनल-निद्दड्ढघणघाइकम्मवणगहण! । जय परमविम्हयावह-ससहरहरहसियसियचरिय! ॥५१॥
जय निक्कारणवच्छल!, सुपुरिसजणपत्तपढमयररेह! । जय साहुलोयवंछिय-पयाणनिप्पडिमकप्पदुम! ॥५२॥
जयसि तुमं सिरिगोयम-गणधर! हरिणंऽकविमलजसपसर! । सरणाऽऽगयरक्खणबद्ध-लक्ख! रागाऽरिपडिवक्ख! ॥५३॥
तुममेव ममं सामी, जणगो य तुमं गई मई तं सि । मित्तो बंधू य तुमं, न तुमाहिंतो वि मज्झ हिओ ॥५४॥
जेण तुमए भवाऽगड-गओ म्हि हत्थाऽवलंबदाणेण । उद्धरिओ आराहण-विहिमेयं उवइसंतेणं ॥५५॥
धन्नो कयपुन्नो हं, पत्तं च समीहियं मए सव्वं । जं तुम्ह वयणपीऊस-सलिलधाराहिं सित्तो म्हि ॥५६॥
पाविज्जइ तिहुयणसंपया वि, अच्चंतदुलहलंभा वि । परमगुरु! तुज्झ वाणी-सवणं न हु लब्भइ कया वि ॥५७॥
इण्हिं च भुवणबंधव!, तुमए अणुजाणिओऽहमिच्छामि । आराहणाविहाणं, काउं संलेहणापुव्वं ॥५८॥
अह कंतदंतपसरंत-सेयपहपडलधवलियदिसेण । सिरिगोयमेण भणियं, हंभो! महसेण! मुणिपवर! ॥५९॥
सुविसुद्धबुद्धिपयरिस-परिभावियविगुणभवसरूवाण । परलोयबद्धलक्खाण, दूरणऽणवेक्खियसुहाण ॥६०॥
तुम्हारिसाण सविसेस-सुगुरुसेवोवलद्धतत्ताण । जुत्तमिणं ता थेवं पि, एत्थ मा कुणसु पडिबंधं ॥६१॥
बहुविग्घो हु मुहुत्तो, पुणो वि दुलहा य धम्मसामग्गी । सव्वंग च्चिय पच्चूह-संगया सेयसंसिद्धी ॥६२॥
एवं ठिए य जेणं, सव्वपयत्तेण धम्मकज्जेसु उज्जमियं तेणं चिय, लद्धा लोए जयपडागा ॥६३॥
दिन्नो जलंऽजली भव-भयस्स करकमलगोयरं नीया । सग्गाऽपवग्गलच्छी, किं वा नो साहियं तेण ॥६४॥
ता सुचरियसामन्नो, कयपुन्नो तं सि जस्स सविसेसं । आराहणाविहाणे, विजंभए, चित्तपडिवत्ती ॥६५॥
जइ वि हु तुह सव्व च्चिय, किरिया आराहणा महाभाग! । तह वि हु भणियविहीए, इमीए एत्तो दढं जयसु ॥६६॥
एवं सोच्चा परम-प्पमोयपाउब्भवंतरोमंचो । चलणेसु निवडिऊणं, सिरोवरिं रइयकरकमलो ॥६७॥
रायरिसी महसेणो, जं भयवं! आणवेसि तुममेत्तो । तं काहं ति पइन्नं, काउं तत्तो विणिक्खंतो ॥६८॥
पुव्वपवंचियविहिणा, सम्मं कयदव्वभावसंलिहणो । सविसेसविहियदुक्कर-तवचरणविहाणझीणंगो ॥६९॥

परिचत्तहेयपक्खो, सव्वोवादेयपक्खपडिबद्धो । विहरित्ता निस्संगो, केत्तियमेत्तं पि सो कालं ॥७०॥
अच्चंतमऽवचयं मंस-सोणियाऽऽईण देहधाऊण । विबलत्तं गतस्स य, दट्ठूण इमं विचिंतेइ ॥७१॥
निजधम्मसूरिवागरिय-वित्थराऽऽराहणाऽणुसारेण । उज्जमियं ताव मए, सव्वेसु वि धम्मकिच्चेसु ॥७२॥
वावारिया य भव्वा, निव्वुइमग्गम्मि सव्वजत्तेण । सुत्तत्थभावणाए य, भाविओ सम्ममऽप्पा वि ॥७३॥
अणिगूहिंतेण बलं, बालगिलाणाइसाहुकज्जेसु । वावारंऽतरविरएण, वट्टियं एत्तियं कालं ॥७४॥
इण्हिं च भट्ठदिट्ठीबलस्स, वइभासणे वि असहस्स । अच्चंतकिससरीर-त्तणेण गमणे वि अखमस्स ॥७५॥
किं जीविएण विहलेण, तेण सुकयप्पसाहणाऽभावे । धम्मऽज्जणप्पहाणं हि, जीवियं कित्तयंति सुहं ॥७६॥
तो धम्मगुरुं आपुच्छिऊण, निज्जामणाविहिविहिन्नू । थेरे धम्मसहाए, काऊण य भणियविहिपुव्वं ॥७७॥
सत्तोवरोहरहिए, देसम्मि सिलायलं पमज्जित्ता । भत्तपरिन्नाए ममं, जुज्जइ देहं परिच्चइउं ॥७८॥
एवं परिभावेत्ता, स महप्पा सणियसणियगमणेण । गंतूणं गणनाहं, पणमिय भणिउं समाढत्तो ॥७९॥
भयवं जहसत्तीए, छट्ठऽट्ठमपमुहदुक्करतवेहिं । संलिहिओ तावऽप्पा, जा चम्मऽट्ठीणि सेसाणि ॥८०॥
संपयमऽहं च सक्को, न थेवमेत्ते वि कुसलकायव्वे । इच्छामि तेण भयवं!, गीयत्थत्थेरनिस्साए ॥८१॥
तुब्भेहिं अणुन्नाओ, विवित्तदेसम्मि अणसणं काउं । एत्तो एत्तियमेत्तं, जेणं मह पत्थियव्वं ति ॥८२॥
अह विमलकेवलाऽऽलोय-लोयणेणं पलोइउं तस्स । निव्विग्घपत्थुयऽत्थ-प्पसाहणं गोयमो भयवं ॥८३॥
एवं कुणसु महायस!, नित्थारयपारओ य लहु होसु । महसेणमेवमऽणुजा-णिऊण थेरे इमं भणइ ॥८४॥
हंहो महाणुभावा!, असहायसहायदाणतल्लिच्छा । एयस्स उत्तिमट्ठं, काउं अब्भूट्ठियस्स दढं ॥८५॥
तुब्भे एगग्गमणा, समओचियविहियसव्वकायव्वा । निज्जामणं पकुव्वह, पासठिया आयरेणं ति ॥८६॥
अह ते सव्वे वि पमोय- निब्भरुब्भिन्नगरुयरोमंचा । भत्तीए मन्नंता, अच्चन्तकयत्थमऽप्पाणं ॥८७॥
आणं सीसेण पडिच्छिऊण, सिरिइंदभूइणो सम्मं । रायरिसिं महसेणं, उवट्ठिया पत्थुयत्थकए ॥८८॥
तो तेहिं परिगओ सो, गओ व्व अन्नेहिं भद्दजाईहिं । सुथिरेहिं सुदंतेहिं, महागएहिं व रायंतो ॥८९॥
सणियं सणियं पयपंकयाइं, नमिऊण गोयमस्स गओ । पुव्वपडिलेहियम्मि, सिलायले बीयतसरहिए ॥९०॥
तत्थ य पुव्वपवंचिय-विहिपुव्वं विहियसेसकायव्वो । वोसिरइ सव्वमऽसणं, चउव्विहं पि हु महासत्तो ॥९१॥
थेरा वि तस्स पुरओ, संवेगपराइं पसमसाराइं । सत्थाइं महत्थाइं, परियट्टेउं समारद्धा ॥९२॥
अह सुसमाहियमणवयण-कायजोगस्स धम्मझाइस्स । तस्स सुहदुक्खजीविय-मरणाऽऽइसु तुल्लचित्तस्स ॥९३॥
राहावेहसमुज्जय-मणुयस्स व दूरमऽप्पमत्तस्स । आराहणाविहाणे, पयत्तओ बद्धलक्खस्स ॥९४॥
अच्चंतथिरत्तं पेहिऊण, ओहीए रंजिओ बाढं । सोहम्मि तियसनाहो, सभागओ भणइ निययसुरे ॥९५॥
हंहो! पेच्छह पेच्छह, निययथिरत्तेण विजियसुरसेलं । साहुमिमं वट्टंतं, निच्चलचित्तं समाहीए ॥९६॥
मन्ने पलउब्भवपबल-पवणपक्खोलणाऽऽउलजलोहा । जलनिहिणो वि हु मेरं, मुयंति न इमो नियपइन्नं ॥९७॥
निच्चाऽवट्ठियरूवा वि, किं पि पावित्तु वत्थुणो हेउं । भिंदंति च्चिय नियय-व्ववत्थमेसो न पुण साहू ॥९८॥
जे करयलम्मि लीलाए, लेट्ठुगणणाए सयलकुलगिरिणो । धारिन्ति सिंधुणो वि हु, सोसेंति निमेसमेत्तेण ॥९९॥
ते वि हु मन्ने तियसा, अतुल्लबलसालिणो इमस्स धुवं । न चिरेण वि खोभेउं, पारेंति मणो मणागं पि ॥६९००॥
चोज्जमिणं एत्थ जए, जायंति के वि ते महासत्ता । जेसि महिमाऽवधूयं, असारभूयं तिहुयणं पि ॥१॥
इयजंपिरसुरवइवयण-मऽलियबुद्धी असद्दहेमाणो । एक्को सुरो सरोसं, चिंतेउमिमं समाढत्तो ॥२॥
बालाणं व पहूण वि, वयणाइं जहा तहा पयट्टंति । वत्थुसतत्तपरामरिस-मऽणुयमित्तं पि न कुणंति ॥३॥
कहमऽन्नहा महाबल-कलिएहि वि एस खोहिउं न जई । तीरइ सुरेहिं एवं, वएज्ज सक्को इह विसंकं ॥४॥
अहवा किमऽणेण विगप्पिएण, सयमेव तं मुणिं गंतुं । खोभेमि झाणाओ, करेमि हरिणो गिरं वितहं ॥५॥
ताहे गईए मणपवण-विजइणीए तओ विणिक्खंतो । महसेणमुणिसमीवे, पत्तो य निमेसमेत्तेण ॥६॥
उप्पाइओ य पलइ व्व, दारुणो विज्जुपुंजदुप्पेच्छो । अयसीकुसुमच्छाओ, सव्वत्तो मेहसंघाओ ॥७॥
मुसलोवमाहिं नीरंध-भावबद्धंऽधयारघोराहिं । धाराहिं तक्खणं चिय, पासे वरिसेउमाऽऽरुद्धो ॥८॥

उब्भडसलिलुप्पीडेहिं, पूरियं दंसिऊण दिसिवलयं । निज्जमगमुणिम्मि संक-मित्तु महसेणमुल्लवइ ॥९॥
हंभो! किन्न पलोयसि, सव्वत्तो पसरमाणसलिलेण । गयणऽग्गलग्गसिहरा वि, गरुयगिरिणो वि हीरंति ॥१०॥
दीहरजडाकुडप्पो-त्थइयधरामंडला वि दुमनिवहा । उम्मूलिया जलेणं, पलालपडलं विव लुलंति ॥११॥
किम्वा न नियच्छसि वोम-वियरपसरंतवारिपूरेहिं । तारानियरो वि फुडं, तिरोहिओ नज्जइ न सम्मं ॥१२॥
इय एरिससलिलमहा-पवाहवेगेण वुब्भमाणस्स । तुह अम्हाण वि एत्थं, न जाव संपज्जए मरणं ॥१३॥
तावेत्तो ओसरिउं, जुज्जइ मुणिवसह! मुयसु मरणरुइं । जत्तेण रक्खणिज्जो, अप्पा हु सुये जओ भणियं ॥१४॥
'सव्वत्थ संजमं संज-माउ अप्पाणमेव रक्खंतो । मुच्चइ अइवायाओ, पुणो विसोही न याऽविरई' ॥१५॥
न य अम्हारिसमुणिजण-विणाससंभूयभूरिपावाओ । एत्थ ट्ठियस्स थेवं पि, अत्थि मोक्खो धुवं तुज्झ ॥१६॥
जम्हा तुज्झ कएणं, अम्हे इह भद्द! आवसामो त्ति । इहरा जीवियउकामो, वसेज्ज किं को वि जलमज्झे ॥१७॥
इय साहुवयणमाऽऽयन्नि-ऊण थोयं पि अविचलियचित्तो । महसेणो रायरिसी, परिभावइ निउणबुद्धीए ॥१८॥
को एसो पत्थावो, घणस्स कह वा इमो महासत्तो । साहू दूरं अणुचिय-मेवं जंपेज्ज दीणमणो ॥१९॥
अच्चंतमेवमऽघडंतमेव, उवसग्गिउं ममं मन्ने । भावं परिक्खिउं वा, केणइ असुराऽऽइणा विहियं ॥२०॥
साहावियं जइ पुण, भवेज्ज ता दिट्ठसव्वदट्ठव्वो । गोयमसामी न ममं, थेरे य इहाऽणुमन्नेज्जा ॥२१॥
ता जइ वि हु होयव्वं, सुराऽऽइदुव्विलसिएण केणाऽवि । हे हियय! तहवि पत्थुय-पओयणे निच्चलं होसु ॥२२॥
जइ ताव निहाणाऽऽइसु, गिण्हिज्जंतेसु होंति पच्चूहा । परमट्ठसाहगे कह, ण होंति ता उत्तिमट्ठम्मि ॥२३॥
इय पुव्वुवदंसियधीर-भावमयकवयविहियदढरक्खो । अक्खुभियमणो धीमं, धम्मज्झाणे थिरो जाओ ॥२४॥
तं च तहाविहमाऽऽभोगिऊण, तियसो खणेण संहरिउं । मेहं तओ विउव्वइ, भीमं दावानलं पुरओ ॥२५॥
अह दावानलपसरंत-फारजालाकलावसंवलितं । उल्लसियधूमलेहा-संछाइयरविकराऽऽभोगं ॥२६॥
खरपवणुप्पाइयदीह-रच्चिदज्झंतताराचक्कं । उच्छलियतडयडाऽऽरव-ठइयाऽवरसद्दवावारं ॥२७॥
दाहभयवेविराऽमर-खयरवहूविहियगाढहलबोलं । सव्वत्तो वि पलित्तं व, झत्ति जायं जयमऽसेसं ॥२८॥
एवंविहं पि तं पासि-ऊणं झाणाओ जा न थेवं पि । चलिओ महसेणमुणी, ताव सुरो रसवइं [1]पउरं ॥२९॥
नाणाविहवंजणमक्ख-भोयणाऽणेगपाणयाऽऽइन्नं । उवदंसिऊण पुरओ, महुरगिराए इमं भणइ ॥३०॥
हे समण! किं किलिस्ससि, निरत्थयं निरसणो महाभाग! । नणु णवकोडिविसुद्धं, आहारं भुंजसु एयं ॥३१॥
निरवज्जाऽऽहाराणं, साहूणं निच्चमेव उववासो । किं सुमरसि सुत्तमिमं, न तुमं जं सोसयसि अंगं ॥३२॥
चित्तसमाहाणं चिय, कायव्वं किं व कट्ठकिरियाए । तपसुसिओ वि हु अहरं, गइं गओ जेण कंडरिओ ॥३३॥
तज्जेट्ठो पुण भाया, पुंडरिओ सुद्धचित्तपरिणामो । अकयतवो वि महप्पा, उववन्नो देवलोगम्मि ॥३४॥
ता उज्झिय कुग्गाहं, भुंजसु सुविसुद्धमेवमाऽऽहारं । जइ संजमाओ निव्वेय-भावमुव्वहसि नो भद्द! ॥३५॥
इय मुणिवेसेण सुरेण, भूरिसो भासिओ वि महसेणो । ईसिं पि जा न चलिओ, झाणाओ ता पुणो तेण ॥३६॥
सुइनेवत्थधरीओ, उब्भडसिंगारमणहरंऽगीओ । जुवईओ निम्मियाओ, तम्मणवामोहणट्ठाए ॥३७॥
अह सवियारवियंभित-कडक्खविक्खेवसबलियदिसाहिं । सुंदरमुहिंदुजोन्हा-पवाहहसियाऽमरनईहिं ॥३८॥
सविलासुल्लासियबाहु-वल्लिपायडियथोरथणयाहिं । चरणपडिलग्गरणक(झ)णिर-मंजुमंजीररम्माहिं ॥३९॥
रसणामणिकिरणसमूह-रइयदिसिचक्कसक्कचावाहिं । मंदारदामपरिमल-आयड्ढियभसलजालाहिं ॥४०॥
नीवीसंजमणच्छल-पयडियखणपीणसोणिबिम्बाहिं । अनिमित्तुवदंसियगाय-भंगपिसुणियवियाराहिं ॥४१॥
बहुहावभावविब्भम-सुंदरविविहोवयारकुसलाहिं । दे नाह! पसिय तायसु, तुममेव गई मई अम्ह ॥४२॥
इय जंपिरीहिं विरइय- करंऽजलीहिं पि तियसजुवतीहिं । उवसग्गिओ वि चलिओ, झाणाउ न सो महासत्तो ॥४३॥
पडिलोमऽणुलोममहोव-सग्गवग्गं च निप्फलं नाउं । परिसंतो सो तियसो, चिंतेउमिमं समाढत्तो ॥४४॥
धी! धी! पावेण मए, असद्दहंतेण अवितहं पि गिरं । हरिणो महाणुभावस्स, एस आसाइओ साहू ॥४५॥
एवंविहगुणगणरयण-रासिमुणिजायणुत्थपावेण । दूमिज्जंतस्स ममं, कत्तो एत्तो परित्ताणं ॥४६॥

1. पवरं पाठां० ।

तं कुणइ किंपि कज्जं, सयमेसो मइचियज्जए जीवो । जेणंऽत्तो सल्लेण य, पीडिज्जंतो दुहं जियइ ॥४७॥
इय झूरिऊण सुचिरं, पराए भत्तीए थुणिय महसेणं । जत्तेण खामिऊण य, जहागयं पडिगओ तियसो ॥४८॥
महसेणो वि सममणो, माणऽवमाणेसु दुक्खसुक्खेसु । सविसेसमुत्तरोत्तर-वड्ढंतविसुद्धपरिणामो ॥४९॥
अच्चंतसमाहीए, कालं काऊणं भासुरो देवो । तेत्तीससागराऽऊ, जाओ सव्वट्ठसिद्धम्मि ॥५०॥
अह कालगयं तं जाणि-ऊण थेरा जहाऽऽगमविहीए । तक्कालोचियकायव्व-वेइणो मुणियभवभावा ॥५१॥
तस्स सरीरं तसबीज-पाणहरियंऽकुराऽऽइणा रहिए । पुव्वपडिलेहिए थं-डिलम्मि सम्मं परिठवेंति ॥५२॥
तयणंतरं पडिग्गह-पमुहधम्मोवगरणमऽवि तस्स । घेत्तुं अतुरियचवलं, गोयमसामिं समल्लीणा ॥५३॥
तिपयाहिणदाणपुरस्सरं च, तं वंदिऊण पणयसिरा । उवणीयतदुवगरणा, एवं भणिउं समाढत्ता ॥५४॥
भयवं स तुम्ह सीसो, खंतिखमो विजियदुज्जयाऽणंगो । पम्मुक्कसव्वसंगो, वज्जियनीसेससावज्जो ॥५५॥
पयईए च्चिय सरलो, पयईए च्चिय सुचिन्नसामन्नो । पयईए य विणीओ, पयईए च्चिय महासत्तो ॥५६॥
सम्मऽहियासियदुस्सह-परीसहो सरियपंचनवकारो । आराहणमाऽऽराहिय, निस्सामन्नं दिवं पत्तो ॥५७॥
अह मालइमालाहिं व, दसणपहाहिं पसाहयंतो व्व । थेरे गोयमसामी, महुरगिराए समुल्लवइ ॥५८॥
हंहो महाणुभावा!, सम्मं निज्जामिओ स तुब्भेहिं । जाणियजिणवयणाणं, एवं चिय वट्टिउं जुत्तं ॥५९॥
असहायसहायत्तं, करेंति जं संजमं करेंतस्स । एएण कारणेणं, नमणिज्जा साहुणो होंति ॥६०॥
न य एत्तो उवयारो, अन्नो वि हु विज्जए जए सारो । जमुवट्ठंभो कीरइ, पज्जंताऽऽराहणासमए ॥६१॥
धन्नो य सो महप्पा, जेणं आराहणासुनावाए । दुहमयरनियरकिन्नो, तिन्नो व्व भवन्नवो भीमो ॥६२॥
अह थेरेहिं भणियं, भयवं! एत्तो कहिं स उववन्नो । कइया य निहयकम्मो, निव्वाणं पाविही कहसु ॥६३॥
तिहुयणभवणऽब्भंतर-विस्सुयजसवीरनाहसिस्सेण । पढमेण तओ भणियं, एगग्गमणा णिसामेह ॥६४॥
सो महसेणमुणिवरो, सम्मं आराहणाए थिरचित्तो । सुरवइकयप्पसंसा-कुवियाऽमरविहियविग्घो वि ॥६५॥
झाणाउ निमेसं पि हु, अचलंतो मंदरो व्व काऊण । कालं सव्वट्ठम्मि, भासुरबोंदी सुरो जाओ ॥६६॥
आउक्खएण तत्तो, चविऊणं एत्थ जंबुदीवम्मि । उप्पज्जंतनिरंतर-जिणचक्किदसारवग्गम्मि ॥६७॥
पुव्वविदेहे वासे, वासवपुरिमणहराए नयरीए । अवराजियाए जियवेरि-वग्गविक्कंतकित्तिस्स ॥६८॥
कित्तिधरधरावइणो, वयणोहामियमयंकबिंबाए । बिंबाऽहराए देवीए, विजयसेणाऽभिहाणाए ॥६९॥
मुहपविसंतचिरुग्गय-संपुन्नमयंकसुमिणकयसूओ । गब्भे पाउब्भविही, पुत्तत्तेणं महप्पा सो ॥७०॥
अद्धट्ठमराइंदिय-समहियमासेसु नवसु विगएसु । होही य तस्स जम्मो, सोहणनक्खत्ततिहिजोगे ॥७१॥
अच्चंतपुण्णपगरिस-आगरिसियमाणसा य संनिहिया । देवा तज्जम्मम्मि, पडिसंतरयं दिसाभोगं ॥७२॥
वायंतमंदपवणं, कीलंतजणं समंतओ काउं । कुंभग्गसो खिविस्संति, पवररयणाइं नगरीए ॥७३॥
अह मंगलमुहलमिलंत-वारविलयासहस्सरमणीयं । रमणीयमणिविभूसण-भूसियनीसेसनयरजणं ॥७४॥
नयरजणदिज्जमाण-प्पभूयधणतुट्ठमग्गणयलोयं । मग्गणलोउक्कित्तिज्ज-माणपायडगुणप्पसरं ॥७५॥
गुणपसरसवणसरहस-मिलंतसामंतचक्ककयतोसं । वद्धावणयं होही, महया रिद्धीसमुदएणं ॥७६॥
उचियसमयम्मि पियरो, रयणुक्करवरिसणेण य जहत्थं । रयणायरो त्ति नामं, तस्स पइट्ठावइस्संति ॥७७॥
उम्मुक्कबालभावो, कमेण अहिगयसमत्थसत्थऽत्थो । कइवयसमवयसुइवेस-विउससुवयस्सपरियरिओ ॥७८॥
पयईए च्चिय विसय-प्पसंगविवरंमुहो भवविरागी । वियरंतो लीलाए, मणहरकाणणपएसेसु ॥७९॥
एगम्मि अवसरे नयरि-पासपरिवत्तिपव्वयनिगुंजे । सो पेच्छिही विसाले, सिलायले अणसणपवण्णं ॥८०॥
संनिहिनिसन्नमुणिजण-सव्वाऽऽयरदिज्जमाणअणुसट्ठिं । विविहतवकिसियकायं, दमघोसऽभिहाणमुणिवसभं ॥८१॥
तं पेच्छिऊण तस्स य, कत्थ वि य मए वि एरिसाऽवत्था । सयमेव समणुभूय त्ति, ईहापोहं करेंतस्स ॥८२॥
जाईसरणं उप्प-ज्जिही लहुं तदणुभावओ सम्मं । सुमरियपुव्वभवऽब्भत्थ- सयलआराहणविहाणो ॥८३॥
पासं व घराऽऽवासं, विसं व विसए धणं पि निहणं व । पियजोगसुहं दुक्खं व, बुद्धिचक्खूए पेहंतो ॥८४॥
सव्वविरइं पवज्जिउ-कामो वि हु जणणिजणगवयणेण । दारपरिग्गहविमुहो, वसिहि गेहे कइवि वरिसे ॥८५॥
नयरं विसालसाला-मणहरगोउरविरायमाणाणि । उत्तुंगसिंगसोहा-पहसियहिमसिहरिसिहराइं ॥८६॥

पवणपकंपिरधयवड-रणंतमणिकिंकिणीमणहराइं । हरिणंक-कुमुयखीरोय-फेणफलिहुज्जलपहाइं ॥८७॥
गायंतथुणंतपढंत-भव्वहलबोलवाउलदिसाइं । अणवरयपयट्टूसव-कीरंतविसेसपूयाइं ॥८८॥
देवंगदूसविरइय-उल्लोयविरायमाणमज्झाइं । मणिकुट्टिमतलनिम्मिय-मुत्ताहलवरचउक्काइं ॥८९॥
डज्झंतनिरंतरकुंदुरुक्क-घणसारसुरहिधूवाइं । कुसुमोवहारपरिमल-मिलंतरणझणिरभमराइं ॥९०॥
अइसंतकंतसुंदर-सरूवजिणबिंबसोभमाणाइं । काराविही विहीए, पउराइं जिणिंदभवणाइं ॥९१॥
अइदुक्करतवचरणोवउत्त-मुणिपज्जुवासणानिरओ । साहम्मियजणवच्छल्ल-संगओ उवसमपहाणो ॥९२॥
लोगविरुद्धच्चाई, जत्तेणं विजियइंदियग्गामो । सम्ममऽणुव्वयगुणवय-सिक्खावयपालणपहाणो ॥९३॥
उवसंतवेसधारी, पडिमाऽणुट्ठाणविहियपरिकम्मो । गमिऊण केत्तियं पि हु, कालं निरवज्जवित्तीए ॥९४॥
स महप्पा रायसिरिं, नयरिं धणकणगरयणसंभारं । अम्मापियरो दढनेह-निब्भरं बंधवजणं च ॥९५॥
मोत्तूण तणं व पडऽग्गलग्ग-मुवसमदमप्पहाणस्स । चोद्दसपुव्वमहासुय-रयणनिहाणस्स सूरिस्स ॥९६॥
धम्मजसनामधेयस्स, अंतिए तियसनिवहकयमहिमो । घणकम्मसेलवज्जं, पव्वज्जं गिण्हिही सम्मं ॥९७॥
तो चिरकालं सुत्तत्थ-वित्थरुद्दामविलसिरतरंगं । अइसयरयणाऽऽइन्नं, अवगाहेंतो समयसिंधुं ॥९८॥
छट्ठऽट्ठमाऽऽइदुक्कर-विगिट्ठतवचरणभावणाहिं दढं । दुहओ वि हु अप्पाणं, पइदियहं संलिहंतो य ॥९९॥
कायरचित्तचमक्कार-कारिवीरासणाऽऽइठाणेहिं । संलीणत्तं परमं, पइक्खणं अब्भसंतो य ॥१००००॥
संसारभीरुभव्वे, धम्मुवएसप्पयाणरज्जूए । मिच्छत्तकूवयाओ, समुद्धरंतो य करुणाए ॥१॥
सूरो व्व दित्ततेओ, ससि व्व सोमो धर व्व सव्वसहो । सीहो व्व दुप्पधरिसो, एगागी खग्गसिंगं व ॥२॥
वाउ व्व अपडिबद्धो, संखो व्व निरंजणो गिरि व्व थिरो । भारुंडो व्वऽपमत्तो, गंभीरो खीरजलहिं व्व ॥३॥
इय लोगुत्तरगुणगण-विराइओ विहरिऊण धरणीए । पज्जंते सविसेसं, काही संलेहणविहाणं ॥४॥
संलिहियऽप्पा य तओ, चउव्विहाऽऽहारविहियसंवरणो । मासं पाओवगओ, सुक्कज्झाणाऽनलेण लहुं ॥५॥
नीसेसं कम्मवणं, निद्दहिऊणं जरामरणरहियं । इट्ठविओगाऽणिट्ठ-प्पओगदोगच्चपम्मुक्कं ॥६॥
एगंतियअच्चंतिय-अव्वाबाहप्पहाणसुहमहुरं । अप्पुणरागममऽचलं, नीरयमऽरुयं खयविहीणं ॥७॥
असुहसुहकम्मविट्टंभ-लब्भमऽब्भयमऽणंतमऽसवत्तं । निव्वाणमेगसमएण, पाविही सो महाभागो ॥८॥
देवा य भत्तिवसनिस्स-रंतरोमंचकंचुइयकाया । निव्वाणमहिममुवउत्त-माणसा तस्स काहिंति ॥९॥
इय भो थेरा! सम्मं, महसेणमहामुणिस्स सोऊणं । पवरुत्तरोत्तरफलं, कल्लाणपरंपरं परमं ॥१०॥
परिवज्जियप्पमाया, मायामयमयणमाणनिम्महणा । भववासविरत्तमणा, विसोत्तियाहिं विउत्ता य ॥११॥
जिणमयमयरहरुप्पन्न-मेयमाऽऽराहणाऽमयं पियह । अजरामरा सया वि हु, जेण परं निव्वुइमुवेह ॥१२॥
एवं निम्मलनाणाऽ-वलोयनिद्दलियमोहतिमिरेण । गोयमपहुणा भणिए, जहट्ठिए वत्थुपरमत्थे ॥१३॥

"स्थविरकृता गौतमगणधरस्तुतिः" —

मत्थयथिरविणिवेसिय-करकमला हरिसवियसियकवोला । थेरा सविणयपणया, इय संथुणिउं समाढत्ता ॥१४॥
जय निन्निमित्तवच्छल!, अतुच्छमिच्छत्ततिमिरदिवसयर! । सपरोभयभयभंजण!, जणगंजणमयणनिम्महण ॥१५॥
नीहारगोरपसरंत-कित्तिपब्भारभरियतइलोय! । ससुराऽसुरनरविरइय-सव्वाऽऽयररुइरथुइवाय! ॥१६॥
जय निव्वाणपुरम्मुह-पट्ठियभव्वोहपरमसत्थाह! । अत्थाहउदहिविब्भम-निब्भरकरुणारसपवाह! ॥१७॥
तं उवमाणं नेवऽत्थि, जेण उवमिज्जसे तुमं सामि! । नवरं तुमए वि तुमं, उवमिज्जसि न उण अन्नेण ॥१८॥
हीणेणुवमाणेण हि, हवेज्ज का चंगिमोवमेयस्स । न तडागो व्व समुद्दो, त्ति उवमियं पावए सोहं ॥१९॥
सोहम्माऽहिवपमुहा वि, जस्स गुणसंथवे न परिहत्था । तस्स पहु! तुज्झ किं तुच्छ-बुद्धिणो संथुणंतु परे ॥२०॥
एवं च निरुवमो थुइ-अगोयरो जइ वि नाह! तं तह वि । सुगुरु त्ति चक्खुदाइ त्ति, दूरपरमोवगारि त्ति ॥२१॥
भत्तिभरतरलिएहिं, अम्हेहिं थुणिज्जसे तुमं चेव! न तुमाहिन्तो वि जओ, थोयव्वो अत्थि किर अन्नो ॥२२॥
ता जयसि तुमं चिय एत्थ, जेण भवजलहिमज्जमाणाणं । आराहणातरंडं, एयं भव्वाणमुवइट्ठं ॥२३॥
इय थोऊणं थेरा, भयवंतं गोयमं समणसीहं । पारद्धधम्मकिच्चेसुं, वट्टिउं संपयट्टंति ॥२४॥
एवमिमेह समप्पइ, संपइ संवेगरंगसालत्ति । आराहणा इयाणिं, तस्सेसं किं पि जंपेमि ॥२५॥

"ग्रन्थकर्तुगुर्वादीनां नामादिवर्णनम्-ग्रन्थरचनावर्णनम्" —

आसि उसभाऽऽइयाणं, तित्थयराणं अपच्छिमो भयवं । तेलोक्कपहियकित्ती, चउवीसइमो जिणवरिंदो ॥२६॥
दित्तंऽतरंगरिउवग्ग गंजणऽज्जियजहुत्तवीरत्थो । तेलोक्करंगमज्झे, अतुल्लमल्लो महावीरो ॥२७॥
लीलाललणसुहम्मो, संयमलच्छीए तस्स य सुहम्मो । सीसो तत्तो जंबू, गुणिजणसउणीण वरजंबू ॥२८॥
नाणाऽऽइगुणप्पभवो, तत्तो य अभू महंपभू पभवो । तयऽणंतरं च भयवं, आसी सेज्जंभवो भयवं ॥२९॥
अह तस्स महापहुणो, मूलाओ चेव न हु जडाऽणुगए । न जहुत्तरं तणुतरे, परिमियपव्वे वि य न चेय ॥३०॥
सव्वंगं सारे च्चिय, न अप्पवोच्छेयदच्छरुच्छफले । पत्तन्तसाडरहिए, समंतओ निच्चसच्छाए ॥३१॥
न य अन्नेसिं गम्मे, अकंटए निरवसाणवुड्ढिगुणे । तुंगमहीधरमुद्धाऽ-णुगे वि भुवि पावियपइट्ठे ॥३२॥
अच्चंतं सरले च्चिय, अपुव्ववंसम्मि परियहंतम्मि । जाओ य वइरसामी, महापभू परमपयगामी ॥३३॥
तस्साहाए निम्मल-जसधवलो सिद्धिकामलोयाणं । सविसेसवंदणिज्जो य, रायणा थो(थे)रप्पवग्गो व्व ॥३४॥
कालेणं संभूओ, भयवं सिरिवद्धमाणमुणिवसभो । निप्पडिमपसमलच्छी-विच्छड्डाऽखंडभंडारो ॥३५॥
ववहारनिच्छयनय व्व, दव्वभावत्थय व्व धम्मस्स । परमुन्नइजणगा तस्स, दोण्णि सीसा समुप्पण्णा ॥३६॥
पढमो सिरिसूरिजिणेसरो त्ति, सूरो व्व जम्मि उइयम्मि । होत्था पहाऽवहारो, दूरंततेयस्सिचक्कस्स ॥३७॥
अज्ज वि य जस्स हरहास-हंसगोरं गुणाण पब्भारं । सुमरंता भव्वा उव्व-हंति रोमंचमंऽगेसु ॥३८॥
बीओ पुण विरइयनिउण-पवरवागरणपमुहबहुसत्थो । नामेण बुद्धिसागर-सूरि त्ति अहेसि जयपयडो ॥३९॥
तेसिं पयपंकउच्छंग-संगसंपत्तपरममाहप्पो । सिस्सो पढमो जिणचंद-सूरिनामो समुप्पन्नो ॥४०॥
अन्नो य पुन्निमाससहरो व्व, निव्ववियभव्वकुमुयवणो । सिरिअभयदेवसूरि त्ति, पत्तकित्ती परं भुवणे ॥४१॥
जेण कुबोहमहारिउ-विहम्ममाणस्स नरवइस्सेव । सुयधम्मस्स दढत्तं, निव्वत्तियमंऽगवित्तीहिं ॥४२॥
तस्सऽब्भत्थणवसओ, सिरिजिणचंदेण मुणिवरेण इमा । मालागारेण व उ-च्चिणित्तु वरवयणकुसुमाइं ॥४३॥
मूलसुयकाणणाओ, गुंथित्ता निययमइगुणेण दढं । विविहऽत्थसोरभभरा, निम्मवियाऽऽराहणामाला ॥४४॥
एयं च समणमहुयर-हिययहरं अत्तणो सुहनिमित्तं । सव्वाऽऽयरेण भव्वा, विलासिणो इव निसेवंतु ॥४५॥
एसा य सुगुणमुणिजण-पयप्पणामप्पवित्तभालस्स । सुपसिद्धसेट्ठिगोद्धण-सुयविस्सुयजज्जणागस्स ॥४६॥
अंगुब्भवाण सुपसत्थ-तित्थजत्ताविहाणपयडाणं । निप्पडिमगुणऽज्जियकुमुय-सच्छहाऽतुच्छकित्तीणं ॥४७॥
जिणबिंबपइट्ठावण-सुयलेहणपमुहधम्मकिच्चेहिं । अतुक्कासगदुक्कुह-चित्तचमक्कारकारीणं ॥४८॥
जिणमयभावियबुद्धीण, सिद्धवीराऽभिहाणसेट्ठीणं । साहेज्जेणं परमेण, आयरेणं च निम्मविया ॥४९॥
एईए विरयणेण य, जमऽज्जियं किंपि कुसलमऽम्हेहिं । पावितु तेण भव्वा, जिणवयणाऽऽराहणं परमं ॥५०॥
छत्तावल्लिपुरीए, जेज्जयसुयपासणागभुवणम्मि । विक्कमनिवकालाओ, समइक्कन्तेसु वरिसाण ॥५१॥
एक्कारससु सएसुं, पणुवीसासमहिएसु निप्फत्तिं । संपत्ता एसाऽऽरा-हण त्ति फुडपायडपयत्था ॥५२॥
लिहिया य इमा पढमम्मि, पोत्थए विणयनयपहाणेण । सिस्सेणमऽसेसगुणाऽऽ-लएण जिणदत्तगणिणि त्ति ॥५३॥
तेवण्णब्भहियाइं, गाहाणं इत्थ दससहस्साइं । सव्वग्गं ठवियं निच्छि-ऊण सम्मोहमहणत्थं ॥५४॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरिकृता तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्राचार्यसमभ्यर्थितगुणचन्द्रगणिप्रतिसंस्कृता
जिनवल्लभगणिना च संशोधिता संवेगरंगशालाभिधानाऽऽराधना समाप्ता ॥

संवत् १२०३ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १४ गुरौ अद्येह श्री वटपद्रके दंडश्रीवासरे प्रतिपत्तौ संवेगरंगशालापुस्तकं लिखितमिति।
शिवमऽस्तु सर्व्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥१॥

लेखक-प्रशस्तिः

[1]जन्मदिने चरणभरा-क्रान्तशिरःसुरगिरेरिवाप्तेन । रुक्मरुचिसञ्चयेन, स्फुरत्तनुर्जयति जिनवीरः ॥१॥
सद्राजहंसचक्र-क्रीडाक्रमवति विलासिदलकमले । श्रीमत्पणहिलपाटक-नगरे सरसीव कृतवासः ॥२॥
श्रीभिल्लमालगुरुगोत्रसमुद्धृतिं यः, चक्रेऽभिरामगुणसम्पदुपेतमूर्तिः ।
ताराधिनाथकमनीयशाः स धीरः, श्रीजीवयानिति मतो भुवि ठक्कुरोऽभूत् ॥३॥

भद्रप्रकृत्यैव यथाग्रनागः सदाऽभवत् सत्कृतवीतरागः । कटप्रविस्तारितभूरिदानः, तन्नन्दनः ठक्कुरवर्द्धमानः ॥४॥
तस्य चाजनि सत्पत्नी, नदीनाथक्रियागमा । यशोदेवीति गङ्गेव, सुमनोहरचेष्टिता ॥५॥
पुत्रः प्रेयानेतयोश्चन्द्रतुल्यो, जज्ञे शश्वत् कौ मुदाप्यानहेतुः ।
प्राप्तः स्फातिं वृद्धये वै बुधाना-मीशः श्लाघ्यः ठक्कुरः पार्श्वनामा ॥६॥
यत्कारितं वीरजिनेन्द्रसद्म, चतुर्मुखं भाति कुमारपल्ल्याम् । शुभ्रं क्वणत्काञ्चनकुम्भमुच्चैः, शृङ्गं हिमाद्रेर्ज्वलदौषधीव॥७॥
सत्पादजङ्घिकात्रिक-मन्यमुखाभरणबहुविधविलासम् । यच्छालिभञ्जिकागण-मुद्वहति स्वैमिव सुशिरस्कम् ॥८॥
निःसपत्नाऽभवत् पत्नी, तस्य शस्यचरित्रभूः । गौरीव गिरीशालीना, धंधिका बन्धुवत्सला ॥९॥
पुत्राः पञ्चाजनिषुरनयोर्लोकपालायमाना, मानम्लानिप्रथनपटवः क्षुद्रजिह्मालतानाम् ।
सर्वज्ञार्च्चामुनिवितरणन्यायसंस्थापनोत्था, कीर्त्तिर्येषां विचरति शरच्चन्द्रकुन्दावदाता ॥१०॥
महत्तमो नन्नुक एषु पूर्व्वजो, द्वितीयकः ठक्कुरलक्ष्मणः सुधीः ।
वज्रीव नासत्यकृतप्रतिष्ठिति-स्तृतीय आनन्दमहत्तमः कृती ॥११॥
वाणी यस्य प्रसरति रसात् सोदरी शर्क्करायाः, चेतोवृत्तिर्विलसति तुलां कल्पयन्ती सुधायाः ।
सत्कर्पूराञ्जनमिव लसच्चेष्टितं शिष्टदृष्टीः, पुष्टिं नित्यं नयति यदि वा सुन्दरं किन्न यस्य ॥१२॥
धनपालनागदेवौ, ठक्कुरौ तुर्यपञ्चमौ । श्रियादेवी च सत्पुत्री, जातैका शीलशालिनी ॥१३॥
एतेष्वानन्दमहत्तमस्य, पत्न्यौ क्रमादभूतां द्वे । धृतशस्यशैलसंपत्, पूर्व्वा वसुधेव विजयमतिः ॥१४॥
भिल्लमालकुलव्योम-सोमः श्रावकसोहिकः । ज्योत्स्नेव लखुका तस्य, पत्नी सन्नीतिभूरभूत् ॥१५॥
गुरुत्तरः सौम्यकान्ति-श्छड्डकस्तनयस्तयोः । मतिबुद्धिसमे जाते, राजिनीसीलुके सुते ॥१६॥
तत्रोपयेमे विधिवद्विनीता-मानन्दमन्त्री किल राजिनीं ताम् ।
पतिव्रतां यां प्रविलोक्य लोकाः स्मरन्ति शीतादिमहासतीनाम् ॥१७॥
अजनि सचिवानन्दस्याङ्गो-द्भवो भुवि ठक्कुरः, शरणिग इति ख्यातो नाम्ना महीशपुरस्कृतः ।
विजयमतितस्त्रासापेतः स रोहणसद्गिरे-र्मणिरिव खनेर्यस्तेजस्वी स्वगोत्रविभूषणः ॥१८॥ (हरिणी)
सोदरी भगिनी चास्य, शान्तापीष्टसतीव्रता । सदुत्तरापि सर्व्वेषां, दक्षिणा धाउकाभिधा ॥१९॥
राजिन्यथाङ्गजमसूत वराकलङ्कम्, पूर्णप्रसादकृतनामकमिष्टबन्धुम् ।
भ्रातुः प्रियं शरणिगस्य नमस्यनम्रम्, रामस्य लक्ष्मणमिव प्रसरत्सुमित्रम् ॥२०॥ (वसन्ततिलका)
तनया पूर्णादेवी च, तस्याः समुदपद्यत । सदाम्भस्थाननिरता, हंसीव मृदुवादिनी ॥२१॥
अथान्यदानन्दमहत्तमोऽसौ, शुश्राव सम्यग् गुरुसन्निधाने । धर्म्मं श्रुतज्ञानचरित्ररूपं, मोक्षार्थिसम्पादितमोक्षमुच्चैः॥२२॥
तत्रापि विज्ञानविनाकृतायाः, साफल्यमाहुर्न जिनाः क्रियायाः । तद्दानमादावत एव सर्व्व-दानेषु शंसन्ति पठन्ति चैवं॥२३॥
ये ज्ञानदानमपरं परिपाल्य यद्वा, सत्पुस्तकादि च विलेख्य समाचरन्ति ।
ते नष्टमोहतिमिराः किल केवलेन, सम्यग् विलोक्य भुवनं विभवो भवन्ति ॥२४॥
न ते नरा दुर्गतिमाप्नुवन्ति, न चान्धतां बुद्धिविहीनतां च ।
न मूकतां नैव जडस्वभावं, ये लेखयन्तीह जिनस्य वाक्यम् ॥२५॥
श्रुत्वेदमिमां संवेग-रङ्गशालामलीलिखद्रम्याम् । निजपत्न्या राजिन्याः, पुण्याय महत्तमानन्दः ॥२६॥
प्रासादः सिद्धिरर्हन्नृपतिरनुपमा तत्प्रिया ज्ञानलक्ष्मीः-नीतिः सिद्धान्तगीः श्री-व्ययकरणसमौ साधुसद्मस्थधर्म्मौ ।
कारा [2]धार्म्मादिरादीनविषु गुणिषु तु, स्वःशिवश्रीर्नियोगः, साम्राज्यं यावदित्थं प्रतपतु भुवने पुस्तकस्तावदेषः ॥२७॥

॥ समाप्त ॥

1. જેસલમેરના ભંડારની પ્રત ઉપરથી પૂ. મુનિરાજ શ્રી પુણ્યવિજયજી મહારાજે કરાવેલી ફોટો કોપીમાં સંવેગરંગશાળાની પ્રત લખાવનારની આ પ્રશસ્તિ આપેલી છે. 2. आदीनविषु = क्लिष्टेषु = क्लेशं प्राप्तेषु ।

आत्मा से परमात्मा बनने के लिए संवेग का मार्ग ही संपूर्ण निर्विघ्न मार्ग है। आत्मा शब्द संसारवर्ती जीवों के लिए विशेष प्रयुक्त होता है और परमात्मा शब्द मुक्ति के जीवों के लिए विशेष प्रयुक्त होता है। संसार से मुक्त होने वाला ही मुक्ति में पहुँच सकता है। संसारी आत्मा बंधन में है। बंधन अनेक प्रकार के हैं। सभी बन्धनों का मूल बंधन कर्म है। कर्म है तो दूसरे बंधन है। कर्म नहीं तो एक भी बंधन नहीं। हर समझदार आत्मा मूल की ओर लक्ष्य देता है। रोग हो तो रोग का मूल कारण नष्ट होते ही रोग नष्ट हो जाता है अतः रोग के मूल कारण को दूर करने के लिए प्रयत्न किया जाता है। वैसे ही संसार का मूल कारण जो कर्म उसको दूर करने के लिए प्रत्येक समझदार व्यक्ति को प्रयत्न करना चाहिए यह सिद्धांत निश्चित है।

जगत में उपचार अनेक प्रकार के है। जो उपचार जहाँ कार्य कर सके वहाँ उसी उपचार को करना हितकर है। कर्म को भी रोग की संज्ञा दी हुई है। कर्मरोग को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के उपचार अनंतानंत तीर्थंकर भगवंतों ने दर्शाये हैं। उन सभी उपचारों में सर्व श्रेष्ठ उपचार प्रत्येक भव्यात्मा के लिए एक ही है। और वह है 'संवेग रसायण का पान करना।' यह 'संवेग रसायन' दो कार्य करता है। रोग को मिटाता है और शक्ति को प्रकट करता है।

जयानंद

साधुओं को अज्ञात तप करना

तेसिं पि तवो असुद्धो, निक्खंता जे महाकुला
जं नेवऽन्ने वियाणंति, न सिलोगं पवेयए ।।

व्याख्या : ये महाकुलोत्पन्ना अपि पूजासत्कारादिहेतवे तपोदानाध्ययनादिकं कुर्वन्ति तेषामपि तत्कृतमुनुष्ठानमशुद्धं, पूजासत्कारादिकृते संयमपालनादि न निर्जरायै जायते, **यत्पुनः कृतं तपोऽध्ययनादि अन्ये श्रावकादयो न जानन्ति तथा अवधेयं** यदि लोकानां पुरः प्रकाश्यते, आत्मश्लाघा स्वयमेव क्रियते, तदपि तपो न निर्जरायै भवति, स्वयं प्रकाशनेन स्वकीयमनुष्ठानं फल्गुतामापादयेदिति।

– सूयगडांग दीपिका

अर्थ : जो महान् कुलो में उत्पन्न हुए दीक्षित सत्कारादि के लिए तप करे तो उनका तप अशुद्ध है। तप कैसे करना – जिसको लोक न जाने और अपने तप की साधु प्रशंसा न करे।

व्याख्या : महान् कुल में जन्मे आत्मा दीक्षित साधु जो पूजा सत्कारादि के लिए तप, दान, अध्ययनादि करता है, उनका किया हुआ अनुष्ठान भी अशुद्ध है। पूजा सत्कारादि के लिए किया हुआ संयमपालनादि निर्जरा के लिए नहीं होता और किया हुआ तप अध्ययनादि दूसरे श्रावक आदि न जाने वैसे करना/जो लोगों में जाहिर करने में आये, स्वयं की प्रशंसा स्वयं करें तो वह तप भी निर्जरा के लिए नहीं होता। स्वयं (तपादि को) प्रख्यात करे तो स्वयं का अनुष्ठान निष्फल होता है। **– प्रभु तुज शासन अति भलुं,** पेज नं.३०

इस सूयगडांग सूत्र की दीपिका का वर्णन देखते हुए वर्तमान में साधुओं के तपश्चर्या के पारणे हेतु बोलियाँ, वरघोड़ा, पत्रिका, महोत्सव जो हो रहे है, उस पर चतुर्विध संघ को सोचना आवश्यक है। शासन प्रभावना के नाम पर स्वप्रभावना तो नहीं हो रही है न ?

MULTY GRAPHICS
(022) 23873222 23884222